भक्तचिंतामणि.

जिसको
श्रीयुत लाला भक्तराम मेम्बर धर्मसभा
जालंधरने सज्जनोंके विनोदार्थ संग्रह किया

और

आठवींबार–विस्तारपूर्वक

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयमें
मुद्रितकर प्रसिद्ध किया।

मार्गशीर्ष संवत् १९६६, शक १८३१.

भूमिका।

श्लोक-नाहं वसामि वैकुंठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायंति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

प्रकट हो कि, जब साक्षात् श्रीभगवत् महाराजने श्रीगीताजीमें अपनी प्राप्तिका मुख्य हेतु भक्तिकोही वर्णन किया है और फिर कृपादृष्टिसे उसके साधनभी श्रीमद्भागवतमें प्रत्येक युगके लिये इस भाँतिसे विधान कर दिये हैं कि, सतयुगमें ध्यान, त्रेतामें यज्ञ, द्वापरमें पूजा और कलियुगमें तो कीर्तनही सार है तो फिर परमपावन और अतिसुलभ केवल भगवद्गुणानुवादही भक्तजनोंका जीवन धन ठहरा क्योंकिः-

सोरठा-हरिपद प्रीति न होय, बिन हरिगुण गाये सुने।
भवते छुटत न कोय, बिना प्रीति हरिपद भये ॥

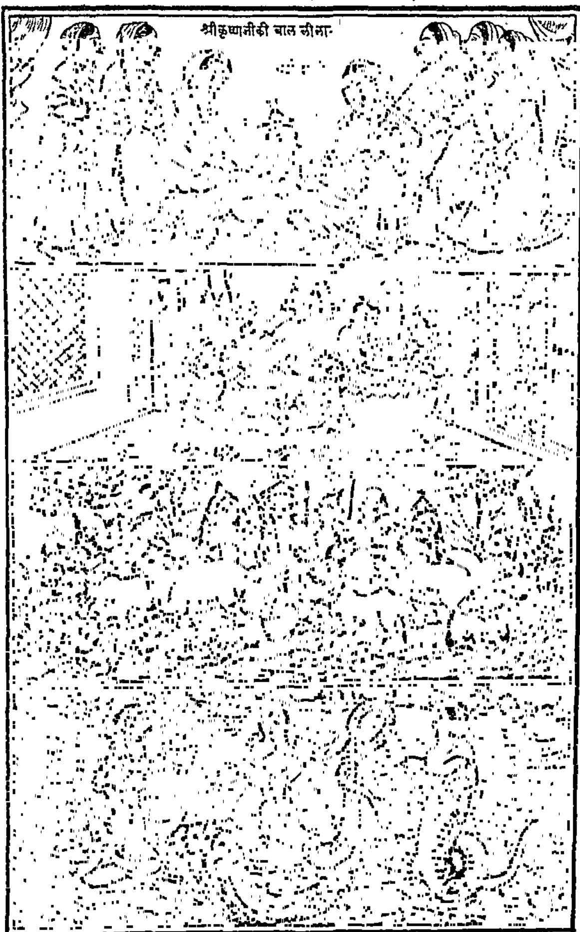
इसलिये मैंने सूरदास आदि अष्टछाप तथा तुलसीदास, कबीरदास, नामदेव, गुरु नानक आदि प्राचीन तथा नवीन भक्तोंके कथन कियेहुए भगवच्चरित्रोंको जो अभीतक छपकर विशेष विख्यात न होने से भक्तजनोंको दुर्लभ थे जहाँ तहाँ से संग्रह कर तथा कुछ छपेहुए पद भी चुनकर जो उनके साथ मिलते थे आनंद वृद्धिका हेतु होनेसे उनके बीचमें संमिलित करादिये हैं और अबकी आठवींबार अत्यंत विस्तारपूर्वक पद बढा दिये हैं अर्थात् दोहजार पदोंके लग भग लीलाक्रमसे ग्रथित किये गये हैं और यों तो जहाँ बडे बडे ब्रह्मादिक देवताओंने आजतक प्रभुकी विचित्र लीलाओंका पारावार नहीं पाया अपनी मति अनुसार सबनेही यत्न किया है तो फिर यह मंदमति किस गिनतीमें है "जेहि मारुत गिरि मेरु उडाहीं। कहौ तूल केहि लेखे माहीं" इसलिये संपूर्ण सज्जनोंसे अति विनयपूर्वक प्रार्थना तथा दृढ विश्वास है कि जहाँ जो कुछ भूलचूक हो उसे सुधार लेंगे और हरिचरित्र परमपवित्र समझकर अवश्य श्रवण कीर्तन करेंगे।

दोहा-अपनी ओर निहारके, क्षमाकरो अपराध ॥
जिहिं तिहिं विधि हरिगाइये, कहत सकल श्रुति साध ॥

और यह परम अमृतमय जो रहस्य है वह वाणीसे परे है इसलिये भक्तजनोंके निर्मल हृदयमें आपही प्रकाशमान होजायगा.

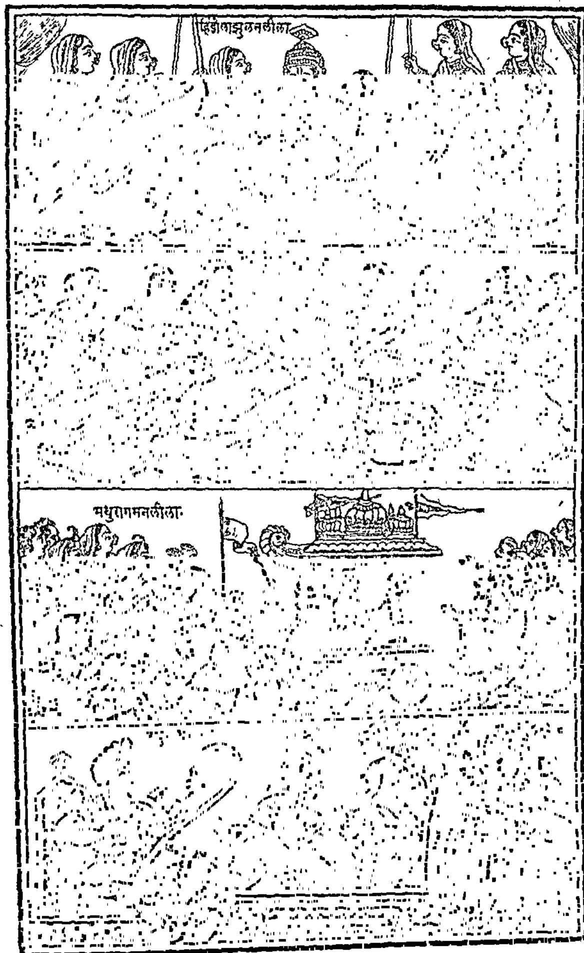
रागरत्नाकर तथा भक्तचिन्तामणि संग्रहकर्त्ताः—
आपका दास-भक्तराम, जालंधरनिवासी.




श्रीकृष्णजीकी बाल लीला.


गोवर्धनलीला.


वंशीलीला.


हिंडोलाझुलनलीला
मधुरागमनलीला

॥ श्रीः ॥

रागरत्नाकरका-

अक्षरोंके क्रमसे पदोंका सूचीपत्र ।

(ओ-औ)

(अं)

(घ)

(च)

(छ)

(ज)

(भ)

(र)

(ष)

(स)

(ह)

॥ इति रागरत्नाकर पदसूची समाप्त ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीनिकुञ्जविहारिणे नमः ।

रागरत्नाकर ।

मंगलाचरणश्लोकाः ।

अंसालंबितवामकुण्डलधरं मंदोन्नतभ्रूलतं
किंचित्कुंचितकोमलाधरपुटं साचिप्रसारेक्षणम् ॥
आलोलांगुलिपल्लवैर्मुरलिकामापूरयंतं मुदा
मूले कल्पतरोस्त्रिभंगललितं ध्याये जगन्मोहनम् ॥ १ ॥
जातु प्रार्थयते न पार्थिवपदं नैन्द्रे पदे मोदते
संधत्ते नवयोगसिद्धिषु धियं मोक्षं च नाकांक्षति ॥
कालिंदीवनसीमनि स्थिरतडिन्मेघद्युतौ केवलं
शुद्धे ब्रह्मणि बल्लवीभुजलताबद्धे मनो धावति ॥ २ ॥
ज्ञातं काणभुजं मतं परिचितैवान्वीक्षिकी शिक्षिता
मीमांसा विदितैव सांख्यसरणिर्योगे वितीर्णा मतिः ॥
वेदांतः परिशीलितः सरभसं किंतु स्फुरन्माधुरी-
धारा काचन नंदसूनुमुरली मच्चित्तमाकर्षति ॥ ३ ॥
कापायान्न च भोजनादिनियमान्नो वा वने वासतो
व्याख्यानादथवा मुनिव्रतभराच्चित्तोद्भवः क्षीयते ॥
किंतु स्फीतकलिंदशैलतनयातीरेषु विक्रीडतो
गोविन्दस्य पदारविन्दभजनारंभस्य लेशादपि ॥ ४ ॥
मेघैर्मेदुरमंबरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमै-

नंक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय ॥
इत्थं नंदनिदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंजद्रुमं
राधामाधवयोर्जयंति यमुनाकूले रहःकेलयः ॥ ५ ॥
फुल्लेंदीवरकांतमिंदुवदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ॥
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषं भजे ॥ ६ ॥
वंशीविभूषितकरान्नवनीरदाभात्
पीतांबरादरुणबिम्बफलाधरोष्ठात् ॥
पूर्णेन्दुसुंदरमुखादरविन्दनेत्रात्
कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने ॥ ७ ॥
ध्यानाभ्यासवशीकृतेन मनसा यन्निर्गुणं निष्क्रियं
ज्योतिः किंचन योगिनो यदि परं पश्यंति पश्यंतु ते ॥
अस्माकं तु तदेव लोचनचमत्काराय भूयाच्चिरं
कालिन्दीपुलिनेषु यत्किमपि तन्नीलं महो धावति ॥ ८ ॥
कुर्वंति केपि कृतिनः क्वचिदप्यनंते
स्वांतं विधाय विषयांतरशांतिमेव ॥
त्वत्पादपद्मविगलन्मकरंदबिंदु-
मास्वाद्य माद्यति मुहुर्मधुलिण्मनो मे ॥ ९ ॥
केचिन्निगृह्य करणानि विसृज्य भोग-
मास्थाय योगममलात्मधियो यतंते ॥
नारायणस्य महिमानमनंतपार-
मास्वादयन्नमृतसारमहं तु मुक्तः ॥ १० ॥
दोहा—श्रीगुरु श्रीगोविन्दपद, मङ्गलहित करुँ ध्यान ।
मङ्गल श्रीव्रजराज घर, जो पाऊँ सन्मान ॥ १ ॥

गोपी ओपी जगतमें, जिनकी उलटी रीति।
तिनके पग बन्दन करूँ, करी कृष्णसों प्रीति ॥ २ ॥
हाथ जोरि विनती करों, सुनो गरीबनिवाज।
अपनोही करि जानिये, बाँहगहेकी लाज ॥ ३ ॥
नन्दरायके लाड़िले, भक्तन प्राणअधार।
भक्तरामके उर बसो, पहिरे फूलनहार ॥ ४ ॥
भक्ति भक्त भगवन्त गुरु, चतुर नाम वपु एक।
तिनके पगवन्दन किये, नाशत विघ्न अनेक ॥ ५ ॥
तिनपर भ्रमर समान नित, अटकि रहै मन मोर।
भक्तराम कबहूँ नहीं, चितवैं काहू ओर ॥ ६ ॥
हर्षि देहु वर माँगहूँ, यशुमति जीवनमूर।
नित दासनके पगनकी, भक्तरामको धूर ॥ ७ ॥

समाजीवचन।

श्रीव्रजराजकुमारवरगाइये, आनन्दकीनिधिवरगाइये ॥
भक्तनकोमनभावतोगाइये, श्रीलाड़िलीललनवरगाइये ॥
दोहा—नवरसमें कवियन कह्यो, सरस अधिक शृङ्गार।
ताहूमें अतिसरस पुनि, सो यह रासविहार ॥ १ ॥
नवहि अङ्ग शृङ्गारके, होरी चोरी दान।
छलहिकरनवनऋतुगमन, विरहमिलनअरुमान ॥ २ ॥
नागरिया नवनागरी, खेलत रास विलास।
पल पल वारों हे सखी, नित नव नागरिदास ॥ ३ ॥
चन्द्रमिटै दिनकर मिटै, मिटै त्रिगुण विस्तार।
दृढ़व्रत श्रीहरिवंशको, मिटै न नित्य विहार ॥ ४ ॥
काहूके बल भजनको, काहूके आचार।

व्यास भरोसे कुँवरके, सोवत पाँव पसार ॥ ५ ॥
मुरली मदनगुपालकी, बाजत गहर गँभीर ।
कृष्णदास बाजतसुनी, कालिन्दीके तीर ॥ ६ ॥
सुख मन रूप अनूपहै, कह वरणे कविवृन्द ।
अब वृन्दावन वरणिहौं, जहँ वृन्दावनचन्द ॥ ७ ॥
वृन्दावन आनन्दघन, कछु छवि वरणि न जाय ।
कृष्णललितलीलाकरण, धारिरह्यो जड़ताय ॥ ८ ॥
मुक्ति कहै गोपाल सों, मेरी मुक्ति वताय ।
ब्रज रज उड़ मस्तक लगै, मुक्ति मुक्त ह्वै जाय ॥ ९ ॥
नारायण ब्रज भूमिको, सुरपति नावैं माथ ।
जहाँ आय गोपी भये, श्रीगोपेश्वर नाथ ॥ १० ॥
धनि वृन्दावन धाम है, धनि वृन्दावन नाम ।
धनि वृन्दावन रसिक जो, सुमिरैं राधाश्याम ॥ ११ ॥

श्रीठाकुरजीको वचन ।

दोहा–राधे मेरी लाडिली, मेरीओर तू देख ।
मैं तोहिं राखों नयनमें, काजरकीसी रेख ॥ १२ ॥
राधे आधे नयनसों, तिरछी चितवन चाय ।
जो निशान आगे चले, पाछेको फहराय ॥ १३ ॥
लटसम्हार प्रियनागरी, कहा भयोहै तोहिं ।
तेरी लट नागिनिभई, डसा चहतहै मोहिं ॥ १४ ॥
राधेजूके वदनपै, वेंदी अति छवि देय ।
मानो फूली केतकी, भ्रमर वासना लेय ॥ १५ ॥
प्यारीजूके वदनपै, वसत चालिसों चोर ।
दश सारस दश हंसहैं, दश चातक दश मोर ॥ १६ ॥
गोरेमुखपै तिल वन्यो, ताहि करूँ परणाम ।

मानों चन्द्र बिछायकै, पौढ़े शालिग्राम ॥ १७ ॥
लट छूटी तियशीशते, रहि कपोल लपटाय ।
मानो छौना नागको, पीपी अमी अघाय ॥ १८ ॥
ब्रजवासी वल्लभ सदा, मेरे जीवन प्रान ।
इन्हें न नेक बिसारिहौं, मोहिं नंदकी आन ॥ १९ ॥
ब्रज तज अनत न जाइहौं, मेरे है यह टेक ।
भूतल भार उतारिहौं, धरिहौं रूप अनेक ॥ २० ॥

श्रीप्रियाजीको वचन ।

मैं बेटी वृषभानुकी, राधा मेरो नाम ।
तीनलोकमें गाइये, बरसानो नँदगाम ॥ २१ ॥
वंशीवारे मोहना, वंशी नेक बजाय ।
तेरी वंशी मन हरचो, घर अँगना न सुहाय ॥ २२ ॥
आउ पियारे मोहना, पलक झाँप तोहिं लेऊँ ॥
ना मैं देखौं और को, ना त्वहिं देखन देऊँ ॥ २३ ॥

सखियनको वचन ।

एरे कठिन अहीरके, नेक पीर पहिचान ।
तव मुख दर्शन कारणे, छांड़ि दई कुलकान ॥ २४ ॥
मोर मुकुट कटि काछनी, पीतांबरवनमाल ।
यह मूरति मम मन बसो, सदा बिहारीलाल ॥ २५ ॥
कर मुरली लकुटी गहे, घूघरवारे केश ।
यह बानिक नयनन बसो, श्याम मनोहर वेश॥ २६ ॥
मोहनि मूरति श्यामकी, मो मन रही समाय ।
ज्यों मेहँदीके पातपै, लाली लखी न जाय ॥ २७ ॥
मनमोहन मन मोहना, मनमोहन मनमाहिं ॥
या मोहन ते सोहना, तीनलोकमें नाहिं ॥ २८ ॥

चलो सखी तहँ जाइये, जहाँ बसैं व्रजराज ।
गोरस बेचन प्रेमरस, एक पंथ द्वै काज ॥ २९ ॥
मोरमुकुटकी लटक पर, अटक रहे दृग मोर ।
कान्हकुँवर सखि यमुनतट, नटवर नंदकिशोर ॥ ३० ॥
जिन मोरनके पंख हरि, राखत अपने शीश ।
तिनके भागनकी सखी, कौन करिसकै रीश ॥ ३१ ॥
वृंदावनके वृक्ष को, मर्म न जानै कोय ।
डार पात फल फूलमें, राधे राधे होय ॥ ३२ ॥
वृंदावन बानिक बन्यो, भ्रमर करत गुंजार ।
दुलहिनि प्यारी राधिका, दूलह नंदकुमार ॥ ३३ ॥
व्रज चौरासी कोशमें, चार गाम निज धाम ।
वृंदावन औ मधुपुरी, बरसानो नँदगाम ॥ ३४ ॥
नँद नंदीश्वर राजहीं, बरसाने वृषभान ।
दोनों कुलदीपक भये, गावत वेद पुरान ॥ ३५ ॥
व्रजसमुद्र मथुरा कमल, वृंदावन मकरंद ।
व्रजवनिता सब पुष्प हैं, मधुकर गोकुलचंद ॥ ३६ ॥
उत उरझी कुंडल अलक, इत बेसर वनमाल ।
गौर श्याम उरझे दोऊ, मंडल रास रसाल ॥ ३७ ॥
प्रेम सरोवर प्रेमको, भरयो रहै दिन रैन ।
जहँ प्रियप्यारी पग धरैं, लाल धरैं दोउ नैन ॥ ३८ ॥
मोरमुकुटकी निरखि छवि, लाजत मदन करोर ।
चंद्र वदन सुख सदन पै, भावक नैन चकोर ॥ ३९ ॥
कमलनको रवि एक है, रविको कमल अनेक ।
हमसे तुमको बहुत हैं, तुमसे हमको एक ॥ ४० ॥
जलमें बसै कमोदनी, चंदा बसै अकाश ।

जो जाके मनमें बसै, बसै सो ताके पास ॥ ४१ ॥
बाहँ छुड़ाये जात हौ, निबल जानिकै मोहिं ।
हिरदै ते जब जाउगे, सबल सराहौं तोहिं ॥ ४२ ॥
जो मोसों मोसी करो, तो नहिं कहौं कठोर ।
तुमहौ तैसी कीजिये, सुनो रसिक शिरमोर ॥ ४३ ॥
पाग बनो पटुका बनो, बनो लालको भेख ।
राधावल्लभ लालकी, दौर आरती देख ॥ ४४ ॥

अथ बाललीलाके पद ।

राग भैरव।

बंदौं श्रीहरिपद सुखदाई। जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अँधरेको सब कछु दरशाई। बहिरो सुनै गूँग पुनि बोलै रंक चलै शिर छत्र धराई। सूरदास स्वामी करुणामय बारंबार नमो तिहिं पाई ॥ १ ॥

राग रामकली।

भयो जयकार जन्मे मुरारी ॥ शीश वसुदेव लै चले हैं कृष्णको शूपमें खेलत विहारी। लालके शीशपर मुकुट सिहरा बन्यो हार हमेल छबि ललित पियारी। सूरके प्रभु अवतार लियो भक्तहित बढ्यो आनंद गोकुल मँझारी ॥ २ ॥

राग आसावरी।

देखोरे अद्भुत अविगतिकी गति कैसोरूप धरचो है तीनलोक जाके उदर भवनमें शूपके कोन पड्यो है ॥ जामुख दरश काज सनकादिक चतुराई सब ठानी है, सो मुख चूमत मात यशोदा दूध धार लपटानी है ॥ जिन कानन गजकी विपदा सुनि गरुडासन विसरायो है। तिन काननके निकट

यशोदा हुलरायो गुणगायो है ॥ जिन्हीं भुजा प्रहलाद उबारयो प्रगटहोय खँभ फारयो है ॥ सो भुज पकर ग्वाल अरु गोपी ठाढे होय दुलारयो है ॥ जाके काज रुद्र ब्रह्मादिक कठिन योग व्रत साध्यो है ॥ ताको धाय नंदकी रानी ऊँखल सों गहि बांध्यो है ॥ जाको मुनिजन ध्यान धरत हैं शंभु समाधि न टारी है ॥ सो ठाकुर है सूरदासको गोकुल गोप विहारी है ॥ ३ ॥

राग बिलावल ।

आदि सनातन हरि अविनासी । सदा निरंतर घट घट वासी ॥ पूरणब्रह्म पुराण बखाने । चतुरानन शिव अंत न जाने ॥ महिमा अगम निगम जिहिं गावै । सो यशुदा लिये गोद खिलावे ॥ एक निरंतर ध्यावैं ज्ञानी । पुरुप पुरातन है निर्वानी ॥ शुक शारदको नाम अधारा । नारद शेप न पावैं पारा ॥ जप तप संयम ध्यान न आवे । सोइ नंदके आँगन धावे ॥ लोचन श्रवण न रसना नासा । बिन पद पाणि करैं परकासा ॥ अरुण असित सित वरण न धारे । मुनि मनसामें कहा विचारे ॥ विश्वंभर निज नाम कहावे । घर घर गोरस जाय चुरावे ॥ जरा मरण ते रहित अमाया । मात पिता सुत बंधु न जाया ॥ आदि अनंत रहे जलशायी । परमानंद सदा सुखदायी ॥ ज्ञानरूप हिरदेमें बोलै । सो बछरनके पाछे डोलै ॥ जल थल अनल अनिल नभ छाया । पांच तत्त्वमें जग उपजाया ॥ लोक रचै पालै अरु मारै । चौदह भुवन पलकमें धारै ॥ काल डरै जाके डर भारी । सो ऊँखल बाँध्यो महतारी ॥ माया प्रकट सकल जग मोहै । करण अकरण करै सोई सोहै ॥ जाकी माया लखै न कोई । निर्गुण सगुण धरे वपु दोई ॥ शिव सनकादिक अंत न पावैं । सो गोपनकी गाय

चरावैं॥ गुण अनंत अविगतिहिं जनावै । यश अपार श्रुति पार न पावै ॥ चरणकमल नित रमा पलोवै। चाहत नेक नयन भर जोवै ॥ अगम अगोचर लीला धारी । सो राधा वश कुंज-बिहारी ॥ जो रस ब्रह्मादिक नहिं पायो । सो रस गोकुल गलिन बहायो ॥ बड़भागी यह सब व्रजवासी। जिनके सँग खेलें अविनाशी ॥ सूर सुयश कहि कहा बखानै । गोविंदकी गति गोविंद जानै ॥ ४ ॥

साख मुनिजन भरें देव अस्तुतिकरैं स्मृति पुराण गुण वेद गावैं। तुम प्रभु एक अनेक ह्वै रमि रहे अमित जगजंतु नहिं अंत पावैं॥ शेष महेश गंधर्व किन्नर थके व्यास ब्रह्मादि नहिं पार पावैं। चरण पाताल औ शीश आकाशमें चंद्र सूरज दोउ दृग सुहावैं॥ यही परतीत तेरी चहुँ युगनमें भक्तके हेतु धरि देव धावैं। कहत मिहर दास नीवास लियो नंदगृह कान्ह सुतजान यशुमति खिलावैं॥ ५॥

राग रामकली।

हौं इक नई बात सुनि आई॥ महरि यशोदा ढोटा जायो घर घर बजत बधाई। द्वारे भीर गोप गोपिनकी महिमा बरणि न जाई। अति आनंद होत गोकुलमें रत्न भूमि निधि छाई। नाचत तरुण वृद्ध अरु बालक गोरस कीच मचाई। सूरदास स्वामी सुखसागर सुंदर श्याम कन्हाई॥ ६॥

राग भैरव।

देखो री यह कैसो बालक रानी यशोमति जायाहै। सुंदर वरण कमलदललोचन देखत चंद्र लजायाहै॥ पूरण ब्रह्म अलख अविनाशी प्रगट नंद घर आयाहै। मोर मुकुट पीतांबर सोहै

केसर तिलक लगायाहै ॥ कानन कुंडल गलबिच माला कोटि भानु छवि छायाहै। शंख चक्र गदा पद्म विराजै चतुर्भुज रूप बनायाहै ॥ परमेश्वर पुरुषोत्तम स्वामी यशुमति सुत कहलायाहै। मच्छ कच्छ वाराह औ वामन रामरूप दरशायाहै ॥ खंभ फारि प्रगटे नरहरि वपु जन प्रहलाद छुडायाहै। परशुराम बुध निहकंलक ह्वै भुका भार मिटायाहै ॥ कालियमर्दनकंस निकन्दन गोपीनाथ कहायाहै। मधुसूदन माधव मुकुन्द प्रभु भक्तवछल पद पायाहै ॥ शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस-मुख गायाहै ॥ सो परब्रह्म प्रगट ह्वै व्रजमें लूट लूट दधि खायाहै। *परमानंद कृष्ण मन मोहन चरणकमल चित लायाहै ॥ ७ ॥*

राग वड़हंस।

मोहिं नंदघर लै चलो ढाढ़िनियाँ मचल रही ॥ पुत्र भयो सब जगने जान्यो मोते क्यों न कही ॥ मोहिं मिलै नख शिखलौं गहनो लाउंतो बात सही ॥ जरदोजीके वस्त्र मिलैंगे फरिया चोली-नई। कृष्णकृपाविन को या जगमें जिन मेरी बांह गही ॥ ८ ॥

राग आसावरी।

आज वधाइयांवे बाबानंद दे दर्बार ॥ हुआ सुत सोहना वे मनदा मोहना सुकुमार ॥ आई मिल गोपियां वे गावें हर्ष मंग-लचार। गुणी जन गावँदे वे नाचें देदे करतार ॥ ९ ॥

सवैया।

पूत सुपूत जन्यो यशुदा, इतनी सुनिकै वसुधा सब दौरी। देवन को सु आनंद भयो सुन, धावत गावत मंगल गौरी ॥ नंद

कछू इतनो जो दियो घनश्याम कुबेरहुँकी मति बौरी ॥ देखत मोहिं लुटाय दियो न बची बछिया छछिया न पिछौरी ॥ १० ॥

घनाक्षरी।

फूल गये गोप गृह गोपिकन भूल गये, हुलसी मचाई माते प्रेम सरसाईमें। कीच मची दधिकी अधिक गैल गैलन में, कीकन दै सबै पगे आनँद बधाईमें ॥ छोटी सुठि चोटी है कछोटी कटि मोटी भई, फैलगई थौन बड़े स्वेदकी अवाईमें। राजी दिल मोदन विनोदन विहँसि नन्द, नाचे आज आँगन कन्हाईकी बधाईमें ॥ ११ ॥

राग प्रभाती।

गिरिधर लोरी लै मथुराके वासी ॥ चिरजीवो वसुदेवके नंदन बलि बलि माता घोरी। भूपर भार भयो अतिभारी सुर समूह सब जाय पुकारी। जगतपिता जगनायक स्वामी धर्म्म कथा जगथोरी॥ गगन गिरासो यों हरि भाषो असुर मार संतन पतिराखो आदि पुरुष तेरो अंत न पायो धरहु भक्त हित खोरी। वसुदेव देवकी अति हर्षाने पूरणब्रह्म जान सन्माने स्तुति करत बहोर बहोरी कंसके भय चित चोरी॥ नंद यशोदा हर्ष निरख मन पायो निर्धन मनहुँ परमधन आदि युगादि धरणिधर माधव लखि न जात गति तोरी। व्रजवधुआं मिल नँद गृह आई भाग भले हरि दर्शन पाई हिल मिल पलना देत झुलाई हाथ गहे पट डोरी ॥ दैत्यानी इक कंस पठाई कर छल विष स्तन पर लाई बनि वरांगना अति छबि सुंदर व्रज वधुआं चित चोरी। पलनासों हरि जाय उठाये चूमि नयन स्तन मुख लाये

ऐसी चूस करी मेरे ललना लीने प्राण निचोरी ॥ यमलार्जुनको दर्शन दीनो नारद वचन सफल करलीनो ऊखलसों प्रभु आप बँधाये विमल वृक्ष दोउ जाय गिराये शब्दभयो घनघोरी। तृणावर्त अघासुर मारे और दैत्य कइ कोटि सँहारे कहा कहों अगणित गुण तेरे इक रसना प्रभु मोरी ॥ १२ ॥

राग पीलो।

आज श्रीगोकुलमें बजत बधावरारी। यशुमति नन्दलाल पायो कंसराज कालपायो गोपिनने ग्वालपायो वनको शृङ्गार री ॥ गौअन गोपाल पायो याचकन भाग पायो सखियन सुहाग पायो प्रिया वर सांवरा री। देवनने प्राण पायो गुणियनने गान पायो भक्तन भगवान पायो सूर सुखदावरारी ॥ १३ ॥

राग आसावरी।

आज नंदजू तुम्हारे घरमें पुत्र जन्म सुनि आयो। लग्नशोधि ज्योतिपको गिनिके चाहत तुम्हें सुनायो ॥ संवत् सरस भाद्रपद मासे आठें तिथि बुधवार। कृष्णपक्ष रोहिणी अर्द्धनिशि हर्षण योग उदार ॥ वृष है लग्न उच्चके निशिपति तनय वहुत सुखदेहै। चौथे सिंह राशिके दिनपति जीति सकल में ह्वैहै ॥ पांचें बुध कन्याके जो हैं पुत्रन वहुत बढैहैं। छठेहैं शुक्र तुलाके वलयुत शत्रुरहन नहिं पैहैं ॥ ऊँच नीच युवती वहु करिहैं सातें राहु परेहैं। भागभवनमें मकर महीसुत पूर्णैश्वर्य करेहैं ॥ कर्म भवनमें ईश शनीचर श्याम वर्ण तनु ह्वैहैं। लाभभवनमें मीन वृहस्पति नौनिधि घरमें ऐहैं॥आदि सनातन हरि अविनाशी घट घट अन्तर्यामी। सो तुम्हरे गृह आय प्रगट भये परदासके स्वामी ॥ १४ ॥

राग भैरव।

मैं योगी यश गाया री बाला मैं योगी यश गाया॥ तेरे सुतके दर्शन कारण मैं काशी तजि धाया॥ परब्रह्म पूरण पुरुषोत्तम सकल लोक जा माया॥अलख निरंजन देखन कारण सकल लोक फिर आया॥ धनि तेरो भाग यशोदा रानी जिन ऐसो सुत जाया। गुणन बड़े छोटे मतभूलो अलख रूप धरआया ॥ जो भावै सो लीजिय रावल करो आपनी दाया। देहु अशीश मेरे बालकको अविचल बाढै काया॥ ना मैं लेहों पाटपटंबर ना मैं कंचन माया ।मुख देखों तेरे बालकको यह मेरे गुरुने बताया॥ कर जोरे बिनवैं नँदरानी सुन योगिनके राया । मुखदेखन नहिं देहों रावल बालक जात डराया॥ जाकी दृष्टि सकल जग ऊपर सो क्यों जात डराया॥ तीन लोकका साहिब मेरा तेरे भवन छिपाया॥ कृष्णलालको लाई यशोदा कर अंचर मुख छाया। गोद पसार चरणरज बंदी अति आनंद बढाया॥ निरख निरख मुख पंकज लोचन नयननीर बहाया। सूरश्याम परिकर्मा करके शृंगीनाद बजाया॥ १५॥

दर्श तो दिखाजा छैला दर्शतो दिखाजा॥ दिलदा महरम साँवरा यार॥ जांघनि काछनि कटि पीतांबर श्रवणन कुंडल शीश मुकुट अरु घूँघरवारी अलकैं झलकैं नयनोंमें समाजा॥ बंशीधुन यमुना तीरे नाचत गावत गोपन संग नंदजूके किशोर मेरी तपन बुझाजा। जानकीदास भये निराश निकसत नाहीं पापी श्वास स्वप्नहूँमें दर्श देके सकल दुख मिटाजा॥ १६॥

राग भूपाली।

बोलता क्यों नहीं रे मिजाजी बोलता क्यों नहीं रे॥ शिर तेरे ककरेजी चीरा गल मोतियन की माल रे। हाथमें दुधारा खांडा मारता क्यों नहीं रे॥ १७॥

राग बिलावल ।

काहू जोगियाकी लागी नजर मेरो बारो कन्हैया रोवै री। मेरी गली जिन आउरे जोगिया अलख अलख कर बोलै री ॥ घर घर हाथ दिखावै यशोदा बार बार मुख जोवै री। राई लोन उतारत छिन छिन सूरको प्रभु सुख सोवै री ॥ १८॥

राग भैरव।

चल रे योगी नंदभवनमें यशुमति तोहिं बुलावै। लटकत लटकत शंकर आवैं मनमें मोद बढ़ावे ॥ नंद भवनमें आये योगी राई लोन कर लीनो। वार फेर लालाके ऊपर हाथ शीसपै दीनो ॥ व्यथा भई सब दूर वदनकी किलकि उठे नँदलाला। खुशी भई नँदजूकी रानी दीनी मोतिन माला ॥ रहु रे योगी नंदभवनमें व्रजमें वासो कीजे। जब जब मेरो लाला रोवे तब तब दर्शन दीजे ॥ तुमतो योगी परम मनोहर तुमको वेद बखानै। बूढो बाबू नाम हमारो सूरश्याम मोहिं जानै ॥ १९॥

राग बिलावल।

कर पग गहि अँगुठा मुख मेलत। प्रभु पौढे पालने अकेले हर्षि हर्षि अपने रँग खेलत ॥ शिव शोचत बिधि बुद्धि विचारत पट्ठ बाढ्यो सागर जल झेलत। बिडरि चले युग प्रलय जानकर दिगपति दिगदंती न सकेलत ॥ मुनि मन भीत भये भू कंपत शेष सकुच सहसो फण पेलत। सो सुख सूर भयो सब गोकुल किलकत कान्ह शकट पग ठेलत ॥ २०॥

शोभित कर नवनीत लिये। घुटुरनचलत रेणु तनु मण्डित मुख दधि लेप किये ॥ चारु कपोल लोल लोचन गोरोचन तिलक दिये। लट लटकन मनु मत्त मधुपगण मादक मधुहि पिये ॥ कठु-

ला कंठ वज्रकेहरि नख राजत रुचिर हिये। धन्य सूर एकौ पल यह सुख का शतकल्प जिये ॥ २१ ॥

राग भैरव।

जागिये गोपाल लाल जननी बलिजाई। उठो तात भयो प्रात रजनीको तिमिर गयो खेलत सब ग्वाल बाल मोहन कन्हाई ॥ उठो मेरे आनँदकन्द किरणचन्द मंद २ प्रकट्यो आकाश भानु कमलन सुखदाई। संगी सब पुरत बेनु तुम बिना न छुटे धेनु उठो लाल तजो सेज सुंदर वर राई ॥ मुख ते पट दूर कियो यशुदाको दर्श दियो माखन दधि माँगि लियो विविध रस मिठाई। जेंवत दोउ राम श्याम सकल मङ्गल गुणनिधान जूँठनि रहि थारमें सो मानदास पाई ॥ २२ ॥

जागिये व्रजराज कुँवर कमल कोश फूले। कुमुद वृन्द सकुच भये भृङ्ग लता झूले ॥ तमचर खग शोर सुनो बोलत बनराई। राँभत गौ क्षीर देन बछरा हित धाई ॥ विधु मलीन रवि प्रकाश गावत व्रज नारी। सूरश्याम प्रात उठे अम्बुज कर धारी ॥ २३ ॥

राग रामकली।

मोहन जाग हौं बलि गई। ग्वाल बाल सब द्वार ठाढ़े बेर वनको भई। पीतपट कर दूर मुखते छाँड़ दे अलसई ॥ अति अनन्दित होत यशुमति देख द्युति नित नई। सूरके प्रभु दरश दीजै अरुण किरण छई ॥ २४ ॥

राग भैरव।

जागो बंशीवारे ललना जागो मोरे प्यारे ॥ रजनी बीती भोर भयोहै घर घर खुले किंवारे। गोपी दही मथत सुनियतहैं कंगनाके झनकारे ॥ उठो लालजी भोर भयोहै सुर नर ठाढ़े द्वारे।

ग्वाल बाल सब करत कुलाहल जय जय शब्द उचारे ॥ माखन रोटी हाथमें लीन्हीं गौअनके रखवारे । मीराके प्रभु गिरिधर नागर शरण आयाँको तारे ॥ २५ ॥

जागो हो मोरे जगत उज्यारे । कोटि मदन मुसुकुन पर वारत कमलनयन अँखियनके तारे ॥ ग्वाल बच्छ सबरे सँग लैकै यमुन तीर वन जाउ सवारे । परमानन्द कहत नँदरानी दूर जानि जाउ मेरे व्रजके रखवारे ॥ २६ ॥

राग ललित ।

जागो जागो हो गोपाल । नाहिन अति सोइयतहै प्रात परम शुचिकाल ॥ फिर फिर जात निरखि मुख छिन छिन सब गोपनके बाल । बिन विकसे मनो कमल कोश ते ते मधुकरकी माल ॥ जो तुम मोहिं पतियाउ न सूर प्रभु सुन्दर श्याम तमाल । तो उठिये आपन अवलोकिये तजि निद्रा नयनन विशाल ॥ २७ ॥

राग विलावल ।

कौन परी नँदलालहिं बानि । प्रातसमय जागनकी बिरियां सोवत है पीताम्बर तानि ॥ प्रात यशोदा कबकी ठाढी दधि ओदन भोजन घृत सानि । उठो श्याम कछु करो कलेऊ सुन्दर बदन दिखाओ आनि ॥ संग सखा सब द्वारे ठाढे मधुवन धेनु चरावन जानि । सूरश्याम सुन्दर अलसाने सोवत हैं अजहूँ निशि मानि ॥ २८ ॥

राग भैरव ।

दधिके मतवारे कान्ह खोलो प्यारे पलकें । शीश मुकुट लटें छूटीं और छूटीं अलकें ॥ सुर नर मुनि द्वार ठाढ़े दरश कारण किलकें । नासिका को मोति सोहै बीच लाल ललकें ॥ कटि पीताम्बर मुरली कर श्रवण कुण्डल झलकें । सूरदास मदन मोहन शरद देहु भलकें ॥ २९ ॥

राग बिलावल ।

नन्दनँदन वृन्दावनचन्द । यह कहि जननि जगावत लालन जागो मोरे आनँदकन्द ॥ आलस भरे उठे मनमोहन चलत चाल ठुमकत अतिमन्द । पोंछि वदन अंचलसों यशुमति उर लगाय उपज्यो आनन्द ॥ सब ब्रजयुवती आईं देखनको दर्शन होत मिट्यो दुख द्वंद । ब्रजपति श्रीगोपाल परिपूरण जाको यश गावत श्रुति छन्द ॥ ३० ॥

बलि बलि जाउँ मधुर सुर गावो । अबकी बेर मेरे कुँवर कन्हैया नन्दहि नाच दिखावो ॥ तारी दै दै अपने करकी परमप्रीति उपजावो । आन जन्तु धुनि सुनि डरपत कत मो भुज कंठ लगावो ॥ जिन शंका जिय करो लाल मेरे काहेको शर्मावो । बाँह उठाय कालहकी नाईं धौरी धेनु बुलावो ॥ नाचो नेक जाउँ बलि तेरी मेरी साध पुरावो । रत्नजटित किंकिणि पग नूपुर अपने रंग बजावो ॥ कनक खंभ प्रतिबिंब आपनो नव नवनीत खवावो । परमदयालु सूरके उरते टारे नेक न जावो ॥ ३१ ॥

राग बिलावल ।

बलि बलि जाउँ छबीले लालके । धूसर धूर घुटुरुवन डोलन बोलन वचन रसालके ॥ छिटकरहीं चहुँदिशि जो लटुरिय लटकनि लटकन भालके । मोतिन सहित नासिका नथुनी कंठ कमलदल मालके ॥ कछु इक हाथ कछुक मुख माखन चितवन नयन विशालके । सूरदास प्रभु प्रेम मगनह्वै ढिग न तजत ब्रजबालके ॥ ३२ ॥

आउ गुपाल शृँगार बनाऊँ । अति सुगन्धको करूँ उबटनो उष्णोदक नहवाऊँ ॥ अंगअँगोछि गुहौं तेरी बेनी फूलन रचि रचि भाल बनाऊँ । सुरँगलाल कर्तारी चीरा रत्न खचित शिर पेंच बना

ऊँ ॥ वागो लाल सुनहरी छापा हरी इजार चरण चरचाऊँ। पटुका सरस वैंजनी रँगको हँसुली हेम हमेल धराऊँ॥ गजमोतिन-के हार मनोहर वनमाला लै उर पहिराऊँ। लै दर्पण देखो मेरे वारे निरखि निरखि छबि नयन सिराऊँ॥ मधु मेवा पकवान मिठाई अपने कर लै तुम्हैं खवाऊँ। विष्णुदासको यही कृपाफल वाल-चरित हौं निशिदिन गाऊँ॥ २३ ॥

राग देश ।

धूर भरे अँग खेलत मोहन आछी वनी शिर सुन्दर चोटी। देखो री कागके भाग भले हैं हाथसों लै गयो माखन रोटी ॥ खात पियत कूदत भए अँगना पाइन पाइन पर्त कछोटी। सूरदास प्रभु या छवि निरखत वार डारों शिर रवि शशि कोटी ॥ २४ ॥

राग गौरी ।

कहन लागे मोहन मैया मैया।नन्दरायसों बाबा बाबा अरु हलधर सों भैया ॥ खेलत फिरत सकल गोकुलमें घर घर बजत वधैया। परमानन्द दासको ठाकुर व्रजजन केलि करैया ॥ २५ ॥

राग रामकली ।

हौं लालको मुख देखन आई। कल्ह मुख देख गई दधि वेचन जातहि गयो बिकाई ॥दिनसों दूनो लाभ भयो घर काजर बछिया जाई। आई हौं धाय थमाय सङ्गकी मोहन देहु जगाई॥ इतनी सुनत विहँसि उठ वैठे नागरि निकट बुलाई। सूरदास प्रभु चतुर ग्वालिनी सैन सँकेत वताई॥ २६ ॥

राग विलावल ।

मैया मोहिं वडो कर लै री। दूध दही घृत माखन मेवा जव मांगों तव दे री ॥ कछू हौंस राखे जिन मेरी जोइ जोइ मोहिं रुचै

री । होउँ सबल सबहिनमें जैसे सदा रहौं निर्भय री ॥ सूर कंस गहि केश पछारो करिहौं मथुरा जय री ॥ ३७ ॥

राग रामकली ।

मैया मेरी कब बाढ़ैगी चोटी । किती बेर मोहिं दूध पियत भइ यह अजहूँ है छोटी ॥ तू जो कहत बलकी बेनी ज्यों हो है लांबी मोटी । काढ़त गुहत न्हवात जैहै नागिनसी भुइँ लोटी ॥ काचो दूध पियावत मोहन देती माखन रोटी । सूर मैया याही सर रिझयो हरि हलधरकी जोटी ॥ ३८ ॥

राग सारंग ।

अब मेरी खेलन जात बलैया । जबहिं मोहिं देखत लरिकन सँग तबहिं खिझत बल भैया ॥ मोको कहत तात वसुदेव है देवकी तेरी मैया । मोललियो कछु दे वसुदेवहि कर कर यतन बडैया ॥ पाछे नंद सुनत हैं ठाढे तब हँस हँस उर लैया । सूर नंद बलरामहिं हटक्यो सुन मन हर्ष कन्हैया ॥ २९ ॥

राग सोरठ ।

मैया मोहिं दाऊ बहुत खिझायो । मोसों कहत मोलको लीनो कब यशुमतिने जायो॥कहा करूँ या रिसके मारे खेलनहौं नहिं जात। पुनि पुनि कहत कौन है माता कौन है तेरो तात ॥ गोरे नंद यशोदा गोरी तुम कत श्याम शरीर । तारी दै दै ग्वाल हँसत हैं सीख देत बलवीर ॥ तू मोहिंको मारन सीखी दाउहिं कभू न खीझै । मोहनको मुख रिस समेत लखि सुनि सुनि यशुमति रीझै ॥ सुनो कान्ह बलभद्र चवाई जन्महिको वह धूत । सूरदास मोहिं, गोधनकी सौं हौं जननी तू पूत ॥ ४० ॥

राग रेखता ।

इस नंदके फरजंदने बाँकी अदा धरी । भौंहें कमान झुक रही गोशेसे आ मिली ॥ तिरछा मुकुट धर शीशपर मुरली अधर धरी। कानोंमें कुंडल झलकते गल मोतियोंकी लरी ॥ चितवन जो तेरी भाला जिन घायल मुझे करी । शिर मुकुट सोहै मोरका और पाग जरकरी ॥ इमि सूर कहै श्याम सों धन्य आजकी घरी ॥ ४१ ॥

राग विलावल ।

नंदभवनको भूषण माई । यशुदाको लाल वीर हलधरको राधारमण परम सुखदाई ॥ शिवको धन संतनको सर्वस महिमा वेद पुराणन गाई । इंद्रको इंद्र देव देवनको ब्रह्मको ब्रह्म अधिक अधिकाई ॥ कालको काल ईश ईशनको अतिहि अतुल तोल्यो नहिं जाई।नंददासको जीवन गिरिधर गोकुल गामको कुँवर कन्हाई॥४२॥

राग रामकली ।

हाहा लेहु एको कोर । बहुत वेर भई है भूँखे देख मेरी ओर ॥ मेल मिश्री दूध औंट्यो पीउ ह्वैहै जोर । अवहीं खेलन टेरि हैं तुव ग्वाल भयो अति भोर ॥जगे पक्षी द्रुम द्रुमन प्रति करन लागे शोर । खेलवेको उठि भजोगे मान मोर निहोर ॥ लेहुँ ललन वलाय तेरी जोर अंचल ओर । वदनचंद्र विलोकि शीतल होत हृदयो मोर ॥ बैठ जननी गोद जेंवन लगे गोविंद थोर । रसिक बालक सहज लीला करत माखनचोर ॥ ४३ ॥

मानो बात लालन मोरी । करो भोजन रोष भूलो हौं जो मैया तोरी ॥ दूध दधि नवनीत घृतपक परसि राख्यो थार । कहा लोटत धराणिमें मेरे लाल होत अवार ॥ गोद बैठो हौं जिवाऊं गाऊं तेरे गीत । खेलवेको तोहिं बोलत ग्वाल तेरे मीत ॥ कहो जाको ताहि

टेहूँ बैठें तेरे पास। करों दधि मंथान उदयो सूर कमल विकास ॥ मायके सुनि वचन हँसिउर आय लगे गुपाल। कियो भोजन दियो अतिसुख रसिक नयनाविशाल ॥ ४४ ॥

राग धनाश्री।

महरानेते पांडे आयो। ब्रज घर घर बूझत नँदरावर पुत्र भयो सुनिके उठधायो ॥ पहुँच्यो आय नंदके द्वारे यशुमति देखि अनंद बढ़ायो। पांव धोय भीतर बैठायो भोजनको निज भवन लिपायो ॥ जो भावै सो भोजन कीजे विप्र मनहिं अति हर्ष बढ़ायो। बड़ी वैस विधि भयो दाहिनो धनि यशुदा ऐसो सुत जायो ॥ धेनु दुहाय दूध लै आई पँडि रुचिकर खीर चढ़ायो। घृत मिष्टान्न खीर मिश्रित करि परसि कृष्ण हित ध्यान लगायो ॥ नयन उघार विप्र जो देखे खात कन्हैया देखन पायो। देखो आय यशोदा सुत कृत सिद्ध पाक यह आन जुँठायो ॥ महरि विनयकरि दोउकर जोरयो घृत मधु पय फिर बहुत मँगायो। सूर श्याम कत करत अचगरी बारम्बार ब्राह्मणहिं खिझायो ॥ ४५ ॥

राग रामकली।

पांड़े भोग न लागन पावै। कर कर पाक जभी अर्पत हैं तभी ताहि छुइ आवै ॥ इच्छाकर मैं ब्राह्मण नोत्यो ताको श्याम खिझावै। वह अपने ठाकुरहिं जिमावत तू तबहीं छुइ आवै ॥ जननी दोष देत कत मोको विधि विधान कर ध्यावै। नयन मूँदि कर जोर नाम लै वारंवार बुलावै ॥ यह अंतर नहिं होत भक्त सों क्यों मेरे मनभावै ॥ सूरदास बलि बलि विलास पर जन्म पाय यश गावै ॥ ४६ ॥

राग विलावल।

सफल जन्म मेरो आज भयो। धनि गोकुल धनि नंद यशोदा जिनके हरि अवतार लियो ॥ प्रगट भयो पुण्य अब सुकृत [illegible]

वंधु मोहिं दर्श दियो । वारंवार नंदके आँगन लोटत द्विज आनंद भयो ॥ मैं अपराध कियो विनजाने को जाने किहिं वेष जियो । सूरदास प्रभु भक्त हेतु वश यशुमतिके अवतार लियो ॥ ४७ ॥

राग झँझोटी ।

चंद्र खिलौना लेहौं मैया मेरी चंद्र खिलौना लेहौं ॥ धौरीको पयपान न करिहौं वेणी शिर न गुथैहौं । मोतिन माल न धरिहौं उरपर झँगुली कंठ न लैहौं ॥ जैहौं लोट अभी धरणीपर तेरी गोद न ऐहौं । लाल कहै हौं नंद ववाको तेरो सुत न कहै हौं ॥ कान लाय कछु कहत यशोदा दाउहि नाहिं सुनै हौं । चंदाहूते अति सुंदर तोहिं नवल दुलहिया व्यैहौं ॥ तेरी सौंह मेरी सुन मैया अवहीं व्याहन जैहौं । सूरदास सव सखा वराती नूतन मंगल गैहौं ॥ ४८ ॥

रागविलावल ।

सुन सुत एक कथा कहुँ प्यारी । कमलनयन मन आनँद उपज्यो रसिक शिरोमणि देत हुँकारी ॥ दशरथ नृपति हुते रघुवंशी तिनके प्रगट भये सुत चारी । तिनमें राम एक व्रतधारी जनकसुता ताकी वर नारी ॥ तात वचन सुनि राज्य तज्योहै भ्राता सहित भये वनचारी । तहँ तिन जाय कनकमृग मारयो राजिवलोचन गर्व प्रहारी ॥ रावण हरण सियाको कीन्हों सुनत श्यामघन नींद विसारी । सूर श्याम प्रभु रटत चापको लक्ष्मण देहु जननी भ्रमभारी ॥ ४९ ॥

राग सारंग ।

नंद वुलावत हैं गोपाल । आवो वेगि वलैया लेहौं मोहन श्याम तमाम ॥ परस्यो थार धरयो मग जोवत क्यों न चलो ततकाल । हौं वारी इन प्रति पाँयन पर दौर दिखावो चाल ॥ छाँड देहु तुम लाल

लटपटी यह गति मंद मराल । सो राजा जो पहिले पहुँचै सूर सो भवन उताल। जो जैहै बलराम अगमने तो हँसिहैं सब ग्वाल ॥ ९०॥

लावनी।

रूप रसिक मोहन मनोज मनहरण सकल गुण गरवीले। छैल छबीले चपल लोचन चकोर चित चटकीले॥ रत्नजटित शिर मुकुट लटक रहि सिमट श्याम लट घुँघुरारी । बालबिहारी कन्हैया लाल चतुर तेरी बलिहारी ॥ लोलक मोती कान कपोलन झलकबनी निर्मल प्यारी। ज्योति उज्यारी हमैं हरबार दर्श दे गिरिधारी ॥ दंत छटासी बिज्जु घटा मुख देख शरद शशि शरमीले । छैल० ॥ मंद हँसन मृदु वचन तोतरे वयकिशोर भोली भाली । करत चोचले अधर अमोलक पीक रच रही लाली ॥ फूल गुलाब चिबुक सुंदरता रुचिर कंठछबि वनमाली । करसरोजमें बुन्द मेहँदी अमन्दहै बहु प्रतिपाली ॥ फूलछरीसी नरम कमर करधनी शब्द भये तुरसीले ॥ छैल० ॥ झँगुली झीन जरीपट कछनी श्यामल गात सुहात भले। चाल निराली चरण कोमल पंकजके पात भले ॥ पग नूपुर झंकार परम उत्तम यशुमतिके तात भले। संग सखनके निकट यमुना बछरान चरात भले ॥ ब्रज युवतिनके प्रेम भोर भये घर घर माखन गटकीले ॥ छैल० ॥ गावैं बाग विलास चरित हरि शरद रैनि रसरास करैं । मुनिजन मोहे कृष्ण कंसादिक खल दल नाश करैं ॥ गिरिधारी महराज सदा श्रीब्रज वृंदावन बास करैं । हरिचरित्र को श्रवण सुन सुन कर मन अभिलाष करैं ॥ हाथ जोर कर करैं वीनती नारायण दिल दरदीले ॥ छैल० ॥ ९१ ॥

माखनचोरीलीला ।

राग रामकली ।

माखन तनक दे री माय।तनक करपर तनक रोटी माँगत चरण चलाय ॥ कनक भूपर तनक रेखा करन पकरयो धाय । कंपियो गिरि शेष शंक्यो उदधि अति अकुलाय॥ मेरे मनके तनक मोहन लागे मोहिं बलाय।तनक मुखपर तनक बतियां बोलत हैं तुतराय॥यशुमति के प्राण जीवन धन लिये उरमें लाय । नंदकुँवर गिरिधरन ऊपर सूर बलि बलि जाय ॥ ९२ ॥

राग भैरव ।

बिलँव तजि माखन देरी माई । बछरे हमरे दूर निकस गये दधि मथती देर लाई ॥ जो न देय तोरे बछरे न चारूं हौं नहिं विपिनको जाई ॥ यह लै अपनी कारी कमरिया मुरली औ लकुटाई ॥ इतनी कह हरि अतिहि रिसाने लोटत भूमि कन्हाई । धूर सहित सब अँग लिपटाने मैया लेत उठाई ॥ गोदी बीच बिठाय यशोदा मुख चूमत दूध पिलाई । धनि धनि भाग सूर जननी जाके कृष्ण करत लरिकाई ॥ ९३ ॥

राग भैरवी ।

दोऊ भैया मैयासों माँगत दे मा माखन रोटी ॥ बलदाऊ गही-नासिका मोती कान्ह गही कर चोटी । मानो हंस मोर भख लीन्हों कवि कृत उपमा छोटी ॥ यह छवि निरखि नंद आनंदे प्रेम मगन गये लोटी । सूरदास धनि धन्य यशोदा भाग भले कर्मन-की मोटी ॥ ९४ ॥

राग रामकली।

मोहिं दधि मथन दे बलिगई। जाउँ बलि बलि बदन ऊपर छाँड मथनी रई॥ देहुँ त्वहिं नवनीत लौंदा आर कित यह ठई। सुत-सनेह विलोकि यशुमति प्रेम पुलकित भई॥ लै उछंग लगाय उर-सों प्राणजीवन जई। बालकेलि गुपालकी व्रज आशकर नित नई॥ ५५॥

राग विलावल।

नेक मेरे बारे कान्ह छाँड़िदे मथनियाँ॥ कंठमें बघनहा सोहे नाकमें नथुनियां। नयननते नीर मानो मोतिनकी मनियां॥ नेक रहो देहों माखन मेरे प्राण धनियां। और जिन करो मेरे छगन मगनियां॥ सुर नर मुनि काहूके ध्यान न अवनियां। सूर सुत देख सुख लेत नंदरानियां॥ ५६॥

राग गौरी।

मैया री मोहिं माखन भावै। जो मेवा पकवान कहत तू मोहिं नहीं रुचि आवै॥ व्रजयुवती इक पाछे ठाढ़ी सुनत श्यामकी बात। मनमें कहत कभूं अपने घर देखौं माखन खात॥ बैठे जाय मथ-नियांके ढिग तब मैं रहों छिपानी। सूरदास प्रभु अंतर्यामी ग्वालिन मनकी जानी॥ ५७॥

गये श्याम तिहिं ग्वालिनिके घर। देख्यो जाय द्वार नहिं कोऊ इत उत चितै चले तब भीतर॥ हरि आवत गोपी जब जान्यो आपन रही छिपाई। सूने सदन मथनियांके ढिग बैठि गये अरगाई॥ माखन भरी कमोरी देखी लै लै लागे खान। चितै रहे मणि खंभ छाँह तन तासो करैं सयान॥ प्रथम आज मैं चोरी आयो भलो वन्यो है संग। आप खात प्रतिबिंब खवावत गिरत कहतका रंग॥ जो चाहो सब

देहुँ कमोरी अति मीठो कत डारत । तुम्हें देख मैं अति सुख पायो तुम जिय कहा विचारत ॥ सुन सुन बात श्यामके मुख की उमँग हँसी सुकुमारी । सूरदास प्रभु निरख ग्वालि मुख तब भजि चले मुरारी ॥५८॥

राग बिलावल ।

आज सखी मणि खंभ निकट वीर जहँ गोरसकी खोरी । निज प्रतिबिंब शिखावत या शिशु प्रगट करै निज चोरी ॥ अर्द्ध विभाग आजते हम तुम भला बनी है जोरी । माखन खाउ कताहिं डारतहो छाँड़ि देहु मति भोरी ॥ हिस्सा न लेहो सभी चाहतहो यही बात है थोरी । मीठो परम अधिक रुचि लागै देहो काढि कमोरी ॥ प्रेम उमँग धीरज न रह्यो तब प्रगट हँसी मुख मोरी । सूरदास प्रभु सकुचि निरखि मुख चले कुंजकी ओरी ॥ ५९ ॥

ग्वालिन घर गये श्याम सांझकी अँधेरी । मंदिरमें गये समाय श्यामल तनु लखि न जाय देह मेहरूप कहो को करै निवेरी ॥ दीकप गृह दान कर्यो भुजाचार प्रगट धर्यो देखत भइ चकित ग्वालि इत उत को हेरी ॥ श्याम हृदय अति विशाल माखन दधि विंदु जाल मन मोह्यो नंदलाल बाल कही वेरी । युवती अति भइ निहाल भुज भरदे अंकमाल सूरदास प्रभु कृपालु डार्यो तनु फेरी ॥ ६० ॥

राग रामकली ।

माखन चोर री हौं पायो ॥ जावत कहाँ जान कैसे पावत बहुत दिन नहीं खायो । श्रीमुखते उवरी द्वै दतियां तब हँसि कंठ लगायो ॥ परमानंद प्रभु प्राण जीवन धन वेद विमल यश गायो ॥६१॥

सखि मोहिं हरि दर्शनको चाव ॥ साँवरेसों प्रीति बाढी लाख लोग रिसाव । श्यामसुंदर कमल लोचन अंग अंग नित भाव ॥ सूर हरिके रूप राची लाज रहो चाहे जाव ॥ ६२ ॥

कवित्त।

धेनुके चरैया प्यारे भैया बलभद्रजूके, नंदके ललैया मोरे अँगनामें आउ रे। दही दूध बहु प्याऊं माखन घनो सो लाऊं, मीठी मीठी तान नेक गायकै सुनाउ रे। प्यारे नंदके किशोर मेरे चित्तहूके चोर, नेक तो अधर धर बाँसुरी बजाउ रे। या छबि ऊपर कोटि काम वारि वारि डारों दयासखी प्रेमवश हियमें समाउ रे॥ ६३॥ आया कर साँवरे गालिन इन रूम झूम, साँझ औ सवेरे कभी दर्श तो दिखाया कर। जाय कर जमुनाके तट रोज रोज प्यारे, बासुरी अनोखी इक लहजा सुनाया कर। कादर कहत छाया कर नैनों बिच मेरे आय, रूखो सूखो थार गरीबोंको पाय कर॥ खाया कर माखन मलाई दधि लूट लूट, कर हाव भाव मेरे हियमें समाया कर॥ ६४॥

चीराकी चटक औ लटक नव कुंडलकी, भौंहकी मटक मोहिं आँखिन दिखाउ रे। जा दिना सुजान गुण रूपके निधान कान्ह, बासुरी बजाय तनु तपन सिराउ रे। एहो बनवारी बलिहारी जाउँ तेरी आज, मेरी कुंज आय नेक मीठी तान गाउ रे॥ नंदके किशोर चित्तचोर मोर पंखवारे, वंशीवारे साँवरे पियारे इत आउ रे॥ ६५॥

राग पीलू।

वंशीवारे तु मेरी गली आजा रे। तेरे बिन देखे कल ना परतहै टुक मुखडा दिखलाजा रे॥ रैनि दिना मोहिं ध्यान तिहारो, वंशीकी टेर सुनाजा रे। चरणदास सुखदेव पियारे मेरोहि माखन खाजा रे॥ ६६॥

सवैया।

जोगिया ध्यान धरैं जिसको तपसी तनु गारके खाक रमावें। चारहु वेद न पावत भेद बड़े तिर्वेदी नहीं गति पावें॥ स्वर्ग रु

मृत्यु पतालहुमें जाको नाम लिये ते सभी शिर नावें । चर्णदास कहै गोपसुता ताहि माखन दे देकै नाच नचावें ॥ ६७॥ शंकर-से मुनि जाहि रटैं चतुरानन चारिहु आनन गावें। जो हिय नेसुक आवतही रसखान महाजन मूढ़ कहावें ॥ जापर देव अदेव भुजंगम वारत प्राणन वार न लावें ॥ ताहि अहीरकि छोहरियां छछिया भरि छाँछ पै नाच नचावें॥ ६८ ॥

कवित्त ।

ब्रह्माहूके ध्यानमें न आवे कभू एक क्षण, शंकर समाधि लाय ध्यान धर्त गाढ़ो है । ऋषि और मुनि जाको रैनदिन धरैं ध्यान, ध्यानमें न आवै कभूं तासों हेत वाढ़ो है ॥ सोई निरंजन जाकी माया को न आवे अंत ध्यानी ध्यान लाय रहैं सहैं धूप जाड़ो है। देखो भाग्य व्रजवानितनकेरी आज आली, ह्वैकै हू अनत नवनीत मांगै ठाढ़ो है ॥ ६९॥ जाके पदपरसको तरसत विश्व व्रज, ग्वालनको खेलमांझ कंधन चढ़ाये हैं । जाकी यह माया सुर नर मुनि बांधि राखे, सोई गर यशुदा पै ऊखल बँधाये हैं ॥ जाके देव यज्ञमें बुलावें नाहिं आवें सो तो, नंद एक थार मांझ जेमके सिहाये हैं। जाने ले नचाये सब दारुमयी पूतरी ज्यों, प्रेमवश गोपिनके हियमें समाये हैं ॥७० ॥ दीनहूके बंधु ग्वाल मोचो दुःख ततकाल, अवि-नाशी नंदलाल वेदनमें गाये हैं । गावत हैं नेति नेति नेति कहि चारों वेद, शेषके सहस्रमुख पार नहिं पाये हैं ॥ ब्रह्मा आदि सनकादि जाको धरैं ध्यान सदा, शंकर समाधि लाय हीयमें बसाये हैं। कहै मयाराम देखो भाग्य व्रजग्वालिनिके, ऐसे घनश्याम दैदै माखन नचाये हैं॥७१॥ कोऊ कहै मेरे आगे नेक तू नाचहु लाला, लोन मिली छाँछ दूंगी आछीसी धुँगारके । भोर भयो वाके गयो वासों मरो वेर भयो, धींगीसी गुजरियाने आन लियो धायके ॥ खिरकी

सब तोरडारे बासन सब फोर डारे, दूध ढरकाय दियो बंदरा बुलायके। नंदरानी मुसकानी कछु कछु सकुचानी, सूरश्याम उलँभो लियो शीश पै चढायके ॥ ७२॥

व्रजकी अहीरनाके भागभले देखो भैया देवनाके देव कैसी सेवनाकर पायो है। शिव औ विरंचि जाको पार नहीं पावें ताहि गोकुलाकी नारी करतारी दे नचायो है॥ नारद मुनीसे तुंबरूसे पढ़ि पचिहारे व्यासजूकी वाणीसों विमल यश गायो है। कहैं रणधीर भाग्य भले हैं अहीरनीके प्रेमको पयोधी व्रज वीथिन बहायो है ॥ ७३ ॥

उराहनो लीला।

दोहा—योग ध्यान आवैं नहीं, यज्ञ भाग ना लेयँ।
ताको व्रजकी गोपिका, हँसि हँसि माखन देयँ ॥

राग कान्हरो।

माखनकी चोरी रे। तुम सीखो हो करन जब लागे करन चित चोरी रे ॥ जबते दृष्टि परे नँदनंदन पाछे फिरों दौरादौरी रे। लोक लाज मर्यादा तोरी वन वन विहरत नवल किशोरी रे।। आशकरण प्रभु मोहन नागर निगम शृंखला तारीरे॥ ७४ ॥

राग देवगंधार।

जो तुम सुनो यशोदा गोरी। नंदनँदन मेरे मंदिरमें आज करत हैं चोरी ।। हौं भइ आन अचानक ठाढ़ी कह्यो भवनमें कोरी। रहे छिपाय सकुच रंचक ह्वै मनो भई मति भोरी ॥ मोहिं भयो माखन पछतावो रीती देख कमोरी। जब गहि वाहिं कुलाहल कीन्हों तब गहि चरण निहोरी ॥ लागे लेन नयन जल भर भर में

हरि कान न तोरी । सूरदास प्रभु देत निशा दिन ऐसे अल्प सलोरी ॥ ७५ ॥

राग ठुमरी ।

तेरोरी कन्हैया वलको भैया री यशोदा मैया आज मेरे घर आयो । दधि मेरो खायो मट्टुकिया फोरी रह्यो सह्यो ढरकायो ॥ जो पकरूं तो हाथ न आवे ढूँढ फिरी नहिं पायो । जानकीदास याहि वरजो क्यों ना पूत अनोखो जायो ॥ ७६ ॥

राग मलार ।

यहां लौ नेक चलो नँदरानीजू।अपने सुतके कौतुक देखो कियो दूधमें पानीजू ॥ मेरे शिरकी चटक चूनरी लै गोरसमें सानीजू । हमरो तुमरो वैर कहाहै फोरी दधिकी मथानीजू ॥ या व्रजको व-सिवो हम छांड़ें यह निश्चय कर जानीजू । परमानन्द दासको ठाकुर गोकुल कियो रजधानीजू ॥ ७७ ॥

राग ईमन ।

रानीजू लीजिये यह गाम,॥दीजिये हमको विदा राम, राम है जु हमारी ॥ वासि हैं अनतहिं जाय वात लखि लई है तुम्हारी ॥ आ-पन तो नाहीं करत री सुतको देत पठाय । तीस दिनाकी वात है यह कापे सहियो जाय ॥ रानी० ॥ मेरे शिरपर वसो गाम काहे-को छोरो । श्याम आपनो जान मानले मेरो निहोरो ॥ जो कछु तुमते सुत कही मोहिं कहो समुझाय । मैं तो यह जानो नहीं तुम लीजो सौंह धराय ॥ ग्वालिन गामको मत छोरे ॥ काल्ह तीसरे पहर श्याम गयो भवनन माहीं । व्राने कियो जो जियान आवत मुखते कहि नाहीं ॥ वछरा छोरे खरिकते वांधनको नाजाय । स-खा भीर ले द्वारे पैठे दूध दही ढरकाय ॥ रानी० ॥ जेतो खा-

यो दही दूध करे लयो मोते लेखो । दुगनो चौगुनो नौगुनो सौगुनो लेहु विशोखो ॥ माट भरे दधि दूधके घरमें चाखत नाय । मोहिं यही अचरज वड़ो पावत तुम घर जाय ॥ ग्वालिन० ॥ काहेको घरको छुये जौलौं कहुँ मिलत परायो अपनो सुन्दर माल काहू पै न जात लुटायो ॥ आप खाय तौहूं सहें मर्कट देत खवाय । जो वे भी चाखत नहीं देत भूमि ढरकाय ॥ रानी० ॥ ७८ ॥

राग भैरवी।

मेरी भरी मटुकिया लै गयो री। कछु खायो कछु ग्वालन खवायो रीतीकर मोहिं दैगयो री ॥ वृन्दावनकी कुंजगलिनमें ऊँची नीची मोते कहि गयो री। परमानन्द व्रजवासी साँवरो अँगुठा दिखाय रस लै गयो री ॥ ७९॥

राग जंगला काफी।

दधि पीगयो री माई आज ॥ तेरो नट खट करगयो चट पट॥ यह कहा सीख तैं दई कृष्णको व्रजनारियोंके पट खोलनकी री॥ चला जाय नट खट पीगयो गट गट फिर दिखतारी नहीं ॥ एक रोज गूजरीका दांव जो लगा लहिंगेमें पकर वाको दाव लाई री ॥ तू जो कहे थी मेरो नट नहीं चोर अव याहि ले री माई ॥ व्रजकी सखी सव देखनको धाई आज पकरे गये हैं यादवराई री॥ खोलके दिखावो इतवार नहीं आवे जाने किसको पकर लाई री ॥ भीतर प्रभुने ऐसो रूप लियो धार गूजरीको पति-भर्तार वनो री॥ गूजर जैसी पगड़ी औ तगडी गूजर जैसी डाढ़ी गोड़ोलौं लटकाई री ॥ वोली व्रजनारी ऐसी वावरी भई तु आपनी तो ताली तैनें वजवाई री ॥ तूतो कहेथी तेरो नट पकरो ले गूजरको पकर लाई री ॥ छल कृत रूप देख गूजरी विहाल भई काढ़के घूँघट वडी

सोई आज वँध्यो ऊखलते निरखनको सगरो ब्रज धावैं ॥ पूरण काम क्षीरसागरपति मांग मांग दधि माखन खावै । भक्ताधीन सदा नारायण प्रेम कि महिमा प्रगट दिखावै ॥ ८६ ॥

राग रामकली।

यशोदा तू बडी कृपण री माई । दूध दही सब विधिको दीन्हों सुतडर धरत छिपाई॥ बालक बहुत नहीं री तेरे एकै कुँवर कन्हाई। सोऊ तो घरही घर डोले माखन खात चुराई॥ वृद्ध वैस पूरे पुण्यनते तैं वैठी निधि पाई।ताहूके खइवे पीवेको कहा इती चतुराई॥ सुनो न वचन चतुर नागरके यशुमति नन्द सुनाई। सूर श्यामको चोरीके मिस देखनको यह आई ॥ ८७ ॥

राग गूजरी।

यशोदा कान्हहूं ते दधि प्यारो । डार देहु कर मथत मथानी तरसत नन्ददुलारो ॥ दूध दही माखनसे वारें जाहि करत तू गारो। कुम्हिलानो मुखचन्द्र देख छवि काहे न नेक निहारो ॥ ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत सो ब्रज गैयन चारो। सूर श्याम पर वलि वलि जैयें जीवन प्राण हमारो ॥ ८८ ॥

राग धनाश्री ।

यशोदा तेरो कठिन हियो री माई । कमल नयन माखनके कारण वाँधि ऊखल लाई ॥ जो संपदा देव मुनि दुर्लभ सुपनेहुँ दे न दिखाई। याही ते तू गर्व भरी है घर वैठे निधि पाई॥ तब काहूको सुत रोवत सुनि दौरि लेत हिय लाई। अब काहे घरके लरिकासों करत इती जडताई ॥ वारंवार सजल लोचन भरि जोवत कुँवर कन्हाई। कहा करूं वलि जाऊं छोरती तेरी सौंह दिवाई ॥ जो मूरत जल थलमें व्यापक निगमन खोजि न पाई। सो यशुमति अपने आँगनमें दे करतार नचाई ॥ सुरपालक प्रभु असुर सँहारक

त्रिभुवन जाहि डराई। सूरदास स्वामीकी लीला निगम नेति नित-गाई ॥ ८९ ॥

राग सारंग।

यह सुनिकै हलधर तहँ आये । देखि श्याम ऊखलसों बांधे तबहिं दोउ लोचन भर आये ॥ मैं बरज्यो कइ बेर कन्हैया भली करी दोउ हाथ बँधाये । अजहूँ छाँडोगे लँगराई दोउ कर जोर जननि पै आये ॥ श्यामहिं छोर मोहिं बरु बांधो निकसत शकुन भले नहिं पाये । मेरो प्राण जीवन धन माधो तिनकर भुज मोंहिं बँधे दिखाये ॥ माता सों कह करों ढिठाई शेष रूप कहि नाम सुनाये।सूरदास तब कहत यशोदा दोउ भैया तुम इक ह्वै आये॥९०॥

अब घर काहूके जनि जाहु । तुम्हरे आज कमी काहेकी कत तुम अनतहिं खाहु ॥ जरै जेवरी जिनतुम बांधे बरै हाथ महराय । नंद मोहिं अति त्रास करैगो बांधे कुँवर कन्हाय ॥ बलि जाऊं अपने हलधरकी छोरतहैं जो श्याम। सूरदास प्रभु खात फिरो जिन माखन दधि तुम धाम ॥ ९१ ॥

मगरोकन लीला।

राग आड़ा कालिंगड़ा।

छांडो मोरी गैल नातो गारी मैं सुनाऊँगी। औरनके भूले कहूँ मोते जिन अटको अभी यशुमति पै पकर लै जाऊँगी ॥ पहले हीसों अपनी बड़ाई कहा करू मैं देखियो तो कैसो तुम्हैं नाच नचाऊँगी। जो मैं तुम्हैं सूधो न बनाऊं नारायण तो मैं निज बापकी न आजसे कहाऊँगी ॥ ९२ ॥

राग दादरा।

प्यारे जिन मेरी बाँहगहो ॥ मारगमें सब लोग देखतहैं दूरी क्यों न रहो । मनमें तुम्हरे कौन वातहै सोई क्यों न कहो ॥ कहिं

हौं जाय आज यशुमतिसों हमरी वाट रोकतहो । इतनेपै नहिं मानत आनँदघन लरकाही तुमहो ॥ ९३ ॥

राग सोरठ ।

छांडो लँगर मोरी वहियाँ गहो ना ॥ मैं तो नारि पराये घरकी मेरे भरोसे गुपाल रहो ना । जो तुम मेरी बैहां गहतहो नैन मिलाय मेरे प्राण हरो ना ॥ वृंदावनकी कुंजगलीमें रीत छोड अनरीत करो- ना । मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरणकमल चित टारेटरो ना॥९४॥

राग मलार ।

छैल गैल मत रोकै तू हमारी रे । चाल कुचाल चलो जिन चंचल चर्चा करै सव पुर नर नारी रे ॥ हम सुकुमार ठाढी काँपत हैं शिरपर दधिकी मटुकिया भारी रे । नारायण व्रज कौन वसे- गो ऐसी अनीति जो करनी विचारी रे ॥ ९५ ॥

राग विहाग ।

वरजो नहीं मानत वार वार । जव मैं जात सखी दधि वेचन भाजत कंकर मार मार ॥ ले लकुटी मटुकी महिं पटकत घूँघट देखत टार टार । हरवा तोरत गरवा लगावत करत कंचुकी तार तार ॥ कपटी कुटिल कठोर श्याम घन देखत छवि तरु डार डार । हरि विलास व्रजराज हठीलो बैठगई मैं हार हार ॥ ९६ ॥

रागझंझोटी ।

वड़ो खोटा ढोटा नन्दको आली । जाको नाम कहत वनमाली मिल्यो यमुना तट हँस हँस मटकत लपट झपट पटकी मटकी चट दधि गट नट खट कठिन हियो मोहिं देत चलो गयो गाली ॥ माथे पे मुकुटधरे कानमें कुंडल पहरे भाल पर तिलक गोरोचन को करे गल वैजंती मुक्तमाल आली मुख तमोलकी लाली ।

कटि पीत वसन मानो घन दामिन नूपुर बजत वरणै छबि को कवि देखतही मन हऱ्यो युगल प्रभु तिरछी चितवनशाली ॥ ९७ ॥

लावनी।

सुनो यशोदारानी तेरे गिरिधारीने नाहक लूटी। मैं देत दुहाई बबा नंदजूकी हाहाखाके छूटी ॥ मैं दधि बेचन जात वृँदावन शिर धरे गोरसकी मटकी। आन अचानक तेरे कान्हाने मेरी बैंहा झटकी ॥ जब झटकी हिरदैमें खटकी लटकी शिरमें आ अटकी। मैं व्याकुल ह्वै गई रही ना सुरत मोहि घूँघुट पटकी ॥ ऐसी भई सुध हरन गिरी मैं धरन मेरी मटुकी फूटी ॥ मैं देत०॥ एक सखी कह चुकी दूसरी कहै सुनो यशुदारानी। आज या ब्रजमें तेरे कान्हाने धूम ऐसी ठानी ॥ घाट बाट पै रोकत डोलै नहीं भरन देवेपानी। पानी भरतमें दान माँगत ऐसो दधिको दानी :॥ करकी चूरी गई करक मेरी मोहनमाला न्यारी टूटी ॥ मैं देत० ॥ ९८ ॥

राग देश।

सुन री गुण कान्ह कुँवरके ॥ तेरो री सुत चपल कहावे यमुनाके तट वंशीबटके निकट नट झटक मटक दधि गटक पियो ॥ वदनकी छबि कान्हा मुकुटको शिर धर कदमके तरुतर कुँवर दुऱ्यो ॥ बांसुरी बजाई मेरी सुध बिसराई कान्हा देख ललाई मेरो कर पकऱ्यो ॥ ९९ ॥

ठुमरी।

मोको डगर चलत दीन्हीं गारी रे। ऐसो री ढीठ बनवारी री गोइयां बिनतीं सकल कर हारी रे ॥ नीर भरन मैं चलीहूं धामसों बीच मिले पनघटमें कान्ह रे। वह तो जाने न दे पनघटको सनद पिया निरखत सगरी पनिहारी रे ॥ १०० ॥

राग भैरव ।

देखो री मथनियां कैसे फोरी नंदलालने ॥ वनमें निवासी भयोरी नंदको करत फिरत वरजोरी ॥ नंदलालने० ॥ जित जाऊं तित आडोइ आवे एरी दैया मेंते जोर जगावे री ॥ यह व्रज कैसे वसेगो री । सासुरे जाऊं तो सास लरे इत यह घर घाले री । आत्माराम नरसिंहके स्वामी कहा मुख ले घर जाऊं हो कान्हा मोतिनकी लर तोरी ॥ १०१ ॥

राग टोडी ।

गागर ना भरन देत तेरो कान्ह माई । हँस हँस मुख मोर मोर गागर छिटकाई ॥ घूँघटपट खोल खोल सांवरो कन्हाई । यशुमति तैं भली वात लालको सिखाई ॥ अगर वगर झगर करत रार तो मचाई । हौं तो वीर यमुना तीर नीर भरन धाई ॥ गिरिधरके चरण ऊपर मीरा वलिजाई ॥ १०२ ॥

राग भूपाली ।

लंगर मोको गारियां दे दे जारी ॥ यह कलका छोकरा यह ढीठ लंगर री ॥ गारीकी गारी टोनेका टोना तुम जीते हम हारी हारी । आवत जावत प्यारा लगत है चलत चाल गति प्यारी प्यारी ॥ मोर मुकुट माथे तिलक विराजे कुंडलकी छवि न्यारी न्यारी ॥ दोउ कर जोरे विनती करतहों सूर शरणागत तिहारी तिहारी ॥ १०२ ॥

राग सिंध ।

रोके मोरी गैलवा में कैसे जाऊं पानियां । शीश मुकुट कंचनको झलकें मकर मनोहर कुंडल अलकें माथे खोर चंदनकी राजे वर वेजंतीमाल विराजे पीतांवर कटि कस्यो री चौतनियां ॥ अधर

सुधारस बेणु बजावे ग्वाल बाल लिये सँगही आवे कहा न माने नन्द महरको माखन खात फिरत घर घरको ऐसो री निडर झकझोरी मोरी बेनियां। कर किंकिणियां नूपुर बाजें रुनझुनात बहु मुनि मन राजे पग पैंजनियां सुंदर साजैं दर्श देख अघ दूर ते भाजैं अति चंचल अलबेली चितवनियां॥ गागर फोर मोर मुख हँसके करते गह निज उर ते लचके सूर श्याम प्रभु नागर नटको बरज रही मानत नहीं हटको काहेना बरजोरी यशोदा महारानियां॥ १०४॥

राग रेखता।

यमुना न जान पावें भरने न देत पानी। ढोटा बड़ा अनोखा है नंदको गुमानी॥ लेकर जो गागर गृहसे यमुना पै भरने आई। आगे जो ठाढो मग में वह साँवरो कन्हाई॥ देखी सखी अकेली बैंहां पकर मरोरी। छातीसों करलगावे गल हीर हार तोरी॥ निरखी अली नवेली या कुंज बाट पाई। हँस हँसके ललितकिशोरी उर कंठसों लगाई॥ १०५॥

राग छायानट।

अंगुरी मेरी मरोर डारी छीन दधि लीना साँवरो। हौं जो जात कुंजन दधि बेंचन बीच मिले गिरिधारी॥ अगर सुने मोरी बगर सुनेगी सास सुने देवे गारी॥ चंद्र सखी भज बालकृष्ण छबि हरि चरणन बलिहारी॥ १०६॥

राग श्यामकल्याण।

नट नागर चितचोर गेंद तक मारी सँवलिया॥ भयो निशंक अंक भरलीनी भ्रुकुटी नयन मरोर॥ कहा करूं कछु वश ना मेरो ऐसो जालिमजोर॥ रसिक हठीलो जिया तरसावे मानत नाहिं निहोर॥ १०७॥

राग भैरव ।

देखो री मथनियां कैसे फोरी नंदलालने ॥ वनमें निवासी भयोरी नंदको करत फिरत बरजोरी ॥ नंदलालने० ॥ जित जाऊं तित आडोइ आवे एरी दैया मोते जोर जगावे री ॥ यह व्रज कैसे बसेगो री। सासुरे जाऊं तो सास लरे इत यह घर घाले री। आत्माराम नरसिंहके स्वामी कहा मुख ले घर जाऊं हो कान्हा मोतिनकी लर तोरी ॥ १०१ ॥

राग टोडी ।

गागर ना भरन देत तेरो कान्ह माई । हँस हँस मुख मोर मोर गागर छिटकाई ॥ घूँघटपट खोल खोल सांवरो कन्हाई । यशुमति तैं भली बात लालको सिखाई ॥ अगर बगर झगर करत रार तो मचाई । हौं तो बीर यमुना तीर नीर भरन धाई ॥ गिरिधरके चरण ऊपर मीरा बलिजाई ॥ १०२ ॥

राग भूपाली ।

लंगर मोको गारियां दे दे जारी ॥ यह कलका छोकरा यह ढीठ लंगर री ॥ गारीकी गारी टोनेका टोना तुम जीते हम हारी हारी । आवत जावत प्यारा लगत है चलत चाल गति प्यारी प्यारी ॥ मोर मुकुट माथे तिलक बिराजे कुंडलकी छवि न्यारी न्यारी ॥ दोउ कर जोरे विनती करतहों सूर शरणागत तिहारी तिहारी ॥ १०३ ॥

राग सिंध ।

रोके मोरी गैलवा मैं कैसे जाऊं पानियां । शीश मुकुट कंचनको झलकैं मकर मनोहर कुंडल अलकै माथे खौर चंदनकी राजै उर वैजंतीमाल विराजै पीतांवर कटि कस्यो री चौतनियां ॥ अधर

सुधारस बेणु बजावे ग्वाल बाल लिये सँगही आवे कहा न माने नन्द महरको माखन खात फिरत घर घरको ऐसो री निडर झकझोरी मोरी बेनियां। कर किंकिणियां नूपुर बाजें रुनुझुनात बहु मुनि मन राजे पग पैंजनियां सुंदर साजें दर्श देख अघ दूर ते भाजें अति चंचल अलबेली चितवनियां॥ गागर फोर मोर मुख हँसके करते गह निज उर ते लचके सूर श्याम प्रभु नागर नटको बरज रही मानत नहीं हटको काहेना बरजोरी यशोदा महारानियां॥ १०४॥

राग रेखता।

यमुना न जान पावें भरने न देत पानी। ढोटा बड़ा अनोखा है नंदको गुमानी ॥ लेकर जो गागर गृहसे यमुना पै भरने आई। आगे जो ठाढो मग में वह साँवरो कन्हाई॥ देखी सखी अकेली बैंहां पकर मरोरी। छातीसों करलगावे गल हीर हार तोरी॥ निरखी अली नवेली या कुंज बाट पाई। हँस हँसके ललितकिशोरी उर कंठसों लगाई॥ १०५॥

राग छायानट।

अंगुरी मेरी मरोर डारी छीन दधि लीना साँवरो। हौं जो जात कुंजन दधि बेंचन बीच मिले गिरिधारी॥ अगर सुने मोरी बगर सुनेगी सास सुने देवे गारी॥ चंद्र सखी भज बालकृष्ण छबि हरि चरणन बलिहारी॥ १०६॥

राग श्यामकल्याण।

नट नागर चितचोर गेंद तक मारी सँवलिया॥ भयो निशंक अंक भरलीनी भ्रुकुटी नयन मरोर॥ कहा करूं कछु वश ना मेरो ऐसो जालिमजोर॥ रसिक हठीलो जिया तरसावे मानत नाहिं निहोर॥ १०७॥

नयनोंकी मारीरे कटारी मेरे ॥ सुनियो री मेरी पार परोसन ढीठ भयो गिरिधारी । यमुनाके तट भेंट भई मोसों ऐसो छैल बिहारी ॥ सास बुरी घर ननँद हठीली देवर सुनै देय गारी ॥ मधुर अली घर जात बनै ना पीर उठी अति भारी ॥ १०८ ॥

राग भूपाली।

लंगर मोरी गागर फोर गयो ॥ सखी जाने कहांसों अचक आय लंगर० ॥ नई चुंदरिया चीर चीर कर निपट निडर पुनि आंख दिखावे देख बीर अति कोमल बैहां दोउ कर पकर मरोर गयो ॥ मोसों कहे सुन एरी सुन्दरी तो समान व्रज सुघर न कोऊ नख शिख लों छबिपरख निरख मुख सघन कुंजकी ओर गयो ॥ कहँ लग कहों कुचाल ढीठकी नाम लेत मेरो जीया कांपे नारायण मैं घनो वरजरहि मोतियनकी लर तोर गयो ॥ १०९ ॥

राग रेखता।

सुनले यशोदारानी तू लालकी बड़ाई । सब लोक लाज वान यमुनामें धो वहाई ॥ भोरहि मैं गई जो जल भरवेकाज भयना । पीछेसों आ अचानक उन मूँदे मेरे नयना ॥ डरपी मैं हाय को है तब बोले टेढे बैना । हौं तो रही अकेली वा सङ्ग ग्वाल सैना ॥ तव सबने हो हो करके तारी मेरी वजाई ॥ सुनले० ॥ हँस-हँसके छैल मोसों करवे लगो ठठोली। वह छबि तिहारे मुखकी अब कासों जावे तोली ॥ निरखे कबू बदनको कबहूँ व छूटे चोली। मैं तो सकुचकी मारी वासों कछू न बोली ॥ पुनि बैहाँ मेरी झटकी गागर धरणि गिराई । सुनले० ॥ कबहूँ कहे बतारी तू क्यों अकेली आई । कै घरमें तेरे पतिकी तोसों भई लराई० ॥ तू चल भवन हमारे कर मोसों मित्रताई । विधनाने

तेरी मेरी जोरी भली बनाई ॥ नारायण बाकी वातें सुनके मैं अति लजाई ॥ सुनले० ॥ ११० ॥

सुनिये यशोदा कान दै अरजी यही हमारी । हम छांडजाँय ब्रजको मरजी यही तुम्हारी॥ नित घाट बाट नट खट जेहर झड़ाक पटकै । बैयाँ मरोरे झटपट छातीसों हार झटकै ॥ पुनि कूद कर कन्हाई घूँघट सम्हार खोलै । ठोढीसों कर लगाके रसकीसी वात बोलै॥ निज दृष्टि बाण करके भौंहैं कमान ताने । चोरी सिवाय रसके वह और कछु न जाने ॥ चोरीकरे सों चोरी घरमें डगरमें पावे । भाजनको देत फोरी माखन दही लुटावे ॥ कोई सखी इकेली घरमें बगरमें पावे । हँसके शरीर मसके वाको दया न आवे ॥ हम बारबार तुमपै करती पुकार हारी । तुमने दया हमारी कबहूँ नहीं विचारी ॥ कीजे कृपा शिताबी हम गोपकी कुमारी । दीजे निकास देखूं कैसो रसिक बिहारी ॥१११ ॥

राग झूलनाके स्वरमें ।

लिये फिरत सँग सँग सखियनका जाने मोहनी डारीहै । ढूँढ़त डोलत आप आपको ऐसो खेल खिलारीहै ॥ आप अमृतघट आपहि पीवै आपहि प्यावन हारीहै । आपहि दृष्ट अदृष्ट आपही आपहि गोपकुमारी है ॥ बंशी बजन दिशा अवलोकन घूँघट ओट निहारी है । सब सखियनमें चतुर राधिका श्रीवृषभानु दुलारी है ॥ सुनो सखी जाके सँग डोलो सोइ त्रिया वपु धारी है । लीजे पकर निकस कहुँ जाय न यही रसिक बनवारीहै ॥ ११२ ॥

नयनोंकी मारीरे कटारी मेरे ॥ सुनियो री मेरी पार परोसन ढीठ भयो गिरिधारी । यमुनाके तट भेंट भई मोसों ऐसो छैल विहारी ॥ सास बुरी घर ननँद हठीली देवर सुनै देय गारी ॥ मधुर अली घर जात बनै ना पीर उठी अति भारी ॥ १०८ ॥

राग भूपाली।

लंगर मोरी गागर फोर गयो ॥ सखी जाने कहांसों अचक आय लंगर० ॥ नई चुंदरिया चीर चीर कर निपट निडर पुनि आंख दिखावे देख बीर अति कोमल बैहां दोउ कर पकर मरोर गयो ॥ मोसों कहे सुन एरी सुन्दरी तो समान ब्रज सुघर न कोऊ नख शिख लों छविपरख निरख मुख सघन कुंजकी ओर गयो ॥ कहँ लग कहों कुचाल ढीठकी नाम लेत मेरो जीया कांपे नारायण मैं घनो वरजरहि मोतियनकी लर तोर गयो ॥ १०९ ॥

राग रेखता।

सुनले यशोदारानी तू लालकी बड़ाई । सब लोक लाज वान यमुनामें धो वहाई ॥ भोरहि मैं गई जो जल भरवेकाज भयना । पीछेसों आ अचानक उन मूँदे मेरे नयना ॥ डरपी मैं हाय को है तब बोले टेढे वैना । हौं तो रही अकेली वा सङ्ग ग्वाल सैना ॥ तब सबने हो हो करके तारी मेरी बजाई ॥ सुनले० ॥ हँस-हँसके छैल मोसों करवे लगो ठठोली । वह छवि तिहारे मुखकी अब कासों जावे तोली ॥ निरखे कबू बदनको कबहूँ व छूटे चोली । मैं तो सकुचकी मारी वासों कछू न बोली ॥ पुनि वैहाँ मेरी झटकी गागर धरणि गिराई । सुनले० ॥ कबहूँ कहे बतारी तू क्यों अकेली आई । कै घरमें तेरे पतिकी तोसों भई लराई० ॥ तू चल भवन हमारे कर मोसों मित्रताई । विधनाने

तेरी मेरी जोरी भली बनाई॥ नारायण बाकी बातें सुनके मैं अति लजाई॥ सुनले० ॥ ११० ॥

सुनिये यशोदा कान दै अरजी यही हमारी। हम छांडजाँय व्रजको मरजी यही तुम्हारी॥ नित घाट बाट नट खट जेहर झड़ाक पटकै। बैयाँ मरोरे झटपट छातीसों हार झटकै॥ पुनि कूद कर कन्हाई घूँघट सम्हार खोलै। ठोढीसों कर लगाके रसकीसी बात बोलै॥ निज दृष्टि बाण करके भौंहैं कमान ताने। चोरी सिवाय रसके वह और कछु न जाने॥ चोरीकरे सों चोरी घरमें डगरमें पावे। भाजनको देत फोरी माखन दही लुटावे॥ कोई सखी इकेली घरमें बगरमें पावे। हँसके शरीर मसके वाको दया न आवे॥ हम बारबार तुमपै करती पुकार हारी। तुमने दया हमारी कबहूँ नहीं विचारी॥ कीजे कृपा शिताबी हम गोपकी कुमारी। दीजे निकास देखूं कैसा रसिक विहारी॥१११॥

राग झूलनाके स्वरमें।

लिये फिरत सँग सँग सखियनका जाने मोहनी डारीहै। ढूँढ़त डोलत आप आपको ऐसो खेल खिलारीहै॥ आप अमृतघट आपहि पीवै आपहि प्यावन हारीहै। आपहि दृष्ट अदृष्ट आपही आपहि गोपकुमारी है॥ बंशी बजन दिशा अवलोकन घूँघट ओट निहारी है। सब सखियनमें चतुर राधिका श्रीवृष-भानु दुलारी है॥ सुनो सखी जाके सँग डोलो सोइ त्रिया वपु धारी है। लीजै पकर निकस कहुँ जाय न यही रसिक बनवारीहै॥ ११२॥

गोचारनलीला ।

राग रामकली ।

मैया मैं गाय चरावन जैहों। तू कह नंद महर बाबासों बड़ो भया न डरैहों ॥ श्रीदामा आदि सखा सब अपने औ दाऊ सँग लैहों । बंसीवटकी शीतल छैयां खेलत अतिसुख पैहों ॥ देहु भात कामर भर लैहों भूँख लगै तब खैहों । परमानंद प्रभु तृषा लगें जब यमुनाजलहि अचैहों ॥ ११३ ॥

राग सारंग ।

शीश मुकुट मणि विराज कण कुंडल अधिक साज अधर लाल चिबुक सुंदर यशुमतिको प्यारो । कमलनयन कुँवर लाल कुंकुमको तिलक भाल गुंजमाल कंठधार कान्ह कमरी वारो ॥ चारन वन धेनु जात मुखमें मुरली सुहात गोपिनको चित चुरात कहियत नंदवारो । अतिस्वरूप श्याम गात दरश देखे पाप जात मिहरदास प्रभु प्रवीन पतित तारन हारो ॥ ११४ ॥

राग बिलावल ।

खेलनमें का काको गुसैयां । हरि हारे जीते श्रीदामा वरवश ही कन करत रुसैयां ॥ जाति पांति हमते बड़ नाहीं ना हम बसत तुम्हारी छैयां । अति अधिकार जनावत ताते जाते अधिक तुम्हारे गैयां ॥ रूठ करै तासों को खेलै हाहाखात परत तव पैयां । सूरदास प्रभु खेल्योही चाहें दाव दियो कर नंद दुहैया ॥ ११५ ॥

राग जंगलासिंध ।

न्यारी करो प्रभु अपनी गैयां । नाहिन बनत लाल हम तुमसों कहा भयो दशगैयां अधिकैयां ॥ ना हम चाकर नंदबबाके ना

तुम हमरे नाथ गुसैयां। आपन रहत नींदको मातो हम चारत तेरी बन बन गैयां॥ कबहूं जाय कदम चढ़ बैठे हम गैयन सँग लगत पठैयां। मानी हार सूरके प्रभुने अब नहिं जाऊं मोहिं नंदकी दुहैया॥ ११६॥

राग टोडी।

आज कौने धौं बन चरावत गाय कहा धौं भई बडी बेर। बैठे कहँ सुध लेहुँ कौन विधि ग्वालि करत अवसेर॥ वृंदाबन आदि सकल बन ढूँढ्यो जहिं गायनकी टेर। सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि कैसे दुराए दुरत डुँगरनकी ओट सुमेर॥ ११७॥

राग सारंग।

ब्रज बासिन पटतर कोउ नाहीं। ब्रह्म सनक शिव ध्यान न पावत तिनकी जूंठन लै लै खाहीं॥ धन्य नंद धनि जननि यशोदा धन्य जहां अवतार कन्हाई। धन्य धन्य वृंदाबनके तरु जहँ विहरत प्रभु त्रिभुवन राई॥ हलधर कहत छाक जेंवत सँग मीठो लगत सराहत जाई। सूरदास प्रभु विश्वंभर है ग्वालन कौर अघाई॥ ११८॥

राग हमीरकल्याण।

ठुमक गति चलत अनोखी चाल। मोर मुकुट मकराकृत कुंडल केसर बेंदी भाल॥ आगे गैयां पाछे गैयां सँग सोहैं ब्रजबाल। विष्णुदास मुरलीधरकी छबि देखत भई निहाल॥ ११९॥

राग केदार।

बन आये बनवारी। शिर धार चन्दन खौरि मोतियनकी गल माला मोर मुकुट पीताम्बर सोहै कुंडलकी छबि अति न्यारी॥

वृन्दावनकी कुंजगलीमें चाल चलत गति अति प्यारी। चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि चरणकमलपर बलिहारी॥ १२०॥

राग जङ्गला।

चले आते हैं मोहन बनसे धेनु चराये हुए। लिये बंशी अधर पर धर मधुर सुर गाये हुए॥ उड़ी गोरज परी मुख पै छबीले लालाहूंके। लटकंता नाकमें मोती कुंडल झलकाये हुए॥ मुकुट की लटकपै अटकी मोरी अँखियां यह लाला। लेगई जो मन मेरा जुलफें नागिन बल खाये हुए॥ नयननकी सैन दें मोही सकल व्रजहूकी बाला। परी वश प्रेमके ऐसी छुटती नहीं छुडाये हुए॥ अपने कृष्णदासपै कीजिये कृपा नन्दजूके लाला। दीजिये दर्शन चरणसों रहूं लिपटाये हुए॥ १२१॥

राग कान्हरो।

देखन दे मोरी बैरन पलकें। निरख स्वरूप मदन मोहनको बीच परत बज्रसी सलकें॥ आगे आगे धेनु पाछे नँदनन्दन गोचरणन रज मंडित अलकें। कुण्डल कर्ण कोटि रवि पसरे परत कपोलनमें कछु झलकें॥ ऐसो स्वरूप निरख मोरी सजनी कहा री किये इस पूत कमलके। नन्ददास जननकी यह गति तरफत मीन भाव बिन जलके॥ १२२॥

राग खम्माच।

लटक लटक चलत चाल मोहन आवे। भावे मन अधर मुरली मधुर सुर बजावे॥ चन्दन कुण्डल चपल डोलन मोर मुकुट चन्द्रकलन मन्द हँसन जियाकी फँसन मोहिनी मूरत राजे। भ्रुकुटी कुटिल चपल नयन अरुण अधर मधुरे बैन गति गयन्द चारु तिलक भालपर विराजे॥ लछनदास श्याम रूप नख शिख शोभा अनूप रसिक भूप निरखि वदन कोटि मदन लाजे॥ १२३॥

राग गौरी।

लटकत चलत युवति सुखदानी। सन्ध्या समय सखा मंडल में शोभित तनु गोरज लपटानी॥ मोर मुकुट गुंजा पियरो पट मुख मुरली बाजत मृदुबानी। चतुर्भुज प्रभु गिरिधारी आये बन ते ले आरती वारत नँदरानी॥ १२४॥

राग गौरी।

मैया मोरी कमरी चोर लही। मैं बनजात चरावन गैयां सूनी देख गही॥ एक कहै कान्हा तेरी कामर यमुनामें जात बही। एक कहै श्याम तेरी कामर सुरभी खाय गई। एक कहत नाचो मेरे आगे लेदेहों और नई। सूरदास यशुमतिके आगे अँशुअन डार दई॥ १२५॥

राग कान्हरो।

पौढ़े श्याम जननि गुणगावत। आज गयो मेरो गाय चरावन यह कहि मन हुलसावत॥ कौन पुण्य तपते मैं पायों ऐसो सुन्दर बाल। हर्ष हर्षके देत सखनको सूर सुमनकी माल॥ १२६॥

कालीदमनलीला।

छन्द।

गेंदके सँग कूद बालक यमुना जल पैठे धायके। नाग नागिन करत क्रीड़ा हरि उतरे तहां जायके॥ कौन दिशाते आयो रे बालक कहां तुम्हारो गामहै। कौन सखीके पुत्र जो कहिये कहा तिहारो नामहै॥ पूर्व दिशाते आये री नागिन गोकुल हमरो गामहै। मात यशोदा पिता नन्दजू कृष्ण हमरो नाम है॥ प्रभुके सन्मुख कहत नागिन जारे बालक भागके। तेरो रूप देखे दया उपजे नाग मारे जागके॥ भागे कुलको दाग लागे अब भागे कैसे बने। होनी हो-

य सो होय री नागिन नागतो नाथे बने ॥ असुर राजा दुखी धरणी नृप चोर बन आइयां । कंस सेती द्वन्द्वकीनो नाग नाथन आइयां ॥ कै बालक तुम मग जो भूले कै घर नारि रिसाइयां । कै तुम्हरे मन क्रोध उपज्यो बालक जूझन आइयां ॥ ना नागिन हम मग जो भूले ना घर नारि रिसाइयां । ना हमरे मन क्रोध उपज्यो नाग नाथन आइयां ॥ ले बालक गलहार माला सवा लाखकी बोरियां । सोतौ लेघर जाउ रे बालक नागसो देउँ चोरियां ॥ कहा करों गलहारमाला सवालखकी बोरियां ॥ वृंदावनमें गड़ो हिंडोला नागकी करों डोरियां ॥ चौंसठ चोप मरोर नागिन नाग जाय जगाइयां ॥ जागो हो बलवंत योधा बालक जूझन आइयां ॥ जब उठे हो जलके राजा इन्द्र जल घहराइयां । प्रभुके मुकुटको झपट कीनो शब्द ताल बजाइयां ॥ दोऊने मिलके द्वंद्व कीनो राग भेद सुहाइयां । सहस फण प्रति निर्त कीनो थेइ थेइ शब्द उचारियां ॥ कर जोर नागिन करत स्तुति कुटुम सहित उठ धाइयां । नाथ अब अपराध क्षमा कर कृपा हम पति पाइयां ॥ वामन वालिके द्वार हरिजू आप रूप बढाइयां । मच्छ कच्छ बाराह नरसिंह रामरूप दिखाइयां ॥ हम दासी प्रभुजू तिहारी मत मारो छोडो नागको । प्राणदान तुम देहु हमको राखो नाथ सुहागको ॥ नंदनँदन तब भये राजी दियो काली छोड़के । करि अनुग्रह दास कीनो ताके मदको तोडके ॥ कालीदहमें नाग नाथ्यो मथुरा कंस पछारियां । प्रभु मदन मोहन रहस मंगल याहि विधिसों गाइयां ॥ १२७ ॥

राग काफी ।

कालीके फनन ऊपर निर्त्तत गोपाललाल अद्भुत छवि कहि न जाय त्रिभुवन मन मोहें । तत्ता थेई थेई करत हरत सबके चित्त जात

गात सुर नर मुनिजन चित्र लिखे सोहें ॥ रुनक झुनक नूपुर धुन उठत उठत पैंजनी पग ठुमक ठुमक किंकिणी कटि बाजत चित करखें । विद्याधर किन्नर गंधर्व जहां उघटत गत जय जय जय भाषत सुरबधू पुष्प वरखें ॥ ज्यों ज्यों फण ऊंचे करत त्यों त्यों कृष्ण मारें लात देत न अवकाश प्रभु नाचत गतिधीमें । तरुण वदन गरल वमन सरल किये या विधि कर लटक लटक पटकत पग ललित रंग भीने ॥ नारदादि शिव विरंचि तज प्रपंच धरत ध्यान ताको पग दुर्लभ सोई उरग शीश धारें । विद्याधर प्रभु दयाल तज विवाद कियो निहाल काली तेरे धन्य भाग बिसरत न बिसारें ॥ १२८ ॥

तांडव गति मुंडन पर निर्तत वनमाली । पंपंपं पग पटकत फंफंफं फनन ऊपर बिंबिंबिं बिनती करत नागवधू आली संसंसं सनकादिक नंनंनं नारदादि गंगंगं गंधर्व सभी देत ताली ॥ सूरदास प्रभुकी बानी किंकिंकिं किनहूं न जानी चंचंचं चरण धरत अभय भयो काली ॥१२९ ॥

राग कान्हरो ।

जबहिं श्याम तनु अति बिस्तारचो। पटपटात टूटत अँग जान्यो शरण२ अहिराज पुकारचो ॥ यह वाणी सुनतहिं करुणामय तबहिं गये सकुचाये । यही वचन सुन द्रुपदसुताके दीनों वसन बढाये ॥ यही वचन गजराज सुनायो गरुड छाँड तहँ धाये । यही वचन सुन लाक्षागृहमें पांडव जरत बचाये ॥ यह वाणी सहिजात न प्रभु पै ऐसे परमकृपाल । सूरदास प्रभु अंग सकोरचो व्याकुल देख्यो व्याल ॥ १३० ॥

वंदौं मैं चरण सरोज तिहारे । सुंदर श्याम कमलदल लोचन ललित त्रिभंग प्राणपति प्यारे ॥ जे पद पद्म सदाशिवको धन

सिन्धुसुता उतरे नहिं टारे । जे पद पद्म तात रिस त्रासत मन वच क्रम प्रह्लाद सम्हारे ॥ जे पद पद्म फिरत वृंदावन अहि शिर धरि अगणित रिपु मारे । जे पद पद्म परस व्रज युवती सर्वस दे सुत सदन बिसारे ॥ जे पद पद्म लोकत्रयपावन सुरसरि दरश कटत अघ भारे। जे पद पद्म परसि ऋषिपत्नी नृप अरु व्याध अमित खल तारे ॥ जे पद पद्म फिरत पांडव गृह दूत भये सब काज सँवारे । ते पद पंकज सूरदास प्रभु त्रिविध ताप दुख हरण हमारे ॥ १३१ ॥

श्याम कमलपद नखकी शोभा । जे नख चन्द्र इन्द्र सुर परशें शिव विरंचि मनलोभा॥जे नख चन्द्र सनक मुनि ध्यावें नहिं पावत मर्माहीं । जे नख चन्द्र प्रगट व्रज युवती निरखि २ हर्षाहीं ॥ जे नख चन्द्र फणींद्र हृदय ते एको निमिष न टारत । जे नख चन्द्र महामुनि नारद पलक कहूँ न विसारत ॥ जे नख चन्द्र भजत खल तारत रमाहृदय नित पर्शत । सूर श्याम नख चन्द्र विमल छवि गोपीजन मिल दर्शत ॥ १३२ ॥

राग विहाग ।

अबकी राखि लेहु गोपाल । दशो दिशाते दुसह दवागिनि उपजी है यहि काल ॥ पटकत बांस कांस कुश चटकत लटकत ताल तमाल । उचटत अति अङ्गार फुटत फिर झपटत लपट कराल ॥ धूमि धुंधि बाढी धुर अम्बर चमकत विच २ ज्वाल । हरिन वराह मोर चातक पिक जरत जीव बेहाल ॥ जिन जिय डरो नयन सब मूँदो हँसि बोले नँदलाल । सूर अनल सब वदन समानी अभय करे व्रजबाल ॥ १३३ ॥

गोवर्द्धनलीला।

राग मलार।

देखो माई बादरकी बरिआई। मदन गोपाल धरयो कर गिरिवर इंद्र ढीठ झर लाई॥ जाके राज्य सदा सुख कीनो ताको शमन बड़ाई। सेवक करे स्वामिसों सरबरि इन बातन पति जाई॥ इंद्र ढीठ बलि खात हमारी देखो अकिल गँवाई। सूरदास तिनको काको डर जिहिं वन सिंह कन्हाई॥ १२४॥

राग बिलावल।

राखि लेहु गोकुलके नायक। भीजत ग्वाल गाय गो सुत सब विषम बूँद लागत जनु सायक॥ वर्षत मूसलधार सेनपति महा-मेघ मघवाके पायक। तुम बिन ऐसो कौन नन्दसुत यह दुख दुसह मेटिबे लायक॥ अघमर्दन बकवदन विदारन बकी विनाशन सब सुखदायक। सूरदास तिनको काको डर जिनको तुमसे सदा सहायक॥ १२५॥

राग लावनी।

साँवरे शरणागत तेरी। इंद्रने आय ब्रज घेरी॥ देखोजी यह बादर मिल आये। दामिनी दमकत भरलाये॥ मेघभर लोका बरसावें। भाग अब कहो कितको जावें॥ कहोजी अब कैसे बने परयो इंद्रसों बैर। कोप्योहै पृथिवीको पालक होगी किसविधि ठैर॥ जुगत हम बहुतेरी हेरी॥ साँवरे०॥ कही हम तुम्हरी सब मानी। भट गिरिवरकी मन ठानी॥ इंद्रकी झूँठ सभी जानी। लखी हम तुम्हरी नादानी॥ गोकुल राजा नन्दजू जाघर कुँवर कन्हाय। वृथा वचन अब होत तिहारो जनकी करो सहाय॥ यतनमें नहिं लाओ

देरी ॥ साँव० ॥ कहत हम तुम्हरे गुण भारी । पूतना बालकपन मारी ॥ दुष्टनी माया विस्तारी । बनी आप सुन्दर नारी ॥ कुचमें जहर लगायके दियो कृष्ण मुखमाहिं । एक मासको रूप तिहारो जीवत छोड़ी नाहिं ॥ मारकर मारगमें गेरी ॥ साँवरे० ॥ जो निर्मल जल यमुनाको कियो । तुरतही दावानल तैं पियो ॥ अभय ब्रजवासिन को करदियो । खैंच कर मन सबको हर लियो ॥ ब्रज तेरी को साँवरे करै इंद्र बेहाल । अबके सहाय करो नँदनन्दन करुणासिन्धु गोपाल ॥ शरण यह ब्रज मण्डल तेरी । साँवरे० ॥ अधर हरि आपन मुसुकाये । वचन यह मुखते बतलाये ॥ कहो तुम ह्यां कैसे आये । सभी मिल गिरिवरपै आये धाये ॥ नखपर गिरिवर धारके कियो कृष्णने खेल । गोवर्द्धनके शीशपर दियो सुदर्शन मेल ॥ अधर धर वंशीको टेरी ॥ साँवर० ॥ सोहे शिर पचरंगी चीरा । लगे मुख पाननको वीरा । गले मोतिनकी माल हीरा ॥ सोहै कटि पीतांबर पीरा । सात कोसके बीचमें गोवर्द्धन विस्तार । सात वर्ष को रूप हरीको लीनो पुष्प समान ॥ अशीशां दे रही ब्रज सारी ॥ सांवरे० ॥ इंद्रकर कोप कोप गरजे । नहीं जल गिरिवर पर बरसे ॥ दामिनी घन घनमें चमके । कि मूशलधारपरी बरसे ॥ वर्ष वर्षके हारचो सुरपति तब जान्यो जगदीश । दोनों हाथ पसारके धरचो चरणमें शीश ॥ मेरी बुधि मायाने फेरी ॥ साँवरे० ॥ अचंभव याको कछु नाहीं । इंद्र तो लाख कोटि ताईं ॥ बनावत पल छिनके माहीं । बिगारत देर कछू नाहीं ॥ उत्पति परले जगतकी गिरिधारी को खेल । गंगाधर ब्रह्मा शिव ध्यावें इंद्र बिचारो कौन ॥ नामते काटो यम बेरी ॥ साँवरे० ॥ १२६ ॥

प्रथम सनेहलीला ।



राग गौरी ।

बूझत श्याम कौन तू गोरी । कहां रहत काकी है बेटी देख नहीं कबहूँ व्रज तन आवत खेलत रहत आपनी पोरी ॥ सुनत रहत श्रवणन नंद ढोटा करत फिरत माखनकी चोरी । तुम्हरो कहा चोर हम लीनो खेलन चलो संग मिलजोरी ॥ सूरदास प्रभु रसिक शिरोमणि बातन भुरे राधिका भोरी ॥ १२७ ॥

राग धनाश्री ।

प्रथम सनेह दोउअन मन मान्यों।नयन सैन वातैं सवकीनी गुप्त प्रीति शिशुता प्रगटान्यो ॥ खेलन कभूँ हमारे आवो नंद सदन व्रजधाम ॥ द्वारे आय टेर मोहिं लीजो कान्ह है मेरो नाम ॥ जो जानो घर दूर हमारो बोलत लेहों टेर । तुम्हैं सौंह वृषभानु बवाकी प्रात सांझ इक वेर ॥ सूधे निपट देखियत तुमको ताते करियत साथ । सूर श्याम नागर उत नागरि राधा हरि मिल गाथ ॥ १२८ ॥

राग आसावरी ।

खेलनके मिस कुँवरि राधिका नंदमहर घर आई हो । सकुच सहित मधुरे सुर बोली घर हैं कुँवर कन्हाई हो ॥ सुनत श्याम कोकिल धुनि वाणी निकसे अति अतुराई हो । माता सों कछु कलह करत हरि डारयो रिस विसराई हो ॥ मैया री तू इनको चीन्हति बारंबार बताई हो । यमुना तीर कालिह मैं भूल्यो वाहँ पकरि मेरी लाई हो ॥ अब तो यहां तोहिं सकुचति है मैं दै सौंह वुलाई हो । सूर श्याम ऐसे गुण आगर नागरि वहुत रिझाईहो ॥ १२९॥

कवित्त ।

कीर्ति महरानी वृषभानु आदि गोप गोपी कैसे या कलीके माहिं धन्य कहलावते ॥ कौन तप करतो या ब्रज माहिं वसवेको कौन सो वैकुंठहूके सुख विसरावते ॥ नागरिया जोपै राधे प्रगटहू होती नाहिं श्याम पर कामहूं के बिपती कहावते ॥ छायजाती जडता बिलाय जाते कवि सब जर जातो रस तो रसिक कहा गावते ॥ १४० ॥

आँखमिचौनीलीला ।

राग गौरी ।

हो प्यारी लागे ब्रजकी डगर । लुक लुक खेलत आँख मिचौनी चरण पहारी बगर ॥ सात पांच मिल खेलन निकसीं कोकिला वनकी डगर । परमानंद प्रभुकी छवि निरखत मोहिं रह्यो ब्रजसगरं ॥ १४१ ॥

राग आसावरी ।

गावैं देदे तारियां हो ब्रजकी नारियां सुकुमार। नंदके नंदनहो ब्रजके चंदन रस गार॥ मिलि वसानेकी गोरी गारी गावैं नवल किशोरी तुम सुनौ नंदके नंदा । तुमको पूछे सब ब्रज चंदा ॥ तेरी वहन छैल छिनगारी । हमारे श्रीदामा तेयारी ॥ तेरीवडी विनोदनताई । जाकी सब जग करत हँसाई ॥ नँदनंदन तेरी बूआ । सो करै झूँठके पूआ ॥ नँदनंदन तेरी काकी । सो कामकलामें पाकी ॥ नँदनंदन तेरी मौसी । सो रहत सदा मन हौसी॥ नँदनंदन तेरी मामी । सो सब अवलनमें नामी ॥ नँदनंदन तेरी नानी । थाकी वात न हमते छानी ॥ नँदनंदन तेरी दादी । सो सदा फिरै उन्मादी ॥ गोरे नंद यशोदा मैया । तुम कारे कौनके दैया ॥ सुध न्हाय यशोदा रानी । काहू कारे ते रति मानी ॥ अपनी यशुमतिको गहि आनो ।

सो आय मिलै वृषभानो ॥ यह नँद वृषभानु सनेही । यह एक प्राण द्वै देही ॥ वे नंदगामकी वाला । यां वर्सानेके लाला ॥ गठ जोरे आनि करावो । हथरेलो हमैं दिवावो ॥ यह रहस किशोरी गायो । सो वास सदा व्रज पायो ॥ १४२ ॥

राग जंगला ।

यशोदाने कारी अँधेरीमें जायो । याते कारो रूप हरि पायो ॥ कीरति गोद गोपाल लिये मुख चूमत मोद बढायो ॥ रूपकी राशि मयंक मुखी मेरी राधेको रूप लजायो ॥ नाम अनेक सुने घनश्यामके जबसे गर्ग गृह आयो ॥ ना हमने वसुदेव सुने वासुदेव कहांते आयो ॥ कर्मकी रेख मिटै ना सजनी वेद पुराणन गायो। सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको वेद विमल यश गायो ॥१४३॥

भूपण अपने लेरी मैया मोरकि चंद्रिका कांचकि माणियां गुंजा फल मोहिं देरी ॥ दुरादुरीमें खेलत सखन संग खेलन मैं नहिं पैहों । मुख शशि प्रभा बराही राखों इनको कहां दुरैहौं ॥ आज सदन वृषभानु गोपके खेलन मैं जो गयो ॥ सगरे सखा अगमने भागे मैं ही चोर भयो ॥ जबहिं महरि वृषभानु गोपघर गहि अंचर मोहिं रोक्यो । वदन चूमि मिष्टान्न हाथ धर अंग अंग अवलोक्यो तब वृषभानु सभाते आये नंदकुमार न होई । परमानंद कुँवरि को दूलह कहत रहे सबकोई ॥ १४४ ॥

मैया मोहिं ऐसी दुलहिन भावै। काहू गोपकी तनक ढोटनियां रुनक झुनक चलि आवै ॥ कर कर पाक रसाल अपने कर मोहिं परोसि जिमावै। करअंचर पट ओट बबाते ठाढी ब्यार ढुरावै ॥ मोहिं उठाय गोद बैठारे कर मनुहार मनावै । अहो मेरे लाल कहो बाबा ते तेरो ब्याह करावै॥ नंदराय नँदरानी दोउ मिलि मोद समुद्र बढावै । परमानन्द दासको ठाकुर वेद विमल यश गावै ॥ १४५ ॥

वंशीलीला।

राग गौरी।

माई विधि हू ते परम प्रवीन। जिन जगत कियो आधीन॥ लालकी बांसुरिया॥ चारवदन उपदेश विधाता थापी थिरचर नीत। आठ बदन गर्जत गरबीली क्यों चलि है यह रीत॥ एक वेर श्रीपतिके सिखये पायो विधि उर ज्ञान। याके तो व्रजराज लाडिलो लग्योही रहत नित कान॥ अतुल विभूति रची चतुरानन एक कमल करठाम। हरि कर कमल युगल पर राजत क्यों न बढ़ै अभिमान॥ एक मराल बैठ आरोहन विधि भयो महा प्रशंस। इन तो सकल विमान किये गोपीजन मानस हंस॥ श्रीवैकुंठनाथ पुरवासिन सेवत जापद रेन। याके तो सुख सुख सिंहासन कर बैठी निज ऐन॥ अधर सुधा लग कुल व्रत टारे नहिं सिखा नहीं ताग। तदपि गदाधर नँदनंदनको याही ते अनुराग॥ १९६॥

राग कान्हरो।

वँसुरिया विष भरी बाजी।

दोहा—वंशी वंशी नामहै, काहू धरचो प्रवीन। तान तानकी डोरसों, खैंचत हैं मनमीन॥ अहो बांसकी वँसुरिया, तैं तप कीन्हों कौन। अधर सुधा पियको पियै, हम तरसत बिच भौन॥ अरी क्षमाकर मुरलिया, परिहैं तेरे पाँय। ओर सुखी सुन होतहैं, महा दुखी हम हाय॥ अहो बाँसकी बँसुरिया, निकसी पर्वत फोर। जो मैं ऐसी जानती, डारत तोर मरोर॥ ऐ अभिमानी मुरलिया, करी सुहागिन श्याम॥ अरी चलाये सबन पे, भले चामके दाम॥ तू है व्रजकी मुरलिया, हमहैं व्रजकी नार। तीन लोकमें गाइये वंशी

औ ब्रजनार ॥ नयननके चल तीर तनु, रह्यो परत नहिं भौन ॥ तापर बंशी बाज मत, देत कटे पर लौन ॥ १४७॥

कवित्त।

बाँसुरी बजेतो ब्रज हम न बसेंगी बीर बाँसुरी बसावो लाल हमें बिदा दीजिये। जेतें राग तेते दाग जेते छेद तेते भेद जेतो शोर तेतो घोर रोम रोम छीजिये ॥ तानके तिरीछे बान लागतहैं मोहिं आन श्रवण न सुने जाय वनमें बसीजिये ॥ बनशीको छोड़ो श्याम विनै कर्त ब्रज वाम ऐसी कीनी सूर प्रभु ऐसी हूं न कीजिये ॥

जा दिनते बंसी अवतंसी यहि गोकुलमें तादिन ते कीन्ह्यों श्याम अधर निवासु री। कुंज कुंज डोलैं याहि संगमों किलोलैं किये लीन्ह्यों सौति राग भाग सुखसों बिलासु री ॥ बंदीदीन दीन ह्वै रही हैं हम मोहन् बिन एक छिन पावत न बोलिबो सुपासु री। बाँसुरी सुनत नैन आंसु आय जात पीर पांसुरी समात औ पिरात गांसु बांसु री ॥ १४८ ॥

राग परज।

बंसुरी तू कवन गुमान भरी। सोनेकी नाहीं रूपेकी नाहीं नाहीं रतन जरी ॥ जात सिफत तेरी सब कोइ जानै मधुबनकी लकरी। क्यारी भयो जब हरि मुख लागी बाजत विरहभरी॥सूर श्याम प्रभु अब क्या करिये अधरन लागत री ॥ १४९ ॥

राग भूपाली कल्याण।

री बंशी कौन तप तैं कियो। रहत गिरिधर मुखहिं लागी अधरनको रस पियो ॥ श्यामसुंदर कमल लोचन तोहिं तन मन दियो। सूर श्रीगोपाल वश भये जगतमें यश लियो ॥ १५० ॥

राग देश।

श्याम तिहारी मदन मुरलिया तनक सी ने मन मोह्यो। यह सजीव जंतु जल थलके नाद स्वाद सुर पोह्यो ॥ धरणीते गोवर्द्ध-

न धारयो कोमल प्राणअधार। अब हरि लटक रहत हैं टेढ़े तनक मुरलिया भार ॥ हमैं छुड़ाय अधर रसपीवे करे न रंचक कान। सूरदास प्रभु निकस कुंजते चेरी सौत भइ आन ॥ १५१ ॥

राग दादरा।

चोरो सखी बंशी आज दावँ भलो पायो है। यह उपकार प्यारी सदा हम मानेंगी गौरिराग रसिक साँवरो रिझायोहै ॥ बहुत अधरामृत चुवायो श्याम मुरली बीच दिन दिनकी कसक आज काढ़ पायो है। रसिक पीतमजोपे बिनती करें हजारबार तौहू या बांसुरीको भेद ना बतायोहै ॥ १५२ ॥

राग देश।

सखी याकी बंशी लीजै चोर ॥ जिन गोपाल किये अपने वश प्रीति सबनसों तोर। अधरनको रस लेत मुरलिया हम तरसत निशि भोर ॥ छिन इक घर भीतर निशि वासर धरत न कबहूँ छोर। कबहुँक कर कबहूँ अधरनपर कबहूं कटि उर मोर ॥ ना जानूं कछु मेल मोहनी राखी सबअँग कोर। सूरदास प्रभुको मन सजनी बँध्यो है नादकी डोर ॥ १५३ ॥

कौन बसत या वृंदावनमें मों मुरलीको चोर ॥ जानी नहीं लई काहू करमें कटिमें उरसी जोर। चोरी नाह बरजोरी एरी प्यारी मो मुरलीको चोर ॥ राजाहीको दिये बनेगी यही न्यावकी तोर। वृन्दावन हित रूप सुघर पिया बाट गँवाई ढूँढो काननके कछु देहु अकोर ॥ १५४ ॥

राग खम्माच।

किन लई देहु बताय मुरलिया राधा ॥ प्राणते प्यारी तिहारी सौंह मोहिं जीवत हों गुणगाय ॥ सप्त सुरन सुर नर मुनि मोहे वसु-

री नेक बजाय ॥ यह बिनती बलिहार सुनों क्या ना प्यारीजी होत सहाय ॥ १५५ ॥

राग काफी।

मुरलिया जो पाऊं तो मैं तेरोही गुणगाऊं। सुनहो कुँवारि किशोरी श्रीराधे राधे राधे गाय सुनाऊं ॥ चरण छुवाय कहतहों तुमसों तेरोहि ध्यान लगाऊं। यह बिनती बलिहार बिहारन तेरे हि हाथ बिकाऊं ॥ १५६ ॥

राग भूपाली।

वंशी मेरी प्यारी दीजौ प्रान प्रान प्रान। यहि ठौर कालिह भूल्यो री सुखदान दान दान ॥ नहिं कामकी तिहारी दीजै आन आन आन। जाते करूं मैं तेरो री गुण गान गान गान ॥ बिनती सुनो हामारी दे कान कान कान। कीजै कृपारसिकपै जन जान जान जान ॥ १५७ ॥

राग ईमन।

कालह सखी यहि ठौर बांसुरी भूल बिसारी । ले जो गई तुम धाम बात हम सुनी है तुम्हारी ॥ तुम्हरे काम न आवही वंसी हमरी देहु। हम आतुर होय मांगते तुम नाहिं जु नाहिं करो ॥ बांसुरी दीजिये ब्रजनारि बंसी कैसी होत नहीं हम नयनन देखी । पिता तुम्हारे साधु लाल तुम कपट विशेखी ॥ इत उत खेलत तुम फिरो वाहीं भूलरही । सांच शपथ बाबाकी सौं तेरी बँसुरी नाहिं लई ॥ बासुरी कैसी है ब्रजनाथ बंसी हमरी देहु काहेको रारि बढावो । समझ बूझ मनमाहिं काहेको लोग हँसावो ॥ लोगहँसैं चर्चाकरैं प्यारी मनमें शोच विचार। यह वंसी मनमोहनी तुम देती क्यों न गवांर॥ वंसी दीजिये० ॥ हमको कहत गँवारि आपनी करत बड़ाई। मारूं गुलचा गाल तोहूं बाबाकी जाई ॥ तुमसे केते ग्वारिया मांगत हम पै

आय । चतुराई तुम छांडिके जाय चरावो गाय ॥ वंसी केसी० ॥ या वंसीकी सार कहा तुम ग्वालिन जानो । तीन लोक पटतर तासों मेरो मन मानो ॥ या वंसी खोजत फिरैं शिव विरंचि मुनिनाथ । परचावो परचें नहीं तुम कहा नचावत हाथ ॥ वंसी दीजिये० ॥ नंद मिहरके कुंवर कान्ह तोहि कौन पतीजे । भूल गये कहुं अनत दोप हमको नहिं दीजै ॥ लै लकरी मुखपै धरी वंसुरी याको नाम ॥ जिन घर ऐसे पूत हैं उजरत तिनके गाम ॥ वंसा केसी० ॥ वसौ कि ऊजर जाउ तुझे क्या परी हमारी । तुमसीहिं लखचार नंद घर गोवरहारी ॥ इकलख मेरे संग चलें लखआवें लखजांय । लखठाढी दर्शन करें लख खडी खडी ललचायं ॥ वंसी दीजिये० ॥ सुघरसयानी नारि हाथगहि वंसीलाई । पूरण परमानंद सांवरे मुखहि बजाई ॥ ले वंसी ग्वालिन मिली घूँघट वदनछिपाय । सूरदास हारी गूजरिया जीते यादवराय ॥ बाँसुरी लीजिये व्रजनाथ ॥ १५८ ॥

राग कल्याण ।

श्यामकी वंसी वन पाई । उठो यशोदा मैया खोलो किवरिया में वंसी गृह देनेको आई ॥ वहुत दिननके उनींदे मोहन सोनेदे वृषभानुकि जाई । इतनी सुनत निकसि आये मोहन अंतर्यामी प्रभु कुँवर कन्हाई ॥ मुरलीके सँग पहुँची हमारी दे राधे वृषभानुकि जाई ॥ हमजानी कछु मान वढ़ेगो तुम हरि हमको चोरी लगाई । श्रवणन सुनी नयन नहिं देखी चलो ठौर हम देहि वताई । सूरदास गुण कहँ लग वरणे दोनोंमें एके चतुराई ॥ १५९ ॥

वेणीगूथनलीला ।

राग कल्याण ।

वेणी गूंथ कहा कोई जाने मेरीसी तेरी सौंह राधे ॥ विच विच फूल श्वेत पित राते को करसके एरी सौंह राधे ॥ वैठ

रसिक सँवारन बारन कोमल कर कँगहीसों साधे। हरीदास के स्वामी श्यामा नख शिखलौं बनाई दे काजर नखहीसों आधे ॥ १६० ॥

राग दादरा।

प्यारीको शृँगार करत नँदलाला। बार बार मैं मोती पोहे कन बिच झलके बाला ॥ कलीदार जरीको लहँगा ऊपर सुर्ख दुशाला। पुरुषोत्तम प्रभु रसिक शिरोमणि छबि निरखत व्रजवाला ॥ १६१ ॥

राग गौरी।

तेरो मुख नीको कि मेरो राधा प्यारी। दर्पण हाथ लिये नँदनंदन साँची कहो वृषभानु दुलारी ॥ हम का कहैं तुमहीं क्यों ना देखो मैं गोरी तुम श्याम विहारी। हमरो वदन ज्यों चंदाकी उजारी तुमरो वदन जैसे रैनि अँध्यारी ॥ तिहारे शीशपर मुकुट बिराजै हमरे शीशपर तुम गिरिधारी। चंद्र सखी भज बालकृष्ण-छवि दोउ ओर प्रीति बढी अति भारी ॥ १६२ ॥

राग विहाग।

बेसर कौनकी अतिनीकी। होड परी लालन औ ललना चौंप बड़ी अति जीकी ॥ न्यावपरो ललताके आगे कौन ललित कौन फीकी। दामोदर हित विलग न मानो झुकनझुकी प्यारीजीकी ॥१६३॥

राग श्यामकल्याण।

राधा प्यारी रूप उजारी मोतन नेक हेरो। मेरी प्यारी तन मन धन छबि ऊपर वारो नाम उचारों मैं तेरो ॥ हँस मुसकाय वदन तन हेरो मोहिं करो चरणनको चेरो। अली किशोरी एक बार कहो लाल विहारी मेरो ॥ १६४ ॥

राग खेमटा ।

तेरो मुख चंद्र री चकोर मेरे नैना । पलहूं न लागे पलक बिन दरखे भूल गये गत पलहूं लगैना । हर्वरात मिलवेको निशिदिन ऐसे मिलें मानों कबहूं मिलैना ॥ भगवत रसिक रसकी यह वातें रसिक विना कोइ समझ सकैना ॥ १६५ ॥

तू है मुख कमल नयन अलि मेरे । अति आरत अनुरागी लंपट हर्वरात इत फिरत न फेरे ॥ पान करत मकरंद रूप रस भूल नहीं फिर इत उत हेरे । भगवत रसिक भये मतवारे घूमत रहत छके मद तेरे ॥ १६६ ॥

प्रीतम तुम मों दृगन वसतहो । कहा भोरसे ह्वै पूछतहो कै चतुराई कर जो हँसत हो ॥ लीजे परख स्वरूप आपनो पुतारिनमें तुमहीं जो लसतहो । वृन्दावन हित रूपरसिक तुम कुंज लड़ावत हिय हुलसतहो ॥ १६७ ॥

रागजंगला सवैया ।

चैन नहीं दिन रैन परे जवते तुम नैनन नेक निहारे ॥ काज विसार दिये घरके व्रजराज मैं लाज समाज विसारे ॥ मो विनती मनमोहन मानियो मोसों कहू जिन हूजियो न्यारे ॥ मोहिं सदाचित सों अति चाहियो नीकेकै नेह निवाहियो प्यारे ॥ १६८ ॥

गोरे ग्वालकी लीला ।

ठुमरी ।

चन्दा सों वदन जामें चन्दनको विंदा दिये चन्दा तन चितवत चन्दा छवि छाई प्यारी । चन्दनकी सारी सोहे चन्दनको हार हिय चन्दनको लहँगा सोहै चन्दा मुख भाई प्यारी ॥ चन्दन- की कंचुकी चन्दनकी वन्दनी चन्दनकी वँगली चन्दा तनु भाई

प्यारी । कहा कहूँ कछु कहत न आवे तिहारो मुख देख चन्दा गयोहै लजाई प्यारी ॥ १६९ ॥

रागविहाग ।

यह कहिकै प्रिय धाम गई । चौक परे हारि जब यह जानी अब यह कहा भई ॥ दोप न होय कछू सखि मेरो उपमा चंद दई । रिस न भरी नख शिखलौं प्यारी यौवन गर्व मई ॥ लावो वेगि मनाय सखीरी यामिनि जात वही । पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत लावो वेगि सही ॥१७०॥

राग गौड़मलार ।

वृषभानु कुँवरि जब देखों।तब जन्म सफल करि लेखों॥मैं राधा राधा गाऊँ। राधा हित वेणु बजाऊँ ॥ मैं राधारमण कहाऊँ । काहे दूजा नाम धराऊँ ॥ जहँ राधा चर्चा कीजे । तहँ प्रथमजान मोहिं लीजे ॥ जहँ राधा राधा गावैं । तहँ सुनबेको हम आवैं ॥ श्रीराधा मेरी सम्पति । श्रीराधा मेरी दम्पति ॥ श्रीराधा मेरी शोभा । श्रीराधाको चित लोभा ॥ मैं राधाके संग नीको । राधा बिनलागत फीको ॥ १७१ ॥

राग खेमटा ।

देखी कहूँ गलिनमें मो प्राण जीवनी । एहो सुजान प्यारी मम चूक क्या विचारी क्यों दुरगई लतनमें दे दर्श आनन्दनी ॥ जब चलत चाल छबिसों तब हलत हार उरसों ठुम ठुम चरन धरन पै तू गति गयन्दनी ॥ तेरी छटा चरणकी निंदत रवी किरणकी हाहा कुँवरि किशोरी तू है सुख समूहनी । यह सुनत बचन मेरो पाषाण द्रवत हेरो हित रूप लाल चेरो एहो दुख निकन्दनी ॥ १७२ ॥

रागदेश ।

बाधा दे राधा कित गई । वृन्दा विपिन अछत प्यारी विन सब विपरीत भई ॥ मेरे मन्द भाग्यसों काहू पोच प्रकृति सिखई । व्यास स्वामिनी वेगि मिले तो वाढ़े प्रीति नई ॥ १७३ ॥

राग पीलू ।

मेरी सुध आन लियो प्यारी राधा । तनहूँ लडैती राधे मनहूँ लड़ैती हरत सकल दुख बाधा ॥ कुंजमहलमें सदाहि बसतहो सुख संपति लिये साधा। विट्ठल विपिन विनोद विहारन सर्वस प्राण अगाधा ॥ १७४ ॥

राग सोरठ।

श्रीराधा प्यारी देखीहै चितकी चोरालागी काहू ठौर मैंने देखी है चितकी चोर॥ चन्द्रवदनि मृगलोचनि राधे जैसे चन्द्र चकोर । नई प्रीति सों सबरस बाढ्यो जोवना करतही जोर ॥ पाँयनमें नूपुर धुनि बाजे गजगति चलती तोर । या छवि निरखिके मगन भये गुण गावत दास किशोर ॥ १७५ ॥

राग विभास ।

मेरी तो जविन राधा विन देखे नहिं चैन मोसे तो कछु चूक परी ना कैसे रूठी सुखदैन ॥ पैयां परूँ मैं तोरे ललिता तोरे विशाखा तुम जेयो प्यारी लेन । धीरज प्यारीजूके देखे श्रीराधाजूके देखे शीतल होंगे मेरे नैन ॥ १७६ ॥

राग विहाग ।

तुम कहुँ देखी रे इत जात रूप गरविनी प्यारी राधा ॥ चम्पक वरण गात मन रंजक खंजन चख कुरंग मद गंजन अमल कमल मुख ज्योति विलोकत होत शरद शशि आधा ॥ अहो सुगन्ध मृग-

शावक नयनी कहूँ देखी प्यारी पिकबैनी सुपमा सिन्धु अगाधा॥ अहो मराल मानसर बासिक अहो अलिन्द मकरंद उपासिक देहु बताय मोहिं दाया करि होत अपत अपराधा॥ अहो कदम्ब अहो अम्ब निम्ब बट सोहत सुखद छांह यमुना तट हरत तापकी बाधा॥ सन्तत देत गोप गोधन सुख कबहूँ नहिं सहिसकत मेरो दुख उपकारी वपु वेद बखानत अबहिं मौन क्यों साधा॥ आरत वचन पुकारत लालन मन जो फँस्यो बिरहीके हालन मदन जाल सों बांधा॥ अतिशय बिकल देखि बनवारी प्रकट भई वृषभानु दुलारी सूरदास प्रभुको लगाय उर पुरवत रसकी साधा॥ १७७॥

राग काफी।

करविचार वृषभानु दुलारी। ग्वाल रूप धर छलन कृष्णको नन्दगामकी ओर सिधारी॥ जहँ हरि अपनी गाय चरावें तहां आप चल आई। देख रूप मोहे मुरलीधर भूलगये चतुराई॥ अरे मित्र क्या नाम तिहारो बास कहां है तेरो। मैं तो तोहिं कभूं नहिं देख्यो करत सदा ब्रज फेरो॥गोरे ग्वाल भानुपुरके हम गोधन वृंद चरावें। रसिक विहारी गाय हमारी आई भज कहँ पावें॥ १७८॥

राग देश।

गुन सुन वृपभानु कुवँरि के॥ जाके लाल तुम रहो अधीन। वह तो गृहसे सटक वन रहत अटक नहिं मानत हटक इत उत ही फिरत॥ऐसी फिरे इतरात नहीं काहूको सुहात मन माने जित जात नहीं नेकहू डरत। बेटी बड़ेकी कहावे दधि बेचवेको जावे ताहि लाजहू न आवै सब नाम धरत॥ इक मेरी सुन लीजै ऐसी नार ना पतीजै व्याह कहूँ जासों कीजै तेरो चित्त हरत॥ जाकी मुख उजियारी देख रीझोगे विहारी पियो वारि वारि पानी जब प्रीति करत॥ १७९॥

राग प्रभाती ।

सखा तुम बोलो न बात विचारी । कहौ कौनसी बाल जगत में जैसी है भानुदुलारी ॥ भानुनगरके बसन हार तुम प्यारीकी अनुहारी ॥ रवि शशि कोटि मदन हूँकी छवि दीजै तुम पर वारी॥ कहो कौनसे में व्याह कराऊँ रची कवन विधि नारी । करत वास हिरदे मेरे में कीरति कुँवर दुलारी ॥ प्रेम विवश कछु सुरति रही ना तनुकी दशा बिसारी । लिये लगाय वेग उर प्यारी तव हँसि रसिक विहारी ॥ १८० ॥

रागदेश ।

सखी री में हूँ नंद किशोर । मैं दधि दान लेत वृंदावन रोकतहूं वरजोर ॥ यह जो माननी मान कर वैठत विनती करूं कर जोर । पुरुषोत्तम प्रभु मैं हूं रसिक वर यह मेरी चितचोर ॥ १८१ ॥

रासलीला ।

राग गौडमलार ।

शरद निशि देख हरि हर्ष पायो । विपिन वृंदावनहिं सुभग फूले सुमन रास रुचि श्यामके मनहिं आयो ॥ परम उज्वल रैनि चमक रहि भूमिपर सदा फल तरुन प्रति सुभग लागे । ते सोई परम रमणीक यमुना पुलिन त्रिविध वहे पवन आनंद जागे ॥ राधिकारमण वन भवन सुख देखके अधर धर वेणु सुर ललित गाई । नाम ले ले सकल गोप कन्यानके सबनके श्रवण यह ध्वनि सुनाई ॥ सुनत उपज्यो मयन परत ना काहू चैन शब्द सुन श्रवण भईं विकल भारी । सूर प्रभु ध्यान करके चली उठ सभी भवन जन नेह तज घोप नारी ॥ १८२ ॥

रागकल्याण ।

जब हरि मुरली नाद प्रकाश्यो । जंगम जड थावर चर कीन्हें पाहन जलज विकाश्यो ॥ स्वर्ग पताल दशोदिशि पूरण धुनि आच्छादित कीनो । निशि हरि कल्प समान बढ़ाई गोपिनको सुख दीनो ॥ भर्मत भये जीव जल थलके तनुकी सुध न सम्हार । सूर श्याम मुख वेणु विराजत उलटे सब व्यवहार ॥ १८३ ॥

राग झंझोटी।

बंसी यमुना पै बाज रही रे लाल छबि निरखन कैसे जाऊं री आज ॥ बंसीकी टेर सुनी मेरे श्रवणन तन मन सुधि बिसरीरे लाल ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहै चन्दन खौर लगी रे लाल ॥ चंद्र सखी भजु बालकृष्ण छबि चरणन चेरी भई रे लाल ॥ १८४ ॥

राग यमन ।

वृंदावन सघन कुंज माधुरी लतान तरे यमुना पुलिनमें मधुर बजी बांसुरी । जबसे धुनि परी कान मानो लागे मयन बान प्राननकी कहा चले पीर होत पांसुरी ॥ व्याप्यो जो अनंग तामें अंग सुध भूल गई कोई कछू कहो कोई करो उपहासु री । ऐसे व्रजाधीश जीसों प्रीति नई रीति बाढी जाके उर बसगई प्रेमपुंज गांसु री ॥ १८५ ॥

कवित्त ।

एक उठ दौरी एक भूल गई पौरी एक राख भर कौरी सुध रही नाहिं तनमें ॥ एक खुले बार एक छतियां उघार एक भूषणको डर चली दामिनी ज्यों घनमें ॥ एक उजियारी गोपी नाथने निहारी बारी एक भई बौरी डोलै मदन उमंगमें ॥ ऊधम भयो है घरी चार व्रज मंडलमें बांसुरी बजाई कान्ह जभी वृंदावनमें ॥ १८६ ॥

वाजी घरआई वाजी देखवेको धाई वाजी मुरझाई सुनि तान गिरि वरधरकी ॥ वाजी हँस बोले वाजी करत कलोलें वाजी संग लाग डोलें सुधि बिसारी सब घरकी॥बाजी ना धरें धीर वाजी ना सम्हारें चीर वाजिनके उठी पीर दावानल भरकी ॥ वाजी कहें वाजी वाजी वाजी कहें कहां वाजी वाजी कहें वाजी वंसी साँवरेसुघरकी ॥१८७॥

राग भैरव ।

बांसुरी वजाई आज रंगसो मुरारी । शिव समाधि भूल गई मुनि जनकी तारी ॥ वेद भनत ब्रह्मा भूले भूले ब्रह्मचारी । सुनतही आ-नंद भयो लगी है करारी ॥ रंभा सव ताल चूकी भूलि नृत्यकारी । यमुना जल उलट वह्यो सुध ना सँभारी ॥ श्रीवृंदावन वंसी वजी तीन लोक प्यारी । ग्वाल वाल मगन भये ब्रजकी सव नारी ॥ सुंदर श्याम मोहनी मूरत नटवर वपु धारी । सूर किशोर मदन मोहन चरणों वलिहारी ॥ १८८ ॥

राग जंगला ।

वृंदावन कुंज धाम विचरत पिय प्यारी । कातिककी शरद रैनि चंद्रकी उजारी ॥ पवन मंद मंद चलत फूली फुलवारी । विकसे सर कमल फूले शोभा अतिभारी ॥ झरना चहुँओर झरत यमुना सुखकारी । आँनँदकी रैनि जान मुरली मुखधारी ॥ लैलैके नाम सकल टेरी ब्रजनारी ॥ सुनके धुन भवन त्याग धाई सुत डारी ॥ उलटे तनुचीर पहर आई मिल सारी । वीणा मृदंग चंग वाजत करतारी ॥ दास सुखानंद प्यारे चरणन वलिहारी ॥ १८९ ॥

राग कल्याण ।

प्यारी में ऐसे देखे श्याम ॥ वांसुरी वजावत गावत कल्याण ॥ कवकी में ठाढी भैयाँ सुध बुध भूल गैयाँ छौने जैसे जादूडारा भूले मोसे काम ॥ जब धुन कान पैया देहकी ना सुध रहिया तन मन

हर लीनो विरहोंवाले कान्ह ॥ मीराबाई प्रेम पाया गिरिधर ला
ल ध्याया देह सों विदेह भैयाँ लागो पग ध्यान ॥ १९० ॥

राग विहाग।

निशि काहेको वन उठ धाई।हँस हँस श्याम कहत हो सुंदरि की
तुम व्रज मारगहिं भुलाई ॥ गई रही दधि बेचन मथुरा तहां आज
अब देर लगाई। अति भ्रम भयो विपिन क्यों आई मारग वह कह
सवन वताई ॥ जाहु जाहु गृह तुरत युवतिगण खीझत गुरुजन
लोग लुगाई ।की गोकुलते गमन कियो तुम इन बातन कछु ना-
हिं भलाई ॥ यह सुनिकै व्रज बाम चकित भईं कहा करत गिरिधर
चतुराई। सूर नाम लैलै सवहिनको मुरली वारंवार वजाई ॥ १९१ ॥

राग प्रभाती ।

सानूँ मुड़ घर वंजन कह्यो वे श्यामां । सांई सांई वै करें दया
साराजग वे ठगे दया असां माप्यांते चोरी इकन्योहडा लगाया,यमु
ना किनारे श्यामां॥ वचन की तोई जव चीर हमारे हरे वे श्यामां ॥
यमुना किनारे श्यामां धेनु चराइया जवमुरलीकी धुनक सुनाइया
वे श्यामां॥सूरके स्वामी प्रभु शरण तिहारी अब लज्जा हमारी राखो
वे श्यामां ॥ १९२ ॥

राग कान्हरा।

कैसे रास रसहि मैं गाऊं। श्रीराधिका श्यामकी प्यारी तुम्हरी-
कृपा वास व्रज पाऊं॥ आनदेव स्वपने नहिं जानूं दंपतिको शिर
नाऊं। भजन प्रताप चरण महिमा ते गुरुकी कृपा दिखाऊं॥ वृंदा
वन वीथिन यमुना तट आनँदकुटी छवाऊं। सूरदास प्रभु तिहारे
मिलनको वेद विमल यश गाऊँ॥ १९३ ॥

महारानी श्री राधे रानी । जाके वल मैंने सवते तोरी लोक वेद कुलकांनी ॥ प्राण जीवनधन लाल विहारीको वार पीवत हैं पानी । भगवत रसिक अनन्य सहायक सव ऊपर सुखदानी ॥ १९४॥

परम धन राधे नाम अधार । जाहि श्याम मुरलीमें टेरत सुमिरत वारंवार॥ यंत्र मंत्र और वेद तंत्रमें सभी तारको तार । श्रीशुक प्रकट कियो नहिं याते जानि सारको सार ॥ कोटिन रूप धरे नँदनंदन तऊ न पायो पार । व्यासदास अव प्रकट वखानत डार भारमें भार ॥ १९५ ॥

राग देश ।

रच्यो श्रीवृंदावन रास गोविंद । चलो सखी देखन चालिये नवलअनंद ॥ यमुनाके नीरे तीरे शीतल सुगंध त्रिविध पवन डोलें अति गति मंद ॥ खंजरी सरंगी वाजे ताल मृदंग । वीण उपंग मुरली मोहर मुहचंग॥ भालमें तिलक सोहे मृगमद रेख । मुरली मनोहर जीको नटवर भेख ॥ ब्रह्मा देखें विष्णु नारीनरेश । देखन आये शंभु गौरी गणेश॥ वृंदावन माहिं रच्यो रास विलास । गुण गावें स्वामी माधुरी दास ॥ १९६ ॥

राग केदारा ।

सुनि धुन मुरली वैन वाजे हरि रास रच्यो । कुंज द्रुम वेली प्रफुलित मंडल कंचन मणिन रच्यो ॥ निर्तत युगल किशोर युवतिजन रासमें राग केदार रच्यो । हरिदासके स्वामी श्यामा कुंज विहारी नीकेही आज गोपाल नच्यो ॥ १९७ ॥

कवित्त ।

तालन पे ताल पे तमालन पे मालन पे वृंदावन वीथिन विहार वंसीवटपे । छितिपे छवाननपे छाजत छटाननपे ललित लताननपे लाडिलीकी लटपे ॥ कहें पदमाकर अखंड रास मंडल पे मंडत

उमंड महा कालिंदीके तटपै ॥ कैसी छबि छाई आज शरद जुन्हाई आली जैसी छबि छाई या कन्हाईके मुकुट पै ॥ १९८ ॥

सवैया ।

शूकर ह्वै कब रास रच्यो अरु वामन ह्वै कब गोपी नचाई । मीन ह्वै कौनके चीर हरे कछुवा ह्वैकै कब बीन बजाई ॥ होय नृसिंह कहो हरि जू तुम कौनकी छातिन रेख लगाई। वृषभानु सुता प्रगटी जबते तबते तुम केलि कलानिधि पाई ॥ १९९ ॥

राग पीलू ।

ठाढी रहरी लाड गहेली मैं माला सुरझाऊं । नकबेसरकी ग्रंथि जो ढीली ताहू सुभग बनाऊं ॥ एरी टेढी चाल छाँड मैं सूधी चलन सिखाऊं । वृंदावन हित रूप फूलकी माल रीझ जो पाऊं ॥ २०० ॥

प्रीतम रहे प्रिया मन लीये प्रिया रहे मन पीको । सखी रहैं दोउअन मन लीये रंग बढै नित हीको ॥ कानन छवि ते नये दिखावें प्राण बढे नित हीको । वृंदावन हित रूप विहारन सकल त्रियन शिर टीको ॥ २०१ ॥

सवैया ।

सोनजुहीकी बनी पगिया रु चमेलीको गुच्छ रह्यो झुकि न्यारो । दो दल फूल कदंबके कुंडल सेवती जामाहु घूम घुमारो ॥ नौ तुलसी पटुका घनश्याम गुलाब हजार चमेलीको न्यारो । फूलन आज विचित्र बन्यो देखो कैसो शृंगारयो है प्यारीने प्यारो ॥२०२॥

सारी सँवारी है सोनजुही अरु जूहीकी तापै लगाई किनारी । पंकजके दलको लहिंगा अँगिया गुलाबासकी शोभित न्यारी ॥ चमेलीको हार हमेल गुलाबकी मौरकी बेंदी दै भाल सँवारी । आज विचित्र सँवारिकै देखिये कैसी शृंगारी है प्यारेने प्यारी ॥२०३॥

राग पीलू।

संग चलीं व्रजबाल लाल करतालन लै लै जोरी। लाईं गति मृदंग उपजाईं झाईं वन घनघोरी॥ ततथेई धुमकिट ततथेई यह धुनसुनले जोरी। वल्लभ रसिक विहारी प्यारी प्यारी तान झकोरी॥ २०४॥

कवित्त।

माथे पै मुकुट देख चंद्रिका चटक देख छविकी लटक देख रूप रस पीजिये। लोचन विशाल देख गरे गुंजमाल देख अधर सुलाल देख चित्तचौंप कीजिये॥ कुंडल हलन देख अलकें वलन देख पलकें चलन देख सरवस दीजिये। पीतांवर छोर देख मुरली की घोर देख साँवरेकी ओर देख देखवोही कीजिये॥ २०५॥

राग पीलू।

भाग्यवान वृषभानु सुतासी को तिय त्रिभुवन माहीं। जाको पति त्रिभुवन मनमोहन दिये रहत गल बाहीं॥ ह्वै अधीन संगहि सँग डोलत जहाँ कुँवरि चल जाहीं। रसिक लख्यो जो सुख वृंदावन सो त्रिभुवन में नाहीं॥ २०६॥

कवित्त।

वृंदावन धाम नीको व्रजको विश्राम नीको श्यामा श्याम नाम नीको मंदिर अनंदको। कालीदह न्हान नीको यमुना को नीर नीको रेणुकाको खान नीको स्वाद नीको कंद को॥ राधाकृष्ण कुंड नीको संतनको संग नीको गौरश्याम रंगनीको अंग युग चंदको। नील पीत पट नीको वंसीवट तट नीको ललितकिशोरी नीकी नट नीको नंदको॥ २०७॥

भृकुटी तनीको नकवेसर वनीको लट नगन फनीको लखि फूल्यों कंज फीको है। मैनकी मनीको नैनवानकी अनीको चोखे

सैन रजनीको हाँस हुलसन हीको है ॥ रूप रमनीको कैधों रमारमनीको गज-गती गमनी कैधों सिंधु मूर जीको है। बेनीवंद नीको मृदुहास फंद नीको मुख चंदहूसे नीको वृपभानुनंदनीको है॥२०८॥

छंद।

जैसी है मृदु पटकन चटकन कटतारन की। त्रियतन मोर मुकुट की लटकन कल कुंडल हारन की ॥ साँवरे पिय संग निर्तत ब्रजकी चंचल बाला। मानो घन मंडल मंजुल खेलत दामिनि सी बाला ॥ २०९ ॥

सवैया।

मंडल रासविलास महारस मंडल श्रीवृपभानु दुलारी। पंडित कोक सँगीत भरी गुण कोटिन राजत गोपकुमारी ॥ प्रीतमके भुजदंडमें शोभित संगमें अंग अनंगनवारी। तान तरंगन रंग बढ्यो ऐसे राधिका माधवकी बलिहारी ॥ २१० ॥

जामा बन्यो जरी तासको सुन्दर लाल सुबंद रु जर्द किनारी। झालरदार बन्यो पटुका अरु मोतिनकी छबि जात कहा री ॥ जैसिक चाल चलै गजराज कहैं बलिहारी है मौज तिहारी ॥ देखत नैंनन ताक रही झुक झाँक झरोखन बाँकेविहारी ॥ २११ ॥

कवित्त।

सुंदर सुजान कान्ह सुंदर है पाग शीश सुंदरसे नैंन धर सुंदर बाँसुरिया। सुंदरसी भ्रूकमान सुंदर पलक बान सुंद्र मुसक्यान चितवन चितहरिया ॥ सुंद्र बाजूबंद राजैं सुंद्र वनमाल साजैं सुंद्र गलहार मोती जामो जो केशरिया। सुंद्र कंकन अमोल सुंद्र कुंडल कपोल सुन्द्र नारायण बोल दीन दर्द हरिया ॥ २१२ ॥

वारि डारों शरदइंदु मुखछबि गोविंद पैं दिनेशहु वारि डारों नखनछटान पर। कोटिकाम वारि डारों अंग अंग श्याम लखि वारि

डारों अलि आलि कुंचित लटान पर ॥ नैननकी कोरनपे कंजहूको वारि डारों वारि डारों हंसहूको चाल लटकान पर । देख सखी आज ब्रजराज छबि कहा कहूँ कामधेनु वारि डारों भ्रुकुटीमटान पर ॥ २१३ ॥ नैनन चकोर मुख चंद्रहूको वारि डारों वारि डारों चित मनमोहन् चितचोर पै । प्राणहूको वारि डारों हंसन दशन लाल हेरन कुटिल वाके लोचनकी कोर पै ॥ वारि डारों मैन रंग अंग अंग श्याम श्याम हिलन मिलन रस रासकी झकोर पै । अतिही सुघर वर सोहत त्रिभंगी लाल सर्वसहू वारि डारों ग्रीवाकी मरोर पै ॥ २१४ ॥ मुकुट के रंगन पै इंद्र को धनुप वारों अमल कमल वारों लोचन विशाल पर । कुंडलप्रभापे कोटि प्रभाकर वारि डारों कोटिकमदन वारों वदनरसाल पर ॥ तनुकी तरुण पर नीरद सजल वारों चपला चमक उर मोतिनकी माल पर । चाल पै मराल वारों मनहूको वारि डारों और कहा कहा वारों छबि नंदलाल पर ॥ २१५ ॥

राग जैजैवंती ।

आवरी बावरी ऊजरी पाग पै मेलके बाँध्योहै मंजर चोटा । चंचल लोचन चाल मनोहर आन्यो अबै गहि खंजन जोटा ॥ देखत रूप ठगोरी सी लागत ऐन मैन मानो कमल के जोटा । नंददास रस रास कोटिन वारों आज बन्यो ब्रजराजको ढोटा ॥ २१६ ॥

राग विलावल ।

आली री रासमंडल मध्य निरतत मदन मोहन अधिक प्यार लाडिली रूप निधान । चरण चारु हँसत भेद मिलवत गति भाँति भाँति भ्रू विलास मंद हास लेत नयननहीमें मान ॥ दोऊ

मिलि राग अलापत गावत होड़ा होड़ी उघटत देकर तारी तान। परमानंद निरख गोपीजन वारतहैं निज प्रान ॥ २१७ ॥

राग भैरवी।

निरतत गोपाल संग राधिका बनी। बाहुदंड भुजन मेलि मंडल मध्य करत केलि सरस गान श्याम करैं संग भामिनी॥ मोर मुकुट कुंडल छबि काछनी बनी विचित्र झलकत उरहार विमल थकित चाँदनी। परममुदित सुर नर मुनि वर्षत सब कुसुममाल वारत तन मन प्राण कृष्णदास स्वामिनी॥ २१८॥

राग झंझोटी।

गोपीगोपाल लाल रास मंडल माहीं। तत्ताथेई ता सुघंग निरतत गहि बाहीं॥ द्रुम द्रुम द्रुम द्रुम मृदंग छन नन नन रूप रंग दगता दगता लतंग उघटत रसनाई। बीच लाल बीच बाल प्रति प्रति अति द्युति रसाल अविगत गति अति उदार निरखि दग सराही॥ श्रीराधा मुख शरद चंद पोंछत जल श्रम अनंद श्री ब्रज चंद लटक करत मुकुट छाहीं॥ तत्तत तत सुघर गात सरिगम पदनी ग ठाठ और पदहि प्रलाद दाप दंपति अति सादहीं। गावत रस भरे अनंद तान तान सुर अभंग उमँगत छबि अति अनंद रीझत हरि राधहीं॥ छाये देवन विमान देखत सुर शक्र भान देवांगन निधान रीझि प्राण वारहीं। चकित थकित यमुना नीर खग मृग जग मग शरीर धन नंदके कुमार बलि बलि जाय सूरदास रास सुख तिहारहीं॥ २१९॥

राग देश।

लालको नाचन शिखवत प्यारी। जैसोइ सुभग बन्यो श्रीवृंदावन तैसी शरद उजियारी॥ मान गुमान लकुट लिये ठाढी

डरपत कुंजविहारी। थेई थेई करत लाल मनमोहन उरप तुरप गति न्यारी॥ वंशीवट यमुना तट कुंजन रहस रच्यो गिरिधारी। कोऊ मृदंग कोऊ वीण बजावत कोई हँसत देतारी॥ छविसों गावत खड़ी नचावत रोम रोम बलिहारी। देख देख ब्रह्मादिक नारद अचरज सोच विचारी॥ व्यास स्वामिनी सो छवि निरखत रीझ देत करतारी॥ २२०॥

राग काफी।

देखो री या मुकुटकी लटकन। निरतत रास लिये राधा सँग वेजंती वेसरकी अटकन॥ पीतांवर छुटि जात छिनै छिन नूपुर शब्द पगनकी पटकन। सूर श्यामकी या छवि ऊपर झूंठो ज्ञान योगको भटकन॥ २२१॥

राग विहाग।

आज वनवारी नच्यो है मुरारी। सखी कुंजविहारी गिरिधारी सँग सोहे राधा प्यारी वृषभानुकी दुलारी॥ दोनों मिलकर निरत करत हैं राधा अरु गिरिधारी। मोरको मुकुट धारी चंदनकी खोर न्यारी भृकुटी कुटिल अलकें घूँघरवारी॥ टेढ़ी चितवन प्यारी नासिका मोती सँवारी मुरली अधर सप्त सुरन उचारी। मोहिं लीनी व्रजनारी देहकी दशा विसारी दया सखी पाँयन परके लीनी बलिहारी॥ २२२॥

राग रेखता।

नाचै छली छबीला नँदका कुमार है गल बाहिं दे प्रियाके सुन्दर शृँगार है॥ इत मंद मंद झीनी नूपुर अवाज है। उत पायजेब पायल वन कीसी गाज है॥ पगिया लसी कुँवरके शिरपेंच लाल है॥ भृकुटी लगी ललोई प्यारीके भाल है॥ कटि काछनी सुचोली पट्टका किनारका। कानों जड़ाऊ झुमका गल हीर हार है॥ दा-

मिनि सुरंगी सेला कीरति कुमारिका। मोतिनकी माल सुन्दर शोभा अपार है॥ गुंजा गले गुनीके तर गुंजमाल है। छतियां लगी लला सों वंसी रसाल है॥ नासा बुलाक बेसर माथेपै मुकुट सोहै। दोनों झुके परस्पर छबि वेशुमार है॥ प्यारीके नख छटापर रवि-चंद्र कोटि मोहै। केशव खड़ा विलोके प्राणन अधार है॥ २२३॥

मानलीला।

राग सोरठ।

चलो तो बताऊँ विहारीजी म्हारे महलों फूलीहै केशर क्यारी। अतिसुन्दर बहुत अमोलक रंग रँगीली हैं छै वारी॥ यों मत जानो झूंठ कहत है म्हाने सोंहतिहारी। ब्रजनिधि तुमसों लगन लगी है प्रीति पुरातन यारी॥ २२४॥

राग कान्हरो।

लालन मेरेही आये आज सुहावनी रात। तन मन फूली अंग ना समावत कुंजन करत बधाये॥ इक रसना गुण कहँ लग बरणों नख शिख रूप मेरे हीयमें समाये। गिरिवरधर पिय रस वंश कर लीनो कृष्णदास वलिजाये॥ २२५॥

राग कान्हरो।

एजी अब तो जान न दूँगी शकुन भलेजी॥ बहुत दिनन मेरे घर आये कर राखों उर हार। श्याम सुन्दर पिया अतिही रँगिलवा साँची तो कहो तुम काके वसोजी॥ २२६॥

राग कमोद।

वारियांवे लाल वारियां॥ तुसां आमनां फेरा पामनां कुंज हमारियां॥ कौन सखीके तुम रँग राते हमसे अधिक प्यारियां॥ ऊँची अटारियांते लाल किवारियां तक रहियां वाट तिहारियां॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर या छवि पर वलिहारियां॥ २२७॥

राग दादरा ।

सखी नँदलाल आवन नहिं पावैं । भीतर चरन धरन जिन दीजो चाहे जिते ललचावैं॥ ऐसेनको विश्वास कहाँ री कपटकी बात बनावैं।नारायण इक मेरे भवन बिन अन्त चाहे जहां जावैं ॥२२८॥

राग झंझोटी ।

मोहिंमत रोकै तू एरी ब्रज नागरी । रूपकी निधानहै तू सभी गुणखानहै तू तेरे सम कौन आज तेरो बड़ो भाग री ॥ कहेतो मैं नृत्य करूं बांसुरीमें रागभरूं कान्हरो केदारो भैरव सोरठ बिहाग री । तू तो सदा उपकारी हितहूकी करनहारी आज नारायण मोसों क्यों राखे लाग री ॥ २२९ ॥

सवैया ।

द्वारके द्वैरिया पौरिके पौरिया पैहरुवा घरके घनश्यामहैं । दास के दास सखीनके सेवक पारपरोसनके धनधाम हैं ॥ श्रीधर कान्ह कह्यो सुन भामिन मानभरी नहिं बोलत बामहैं ॥ चूक अचूकहि माफ करो वृषभानुललीके गलीके गुलामहैं ॥ २३० ॥

राग पञ्चम ।

जागतजागत रैनि बिहानी । कहि गये साँझ आवन मेरे गृह बसे अनत अंनते रति मानी ॥ उर बिच नख क्षत प्रगट देखियत यह शोभा अति बानी । भाल महावर अधरन अंजन पीक कपोल निशानी ॥ निशि मग जोवत बीती मोको आये प्रात यह जानी । चतुर्भुज प्रभु गिरिधर सिधारो तहां जो तुम्हरे मन मानी ॥ २३१ ॥

राग ठुमरी खम्माच ।

प्यारे तेरे जियाकी नजानी जात बात रे । कहूँ तो सांझ आधी रात रहत कहूं पिछलीरात कहूं प्रात रे ॥ उनहीं सों जाओ बतराओ

सुख पाओ तुम जिन यह सिखाये दाँव घात रे ।अब तोसों भूलके न बोलूं नारायण जहाँ गल अपनी बसात रे ॥ २३२ ॥

राग देश ।

अब आये प्रात क्यों मेरे धाम ।तुम जाओ जाहां जाके जागेहो याम वश किये तुम्हें सो धन धन्य बाम ॥ पग धरत धरन पर डगमगात मुख वचन कहत तुतरात जात कत भूल परे इत कौन काम । अंजन अधरन पर पीक गाल जावक है भाल दोउ नयन लाल बिन गनकि माल कहाँ पहरी श्याम ॥ तुम्हरे जिया भावत है जो बाल मैं परखी रसिक बिहारीलाल अब कीजे पिया वा घर आराम ॥ २३३ ॥

राग भैरव ।

सांची कहो रँगीले लाल । जावकमें कहाँ पाग रँगाई रँगरेजिन कोइ मिली है ग्वाल ॥ वंदन रंग कपोलन दीये अरुण अधर भये श्याम तमाल । माला कहाँ मिली बिन गुनकी नख शिख देखत भई बिहाल ॥ जिन तुम्हरे मन इच्छा पुजई धन्य धन्य पिया धन वे बाल । सूर श्याम छबि अद्भुत राजत यही देख मोको जंजाल ॥ २३४ ॥

राग रामकली ।

आज हरि रैनि उनींदे आये । अंजन अधर ललाट महावर नयन तमोर खवाये ॥ शिथिलत वसन मरगजी माला कंकन पीठ सुहाये । लटपटी पाग अटपटे भूषण बिनु गुन हार बनाये ॥ शिथिल गात अरु चाल डगमगी भ्रुकुटी चंदनलाये । सूरदास प्रभु यही अचंभौ तीन तिलक कहाँ पाये ॥ २३५ ॥

राग बिलावल ।

नयननकी चंचलता कहा कीने भीने रंग कौनके हो श्याम हमसे कहा दुरावत । औरके बदन देखनेको नेम लियो किधों पलकन मध्य राखी प्यारी ताके भार भये नहिं आवत ॥ मधुप गंध लुब्ध सेज समीप निशि बसे संग लागे आवत रतिकीरति गावत । सूरदास प्रभु मदनमोहन तनुकी प्रीति प्रगट भई है मुख नहिं बनत बनावत ॥ २३६ ॥

राग भैरव ।

भोर भये उठि आये मोहन कहा बनावत बात । बिन गुन माल विराजत उरपर सब अँग चिह्न लखात ॥ वंदन रंग कपोलन दीये सोहत चंद्र छुरात । धोंदीके प्रभु वाहीं जाओ तुम जहँ जागे सारी-रात ॥ २३७ ॥

राग जैजैवंती ।

रंगरहे लाल उनहीं त्रियन संग छबि निरखत गति परत और और । लै दर्पण छबि वदन निहारो प्यारे अधरन अंजन लाग्यो ठौर ठौर ॥ हमसो अवधि बद अनत विरम रहे करत फिरत प्रीति नई पौर पौर । जाओ जी जाओ तुम जहाँ सारी रैन जागे काहेको आवत प्रात मेरे दौर दौर ॥ २३८ ॥

राग बरवा ।

तुम जाओ जी जाओ जाके रहेहो रात । म्हारे काहेको आये जब भयो प्रभात ॥ लटपट पेच उनींदेसे नयना डगमग डगमग डगमगात । कपटी कुटिल मैं तोहिंते कहतहों मैं ना मानूंगी तोरी एक बात ॥ हाहा करतहों पैयां परतहों अबकी चूक मेरी करो जी माफ । उगरामदास पिया मैं ना मानूंगी तुम वाहीके जावो जाके लगेहो गात ॥ २३९ ॥

राग प्रभाती ।

लाल तुम कहाँसे आये जगे ॥ सगरी रैनिके हमने पछाने थारी नजर खुमार भरी अँखियाँ ॥ नयन घुमावत लट लटकावत होंठन बिन बोलन लगे । अधरन अंजन भाल महावर चरणधरत डगमगे ॥ आनँद घन पिया वाहीं जाओ तुम जहाँ तुम्हारे सगे ॥ २४० ॥

ठुमरी खम्माच ।

प्यारे मेरे गरवामें जिन डारो बैयाँ । छुओ न लंगर मेरो पकरो ना कर तुम छाँड़ो अब कपट बलैयाँ ॥ जाओ पिया वाही मन भाईके भवनमें जाके निशि परत हो पैयाँ । झूठी झूठी सौहें क्यों खाओ नारायण जानूँ मैं तिहारी चतुरैयाँ ॥ २४१ ॥

राग केदार ।

सीखे हो छल बल नट नागर ॥ मदन मोहनकी माधुरी मूरत सब गुणमें हो आगर ॥ ऐसी निठुराई काहू ना बदीयन चतुराई गुणसागर ॥ २४२ ॥

राग मलार ।

राधाजूकी सहज अटपटी बोलन । अहो पिया कौन बसत त्रिया उरपाई कहाँ बिन मोलन ॥ मोहूँ सों गुण रूप आगरी नीले अंगन चोलन । बड़े वड़े नयन अरुण कजरारे सुंदर अधर कपोलन ॥ उमँग उमँग पिया सम्मुख आवे मनभावत करत कलोलन । भगवत रसिक कहो क्यों ना साँची नाहिं करो अनबोलन ॥ २४३ ॥

राग ठुमरी ।

प्यारी जी तिहारे बिन कलना परत है । मंदिर अटारी चित्रसारी औ फुलवारी मोहिं कछू प्रिय ना लगत है ॥ घनो समझायो

इत उत बहलायो पुनि तौहू मन धीरना धरत है। एतो हठ आगे कब कीयो नारायण जेतो हठ आज तू करत है ॥ २४४ ॥

राग जोगिया।

सांची कहो किधों हांसी करो जी। आज कहा कारण जो मोसों बेर बेर कहो यहांसे टरो जी ॥ कौन सखी कित में घर वाको तुम जाको मोहिं दोष धरो जी। नारायण यह अचरज मोको झूंठ कहत नाहिं नेक डरो जी ॥ २४५ ॥

राग जंगला।

राधा प्यारी तोहिं मनावन आयो। जबते तू निकसी मंदिर ते मोहिं न कछू सुहायो ॥ भीतर बाहर द्वार पौंरि लौं राधा नाम न पायो। किशोरी गोपालकी यह इक बिनती हाहा करत हरायो ॥ २४६ ॥

राग पीलू।

राधा प्यारी बात सुनो इक मोरी। मैं आयो चाहतहों तुम पै बीच लियो उन घेरी ॥ जतन अनेक बिनती कर हारचों कैसे जात न फेरी। परवश परचो दास परमानँद काहि सुनावों टेरी ॥२४७॥

राग भूपाली।

बिनती कुँवरि किशोरी मेरी मान मान मान। बिन चूक मोते मान की मत ठान ठान ठान॥ काहेको बैठी श्यामा भौंहैं तान तान तान। तू ही तो मेरे जीवन धन प्रान प्रान प्रान ॥ मेरे हिया कि पीरको तू जान जान जान। जन जान रसिक लीजे दीजै दान दान दान ॥ २४८ ॥

राग बिहाग।

एतो श्रम नाहिंन तबहुँ भयो। सुन राधिका जेतो श्रम मोको तैं यह मान दयो ॥ धरणीधर विधि वेद उधारे मधु सों शत्रु हयो।

द्विज नृप किये दुसह दुख मेटें बलिको राज्य लियो ॥ तोरयो धनुप स्वयंवर कीनो रावण अजित जयो । अघ बक बच्छ अरिष्ट केशि माथि दावानल अँचयो ॥ त्रिय वपु धरयो असुर सुर मोहे को जग जो न दयो । गुरुसुत मृतक ज्यायबे काजे सागर शोध लियो ॥ जानूं नहीं कहा या रिसमें सहजहि होत नयो । सूरसो बल अब तोहिं मनावत मोहिं सब बिसर गयो ॥ २४९ ॥

राग पूरवी।

हमसे रूठ रहत क्यों प्यारी । कित मुख फेर फेर दृग बैठो कौन चूक वृषभानु दुलारी ॥ गयों सखन सँग मैं यमुना तट जहँ जल भरत रहीं व्रजनारी । मोते कहन लगीं गागर भर लालन देहु उठाय हमारी ॥ मैं न सुनी जब कही सबन मिल लेंगीं समझ तुम्हें बनवारी । देहैं मान कराय राधिका सो सब दई आय दरशारी ॥ जो वे कहत करत हो सोई तुम समझत नहिं भोरी भारी । एककी सात लगाय सुनावत झूठी ग्वालन रसिक बिहारी ॥ २५० ॥

राग खम्माच ।

इक अरज हमारी सुन भानकी दुलारी मान तज कीरति कुमारी प्यारी हो । ऐसी चूक क्या किशोरी मोते सांची कहदेवजी काहेको बैठी मुख मोरी जीकी ज्यारी हो ॥ कृपा अब कीजे लाय उर लीजे अधर रस पीजे दीजे दुख टारी हो । कहै रसिकबिहारी चरण शिर धारी कुँवरि सुखकारी तू तो भोरी भारी हो ॥ २५१ ॥

राग भूपाली।

हमते न प्राणप्यारी मुख मोरिबो करो । वृषभानुकी दुलारी चित चोरिबो करो ॥ कछु दोप नाहिं मेरो री क्यों मान कीजिये । रजनी बिहात सजनी री रिस छांड़ि दीजिये ॥ मोतन निहार गोरी मैं तो

हूं शरण तोरी। आननहै चंद्र तेरो री लोचन मेरे चकोरी॥ कीजै कृपा किशोरी दीजै अधर सुधारी। लीजै लगाय अपने री हिरदे रसिक विहारी॥ २८२॥

राग देश।

तुम सुनो राधिका विनय कान। नहिं सोहत मान तजिये सुजान॥ अब करो कृपा जन अपनो जान। ऐसी काहेकी रही हो मौन ठान॥ मेरे तू ही है जीवन अधार अब वेगि मिलो नहिं जात-प्रान॥ तुम देहु बात मोको बताय प्यारी जाते अब गइ रिसाय अपराध कौन कहो गुणनिधान। सुनि रसिक विहारीजूकी बात मेरे आनँद उरमें नहीं समात हँसि मिलिये कंठमें डारि पान॥ २८३॥

राग धनाश्री।

सांची कहो कै प्यारी हांसी। काहेको इतनी रिस पावत कत तुम होत उदासी॥ पुनि पुनि कहत कहा तबहीं ते कहाँ ठगीसी ठाढ़ी। इकटक चितै रही हिरदे तन मानो चित्र लिखि काढ़ी॥ समझी नहीं कहा मन आई मदन त्रसै तू आगे। सूर श्याम अति भये आतुरे भुजा गहन तब लागे॥ २८४॥

लावनी।

उठो अब मान तजो गोरी। रही है रैनि बहुत थोरी॥ सदासों तुम मनकी भोरी। कहूं मैं शपथखाय तोरी॥ दोहा—औरनके बहँकावते, करि बैठतहो रोप। झूंठ साँच परखत नहीं, वृथा देत हो दोप॥ यही मोहिं अचरज है भारी। तनक हँस चितवो सुकुमारी॥ शशि मुखपै हौं बलिहारी॥ दोहा—अपनी ओर निहारके, देहु अभय वरदान। क्षमाकरो सब चूक अब, जो कछु भई अजान॥ इतनी विनती मानो मोरी॥ तिहारे गुण नितप्रति गाऊं। विना आज्ञा न कहूं जाऊं॥ दोहा—ताहू पै दृग अरुण कर, भ्रकुटी

लेत चढ़ाय। जोरावर सों निबल की, काहू विधि न बसाय ॥ हारे हू हार जीते हूं हार ॥ जिन्हैं तुम समझो हितकारी। सोई अति कपटी ब्रजनारी। दोहा–हममें फूट करायके, आप अलग मुसक्यात। नारायण तुमने करी, खरी न्यावकी बात ॥ भलेको दंड बुरे पै प्यार ॥ २५५ ॥

राग बिहाग।

तनक हँस हेरो मेरी ओर। हम चितवत तुम चितवो नाहीं काहे भई हो कठोर ॥ निशिदिन तुम्हरोही नाम रटत हों चातक ज्यों घन घोर॥ कृष्ण प्रिया दर्शनके लोभी जैसे चंद्र चकोर॥२५६॥

सवैया।

एक समैं ब्रजकुंजनमें री नाचत ग्वाली सभी दय तारी ॥ नाचत चंद्रभगा ललितादिक नैनकी सैनसों ताल विचारी ॥ वा रिस धार लियो जियमें उन रूठ परी वृषभानुदुलारी ॥ मैं ना कह्यो कछु जान उन्हें तुम लावो मनायके प्यारी हमारी॥ २५७ ॥

गुर्जरीरागेण प्रतिमंठताले गीयते।

मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधूनिचयेन ॥ सापराधतया मयापि न वारितातिभयेन ॥ हरि हरि हतादरतया गता सा कुपितेव ॥ ध्रु० ॥ किं करिष्यति किंवदिष्यति सा चिरं विरहेण ॥ किं जनेन धनेन किं मम जीवितेन गृहेण ॥ हरि हरि० ॥ चिंतयामि तदाननं कुटिलभ्रुरोपभरेण ॥ शोणपद्ममिवोपरिभ्रमताकुलं भ्रमरेण ॥ हरि हरि०॥ तामहं हृदि संगतामनिशं भृशं रमयामि ॥ किं वनेनुसरामि तामिह किं वृथा विलपामि ॥ हरि हरि० । तन्वि खिन्नमसूयया हृदयं तवाकलयामि ॥ तन्न वेद्मि कुतो गतासि न तेनतेनुयामि ॥ हरि हरि० ॥ दृश्यसे पुरतोगता गतमेव मे विदधासि ॥ किं पुरेव स संभ्रमं परिरंभणं न ददासि॥ हरि हरि० ॥ क्षम्यतामपरं

कदापि तवेदृशं न करोमि ॥ देहि सुन्दरि दर्शनं मम मन्मथेन दुनोमि ॥ हरि हरि० ॥ वर्णितं जयदेवकेन हरेरिदं प्रणतेन ॥ तिंदुबिल्वसमुद्रसंभवरोहिणीरमणेन ॥ हरि हरि० ॥२५८॥

राग देश सोरठ ।

ललिता राधा नेक मनायदे ॥ मैं बलिजाउँ नामतेरे पै दुखमें सुख सरसायदे ॥ तू सजनी अति चतुर शिरोमणि मेरे मनकी प्रीति जतायदे । व्यास स्वामिनी रतिगुनगतिले सरवस पियको रिझायदे ॥ २५९ ॥

राग बरवा ।

चलो री क्यों ना माननी कुंजकुटीर । तुम बिन कुँवर कोटि वनिता युत मथत वदनकी पीर ॥ गदगदसुर विरहाकुल पुलकत स्रवत विलोचन नीर । क्वासि क्वासि वृषभानुनंदिनी विलपत विपिन अधीर ॥ बंशी विशद व्यालमालाउर पंचाननपिकः कीर । मलैजो गरल हुताशन मारुत शाखामृग रिपु चीर ॥ हित हरिवंश परम कोमल चित चली चपल पिय तीर । सुन भयभीत वज्रको पंजर सुरत सूर रणवीर ॥ २६० ॥

राग केदारा ।

जाके दरशको जग तरसत है ताहि दरश तू दे मेरी प्यारी ॥ जाकी मुरलीकी धुनि सुर मोहे ता तन नेक चितै मेरी प्यारी ॥ शिव विरंचि जाको पार न पावत सो तेरे पग परसै री प्यारी । सूरदास वश तीन लोक जाके सो तेरे वश हैं मेरी प्यारी ॥ २६१ ॥

राग विहाग ।

अलबेली लख लटक मुकुटकी । मान छाँड़ वृषभानुनंदिनी मान किये क्या नागर नटकी ॥ है कछु सुरत तोहि वा दिनकी

जब वनमालसों बेसर अटकी। कर गह कमल कमल मुख मोहन मुरझाई तब नेक न हटकी ॥ सो मुख लियो छिपाय सुन्दरी नयन ओट कर घूँघट मटकी। नख भौं लिखै सिखै क्या सजनी कीन चहत कछु टोना टटकी ॥ कर गह बाहिं मनावत मोहन मानत नाहिं मान मद अटकी। युगल युगलको वदन विलोकत भुज भर भेट मेट तप घटकी ॥ २६२ ॥

राग बरवा।

मान तज चल सजनी ब्रजचंदा बुलावें री। हा हा हठको काम नहीं है क्यों जीया तरसावै री ॥ जो हमरे सँग चलो न भामिनि वहतो आपही आवे री। घन छाया सम जोबन जानो पल छिन में यह जावे री ॥ यमुना निकट कदमकी छैयां गोपीसंग नचावे री ॥ मुरलीधर तेरो ध्यान धरत है तेरो ही गुण गावे री ॥ २६३ ॥

राग केदार।

छाँडदे माननी श्याम संग रूठिबो। रहत तू अलीन जलमीन लौं सुन्दरी करो किन कृपा नव रंग पर टूटिबो ॥ वेगि चल वेगि चल जात यामिनि घटत कुंजमें केलिकर अमीरस घूटिबो ॥ बालकृष्ण दास नवनाथ नंदन कुँवर सेज चढ़ ललन सँग मदन गढ़ लूटिबो ॥ २६४ ॥

राग देश।

तुम काहेको लाड़िली मान करत। वाकी प्रकृति जैसी है तैसी तुम जानो वाके गुण अवगुण कत जियामें धरत ॥ ताहीसों कीजिये कोप कुँवारि बिन कारण बैठत लर लर तुमसे तो पिया प्यारो नित ही डरत। व्यास स्वामिनी चतुर नारि मैं तोहिं मनावत गई जो हारि कब देखूंगी पियासे तोको अंक भरत ॥ २६५ ॥

राग जिलेमें ।

तोसी त्रिया नाहिं भवन भटूरी । रूपराशि रसराशी रसिक वर तोहिं देख नँदलाल लटूरी ॥ लेकर गांठ दई जो दृष्टि भर तेरी सुरंग चूँदरी वाको पीतपटूरी । नन्ददास प्रभु गिरिधर नागर तू नागरी वे नागर नटूरी ॥ २६६ ॥

रैनि गई री प्यारी छाँडो हठे री । सुन वृषभानु कुँवरि हरि तो वश निशिदिन तेरोहि नाम रटेरी ॥ मदनगुपाल निरख नयनन भर वेगि चलो अव काहे न टेरी ॥ दास गोविंद प्रभुकी छवि निरखे प्रीति करेसे तेरो कहा घटेरी ॥ २६७ ॥

कवित्त ।

हाहा री हठीली हठ छाँड़दे छबीली अली भूलेहू न कान्ह आज पान हू न खात है ॥ तेरी चितवनको चाहतहै गोपाल लाल तजे सब ख्याल प्राण तोहीमें बसात है ॥ मेरो कह्यो मान प्यारी चल देख तू अटारी ठाढ़े वनवारी अव देर क्यों लगात है ॥ करकै शृँगार तू उतारति है वार वार तू तो इतरात उत रात बीती जात है ॥ २६८ ॥

राग जिलामें ।

तोसी नहीं कोऊ देखी री हठीली । ज्यों ज्यों मैं अव तोहिं मनावत त्यों त्यों तू होवे अति गरवीली ॥ ऐसे समय वल रोप न कीजे भौंहें कमान तनक करढीली । नारायण उठ मिल प्रीतमसों तजदे मानकी बान छबीली ॥ २६९ ॥

राग रेखता ।

इतनो न मान कीजे वृषभानुकी दुलारी । तेरे मनायवेमें मोहिं श्रम भयो है भारी ॥ इतनो० ॥ प्रीतमको आज तो विन पल छिन न

चैन आवै। नाहिं जी लगै भवनमें नाहिं बन कि छबि सुहावै॥ हँस बोलिबो कहाँको नाहिं खान पान भावै। हाथनमें चित्र तेरो पुनि पुनि हिये लगावै॥ अति विकल ह्वै रह्यो है वह साँवरो बिहारी॥ इतनो०॥ प्यारेके आगे अपने गुणकी मैं कर बड़ाई। तेरे मनायबे को बीरा उठाके आई॥ बल बुद्धि मोंमें जितनी तितनी मैं सब लगाई। पै नेकहू न मेरी चतुराई काम आई॥ सब विधिसों राजनीती मैं कहके तोसों हारी॥ इतनो०॥ तेरी तो नित बड़ाई सब सखी जन बखाने। प्यारी हियेकी कोमल स-पनेहूँ रिस न जाने॥ यह आज का भयो है बैठी हो भ्रुकुटी ताने। उन सखी जनको कहबो अब कौन साँच माने॥ सब झूँठही बड़ाई भामिन करे तिहारी॥इतनो०॥ लालनके साथ मिलके वन शोभा निरख प्यारी। कहुँ सघन ललित छाया कहुँ फूली फुल वारी॥ जलसों भरे सरोवर झुकरहिं द्रुमन कि डारी। बोलत अनेक पक्षी वर्णत हैं छबि तिहारी॥ बल बेग ही सिधारो यह लालसा हमारी॥ इतनो०॥ एरी सुघर सयानी मो विनती मान लीजे। तजके ये मान मुद्रा प्यारे सों हेत कीजे॥ नितही अधर सुधारस हँस हँसके दोऊ पीजे। फिर कर न उनसों रूठो वरदान यही दीजै॥ नारायण याही कारण निज गोद मैं पसारी॥ इतनो०॥ २७०॥

राग कान्हरा।

देख री आज नवनागरी वेषधर ललीके छलन हित ललन कैसे सजे॥ पहर भूषण वसन दृगन कजरा दियो निरखि शृंगा सुर वधू मनमें लजै॥ मंद मुसक्यान मग चलत गति ठुमकके मधुर धुनि किंकिणी चरण नूपुर बजे। रूप अभिराम नारायण लख श्यामको कौनसी मानिनी मान जो ना तजै॥ २७१॥

राग कमोद।

जयति नव नागरी सकल गुण सागरी कृष्ण गुण आगरी दिनन भोरी ॥ जयति हरिभामिनी कृष्णघनदामिनी मत्तगज गामिनी नव किशोरी ॥ जयति सौभागमणि कृष्णअनुरागमणि सकल त्रिय मुकुटमणि सुयश लीजे। दीजिये दान यह व्यासकी स्वामिनी कृष्णसों बहुरि नहिं मान कीजे ॥ २७२ ॥

राग विहाग।

कह्यो क्यों न मानत मेरो। मदनमोहन नव कुञ्जद्वार ठाढे पन्थ निहारत तेरो ॥ झगरो करत सब रैनि गँवाई छिन छिन पल पल झेरो। साज शृँगार हार अपने लै प्राणदान दे तेरो। अज हूँ समझ शोचरी आली और नहीं कुछ केरो ॥ गोविंद प्रभुके हृदयकी कौन मेटे तो बिन विरह अँधेरो ॥ २७३ ॥

राग कान्हरो।

रह री मानिनी मान न कीजे। यह जोबन अंजलिको जल है जो गोपाल माँगें तो दीजे ॥ छिन छिन घटत बढ़त ना रजनी ज्यों ज्यों कला चन्द्रकी छीजे। पूरब पुण्य सुकृत फल कीनो काहे न रूप नयन भर पीजे ॥ सौंह करत तेरे पायँनकी ऐसे जीवन दशोदिन जीजे। सूर सुजीवन सफल जगतको वैरी वाँध विवश कर लीजे ॥ २७४ ॥

राग विलावल।

चलो री ऐसो मान न करिये मानिनी प्यारा आया तोरे वेरे तूही मान तूही दान तूही रोम रोम रम रही ऐसे नयन भये हेरे ॥ झूठी कहों मोहिं शपथ रामकी साँच कर वचन आली मान मेरे। छाँड़ निठुराई अब मान मेरो कह्यो गुण अवगुण भय तेरे ॥ २७५ ॥

राग कान्हरा।

तू है सखी बड़भाग भरी नँदलाल तेरे घर आवत हैं। निज कर गूँथ सुमनके गजरे हर्पि तोहिं पहरावत हैं॥ तू अपनो शृङ्गार करत जब दर्पण तोहिं दिखावत हैं। आनँदकंद चंद-मुख तेरो निरख निरख सुख पावत हैं॥ जाके गुण सब जगत बखानत सो तेरे गुण गावत हैं। नारायण विन दाम आज कल तेरेहि हाथ बिकावत हैं॥ २७६॥

राग कान्हरा। (अंतर दोहा.)

मनावत हार परी मेरी माई॥ राधे तू बडभागनी, कौन तपस्या कीन। तीनलोकके नाथ हरि, सो तेरे आधीन॥ शिव विरंचि नारद निगम, जाकी लहत न डीठ। ता हरिसों प्यारी राधिके, देदे बैठत पीठ॥ अहो लडैते दृग किये, परे लाल वेहाल। कहुँ मुरली कहुँ पीत पट, कहूँ मुकुट वनमाल॥ बिछुरे होय सो फिर मिलैं, रूसे लेहि मनाय। मिल्यो रहै औ ना मिलै, तासों कहा बसाय॥ तनक सुहागो डारके, जड़ कंचन पिघलाय। सदा सुहागिनि राधिका, क्यों न कृष्ण ललचाय॥ मान कियो तैं भली करी, कैसो तेरो मान॥ जैसों मोती ओसको, तैसो तेरो मान॥ तू चटते मट होत नहिं, राधे उन मोहिं लेन पठाई। राजकुमारी होय सो, जानै कै गुरु सीख सिखाई॥ नँदनंदनको जान महातम अपनी राख वड़ाई। ठोडी हाथ दे चली दूतिका तिरछी भौंह चढ़ाई॥ परमानंद प्रभु करूंगी दुलहैया तो बाबाकी जाई॥ २७७॥

राग वसंत।

गूँजेंगे भ्रमरा विराग भरे वन बोलेंगे चातकवा पिक गायकै॥ फुलेंगे केसू कुसुंभा जहांलौं मारेगो काम कमान चढायकै॥ वहेगी

सीरी सुगंध मारुत जबहिं लगेगी साखसो साख मिल आयके ॥ मेरे कहे न चले बाबाकी सौंह ऋतु वसंत लेय जायँगे मनायके ॥२७८॥

राग विहाग।

पहले तो देखो आय माननीकी शोभा लाल पीछे तो मनाय लीजै प्यारे गोविंद ॥ कर पर धर कपोल रही है नयनन मूँद कमल बिछाय मानो सोयो है चंद ॥ रिस भरी भौंवाँ मानो भौंरा बैठे अरबरात इन्दु तरे अरविंद भर्‌यो मकरंद ॥ नंददास प्रभु प्यारो ऐसी न रूठेयेंबल जाको मुख देखे ते कटत दुख द्वन्द ॥ २७९ ॥

राग देश।

कर नेह नयन लगायके फिर मान करना किन बदा। तज रोष दोष लगायबो सज मोदमें मंगल मुदा ॥ अपराध बिन अपराध धरबो सीख तोहे किन दई। धर ध्यान गह मुख मौन बैठी मनो कोइ जोगिन नई ॥ रस रीति प्रीति प्रतीति बिसरी कठिन कुच संगत किये। यह जान अब परसो नहीं लगजाय कहुँ मेरे हिये ॥ सुन बैन आतुर नयन फेरे रसिक भगवत यूं कही। हँस कंचुकी बँद खोल लिपटी मनो घन दामिनि गही ॥ २८० ॥

राग पीलू।

तूतो मोहिं प्राणनहूं ते प्यारी। भूले मान न कीजिये सुंदरि हौंतो शरण तिहारी ॥ नेकं चितै हँस बोलिये सुन्दरि खोलिये घूँघट सारी। कृष्णदास हित प्रीति रीति वश भरलिये अंकन वारी ॥ २८१ ॥

राग भूपाली।

मन मोहनी मन मोहना मन मोहिवो करो। मुख चंदचख चकोरी सदा जोहिवो करो ॥ घनश्याम रसिक नागर तू है जो

दामिनि । तज मान अधर पानकरो जात यामिनी ॥ कछु दोष ना पियाको तू भूल क्यों गई। प्रतिबिंब देख आपनो तैं पीठ क्यों दई ॥ समझाय कही भगवत जब लाग कानसों सुखदान उ-ठी आतुर भेंटी सुजान सों ॥ २८२ ॥

राग देश ।

कुंजन पधारो राधे रंग भरी रैन ॥ रंग भरी दुलहन रंगभरे पि-या श्याम सुंदर सुखदैन ॥ रंगभरी सैनी बिछी सेजपर रंग भऱ्यो उलहत मैन ॥ रसिक बिहारी पिय प्यारी जी दोऊ मिल करो सेज सुखशैन ॥ २८३ ॥

राग विहाग ।

अब पौढ़नको समय भयो। इत ढुरगई द्रुमनकी छैयाँ उत ढुर चंद गयो ॥ पौढ़ रहे दोउ सुखद सेजपर बाढ़त रंग नयो । रसिक बिहारी बिहारन दोऊ पौढ़े यह सुख दृगन लयो ॥ २८४ ॥

द्वितीयमानलीला ।

राग कान्हरा ।

रैन मोहिं जागत विहानी मोहनसों मैं मान कियो ताते भई तनु अधिक तपत ॥ सेज सुगन्ध मलय विष लागत पावकहूंते दाह सखी री त्रिविध पवन उडपत ॥ ऐसो अति व्याप्यो हो मन्मथ मे-रोई जीया जाने मोहिं श्याम श्याम कह रैनि जपत ॥ वेग मिलावो सूरके प्रभुको भूल अभिमान करूँ कबहूँ नहिं मदन वाणते कँपत ॥ २८५ ॥

राग जैजैवन्ती ।

बनत बनाऊं कछु बन नहिं आवे साँवरे सजन बिन तलफत प्राण हमारे। शोच किये क्या होत री सजनी वे हरि कठिन हृदय

समझाऊं कैसे कारे ॥ तपोंगी ताप चहूँ ओर अगन दे तनुको ज-राऊँ तो मैं पाऊँ पिया प्राण प्यारे । सूर सकल विधि कठिन भई है वीतत रैनि गिनत गई दईके तारे ॥ २८६ ॥

राग काफी ।

सखी मोहिं मोहन लाल मिलावे । ज्यों चकोर चंदाका इकटक भृंगी ध्यान लगावै ॥ बिन देखे मोहिं कल न परे री यह कह सवन सुनावे । विनकारण मैं मान कियो री अपनेहि मन दुखपावै ॥ हाहा करि करि पाँयन परि परि हारि हारि टेरि लगावे । सूर श्याम विन कोटि करो जो और नहीं जिय भावे ॥ २८७ ॥

राग रामकली ।

धन मेरे भागकी शुभ घरी । श्याम सुंदर मदनमोहन भुजाले उर धरी ॥ जासु चरणसरोज गंगा शंभु ले शिरधरी । जासु चरण सरोज परसत शिला सुनियत तरी ॥ जाके वदन सरोज निरखत आश सगरी सरी । सूर प्रभुकी भेंट ते मेरी सकल आपदा टरी ॥ २८८ ॥

राग विभास ।

कित श्वास उसाँस भई सजनी, उत दौर गई इत दौरके आई ॥ टीकी जो मिटी अलकें जो छुटीं, प्यारी मैं तेरे लालके पाँयन पर आई ॥ अरुणाई कहाँ गई होंठनकी प्यारी, मैं व्रजनाथने वहुत बकाई ॥ कहा पलट्यो पट प्रीतम को, प्यारी मैं तेरी प्रतीतिको लाई ॥ २८९ ॥

राग विहाग ।

आय क्यों न देखो लाल अपनी प्यारीको ख्याल चाँदनी में पौढ़ी जाते चंदाहू गयो लजाय ॥ मंडप पुहुप हार बहु विधि नीलो

पट नाशिका को मोती देख उडुगण सकुचाय ॥ आये हैं निकट लाल देख रीझे ब्रजबाल बारबार मुखकी लेत बलाय ॥ नंददास प्रभु प्यारे अधरन बीरी धरी झझक उठी अकुलाय ॥२९०॥

नींद तोहिं बेचूंगी आली जो कोई गाहक होय । आये मोहन फिर गये अँगना मैं बैरिन रही सोय ॥ कहा करूं कछु वश ना मेरो आयो धन दियो खोय । लछीराम प्रभु अबके मिले तो राखोंगी नयनन समोय ॥ २९१ ॥

मेरे कर मेहँदी लगीहै लट उरझी सुरझाय जा । शिरकी सारी सरक गई है अपने हाथ उढ़ाय जा ॥ भालकी बेंदी मोरी गिर जो परीहै हाहा करत लगाय जा । नीलांबर प्रभुगुणना भूलूँ बीरी नेक खवाय जा ॥ २९२ ॥

परस्परमानलीला ।

राग कल्याण ।

श्याम तेरी बँसुरी नेक बजाऊँ । जो तुम तान कहो मुरली में सोइ सोइ गाय सुनाऊँ ॥ हमरे भूषण तुम सब पहरो हौं तुमरे सब पाऊँ । हमरी बिंदरी तुमही लगावो हों शिर मुकुट धराऊँ ॥ तुम दधि वेचन जाहु वृंदावन हौं मग रोकन आऊँ । तुम्हरे शिर माखन की मटुकिया हौं मिल ग्वाल लुटाऊँ ॥ माननी होकर मान करो तुम हौं गहि चरण मनाऊँ । सूर श्याम प्रभु तुम जो राधिका हौं नँदलाल कहाऊँ ॥ २९३ ॥

राग देश ।

युगल छवि आज अनूप वनी । गोरे श्याम साँवरी राधा नख शिख द्युति कमनी ॥ खंजन नयन मैनमदगंजन अंजन रेख अनी ॥ ललित किशोरी लाल रसिकवर मृदु मुसक्यान घनी ॥ २९४ ॥

राग पीलू ।

श्माम श्याम श्याम रटत प्यारी आपही श्याम भई । पूँछत फिरत अपनी सखियनते प्यारी कहां गई ॥ वृंदावन वीथिन यमुना तट श्रीराधे श्रीराधे । सखी संगकी यह छवि निरखत रहीं सकल मौन साधे ॥ गरुवी प्रीति कहा न करावै क्यों न होय गति ऐसी । कहै भगवान हित रामराय प्रभु लगन लगे जो जैसी ॥ २९५ ॥

राग विलावल ।

नंदलाल निठुर होय बैठ रहे । प्यारी हाहा करत न मानत पुनि पुनि चरण गहे ॥ नहिं बोलत नहिं चितवत मुख तन धरणी नखन करोवत । आप हँसत पुनि पुनि डर लागत चकित होत मुख जोवत ॥ कहा करत यह बोलत नाहीं पिय यह खेल मिटावो । सूर श्याम मुख चंद्र कोटि छवि हँसकर मोहिं दिखावो ॥ २९६ ॥

राग विहाग ।

तनक हरि चितवो मेरी ओर । मेरे तो मोहन तुमहीं इक हो तुमको लाख करोर ॥ कबकी मैं ठाढी ठाढी अरज करतहों सुनि ये नंदकिशोर । कृष्णाप्रियाके प्राण जीवन धन करुणानिधि चितचोर ॥ २९७ ॥

राग परज ।

मृदु मुसुकान कीजै थोरी थोरी । हमसों कहा रूसनो हम तुम नेह कुंजके चंद चकोरी ॥ तजिये मान तनैनी भ्रुकुटी ढीली करिये ललित किशोरी । निठुराई सब छांड छबीली वचन सुधा दीजै श्रुति ढोरी ॥ २९८ ॥

इत मत निकसे तू चौथके चंदा देखेते कलंक मोहिं लगजायगो रे । दूर ते गुलाल भरो छूओ जिन छैला मोहीं तेरो श्यामरंग

मोहिं लग जायगो रे ॥ हाहा खाऊँ पैयाँ परूँ नियरे न आओ छैला करन चवाव गाम लग जायगो रे। नागरिया लोभी फाग स्वार्थहीको मीत मो मन निगोरो भूल लग जायगो रे ॥ २९९ ॥

कान्हरे बांसुरिया वारे रे तू ऐसे जिन बतराय। यों ना बोलिये एरे घर बसे मैं लाजन दबगई हाय ॥ मैं हारी तेरे खेलनहींते तू सहज चल्यो क्यों ना जाय। रसिक बिहारी जीसो नाम पायके क्यों एतो इतराय ॥ ३०० ॥

राग देश।

हमसे न बोलो साँवलिया तू मतवारो रे। हठ मोहन हटको नहिं मानैं नट खट जात अहीर कहावै जाय कहूँ यशुदा सों हटको बारो रे ॥ कुबिजा सौत भली मनभावै हमैं बघंबर योग पठावै छोड़ दियो हम नाहक जियरा जारो रे ॥ ३०१ ॥

राग कालिंगड़ा।

अपनी डगर चल्यो जा रे ब्रजवासी। तू मेरे ढिग जिनठाढ़ो रह देखैंगे लोग करैंगे हाँसी ॥ तुम ब्रजवासी अपनी गरजके नयना मिलाय गले डारगयो फाँसी। पुरुषोत्तम प्रभु नीठमिलेहो तू मेरो ठाकुर मैं तेरी दासी ॥ ३०२ ॥

राग प्रभाती।

मैंतो थाँपै वारी वारी हो बिहारी जी मृदु मुसकनपर जावाँ बलिहारी जी। लोक लाज तज थारे लडलागी थैं काईं उर धारी गिरिधारी जी ॥ औरत रांजिन जानोहो बिहारी जी लाखाँ भाँति करो म्हाँसे प्यारी जी ॥ ब्रजनिधि अरजी सुनो जी हमारी अनमोली अनतोली करो म्हाँसे यारी जी ॥ ३०३ ॥

मोहन मैं गूजर वरसाने की मोते नाहक मांडी रार॥पांच टकाकी कामर ओढे तापर करत गुमान ॥ गाय चरावत नंदकी मोपे मांगत दधिको दान ॥ रत्न जडित मेरी ईंडुरी हीरालगे करोर ॥ एक हीरा गिरजाय गो तेरी सव गायनको मोल ॥ कृष्ण जीवन लछीरामके प्रभु प्यारे मोते नाहक मांडी रार ॥ नेक चितै वालि जाऊं सांवरे मेरो विमल विमल दधि खाय ॥ ३०७ ॥

राग विलावल।

ग्वालिन दान हमारो दे।हम दानी या माल के।देहो लेहो तुम जात कहां हो लेहो चुकाय नित हाल कोरे ॥ सघन कुंज वन वीथिन गहवर सांकरी खोर कुआँ ताल कोरे ॥ पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत वार वार व्रजवाल कोरे ॥ ३०८ ॥

याही मेरा प्यारा रे दान मांगे अरेहो हाथ लकुटिया कांधे कमरिया अरे हो गौअन रखवारा ॥ मोर मुकुट माथे तिलक विराजे अरे हो नयनों रतनारा ॥ कृष्ण जीवन लछीरामके प्रभु प्यारे जीवन प्राण हमारा ॥ ३०९ ॥

राग दादरा।

हमरो दान देहु व्रजनारी । मदमाती गजगामिनि डोलै तू दधि बेचनहारी ॥ रूप तोहिं विधनाने दीयो ज्यों चन्दा उजियारी । मटुकी शीश कटीले नयना मोतिन मांग सँवारी ॥ हार हमेल गलेमें राजें अलकें घूंघरवारी । या व्रजमें जेती सुन्दर हैं सब हम देखी भारी ॥ नारायण तेरी या छवि पर नँदनंदन वलिहारी ॥३१०॥

राम वरवा पीलूका जिला।

पहले मेरो दान चुका री पीछे वतरायो प्यारी । तो समान तूही देत दिखाई नव जोवन नव सुंदरताई और कहां लों करों बड़ाई मोहनको मन मोहन हारी ॥ अति वांके हैं नयन तिहारे

सान धरे पैने अनियारे जिन हमसे घायल कर डारे इन समान नहिं बान कटारी । नारायण जिन भीर लागावो देहु दान अपने घर जावो क्यों मटुकी चौपट गिरवावो देख हँसेंगे पुर नर नारी ॥ २११ ॥

राग मल्हार ।

जोबनकी मदमाती डोले री गुजरिया। अंग अंग जोबनकी उठत तरंग नई नयना कजरारे बाँके तिरछी नजरिया ॥ हाथन में चूरी नकबेसर करनफूल मुँदरी ललित छबि देत अँगुरिया । अबलों तोसी नहीं देखि नारायण दधिकी बेचनहारी नंदकी नगरिया ॥ ११२ ॥

राग सोरठ ।

ठाढी रहरी गुजरी तू देजा मेरो दान । ढिग नहीं आवत वगद-जात तुम फोरूं तेरी मटुकी लकुटिया तान ॥ कैसो दान माँगे लाला चतुर सुजान । या मारग हम नित प्रति आवत कबहूं न दीनो दधिको दान ॥ दानके काजहि हम व्रज आये छांड दियो वैकुंठ सों धाम । या गहवर में हमहीं बसत हैं ह्यां धौं कहाँ तिहारो काम ॥ क्या तुम ग्वालिन आँख दिखावो दावानलको कर गयो पान सूरश्याम प्रभु तुम्हरे मिलनको मनमोहनको राख्यो मान ॥ २१३ ॥

राग भैरव ।

देखतकी मुखऊजरी गूजरी शीश बिराजत बासन कोरो ॥ दान बिना कहो कैसेकै जान द्यों तू इत भोरी कि मैं इत भोरो ॥ गोरसकी सौंह सो रस छांड़ देऊँ तनक चखाय घनो है कि थोरो ॥ जैसे तुम लाई हो याहि निहोरो कर तैसें इक मान लेहु मेरो निहोरो ॥ २१४ ॥

अटपटी पाय सूधे वावा कैसे रहो कान्ह कौने दान लायो जो दानको कहायो है ॥ किधौं शनी मंगल किधौं राहु केतु चौथ आये किधौं संक्रांति किधौं ग्रहणहूँ लजायो है ॥ अँचरा न गहो कहो कैसो दान माँगत हो कहा जगजीवन तू ऊधम मचायो है ॥ देखो सखी कैसे नयन खंजनसे नाचत हैं जाने तो यशोदा मैया कहा खाय जायो है ॥ ३१५ ॥

राग जंगला ।

द्वार पौरियाको रूप राधेको वनाय लाई गोपी मथुराते वृंदावनकी लतान में । कह्यो टेर कान्ह सों बुलायो तोहि कंसजीने कौनके कहेते दधि लूटत हो दानमें ॥ संगके सखा सब डगर भुलाय गये कृष्ण सों सयाने गये पकर भुजा पानमें । छूट गयो छल तो छवीली अवलोकनमें ढीलीभई भौंह वा लजीली मुसकानमें॥३१६॥

राग बिलावल ।

एरी यह को है री याहे दान देत गोवर्द्धन केरी ग्वेंड़े ॥ हारन खेतन गाम मड़ैया कान्हर ठाढो ऐंड़े ॥ वाप भरे कर कंस रजा को पूत जगाती पैड़े । या व्रजकी अव रीति नई है औलातीको नीर वरेंड़े ॥ पराये ब़गर जिन देहु अड़ीठन कान्हर छैंड़ीछैंड़े । कृष्णदास वरजो नहि मानत तोरत लाजकी मैंड़े ॥ ३१७ ॥

राग सोरठ ।

कांकड़ली ना चालो म्हारी फूटे गागड़ली । तू तो ठानों घरमें ठाकड़ होभी ठाकड़ली ॥ आकड़ आकड़ बोलो कान्हा मैंभी आकड़ली । मोठे थानो कारी कामर हाथमें लाकड़ ली ॥ नौलख धेनु नंद घर दुहिया एकन वाखड़ली । माखन माखन आपने खायो रहगई छाछड़ली । जाय पुकारू कंसके आगे मारे थापड़ली

वृंदावनमें रास रच्योहै मोरकी पांखड़ली ॥ नरसीके स्वामी सामलिया दूधमें साकड़ली ॥ २१८ ॥

राग परज।

तुम टेढ़ो म्हारी टेढ़ी गगरिया। टेढ़ी टेढ़ी चाल चलो त्रिभंगी काहेको दिखावे लाला टेढ़ी पगरिया ॥ टेढ़ी अलकमें क्या बाँधूंगी कछु न सुहावे मोहिं थारी सगरिया । टेढ़ो श्रीवृंदावन गोकुल टेढी वाहूसे टेढ़ी वृषभानु नगरिया ॥ टेढ़ो श्रीनंद बाबा मात यशोदा और टेढ़ी वृषभानु दुलरिया। सूरदास टेढ़ीकी संगत टेढ़े होकर पार उतरिया ॥ २१९ ॥

राग गुर्जरी।

गिरिवर धरचो आपने करको । ताहीके बल दान लेतहो रोक रहतहो हमको ॥ अपनेही मुख बड़े कहावत हमहूँ जानत तुमको। यह जानत पुनि गाय चरावत नितप्रति जात हो बनको ॥ मोर मुकुट मुरली पीतांबर देखे आभूपनको। सूर कांध कमरी हूं जानत हाथ लकुटिया करको ॥ ३२० ॥

राग बिलावल।

यह कमरी कमरी कर जानत। जाके जितनी बुद्धि हृदयमें सो तितनी अनुमानत ॥ या कमरीके एक रोमपर वारों कोटिन अंबर। सो कमरी तुम निन्दत गोपी तीनलोक आडम्बर ॥ कमरीके बल असुर सँहारे कमरी ते सब भोग। जात पाँत कमरी है मेरी सूर सबहि यह योग ॥ ३२१ ॥

अब तुम सांची बात कही। एते पर युवतिनको रोकत माँगत दान दही ॥ जो हम तुमहिं कह्यो चाहतही सो श्रीमुख प्रकटायो। नीके जात उघारी अपनी युवतिन भले हँसायो । तुम कमरीके

ओढ़नहारे पीतांबर नहिं छाजत । सूर श्याम कारे तनु ऊपर कारी कामरि भ्राजत ॥ ३२२ ॥

मोसों बात सुनो ब्रजनारी । एक उपख्यान चलत त्रिभुवन में सो तुम आज उघारी ॥ कबहूं बालक मोहन दीजे मोहन दीजे नारी ॥ जो मन आवै सोइ कर डारैं मूंड चढ़तहै भारी ॥ बात कहत अठिलात जात सब हँसत देत कर तारी ॥ सूर कहा ये हमको जाने छाँछकी बेचनहारी ॥ ३२३ ॥

यह जानत तुम नंदमहर सुत । धेनु दुहत तुमको हम देखत जबहिं जात खरकहिं उत ॥ चोरी करत यही पुनि जानत घर घर ढूँढत भांडे । मारग रोक भये अब दानी वे ढंग कबते छाँडे ॥ और सुनो यशुमति जब बाँधे तब हम करी सहाय । सूरदास प्रभु यह जानत हम तुम ब्रज रहत कन्हाय ॥ ३२४ ॥

राग आसावरी ।

को माता को पिता हमारे। कब जनमत हमको तुम देख्यो हँसी लगत सुनि बात तुम्हारे ॥ कब माखन चोरी कर खायो कब बाँधे महतारी । दुहत कौन गैयाको चारत बात कही तुम भारी ॥ तुम जानत मोहिं नंदढोना नंद कहांते आये । मैं पूरण अविगत अविनाशी माया सबन भुलाये ॥ यह सुनि ग्वालि सभी मुसकानी ऐसेही गुण जानत । सूर श्याम जो निदरचो सबही मात पिता नहिं मानत ॥ ३२५ ॥

राग सोरठ।

तुम का जाने री गूजर दधिकी बेचनहार । कौन पिता को मात हमारे जन्म अजन्म रूप रँग धार ॥ भुवके भार उतारन कारन लीन मनुज अवतार । मेरी माया जगत भुलानो मेरो कह्यो सत्यकर मानो गावत वेद पुराण भागवत यश गावत श्रुतिचार ॥

जो मेरो निज दास कहावे रसिक प्रीतम निज भक्ति पावे ब्रह्मादिक सनकादिक नारद शेप न पावत पार ॥ ३२६ ॥

राग आसावरी ।

भक्त हेत अवतार धरों मैं ॥ कर्म धर्मके वश मैं नाहीं योग यज्ञ मनमें न करों मैं ॥ दीन गुहार सुनो श्रवणन भर गर्व वचन सुन हृदय जरों मैं ॥ भावाधीन रहों सबहीके और न काहू ते नेक डरों मैं ॥ ब्रह्मा आदि कीटलौं व्यापक सबको सुख दे दुखहि हरों मैं॥ सूर श्याम तब कह्यो प्रगट ही जहाँ भाव तहँते न टरों मैं ॥ ३२७॥

लावनी ।

मैंही तो हूँ नंदको लाला मात यशुदाको कन्हैया मैंहीं तो हूँ। धरधरके अवतार भूमिको भार हरैया मैंही तो हूँ ॥ मथुरा में लियो जन्म ब्रजमंडलको बसैया मैंही तो हूँ। प्रथम पूतना तृ-णावर्त शकटाको हनैया मैंही तो हूँ॥ कागाको मारके चोंचको फार फरैया मैंही तो हूँ। ब्रजवासिनको प्रेम देख माखनको खवैया मैंही तो हूँ ॥ यमला अर्जुन हेत ऊखल सों हाथ बँधैया मैंही तो हूँ। मोहे गोपी ग्वाल बाल गौवनको चरैया मैंही तो हूँ ॥ वत्सा-सुरको पटक अघाके प्राण कढैया मैंही तो हूँ। नौलख धेनु खिरक मेरेमें तिनको दुहैया मैंही तो हूँ॥ दावानलको कियो पान कालीको नथैया मैंही तो हूँ। चीर चोर चढ गयो कदम युवतिनको रिझैया मैंही तो हूँ॥ गोवर्द्धन नख धरचो इंद्रको गर्व हरैया मैंही तो हूँ । बंसीबटके तट अधरन धर बंसीको बजैया मैंही तो हूं ॥ श्यामाके संग रासमें नीको तो नचैया मैंही तो हूँ। पकरूँ कंसके केश देख ऐसो तो लरैया मैंही तो हूँ ॥ उग्रसेनको राज्य मथुराको दिवैया मैंही तो हूँ। सब खेलनको खेल खेलनको खिलैया मैंही तो हूँ ॥ भक्तन हितकारी बलदेवको भैया मैंही तो हूँ। मंझधारके बीच

टेर गजकी सुनवैया मैं ही तोहूं॥ कुंदन विप्र यो कहत नाम राधाको रटैया मैं ही तो हूं॥ ३२८॥

कवित्त।

अंत ते न आयो याही गांवरेको जायो माई बाप री जिवायो प्याय दूध दधि वारे को॥ सो तो रसखान तज बैठो पहिचान जान लोचन नचावत नचैया द्वारद्वारे को॥ भैयाकी सौं सोच कछु मटकी उतारे को न गोरसके ढारेको न चीर चीरडारे को॥ याही दुख भारी गहे डगर हमारी देखो नगर हमारे ग्वार वगर हमारे को॥ ३२९॥

राग झिंझोटी।

चल परे हटरे काहेको इतरावे।"भूषण वसन दधि माखन चुरैया अब कैसी कैसी बात बनावे॥ जिनके बसाये तुम उनहीं सौं झगरत निलज न नेक लजावे॥ नितप्रति धेनुको चरैया नारायण आज तू भूप कहावे॥ ३३०॥

राग कल्याण।

रजधानी तुम्हरे चित नीकी। मेरे दास दास दासनके तिनको लागत है अति फीकी॥ ऐसी काहे मोहिं सुनावत तुमको यही अगाध।कंस मार शिर छत्र फिराऊं कहा तुच्छ यह साध॥ तबही लग यह संग तिहारो जवलौं जीवत कंस। सूर श्यामके मुख यह सुन तव मनमें कीनो संस॥ ३३१॥

राग रामकली।

राधासों माखन हरि माँगत।औरनकी मटुकिनको चाख्यो तुमरो कैसो लागत॥ लेआई वृषभानुनंदनी सदलौनी है मेरो। ले दीनो अपने कर हरि मुख खात अलप हँस हेरो॥ सबदिनते

मीठो दधि है यह मधुरे कह्यो कन्हाई । सूरदासप्रभु सुख उपजाये व्रजललना मन भाई ॥ २३२ ॥

राग कालिंगडा।

अच्छा लेहु व्रजबासी कन्हैया अच्छा लेहुरे ॥ बरसानेसे चलीरे गुजरिया आगे मिले महाराजरे ॥ कोरीकोरी मटुकीमें दहीरे जमाया चाख लेहु महाराजरे ॥ दधि मेरो खायो मटुकियारे फोरी इंडुरी कहाँ डारी लालरे ॥ हार शृङ्गार सभी मेरो तोरयो दुलारी कहाँ डारी लालरे ॥ जाय पुकारूंगी कंसके आगे न्याव करो महाराजरे ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल बलिहाररे ॥२३३॥

हिंडोरा झूलनलीला।

राग मलार।

व्रज पर नीकी आज घटा । नान्ही नान्ही बूँद सुहावनी लागत चमकत बिज्जु छटा ॥ गर्जत गगन मृदंग बजावत नाचत मोर नटा । गावत सुरहि देत चातक पिक प्रकटयो मदन भटा ॥ सब मिल भेंट देत नंदलालहिं बैठे ऊंची अटा । चतुर्भुज प्रभु गिरिधरनलाल शिर कसूमी पीत पटा ॥ २३४ ॥

आज कछु कुंजनमें बरसासी । बादरगणमें देख सखी री चमकत है चपलासी ॥ नान्ही नान्ही बूँदन कछु धुरयासी पवन बहुत सुखरासी । मंद मंद गर्जनसी सुनियत नाचत मोर सभा सी ॥ इंद्र धनुषमें बग मिल डोलत बोलतहैं कोकिला सी । इंद्रवधू छवि छाय रहीहै गिरिपर श्याम घटा सी ॥ उमग महीरुहसे महि कंपत फूली मृगमाला सी । रटत व्यास चातककी रसना रसपीवत हों प्यासी ॥ २३५ ॥

आई बदरिया बरसनहारी। गरज २ दामिनि दमकावे ज्यों चूंदरमें झलक किनारी॥ मधुर मधुर कोयल वन बोले भवन भवन गावत ब्रजनारी। चलत पवन शीतल नारायण परत फुहार लगत अति प्यारी॥ २३६॥

देख युगुल छबि सावन लाजै। उत घन इत घनश्याम लाड़लो उत दामिनि इत प्रिय सँगराजै॥ उत वर्षत बूँदनकी लरिया इत गल मोतियन हार विराजै। उत दादुर इत बजत बांसुरी उत गर्जत इत नूपुर बाजैं॥ उत रँगके बादर इतवागे उतै धनुष वनमाल इत साजै। उत घन घुमड इतै दृग घूमत नारायण वर्षा सुख आजै॥ २३७॥

श्याम सुन नियरे ही आयो मेहु। भीजैगी मेरी सुरँग चुनरिया ओढि पितांबर लेहु॥ दामिनि सों डरपतहौं मोहन निकट आपने लेहु। कुम्भनदास लाल गिरिधर सों बाढ़्यो अधिक सनेहु॥ २३८॥

राग रेखता।

आयो है मास सावन इक मान कह्यो प्यारी। चल झूलिये हिंडोरे वृषभानुकी दुलारी॥ यमुनाके तीर वंसीवट कैसी छबि छाई। शीतल सुगंध मंद पवन चलत अति सुहाई॥ करतीहैं शोर यमुना उठते तरंग भारी। प्रति कुञ्ज कुञ्ज छाय रह्योहै परागरी॥ लागत परम सुहाई अवलोकि नागरी। फूलीलता द्रुमनकी धरणी झुकीहैं डारी॥ जापै मलिंद घूमे मकरन्द देत छाये। नाचतहैं मोर वनमें लागत परम सुहाये॥ माती कोयल पुकारे बैठी कदमकी डारी। कालिन्दियाके तटपै झूलत हैं सब सहेली॥ नवसत शृङ्गार साजे इक एकते नवेली। तुमहू प्रिया सिधारो कीजे न अब अवारी॥ झूलें निकुंज अपनी अबही चलो पियारे। कीजे विहार हमसों तुम नन्दके दुलारे॥ तब सङ्ग ले पिया-

को सुनि कुञ्जमें सिधारी। बैठो कुँवर हिंडोरे अब मैं तुम्हें झुलाऊँ। गाऊँ तुम्हें रिझाऊँ छबि देख दृग सिराऊँ ॥ बैठो सुरङ्ग पटली डोरीगहो सँभारी ॥ बाढ़े न रमक मोहन टुक मन्दही झुलावो। डरपे हियो हमारो पिया पेंग ना बढाओ ॥ यह बात सुन प्रियाकी उरसों लई लगारी। भीजैगी लाल सारी कारीघटा जो आई॥ लीजे उढाय मोको कामर कुँवर कन्हाई। तब हँस रसिक बिहारी कामर उढाई कारी। चल० ॥ ३२९ ॥

राग देश।

आज बन्यो रसरङ्ग हिंडोरो कदम तरें। सघन लता झुक सुमन सुगन्धन अलिगण गुंज करें॥वर्ण वर्ण तनु भूषण चुँदरी श्यामा जू पहरें। लाल लड़ाय चाय हित चित सों रूप समुद्र भरें ॥ ३४० ॥

झूलो प्यारी आज निकुंज हिंडोरना। बोलत चातक मोर पवन झकझोरना ॥ सघन लता निधि बनकी आज सुहाई हैं। श्याम घटन सों परत बूंद सुखदाई हैं ॥ तैसीही दामिनी चमक चमक छबि छाई हैं। मनो डरत तुव तेज लाज दरसाई हैं॥ हरित भूमि हुलसी तुव आगम जानके। मनो बिछौना कियो मदन मद भानके ॥ ३४१ ॥

चल झूलिये हिंडोरे श्री वृषभानुकी लली। तिहारे काज आज इक मैंने विरची कुंज भली ॥ रत्न जडितको बन्यो हिंडोरो कैसी झला झली।ब्रजबनिता झूलत अनेक तहँ एक एक नवली ॥ शब्द करत जहँ कीर कोकिला गुंजत मोर बली। रसिक विहारी की सुन वाणी तुरतही कुँवरी चली॥ ३४२ ॥

चलो इकेले झूले वनमें प्यारी मेरे प्रान। तुम नई नागर रूप उजागर सुखसागर छबिखान ॥ वर्ण वर्णके बादर छाये मानो गगन बितान। वर्षत बूंद सोई मोतिनकी झालर शोभावान ॥

बोलत खग मृग डोलत इत उत सो नहिं जात बखान। रंग रंगके फूलखिले हैं भ्रमर करत रसपान॥ ऐसे समय विपिन सुख विलसे एरी परम सुजान। नारायण उठ वेगि पधारो कुलदीपक वृषभान॥ २४३॥

राग खेमटा।

झूलन चलो हिंडोरने वृषभानु नन्दनी। सावनकी तीज आई नभ घोर घटा छाई मेघन झरी लगाई परें बूँद मन्दनी॥ सुन्दर कदमकी डारी झूला परचोहै प्यारी देखो कुमर हहारी सब दुख निकन्दनी। पहरो सुरंग सारी मानो विनय हमारी मुख चन्द्रकी उजारी मृदु हास फन्दनी॥ मम मान सीख लीजे सुन्दर न देर कीजे हम तो विलोक जीजे तू है गति गयन्दनी॥ शोभा लगो विपिनकी फूली लता द्रुमनकी सुन अरज रसिक जनकी करों चरण वन्दनी॥ २४४॥

राग सोरठ।

झूलो मेरी राधा प्यारी रँगीलो हिंडोरना। डाँडीचार सुदेश बनाई हीराखम्भन झुलमकलाई जगमग जगमग होय रवि शशि डोरना॥ उमड़ी घटा घुमड़ घिर आई रिमझिम रिमझिम बूँद सुहाई दमक दमक दामिनियां बोलें मोरना। गावत राग मलार अघाई शीतल मन्द सुगन्ध सुहाई तान तरंगन ललित भान तृण तोरना॥ २४५॥

धवल महल चढ़ रत्न बंगला झूलो सुरंग हिंडोर। नवकिशोर सुकुमार छबीली नेह नवल भुज जोर॥ सुरँग कसूमी सारी प्यारी हरत झगाली कोर। हित अली रूप लाल रुचि औरे पिया उठत हिलोर॥ २४६॥

राग मलार।

तेरी झमक झूलन कटि लचक जात प्यारी रमक रँगीली अति सोहै। तू गुण रूप यौवन रंग रसभरी तेरी उपमा को कोहै॥ हाथन चूरी महाउर मेहँदी चटक चौगुनी सोहै। रसिक गोविंद अभिराम श्याम घन तू दामिनि मन मोहै॥ ३४७॥

राग पीलू।

चलो पिया वाही कदम तरे झूलैं। झुक रहीं लता अति सघन प्रफुल्लित कालिन्दीके कूलैं॥ बोलत मोर चकोर कोकिला अलि-गण गुंजत भूलैं। ललित किशोरी मग बतरावैं कहकह बतियां फूलैं॥ ३४८॥

राग मलार।

हर्ष झुलाइये मनभावन। उधर परचो हित हेत गह गह्यो झूटा दियो चित चावन॥ यह जो कलपतरु यह रविजातट वह वन घन झुक आवन। वृंदावन हितरूप बलि गई वह हरियाली सावन॥ ३४९॥

राग खेमटा।

हिंडोरे आज झूलत रंग रयो। अचल सुहाग सुभग श्यामा को दिन प्रति होत नयो॥ हरित भूमि बंसीवट यमुना सो सुख दृगन लयो। रसिक प्रीतम मिल गावत भावत व्रज सब रीझरह्यो॥ ३५०॥

राग रेखता।

झूलन युगल किशोरकी दिल में मेरे बसी। बैठेहैं रंग हिंडो-रना करते हैं रसमसी॥ फहरात पीत पटुका दुपटा जो छोर-दार। शिरपै सुरंग सारी प्यारीके क्या लसी॥ बेसर झुलाक वेनी वेंदी जो भालपै। हीरोंका हार उर पै कटि काछनी कसी॥ जोबनके जोर शोरसों रमके बढावती। ललिता किशोरी श्यामकी छवि देखके हँसी॥ ३५१॥

राग मलार ।

झलत तेरे नयन हिंडोरे । श्रवण खंभ भुहें भई मयीरी दृष्टि किरण डांडी चहुँ ओरे ॥ पटली अधर कपोल सिंहासन बैठे युगल रूप रति जोरे ॥ वरुनी चमर ढुरत चहुं दिशितें लर लटकत फुंदना चित चोरे ॥ दुर देखत अलकावलि अलि कुल लेत हैं पवन सुगंध झकोरे ॥ कच घन आड़ दामिनी दमकत इंद्र माँग घन करत निहोरे ॥ थकित भये मंडल युवतिनके युग ताटंक लाज मुख मोरे ॥ रसिक प्रीतम रस भाव झुलावत विविध कटाक्ष तान तृण तोरे ॥ २५२ ॥

राग खेमटा ।

युगल वर झूलत दे गलबाहीं । बादर बरसें चपला चमकें सघन कदमकी छाहीं ॥ इत उत पेंग बढ़ावत सुंदर मदन उमंगन माहीं । ललित किशोरी हिंडोरा झूलें बढ यमुना लों जाहीं ॥ २५३ ॥

राग देश ।

झूलत श्याम श्यामा संग । अतिरंग शोभाके मानो लहत यमुना गंग ॥ झलक भूषण चित्त चोरत श्यामा गोरे अंग । ललित किशोरी हिंडोरने पै आज बरसत रंग ॥ २५४ ॥

वलि वलि जाँदियां झूलन पर । प्यारी पहरे कुसुमल सारी प्यारेके मन भाँदियां ॥ चहूं ओर सब सखी झुलावें झुक झुक झड़े खाँदियां । पुरुषोत्तम प्रभुकी छवि निरखत तन मन नयन सराँदियां ॥ २५५ ॥

राग मलार ।

आज हिंडोरे झूलें झूलन नवल कुँवर नव दुलहन दूलें । धादा किटता धादा किटता बजत मृदंग सखि सुघर तान गावें झननन

नन नाचत मोर सघन बन प्रफुलित श्री यमुनाजीके कूलें कूलें॥ नवल किशोरी वृषभानुकी कुँवर भोरी भोरी संग जोरी रस राचो उरझी माल लटक नकबेसर अंग अंग भुज भूलें फूलें॥ ३५६॥

राग देश।

मनभावन हर्षावन आवन सावन तीज सुहाई॥ चावन गावगरीझ रिझामन दंपति रति दरशाई॥ चढ़े हिंडोरे नयनन जोरे चितचोरे सुखदाई। युगल चंद रसकंद कोरनी नख रूपलाल बलिजाई॥ ३५७॥

राग रेखता।

प्यारी पीतमके संग झूलें रंग हिंडोरना। दो खंभ हैं जड़ाऊ जड़े चितके चोरना॥ डाड़ी मरुवे लगन लगी बेलन अमोलना॥ पटली संदलकी साफ देखो खूब है बनी। लागेहैं उस्के बीचमें हीरा चुनी मनी॥ चुंदरी घूँघटकी ओटमें नयना विशाल है। खंजन भुलामनेके घेरनको जालहै॥ मुझको रसिक गोविंदकी छबिही में झूलना। प्यारी अनूप रूपको दिलसे न भूलना॥ ३५८॥

राग खेमटा।

युगल बर झूलत डार गल बाहीं। रत्न जडितको बन्यो है हिंडोरा सघन कुञ्जके माहीं॥ रेशम डोर पवन पुरवैया लख रति काम लजाहीं। सखी सखा दोउ ओर झुलावत मधुर मधुर सुर गाहीं॥मध्य श्यामा श्याम दोउ हिल मिल पुनि पुनि हिय हर्षाहीं। ऊंची डार तोर कलियन दोउ निज निज कालिन सराहीं॥ या छबि निरख प्रियाकी प्रीतम मोहन मन न अघाहीं॥ ३५९॥

आज दोउ झूलत रंगभरे। झूटा खरे लेत कबहुँक साखि कबहूं हरे हरे॥ कर्णफूल कुंडल मिल भेटत मनु शशी मीन लरे।चंद्रमाल

हलकत उर राधे हरि वनमाल गरे ॥ विहँसत दमक उठत दशनावलि अवनी सुमन झरे। ललित किशोरी टरत न लखि छवि दृग शिशु अरन अरे ॥ ३६० ॥

राग देश।

कहत श्याम श्यामाजू मोको दर्शन देत रहो जू। अंचल अलक पलक सुनिरंतर इक संकोच सहो जू ॥ यह विनती मानिये जो श्रवण सुन नाहिंन वचन कहो जू। विहारन दास कहत रुख लीये यह सुख सहज लहो जू ॥ ३६१ ॥

सुहावन सबान राधा सुख तिहारे वाट पर्यो । यह जो शतगुणो रूप अंग संग झुलनमें उघर्यो ॥ यह जो जो चौगुनो चाव कौन विधि भागनते जो वढ्यो। वृंदावन हित रूप रसिक प्रीतमको लहनो सुकृत कर्यो ॥ ३६२ ॥

राग मलार।

एहो लाल झूलिये तनक धीरेधीरे। काहेको इतनी रमक वढ़ावत द्रुम उरझत चीरेचीरे ॥ जो तुम झुक झुक झूटनके मिस आवत हो नीरे नीरे । नागर कान्ह डरात न काहू लेत भुजन भीरे भीरे ॥ ३६३ ॥

राग यमन।

झोका दीजो सम्हारके मेरी सारी न लटके। सघन कुंज द्रुम डार कँटीली काहू छोर जिन अटके ॥ उन वातन अब भेंट नहीं कछु और धोखे जिन भटके। ललित किशोरी लाल जाओ घर काहेको चटके मटके ॥ ३६४ ॥

प्रेमके फंद परी । रसिक गोविंद अभिराम श्यामने भुज भर अंक भरी ॥३६५ ॥

राग वड़हंस मलार ।

हिंडोलनामें काई छे झूला राज ॥ म्हारा झूलत हिया लरजे ॥ रत्न जड़ितके खंभ जड़ाये अगर चंदनके पटा । रेशम डोर पवन पुरवैया जुरआई सावनकी घटा ॥ श्यामा झूलें श्याम झुलावें कालिंदीके तटा । उड़ उड़ अँचरा परत भुजन पर निरखत नागर नटा ॥ ३६६ ॥

राग सारंग ।

फूलनके बँगलेमें राजैं पिया प्यारी हो। फूलनके भूषण विचित्र सोहैं अंगअंग फूलनके वसन वदन छबि न्यारी हो ॥ फूलसे मुखारविंद वचन फूलन सम फूली सखी तन मन शोभा लख भारी हो॥ जैसो ही समाज साज आज नारायण मानो कुंज भवनमें फूली फुलवारी हो ॥ ३६७॥

कवित्त ।

फूलनके खंभा पाट पटरी सुफूलनकी फूलनके फुँदने फँदे हैं लाल डोरे में। कहै पदमाकर वितान तने फूलनके फूलनकी झालरें सुझलत झकोरे में ॥ फूलरही फूलन सुफूल फुलवारी तहाँ फूलके ही फरस फबे हैं कुंज कोरे में ॥ फूलझारी फूलभरी फूल जरी फूलनमें फूल ही सी फूल रही फूलके हिंडोरेमें ॥ ३६८॥

राग कान्हरा ध्रुपद ।

फूलनकी चन्द्रकला शीश फूल फूलनको फूलनके झुमका श्रवण सुकुमारीके । फूलनकी वन्दनी विशाल नथ फूलनकी फूलनको

बेंदा भाल राजत दुलारीके ॥ फूलनकी चम्पाकली हारगले फूलनके फूलनके गजरा ललित कर प्यारीके । फूलनकी पगमें पायल नारायण फूले फूले भाग सदा लाड़िली हमारीके ॥ ३६९ ॥

कवित्त ।

फूलन चँदोआ तने फूलन फरस बिछे फूलनकी सेज औ फूलन छबि छैरही ॥ फूलनकी गरे माल फूलन करनफूल फूलनको टीको मांग फूलन भरै रही ॥ फूलनके वस्त्र औ शृंगार सब फूलनके विक्रम मृगेश मन उपमा बनै रही ॥ फूली फुलवारी जामें बैठी प्राणप्यारी आज देखत वसन्त या वसन्त ऋतु ह्वै रही ॥ ३७० ॥

राग पीलो ।

सो तू राखले री झूटा तरल भये । इतं नव कुंज कदम लौं परसत उत यमुना लौं गये ॥ आवत जात लता निरवारत कुसुम बितान छये । कल्याणके प्रभु रीझ बिवस भये झूलत नये नये ॥ ३७१ ॥

मेरो छाँड़दे अँचरवा मैं तो न्यारी झूलोंगी । झूटनमिस मोहन लँगरैयाँ अजहूँ टहोकत ना भूलोंगी ॥ ललता संग रँगीले झूल झूल झूल मनहीं मन फूलोंगी । ललित किशोरी तरल पैंग कर लालन तो सँग सम तूलोंगी ॥ ३७२ ॥

राग दादरा ।

सुन सखी आज झूलन नहिं जैहों ॥ श्यामसुँदर पिया रस लंपट है अतिही ढीठ्यो देत । झूटा तरल करे पाछेते धाय भुजनभर लेत ॥ चितवन चपल चुरावत अनतै हमैं जनावत नेह । रसिक गोविंद अभिराम श्याम सँग क्यों न जाय रस लेह ॥ ३७३ ॥

राग सोरठ।

कौन समय रूठनको प्यारी झलो ललित हिंडोरे। रंग बिरंग घटा नभ छाई बिच बिच चपला चमक सुहाई परत परम सुखदाई चलत समीर झकोरे॥ विविधभाँति पक्षी वन बोलें मृगिन सहित मृग विहरतडोलें जीवजंतु मिल करत कलोलें यही अचरज मन मोरे। कुसुमचीर पहरे ब्रजनारी साज समाज आज है भारी नारायण बलिजाउँ तिहारी प्रीतम करत निहोरे॥ ३७४ ॥

राग मलार।

या ऋतु रूस रहनकी नाहीं। बरसत मेघ मेदिनीके हित प्रीतम हरप बढाहीं॥ जे बेली ग्रीषम ऋतु जरहीं ते तरुवर लपटाहीं। उमड़ी नदी प्रेम रस माती सिंधु मिलनको जाहीं॥ यह संपदा दिवस चारककी शोच समझ मनमाहीं। सूर सुनत उठ चली राधिका दै दूती गलबाहीं॥ ३७५ ॥

राग गौरी।

झूलनहार नई कौनहै॥ श्यामाके सँग रंग भरी सोहत सखी नवेल। अति सुंदर तनु सामरी मानो नील मणिनकी बेल॥ श्वेद कम्प रोमांच हो जान परत कछु और। झुक झुक झूटनमें मिले हँस कुँवर लजोई होत॥ निरखो झूलन नेहकी सखी चतुर शिरमौर। हम जानी जानी सभी सखि यह झूलन कछु और॥ सभी छकाई नागरी हगन सुधारस प्याय। कपट रूप धर मोहनी प्रगट भई व्रज आय॥ ३७६॥

राग यमन।

झूलत को श्यामाके सँग सखी सामरी प्यारी है। कजरे नयन सैनसों बतियाँ अँखियन कोर कटारी है॥ जोवन जोर मरोर

भौंहकी ललित किशोरी वारी है। ललिता करि परिहास कही यह नागर नंददुलारी है ॥ ३७७ ॥

राग झंझोटी ।

श्यामाजी झूलें पीरी पोखर। पार गावत है ऊंचेस्वर कोकिल रही मौन मुख धार ॥ रमकनकी दमकन नग भूपण शोभा विपिननिहार चौकाकी चमकन पर डारूं श्वेत दामिनी वार ॥थरकतहै अतर अतराटशिर पर सूही सार।खुमक बनी उर पीतकंचुकी मुख पर श्रमकण बार॥सजनी री इक साँवारि आई झूलनको रिझवार।ताके सँग झूलत हैं प्यारी करत अधिक मनुहार ॥ कौन गाम क्या नाम तिहारा करिये कृपा विचार । तरुणिनमें अति सुंदर प्यारी चतुरनमें वर नार ॥ ललिता कहै बोल री सामर नातर देहुँ उतार । राजसुता सँग झूलन आई दियो ढीठ डर डार ॥ डोरी गह लीनी ललिता ने दोऊ दिये उतार । हँस पुनि चपल बलैयाँ लेवे कोउ पीवत जल वार ॥ सैननमें समझावत मुखसे वचन न सके उचार । नंदगामकी ओर बतावे ऊँचे हाथ पसार ॥ अँचराकी सरकनमें कौस्तुभमणिकी परी चिन्हार । हर हर हँसत सकल ब्रज सुंदरी यह वोही खिलवार ॥ नई पाहुनी आई झूलन बैठी घूँघट मार । वृंदावन हित रूप बलिगई छदम न सकत उघार ॥ ३७८ ॥

बाँकी छवि झूलत प्यारी । बाँकी आप विहारी बाँके बाँकी सँग सुकुमारी ॥ बांकी घटा घिरी इत चमकन चपलाहूँकी न्यारी । ललित किशोरी बाँकी मुसकन वंक पैंग पर वारी ॥ ३७९ ॥

राग पीलू खेमटेकी राहमें ।

कौन चढ़े पहले सुरंग हिंडोरे । सोई करत मनुहार हिये हित रमकदेत जोराजोरे । गावत राग तान मधुरे स्वर कोटि काम चित चोरे। रसिक प्रीतम यह होड़ पियापरी रीझ देत तृण तोरे ॥३८०॥

राग सोरठ ।

गाय चरायके गिरि धाऱ्यो तुम्हें झूलन समझ कहाहै । अति सुकुमार प्रिया गौरांगी ता सँग झूलोहि चाहे ॥ हम जो सिखावैं वैसेहि सीखो कहा फिरत हो भरे उमाहें । वृंदावन हित रूप बलिगई ह्यां पायोके बाँहै ॥ ३८१ ॥

राग बरवा सारंग ।

तेरी झूलन अति रस सानी सुखदानी श्रीराधा वल्लभ लाडले । गावत बजावत रिझावत प्रियाको तान तरंगन सब मिल आवरे ॥ सब शृङ्गार हार फूलनके प्यारीको पहरावत मनमें चावरे । राधे बर कृष्ण याही कृपा कर विपिन बसावो अनत न जावरे ॥ ३८२ ॥

राग मलार ।

झूलो तो सुरंग हिंडोरे झुलाऊँ । मरुवे बयार करूं हित चित दे तन मन खंभ बनाऊं ॥ सुध पटली बुध डांडी बेलन नेहं बिछौना बिछाऊं । अति अवसेर धरूं टुक कलसा प्रीति ध्वजा फहराऊं ॥ गरजन कुहक किलक मिलवेकी नेह नीर बरसाऊं । श्रीविट्ठल गिरिधरन लालको जो इकले कर पाऊं ॥ ३८३ ॥

भीगत कब देखूँ इन नयना । राधाजूकी सुरँग चूनरी मोहनको उपरैना ॥ श्मामा श्याम कुञ्ज तन चितयो यत्न कियो कछु मैं ना । श्रीभटके प्रभु नयनन निरखत जुर आई जल सैना ॥ ३८४ ॥

भीगत कुञ्जनमें दोऊ आवत । ज्यों ज्यों बूँद परत चुनरी पर त्यों त्यों हरि उर लावत॥अधिक झकोर होत मेघनकी द्रुम तराछिन बिलमावत। वे हँस ओट करत पीतांबर वे चुनरी जु ओढ़ावत॥तैसेहि मोर कोकिला बोलत पवन् बीच घन धावत।ले मुरली कर मन्द घोर स्वर राग मलार बजावत ॥ भीजे राग रागिनी दोऊ भीजे तनु छबि पावत।सूरदास हरि मिलत परस्पर प्रीति अधिक उपजावत॥३८५॥

होरीलीला।

राग जङ्गला।

प्यारी पिया दोऊ खेलत होरी । नन्दनँदन ब्रजराज साँवरो श्रीवृषभानुकिशोरी ॥ परमानन्द प्रेम रस भीने लिये अबीर भर झोरी। करत मनमें चित चोरी ॥ भुजभर अंक सकुच तज गुरुजन बिचरत हैं मिल जोरी। छूटी अलकाँ उरझीं कुण्डलसों बेसर मीत फँस्योरी ॥ चलो सुझावो गोरी ॥ कर कङ्कण कञ्चन पिचकारी केसर भर लै दौरी। छिरकत फिरत हुलस लिये हर्षत निरखत हँस मुख मोरी ॥ चलो क्यों होइयो बौरी ॥ धनि गोकुल धनि धनि श्रीवृंदावन जहँ यह फाग रच्योरी । श्रीरसरंग रीझरहे ब्रज पर वारों वैकुण्ठ करोरी ॥ मुक्ति काशी जहँ थोरी ॥ ३८६ ॥

राग होरीसारंग।

श्यामा श्याम सों होरी खेलत आज नई । नंदनँदनको राधे कीनो माधव आप भई ॥ सखा सखी भईं सखी सखा भये यशुमति भवन गई। बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ नाचत थेइ थेई ॥ गोरे श्याम सामरी राधे या मूरति चितई।पलटयो रूप देख यशुमतिकी सुध बुध विसर गई ॥ सूर श्यामको वदन विलोकत उघरगई कलई ॥ ३८७ ॥

राग जङ्गला।

या ब्रजमें कैसी धूम मचाई ॥ इत ते आई कुँवर राधिका उतते कुँवँर कन्हाई। खेलत फाग परस्पर हिल मिल या छवि वरणि न जाई ॥ घरे घर बजत बधाई ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ मंजीरा सहनाई। उड़त गुलाल लाल भये बादर केसर कीच मचाई ॥ मनो मघवा झर लाई ॥ राधे सैन दई सब सखियन यूथ यूथ मिल धाई।

पकरोरी पकरो श्याम सुंदरको गृह अब जान न पाई ॥ करो अपने मन भाई ॥ छीन लियो मुख मुरली पितांबर शिर पर चुनरि उढ़ाई। बेंदी भाल नयनमें काजर नकबेसर पहराई ॥ मनो नई नारि बनाई॥ कहाँ गये तेरे पिता नंदजी कहाँ यशोमति माई । कहाँ गये तेरे सखा संगके कहां गये बल भाई ॥ तुझे अब लेत छुड़ाई ॥ फगुवा लिये बिन जान न दूँगी करियो कोटि उपाई । लेहों चुकाय कसर सब दिनकी तुम हो चोर चुराई ॥ छीन दधि माखन खाई ॥ धनि गोकुल धनि धनि श्रीवृंदावन धनि यमुना यदुराई । राधा कृष्ण युगुल जोरी पर नंददास बलिजाई ॥ प्रीति उर रही न समाई ॥३८८ ॥

राग सारंग ।

रसियाको नारी बनावो री । कटि लहँगा गल माहिं कंचुकी चुँदरी शीश उढ़ावो री॥ गाल गुलाल दृगनमें अंजन बेंदी भाल लगावो री । नारायण तारी बजायके यशुमति निकट नचावो री ॥३८९॥

राग जंगला सिंध।

श्याम मोसे न खेलो होरी पालागों कर जोरी ॥ गैयां चरावन में निकसी हूँ सास ननँदकी चोरी । सगरी चुँदरिया रंग न भिजोवो इतनी सुनो बात मोरी ॥ छीन झपट मोरे हाथसे गागर जोरसे वहियाँ मरोरी । दिल धड़कत मेरो साँस चढ़त है देह कँपत गोरी गोरी ॥ अविर गुलाल लिपट गयो मुखसे सारी रंगमें वोरी । सास हजारन गारी देवै अरु बालम जीती न छोरी ॥ फाग खेलके तैंने रे मोहन क्या कीनी गति मोरी । सूरदास आनन्द भयो उर लाजरही कछु थोरी ॥३९० ॥

राग जंगला ।

थारे कंहूगी कपोलन लाल जी म्हारी अँगिया न छूओ ॥ यह अँगिया नहिं धनुप जनकको छुअत टुटो ततकाल। नहिं अँगिया

गौतमकी नारी छुअत उड़ी नँदलाल ॥ कहा विलोकत भ्रुकुटी कुटिल कर नहीं पूतना खाल । यह अँगिया काली मत समझो जा नाथ्यो पाताल ॥ गिरिवर उठाय भयो गिरिधारी लाला नहीं जानो व्रजबाल । जाओजी खाओ सुदामाके तंडुल गौवनके रखवाल ॥ इतनी सुन मुसकाय साँवरे लीनो अविर गुलाल । सूरश्याम प्रभु निरख छिरक अँग सखियन कियो निहाल ॥ ३९१ ॥

राग भूपाली जंगला ।

डगर मोरी छाँडो श्याम विंधजावोगे नयननमें । भूल जाओगे सब चतुराई लाला मारूंगी सैननमें ॥ जो तोरे मनमें होरी खेलनकी तो लेचल कुंजनमें ॥ चोआ चंदन और अगंजा छिरकूंगी फागनमें॥ चंद्रसखी भज बालकृष्ण छवि लागी है तन मनमें॥३९२॥

राग जंगला ।

जनि जाओरी आज कोऊ पनिया भरन ॥ ठाढ़ो मगमें मोहन इकइकको मारत पिचकारी तकतक ॥ जिनको चाहत तिनका रँगमें भिगोय डारे गारियाँ देन लागो न्यारो बक बक ॥ उनको देखके उलटी दौर आई मुख अपनो इक बारी ढक ढक ॥ शीश कँपनलागो पाँय थकन लागे छतियाँ करन लगी न्यारी धक धक ॥ आई वसंत बिरहोंकी मौजसों सब रंग रह्यो वनवारी छक छक॥मौज हरी तिहारो यही रंग रहैगो संग चलनको मैं रही तक तक॥ ३९३ ॥

राग गजल ।

मची है आज वंशीवट पै होली । खड़ा नट गैलमें भर रँग कमोली ॥ गई थी मैं अभी दधि वेचवे को, झपट मोहन मली मुख मेरे रोली ॥ पटक मटकी झपट अंचल झटक कर, लपट दरकाई चूनर और चोली ॥ अजब नटखटहै नँदका हँस मटक कर, लगा वातोंमें मेरी नीवी खोली ॥ ये लख मैं ढीठता उस नंदके की,

कहा मैं क्यों जी यह क्या है ठठोली ॥ अटकते हो जो हरदम हमसे मगमें चलो अब माफ कीजे होली होली । नहीं हूँ दासी मैं कछु कृष्णा तेरी बस, अब हमसे न बोलो टेढी बोली ॥ ३९४ ॥

राग बरवा होरी ।

मोको रंगमें बोर डारीरे इस नंदके छैल विहारी । ले बूका मेरे सन्मुख आवे भर पिचकारी मेरे मुख पर डारे ले करवा ऊपर ढरकावे ऐसो ढीठ विहारी ॥ कहा करूँ कहाँ जाऊँ मोरी आली या बनमें अब भई कुचाली चितवन हँसन फाँस गल डारे ऐंचत है मोरी सारी । जेकर पाऊँ पकरूँ वाको हौं भी कसर कछू ना राखों ब्रह्मदास हियमें अभिलाषों मुख मीडों गिरिधारी ॥ ३९५ ॥

राग होरी ।

छैल रँग डार गयो मोरी बीर । भीगगयो अति अतलस रोटा हरित कंचुकी चीर ॥ घालत कुंकुम ताक कुचन पर ऐसो निपट बेपीर । ललित किशोरी कर बरजोरी मुखसों मलत अबीर ॥ ३९६ ॥

रंगन भीग गई हो मोहन सारी सुरख नई । बरजत ननदी पहिरत निकसी अबही मोल लई ॥ नेक अनोखी गारी गावे या मति किन हूँ दई ॥ दैया सखी या गोकुल वसके ऐसी कभू न भई ॥ ३९७ ॥

राग परज ।

होरीरे मोहन होरी रंग होरी । काल्ह हमारे आँगन गारी दे आयो सो कोरी ॥ आय अचानक भुज भर पकरी गहि वैयाँ जो मरोरी । दैया सखी यह निठुर नंदको कीनी मोसो जोरा जोरी ॥ ३९८ ॥

रंग होरी मैं प्रीतम पाया मेरा दाँव लगा । सुनरी सखी तोहिं साँची कहत हौं तैं मेरा लाल वताया ॥ वहुत दिनन पाछे मोरी

सजनी सुहाग भाग मैं पाया । दैया सखी या गोकुल बसके किया अपना मनभाया ॥ ३९९ ॥

राग जंगला ।

या मोहना मोहिं आन ठग्योरी । सखीको रूप धरचो नँदनंदन आयो हमारी पौरी ॥ मैं जान्यों कोई परम सुन्दरी आई हमारी ओरी । धायके मैं चरण गह्योरी ॥ चरण पखार मन्दिर लै आई हँस हँस कंठ लग्योरी । सुन्दर वर्ण मधुर स्वर सजनी तब मेरा जिया वशभयो री ॥ प्रेम तन होरही बोरी ॥ मोहिं लिवाय गई कुञ्जनमें कर छल बल बहुतेरी । निपट इकेली मोहिं जान मेरो तन मन आन गह्यो री ॥ ढीठ छलिया नन्दकोरी ॥ ऐसो री यह कुञ्जविहारी याते कोउ न वच्योरी । सूरदास व्रजकी सखियनमें पारब्रह्म प्रगट्यो री ॥ जानैं सब कोरी ॥ ४०० ॥

अनुरागलीला ।

राग खंमाच ।

दर्शन देना प्राण प्यारे । नंदलला मेरे नैनोंके तारे ॥ दीनानाथ दयाल सकल गुण नव किशोर सुन्दर सुख वारे । हम मोहन मन रुकत न रोक्यो दर्शनकी चित चाह हमारे ॥ रसिक खुशाल मिलनकी आशा निशि दिन सुमिरन ध्यान लगा रे ॥४०१॥

राग सोरठा ।

तोहिं डगर चलत का भयोरी वीर । कहूँ पगकी पायल कहूँ शिरको चीर ॥ भई बावरी न कछु सुध बुध शरीर । तेरे मतवारन सम झूमत नयन । मुख भाषत है तू अति विरहके वैन ॥ मानो घायल काहूने करी हगनतीर ॥ मोसों नारायन जिन रख दुराव

जो तु कहेगी सोई मैं तेरो करूं उपाय ॥ जासों रोग हू घटे हटे सकल पीर ॥ ४०२ ॥

राग पीलू।

आली री तू क्यों रही मुरझाय । पनिघट गई यमुनाजल भरने आई है रोग लगाय ॥ केशो कारो चंद्र उजारो टोना डार गयो । करो उपाय सखी अब मेरो ब्रजनिधि वैद मंगाय ॥ ४०३ ॥

राग रामकली।

मैं श्याम दिवानी मेरा दरद न जाने कोय। शूली ऊपर सेज पियाकी किसविधि मिलना होय॥ घायल घायलकी गति जानै जिस तनु लागी होय । मीराके प्रभु गिरिधर नागर वैद सम-लिया होय ॥ ४०४ ॥

राग देश।

नारी हू न जाने बैदा निपट अनारी रे। बूटी सब झूठी परी औषधि नकारी रे॥ जाउ बैद घर अपनेको मोरे पीर भारी रे। यमुना किनारे ठाढ़ी ओढ़ कसूमी सारी रे॥ नंदजूके ढोटा मोहिं नयना भर मारी रे। गोकुलमें बैद बसै साँवरो विहारी रे। वाहीको बुलायके दिखाओ मेरी नारी रे॥ पुरुषोत्तम प्रभु बैद हमारे वाही छबीले ते लगी है मेरी यारी रे॥ ४०५ ॥

सवैया।

काहेको बैद बुलावत हो मोहिं रोग लगाय न नारी गहो रे॥ वो मधुआ मधुरी मुसकान निहारे बिना कहो कैसे जियो रे॥ चंदन लाय कपूर मिलाय गुलाब छिपाय दुराय धरो रे॥ और इलाज कछू न बने ब्रजराज मिले सों इलाज करो रे॥ ४०६॥

कवित्त ।

कोउ कहो कुलटा कुलीन अकुलीन कोऊ, कोऊ कहो रंकन कलंकन कुनारी हूं ॥ कैसो देवलोक परलोक तिरलोक मैं तो,लीनो हौं अलोक लोक लीकन ते न्यारी हूं ॥ तन जाओ धन जाओ देव गुरुजन जाओ, जीव क्यों न आजो नेक टरत न टारी हूं ॥ वृन्दावन वारी गिरिधारीके मुकुट वारी, पीत पट वारी बाँकी मूरति पै वारी हूं ॥ ४०७ ॥

घर तजों बन तजो नागर नगर तजों,बंशीवट तट तजों काहू पै न लजहों ॥ देह तजों गेह तजों नेह कहो कैसो तजों,आज काज राज बीच ऐसे साज सजहों ॥ बावरो भयोहै लोक बावरी कहत मोको बावरी कहेते मैं काहू ना बरजतहों ॥ कहैया सुनैया तजों बाप और भैया तजों दैया तजों मैया पै कन्हैया नाहिं तजहों ॥ ४०८ ॥

तौंक पहिरावो पांव बेरी ले भरावो, गाढे बंधन बँधावो औ खिंचावो काची खाल सों ॥ विष ले पिलावो तापै मूठ भी चलाओ, मांझी धारमें बहाओ बांध पत्थर कमालसों ॥ बिच्छू ले बिछावो तापै मोहिं लै सुतावो फेर, आग भी लगावो बांध कापर दुसालसों ॥ गिरिसे गिरावो कालीनागसे डसावो हाहा प्रीति ना छुड़ावो गिरिधारी नंदलालसों ॥ ४०९ ॥

सवैया ।

मोरपखा मुरली वनमाल लगी हियमें हियरा उमँग्यो री ॥ ता दिनते निज वैरनको मैं तो बोल कुबोल सभी जो सह्यो री ॥ अब तो रसखानसों नेह लग्यो कोऊ एक कहो कोऊ लाख कहो री ॥ और ते रंग रहो न रहो इक रंगरंगीलेते रँग रहो री ॥ ४१० ॥

कबित्त ।

जिन जानो वेद तेतो वादकी विदित होय, जिन जानो लोक लोक लीकन पै लर्मरो ॥ जिन जानो तप तीनों तापन सो तप तप, पंच अग्नि संगले समाधि धर्धमरो ॥ जिन जानो जोग तेतो जोगी जुग जुग जिये, जिन जानो जोत सोऊ जोत लै जर मरो ॥ हौं तो देव नन्दकेकुमार तेरी चेरी भई, मेरो उपहास कोऊ कोटिन कर्कर मरो ॥ ४११ ॥

सवैया ।

सुन्दर मूरति दृष्टि परी तबते जिय चंचल होय रहा है ॥ शोच सँकोच सभी जो मिटे अरु बोल कुबोल सभी जो सहा है ॥ रैनि दिना मोहिं चैन न आवत नैनन ते जल जात बहा है ॥ तापै कहै सखी लाज करो अब लागगई तब लाज कहाँ है ॥ ४१२ ॥

राग भैरवी ।

लाग गई तब लाज कहाँ री । जे दृग लागे नन्दनँदनसों औरनसों फिर काज कहा री ॥ भर भर पियें प्रेमरस प्याले ओछे अमलको स्वाद कहा री । ब्रजनिधि ब्रज रस चाख्यो चाहे या सुख आगे राज कहा री ॥ ४१३ ॥

राग पीलू ।

लागी रे लगनियां मोहना सों ॥ सुन्दर श्याम कमल दल लोचन नन्दजूको छैल छकनियां । कछु टोना सा डार गयो री कैसे भरन जाऊं पनियां ॥ कृष्णदासकी प्यास मिटे जब निरखो गिरिके धरनियां ॥ ४१४ ॥

राग गिरिनारी सोरठ ।

मैंने देखी री आज मोहनकी हँसन । अधरनपे अद्भुत अरुणाई मोतियनकी लर पांति दशन ॥ वा शोभाके दृग रहे प्यासे

पीने लगे भर भरके पसन । नारायण तबसों मोहिं सजनी सुधा न रही निज वदन वसन ॥ ४१५ ॥

राग कान्हरो ।

आज व्रजराजकी देख शोभा नई गई तनु भूल सुध भई हौं बावरी ॥ अधर रंग पान मुसक्यान जादू भरी ताहू पै चित हरन दृगनके भाव री । कुंडलनकी हलन छलन मन मदनकी चलत गज चाल वश करनके चाव री ॥ निरखके रूप नारायण हरण्यो हियो कौनसे भाग्यसों लग्यो है दाँव री ॥ ४१६ ॥

राग खट ।

आज नन्दलालमुख चन्द अयनन निरख परम मङ्गल भयो भवन मेरे ॥ कोटि कंदर्प लावण्य एकत्र कर वारों तनहीं जबहिं नेक हेरे ॥ सकल सुखसदन हर्षंत वदन गोपवर प्रबलदल मदन जनो संग घेरे । कहो कोउ कैस हूं नाहिं सुध बुध रहे गदाधर मिश्र गिरिधरन टेरे ॥ ४१७ ॥

मुकुट माथे धरे खोर चन्दन करे माल मुक्ता गरे कृष्ण हेरे ॥ पीतपट कटि कसे कर्ण कुण्डल लसे निशिदिना उर बसे प्राण मेरे ॥ मुरलिका मोहनी कर कमल सोहनी के कनक दोहनी खिरक नेरे ॥ लाल लोचन बने ललित रसमें सने सैनसे अनगिने ग्वाल टेरे ॥ किंकिनी काछनी देत शोभा घनी देख कौस्तुभ मनी सुर छकेरे ॥ प्रभु छबीलो रंगीलो रसीलो आली लग्नसे मग्न मनमें बसेरे ॥ ४१८ ॥

राग विलावल ।

माई री आज और काल्ह और दिन प्रति और और देखिये रसिक गिरिराज धरन ॥ दिन प्रति नई छवि वरणे सो कौन कवि

नितही शृङ्गार बागे वरन वरन ॥ शोभासिंधु श्याम अंग छबिके उठत तरंग लाजत कोटिक अनंग विश्वको मनहरन ॥ चतुर्भुज प्रभु श्रीगिरिधारीको स्वरूप सुधा पान कीजिये जीजिये रहिये सदाही शरन ॥ ४१९ ॥

माई री आजको शृङ्गार सुभग सांवरे गोपालजीको कहत न बने कछु देखे ही बन आवे ॥ भूपण वसन भांति भांति अङ्ग अङ्ग अद्भुत कांति लटपटी सुदेश पाग चित्तको चुरावे ॥ मकर कुण्डल तिलक भाल कस्तूरी अति रसाल चितवन लोचन विशाल कोटि काम लजावे ॥ कंठ श्रीवनमाल फेंटा कटि छोरन छबि हरेप निरख त्रियनके धीरज मन न आवे ॥ मेरे संग चल निहार ठाढे हरि कुञ्ज द्वार हित चितकी बात कहत जो तेरे जिया भावे ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरिधारीको स्वरूप सुधा पीवत नयनन पुट तृप्त हूं न आवै ॥ ४२० ॥

राग भैरवी।

छबि आछी बनी बनवारी की । मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल अलकां घूंघरवारी की ॥ मृदु मुसुकान आन नयननकी को वरणे गिरिधारी की । कृष्णदास युगल जोरी पर तन मन धन सभ वारी की ॥ ४२१ ॥

राग कान्हरा।

री हौं ता या मग निकसी आय अचानक कृष्ण कुँवर ठाढ़े री अपनी पौर । दृष्टि हूँ से दृष्टि मिली रोम रोम शीतल भई मनमें दीखत कछु काम रौर । लाल पाग लिपटी भाल परी री भुजन पर पान खात मुसकरात और किये चन्दन खौर । सूरदास मदन मोहन बाँके बिहारी लाल मनमें आवत कब मिलूँगी दौर ॥ ४२२॥

राग सिंदूरा ।

एरी मैं तो सहज स्वभाव गई नन्दजूके तहां देख्यो सुख और इकले श्याम नईकी धज सों ठाढे भवनकी पौर ॥ रतन शृंगार वहार हँसनकी माथे केसर खौर । नारायण सो छवि दृग छाई रही न काजर ठौर ॥४२३ ॥

राग कालिंगड़ा ।

भवन ते निकसे नन्दकुमार । पँचरंगी चीरा शिर सोहै चितवन पै बलिहारी ॥ कानाम सुतियनको चौकड़ा गल फूलनको हार । नारायण जे आपहि सुन्दर तिनको कहा शृंगार ॥ ४२४ ॥

राग विहाग ।

सुपनेमें दरश दिखाय मोहन मन हरलीनो प्यारे । रैनि दिना मोहिं कल न परत है तलफत जिय अकुलाय ॥ ललित त्रिभंगी माधुरी मूरत नयननमें रही छाय । कृष्ण प्रिया छवि देख मनोहर विन दामन गई हौं विकाय ॥ ४२५ ॥

राग देश ।

हँसके मारी मेरो मन लैगयो वडी वडी आँखनवारो कारो ॥ भौंह कमान वान जाके लोचन मेरे हियरे मारे कसके । रजा रेजा भयो री कलेजा मेरा भीतर देखो धसके ॥ यत्न करो यन्तर लिख ल्याओ औषधल्यावो घसके।रोम रोम विप छायरहो है कारे खाइयाँ डसके ॥ जो कोइ मोहन मोहिं आन मिलावे मोहन गल मिलूंगी हँसके । चन्द्रसखी भज वालकृष्ण छवि क्या री करूँ वर बसके ॥ ४२६ ॥

राग खम्माच ।

सुन्दर मुख सुख सदन श्यामको निरख नयन मन थाक्यो । बारिक होय वीथिनसों निकस्यो उचक झरोखे झाक्यो ॥ लालनें

इक चतुराई कीन्हीं गेंद उछाल गगन मिस ताक्यो । बहुरो लाज बैरन भई मोको मैं ग्वारन मुख ढाक्यो ॥ कछू करगये प्रेम चितवन सों ताते रहत प्राण मद छाक्यो । सूरदास प्रभु सर्वस लगये हँसत हँसत रथ हाँक्यो ॥ ४२७ ॥

राग देश ।

अपने गृहसे निकसी अबलासी दूजको चाँद चढ्यो । कोऊ कहै काहूकी सुन्दर कोऊ कहै काहूकी दासी ॥ आगे मिले नन्दजूके नन्दन मारत गेंद मचावत हाँसी ॥ घूँघटको पट छूट गयो री दूजकी होगई पूरणमासी ॥ ४२८ ॥

राग प्रभाती ।

मोर मुकुट बंसीवारेने मन मेरा हरलीना । हौं जो गई यमुना जल भरने आगे मिले रसभीना ॥ मुझको देख मुसकात साँवरा चितवनमें कछु टोना । विवश भई जल भरन बिसर गयो घड़ा धरणि धर दाना॥लोकलाज कुलकान बिसर गई तन मन अर्पण कीना । कृपा सखी भई रूप दिवानी अधर सुधारस पीना ॥ श्रीगोपाल धार उर अपने जन्म सफल करलीना ॥ ४२९ ॥

राग अड़ाना ।

हौं गई यमुना जल लेन माई हौं साँवरेसे मोही। सुरंग केशरी खौर कुसुमकी दाम अभिराम कण्ठ कनककी दुलरी ढुलकत पीताम्बर की खोही ॥ नान्हीं नान्हीं बूँदनमें ठाढ़ो री बँसुरिया बजावे गावे मालाकरी मीठी तानने तोलाकी छबि नेकहु न जोही । सूरश्याम मुरमुसक्यान छबि री अँखियनमें रही तब न जानौं हौं कोही४३०॥

राग रेखता ।

मन हरलियो है मेरो वा नन्दके दुलारे । मुसकायके अदासें नयनोंके कर इशारे ॥ इक दृष्टिमेंही वाने जाने कहा कियो है ।

नहिं चैन रैन दिनमें वाके विना निहारे ॥ चीरके पेच बाँके शिर मुकुट झुक रह्योहै । कटि किंकिणी रतनकी नूपुर बजत हैं प्यारे । वेसर बुलाक सोहैं गले मोतियोंकी माला । कंकन जडाऊ करमें नख चंद्रसों उजारे॥ छवि देत आरसीमें सुन्दर कपोल दोऊ । वरछी समान लोचन नई सान पै सँवारे ॥ फूलोंके हाथ गजरे मुख पानकी ललाई । कानोंमें मोतीवाले कुण्डलहू झलकें न्यारे॥ लख श्यामकी निकाई सुधबुध सकल गँवाई । वौरी बनाय मोका कित गये बंसीवारे ॥ जंतर अनेक मंतर गंडा तवीज टोना । स्याने तबीब पंडित कर कोटि यत्न हारे ॥ नारायण इन दृगनने जबस व रूप देखा । तबसों भये हैं ध्यानी उघरत नहीं उघारे ॥ ४२१ ॥

दिल ले गयो हमारो नँदलाल हँसते हँसते । वृन्दाविपिनका कुंजों जाती थी रस्ते रस्ते॥वह आगयो अचानक जूरेको कस्ते कस्ते। चित छुट पड़ा वदनपर बालोंमें फँस्ते फँस्ते॥मुशकलसे बची नागिन अलकोंसे डस्ते डस्ते । प्यारीके सँग खड़ा था वह सांवरा बिहारी। दृग कोर मोर मेरे सेनों जड़ी कटारी ॥ सुध बुध रही न तनकी सब भूलगई हमारी। यमुनाके तीर सुन्दर जहँ फूली फुलवारी ॥ कछनी कमरसे काछे सुन्दर सलोना ढोटा । कस पीत वसन आछे कटि बांधे वह कछोटा ॥ गैयान केहू पाछे दृग देखनेमें छोटा । चितवनके बाण मारे सब भांतिसे है खोटा ॥ गोकुलकी गैल मुझसे हँस पूँछे आ बिहारी । थी संग उसके सुन्दर वृषभानुकी दुलारी ॥ क्या हंसकीसी जोड़ी आँखों लगी पियारी । मैं होगई दिवानी जबसे वह छवि निहारी ॥ वृन्दाविपि कि गलियों दो चांदसे खड़ेथे ॥ मुसकाके करत बातें नयनोंसे दृग लड़े थे ॥ मद रूप छवि छकेसे टलते नहीं अड़े थे । सखियोंके यूथ केते बेहोश पड़ेथे ॥ आई ललित किशोरी ब्रजबाल हँस्ते हँस्ते ॥ कुंजोंमें लेगया छल

गोपाल हँस्ते हँस्ते॥ कछु जादूकी सी पुड़िया पढ़डाल हँस्तै हँस्ते ॥ हस्ते वह करगयो बेदरदी वेहाल हँस्ते हँस्ते ॥ ४३२ ॥

सुन्दर अनूप जोड़ी अति मनकी भावती । देखी मैं आज मगमें कुंजनसौं आवती ॥ अँग अंग देत शोभा भूषण जड़ाऊ आली । नयननमें सोहै कजरा अधरनपै पान लाली ॥ प्रीतमके कांधे कर धर प्यारी अनंद सो । हँसहँसके करत बातें मुख ललित चंदसों ॥ पग धरत हौरे हौरे गति देख हंस लाजे । नूपुर परम मनोहर अति मधुर मधुर बाजै॥यह भांतिसों मगन है क्रीडा करत हैं दोऊ । नारायण रसिकजन बिन यह रस न जानै कोऊ॥ ४३३ ॥

राग देश सोरठ ।

राधा नंदकिशोर री सजनी जो मिले कुंजनमें दोऊ री ॥ शीतल सुगंध तीर यमुनाके बोलत शुक पिक मोर । ज्यों तमालसे मिली है माधुरी ज्यों सावन घनघोर ॥ रसिक बिहारी बिहारन दोऊ मिल नीर क्षीर इकठौर ॥ ४३४ ॥

राग भैरवी ।

भला रे रँगीले छैला तैं जादू मोपै डारा । रसभरी तान सुनाय मुरलीमें मोह लियो प्राण हमारा ॥ तांडी आन मेरो जीयामें वसगई जानत है जग सारा । विट्ठल विपिन विनोद विहारन इक पल होत न न्यारा ॥ ४३५ ॥

गजल ।

तैनें वंसीमें जो गाया मेरा जी जानता है ॥ सैकड़ों बंसी सुनीं और हजारों तानें वह मजा फिर नहीं पाया मेरा जी० ॥ नाथने कूदके नाथ लिया कालीको । श्यामला श्याम कहाया मेरा जी०॥ ऐसे भारको कौन उठावे मोहन । डूवते व्रजको बचाया मेरा जी० ॥

राग लावनी ।

सखि कैसे कहूं मैं हाय न कछु वश मेरो । विन देखे सांवरो चन्द्र दृगनमें अँधेरो ॥ सखि ऐसो सुन्दर नाहिं कहूं मैं सभ जग हेरो । वाकी जो लिखै तसवीर सो कौन चितेरो ॥ सखि कठिन छैलको विरह आन मोहिं घेरो । सगरी निशि तारे गिरतहि होत सवेरो ॥ सखि जो तू मिलावे आंजे वो रूप उजेरो । जवलौं जीवोंगी गुण न भूलोंगी तेरो ॥ सखि नारायण जो नाहिं मिलैगो वह मनको लुटेरो । तौ नन्दद्वारपै जाय करूंगी मैं डेरो ॥ ४४२ ॥

राग काफी ।

वेदरदी तोहिं दरद न आवै । चितवनमें चित वशकर मेरो अव काहेको आंख चुरावै ॥ कवसों परी तेरे द्वारेपै विन देखे जियरा घवरावै । नारायण महवूव साँवरे घायल कर फिर गैल वतावै ॥४४३॥

नयनों रे चितचोर वतावो । तुमहीं रहत भवन रखवारे वांके वीर कहावो ॥ तिहारे वीच गयो मन मेरो चाहे जिती सौंहँ खावो । अव क्यों रोव तहो दइमारे कहुं तो थांग लगावो ॥ घरके भेदी वैठ द्वारपै दिनमें घर लुटवावो । नारायण मोहिं वस्तु न चाहिये लेने हार दिखावो ॥ ४४४ ॥

विन देखे मन मान न मेरो । श्याम वरन चित हरन लाड़िलो रूप सुधानिधि जगत उजेरो ॥ चाल मराल मनोहर वोलन चपल नयन मोतन हँसि हेरो । नारायण त्रिभुवनको स्वामी श्रीवृषभानुकुँवारिको चेरो ॥ ४४५ ॥

राग मलार ।

नहीं विसरत सखी श्यामकी सुरतियां । हँसन दशन द्युति दामिनी सी दमकन चंदसे वदनसों अतिमृदु वतियां ॥ कुंडल

झलक लख लगे ना पलक नकवेसरकी हलन चलन गजगतियां। नारायण जब निरखूं लालको सफल नयन शीतल ह्वै छतियां ॥ ४४६ ॥

राग देवगंधार ।

प्यारे तेरे बैन अमीरस बोरे । व्रज बनितन काननमें लगलग छिनमें मानहिं छोरे ॥ सुनत बनत है कहत बनत नहिं प्रेम प्रीतिके डोरे । श्रीरघुराज सुनावो निशिदिन माँगों यह करजोरे ॥ ४४७ ॥

कमलसी अँखिया लाल तिहारी । तिनसों तक तक तीर चलावत वेधन छतियां हमारी ॥ इन्हें कहा कोउ दोप लगावत यह अजहूं न सम्हारी । श्रीविट्ठल गिरिधरन कृपानिधि सूरत ही सुखकारी ॥ ४४८ ॥

राग विलावल ।

लाल तेरे चपल नयन अनियारे । नन्दकुमार सुरत रस भीने प्रेम रंग रतनारे ॥ कछु अस रीझे चाकित चहूं दिशि नव वर जोबनवारे । मानो शरद कमल पर खंजन मधुर अलक घुँघरारे ॥ ए जो मीन घनश्याम सिंधुमें बिलसत लेत झुलारे । गोवर्द्धनधर जान मुकुट माणि कृष्णदास प्रभु प्यारे ॥ ४४९ ॥

राग खम्माच ।

तेरे जी नयना कारे अनियारे मतवारे प्यारे । रतनारे कजरारे मीन मृग छौना वारे अंजना सँवारे खंजन वारे डारे ॥ नन्दके दुलारे मोहलीनो बंसीवारे प्यारे ऐसे जी अनोखे नयना काहेसे सँवारे । कृष्णदास बलिहारे तन मन धन वारे विधना सँवारे टरत हूं न टारे ॥ ४५० ॥

राग विभास ।

जादूगर रे थारे नैन । भवाँ कमान वान कर तैंने तिरछी मारी सैन ॥ लगत कलेजेमें वरछी सी घायल कीनी ऐन ॥ देखी अजव गजव तेरी चितवन मों नेक न नाहिं रुकै न ॥ युगल विहारीके विन देखे रंचक परत न चैन ॥ ४५१ ॥

राग भैरवी ।

जादूगर नयन नयन वड़े विशाला । मोर मुकुट मकराकृत कुंडल गल बैजंती माला ॥ पीतांवर कटि कछनी काछे नन्द यशोमति लाला । नाम लिये जाके पाप कटत हैं मेटत कालको ताला ॥ सूर वसत उर मोहनी मूरत टेढी विरहों वाला ॥ ४५२ ॥

कवित्त ।

टेढ़ी कला चंद्रकी सकल जग वन्दित है टेढ़ी तान मोहत है मन्मथके जालकी ॥ टेढ़ी है कमान वान लागत ही वेध जात श्रीपति न चूके चोट टेढ़ी करवालकी ॥ टेढ़ी लकड़ीको कोउ वनमें न काटि सकै टेढ़ी काशीपुरी जामें शंका नहीं कालकी ॥ टेढ़ी जरकसभाल टेढ़ी उर वनमाल मेरे मन वसी टेढ़ी मूरति गोपालकी ॥ ४५३ ॥

टेढ़े हू सुन्दर नैंन टेढ़े मुख कहे वेन टेढ़ो हू मुकुट नात टेढ़ी कछु कहगयो ॥ टेढ़े घुँघुरारे वाल टेढ़ी गल फूलमाल टेढ़ो हू वुलाक मेरे चित्तमें वसे गयो ॥ टेढ़े पग ऊपर नूपुर झनकार करें वाँसुरी वजाय मेरे चित्तको चुरे गयो ॥ ऐसी तेरी टेढ़ीन को ध्यान धरें मयाराम लटपटी पागसे लपेट मन लैगयो ॥४५४॥

राग भैरव ।

देखो री यह नंदका छोरा बरछी मारे जाता है । बरछीसी तिरछी चितवनकी सैनो छुरी चलाता है ॥ हमको घायल देख बेदरदी मन्द मन्द मुसकाता है । ललित किशोरी जखम जिगर पर नोन पुरी बुरकाता है ॥ ४५५ ॥

राग कालिङ्गड़ा ।

अँखियाँ लागीं सामलिया प्यारे सों । जब बरज्यो वरजी नहिं मानी अब क्या होत पुकारे सों ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल लगरही साँझ सवारे सों । मधुर अली दरशन बिन तरसत नेह लगा वंशीवारे सों ॥ ४५६ ॥

राग रामकली ।

लोचन भये श्यामके चेरे । एते पर सुख पावत कोटिक मोतन फेर न हेरे ॥ हाहा करत परत हरि चरणन ऐसे वश भये उनहीं । उनको वदन विलोकत निशदिन मेरो कह्यो न सुनहीं ॥ ललित त्रिभंगी छबिपर अटके फटके मोसों तोरी । सूरदास यह मेरी कीनी आपन्न हरिसों जोरी ॥ ४५७ ॥

नयना मान अपमान सह्यो । अति अकुलाय मिले री वर्जत यद्यपि कोटि कह्यो ॥ जाकी बान परी सखि जैसी तेही टेक रह्यो। ज्यों मर्कट मूठी नहिं छाँड़त नलिनि सुबास गह्यो । जैसी नीर प्रवाह समुद्रहिं माँझ बह्यो सो वह्यो । सूरदास इन तैसेइ कीनी फिर मोतन न चह्यो ॥ ४५८ ॥

राग विहाग ।

ललित छबि निर्ख अघात न नयन । रोम रोम प्रति जो चख होते तऊ न पावत चैन ॥ हाहा रूप दिखाय रसिकवर करुणा-

राग विभास ।

जादूगर रे थारे नैन । भवां कमान बान कर तैंने तिरछी मारी सैन ॥ लगत कलेजेमें बरछी सी घायल कीनी ऐन ॥ देखी अजब गजब तेरी चितवन मों नेक न नाहिं रुकै न ॥ युगल बिहारीके विन देखे रंचक परत न चैन ॥ ४५१ ॥

राग भैरवी ।

जादूगर नयन नयन बड़े विशाला । मोर मुकुट मकराकृत कुंडल गल बैजंती माला ॥ पीतांबर कटि कछनी काछे नन्द यशोमति लाला । नाम लिये जाके पाप कटत हैं मेटत कालको ताला ॥ सूर बसत उर मोहनी मूरत टेढी विरहों वाला ॥ ४५२ ॥

कवित्त ।

टेढ़ी कला चंद्रकी सकल जग बन्दित है टेढ़ी तान मोहत हैं मन्मथके जालकी ॥ टेढ़ी है कमान बान लागत ही बेध जात श्रीपति न चूके चोट टेढ़ी करवालकी ॥ टेढ़ी लकड़ीको कोउ वनमें न काटि सकै टेढ़ी काशीपुरी जामें शंका नहीं कालकी ॥ टेढ़ी जरकसभाल टेढ़ी उर वनमाल मेरे मन बसी टेढ़ी मूरति गोपालकी ॥ ४५३ ॥

टेढ़े हू सुन्दर नैंन टेढ़े मुख कहे बैन टेढ़ो हू मुकुट नात टेढ़ी कछु कहगयो ॥ टेढ़े घुँघुरारे वाल टेढ़ी गल फूलमाल टेढ़ो हू झुलाक मेरे चित्तमें बसे गयो ॥ टेढ़े पग ऊपर नूपुर झनकार करैं बाँसुरी बजाय मेरे चित्तको चुरे गयो ॥ ऐसी तेरी टेढ़ीनको ध्यान धरैं मयाराम लटपटी पागसे लपेट मन लैगयो ॥४५४॥

राग भैरव।

देखो री यह नंदका छोरा बरछी मारे जाता है। बरछीसी तिरछी चितवनकी सैनो छुरी चलाता है॥ हमको घायल देख बेदरदी मन्द मन्द मुसकाता है। ललित किशोरी जखम जिगर पर नोन पुरी बुरकाता है॥ ४५५॥

राग कालिङ्गड़ा।

अँखियाँ लागीं सामलिया प्यारे सों। जब बरज्यो वरजी नहिं मानी अब क्या होत पुकारे सों॥ मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल लगरही साँझ सवारे सों। मधुर अली दरशन बिन तरसत नेह लगा वंशीवारे सों॥ ४५६॥

राग रामकली।

लोचन भये श्यामके चेरे। एते पर सुख पावत कोटिक मो- तन फेर न हेरे॥ हाहा करत परत हरि चरणन ऐसे वश भये उ- नहीं। उनको वदन विलोकत निशदिन मेरो कह्यो न सुनहीं॥ ललित त्रिभंगी छबिपर अटके फटके मोसों तोरी। सूरदास यह मेरी कीनी आपन्न हरिसों जोरी॥ ४५७॥

नयना मान अपमान सह्यो। अति अकुलाय मिले री वर्जत, यद्यपि कोटि कह्यो॥ जाकी बान परी सखि जैसी तेही टेक रह्यो। ज्यों मर्कट मूठी नहिं छाँड़त नलिनि सुबास गह्यो। जैसी नीर प्रवाह समुद्रहिं माँझ बह्यो सो वह्यो। सूरदास इन तैसेइ कीनी फिर मोतन न चह्यो॥ ४५८॥

राग विहाग।

ललित छबि निर्ख अघात न नयन। रोम रोम प्रति जो चख होते तऊ न पावत चैन॥ हाहा रूप दिखाय रसिकवर करुणा-

निधि सुखऐन । कृष्ण प्रिया छिन बिलम न कीजै कल न परै दिन रैन ॥ ४५९ ॥

राग विभास ।

अँखियन यह टेव परी । कहा करूँ वारिज मुख ऊपर लागत ज्यों भ्रमरी ॥ चितवत रहत चकोर चन्द्र लौं नहिं बिसरत मोहिं एक घरी । यद्यपि हटक हटक हौं राखत त्यों त्यों होत खरी ॥ चुकजो रही वा रूप जलधिमें प्रेम पियूप भरी । सूरदास गिरिधर तनु परसत लूटत निशि सगरी ॥ ४६० ॥

राग भैरव ।

आँखनमें दुराय प्यारी काहू देखन न दीजिये । हिये लगाय सुख पाय सब गुणनिधि पूर्ण जोई जोई मन इच्छा होय सोई सोई क्यों न कीजिये ॥ मधुर मधुर वचन कहत श्रवणन सुख दीजिये । निर्मल प्रभु नन्दनदन निरख निरख जीजिये ॥ ४६१ ॥

राग विहाग ।

श्यामा मोरी आँखन बीच बसो लोक जानन कजरो । दुरत नहीं घूँघट पट उरझ्यो प्रेम प्रीतिको झगरो ॥ जित देखूँ तित माधुरी मूरत पीत बसन बनमाल गरे । बलि बलि जाऊँ छबीले छबिपर मदन गोपाल ललाके । बरज रही बरज्यो नहिं मानत दिन दिनको अगरो । सूर सुधा सम रूप श्यामको याहि परयो धगरो ॥ ४६२ ॥

राग रेखता ।

चकोरी चख हमारे हैं तिहारे चाँदसे मुख पर । छुटे बिखरेसे बालोंको सँभालोगे तो क्या होगा ॥ नहीं कछु हमको है शिकवा अगर तुम प्रीति बिसराई । जरा टुक नयन ऊँचे कर निहारोगे तो क्या

होगा ॥ तुम्हारे होचुके बारी हमारे हो न हो प्यारे । भला मुख-पानका बीरा जो धारोगे तो क्या होगा । ललित किशोरी कर-जोरी हहा यह है बिनय मोरी । तड़फते मुझ विचारेको पुकारोगे तो क्या होगा ॥ ४६३ ॥

राग बरवा ।

सुन्दर सांवरे सलोने ढोटा । तेरी सानूं डाढी लगन लागी हाथं लकुटी कांधे कमरी काछिनी बांधे कछोटा ॥ निशि दिनही लागो रहत गोपिनके पाछे भर भर पीवत छाछा महरीके ढोटा । पुरुषो-त्तम प्रभुके निरखनको फिर फिर खावत प्रेमकी चोटा ॥ ४६४ ॥

तेरी हँसन बोलन लाल मेरे मन बसियां । चलते मृगराज चाल कांधे सोहे रुमाल केसरके तिलक ऊपर फरकत मोर पखियां ॥ मुरली अधरान धरे गुञ्जमाल सोहे गरे हरी हरी कुञ्जनमें संग लिये सखियां । अरजी जुगरामदास सुनिये महाराज श्याम निरख निरख नयननकी कोर मांझ रखियां ॥ ४६५ ॥

राग देश ।

सांवरे दी भालन माये सानूं प्रेम दी कटारियां । सखी पूछें दोऊ चारे व्याकुल क्यों भैयां नारे रंगक रँगीले मोस दृग भर मारियां ॥ व्याकुल बेहाल भैयां सुध बुध भूल गैयां अजहूँ न आये श्याम कुञ्ज बिहारियां । यमुनाकी घाटी बाटी असां तेरी चाल पछाती बँसिया बजावीं कान्हा भैयां मतवारियां ॥ मीराबाई प्रेम पाया गिरिधरलाल ध्याया तू तो मेरो प्रभुजी प्यारा दासी हौं तिहारियां ॥ ४६६ ॥

ठुमरी ।

इस साँवलियाकी लटक चाल जियमें मोरे बसगई रे ॥ मुकुट पितांबर अधिक सुहावे ले मुरली पढ फूंक बजावे लटकारी नागि-नीसी लपटे तन मन डसगई रे ॥ बिन देखे नहिं परत चैन सब

विरहन कैसे कटत रैन कहा करूं मेरी गोइयां बिन दरश तरश गई रे ॥ लिखी ललाट मिटत नहिं मोहन भयो उचाट जिया किहि कारण अब आन फँसी मधुवन कुञ्जन परवश होय फँसगई रे ॥ मधुसूदन पिया प्यारा आवे तिरछी बांकी छबि दिखलावे डार गले बैयां सजनी सब कसक निकस गई रे ॥ ४६७ ॥

राग जंगला ।

कभी गली हमारी आव रे मोरे जियाकी तपन बुझाव रे नन्दजूके मोहन प्यारे लाला । तेरे सांवरे बदनपै कई कोटि काम वारे ॥ तेरियां जुलफा दिलदियां कुलफां जी दोऊ नैन हैं सतारे । तेरी खूबीके दरशपै लाल नयन तरसते हमारे ॥ पिया पिया करे पपीहरा रे निशिदिनसो याद तेरी । मेरे सांवरे सलोने मोहन आशा दर्शन केरी ॥ घायल फिरूं दरशकी पीर जाने नहीं कोई । मोहिं लागी चोट प्रेमकी जिन लाई जाने सोई ॥ जैसे जलके सोख हुए मीन क्या जीवे विचारे । कृपा कीजो दरशन दीजो मीरा माधो नन्ददुलारे ॥ ४६८ ॥

राग रेखता ।

दिलदार यार प्यारे गलियोंमें मेरी आजा । आंखें तरस रहीहैं सूरत इन्हें दिखाजा ॥ चेरी हूँ तेरी प्यारे इतना तू मत सता रे । लाखों ही दुख सहारे टुक अबतो रहम खाजा ॥ तेरे ही हेत मोहन छानी है खाक बन बन । दुख झेले शिर पै अनगिन अबतो गले लगाजा ॥ मनको रहूँ मैं मारे कबतक बतादे प्यारे । सूखे विरहमें तारे पानी इन्हें पिलाजा ॥ सब लोक लाज खोई दिन रैन बैठ रोई जिसका कहीं न कोई तिसका तू जी बचाजा ॥ मुझको न यूं भुलाओ कछु शरम जीमें लाओ । अपनोंको मत सतावो ऐ प्राण प्यारे राजा ॥ हरिचंद नाम प्यारी दासी है जो तुम्हारी । मरती है वह बिचारी आकर उसे जिलाजा ॥ ४६९ ॥

राग जंगला झिंझोटी।

गली वे हमारी क्यों नहीं आमदा बिहारी प्यारे। दर्श दिखाय निहाल करोगे सुन्दर रूप उजारे प्यारे॥ तेरी याद मेरे मन पर रहिंदी श्याम स्वरूप आँखनके तारे। पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत तन मन धन सब वारे॥ ४७०॥

राग काफी।

मिलना वे महबूब बिहारी। भोरभये वृन्दावन कुञ्जों जाना होकर गली हमारी॥ मृदु मुसकन सानूं दिलबिच भांदी झमक चलन नूपर धुन प्यारी। ललित किशोरी साँवरी सूरत घुंघरी अलकौं पर बलिहारी॥ ४७१॥

मिलना वे दिलदार साँवरे। हुसन तुसाडे चूर हुआ दिललीता॥ तैं नकबका दावरे। बाँकी अदा चशमों बसदी दीठापरे न दूजा ठांव रे॥ ललित किशोरीनूं लख समझावो एक नहीं मेरे मन भाव रे॥ ४७२॥

राग देश।

मेरे नयनोंका तारा है मेरा गोविंद प्यारा है॥ व सूरत उसकी भोली सी व शिर पगिया मठोली सी। व बोलीमें ठठोलीसी बोल हग बाण मारा है॥ व घूघरवारियां अलकें व झोकेवारियां पलकें। मेरे दिल बीचमें हलकें छुटा घरवार सारा है॥ दरस सुख रैन दिन लूटे न छिनभर तार यह टूटे। लगी अब तो नहीं छूटे प्रान हरिचंद वारा है॥४७३॥

राग रामकली।

एक गामको बास धीरज कैसेके धरों। लोचन मधुप अटक नहिं मानत यद्यपि यत्न करों॥ वे या मग नित प्रति आवत हैं हौं दधि लै निकरों। पुलकत रोम रोम गदगद स्वर आनँद उमँग

विरहन कैसे कटत रैन कहा करूं मेरी गोइयां बिन दरश तरश गई रे ॥ लिखी ललाट मिटत नहिं मोहन भयो उचाट जिया किहि कारण अब आन फँसी मधुवन कुञ्जन परवश होय फँसगई रे ॥ मधुसूदन पिया प्यारा आवे तिरछी बांकी छबि दिखलावे डार गले बैयां सजनी सब कसक निकस गई रे ॥ ४६७ ॥

राग जंगला ।

कभी गली हमारी आव रे मोरे जियाकी तपन बुझाव रे नन्दजूके मोहन प्यारे लाला । तेरे सांवरे बदनपै कई कोटि काम वारे ॥ तेरियां जुलफा दिलदियां कुलफां जी दोऊ नैन हैं सतारे । तेरी खूबीके दरशपै लाल नयन तरसते हमारे ॥ पिया पिया करे पपीहरा रे निशिदिनसो याद तेरी । मेरे सांवरे सलोने मोहन आशा दर्शन केरी ॥ घायल फिरूं दरशकी पीर जाने नहीं कोई । मोहिं लागी चोट प्रेमकी जिन लाई जाने सोई ॥ जैसे जलके सोख हुए मीन क्या जीवे विचारे । कृपा कीजो दरशन दीजो मीरा माधो नन्ददुलारे ॥ ४६८ ॥

राग रेखता ।

दिलदार यार प्यारे गलियोंमें मेरी आजा । आंखें तरस रही- हैं सूरत इन्हें दिखाजा ॥ चेरी हूं तेरी प्यारे इतना तू मत सता रे । लाखों ही दुख सहारे टुक अबतो रहम खाजा ॥ तेरे ही हेत मोहन छानी है खाक बन बन । दुख झेले शिर पै अनगिन अबतो गले लगाजा ॥ मनको रहूँ मैं मारे कबतक बतादे प्यारे । सूखे विरहमें तारे पानी इन्हें पिलाजा ॥ सब लोक लाज खोई दिन रैन बैठ रोई जिसका कहीं न कोई तिसका तू जी बचाजा ॥ मुझको न यूं भुलाओ कछु शरम जीमें लाओ । अपनोंको मत सतावो ऐ प्राण प्यारे राजा ॥ हरिचंद नाम प्यारी दासी है जो तुम्हारी । मरती है वह बिचारी आकर उसे जिलाजा ॥ ४६९ ॥

राग जंगला झिंझोटी।

गली वे हमारी क्यों नहीं आमदा बिहारी प्यारे। दर्श दिखाय निहाल करोगे सुन्दर रूप उजारे प्यारे॥ तेरी याद मेरे मन पर रहिंदी श्याम स्वरूप आँखनके तारे। पुरुषोत्तम प्रभुकी छबि निरखत तन मन धन सब वारे॥ ४७०॥

राग काफी।

मिलना वे महबूब बिहारी। भोरभये वृन्दावन कुञ्जों जाना होकर गली हमारी॥ मृदु मुसकन सानूं दिलबिच भांदी झमक चलन नूपर धुन प्यारी। ललित किशोरी साँवरी सूरत घुंघरी अलकौं पर बलिहारी॥ ४७१॥

मिलना वे दिलदार साँवरे। हुसन तुसाडे चूर हुआ दिललीता तैं नकबका दावरे। बाँकी अदा चशमों बसदी दीठापरे न दूजा ठांव रे॥ ललित किशोरीनूं लख समझावो एक नहीं मेरे मन भाव रे॥ ४७२॥

राग देश।

मेरे नयनोंका तारा है मेरा गोविंद प्यारा है॥ व सूरत उसकी भोली सी व शिर पगिया मठोली सी। व बोलीमें ठठोलीसी बोल दृग बाण मारा है॥ व घूंघरवारियां अलकें व झोकेवारियां पलकें। मेरे दिल बीचमें हलकें छुटा घरवार सारा है॥ दरस सुख रैन दिन लूटे न छिनभर तार यह टूटे। लगी अब तो नहीं छूटे प्रान हरिचंद वारा है॥४७३॥

राग रामकली।

एक गामको वास धीरज कैसेकै धरों। लोचन मधुप अटक नहिं मानत यद्यपि यत्न करों॥ वे या मग नित प्रति आवत हैं हौं दधि लै निकरों। पुलकत रोम रोम गदगद स्वर आनँद उमँग

भरों ॥ पल अन्तर चलजात कल्पभर विरहा अनल जरों। सूर सकुच कुलकान कहाँ लग आरज पन्थ डरों ॥ ४७४ ॥

राग गौरी।

अब तो प्रगट भई जग जानी। वा मोहनसों प्रीति निरन्तर क्यों न रहेगी छानी ॥ कहा करों सुन्दर मूरत इन नयनन माँझ समानी। निकसत नहीं वहुत पचहारी रोम रोम उरझानी ॥ अब कैसे निर्वारं जात है मिले दूध ज्यों पानी। सूरदास प्रभु अन्तर्यामी ग्वालिन मनकी जानी ॥ ४७५ ॥

राग काफी।

या साँवरेसों मैं प्रीतिं लगाई। कुल कलंकते नाहिं डरोंगी अबतो करों अपने मन भाई ॥ वीच बजार पुकार कहूं मैं चाहे करो तुम कोटि बुराई। लाज मरजाद मिली औरनको मृदु मुसकान मेरे बट आई ॥ बिन देखे मनमोहनको मुख मोहिं लागत त्रिभुवन दुखदाई। नारायण तिनको सब फीको जिन चाखी यह रूप मिठाई ॥ ४७६ ॥

राग रामकली।

मेरे जिया ऐसी आन बनी। बिना गुपाल और नहिं जानूं सुन मोसौं सजनी ॥ कहा काँच संग्रहके कीने हीरा एक कनी। मन वच क्रम मोहिं और न भावे अब मेरे श्याम धनी ॥ सूरदास स्वामीके कारण तजा जात अपनी ॥ ४७७ ॥

राग सोरठ।

मेरे गिरिधर गुपाल दूसरो न कोई। जाके शिर मोरमुकुट मेरो पति सोई ॥ शंख चक्र गदा पद्म कंठ माल सोही। तात मात भ्रात वन्धु आपनो न कोई ॥ छाँड़ दई कुलकी कान क्या करेगा

कोई। सन्तन सङ्ग बैठ बैठ लोकलाज खोई ॥ अबतो बात फैल गई जाने सबकोई। अँसुअन जल सींच सींच प्रेम बेलि बोई ॥ मीरा प्रभु लगन लगी होनीहो सो होई ॥ ४७८॥

राग बरवा।

मैं गिरिधर सङ्ग राती ग्वैयाँ ॥ पँचरँग चोला रँगादे सखी मैं झुरमट खेलन जाती। ओही झुरमट मेरो साईं मिलेगा खोल तनी गलगाती ॥ चन्दा जायगा सूरज जायगा जायगी धरन अकाशी। पवन पानी दोनों ही जायँगे अटल रहे अविनाशी॥ सुरत निरतका दीउडा सँजोले मनसाकी करले बाती। प्रेमहटीका तेल मङ्गाले जग रह्या दिनते राती ॥ जिनके पिया परदेश बसत हैं लिख लिख भेजें पाती। मेरे पिया मेरे माहिं बसत हैं ना कहूं आती न जाती ॥ पीहरे बसूं न बसुंगी सास घर सद्गुरु शब्द सुनासी। ना घर तेरा ना घर मेरा कहगई मीरा दासी ॥ ४७९ ॥

राग सोरठ।

रानाजी तैं जहर दीनी मैं जानी। जबलग कञ्चन कसिये नाहिं होत न वारा बानी॥ लोक लाज कुल कान जगतकी वहायदीनी जैसे पानी ॥ अपने घरको परदा करले मैं अबला बौरानी। तरकश तीर लग्यो मेरे हियरे गरकगयो सनकानी॥ मीरा प्रभुजीके आगे नाची चरण कमल लपटानी ॥ ४८० ॥

राग जंगला।

मैनूँ बरज न भोलड़ी माँ पीया नाल मैं रत्ती याँ। ना तकीया ना आसरा माए ना कोई राह गली। मैं शौहर ढूंडा आपना माए कर कर बाहिं खली ॥ साईं फूल गुलाबदा मेरी झोलड़ी टूट पया। वेसर भोले सुँघया मेरे रोम रोम रच गया॥ शाह सरफा

महिंदी रंगुली माए लाई कुछ जहान । इकनाँ नूँरंग चढगया इक रह गए अमना मान ॥ ४८१ ॥

राग विहाग ।

मन अटक्या बेपरवाहे नाल ॥ नयन फँसे दिल मिलया लोडे मूरख लोक असानूँ मोडे मेरा हरदम जाँदा आहे नाल ॥ मुल्लाँ काजी नमाज पढावन हुकम शरादा भय दिखलावन साडे इशक नूँ की इस राहे नाल ॥ नदियों पार सजन दा ठाना कीते कौल जरूरी जाना कुछ करलै सलाह मलाहे नाल ॥ आशिक सोई जेहडा इश्क कमावे जितबल प्यारा उते बल जावै बुल्लेसाह जामिल तू अलाहे नाल ॥ ४८२ ॥

राग पहाड ।

मैंनूँ हरदम रहिंदा चा सज्जन दे शोक नजारे दा ॥ जब तैं कीता असाँबल फेरा हार शृङ्गार पया भट मेरा सीने रडके साँग गुझड़ा इश्क प्यारे दा ॥ रल मिल सैयाँ मारन बोली ओह मेरा साहिब में ओहदी गोली रखदीहां जान पछान जामिन हशर दिहाडे दा ॥ ना आदम ना हव्वा आई ताते जाता अपना माही आया साहब आप बनके रूप सतारे दा ॥ मीरांशाह विभूति रमावां साँवरे दे दर अलख जगावां ओही है शिरताज आजज नीच नकारे दा ॥ ४८३ ॥

राग देवगंधार ।

बसे मेरे नयननमें नँदलाल । साँवरी सूरत माधुरी मूरत राजिव-नयन विशाल ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल अरुण तिलक दिये भाल । अधरन बंसी करमें लकुटी कौस्तुभमणि वनमाल ॥ बाजू-बन्द आभूषण सुन्दर नूपुर शब्द रसाल । दास गोपाल मदनमोहन पिय भक्तनके प्रतिपाल ॥ ४८४ ॥

बसे मेरे नयननमें दोउ चन्द। गौर वर्ण वृषभानु नन्दनी श्याम वरण नँदनन्द ॥ गोलक रहे लुभाय रूपमें निरखत आनँद कन्द। जय श्रीभट्ट युगल रस बन्दो क्यों छूटे दृढ़ फन्द॥ ४८५॥

राग परज।

या ब्रजमें कछु देख्यो री टोना। ले मटुकी शिर चली गुजरिया आगे मिले बाबा नन्दके छोना॥दधिका नाम बिसर गयो प्यारी ले लेहुरी कोउ श्याम सलोना। वृन्दावनकी कुंज गलीमें आँख लगाय गयो मनमोहना॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर सुन्दर श्याम सुघर रस लोना॥ ४८६॥

राग मलार।

कोऊ माई लैहै री गोपालहिं। दधिको नाम श्यामसुन्दर घन मुख चढ्यो ब्रजबालहिं॥ मटुकी शीश फिरत ब्रज बीथिन बोलत वचन रसालहिं। उफनत तक्र चहूँ दिशि चितवत चित लाग्यो नँदलालहिं॥ हँसत रिसात बुलावत बरजत देखो उलटी चालहिं। सूर श्याम बिन और न भावत या विरहिन बेहालहिं॥ ४८७॥

राग भैरव।

नयननकी कोरै कोऊ लेहै। है कोइ ऐसी रसिक रँगीली प्राण निछावर देहै॥ नूतन मधु में मेल ले आई छुवत खुमारी ऐहै। ललित किशोरी ततछिन जियरा टूक टूक ह्वै जैहै॥ ४८८॥

राग बरवा।

हमींको प्यारे दरश दिखायदे॥ लपट झपट कर मटुकी फोरी कर मोर मुकुटकी छैयां॥ मोहन प्यारे नन्ददुलारे तुम लीजो काँधे धर उनको॥ सुन यशुमति इक न्याउ सुन्यो प्रीतिहिं इन मोहनकी हमीं को०॥ हौं वृन्दावन जात हती शिर धर मटुकी माखनकी।

बैंयां आन झकोरत मोहन सब सखियां मुसकाय घरको सरकी। ॥ हमींको०॥ यह मटुकी अनबेध मोतिनकी मोल जो लागे नन्द। यशोदा दोऊ बिकेंगे ॥ सूरदास कहा ब्रजको बसबो नित उठि मांगत दान ॥ हमींको० ॥ ४८९ ॥

राग विहाग।

तुम्हैं कोउ टेरतहै रे कान्ह। गोरी सी भोरी थोरे दिननकी वारी सी वैस उठान॥ छूटी अलक लाल पट ओढे नागरि परम सुजान। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिन धीर धरत नहिं प्रान ॥ ४९० ॥

राग गौरी।

ग्वारन क्यों ठाढी नन्द पौरी। बेर बेर इतउत फिर आवत विजया खाय भई बौरी ॥ सुन्दर श्याम सलोनेसे ढोटा उन दधि लेन कह्यो री। हमको कह गयो नेक खड़ी रह आपुन बैठ रह्यो री ॥ नौ लख धेनु नंद बाबा घर तेरोही लेन कह्यो री ।जोबन माती फिरत ग्वालिनी तैं मेरो लाल ठग्यो री॥ इतनी सुनत निकस आये मोहन दधिको मोल कहो री। परमानंद स्वामी रूप लुभाने यह दधि भलो बिक्यो री ॥४९१ ॥

राग जिला।

श्रीवृंदावन रज दरशावे सोई हितू हमारा है। राधा मोहन छवी छकावे सोई प्रीतम प्यारा है॥ कालिंदी जलपान करावे सो उपकारी सारा है। ललित किशोरी युगल मिलावे सो अँखियोंका तारा है ॥४९२ ॥

राग देश।

नीको लगे राधावर प्यारो। मोर मुकुट पियरो पटरा है लकुटी कर मतवारो॥ रोकत गैल छैल अलबेलो नटवर वेप सँवारो। ललित किशोरी मोहन रसिया जीवन प्राण हमारो॥ ४९३ ॥

राग खेमटा।

सखी राधावर कैसा सजीला। देखो री गोइयां नजर नहीं लागे कैसा खुला शिर चीरा छबीला॥ वार फेर जल पियो मेरी सजनी मत देखो भर नयन रँगीला। हरीचंद मिल लेहौं बलैयां अँगुरिन कर चटकाय चुटीला॥ ४९४॥

राग देश।

दम्पति दर्पण हाथ लिये। निरखत मुख अरविंद कपोलन मेल मुदित गलबाहिं दिये॥ ललित किशोरी मदन तरंगें पर्श अङ्ग सरसात हिये। छिनहूं यह छबि जिन न विलोकी कहा कोटिशत कल्प जिये॥ ४९५॥

राग देवगंधार।

निरखत सखि चार चंद्र इक ठौर। बैठे निरखत पिया तिया दोउ सूर सुताकी ओर॥ द्वै विधु नील श्याम घन जैसे द्वै विधुकी गति गौर। ताके मध्य चार शुक राजत द्वै फल आठ चकोर॥ शशि शशि सङ्ग प्रवाल कुन्द अलि तहँ उरझ्यो मन मोर। सूरदास प्रभु उभय रूपनिधि बलि बलि युगलकिशोर॥ ४९६॥

राग खेमटा।

तू मेरा मनमोहा सामलिया। भौंह कमान तान काननलौं नयन बान हँस मारे छलबलिया। ठुमक चलन बोलन मुख पंकज मधुरहँसन कर डारे बेकलिया। जन रघुनाथ इतेपर मोहन अब न बजा प्यारे लाल मुरलिया॥ ४९७॥

राग रेखता।

लगा है इश्क तुमसेती निबाहोगे तो क्या होगा। मुझे है चाह मिलनेकी मिलाओगे तो क्या होगा॥ हुस्न चश्मोंके प्याले भर

पिलाओगे तो क्या होगा। चमन बिच आन कर मुखड़ा दिखाओगे तो क्या होगा ॥ भरमधर्ता हैं कुलआलम हँसाओगे तो क्या होगा। सजन तुम बिन तड़फता जी जिवाओगे तो क्या होगा ॥ मेरे इस दिल दिवानेको सताओगे तो क्या होगा । अजब दीदार रोशन है छिपाओगे तो क्या होगा ॥ चुराकर दिल परायेको दिलाओगे तो क्या होगा। जिगरके दर्दकी दारू बताओगे तो क्या होगा ॥ रसिक गोविन्द सीनेसे लगाओगे तो क्या होगा ॥ ४९८ ॥

लावनी ।

हम तेरे इश्कमें श्याम बहुत दिन भटके । अब मिला हमें तू सनम खुले पट घटके ॥ किये रंजो अलम मंजूर जरा नहिं भटके। सब दहशत दिलकी निकल गई छटछटके ॥ क लाख बजाके सनम दिया तूने झटके। पर गिरे न हरगिज कदम पकड़ हट हटके ॥ कइ बार गया शिर तेरे इश्कमें कटकटके । फिर पाया हमने नाम तुम्हारा रटके ॥ जब नाम बनाकर फाँद जानकर लटके । तब मिला हमें तू सनम खुले पट घटके ॥ ४९९ ॥

गज़ल ।

किया बिस्मिल मुझे उसकी अदाके हाथ क्या आया । तडपता छोडकर तेगे कजाके हाथ क्या आया ॥ दिखाकर टुक जमाल अपना मुझे तो कर दिया शैदा। भला पूछे कोई उस महलकाके हाथ क्या आया ॥ मेरे इस गुंचये दिलको कभी उसने न आ खोला । गई वोलाई बालों उस सबाके हाथ क्या आया ॥ लगाना खूब दिल चाहाथा मैंने उसके पाऊँसे । वल इस पेश कदमीसे हिनाके हाथ क्या आया । फिर शहरो बियाबां तालबे दीदार नारायण । बिठाया उसको परदेमें हयाके हाथ क्या आया ॥५००॥

जहां ब्रजराज कल पाये चलो सखि आज वां वनमें। बिना वा रूपके देखे विरहकी दौ लगी तनमें ॥ न कल पड़ती है बेकलको न जी लगता है बिन जानी। भई फिरती हूँ योगिनसी सरे बाजार गलियनमें ॥ करूँ कुर्बान जी उसपर जनम भर गुण न भूलूँगी। मेरा महबूब जो लाकर बिठादे तेरे आँगनमें ॥ नहीं कुछ गर्ज दुनियासे न मतलब लाजसे मेरा ॥ जो चाहो सो कहो कोई बसा अब तो वही मनमें ॥ तेरी यह बात सांची है नहीं शक इसमें नारायन । जो सूरतका है मस्ताना वह परचे कैसे बातनमें ॥ ५०१ ॥

राग नट।

कान्हर कारो नन्ददुलारो मोनयननको तारो री । प्राणपियारो जग उजियारो मोहन मीत हमारो री ॥ दृगमें राजत हियमें छाजत एक छिना नहिं न्यारो री। मुरली टेर सुनावत निशि दिन रूप अनूपम वारो री ॥ चरण कमल मकरन्द लुब्ध है मन मधुकर गुंजारो री। रस रङ्ग केलि छबीले प्रभु सङ्ग हितसों सदा बिहारो री ॥५०२॥

राग भैरव।

प्यारा नयना लगाय छिप जामदा। यादतांरहिंदी हरदम तेरी मुखडा क्यों नहीं दिखलामदा मेरा जिया तर्सामदा ॥ जबते लग्न लगीहै मनमें गृह अङ्गना न सुहामदा। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश को मन विच क्यों ना मन जामदा ॥ ५०३ ॥

राग देश।

मन मोह लिया श्यामने बंसीको बजाके। बेखुद किया दिल-दारने जुलफोंको दिखाके ॥ पटपीत मुकुट मोर लकुट लटपटी पगिया। चलते हैं लटक चालसे भ्रुकुटीको नचाके ॥ अलमस्त

किया दममें ब्रजनारिको मोहन। मुरलीके साथ किंकिणी नूपुर को बजाके॥ कुर्बान सनम् तुझपै दिलो दीन हमारा। राखो ललित किशोरीको गरेसे लगाके॥ ५०४॥

ठुमरी।

कोई दिलवरकी डगर बतायदे रे। लोचन कञ्ज कुटिल भ्रुकुटी कर कानन कथा सुनायदे रे॥ जाके रंग रँग्यो सभ तन मन ताकी झलक दिखायदे रे। ललित किशोरी मेरी वाकी चितकी सांट मिलादे रे॥ ५०५॥

राग कान्हरा।

श्याम भुजाकी सुन्दरताई। चन्दन खौर अनूपम राजत सो छबि कही नजाई॥ अति विशाल जानूंलौं परसत इक उपमा मन आई। मनो भुअङ्ग गगनसों उतरचो अधमुख रह्यो झुलाई॥ रत्न जड़ित पहुँची कर राजत अँगुरी सुन्दर भारी। सूर मनो शिर मणि सोहत फण फणकी छबि न्यारी॥ ५०६॥

राग सारंग।

जाको मन लागो गोपालसों ताहि और नहिं भावै। लेकर मीन दूधमें राख्यो जल बिन सचु नहिं पावै॥ जैसे शूरमा घायल घूमत पीर न काहु जनावै। ज्यों गूँगो गुड खाय रहत है स्वाद न काहु बतावै॥ जैसे सरिता मिली सिंधुमें उलट प्रवाह न आवै। तैसे सूर कमलमुख निरखत चित इत उत न चलावै॥ ५०७॥

राग देश।

गौर श्याम वदनारविंद पर जिसको वीर मचलते देखा। नयन बान मुसक्यान सङ्ग फस फिर नहिं नेंक सँभलते देखा॥ ललित किशोरी युगल इश्कमें बहुतोंका घर घलते देखा। डूना प्रेम सिंधु का कोई हमने नहीं उछलते देखा॥ ५०८॥

साँवरेकी जिन निरखी मुसक्यान । सो तो भई घायल ताही छिन बिन बरछी बिन बान ॥ कल नहिं लेत धरत नहिं धीरज तलफत मीन समान । नारायण भूली सुध तनकी बिसर गयो सब ज्ञान ॥ ५०९ ॥

राग काफी।

राधारमण मनोहर सुन्दर तिनके सङ्ग नित रहते हैं। छके रहत छबि ललित माधुरी और नहीं कछु चहते हैं ॥ चितवन हँसन चों दशननकी निशिदिन हियपर सहते हैं । ललित किशोरी करें न ओटैं फ़री नहीं कर गहते हैं ॥ ५१० ॥

राग धनाश्री ।

सबसे ऊंचो प्रेम सगाई । दुर्योधनकी मेवा त्याग्यो साग विदुर घर पाई ॥ जूंठे फल शबरीके खाये बहु विधि प्रेम लगाई । प्रेम के वश नृप सेवा कीनी आप बने हरि नाई ॥ राजसूयज्ञ युधिष्टिर कीनो तामें जूंठ उठाई। प्रेमके वश अर्जुन रथ हांक्यो भूल गये ठकुराई ॥ ऐसी प्रीति बढ़ी वृन्दावन गोपिन नाच नचाई। सूर क्रूर इस लायक नाहीं कहँलग करौं बडाई ॥ ५११ ॥

कवित्त ।

चढ़े गजराज चतुरंगिनी समाज सह, जीति क्षितिपाल सुरपालसों सजत हैं ॥ विद्याहू अपार पढ तीरथ अनेक कर जज्ञ और दान बहु भाँतिसों करत हैं ॥ तीनकालमें नहाय इंद्रियोंको वश लाय, कर के संन्यास विषै वासना तजत हैं ॥ जोग और जप और तपकों अनेक करैं, बिना भगवन्तभक्ति भव ना तरत हैं ॥ ५१२ ॥

चाहे जोग कर तू भ्रुकुटी मध्य ध्यान धर चाहे नाम रूप मिथ्या जानके निहार ले ॥ निर्गुण निर्भय निराकार ज्योति व्याप

रह्यो ऐसो तत्त्व ज्ञान निज मनमें तू धार ले ॥ नारायण अपनेको आपही बखान कर मोते वह भिन्न नहीं या विधि पुकार ले ॥ जौलों तोहिं नन्दको कुमार नहीं दृष्टि परे तौलों तू भलेही बैठ ब्रह्मको विचार ले ॥ ५१३ ॥

सवैया ।

चारहु वेद पुराण अठारहों चौंसठ तन्त्रके मन्त्र विचारे ।
तीन सौ साठ महाव्रत संयम मङ्गल यज्ञपुरी पुर सारे ॥
योग वियोग प्रयोग उपासन में हरिदत्त सभी निरधारे ।
तीनोंही लोकनके सगरे फल मैं हरि नामके ऊपर वारे ॥५१४॥

राग भैरव ।

कृष्ण नाम रसना रटत सोई धन्य कलिमें । ताके पदपंकज की रेणुकी बलि में ॥ सोई सुकृत सोइ पुनीत सोई कुलवन्ता । जाको निशिवासर रहै कृष्ण नाम चिन्ता ॥ योग यज्ञ तीरथ व्रत कृष्ण नाम माहीं । बिना कृष्ण नाम कलि उद्धार और नाहीं ॥ सब सुखको सार कृष्ण कबहूँ न विसरिये । कृष्ण नाम लेले भव-सागरको तरिये ॥ श्रीगोवर्द्धन धरन प्रभु परम मङ्गलकारी । उधरे जन सूरदास ताकी बलिहारी ॥ ५१५ ॥

राग माँझ ।

हर हर जिनके मुखसों निकसे वारे तिन्हांदे जाइयेजी । धूड तिन्हांदे चरणांदी लै मस्तक अपने लाइयेजी ॥ दुर्मति दूर करे निहकेवल शिव घर वासा पाइयेजी । दुनीदास हर साधु सङ्गति मिल निर्मल महल समाइयेजी ॥ ५१६ ॥

राग आसा ।

हर हर हर हर हर हर हरे ॥ हर सुमिरत जन बहु निस्तरे ॥ हरिके नाम कबीर उजागर । जन्म जन्मके काटे कागर ॥ जन

रमदास राम सँग राता । गुरुप्रसाद नरक नहिं जाता ॥ गोविंद गोविंद संग नामदेव मन लीना । आठ दामको छीपरो होयो लाखीना ॥ बुनना तनना त्यागके प्रीति चरण कबीरां । नीच कुला जोलाहरा भयो गुणी गहीरा ॥ सैन नाई बुतकारिया ओह घर घर सुनिया । हिरदे बस्या पारब्रह्म भक्तनमें गिनिया ॥ रामदास अधमते वालमीकि तिन त्यागी माया । परघट होय साध संग हरी दर्शन पाया ॥ यह विधि सुनके जाटरो उठ भक्ती लागा । मिले प्रतक्ष गुसाइयां धन्ना बड़भाग ॥ ५१७ ॥

राग मलार।

प्रभुके ऊंच नीच नहिं कोई । प्रेम भक्तिकर जो जन ध्यावे उत्तम कहिये सोई ॥ कुलवन्ता राजा दुर्योधन तिस गृह पग ना धारयो । जाय विदुरके भाजी अरपी जात न जन्म विचारयो ॥ ब्राह्मण एक करत नित पूजा ताको भोग न लीना । धन्ने जाटके शौच न काई होय प्रगट दुध पीना ॥ ऊंचे जन्म कर्मके तपसी ना किसे मन्दिर धावे । महा कुचील भील दे कर ते ले जूँठे फल खावे ॥ जाय पंडे सब आगे बैठें ना किसे देत दिखाई । नामदेवको देहरा फेरयो लीनो कण्ठ लगाई ॥ पारब्रह्म पूरण अविनाशी सब घटकी मति जानै । दुनीदास प्रभु भक्तवछल है कपट हेतु नहिं मानै ॥ ५१८ ॥

राग कान्हरा।

माधव केवल प्रेम पियारा । गुण अवगुण कछु मानत नाहीं जान लेहु जो जाननहारा ॥ व्याधाचरण अवस्था ध्रुवकी गजने शास्त्र कौन विचारा । भक्त विदुर दासीसुत कहिये उग्रसेन कछु वलि नहिं धारा ॥ सुन्दर रूप नहीं कुब्जाको निर्धन मीत

सुदामहुँ तारा। कहँलौं वरणि सकौं सबहिनको मोपै पायो जात न पारा॥ सुन प्रभु सुयश शरण हौं आयो मोसे दीनको काहे बिसारा। भक्तराम पर वेग द्रवो क्यों ना कहिये दासन दास हमारा॥ ५१९॥

राग जंगला काफी।

मन मानेकी बात नहीं कछु जातिको कारन॥ कुब्जा कर्मा और भीलनी पूतना और निषाद। गति पाई जिन यशुमति जैसी भये भुवन विख्यात॥ वाल्मीकि रयदास विदुर औ केशव कबीर किरात। सैन भक्त अरु सदन कसाई कहु इनकी क्या जात॥ जप तप योग दान व्रत संयम नहिं इनसों हर्षात। रसिक नाथ प्रभु इक रस साँचो भाव भक्ति पतियात॥ ५२०॥

राग जिला झिंझोटी।

गोपी प्रेमकी धुजा। जिनन गुपाल किये वश अपने उरधर श्याम भुजा॥ शुक मुनि व्यास प्रशंसा कीनी उद्धव सन्तसराहीं। भूरि भाग्य गोकुलकी वनिता अतिपुनीत जगमाहीं॥ कहा भयो जो विप्र कुल जन्म्यो सेवा सुमिरण नाहीं। श्वपचपुनीत दास पर मानँद जो हरि सम्मुख जाहीं॥ ५२१॥

राग विहाग।

प्यारो पैये केवल प्रेम में। नहीं ज्ञानमें नहीं ध्यानमें नहीं करम कुल नेममें॥ नहीं भारतमें नहीं रामायण नहीं मनुमें नहिं वेदमें॥ नहिं झगरेमें नहीं युक्तिमें नहीं मतनके भेदमें॥ नहिं मन्दिरमें नहिं पूजामें नहिं घंटाकी घोरमें। हरीचंद वह बांध्यो डोलै एक प्रेमकी डोरमें॥ ५२२॥

मुँदरियालीला ।

ठुमरी ।

माथेपै मुकुट श्रुति कुण्डल विशाल लाल अलक कुटिलसो अलिन मद गञ्जनी ॥ काछनी कलित कटि किंकिणी विचित्र चित्र पीत पट अंग सो विराजै द्युति बैजनी॥ दिये गलबाहीं प्रिया प्रीतम बिहार करें अति अनुराग भर आई नई द्वैजनी ॥ कहै जैदयाल प्रभु मेरो मन मोहि लियो मन्दमन्द बाजत गोविंद पायँ पैंजनी ॥ ५२३ ॥

राग कान्हरा ।

कहाँ करते मुँदरिया डरी । मैं बलि जाउँ बताय किशोरी तैं कबते न निहारी॥ आवतहैं भुज अंसन दीने एहो छैलबिहारी । जो देखी तो कहिये मोते मुदित होत कह भारी॥ चोरी चपल लगावत मोको न्याव करो तुम प्यारी । वृंदावन हित रूप दरश पड़ी लाल फेंट जब झारी ॥ ५२४ ॥

राग प्रभाती ।

गहनो तो चुरायो तैंने केशो यादोरायको । हाथकी अँगूठी लीनी तोरा लीनो पाँयको ॥ माथेको शिरपेच लीनो रतन जराय को । गाम तो बरसानो कहिये श्रीसुखधामको ॥ लालजीको सासरो श्रीराधे जूको मायको । लेके तो भाग आई फेर नहिं पायगो । सूर श्याम मदन मोहन नयो गढवायगो ॥५२५ ॥

राग आसावरी ।

मोहनि रूप बनायो हरि बाना । बाहिं वरा बाजुबँद सोहे छला छाप दस्ताना ॥ मुखभर पान सींक भर सुरमा लै दर्पण

कान्हा मन मुसकाना । माय यशोदा यों उठबोली तू क्यों भयो जनाना । मोहिं छलिगई वृषभानु किशोरी ताहि छलबेको बरसाने मोहिं जाना ॥ बरसानेकी कुञ्ज गलिनमें कान्हा फिरे दिवाना । भानरायकी पौर बूझके काहू गूजरियासों जाय बतराना ॥ ५२६ ॥

राग दादरा ।

तुम या ग्राम कहां रहो आली । हम कबहूं देखी न सुनीहै यह शोभा छबि रूप निराली ॥ नख शिख लौं शृङ्गार मनोहर अधर रची पाननकी लाली । नारायण कहो प्रगट खोलके बात न राखो बीच बिचाली ॥ ५२७ ॥

सवैया ।

मनमोहन लाल बड़ो छलिया सखि बारूकी भीत उठावतहै ॥
कर तोरत है नभकी तरियाँ चट चन्दमें फन्द लगावत है ॥
जहां पौन न जायसकै मुरली धुनकी तहां दूती पठावत है ॥
कहुँ चोर कहूँ दधिदानी बने कहुँ शाह लली बनिआवतहै ॥५२८॥

कवित्त ।

कौन रूप कौन रग कौन शोभा कौन अङ्ग, कौन काज महाराज त्रिया वेप कीयो है ॥ नाकहूमें नत्थ हत्थ चूरन भरे हैं लाल, काननमें कर्णफूल वेंदी भाल दियो है ॥ चन्द्रहार उर राजे चम्पकली कण्ठसाजै, मुकुट उतार ओढ़ चूनरीको लीयोहै ॥ नारायण स्वामी देख चीन्ह गई प्यारी भेख, खिल खिल हँस राधे पट मुख दीयो है ॥ ५२९ ॥

छन्द

मालिनलीला।

राग कालिंगड़ा।

प्यारी यक मालिन पौर तिहारी॥ टेक॥ रंग साँवरो वा मालिन को नील मणिन अनुहारी। ठाढी है वृषभानु पौंरिपै पूछत नाम दुलारी॥ बेंदी भाल नयन बिच काजर बेसरकी छबि न्यारी। चलत चाल चपला ज्यों चमकत झूमत झूम घटा री॥ यह सुनके वृषभानु नन्दनी बोली तब मुसकाई। ले आओ तुम वा मालिनको कैसी है वह आई॥ लै आज्ञा प्यारीकी तबहीं सखी वेग उठधाई। चलरी मालिन याद करी तू दास चरण बलिजाई॥ ५३०॥

मालिन मधुभरे नयन रसीले॥टेक॥ कहो कौन हैं तात तुम्हारो कौन तुम्हारी माई।क्या है सुन्दरि नाम तिहारो कौन गामते आई॥ अचल प्रेम है तात हमारो भक्ति हमारी माई।श्याम सखी है नाम हमारो धुर गोकुल ते आई॥ तुम्हरो रूप देख मन उमँग्यो सुन मालिनकी जाई। हम लेंगी सब वस्तु तिहारी क्या क्या सौदा लाई॥ चम्पाकली हमेल चमेली फूलन हार बनाई। सेवती गुलाब सुमनके झुमका तिहारे कारण लाई॥ कित मथुरा कित गोकुल नगरी कित बरसाने आई। कौन बताओ नाम हमारो किन यह ठौर बताई॥ तीन भुवनमें सुयश प्रकट है अरु तुम्हरी ठकुराई। राधे नाम रूपकी आगरि श्रीवृषभानुकी जाई॥ चंचल चतुर सुघर तू मालिन हम जानी चतुराई। फूलनहार वने अति सुन्दर और कहो क्या लाई॥ सुन्दर तेल फुलेल उबटनो अतर सुगन्ध मिलाई। जो रुचि होय सो लै मेरी प्यारी बेर भई

मोहिं आई ॥ वेर वेर तू जनि कर मालिन देहौं माल अघाई । हीरे लाल रत्न मणि माणिक भूषण वसन मँगाई ॥ वड़े घरनकी मालिन हूँ मैं धनकी रुचि कछु नाहीं । मैं सौदागर प्रेमरतनकी और न कछू सुहाई ॥ फूल फुलेल कि वेचनहारी कहा अधिक इतराई । लेहु लेहु फूल करत कुञ्जनमें हमपै करत वड़ाई ॥ सुकृत जन्मके फलते भामिन यह मेरे फूल सुहाई । पच पच हार रहे सुर नर मुनि ऐसे फूल न पाई ॥ जिन फूलनको खोजि थकित भये सुर नरपति मुनि-राई । ऐसे फूल कहो मृगनयनी कौन वागसों लाई ॥ त्रिभुवनपति जगदीश दयानिधि नन्दकुँवर यदुराई । वा मोहनके वागसों प्यारी नवल फूल चुनलाई । यह सुनके वृषभानु नन्दनी तन मन सुख अधिकाई । आज कि रैन रहो घर हमरे भोर भये उठ जाई ॥ साँची प्रीति देख प्यारेकी रैनकी शैन ठहराई । यह छवि निरख मगन भये सुर नर दास चरण वलिजाई ॥ ९२१ ॥

मनिहारीलीला ।

राग गौरी ।

मिठ वोलनी नवल मनिहारी । भौंहैं गोल गरूर हैं याके नयन चुटीले भारी ॥ टेक ॥ चूरी लख मुखते कहे घूँघटमें मुसकात । शशि मनु वदरी ओटते दुर दर्शन यहि भाँत ॥ चूरो वड़े जो मोल-को नगर न गाहक कोय । मो फेरी खाली परी आई घर घर सव जुट टोय ॥ चुरी नील मणि पहरवे नाहिन लायक और । भगवान कोइ ले चलो मोहिं दीसत है इक ठौर ॥ जिहिं नगरी रिझवार नहिं सौदागर क्यों जाय । वस्तु घनेरी गाँठमें विन गाहक सो पछिताय ॥ रंग साँवरी गुण भरी धन मुन्यार कुल ओप ॥ मुदित होत सव देखकेरी यह पुर गोपी गोप ॥ काहूपै न ठगायहै तेरी वुद्धि विशाल ।

लाभ अधिक कर जायगी भटू बेच बड़े घर माल ॥ मेरे मालहिं लेहिं सो जो मुहँ माँग्यो देय। ऐसी है कोउ भामिनी ताको नाम प्रगट किन लेय ॥ बेचनहारी काँचकी कहा अधिक इतराय। पौंर भूप वृषभानुकी लाखनकी वस्तु बिकाय॥ पुर बजार देखे नहीं है गर्वीली नार। व्यापारिन अबहीं बनी कछु बात न कहत विचार॥ तोहिं लैचलिहों नृप घरै क्यों जिय होत उदास। लेहिं लाड़िली राधिका जो सौदा तेरे पास॥ यह सुनके ठोढी गही सुखित भई अँग अंग। भलो जो तेरो मानहों लैचल अपने संग ॥ लैगइ पौरी भानुकी बात कही समझाय । गुणन प्रगट कर साँवरी तोहिं लेहैं वेग बुलाय॥ हौं जो मुन्यारी दूरकी आई राजद्वार । वेचों चूरी चूरला कोउ बोल लेहु रिझवार ॥ सुन आई चित्रा चतुर तू चल रावर माँझ। प्रात चूरी पहराइये अब बसरह परगइ साँझ॥ अलभ लाभसों पायके हिय जिय पायो चैन। रूखेसे मुख सों कहे गौं गर्जिन रच २ वैन ॥ पर घर वसत जु बालिगई खिझै सकल परिवार। बड़े भोर ही आयहों मैं यह मन किये विचार॥ एक वार भीतर जु चल प्यारीसों बतराय। भली लगै सो कीजियो लगलाड़लीके पाय ॥ चली जो झूमत झुकतसी वेनी रुरकत पीठ। घूँट अमीको सो भरयो जब मिली दीठ सो दीठ॥ वहुत हँसी नव नागरी देखी परम अनूप। के वेंचत चूरीसखी तू के वेंचत है रूप॥ मोहिं खिलौना जिन करो राजकुँवरि बलि जाऊँ। तन थाक्यो वासर गयो मोहिं फिरत फिरत सब गाऊँ॥ मुख दीखत तेरो डहडह्यो लगत चीकनो गात्र। थाकी कौन वतावही कछु ऊपरकी सी बात॥ हौं तो सूधे जीयकी घट बढ़ समझत नाहिं। तुम्हें कछू दरश्यो कहा प्यारी कपट मेरे हिय माहिं ॥ रँग पहराऊँ चूरला चोखो बणिज कमाऊँ। चोखी प्रीति जु आदरों नहिं कपटी जन पतियाऊँ ॥ मेरे जिय यह टेक है कहे देतहौं सांच । हौं भूखी सम्मानकी नहीं सहौं

झूठकी आंच ॥ आउ आउ री निकट तू देखों वदन निहार । एक बातहीमें चिरी तू गुस्सा हियते डार ॥ शीतल हो व्यापारिनी तेरो ऐसो काम । तमक नई यह बैसकी तज तोहि फिरनो सब धाम ॥ हौं आई तक राज घर करन प्रथम पहचान । मणि लीयेही बिन करी यह हांसी होय हितकी हान ॥ कासों है तैं हित कियो अबलग परी न दृष्टि । बात कहत उरझै सखी तू रची कौन विधि सृष्टि ॥ अब अपनी कर हित कहो भूपण युवति समाज । सब विधि पूरण होय तो प्यारी मोमन वांछित काज ॥ मणि चौकी बैठी कुँवरि दीनी भुजा पसार । काढ़ चुरी अति सोहनी पहराई सुघर मुन्यार ॥ भुजा कढ़त मुन्यारि दृग फूल्यो मनो वसन्त । मन छुट चल्यो जु हाथते धीरज बांधत गुणवन्त ॥ जबही करसों कर गह्यो शिव आरि कियो प्रताप । तनु गति वेपथु जानके कछु मधुरे कियो अलाप ॥ तुम लायक चूरी कुँवरि भूल जु आई गेह । निरख निरख प्यारी कह्यो तेरी क्यों कांपतिहै देह ॥ सरस्यो प्रेम हिये बली उत्तर देह जु कौन । रूप अमल तापै चढ़्यो लाल क्यों न गहै मुख मौन ॥ ललता कह यह प्रेमहै कोऊ परस्यो रोग । यत्न करो तनु पेखके सखी कौन दई संयोग ॥ परम गुणीलो नंदसुत मैं देख्यौ टकटोय । अहो प्रिया प्रीतम बिना बल ऐसो प्रेम न होय ॥ सींचे नीर गुलाब दृग प्रिया चिबुक कर लाय । प्रेम गहरते काढ़के सखी पुनि पुनि लेत बलाय ॥ यश दीयो सबही कुलन बनिता रूप बनाय । कौन बड़ाई कीजिये यश वर्द्धन गोकुलराय ॥ कौतुक रूपी खेलमें रजनी बाढ़ी शोभ । रसिकन हिये बढ़ावनी यह नवल प्रेमकी गोभ ॥ युगल प्रीति गाढी निरख भयो हिये अहलाद । वरणी लीला मोहनी यह श्रीहरिवंश प्रसाद ॥ बलहित रूप चरित्र यह जो विचार है नित्त । वृन्दावन हित भीजहै दम्पति रस ताको चित्त ॥ ९३२ ॥

बिसातिनलीला।

राग परज।

गली गलीमें कहत फिरत कोई लालहिं लेहु मुल्याई। यों कहत बिसातन आई ॥ टेक ॥ जबहिं गई वृषभानु पौर तब ऊंची टेर सुनाई। श्याम पोत अरु श्याम नगीना या घर लायक लाई॥ द्वारे उझक उझक फिर आवे आगे जात सकाई। तनु ढाँपै पुनि घूँघट मारै लाज जु भीजत जाई ॥ भीतर खबर भई तब प्यारी बोल निकट बैठाई। कौन अपूरव वस्तु पास तोहिं कहु मोसों समुझाई ॥ कौन नगर तू बसत बिसातिन अबहीं दई दिखाई। तोसी भटू बडे घर चाहिये धनि विधि जिन जु बनाई॥ सबही भाँति ऊजरी तनुकी किहि मुख करों बड़ाई। तोहिं बसाउं राजद्वार जो मनमें होत सचाई ॥ कैसी चुन्नी कैसे मोती-कीमत देहु बताई। है लघु बैस कौनपै सीखी पर्खनकी चतुराई ॥ काँख माहिं ते गांठ काढ़कर श्यामजु लरी गहाई। बड़े मोलके नग यह मेरे तुम रिझवार महाई ॥ जो जो रुचै वस्तु सो राखो बडे गोपकी जाई। औरौ बात कहत सकुचतहों प्रीति जु देख बिकाई ॥ नाना विधिकी डबिया छल्ला आरसी मणिन जड़ाई। श्रीराधाके आगे धरके बोली मैं भेंट चढ़ाई ॥ तुम नृप अति लडी हों जु बिसातिन देखत कृपा अघाई। हौं भूँखी याहीको चाहौं द्रव्य न बहुत कमाई ॥ श्याम पोतको गुंजा सुन्दर मो घर धरयो दुराई। मोसों प्रीति करै जो भामिनि ताहि देहुँ पहराई ॥ हौं हित करों वचन मन क्रम कर रह मो पास सदाई। प्राणनहूंते प्यारी मोको भाग्य वड़ेते पाई ॥ बटुवा खोल दिखाई बेंदी नागरिके मन भाई। सुघर बिसातिन अपने करलों माथे कुँवरि लगाई ॥ पुनि झोरीते दर्पण काढ्यो

मुख शोभा दरशाई । उदित भालपर मनु सुहाग मणि लख श्यामा मुसक्याई ॥ हर्ष अंकभर ताही बैठी मन खोल जबै बतराई । परशत अङ्ग दशा बदली तब प्यारी मनमें धरी भुराई ॥ बूझत अरी डरी कै तोकों छाया आय दबाई । तबलग परगई सांझ कहूं मोहिं बासो देहु बताई ॥ बिसर न सकत प्रीति अतिबढ़गई ब्याहू संग कराई । रजनी गुण उघरे जब शय्या अपने ढिग पौढ़ाई ॥ जबहिं स्वरूप प्रकाश्यो अपनो जान परी लँगराई । वृन्दावन हित रूप छद्म तज सुखकी लब्धि मनाई ॥ ६३२ ॥

योगिनलीला ।

राग देश ।

देखियत गुणन गरूर तेरो अति चटकीलो रूप । छकन और हीसी लगत काहू सुता बड़ेकी भूप ॥ टेक ॥ चल री चल घर लैचलों तूं कहदे मनकी लाग । योग लियो किहि कारणे दृग दरशत हैं अनुराग ॥ श्रीराधा नृप लाडिली मन आवत भापत सोय । अन्त लेत तपसीनको नहिं योग खिलौना होय ॥ तन साधें मन वश करें हम वन फल करें अहार । क्यों ग्रेहिनके घर बसें जिन तर्क तज्यो संसार ॥ भोजन भूँखी हौं नहीं कछु मन न वासना और । प्रीति सहित आदर जहां हम बिलमें ताहा ठौर ॥ आदर देहों अधिक तोहिं गुणहिं करों परकास । गिरि गहवर वन सेइये बरसानो निकट निवास ॥ गाम निकट ग्रेही बसै योगी रमें वनखंड । जिनके जप तपसे थमें सात द्वीप नौ खंड ॥ हम जो सुनी यह शेष शिर बू कहत अनेती बात । सत्य बोल नहिं जानही विधि रचे जो साँवल गात ॥ प्रीति प्रतीति न वचनकी करो वैस सुता पुनि राज । दूर बैठो घर जायके तुम्हें योगिनसे कह काज ॥

गोपनके गोधन परख तुम तिन गुण करो बखान । योगिनके घर दूर हैं अतिदुर्लभ पद निर्वान ॥ राजसुता तुम करतिहो योगिन संग विवाद । सेवा कीने फल मिलै चर्चा उपजै विषाद ॥ हम सेवा बहुविधि करैं जो तुम मन थिरता होय । यह पुर बसै बड़भागिनी ब्रज सब लोक न कोय ॥ क्यों न बड़ाई कीजिये लायक कुल वृषभानु । अब हौं निश्चय चाल हौं पायों मन वांछित सन्मान ॥ बाँह पकरके लेचली बैठारी जाय निकेत । अब छिन पास न छाँडिहौं समझ्यो उर अंतरको भेद ॥ पलँग देहु मोहिं बैठनो मन मिलनी सजनी पास । यहि विधि मोहिं बिलमाइये मैं कबहूँ न होउँ उदास ॥ भूमि शयन योगी करैं तू कहत वचन विपरीत । भूलि न आदर पाइये तप मारगकी रीत ॥ तुम मन मृदु कीरति लली यह सजनीको हियो कठोर । तपसिनको शिक्षा करै कछु आयो कलिको जोर ॥ भुज भरलीनी कुँवरिने तू जिय जिन पावै खेद । वृन्दावन हितरूप छद्मको समझ परयोहै भेद ॥ ५३४ ॥

वीणावारीकी लीला ।

राग गौरी ।

छवि आगरी कोविद राग । वीणा अंक विराजही बैठी बाबाके बाग ॥ टेक ॥ ऊंचो जामें बंगला कमनी सरवर तीर । जाके अंग सुवासते जहां ह्वैरही भँवरन भीर ॥ पक्षीहू कौतुक ठगे ऐसी शोभा अंग ॥ आभा नीलमणी मनो अस तनुको दरशत रंग ॥ जे देखत तरुणी गईं तेजो विलोई प्रेम । बीध गईं रस नादमें सब भूली नित कृतनेम ॥ तुम चलि लावो नगरमें मिले अधिक सुख होय । भूँखी वह जो सनेहकी प्यारी मैं देखी टकटोय ॥ गुणी न ऐसी देश यह रीझेगी सुन गान । औरनको जो छकावही वह आप छकै लैतान ॥

कोमल परम स्वभाव हो जानत प्रीति विकाय। जो अब आदर देहुगी तो फिर आवैंगी धाय ॥ सरिता जल थिर ह्वै रहै जाको सुनत अलाप। शिव समाधि टारे वली विधिको टारत है जाप ॥ ब्रज मंडल ऐसी नहीं नहीं भरतके खंड । अति गुणवंती भामिनी यह आई परचंड ॥ यह सुन अति अकुलायके चली सखी लै संग । रूपसिंधु उमँग्यो मनो तामें नानाउठत तरंग ॥ उठ सन्मानत साँवरी फूली सरवस पाय । हगसों हग मनसों जो लखि उरझे सहज सुभाय ॥ अहो कुशल मति नागरी तुम गुण भये प्रशंस । राग अलाप सुनाइये सखी वीणा धरके अंस ॥ चपल करज नख द्युति बड़ी गौरी गाई बाल । रीझी अति लली भूपकी दई ताहि आप हिय माल ॥ मान बड़ी तानन बड़ी बड़ी रूप लहि लाह । प्रगट-करो सब चातुरी जाके मनमें विपुल उमाह ॥ विद्या निपुण उजा-गरी धन तुम शिखवन हार। कोउ दिन वर्साने बसो अब चलो हमारे लार ॥ सुनत कछू मोरयो बदन चुप ह्वै रही सुजान। वीणा धर दियो कन्धते रूखी ह्वै गई निदान। ललिता बूझत समझके का कारण बलिजाऊँ। तुम उदास अतिही भई सुन धाम हमारे नाऊँ ॥ मेरे छक है गुणनकी सुनो खोलके कान। पर घर गये जो को सहै सखी जो न होय अपमान ॥ तुम्हें प्राण सम राख हैं लाड़ नयो नित होय। अहो गुणीली भामिनी यह संशय मनते खोय ॥ गुणगाहक विरचे नहीं दूर करो सन्देह। जे गुणको समझें नहीं परहरिये तिनके गेह ॥ यह सुन भई जो डहडही सखी साँवरी गात। चम्पक वरणी धन्य तू कही निपट समझकी वात ॥ अब हौं निश्चय चलौंगी जान तुम्हारो हेत। तो मन थाह मिली भट्ट नृप-सुता न उत्तर देत॥ कहा न्याव सो करतहो कहत अतिलडी बोना सुख पावो तो विरमियो नहीं कर जैयो [illegible] मसक उठी कर

वीण लै लगी कुँवारिके साथ। निपट मन्द गमनी भई गहि प्यारी-जूको हाथ ॥ गोपनके मन्दिर जिते सबको बूझत नाम। तनु श्रम अधिक जनावहीं कहै कितक दूर तुम धाम॥ हम जो चढ़ें रथ पालकी अतिही आदर योग। गुणी रीझ जानै कहा ये ब्रजके भोरे लोग॥ कहौ मँगाऊँ अश्वरथ कहौ पालकी रंग। आज्ञा पहले करी नहिं योंहिं उठ लागी संग॥ हम जान्यों नियरे भवन यह तो निकस्यो दूर। याते खबर परी नहीं तुम नेह रह्यो उर पूर॥ और सुनो मों वीणको नीके धरियो साज। मेरो जीवन प्राण है मेरो याही सौं रंग समाज॥ तुम मानतहो खेल सो सुन मो सुख रसरीत। नारदशारदके सदा अति या बाजे सों प्रीत॥ हौं सीखी उनकी कृपा सौं हियकी गाढ़ी लाग। ता प्रतापते करतहो सखी तुम मोसों अनुराग॥ लाई न्यारे भवनमें बहुत करत सम्मान। अब एकान्त सुनाइये सखी सुघर साँवरी गान॥ वीणाके सुर साधके अंक लाय मुसकाय। गायो चितकी चोपसों जिन लीनो सभन रिझाय॥ जैसिहि रजनी ऊजरी तैसोइ हिये हुलास। चपल करज तैसे चलैं भयो तैसोई परकाश॥ अहो सहेली साँवरी कर इहि नगर निवास। असन वसन करहो सखी चल रह नित मेरे पास॥ मोहिं अंशा यह नगर घर यामें शंक न कोय। आवत जात रहौं सदा जो रावर हित होय॥ सखिन और बाजे लिये प्यारी लई कर वीन। ग्रीव ढुराई साँवरी अस गायो कुँवारि प्रवीन। जब उघरी संगीत गति प्यारी दे करताल। छदम बिसर गई साँवरी लगी निरतन गति नँदलाल॥ ह्वै त्रिभङ्ग ठाढ़ी भई कर मुरलीको भाव॥ फूँक चले अँगुरी चलै गई भूल कपटको दाव॥ राधा राधा रट लगी अधरनहीके माहिं। समझ समझ ललता कही प्यारी यह तो भामिन नाहिं॥ भुजा अंसपर धरनको झुकी प्रियाकी ओर। सावधान होय साँवरी कह कौतुक रचत जुजोर॥ राजभवनमें आयके

भूल न आदर पाय । स्यानी है कै बावरी तू अपनो रूप बताय ॥ यासों प्रीति न तोरिये हौं लाई जु बुलाय । भेद हियेको बूझके देहु सादर वेग पठाय ॥ प्रीतमको देख्यो कहूँ इन लीनी गति चोर । परम चातुरी सीव यह गुण आछे लेत टटोर ॥ कान लाग चित्रा कह्यो है यह नन्दकिशोर । मैं लक्षण नीकें लखे दृग चालत गौंहीं कोर ॥ भटू बहुरि नीके परख बात न भाँडो फोर । लायकसों समझे बिना अति गरुवो नेह न तोर ॥ भरी कटोरी अतरकी लाई सखी सुजान । सबकी चोली लगायके तिहिं चोली परसे पान ॥ वह अधरनहीमें हँसी यह जो हँसी मुख खोल । है यह दूत शिरोमणि कह्यो सब सखियनसों बोल ॥ मेरीही भूलन सखी तब तुम लियो विलोक । प्रेमसिन्धु उमँगन जहाँ कह छद्म जो तिनको रोक ॥ कबहुँ दूर कबहूँ प्रगट आवत भान निकेत । मधुप अनत विरमैं नहीं दृढ़ कियो कमल सों हेत ॥ वरण्यो कौतुक प्रेमको नेम नहीं मरयाद । लखी जु रसिकनकी गली श्रीहरिवंश प्रसाद ॥ यह रस रसिक जो विलसहै जामें अति ही चोज । वृन्दावन हित बलि रुचै दंपति केलि मनोज ॥ ५३५ ॥

राग भैरव ।

यह रसरीत प्रिया प्रीतमकी दिव्यदृष्टि जल जैसे री । विषयी ज्ञानी भक्त उपासक प्राप्त सबनको तैसे री ॥ कदली खंभ पपीहा सीपी स्वाति बूँद जल जैसे री । भगवत् कछू विषमता नाहीं भूमि भाग फल तैसे री ॥ ५३६ ॥

दोहा—जय जय जय व्रजचंदकी, जय जय जय सुखराश ।
निज चरणनमें राखिये, एक तुम्हारी आश ॥

इति श्रीरागरत्नाकर प्रथमभाग समाप्त १.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालय-बंबई.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ रागरत्नाकर.

द्वितीय भाग २.

मथुरागमन लीला।

राग विहाग।

अब नँद गैयां लेहु सँभार। हौं जो तिहारे आन प्रगट्यो गैयां चराईं दिन चार॥ दूध दही तेरो बहुतही खायो बहुतहि कीनी रार। मातु पितु तेरे चरित उरसौं डारिहौं न बिसार॥ कोकिला सुत काग पाले अंत होत परार। तिहारे यशुमति आन बिलमें दृग मत आंसू डार॥ को पिता को पुत्र काको देखु मनहिं विचार। सूरके प्रभु चले व्रज तजि कपट कागज़ फार॥ १॥

राग सोरठ।

यशुमति बार बार यह भाखे। है कोऊ व्रज हितू हमारो चलत गोपालहिं राखैं॥ कहा काज मेरे छगनमगनको नृप मधुपुरी बुलाये। सुफलक सुत मेरे प्राण हरणको काल रूप हो आये॥ वरु यह गोधन कंस लेय सब मोहिं बंदी लै मेलै। इतनो माँगत कमल नयन मेरि आँखन आगे खेलै॥ को कर कमल मथानी गहिहै को दधि माखन खैहै। बहुरो इंद्र बरसि है व्रजपर को गिरि नख पर लैहै॥ बासर रैनि विलोकत जीयों संग लागि दुलराऊं। हरि बिछुरत जो रहों कर्मवश तो किहि कंठ लगाऊं॥ टेर टेर घर परत

यशोदा अधर वदन विलखानी । सूर सो दशा कहां लग वरणों दुखित नंदकी रानी ॥ २ ॥

राग विहाग।

उठ चले ग्वाँढों यार। रब्बा हुनकी करीये उठ चल्ले हुन रहिंदे नाहीं होया साथ त्यार ॥ चारों तरफ चलन दी चरचा केही पड़ी पुकार । डाढ कलेजे वल वल उठती विन देखे दीदार । वुल्लाशाह प्यारे बाझो ना रहसां घर बार ॥ ३ ॥

राग सोरठ ।

उलट पग कैसे दीनो नन्द । छांडे कहां उभय सुत मोहन धृग जीवन मतिमन्द ॥ कै तुम धन जोवन मदमाते कै तुम छूटे वन्द । सुफलक सुत वैरी भयो मोको लै गयो आनँदकन्द ॥ राम कृष्ण विन कैसे जीवों कठिन प्रीतिको फन्द । सूरदास अब भई अभागन तुम विन गोकुलचन्द ॥ ४ ॥

राग वड़हंस ।

सांझ परी घर आये न कन्हैया । गोपी पूछे ग्वालनसों कहां गये मोरे ब्रजके वसैया ॥ घर रहे बछरू वन रहीं गैयां यमुना किनारे ठाढी यशुमति मैया । जाय पताल कालीनाग नाथ्यो फण ऊपर प्रभु निरत करैया ॥ लालदास प्रभु कह करजोरे चरण कमल पर चितको धरैया ॥ ५ ॥

राग धनाश्री ।

ऊधो मोहिं ब्रज विसरत नाहीं । हंससुताकी सुन्दर कलरव अरु कुञ्जनकी छाहीं ॥ वे सुरभी वे वच्छ दोहनी खारिक दुहावन जाहीं । ग्वाल वाल सव करत कुलाहल नाचत गहि गहि वाहीं ॥ यह मथुरा कंचनकी नगरी मणि मुक्ता जिहि माहीं ।

जबहिं सुरत आवत वा सुखकी जिय उमँगत सुधि नाहीं ॥ अनगिन भाँति करी बहु लीला यशुदानन्द निबाहीं । सूरदास प्रभु रहे मौन गह यह कहि कह पछताहीं ॥ ६ ॥

राग विहाग ।

ऊधो व्रजको गमन करो । मेरे बिना विरहिनी गोपिका तिनके दुःख हरो ॥ योग ज्ञान परबोधि सबनको ज्यों सुख पावें नारि । पूरणब्रह्म अलख परचो करि डारें मोहिं बिसारि ॥ सखा प्रवीन हमारे हो तुम याते थापि महंत । सूर श्याम कारण यहि पठवत ह्वै आवेगो संत ॥ ७ ॥

कवित्त ।

कामरी लकुट मोहिं भूलत न एक पल, घुँघची ना बिसारों जाकी माल उर धारे हैं ॥ जा दिन ते छाकैं छूट गई ग्वालनकी प्रभु, तादिन ते भोजन न पावत सकारे हैं ॥ भनै यदुवंश जो पै नेह नन्दवंशहू सों, वंसी ना विसारों जो पै वंशहू बिसारे हैं ॥ ऊधो व्रज जैयो मेरी लैयो चौगान गेंद, मैयाते कहैयो हम ऋणियां तिहारे हैं ॥ ८ ॥

कौन विधि पावें कर्म बलवान उदयभो, छाछ छछियाकी व्रज भामिनको भातहैं ॥ मुक्तिहू पदारथ सो देचुके बकी को अब, देहैं जननीको कहा याते पछतात हैं ॥ विधि जो बनाई आहि कौन विधि मेटै ताहि ऐसे कर शोचत रहत दिन रात हैं ॥ ऊधो व्रज जैयो मेरी कहो समुझाय मैया जापै ऋण बाढै सो विदेश उठ जात हैं ॥९ ॥

परम पवित्र तुम मित्रहो हमारे ऊधो, अन्तर विथाकी कथा मेरी सुन लीजिये ॥ व्रजकी वे बाला जपैं मेरी जप माला बाढी, विरहकी ज्वाला तामें तन मन छीजिये॥ मेरो विसवास मेरी आस रस रास मेरी मिलवेकी प्यास जास सावधान कीजिये ॥ प्रीतिसों

प्रतीति सों लिखी है रस रीति सों सो, पत्रिका हमारी प्राण प्यारिनको दीजिये ॥ १० ॥

जैसे तुम दीनो तन मन धन प्राण मोहिं, तैसेही समाधि साध ध्यान धरवावोगी ॥अलख अनाथ घट घटको निवास मोहिं, जान अविनाशी जोग जुगत जगावोगी ॥ आसनकै प्राणायाम साधि ध्यान धारणा ते, ब्रह्मको प्रकाश रस रास दरशावोगी ॥ऐसे चित लावोगी तौ सुखमें समावोगी, औ मुक्ति पद पावोगी हमारे पास आवोगी ॥ ११ ॥

भेजो तुम योग हम लीयो धर शीश पर बडोहै परेखो चेरी कौनकी कहावेगी॥ अँसुवन माला लेके जपें नित राम नाम लोचनके खप्पर लेके भिक्षाकोहू धावेंगी ॥ पहरेंगी कन्था गलमें डारेंगी सेली माल मर्घट पै बैठके मशानहू जगावेंगी ॥ ऊधोजी सो एती बात हरिजीसों कहो जाय एती व्रजबाला मृगछाला कहां पावेंगी ॥ १२ ॥

राग देश।

श्यामका सँदेशा ऊधो पाती लैके आयो रे। पाती तो उठाय लीनी छाती सो लगाय लीनी घूँघटकी ओट देके उद्धव समुझायो रे॥ बसती उजाड़ दीनी उजडी बसाय लीनी कुब्जा पटरानी कीनी मोहि न सुहायो रे। सूर श्यामजूके आगे ऐसे जाय कहियो ऊधो जीवत खसम किन भसम रमायो रे ॥ १३ ॥

राग टोड़ी।

पाती सखि मधुवनसे आई। ऊधो हाथ श्याम लिख पठई तुम सुनोहो मोरी माई ॥ अपने अपने गृहसे दौरीं ले पाती उर लाई। नयनन नीर निरख नहिं खण्डित प्रेम बिथा बुझाई ॥

कहा कहूं मूनो यह गोकुल हरि बिन कछु न सुहाई। सूरदास प्रभु कौन चूक ते श्याम सुरति बिसराई ॥ १४ ॥

राग जङ्गला होरी।

साँवरे सों कहियो मोरी ॥ शीश नवाय चरण गह लीजो कर विनती कर जोरी। ऐसी चूक कहा परी मोसों प्रीति पाछली तोरी॥ सुरति ना लीनी बहोरी ॥ भूषण बसन सभी तज दीने खान पान बिसरो री। विभूति रमाय योगिन होय बैठी तेरोही ध्यान धरचो री ॥ अब मैं कैसे करों री ॥ निशि दिन व्याकुल फिरत राधिका विरह व्यथा तनु घेरी। बार कलेजा जार दियो है अब मैं कैसे करों री ॥ बेग चल आवो किशोरी ॥ रोम रोम विष छाय रहो है मधु मेरे वैर परचो री। श्याम तुम्हैं ढूँढ़त कुंजनमें शीशलटा गह झोरी ॥ कहो हरि हो हरि होरी ॥ जा दिन गमन कियो मथुरामें गोपिन सुध बिसरचो री। हमको योग भोग कुब्जाको कहा तकसीर है मोरी ॥ कहा कछु कीनी चोरी ॥ सूरदास प्रभु सो जाय कहियो आय अवधि रही थोरी। प्राणदान दीजो नँदनन्दन गावत कीरति तोरी ॥ प्रीति अब कीजै बहोरी ॥ १५ ॥

सवैया।

जो मथुरा हरि जाय बसे हमरे जिय प्रीति वनी रही सोऊ ॥
ऊधो बड़ो सुख येहू हमें अरु नीके रहें वह मूरति दोऊ॥
हमरेहु नामकी छाप परी अरु अन्तर वीच अहै नहिं कोऊ॥
राधाकृष्ण सभी तो कहैं पर कूबरी कृष्ण कहै नहिं कोऊ॥ १६ ॥

कवित्त।

जाकी कोख जायो ताको कैद करवाय आयो, धाय कर मारी नारी निठुर मुरारिहैं ॥ जेती ब्रजनारी तेती मिल मिल मारी

अन- मिल हूँ तो मारी जो मिलिहैं ताहि मारि हैं ॥ सुनरी ए चेरी तेरी सौंह मैं कहत वे तो, हारि सरस नयन आँसुहू न ढारिहैं ॥ वड़े हैं शिकारी पर इन्हें न सँभारी नारी, मारवेको नवल कन्हैया तलवारि हैं ॥ १७॥

याही कुञ्ज तर वह गुंजत भँवर भीर, याही कुंज तर अव शिर न धुनत हैं ॥ याही रसनाते करी रसकी रसीली वातें, याही रसना ते अव गुणन गनत हैं ॥ आलम विहारी विन हृदय अचेत भये, एहो दई हित कहे कैसेकै वनत हैं ॥ जेही कान्ह नयनके तारे हुते निशि दिन, तेही कान्ह कानन कहानीसी सुनत हैं ॥ ॥ १८ ॥

आयो आयो भयो ऊधो अब व्रज मण्डलमें, रागमें कुराय योग रीतको सुनायो है ॥ झोली झंडा गूदड़ी औ, भस्म मुद्रा काननमें, हाथनमें खप्पर ये स्वाँगलै दिखायो है ॥ संयम नियम ध्यान धारणा दृढ़ासन हो, ब्रह्मको प्रकाश रस रास दरशायो है ॥ कूबरीपै पढ़ आयो वेदको भुलाय आयो, रथ चढ़ आयो अनरथ गढ़ लायो है ॥ १९ ॥

जोगी तजे जग हम जग जोग दोऊ तजे, जोगी लावें छार हम छारहूके मटिहैं ॥ जोगी वेधें कान हम हीये अरु प्रान वेधें, जोगी कहें नाथ हम नाथ नाथ रटि हैं ॥ जोगी कान मुद्रा हम भूषण वनाय राखे, म्हारे शिर केश वहु जोगी शिर जटि हैं ॥ जानके अजान आज ये कहा भये ऊधोजी, जोगीकी जुगत सों वियोगी कहा घटि हैं ॥ २० ॥

श्याम तन श्याम मन श्यामही हमारो धन; आठों याम ऊधो हमें श्यामही सों काम है ॥ श्याम हीये श्याम जीये श्याम विन नाहिं तीये, आंधे कीसी लाकरी अधार श्याम नाम है ॥ श्याम गति श्याम मति श्यामही हैं प्राणपति श्याम सुखदाई सो

भलाई शोभाधाम है ॥ ऊधो तुम भये बौरे पाती लैकै आये दौरे योग कहाँ राखें यहाँ रोम रोम श्याम है ॥ २१ ॥

राग मलार।

जित देखों तित श्याम मई है। श्याम कुंज बन यमुना श्यामा श्याम गगन घन घटा छई है ॥ सब रंगनमें श्याम भरो है लोग कहत यह बात नई है। मैं बौरनके लोगनहीकी श्याम पुतरिया बदल गई है ॥ चन्द्रसार रवि सार श्याम है मृगमद श्याम काम विजई है ॥ नीलकण्ठको कण्ठ श्माम है मनो श्यामता भेलिबई है ॥ श्रुतिको अक्षर श्याम देखियत दीप शिखा पर श्याम तई है। नर देवनकी मोहर श्यामा अलख ब्रह्म छबि श्याम भई है ॥ २२ ॥

राग देश।

कुब्जाने जादू डारा जिन मोह्यो श्याम हमारा री । निशिदिन चलत रहत नहिं राखे इन नयनन जलधारा री ॥ अब यह प्राण कैसे हम राखैं बिछुरे प्राणअधारा री ॥ऊधो तबते कल न परत है जबते श्याम सिधारा री ॥ अबतो मधुबन जाय ले आवो सुन्दर नन्ददुलारा री । सूरदास प्रभु आन मिलावो तन मन धन सब वारा री ॥ २३ ॥

राग नट।

ऊधो धनि तुमरो व्यवहार । धनि वे ठाकुर धनि तुम सेवक धनि धनि परसन हार ॥ आमको काटि बबूर लगावत चन्दन झोंकत भार। शाहको पकर चोरको छोरत चुगलनको अधिकार ॥ हमको योग भोग कुब्जाको ऐसी समझ तिहार। हंस मयूर शुकापिक त्यागत कागनको इतवार ॥ तुम हरि पढे चातुरी

विद्या निपट कपट चटसार । सूर श्याम कैसे निवहैगी अन्ध धुन्ध सरकार ॥ २४ ॥

राग रामकली ।

ऊधो कर्मनकी गति न्यारी । सब नदिया जल भर भर रहियां सागर किस विधि खारी ॥ उज्ज्वल पंख दिये बकुला को कोयल कित गुणकारी । सुन्दर नैन मृगाको दीने वन वन फिरत उजारी ॥ मूरख मूरख राजे कीने पंडित फिरत भिखारी ॥ सूर श्याम मिलवेकी आशा छिन २ बीतत भारी ॥ २५ ॥

राग आसा ।

ऊधो सो मूरत हम देखी । शिव सनकादि सकल मुनि दुर्लभ ब्रह्म इन्द्र नहिं पेखी ॥ खोजत फिरत युगो युग योगी योग युगन्त ते नारी । सिद्ध समाधि स्वप्न नहिं दरशी मोहनी मूरत प्यारी ॥ निगम अगम बिमला यश गावें रहत सदा दरबारी । तिल भर पारवार नहिं पायो कहि कहि नेति पुकारी ॥ नाथ यती अरु योगी जंगम ढूँढ रहे वन माहीं । वेश धरे धरती भ्रमि हारे तिनहूँ दरशी नाहीं ॥ सो हम गृह गृह नाच नचाई तनक तनक दधि देके । रामदास हम रँगी श्याम रँग जाहु योग घर लेके ॥ २६ ॥

राग सारङ्ग ।

बिलग जिन मानो ऊधो प्यारे । यह मथुरा काजरकी कोठी जे आवें ते कारे ॥ कारे भँवर सुफलक सुत कारे कारे रत्न पवारे । यहां ज्ञानकी कौन चलावे सूर श्याम गुण न्यारे ॥ २७ ॥

राग देश ।

ऊधो कारे सबै बुरे । कारे की परतीत न करिये कारे विषके भरे ॥ कारो अंजन देत दृगनमें तीखी सान धरे । नाग नाथ हरि बाहर आये फण फण निरत करे ॥ कोयलके सुत कागा पाले अपनोहि

ज्ञान धरे। पंख लगे जब उड़ने लागे जाय कुटुम्ब रले ॥ सूरश्याम कारो मतवारो कारेसे काले डरे ॥ २८ ॥

उरमें माखनचोर गडे । अब कैसे निकसतहैं ऊधो तिरछे हो जो अडे ॥ यदपि अहीर यशोदा नन्दन तदपि न जात छडे । वहां कहत यदुवंश महाकुल हमहिं न लगत बडे ॥ को वसुदेव देवकी है को जो माने सो बूझे । सूरश्याम सुन्दर बिन देखे और न कोऊ सूझे ॥ २९ ॥

राग वड़हंस ।

होगये श्याम दूजके चन्दा। मधुवन जाय भये मधुबनियां हमपर डारो प्रेमको फन्दा ॥ मीराके प्रभु गिरिधर नागर अब तो नेह परयो कछु मन्दा ॥ ३० ॥

राग जिला ।

चले गये दिलके दामनगीर । जब सुधि आई प्यारे तेरे दरशकी उठत कलेजे पीर ॥ नटवर वेप नयन रतनारे सुन्दर श्याम शरीर । आपन जाय द्वारका छाये खारी नदके तीर ॥ ब्रजगोपिनको प्रेम बिसारयो ऐसे भये बेपीर । वृन्दावन वंशीवट त्याग्यो निर्मल यमुना नार ॥ सूरश्याम ललता तब बोली आखिर जात अहीर ॥ ३१ ॥

राग वसंत ।

ऊधो माधोसों कहियो जाय । जाकी चपल बुद्धि तासों क्या बसाय ॥ उडियो रे भ्रमरा जइयो वा देश मेरे पियासे कहियो सुख सँदेश सखी फागुनके दिन बीते जात मेरी अँगिया तडक गई योवन भार । इक तो सतावे मोहिं ऋतु वसन्त दूसरा सतावे मोहिं नाला कन्त तीजी कोयल बोले अम्बकी डार चौथा पपीहा पिया पिया करे पुकार ॥ इक वन फूल सकल वन फूले जैसे चन्द्र चकोरन हूले

तीया तरन तेज मोपै सह्यो न जाय जब मैं तजूंगी प्राण फिर क्या करोगे आय ॥ ३२ ॥

राग धनाश्री।

हरिके संग मैं क्यों ना गई। हरिसंग जाती कंचन बन आती अब माटीके मोल भई ॥ बरजो न कोई इन दूतिनको जाती घेर मोहिं रोक लई। हरि बिछुरन इक मरन हमारा नई दासी संग प्रीति भई ॥ छल गयो काल बहुरि नाहिं आवें अपने हाथसे मैं बिदा दई। सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको पिछली प्रीति अब नई भई ॥ ३३ ॥

राग बसन्त।

जा जा रे भँवरा दूर दूर । तेरो सो अंग रंग है उनको जिन मेरो चित कियो चूर चूर ॥ जबलग तरुन फूल महकत हैं तब-लग रहत हजूर जूर । सूरश्याम हरि मतलब मधुकर लेत कली-रस घूर घूर ॥ ३४ ॥

राग बिहाग।

मधुकर श्याम हमारे चोर । मन हर लियो माधुरी मूरत निरख नयनकी कोर ॥ पकरेहुते आन उर अन्तर प्रेम प्रीतिके जोर। गये छुडाय तोर सब बन्धन देगये हँसन अकोर ॥ उचक परों जागत निशि बीते तारे गिनत भई भोर । सूरदास प्रभु हरि मन मेरो सर-बसलै गयो नन्दकिशोर ॥ ३५ ॥

राग केदार।

नाहिंन रह्यो मनमें ठौर। नन्दनन्दन अछत कैसे आनिये उर और ॥ चलत चितवत दिवस जागत स्वप्न सोवत रात। हृदयते वह श्याम मूरत छिन न इत उत जात ॥ श्यामगात सरोज

आनन ललित गति मृदु हास सूर ऐसे रूप कारण मरत लोचन प्यास ॥ ३६ ॥

राग सारंग।

बिन गोपाल वैरन भईं कुँजैं। तब ये लता लगत अति शीतल अब भईं विषम ज्वालकी पुंजैं ॥ वृथा वहत यमुना खग बोलत वृथा कमल फूलत अलिगुंजैं। सूरदास प्रभुको मग जोवत अँखियां भईं अरुण ज्यों गुंजैं ॥ ३७ ॥

राग मलार।

निशिदिन बरसत नयन हमारे। सदा रहत पावसऋतु हमपर जबसों श्याम सिधारे ॥ अंजन थिर न रहत अँखियनमें कर कपोल भये कारे। कंचुकि पट सूखत नहिं कबहूँ उर बिच बहत पनारे ॥ आंसू सलिल भये पग थाके बहे जात सित तारे। सूरदास अब डूबत है ब्रज काहे न लेत उबारे ॥ ३८ ॥

हरि परदेश बहुत दिन लाये। कारीघटा देख बादरकी नयन नीर भर आये ॥ पालागों तुम बीर बटाऊ कौन देशते धाये। इतनी पतियाँ मोरी 'दीजो जहाँ श्याम घन छाये ॥ दादुर मोर पपीहा बोलैं सोवत मदन जगाये। सूरदास स्वामीके बिछुरे प्रीतम भये पराये ॥ ३९ ॥

राग देश।

नाथ अनाथनकी सुध लीजे। तुम बिन दीन दुखित हैं गोपी वेगहि दर्शन दीजे ॥ नयनन जल भर आये हरि बिन ऊधोको पतियाँ लिख दीजे। सूरदास प्रभु आस मिलनकी अबकी बेर हरि आवन कीजे ॥ ४० ॥

राग विहाग ।

पिया बिन नागिन कालंडी रात । कबहूँ यामिन होत जुन्हैया डस उलटी ह्वै जात ॥ यन्त्र न फुरत मन्त्र नहिं लागत आयु सिरानी जात । सूर श्याम बिन विकल विरहिनी मुर मुर लहरी खात ॥ ४१ ॥

राग भैरव ।

अँखियाँ हरि दर्शनकी प्यासी । देख्यो चाहत कमल नयनको निशिदिन रहत उदासी ॥ केसर तिलक मोतिनकी माला वृन्दावनके बासी । नेह लगाय त्यागगये तृण सम डार गये गलफाँसी ॥ काहूके मनकी को जानत लोगनके मन हाँसी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरश बिन लेहा करवटकाँसी ॥ ४२ ॥

ठुमरी खम्माच ।

बतादे सखी कौन गली गये श्याम । रैनि दिवस मोहिं तलफत बीती बिसर गये धन धाम ॥ गोकुल ढूँढ़ वृन्दावन ढूंढ्यो मथुरामें होगई शाम ॥ ४३ ॥

राग आसावरी ।

कहीं देखे री घनश्यामा ॥ मोरमुकुट पीतांबर सोहे कुण्डल झलके काना । सांवरी सूरत पर तिलक विराजे तिससों लगे मोरे प्राना ॥ बरसानेसों चली गुजरिया नन्दगामको जाना । आगे केशो धेनु चरावें लगे प्रेमके बाना ॥ सागर सूख कमल मुरझाना हंसा कियो पयाना । भौंरा रहगये प्रीतिके धोखे फेर मिलनको जाना ॥ वृन्दावनकी कुञ्जगलीमें नूपुर रुनझुन लाना । मीराबाईको दरशन दीजो ब्रज तज अनत न जाना ॥ ४४ ॥

कृपाकर दरशन दीजो हरी। नित प्रति ठाढ़ी अपने द्वारे निरखों पंथ खरी॥ छिन छिन अन्तर बाहर आवों शांत न होत घरी। विरहों अगिन रची प्रति रोमन हाहा दग्ध करी॥ तेरी लगन लगी मोरे अन्तर नाहिन जात जरी। दुनीदास प्रभु तुमरे दरश बिन लोटत धरणि परी॥ ४५॥

ऐसी है कोई सखी हमारी मेरे हरिजीको आन मिलावे री। तन मन धन मैं तिसपर वारूं जो इक पल नजरी आवे री॥ कर शृङ्गार मैं सेज बिछावों सो मोहिं कछु न सुहावे री। अहिनिशि या तनु संकट उपजे तलफत रैनि बिहावे री॥ क्या करूं मन कहूं न लागत मैं फिरतीहूं प्रेमप्यासी री। दुनीदास धीरज ना होवे बिन देखे अविनाशी री॥ ४६॥

सुन्दर श्याम देखन दी आशा नयनन बान परी। चार याम मोहिं तलफत बीते रहगइ एक घरी॥ भूषण बसन भवन नहिं भावे बिरह वियोग भरी। दया सखी अब वेग मिलो क्योंना हौं अकुलात खरी॥ ४७॥

ठुमरी।

छतियाँ लेहु लगाय सजन अब मत तरसावो रे। तुम बिन तलफत प्राण हमारे नयनन सों बहे जलकी धारे बाढ़ी है तनु बिरह पीर सूरत दिखलावो रे। हरीचन्द पिया गिरिवरधारी पैयां परूं जाऊं बलिहारी अब जिया नहिं धरत धीर जलदी उठ धावो रे॥ ४८॥

राग खमाच।

सजन मुखड़ा दिखलाजा रे। तेरे दरशनको तरसेहैं नयन बालेपनकी लागी लगन छूटत नाहीं करों कोटि यतन दिखलाजा सूरत मोहन जरा बँसिया बजाजा रे॥ ढूंढ फिरी सारा वन वन में

तऊ न पाय नन्दक नन्दन विरमाय राखे काहू सौतन रसिया माहाराजा रे ॥ लेकर भसम रमाई बदन सब छाँड़ उतारे भूषण वसन तेरे कारण मैं भई योगिन कुलकी तज लाजा रे ॥ जो कछु चूक परी हमपै अब माफ करो नँदके नन्दन श्रीधर पिया आजा जलदीसे मोहिं गरवा लगाजा रे ॥ ४९ ॥

राग विहाग ।

मिलजाना हो प्यारे नन्दकिशोर । देख नजर भर घायल कीनो बांके नयनादी कोर ॥ तेरे दरश बिन फिरौं दिवानी ढूँढती चहुँ ओर । जानकीदास तुसीं देख हर्षां जैसे चन्द चकोर ॥ ५० ॥

राग परज ।

कबलग तरसाये रहिये पलक ॥ नंदनन्दन व्रजराज साँवरो दरशन दीजे तनक तनक । बिन दरशन मोहिं नींद न आवे जबते सुनी मुरलीकी भनक ॥ श्यामसुन्दर बांकी माधुरी मूरत आउ मोरे अँगना छनक छनक । जानकीदास बसो जो दृगनमें कर राखों उर नयन पलक ॥ ५१ ॥

राग खेमटा ।

रे निरमोही छवि दरशायजा । कान चातकी श्याम विरह घन मुरली मधुर सुनायजा ॥ ललित किशोरी नयन चकोरन श्रुति मुख चंद दिखायजा । भयो चहत यह प्राणबटोही रूसे पथिक मनायजा ॥ ५२ ॥

राग वडहंस ।

विरहोंने नोकां झोकां वे लाइयां कौन असांवल रोके ॥ सो गल मेरी झोली पेंदी जो मैं कहिंदी लोके ॥ अजानी गल्ला वे असानूं तिखीयां नोक चभोके ॥ वंज वे राही वंज माही वल खडी

उडीकां वाटां ॥ मैं जातासी इशक सुखाला मुसकल इस दीयाँ घातां ॥ मुख देखन नू फिराँ दिवानी दर दर देंनीहां होके ॥ आंखीं माहीं गलबाहिं तुसाड़े अरज करां मैं खलोके ॥ इशक तुसाड़ेने घायल कीती एह गल आँखीं रोके ॥ सूरत सोहनी दसके मेराली तोई मनमोहके ॥ आपे टुम्ब जगायाई मैंनूं हँसके मुख दिखलाके ॥ जाँ मैं मोही ताँ तू छिप्या विरहोंनूँ मोड़भुवाके ॥ इस विरहों मैं बल बल कुट्ठी हसदाहैं पास खलोके । केदर कूकाँ कूक सुनावाँ लाया नेह मैं आपे ॥ जाँ मैं जग बिच रोशन होइयाँ रहन नदेदे मापे ॥ दुःखाँ सूलाँदा हार मैं पहिदा हत्थीं आप परोके ॥ मैं दरमाँदी दरश तेरे दी मुख दिखला इक बारी ॥ तैं मुख डिठियाँ सभ दुख जाँदे तू तबीब है भारी ॥ मुख देखन नू फिराँ दिवानी तैंड़ी सुहागन होके ॥ बखश रब्बा वे मैं अवगुणहारी तूही बखश अलाही ॥ एकोनजर तुसाड़ी काफी दुःख न रहिंदा काई ॥ बरकत नाल साहिब दे बुल्लिया देईं दीदार खलोके ॥ ५३ ॥

राग पीलू ।

सुरतिया रे लागरही हरि सों । आवन कह गये अजहूँ न आये बीत गैयाँ बरसों ॥ यह तो जोबन चार दिहाड़े आज कल्ह परसों । अँबुआ मौले केसू फूले और फूली है सरसों ॥ ५४ ॥

कवित्त ।

योग देन गयो हौं वियोग वारि वारिधिमें, बूड़त बच्यो हौं नाथ नारी नैन यूँ बहे ॥ गङ्गा हू सहस्र धारा अधिक सुधारा जान, वरषा न होय जो रहोगे गिरिहू गहे ॥ एतो जल भूमि न समाये कहूँ वारिधिमें, सुनी पै न अच्यो जात कान खोल हौं कहे ॥ कवि प्रहलाद जो मिलाप पाल बाँधो नाहिं, वटके वटूक पात साँवले भले रहे ॥ ५५ ॥

तऊन पाय नन्दक नन्दन बिरमाय राखे काहू सौतन रसिया माहाराजा रे ॥ लेकर भसम रमाई बदन सब छाँड़ उतारे भूपण वसन तेरे कारण मैं भई योगिन कुलकी तज लाजा रे ॥ जो कछु चूक परी हमपै अब माफ करो नँदके नन्दन श्रीधर पिया आजा जलदीसे मोहिं गरवा लगाजा रे ॥ ४९ ॥

राग विहाग ।

मिलजाना हो प्यारे नन्दाकिशोर । देख नजर भर घायल कीनो बांके नयनादी कोर ॥ तेरे दरश बिन फिरों दिवानी ढूँढती चहुँ ओर । जानकीदास तुसीं देख हर्षां जैसे चन्द चकोर ॥ ५० ॥

राग परज ।

कबलग तरसाये रहिये पलक ॥ नंदनन्दन ब्रजराज साँवरो दरशन दीजे तनक तनक । बिन दरशन मोहिं नींद न आवे जबते सुनी मुरलीकी भनक ॥ श्यामसुन्दर बांकी माधुरी मूरत आउ मोरे अँगना छनक छनक । जानकीदास वसो जो हगनमें कर राखों उर नयन पलक ॥ ५१ ॥

राग खेमटा ।

रे निरमोही छबि दरशायजा । कान चातकी श्याम विरह घन मुरली मधुर सुनायजा ॥ ललित किशोरी नयन चकोरन द्युति मुख चंद दिखायजा । भयो चहत यह प्राणबटोही रूसे पथिक मनायजा ॥ ५२ ॥

राग वडहंस ।

विरहोंने नोकां झोकां वे लाइयां कौन असांवल रोके ॥ सो गल मेरी झोली पैंदी जो मैं कहिंदी लोके ॥ अजानी गलला वे असानूं तिखीयां नोक चभोके ॥ वंज वे राही वंज माही वल खडी

उडीकां वाटां ॥ मैं जातासी इशक सुखाला मुसकल इस दीयाँ घातां ॥ मुख देखन नू फिराँ दिवानी दर दर दैनीहां होके ॥ आँखीं माहीं गलबाहिं तुसाड़े अरज करां मैं खलोके ॥ इशक तुसाड़ेने घायल कीती एह गल आँखीं रोके ॥ सूरत सोहनी दसके मेराली तोई मनमोहके ॥ आपे टुम्ब जगायाई मैनूँ हँसके मुख दिखलाके ॥ जाँ मैं मोही ताँ तू छिप्या विरहोंनूँ मोड़भुवाके ॥ इस विरहों मैं बल बल कुट्ठी हसदाहैं पास खलोके । कैदर कूकाँ कूक सुनावाँ लाया नेह मैं आपे ॥ जाँ मैं जग बिच रोशन होइयाँ रहन नदेंदे मापे ॥ दुःखाँ सूलाँदा हार मैं पहिंदा हत्थीं आप परोके ॥ मैं दरमाँदी दरश तेरे दी मुख दिखला इक बारी ॥ तैं मुख डिठियाँ सभ दुख जाँदे तू तबीब है भारी ॥ मुख देखन नू फिराँ दिवानी तैंड़ी सुहागन होके ॥ बखश रब्बा वे मैं अवगुणहारी तूही बखश अलाही ॥ एकोनजर तुसाड़ी काफी दुःख न रहिंदा काई ॥ बरकत नाल साहिब दे बुल्लिया देईं दीदार खलोके ॥ ९३ ॥

राग पीलू ।

सुरतिया रे लागरही हरि सों । आवन कह गये अजहूँ न आये बीत गैयाँ बरसों ॥ यह तो जोवन चार दिहाड़े आज कल्ह परसों । अँबुआ मौले केसू फूले और फूली है सरसों ॥ ९४ ॥

कवित्त ।

योग देन गयो हौं वियोग वारि बारिधिमें, बूड़त बच्यो हौं नाथ नारी नैन यूँ बहे ॥ गङ्गा हू सहस्र धारा अधिक सुधारा जान, वरपा न होय जो रहोगे गिरिहू गहे ॥ एतो जल भूमि न समाये कहूँ वारिधिमें, सुनी पै न अच्यो जात कान खोल हौं कहे ॥ कवि प्रहलाद जो मिलाप पाल बाँधो नाहिं, बटके बटूक पात साँथले भले रहे ॥ ९५ ॥

बहुत दिनानमें विदेश होय आये मेरे प्यारे मनमोहन बधाये सब गावो री ॥ नाचो रस राचो नीकी नीकी गति लै लै कर नीकी नीकी भाँतिन सों भावन बतावो री ॥ ताल कठताल औ तमूरा मुरचंगन सों, घुँघुरू बजायके मृदंग सों मिलावो री ॥ नन्दके कुमार रिझवारको रिझावो आज सकल समाज कर रंग सरसावो री ॥ ९६ ॥

विनयके पद ।

दोहा ।

कदम कुंज है हों कबै, श्रीवृंदावन माँह । ललित किशोरी लाड़िले, विहरेंगे तिहिं छाँह ॥ कब हों सेवा कुंजमें, ह्वैहों श्याम तमाल । लतिका कर गहि विरमि हैं, ललित लड़ैतीलाल ॥ सुमन वाटिका विपिनमें, ह्वै हों कब हौं फूल । कोमल कर दोउ भावते, धर हैं बीन दुकूल ॥ कालीदह कब कूलकी, ह्वै हौं त्रिविध समीर । युगुल अंग अँग लागि हों, उड़ि हैं नूतन चीर ॥ मिलि है कब अँग छार ह्वै, श्रीवन बीथिन धूर । परि है पदपंकज युगुल, मेरी जीवन मूर ॥ कब गहबरकी गलिनमें, फिरि हौं होय चकोर । युगुल चन्द मुख निरखि हों, नागरि नवल किशोर ॥ कब कालिन्दी कूलकी, ह्वै हों तरुवर डार । ललितकिशोरी लाड़िले, झूलें झूला डार ॥ श्यामा पद दृढ़ गह सखी, मिलि हैं निश्चय श्याम । ना माने दृग देखले, श्यामा पद बिच श्याम ॥ ९७ ॥

कवित्त ।

दीनबन्धु दीनानाथ व्रजनाथ रमानाथ, राधानाथ मो अनाथ की सहाय कीजिये । तात मात भ्रात कुलदेव गुरुदेव स्वामी, नातो तुमहीसों मो विनय सुन लीजिये ॥ रीझिये निहाल देर कीजिये न झीनी कहूँ, दीन जान दास मोहिं अपनाय लीजिये । की-

जिये कृपा कृपाल साँवरे विहारी लाल, मेट दुख जाल बास वृन्दावन दीजिये ॥

गिरि कीजे गोधन मयूर नव कुंजनको, पशु कीजे महाराज नन्दके बगर को ॥ नर कीजे तौन जौन राधे राधे नाम रटै तट कीजै वर कूल कालिन्दी कगर को ॥ इतनेपै जोई कछु कीजिये कुँवर कान्ह, राखिये न आन फेर हठीके झगर को ॥ गोपी पद पंकज पराग कीजै महाराज तृण कीजै रावरेई गोकुल नगर को ॥५८॥

सवैया।

मानुषहोहुँ वहीं रसखानि बसौं मिलि गोकुल गाँवके ग्वारन। जो पशु होउँ कहा वश मेरो चरों पुनि नन्दकि धेनु मँझारन॥ पाहन होहुँ वही गिरिको जो कियो ब्रज छत्र पुरन्दर धारन। जो खग होउँ बसेरो करौं वहि कूल कलिंदी कदम्ब कि डारन ५९॥

राग चैतीगौरी।

यमुना पुलिन कुञ्ज गहवरकी कोकिलह्वै द्रुम कूक मचाऊं। पदपंकज प्रिय लाल मधुपह्वै मधुरे मधुरे गुंज सुनाऊं ॥ कूकरह्वै बन बीथिन डोलों बचे सीथ रसिकनके पाऊं। ललितकिशोरी आश यही मम ब्रज रत तज छिन अनत न जाऊं॥ ६० ॥

राग देश।

अब विलंब जिन करो लाडिली कृपादृष्टि टुक हेरो। यमुना पुलिन गलिन गहवरकी विचरूं सांझ सवेरो॥ निशिदिन निरखौं युगल माधुरी रसिकनते भट भेरो। ललित किशोरी तन मन अकुलत श्रीवन चहत बसेरो॥ ६१॥

राग यमन।

प्यारीजी मोतनहूं टुक हेरो। श्रीवन द्रुमन लतनके नीचे रसमय चहूं गान गुण तेरो॥ आन न जानों अन्य न मानों तूही कृपापद

साधन मेरो । ललित माधुरी आश पुरावो अब जिन करो हहा अवसेरो ॥ ६२ ॥

कवित्त।

एक रज रेणुका पै चिंतामणि वारि डारों, वारि डारों विश्व सेवा कुञ्जके विहार पै ॥ लतनके पतन पै कोटि कल्प वारिडारों रंभाहूको वारि डारों गोपिनके द्वारपै॥व्रजूकी पनिहारन पै शची रची वारी डारों, बैकुण्ठहू वारी डारों कालिंदीकी धार पै । कहै अभैराम एक राधाजूको जानतहों देवनको वारी डारों नन्दकेकुमार पै॥६३॥

राग झिंझोटी ।

जो कोउ वृंदावन रस चाखै । भवन चतुर्दश तिहूँ लोक लौं सुप नेहुँ नहिं अभिलाखै ॥ ललित किशोरी परे कोनमें श्याम राधिका भाखै । युगल रूप विन पलक न खोलै लोभ दिखावो लाखै ॥६४॥

राग धनाश्री ।

हमारे श्रीवृंदावन उर ओर । माया काल तहां नहिं व्यापै जहां रसिक शिरमौर ॥ छूट जात सत असत वासना मनकी दौरा दौर । भगवत रसिक वतायो श्रीगुरु अमल अलौकिक ठौर ॥ ६५ ॥

ऐसे वसिये व्रजकी वीथन । साधुनके पनवारे चुन चुन उदर जो भरिये सीथन ॥ पैंड़के सब वृक्ष विराजत छाया परम पुनीतन । कुंज कुंज प्रति लोट लोट कर रज लागे रँगरीतन ॥ निशिदिन निरख यशोदा नन्दन अरु यमुना जल पीतन । परशत सूर होत तनु पावन दर्शन करत अतीतन ॥ ६६ ॥

राग विलावल ।

कहा करूँ वैकुण्ठहिं जाय । जहँ नहिं नन्द जहां न यशोदा जहाँ न गोपी ग्वाल न गाय ॥ जहां न जल यमुनाको निर्मल

और नहीं कदमन की छाय। परमानन्द प्रभु चतुर ग्वालिनी व्रज रज तज मेरी जाय बलाय ॥ ६७ ॥

राग गौरी।

व्रजरज मोहनी हम जानी। मोहन कुंज मोहन श्रीवन्दावन मोहन यमुना पानी ॥ मोहनी नारि सकल गोकुलकी बोलत अम्मृत वानी। श्रीभटके प्रभु मोहन नागर मोहनी राधा रानी ॥ ६८ ॥

राग शहानो।

धनि धनि श्रीवृंदावन धाम। जाकी महिमा वेद बखानत सब बिधि पूरणकाम ॥ आश करत हैं जाकी रजकी ब्रह्मादिक सुर ग्राम। लाड़िली लाल जहां नित विहरत रति पति छबि अभि-राम ॥ रसिकन को जीवन धन कहियत मंगल आठों याम। नारायण विन कृपा युगल वर छिन न मिलै विश्राम ॥ ६९ ॥

राग दादरा।

ऐसो कब करिहै मन मेरो। कर करवा गञ्जनके हरवा कुंजन माहिं बसेरो ॥ व्रजवासिनके टूक जूँठ अरु घर घर छाँछ महेरो। भूख लगे तब मांग खाय हों गिनों न सांझ सबेरो ॥ इतनी आश व्यासकी पुजिये मेरो गाँव न खेरो ॥ ७० ॥

राग परज।

भजो मन वृन्दावन सुखदाई। अवनी कनक सुहाई ॥ अवनी कनक सुरङ्ग चित्र छबि कालिंदी मणि कूलें। लतन रहे भर पाय सखी यह कंचनके द्रुम मूलें ॥ जलज थलज रहें विकस जहां तहँ वरण वरण छवि छाई। सहज रैन सुखदैन विराजत वृन्दावन सुख दाई ॥ भजो० ॥ राजत नवल निकुंजहिं लालन निरख होत

सुख पुंजहिं । निरख होत सुख पुंज कमल दल रचि है सुन्दर सैन। बहत समीर त्रिविध गुण लाने आकर्षत मन मैन ॥ डोलत केक कीर पिक बोलत जित तित मधुपन गुंजहिं । रत्न खचिर फूलन सों फूली राजत नवल निकुंजहिं ॥ भजो० ॥ करत निकुंज बिहार । सखियन प्राण अधार रसिक बर नवल किशोर किशोरी । हँस मुर चित चोरत प्यारेको सभ अँग नागर गौरी ॥ अति विलास नव नव रुचि उपजत वल किंकिणि झंकार । अति प्रवीन रति कोक कलनमें करत निकुंज विहार ॥ भजो० ॥ निर्ख निर्ख बल जाई । श्रम जल कण झलकाई ॥ श्रम जल कण रहे झलक वदन विच कहुँ कहुँ पीक जु सोहै । हँस मुर चित चोरत प्यारेको ऐसी को जु न मोहै ॥ चितहिं चिह्न रजनीके सजनी नयननमें मुसकाई । जै श्रीहित ध्रुव सखी सरस रँग भीनी निर्ख निर्ख बल जाई ॥ भजो० ॥ ७१ ॥

राग विहार ।

वृन्दावन विपिन सघन वंशीवट पुलिन रमन निधि वन कोकिलावन मोहन मन भावै । सेवा कुंज सुखको पुंज जहां राजत पिया प्यारी ललितादिक संग लिये उमँग उमँग गावै ॥ यमुना जल अति गँभीर कदमनकी जहां भीर ललित लता कुसुम भार अपने वरसावै । हंस मोर कोकिला पपीहा जहाँ शब्द करैं पशु पक्षी दास कान्हर राधा कृष्ण राधा कृष्ण राधा कृष्णगावै ॥ ७२ ॥

राग धनाश्री ।

नमो नमो वृन्दावनचंद । आदि अनन्त अनादि एक रस पिय-प्यारी विहरत स्वच्छन्द ॥ सत चित आनँद रूप घन खग मृग द्रुम बेली और वृन्द । भगवत रसिक निरन्तर सेवत मधुप भये पीवत मकरन्द ॥ ७३ ॥

कवित्त।

नन्दके आनन्दहो मुकुन्द पर्मानंद हरि, काटो जमफन्द मोहिं भयसों बचाइये। नहीं जानो ज्ञान ध्यान योग यज्ञ नाहिं कियो, भरचो मान अहंकार कैसे तोहिं ध्याइये॥ सुनो कृष्ण हरा जैसी करी सो करी दयालु, तैसे दीन जान मेरी पीरको मिटाइये। सुखके निधान दान दीजै प्रेम भक्ति हू को, चरणन चित्त मयारामको लगाइये॥ ७४॥

जानके पतित तारो आनके विरद धारो, काढ़ो भुजा तानके कहाँसो देर डारी है॥ तारचो है सुदामा यार उबारयोहै प्रहलाद, द्रौपदीकी लाज राखी सभा देखै सारी है॥ गज नेक ध्यायो प्रभु छोड धायो गरुडहू, ब्रजको बचायो ताते नाम गिरिधारी है॥ दास तो पुकारे प्रभु काटि कष्ट कोटि भारे, अरजी हमारी आगे मरजी तिहारी है॥ ७५॥

आप सब नेरे और दूरकी पछानतहो, छिपी नाहिं कूरकी रु साहिब शऊर की॥ निकुता निवाजी कर राजी छिन ही में होत; कर इतराजी नाहिं सुनिके कसूरकी। तुमसो न दूसरो दयालु श्रीविहारी लाल, जाहि लाज आवे निज जनके जरूर की॥ गरजी विचारे को तो अरजी किये ही बनै, माननी न माननी सो मरजी हुजूरकी॥ ७६॥

दीनानाथ दयासिंधु आरत हरण भारी द्रौपदी उबारी तैसे मोहूको उबार ल्यो। गणिका उबारी गज संकट निवारी, प्रहलाद हितकारी दुख दारुण निवार ल्यो॥ गौतमकी तिय तारी चरणन रज धारी, गऊ हितकारी भवसागर उधार ल्यो। टेरै प्रभु नन्दलाल दीनबंधु भक्तपाल, करुणा कृपाल लाल विरद सम्हार ल्यो॥ ७७॥

मैं तो हूं पतित आप पावन पतित नाथ, पावन पतित हो तो पातक हरोइंगे ॥ मैं तो महादीन आप दीनबंधु दीनानाथ, दीनबंधु हो तो दया जीयमें धरोइंगे ॥ मैं तो हूं गरीब आप तारक गरीबन के तारक गरीब हो तो विरद वरोइंगे ॥ मेरी करणीपै कछु सुकर न काज कान्ह, करुणानिधान हो तो करुणा करोइंगे ॥ ७८ ॥

श्याम घन तन पर बिज्जुसे दशन पर, माधुरी हँसन पर खिलत खगा रहै ॥ खौर बारे भाल पर लोचन विशाल पर, उर वनमाल पर जुगत जगी रहै ॥ जंघ युग जानु पर मंजु मुखान पर, श्रीपति सुजान मति प्रेम सों पगीरहै ॥ नूपुर नगन पर कञ्चसे पगन पर, आनन्द मगन मेरी लगन लगीरहै ॥ ७९ ॥

जौन हाथ वामन हो बलि द्वारे दान मांग्यो, जौन हाथ कूबरी मिलाई गह गात सों ॥ जौन हाथ प्रहलाद तात सों उवार लीनो, जौन हाथ कंस मार्यो बलभद्र साथ सों ॥ जौन हाथ गोपिनको गिरिवर ओट कीनो, जौन हाथ कालीनाग नाथ्यो परजात सों ॥ हों तो कहूं वार वार सुनो नाथ एक वार, वही हाथ गहो मोको हाथीवाले हाथ सों ॥ ८० ॥

सवैया ।

दीनदयालु सुने जब ते तबते, मनमें कछु ऐसी वसी है ॥
तेरो कहायके जाऊँ कहां, तुमरे हितकी पट खैंचि कसी है ॥
तेरो ही आसरो एक मलूक, नहीं प्रभु सों कोऊ दूजो यसी है ॥
एहो मुरार पुकार कहों अब, मेरी हँसी नहिं तेरी हँसी है ८१ ॥

कवित्त ।

मोरके मुकुट वारो धरे वेश नटवारो, छुटी लोल लट वारो जगत उज्यारो है ॥ सांवरे वरन वारो मुरली धरन वारो, संकट हरन वारो नन्दजूको प्यारो है ॥ दानव दलनवारो छविको छलन वारो;

मन्दसी चलन वारो पोखी उर धारो है ॥ कञ्जसे चखन वारो भृगु लता लख वारा, मोरपच्छ वारो सो हमारो रखवारो है ॥ ८२ ॥

देवहग तारे तोहिं गावैं वेद चारे तारे, पतित अनेक जेते नभमें न तारे हैं॥ रतनारे नैननते नेकहू निहारे नाथ कोटि कोटि दीननके दारिद निदारे हैं ॥ श्रीपति पुकारे कहै नीरद वरन वारे, राधाजूके प्राणप्यारे यशुदाके बारे हैं ॥ नन्दके दुलारे धराधरके धरन हारे, मोरपच्छवारे सो हमारे रखवारेहैं ॥ ८३ ॥

राग जंगला।

श्याम सुन्दर मनमोहनी मूरत सुन्दर रूप उजारी रे। चरण कमल पिंडुरी जंघन पर सोहत कटि लचकारी रे॥ नाभि गँभीर हृदय अतिकोमल कृपासिंधु बनवारी रे। भुज आजानु करन बिच बंसी लकुट लिये गिरिधारी रे ॥ ग्रीव चिबुक मृदु हँसन मनोहर हौं लखि छबि बलिहारी रे। नासा नयन भौंह अति बांकी जिन मोही ब्रजनारी रे॥ श्रवण कपोलन पर छूटी वे नागिन लट बलहारी रे। भाल बिशाल पेच शिर जूटा मुकुट झुलन सुखकारी रे॥ युगल किशोर मोरपख धारी अब क्या सुरत बिसारी रे॥ ८४ ॥

राग भैरवी।

मेरी तो विहारी जी प्यारे तोहिं लाज । माया फन्द गलेमें डारचो जग भर्मायो बे काज ॥ भवसागरके पार जानको पायो नाम जहाज ।बलिहारीका बेड़ा पार उतारो अपनो जान ब्रजराज ॥ ८५ ॥

राग बिलावल।

माधोजू जो जन ते बिगरै। सुन कृपालु करुणामय कबहूं प्रभु नहिं चित्त धरै॥ ज्यों शिशु जननि जठर अंतरगत शत अपराध

करै। तऊ तनय तनु तोष पोप चित विहँसत अंक भरै॥ यदपि विटप जर हतन हेत कर कर कुठार पकरै । तदपि स्वभाव सुशील सुशीतल रिपु तनु ताप हरै ॥ कारण करन अनन्त अजित कह किहिविधि चरण परै । यह कलिकाल चलत नाहिं मोपै सूर शरण उबरै॥ ८६ ॥

राग भैरवी।

जे जन शरण गये ते तारे। दीनदयालु प्रगट पुरुषोत्तम सुनिये नन्ददुलारे ॥ माला कण्ठ तिलक माथे दे शंख चक्र वपु धारे। जितने रवि छायाके कनका तितने दोष हमारे ॥ तुम्हरे दरश प्रताप तेज ते तत्क्षण ते सब टारे। मानिकचन्द प्रभुके गुण ऐसे महापतित निस्तारे ॥ ८७ ॥

राग वरवा।

शरण गये प्रभु को न उबारे। जित जित भीर परी भक्तनको चक्र सुदर्शन तहाँ सम्हारे ॥ महाप्रसाद बैठ अम्बरीपहिं दुर्वासाको कोप निवारे। ग्राह ग्रसत गजको जल डूबत नाम लेत वाको दुख टारे ॥ सूर श्याम बिन करै और को रंगभूमिमें कंस पछारे ॥८८ ॥

राग बिलावल।

अबके माधोमोहिं उधार। मगन होत भवसिन्धुमें कृपासिन्धु मुरार ॥ नीर अति गंभीर माया मोह लहर तरंग । लिये जात अगाधको वर गहै ग्राह अनंग ॥ मीन इन्द्रिय अतिहिं काटत पेट अघ शिर भार। भूमि पाइ न जात जिताकित उरझ मोह सिवार ॥ क्रोध दंभ भयानक तृष्णा पवन अति झकझोर। नाहिं चितवत देत सुत त्रिय नाम नौका ओर ॥ पर्यो बीच विहाल विहल सुनहु करुणामूल । श्याम भुज गह काढ़ि डारहु सूर जन ब्रजकूल ॥ ८९ ॥

राग धनाश्री।

कबहूँ नाहिंन गहर कियो। सदा स्वभाव सुलभ सुमिरण वश भक्तन अभय दियो॥ गाय गोप गोपी जन कारण गिरि कर कमल लियो।अघ आरिष्ट केशी काली मथ दावा अनल पियो॥ कंसवंश वध जरासन्ध हति गुरुसुत आन दियो। कर्षत सभा द्रुपदतनयाको अंबर आन छियो॥ काकी शरण जाउँ यदुनन्दन नाहिंन और वियो। सूर श्याम सर्वज्ञ कृपानिधि करुणा मृदुल हियो॥ ९०॥

अब हौं नाच्यो बहुत गुपाल। काम क्रोध को पहर चोलना कण्ठ विषयकी माल॥ महा मोहके नूपुर बाजत निन्दा शब्द रसाल। तृष्णा नाद करत घट भीतर नाना विधिकी ताल॥ मायाको कटि फेंटा बाँध्यो लोभ तिलक दियो भाल। कोटिक कला नाच दिखराई जल थल सुध नहिं काल॥ सूरदासकी सबी अविद्या दूर करो नँदलाल॥ ९१॥

राग कल्याण।

तुम्हारे आगे हौं बहुत नच्यो। सुनिये दानिदयालु देव मणि बहुबड़ रूप रच्यो॥ कियो स्वाँग जल हूँ थलहूँ में एकौ तौ न बच्यो। शोध सबै गुण गूढ़ दिखाये अन्तर हो जु सच्यो॥ रीझत नाहिं गोविंद गुसाईं कह कछु जाय जच्यो। इतनी तो कहो सूर पुरोदे काहे मरत पच्यो॥ ९२॥

राग टोडी।

दीनन दुख हरन देव सन्तन हितकारी। अजामील गीध व्याध इनमें कहो कौन साध पक्षीहूँ पद पढ़ात गणिका सी तारी॥ ध्रुवके शिर छत्र देत प्रहलादको उवार लेत भक्त हेत बाँध्यो सत लङ्कपुरी जारी। तन्दुल देत रीझ जात साग पातसों अघात

गिनत नाहीं जूँठे फल खाटे मीठे खारी ॥ गजको जब ग्राह ग्रस्यो दुःशासन चीर खस्यो सभा बीच कृष्ण कृष्ण द्रौपदी पुकारी । इतने हरि आयगये वचनन आरूढ भये सूरदास द्वारे ठाढो आँधरो भिखारी ॥ ९३ ॥

मोसम कौन कुटिल खल कामी । जिन तनु दियो ताहि बिसरायो ऐसो निमक हरामी ॥ भर भर उदर विषयको धावों जैसे शूकर ग्रामी । हरिजन छांड़ हरी विमुखनकी निशिदिन करत गुलामी ॥ पापी कौन बड़ो है मोते सब पतितनमें नामी । सूर पतितको ठौर कहाँ है सुनिये श्रीपति स्वामी ॥ ९४ ॥

राग झिंझोटी ।

मोसम कौन अधम जग माहीं । भ्रमत रहत नित विषय वासना तज निधि वन द्रुम बेलिन छाहीं ॥ चिंतन करत न ललित किशोरी युगल लाल दीने गरबाहीं । निरतत नवल नागरी ललना लालन करत मुकुट परछाहीं ॥ ९५ ॥

राग धनाश्री ।

मेरी सुध लीजो श्रीनन्दकुमार । अधम उधारन नाम तिहारो मैं अधमन सरदार ॥ अजामील गज गणिका तारी दुर्जन और अपार । शोभन जनकी तारन विरियां लाई एती वार ॥ ९६ ॥

मेरी सुध लीजो श्रीव्रजराज । और नहीं जगमें कोउ मेरो तुमहिं सुधारन काज॥ गणिका गीध अजामिल तारे औ शवरी गजराज । सूर पतित तुम पतित उधारन वांह गहेकी लाज ॥ ९७ ॥

राग विलावल ।

तुम गुपाल मोसों बहुत करी । नरदेही सुमिरणको दीनी मो पापीसे कछु न सरी ॥ गर्भवास अतित्रास अधोमुख ताहि न मेरी सुधि बिसरी । पावक जठर जरन नहिं दीनों कंचन सी मेरी देह

करी ॥ जगमें जन्मि पाप बहु कीने आदि अंतलौं सब बिगरी । सूर पतित तुम पतितउधारन अपने विरद कि लाज धरी ॥ ९८ ॥

राग पीलू ।

टुक नजर मिहर दी देख असांवल सांवरो गिरिधारी । चरण सपरश अहल्या तारी द्रुपदसुताकी लज्जा राखी पाप करंती गणिका तारी सोच कहाँ मेरी बारी ॥ भक्त सुदामाके दरिद्र विदारे जल डूबत गजराज उबारे अजामीलसे पापी तारे हमरी कहा विचारी । सकल धरणिको भार उतारे लंकापति रावण तैं मारे हरणाकुश नख उदर विदारे महादुष्ट बलकारी ॥ भीर समय प्रभु लेत बचाई वाहन तज पाँयन उठ धाई निज भक्तनके सदा सहाई सुध लेहु वेग हमारी । नाम सुजानराय तेरो कहिये निशिदिन चरण शरण तेरी रहिये मनकी व्यथा सब तुमहिं सुनैये सूरदास बलिहारी ॥ ९९ ॥

राग देश सोरठ ।

हमारे प्रभु अवगुण चित न धरो ॥ समदरशी है नाम तिहारो चाहे तो पार करो ॥ इक नदिया इक नाल कहावत मैलो नीर भरो । जब मिल करके एक वर्ण भये सुरसरि नाम परो ॥ इक लोहा पूजा में राख्यो इक गृह वधिक परो । पारस गुण अवगुण नहिं चितवे कंचन करत खरो ॥ यह माया भ्रमजाल निवारो सूरदास सगरो । अबकी वेर मोहिं पार उतारो नहिं प्रण जात टरो ॥ १०० ॥

राग सोरठ ।

म्हाने पार उतारो जी थाने निज भक्तनकी आन । हमरे अवगुण नेक न चितवो अपनो ही कर जान ॥ काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह वश भूल्यो पद निर्वान । अव तो शरण गही चरणनकी मत दीजो मोहिं जान ॥ लाख चुरासी भरमत भरमत नेक न परी पछान । भवसागरमें वह्यो जात हौं रखिये श्याम

सुजान ॥ हौं तो कुटिल अधम अपराधी नहिं सुमिरचो तेरो नाम । नरसीके प्रभु अधम उधारन गावत वेद पुरान ॥ १०१ ॥

राग बड़हंस ।

कहोजी कैसे तारोगे मेरो औगुण भरचो शरीर ॥ रंका तारचो बंका तारचो तारचो सदन कसाई । सुआ पढ़ावत गणिका तारी तारी मीराबाई ॥ धन्ने भक्तका खेत जमाया नामे छान छवाई । सैन भक्तकी विपति निवारी आप भये प्रभु नाई ॥ वृन्दावनकी कुंज गलिनमें लगी श्यामसे डोर । अबकी बेर उबारो प्यारे लीनी कबीराने ओट ॥ १०२ ॥

राग देश सोरठ ।

सुन लीजै विनती मोरी । मैं शरण गही प्रभु तोरी ॥ तैं पतित अनेक उधारे । भवसागर पार उतारे ॥ मैं सबका नाम न जानूं । मैं कोई कोई भक्त बखानूं ॥ अम्बरीप सुदामा नामा । पहुँचाये हैं निज धामा ॥ ध्रुव पांच बरसका बाला । तैं दर्श दियो नँदलाला ॥ धन्नेका खेत जमाया । कबीर घर बैल ल्याया ॥ शबरीके तैं फल खाये । सब काज किये मन भाये ॥ सदनाते सैना नाई । तैं बहुत करी अपनाई ॥ कर्माकी खिचड़ी खाई । तैं गणिका पार लगाई ॥ मीरा तुम्हरे रँगराती । यह जानत हौं सब भाँती ॥ चरणदास तेरो यश गावे । फिर जन्म मरण नहिं पावे ॥ १०३ ॥

राग कान्हरो ।

ऐसी कब करिहो गोपाल । मनसा नाथ मनोरथ दाता हो प्रभु दीनदयाल ॥ चित चरणन जु निरन्तर अनुरत रसना चारित रसाल । लोचन सजल प्रेम पुलकित तन कर कञ्चन दल माल ॥ ऐसी रहत लिखत छिन छिन यम आपनो भायो भाल । सूर सुयश रागी न डरत मन सुन यातना कराल ॥ १०४ ॥

राग झंझोटी ।

राधा रमण चरण जो पाऊँ । शुक समान दृढ कर गह राखौं नलिनी सम दुलराऊं ॥ सौरभ युत मकरन्द कमल वर शीतल हीय लगाऊं । विरह जनित दृग तपन किशोरी सहजै निरख नशाऊं ॥ १०५ ॥

राग सारंग ।

आनंद कन्द सुख निधान दीनानाथ भक्तपाल शोभासिंधु राखो मान अनेक विघन टारियेजी । जहां जहां परी भीर तहां तहाँ धरी धीर गरुड़ छोड़ वेग धाये ऐसी कृपा धारिये जी ॥ द्रौपदीको दिये चीर काटत प्रभु जनकी पीर भक्त हेतु रूप धार अपनो जन तारिये जी । कहत है महीधर दास चाहत प्रभु पद निवास जन्म जन्म शरण तेरी भवसिंधुसे उबारिये जी ॥ १०६ ॥

राग प्रभाती ।

नामकी पैज राखो धनी । संकट काट निवाजे केते गिनत न जाय गिनी ॥ खंभाते प्रह्लाद छुड़ाये द्रौपदीके पुनि चीर वढ़ाये गजके फंदन काट निकाले सुनतहि टेर कनी । नामदेवकी गऊ जिवाई धन्नेके दूध पिया जाई सुदामाके मन्दिर ऊंचे साजे सुरत सों सुरत बनी ॥ कबीर राख गैयरसे लीने सूर भक्तको दर्शन दीने पीपा बीच सभा कर सांचा दियो मिलाय जनी। जयदेवकी अष्ट-पदी विचारी मीराबाईकी जहर निवारी रामदासको कनक जनेऊ दीना ऐसे दयालु धनी ॥ भीलनीते लै वनफल खाये त्रिलोचन के व्रतिया हो धाये अंबरीष भक्तको वरत रखायो चक्रकी फेर अनीं । कर्माबाईकी खिचड़ी लीनी सैनेकी जाय प्रतिज्ञा दीनी धुरू राख्यो अटल द्वारे लागी प्रीति घनी ॥ सुना पढ़ावत

गनिका तारी अहल्या चरणन लाय उधारी नानक वेदी कियो हजूरी राख्यो लायतनी। दुनीदास प्रभु सन्तसहाई असुर सँहारत वेगहि आई ताको नाम हृदयमें राखो सुमिरो एक मनी॥ १०७॥

राग भूपाली जङ्गला।

गजकी वाणी सुनके सिंहासन तजि उठ धाये महाराज। श्री श्री श्री चकृत भई सुनके खगपति पार न पाये महाराज॥ कटिको पीतांबर कहूं गिरोह तनुकी सुध बिसराये महाराज॥ ग्राह मार गजराज उबाऱ्यो सुरन सुमन झर लाये महाराज॥ रत्न हरी शरण तिहारी नाम तिहारो नित गाये महाराज॥ १०८॥

राग विहाग।

दीन भयो गजराज हीन भयो बलहूंते टूट गयो मान टेऱ्यो हरी हरी करके॥ पौढ़े प्रभु रमा संग पीत पट राते रंग सोये उठ धाये नाथ नयन आये भरके॥ आधीरात धाये नाथ चक्रसुदर्शन लिये हाथ तोड़ दीने तंदुवाको जरी जरी करके॥ तुलसीदास त्रिलोकी नाथ भक्तनके सदा साथ गरुड़ छोड़ धाये नाथ करी करी करके॥ १०९॥

चौपाई छंद।

द्रौपदि धाऱ्यो ध्यान जबहिं मन आतुर होई। तुम बिन श्रीनन्द लाल और मेरो नहिं कोई॥ बूड़तहों दुखसिंधुमें, शरण द्वारका-नाथ। त्राहि त्राहि सुध लीजिये, अब मैं भई अनाथ॥ हाय हाय यदुनाथ हाय गोवर्द्धन धारी। हाय हाय बलबीर हाय श्रीकुंजवि-हारी॥ हाय हाय राधारमण, हा श्रीकृष्ण मुरार। हाय हाय रक्षा करो, श्रीव्रजराज दुलार॥ शरन शरन सुखधाम शरन दुख भंजन स्वामी। शरन शरन रक्षपाल शरन प्रभु अन्तरयामी॥ शरन परी

मैं हारके, शरणागत प्रतिपाल । लज्जा राखो दासकी, दीनानाथ दयाल ॥ भीर परी प्रह्लाद रूप नरसिंह बनायो । गजने करी पुकार पाँय प्यादे उठ धायो ॥ दुर्वासा अम्बरीप हित, जिन जन करी सहाय । कौन अवज्ञा दासकी, विलम करी यदुराय ॥ युग युग भक्त सहाय पैज तिनकी तुम राखी । सबही कहत पुराण वेद स्मृति मुनि साखी ॥ मैं तो दासी चरणकी, जानत सब संसार । विरद आपनो जानके, लज्जा राख मुरार ॥ अन्तर्यामी श्याम बेर इतनी क्यों लाई । कापै करूँ पुकार ताहि तुम देहु बताई ॥ तुम माता तुम पिता तुम, बांधव सुहृद सुबीर । तुम बिन मेरो कौन है, जाहि सुनाऊँ पीर ॥ नगर द्वारका माहिं सार खेलत गिरिधारी । जानी श्री बलबीर दीन होय-दासि पुकारी ॥ नयन रहे जल पूरके, पासा डार अनन्त । पचहारी सेना सकल, चीर न आयो अन्त ॥ नग्न न होई द्रौपदी, रक्षा करी मुरार। पुष्प देव वर्षा करी, जय जय शब्द उचार ॥ ११० ॥

राग धनाश्री ।

लज्जा मोरी राखो श्याम हरी । कीनी कठिन दुशासन मोसे गह केशों पकरी ॥ आगे सभा दुष्ट दुर्योधन चाहत नग्न करी । पाँचों पाण्डव सब बल हारे तिनसों कछु न सरी ॥ भीपम द्रोण विदुर भए विस्मय तिन सब मौन धरी । अब नहिं मात पिता सुत बांधव एक टेक तुम्हरी ॥ वसन प्रवाह किये करुणानिधि सेना हार परी । सूर श्याम जब सिंह शरणलई स्यालोंको काहि डरी ॥ १११ ॥

राग भैरवी ।

पति राखो मोरी श्याम विहारी । बनवारी गिरिधारी श्रीकृष्ण मुरारी ॥ शूर समूह भूप सब बैठे भीपम द्रोण कर्ण व्रतधारी ।

कहि न सकै कोउ बात परस्पर इन पतितन मेरी अपत विचारी॥ बल विहीन पाण्डव सुत डोलैं भीम गदा करसों महि डारी। रही न पैज प्रवल पारथकी जबसे धरणि धर्मसुत हारी ॥ लाक्षागृहते जरत उवारचो नाथ तुम्हें छोड़ कहिं हौं पुकारी । अबलग नाथ नाहिं कछु बिगरचो उघरत माथ अनाथ पुकारी ॥ छूटत लाज दास दासिनकी वहुरि आय का करिहो मुरारी । सूरके स्वामी वेगि दरश देव फिरि पछितैहौ देख उघारी ॥ ११२ ॥

भजन ।

जब पट गह्यो दुशासन करसों । इत उत चितै सकुच कमठी जिमि करत पुकार राधिकावरसों ॥ हो यदुनाथ अनाथ होतहौं कुल परिवार सभापति घरसों। बूड़त वेग बाँह गह राखो दीनानाथ दुःखके सरसों ॥ हो भगवन्त अन्त पछितैहौ वहुरि मिलोगे आय नर हरिसों । युगल कारि मानो वसन पूतरी लई लपेट शीश पद करसों ॥ ११३ ॥

कवित्त ।

दुर्जन दुशासन दुकूल गह्यो दीनवन्धु, दीन ह्वैके द्रुपददुलारी यों पुकारी है ॥ आपनो सवल छाँड ठाढे पति पारथसे, भीम महा भीम ग्रीवा नीचे करडारी है ॥ अंवर लौं अंवर पहाड कीनो शेष कवि, भीषम करण द्रोण सभी यों विचारी है । सारी मध्य नारी है कि नारी मध्य सारी है कि, सारी है कि नारी है कि नारि है कि सारी है ॥ ११४ ॥

राग देश ।

मेरे माधोजी आयों हों सरे । तेरा वार वार यश गाऊँ साँवरे आयों हों सरे ॥ करुणा करे लिखे गुणवन्ती यह मनमें उचरे । लिख पतिया द्रिज हाथ पठाऊँ द्वारका गमन करे ॥ लगन लि-

खाय चँदेरीको भेजा कागज़ मेल धरे । रुकमैया जब मानत नाहीं कूडे वचन करे ॥ दल जोडे शिशुपाल जो आये लश्कर घेर खड़े । पदमके स्वामी वेग पधारो रुक्मिणि याद करे ॥११५॥

राग धनाश्री ।

म्हारी सुध लीजो हो त्रिभुवन धनी । छोंनी दल शिशुपाल ले आयो तुम अजहूँ न सुनी ॥ कुंडिनपुरको घेर लियो है गाढ़ी विपति बनी । हौं हठ ठान रही अपने जिय खाय मरूंगी कनी ॥ ताके सङ्ग जीवत नहिं जैहौं यह निश्चय मति ठनी । थोरीसे बहुती कर जानो और कहांको धनी ॥ विष्णुदास पर कृपा कीजिये रख लीजे रुकमनी ॥ ११६ ॥

राग आसावरी ।

सन्तन प्रतिपाल राखो लाज हरि मेरी । पिता कहै मैं व्याहूं द्वारका भैया कहत चन्देरी ॥ लिख लिख पतियां रुक्मिणि भेजै दासी तड़फ रही तेरी । इत दल जोड़ शिशुपाल आयो व्याहनको वरजोरी ॥ जब शिशुपाल बेदीपर बैठे जल बल हो जाऊं ढेरी । सिंहका शिकार स्यार लिये जात है यह गति भई अब मेरी । जो मेरेको वरले जावै क्या पति रहजाय तेरी ॥ कुंडिनपुरमें अम्बिका देवी पूजन जात सबेरी । पदमके स्वामी अंतर्यामी वेग खबर लीजे मेरी ॥ ११७ ॥

राग सोरठ ।

सुन अलकां वाले कृष्णजी मोरे मनमें आन बसो । जरद बाना पहरके शिर मुकुटको कसो॥ चलतेहो टेढ़ी चाल मत घायल मुझे करो । शिवगिरिकी अरज मानिये दीनानाथ हरे । महाराज तेरी कृपासे कई कोटि पतित तरे ॥ ११८ ॥

राग झपताल ।

मो मन बसो श्यामा श्याम । श्याम तन मन श्याम कामर मालकी मणि श्याम ॥ श्याम अञ्जन श्याम भूषण वसन हैं अति श्याम । श्यामा श्यामके प्रेम भीने गोविंद जन भये श्याम॥ ११९॥

राग आसावरी ।

संकट काट मुरारी हमरे संकट काट मुरारी । संकटमें इक संकट उपज्यो अरज करै मृग नारी ॥ इक ढिग बावर जाय गडरिया इक ढिग श्वान विहारी ॥ इक ढिग जा अग साड़ी इक ढिग जा बैठ्यो फन्द कारी ॥ उलटी पवन बावरको लागी श्वान गयो ससकारी । बरनीसे भुवङ्ग जो निकस्यो तिन डस्यो फन्दकारी ॥ नाचत कूदत हरनी निकसी भली करी गिरिधारी । सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको चरण कमल बलिहारी ॥ १२० ॥

बन्धन काट मुरारी हमरे बंधन काट मुरारी । ग्राह गजराज लई जल भीतर ले गयो अंबु मँझारी ॥ गजकी टेर सुनी यदुनन्दन तजी गरुड़ असवारी ॥ पांचाली कारण प्रभु मोरे पग धार्यो गिरिधारी ॥ पट शठ खैंचत निकसत नाहीं सकल सभा पचहारी। चरण सपर्श परमपद पायो गौतम ऋषिकी नारी ॥ गणिका शबरी इन गति पाई बैठ विमान सिधारी ॥ सुन सुन सुयश सदा भक्तन को सुखसों भज्यो इक बारी। विधीचन्द दर्शनको प्यासो लीजिये सुरत हमारी ॥ १२१ ॥

राग कान्हरा ।

दीजै दरश मोहिं चतुर भुजन कर । शङ्ख चक्र गदा पद्म धारिये पीतांबर ओढंवर साजे गल मोतियनकी माल मनोहर ॥ १२२ ॥

राग टोड़ी।

तुम बिन श्रीकृष्ण देव और कौन मेरो। कई अनेक ऐरावत ऐसो बल मेरो॥ मैंतो अभिमानी नाम जान्यो नहिं तेरो। भ्रमत भ्रमत प्यास लगी चाह्यो चित मेरो॥ सभी कुटुंब छोड़ नाथ सागर पद गेरो। जलमें पग बोरत ही आन ग्राह घेरो॥ मैं तो बलहीन नाथ वाहि बल घनेरो॥ मात पिता भाई बंधु कुटुम्ब तो घनेरो॥ दशो दिशा हेर हेर शरण गह्यो तेरो। केते गज ग्राह फंद अतुलित बल श्रीमुकुन्द काटो भवफंद प्रभु जरा नजर फेरो॥ डूबत गजराज जान टेरत श्रीकृष्ण नाम दीनबन्धु दीनानाथ विरद जात तेरो। लडत लड़त देर भई आयो अन्त मेरो॥ जब लग मैं जीवों नाथ जपों नाम तेरो। गोपीनाथ मदन मोहन करुणा कर हेरो॥ सूरदास गरुड़ छोड़ करदिये निबेरो॥ १२३॥

राग कान्हरा।

आये आये जी महाराज अपने भक्तके काज सारे। तज वैकुण्ठ तज्यो गरुडासन पवन वेग उठि धाये॥ जवके दृष्टि परे नँदनन्दन भक्तहेतु रूप धारे। मीराके प्रभु गिरिधर नागर चरण कमल चितलाये॥ १२४॥

राग देश।

म्हारो काँई बिगरेगो थारोई विरद लजेगो। रुकमैया वंधु जो वैरी कूड़ी साख भरेगो॥ जरासन्ध शिशुपाल जो आये भूपसे भूप अडेगो। पदमके स्वामी अन्तर्यामी करता कौन कहेगो॥१२५॥

राग देश सोरठ।

पाती मेरी द्वारका लेजाय। विप्र तुम वेग धायो जाय॥ लिख लिख भेजूँ चीठियाँ जी में लिखाँ दुराय दुराय। है कोई हितकारी

हमरो सुनत ही उठ धाय ॥ कुंडिनपुरमें आश्चर्य देखो सिंह घेरी गाय । भाग राख्यो हंस कारण काग पहुँचे आय ॥ लग्न जोर बरात आई दिये खंभ गडाय । रुकमैया शिशुपाल आये जरासंध सहाय ॥ अम्बिका पूजन चली हैं रुक्मिणि संग सहेलियां नाल । जै अंबे वर देत हैं श्रीकृष्ण देहु मिलाय ॥ अंबिका पूजके आई है रुक्मिणि श्रीकृष्ण पहुँचे आय । अपने बिरदकी लाज राखी सूर बलि-बलि जाय ॥ १२६ ॥

कवित्त दण्डक ।

कैसे तुम गणिकाके औगुण न गिने नाथ, कैसे तुम भीलनीके जूँठे बेर खाये हो ॥ कैसे तुम द्वारकामें द्रोपदीकी टेर सुनी, कैसे तुम गज काज नंगे पग धाये हो ॥ कैसे तुम सुदामाके छिनमें दरिद्र हरे, कैसे तुम उग्रेसेन बंदीते छुड़ाये हो । मेरी बेर एती देर कान मूँद रहे नाथ, दीनबंधु दीनानाथ काहेको कहाये हो ॥१२७॥

राग विहाग ।

किन तेरो गोविंद नाम धरचो । लेन देनके तुम हितकारी मोते कछु न सरचो ॥ विप्र सुदामा कियो अयाची तंदुल भेंट धरचो । द्रुपदसुताकी तुम पति राखी अंबर दान करचो ॥ संदीपनके तुम सुत लाये विद्या पाठ पढचो । सूरकी बिरियाँ निठुर ह्वै बैठे कानन मूँद धरचो ॥ १२८ ॥

राग धनाश्री ।

पतित पावन हरी नाम तिहारो कौनेहू धरचो । हौं तो दीन दुखित संसृत रत द्वारे रटत परचो ॥ गज गणिका नृग गीध व्याधते मैं घट कहा करचो । ना जानों यह सूर महाशठ कौन दोष बिसरचो ॥ १२९ ॥

राग देश सोरठ ।

हरि हौं बड़ी बेर को ठाढो । जैसे और पतित तुम तारे तिनहीं में लिख काढो ॥ युग युग बिरद यही चल आयो टेर कहत हौं ताते । मरियत लाज पञ्च पतितनमें हौं घट कहो कहांते ॥ कै अब हार मान कर बैठो कै कर बिरद सही । सूर पतित जो झूँठ कहत है देखो खोल बही ॥ १३० ॥

राग धनाश्री ।

नाथ मोहिं अबकी बेर उबारो । तुम नाथनके नाथ स्वामी दाता नाम तिहारो ॥ करम हीन जन्मको अंधो मोते कौन नकारो। तीन लोकके तुम प्रतिपालक मैं तो दास तिहारो । तारी जात कुजात प्रभूजी मोपर किरपा धारो ॥ पतितनमें इक नायक कहिये नीचनमें सरदारो । कोटि पापी इक पा सँग मेरे अजामील कौन विचारो ॥ नाठो धरम नाम सुन मेरो नरक कियो हठतारो । मोको ठौर नहीं अब कोऊ अपनो बिरद सम्हारो ॥ क्षुद्रपतित तुम तारे रमापति अब न करो जिय गारो । सूरदास साँचो तब माने जो होय मम निस्तारो ॥ १२१ ॥

ग़ज़ल ।

जहां देखों वहीं मौजूद मेरा कृष्ण प्यारा है । उसीका सब है जलवा जो जहां में आशिकारा है ॥ भला मखलूक खालिककी सिफत समझे कहाँ मुमकिन। उसीसे नेत नेत ऐ यार वेदोंने पुकाराहै ॥ न कुछ चारा चला लाचारों हार कर बैठे। विचारे वेदने प्यारे बहुत तुझको विचारा है ॥ जो कुछ कहते हैं हम यह भी तेरा परकाश है वरना । किसे ताक़त जो मुँह खोले यहां हर शख्स हारा है ॥ तेरा है तेज हर शै में काहसे कोह तक प्यारे

उसी से कहके हर हर तुझको सब जगने उचारा है ॥ कोई तुझको पुकारे ब्रह्म कर्त्ता एक कहते हैं। कहैं निर्लेप इक ज्ञानी ध्यानी ध्यान धारा है॥ करो किरपा रसाई दो सजन अपनेही चरणोंमें। भला है या बुराहै जैसा है आखिर तुम्हारा है ॥ बहुत दुस्तर है भवसागर न पारावार कुछ सूझै । कहै कर जोड़ राधानाथ इक तूही सहाराहै ॥ १३२ ॥

वह नाथ अपनी दयालुता तुम्हें यादहो कि न याद हो। वो जो कौल भक्तोंसे किया था तुम्हें याद हो कि न याद हो॥ सुनि गजकी ज्यूंहीं आपदा न विलम्ब छिनका सहा गया । वहीं दौड उठके पियादे पा तुम्हें० ॥ य जो चाहा दुष्टोंने द्रौपदीसे कि, शर्म उसकी सभामें लें । बढाया वस्तरको आप जा तुम्हें०॥ अजामील एक जो पापी था लिया नाम मरने पै बेटे का । वह नर कसे जो बचा दिया तुम्हें० ॥ जो गीध था गणिका जो थी जो व्याध था मल्लाह था । उन्हें तुमने ऊंचोंका पद दिया तुम्हें० ॥ खाना भीलनीके व जूंठे फल कहीं साग दासके घर पै चल। यूहीं लाखों किस्से कहूँ मैं क्या तुम्हें० ॥ जिन वानरोंमें न रूप था न तो गुण ही था न तो जात थी । तिन्हें भाइयोंकासा मानना तुम्हें० ॥ वह जो गोपी गोप थे व्रजके सभ उन्हें इतना चाहा कि क्या कहूं । रहे उलटे उनके ऋणी सदा तुम्हें० ॥ कहो गोपियोंसे कहा था क्या करो याद गीताकी जरा । वैदा वक्त उद्धार का तुम्हे० ॥ यह तुम्हारा ही हरीचंद है गो फासदमें जगके बंद है ॥ है दासजन्मसे आपका तुम्हें० ॥ १३३ ॥

अफसोस भरी नाथ सुनो मेरी भी हालत। पापी हूं मुझे अरज से आती है खिजालत ॥ कैदीकी तरह उमर कटी मोहके वश में । पाबंद किया लोभने बेदाना कफस में ॥ हर एक घड़ी गुजरी

है दुनियाँ की हवस में। इक दिन भी नहीं काम का हर माह बरस में ॥ इक वक्तका तोसा नहीं औ शिरपै सफ़र है। पापोंका बहुत बोझ है शिकस्ता कमरहै॥ हूं आपके चरणोंसे लगा जानलो इतना । कुछ और नहीं चाहता पर मानलो इतना ॥ जिस दम मेरी उम्मैदसे घरवालोंको होयास। सब दूर हों सरकारही सरकार हों इक पास॥ फैली हुई शृंगारके फूलोंकी हो बूबास। मुरलीकी सदा कानमें आतीहो चपो रास ॥ होजाऊँ फना पाऊँ जो इतना मैं सहारा। जब बंद हों आंख तो मुकुट का हो नजारा ॥ दम लब पै हो सीने में तसव्वुरहो तुम्हारा। मिटकर भी जुदाई न हो चरणोंकी गवारा ॥ जो व्रजकी रज है वही खाके कफे पा है। मिट्टी यहीं रहजाय तो वैकुंठमें क्या है॥ रोशन है कि यह सिजदह गहे अहले यकीं है। जो जर्रा है यां खातमें कुदरत का नगीं है॥ उठाहै यहीं आके निकाबे रुखे तौहीद । हर वक्त नजर आताहै यां जल-वएजा बीद ॥ जो खाकमें यां मिल गये किसमत है उन्हीं की। जो मिटगये यां आके हकीकत है उन्हीं की ॥ गलियोंमें जो यां घिसटे हैं जिन्नत है उन्हींकी। जो भीखको यां खाते हैं दौलत है उन्हीं की ॥ वहताज शाहीपर भी कभी हाथ न मारें। दुनिया का मिले तख्त तो इक लात न मारें ॥ कहसक्ताहूं क्या व्रजकी खूबी व लताफत। वह आंख नहिं जिसमें हो नज्जारेकी ताकत ॥ मैं यह भी नहीं चाहता तकलीफ उठाओ। मैं यह भी नहीं चाहता बिगड़ी को बनाओ ॥ पर कुछ तो मेरे वास्ते तदबीर बताओ। इतना भी नहीं हूं जिसे चरणोंसे लगाओ ॥ नकशे कफे पाफूंक निकलने को तो मिलजाय । दो हाथ जमीं व्रजमें जलनेको तो मिलजाय॥ देखो न खुदाईकी करामात बिगड़ जाय। ऐसा न हो शोलेकी कही बात बिगड़जाय ॥ १२४ ॥

राग परज।

मैनूँ तारी वे रब्बा बंदी औगुण हारी। सभ सैयां गुन वालड़ियां वे मैं औगुण हारी॥ जिस कारण शौह भेज्या लाल वे मैनूँ तारी वे रब्बा सोईयो गल्ल विसारी। पकड तुला मैं तर पैयां लाल वे मैनूं तारी वे रब्बा शिरपर गठरी हैभारी॥ इकनां दाज रंगा लिया लाल वे मैनूं तारीं वे रब्बा आईया साड़ड़ी चारी। हुकुम साईं दे पर्वत तरदे लाल वेरे मैनूं तारीं वे रब्बा वंदी कौन विचारी॥ इकनां सेजां मानीयां लाल वे मैनूं तारी वे रब्बा बंदी रहीहै कुँआरी। कहैं शाह हुसैन सुनो सहेलीयो मेरीयो मैनूं तारीं वे रब्बा अमलां बाझ खुआरी॥ १३५॥

राग वड़हंस।

अपने संग रलाईं वे मैनूं अपने सङ्ग रलाईं॥ राह पवां तां धाड़ी वेढे वेलें लखाँ वलाईं॥ चीते वाघे कोड़ल हारे भखँर करन अदाईं॥ भार तेरे जागत्तर चल्या वेड़ा पार लंघाईं॥ हौल दिले दा थर हर कंबे झवदे पार लंघाईं॥ पहलां नेह लगायासी ऐवें आपे चाईं चाईं॥ मैं लायाके तुध लाया सी अपनी ओर निभाईं॥ जेकर आगे है लड़ लाया तीवें गले लगाईं॥ बुल्लाशाह शहाना मुखडा घूँघट खोल दिखाईं॥ १३६॥

राग सोरठ।

मालक कुल आलमके हो तुम साँचे श्रीभगवान। स्थावर जङ्गम पानी पावक धरती बीच समान॥ सभमें जलवा तेरा देखा कुदरतके कुरवान। सुदामाके दरिद्र खोये पाँड़ेकी पहँचान॥ दो मूठी तंदुलकी चाबी बखशे दो जहान। भारतमें अर्जुनकी खातर आप भये रथवान॥ उसने अपने कुलको देखा छुट गये तीर कमान। ना कोई मारे ना कोई मरता तेरोही अज्ञान॥ यह तो

चेतन अचल अमरहै यह गीताको ज्ञान । मुझ आजज पर किरपा कीजै बंदा अपना जान ॥ मीर माधो मैं शरण तिहारी लागे चरणन ध्यान ॥ १३७ ॥

राग कालिंगड़ा ।

माधव गति तेरी ना जानी ॥ मारन कारन चली पूतना अस्तन विष लपटानी । ताको गति यशुमतिकी दीनी सो वैकुंठ सिधानी ॥ लख गउअनको दान करत है राजा नृगसों दानी । ताको मुख किरलेका दीना पाछे कूप पठानी ॥ बलिराजा स्वर्ग धामकी खातर रचे यज्ञ बहु दानी । सो राजा पाताल पठायो चौकी ताकी मानी ॥ बड़े बड़े राज भूपनकी बेटी तिनको योग दृढानी । कुब्जा मालन कंसकी चेरी सो कीनी पटरानी ॥ पांचों पांडव अधिक सनेही सो हिमअचल गिरानी । दुर्योधन राजा बड़ा अभिमानी ताकी मुक्ति निशानी ॥ शेषनागको नेता कीनो पर्वत कियो मथानी । चौदा रत्न मथन कर काढ़े तब लक्ष्मी घर आनी ॥ जैसी जाकी मनोकामना तैसी कर दिखलानी । सूरदास आनन्द मगन भयो प्रेम भक्ति मन मानी ॥ १३८ ॥

राग कान्हरा ।

देपूतना विपरे अमृत पायो।जो कछु देयत सों फल पैयत नाहक वेदन गायो ॥ शत यज्ञ राजा बालि कीनो बाँध पताल पठायो । लक्ष गऊ राजा नृग दीनी गिरगट रूप करायो ॥ रंक जन्मके मित्र सुदामा कञ्चन धाम बनायो । सूरदास तेरी अद्भुत लीला वेद नेत कह गायो ॥ १३९ ॥

राग धनाश्री ।

अविगति गति जानी न परै । मन वच अधम अगाध अगोचर किहि विधि बुधि सँचरै ॥ अति प्रचंड पौरुष सों मातो केह-

रि भूँख मरै । तज उद्यम अकाश कर बैठ्यो अजगर उदर भरै ॥ कबहुँक तृण बूड़त पानीमें कबहुँक शिला तरै । बागरसे सागर कर राखे चहुँ दिशि नीर भरै ॥ पाहन बीच कमल विकसाहीं जलमें अगिन जरै । राजा रंक रंकते राजा ले शिर छत्र धरै ॥ सूर पतित तरजाय छिनकमें जा प्रभु टेक करै ॥ १४० ॥

राग सोरठ ।

हरिका गति नहिं कोऊ जानै । योगी यती तपी पचहारे अरु बहु लोग सयाने ॥ छिनमें राव रंकको करहीं रावरंक कर डारे । रीते भरे भरे ढरकावे यह ताको व्यवहारे ॥ अपनी माया आप पसारे आपै देखनहारा । नाना रूप धरै बहुरंगी सबसे रहत निःयारा ॥ अमित अपार अलक्ष निरंजन निज सब जग भरमाया । सकल भरम तज नानक प्राणी चरण ताहि चित लाया ॥ १४१ ॥

राग कान्हरा ।

ज्यों भावे त्यों राख गुसाईं । हमरे संकट काटो जी साँवरे कृपा करो प्रहलादकी नाईं ॥ तोहिं त्याग और जो सुमिरे सो नरपै दे नरकन माहीं । नन्ददासको दीजै अभय पद चरणकमल राख्यो मन माहीं ॥ १४२ ॥

राग सोरठ ।

दरमां देठाढ़े दरबार । तुझ बिन सुरत करै को मेरी दरशन दीजे खोल किंवार ॥ तुम धन धनी उदार त्यागी श्रवणन सुनियत सुयश तुम्हार । माँगों कौन रंक सब देखों तुमहींते मेरो निस्तार ॥ जयदेव नामा विप्र सुदामा तिनपर कृपा भई है अपार । कह कबीर तुम समरथदाते चार पदारथ देत न बार ॥ १४३ ॥

राग झंझोटी ।

हरि अब बनिहै नाहिं बिसारे । दीनदयालु कृपानिधि हे प्रभु गिनिये न दोष हमारे ॥ गीध अजामिल गणिका आदिक जा पन पै तुम तारे । मोहन लाल आपनो पन सोइ बनिहै नाथ सम्हारे ॥ १४४ ॥

राग अडाना ।

अपने विरदकी लाज विचारो । सब घटके तुम अंतर्यामी भव-सागर ते पार उतारो ॥ गुण औगुण यह कछू न मानो ज्यों जानों त्यों पतित उधारो । जानकीदास प्रभु शरण तुम्हारी आवागमन-का दोष निवारो ॥ १४५ ॥

राग परज ।

भरोसो कृष्णको भारी ॥ ग्राहने गजराज घेरचो बल कियो भारी । हारके जब टेर कीनी धाये गिरिधारी ॥ प्रहलाद गिरिसों डार दीनो कीनी रखवारी । अगिनहूंसों राख लीनो दूसरी वारी ॥ द्रौपदीकी लाज राखी कूबरी तारी । ध्रुवको दीनी अटल पदवी कियो घरवारी ॥ वीभीपणको लंक दीनी रावणा मारी । आगें पतित अनेक तारे सूरकी बारी ॥ १४६ ॥

राग विभास ।

और कोई समझो तो समझो हमको एती समझ भली है । ठाकुर नन्दकिशोर हमारे ठकुरायन वृपभानु लली है ॥ सुबल आदि ले सखा श्यामके राधा सँग ललिता जो अली है । नितको लाड़ चाव सेवा सुख भाग बेलि बढ सुफल फली है॥ वृन्दावन बीथिन यमुना-तट विहरन ब्रज रज रङ्ग रली है । कहै भगवान हित रामराय प्रभु सबते इनकी कृपा बली है ॥ १४७ ॥

राग विहाग ।

हमरी आँखिनके दोउ तारे । राधा मोहन मोहन राधा यह दो-उ रूप उजारे ॥ गौर श्याम अभिराम मनोहर व्रज वरसाने वारे । शुक शारद नारद बलिहारी महिमा वर्णत हारे ॥ १४८ ॥

कुण्डलिया ।

आचारज ललिता सखी रसिक हमारी छाप । नित्त किशोर उपासना, युगल मन्त्रको जाप ॥ युगलमन्त्रको जाप वेदरसिक-नकी वानी । वृन्दावन निज धाम इष्ट श्यामा महरानी ॥ प्रेम देवता मिले बिना सिधि होय न कारज । भगवत सब सुखदेन प्रगट भये रसिकाचारज ॥ १४९ ॥

राग धनाश्री ।

हैं हम रसिक अनन्य प्रिया पिय कुञ्जमहलके वासी । नइ नइ केलि विलोकत छिन छिन रति विपरीत उपासी ॥ वीरी वसन सुगंध आरसी रुचि ले करत खवासी । देत प्रसाद प्रेम सों हँस हँस कह कह भगवत दासी ॥ १५० ॥

राग कालिंगडा ।

हम नँदनन्दन मोल लिये । यमकी फाँस काट मुकराये अभय अजात किये॥सब कोउ कहत गुलाम श्यामके गुणत सिरात हिये । सूरदास प्रभुजूके चेरे जूठन खाय जिये ॥ १५१ ॥

राग जंगला ।

साँवरो जग तारन आयो । निशि दिन जाको वेद रटत हैं सुर नर पार न पायो ॥ मथुरामें हरि जनम लियो हैं गोकुल जाय वसायो । लाल यशुमतिको कहायो ॥ भानुसुतामें कूदि परे हैं विषधर जाय जगायो । फणिपति लै पाताल पटायो

तीन लोक यश गायो ॥ मनो मेघुला झुक आयो ॥ भारतमें प्रण भीषम राख्यो अर्जुन रथमें बहायो। गीता ज्ञान दया कर दीनो रूप विराट दिखायो, भर्म मनको जो मिटायो॥ वृंदावनमें रास रचो है गोपी ग्वाल नचायो । सूरदास यह प्रेमको झगरो हरष निरखकर गायो, बहुरि इतना सुख पायो॥ १९२॥

दोहा।

चार बीस अवतार धर, जनकी करी सहाय। राम कृष्ण पूरण भये, महिमा कही न जाय॥ चौपाई ॥ नेति नेति कह वेद पुकारे। सो अधरन पर मुरली धारे ॥ जाको ब्रह्मादिक मिल ध्यावहिं। ताहि पूत कहि नन्द बुलावहिं ॥ शिव सनकादिक अन्त न पावें। सो सखियन सँग रास रचावें॥ सकल लोकमें आप पुजावें। सो मोहन ब्रजराज कहावें॥ निरंकार निर्भय निरवाना। कारण सन्त धरे तिन जाना ॥ निर्गुण सगुण भेद ना कोई। आदि अंत मधि एकै सोई ॥ दोहा ॥ योगी पावें योग सों, ज्ञानी लहें विचार ॥ नानक पावे भक्ति सों, जाको प्रेम अधार ॥ १९३ ॥

राग धनाश्री।

हरि सन्तनकी पैज राखत आप निरंकार भाषत ॥ खंभसे प्रभु निकसे आय नरसिंह रूप होय रिसाय असुरनको उदर छेद प्रहलाद तिलक थापत ॥ गहरे गंभीर ग्रस्यो कालवश ले व्याल धस्यो गजकी जब टेर सुनी फंदन काटत। बीच सभा आन खड़ी द्रौपदीको भीर पडी उचरत हरि शरण तेरी अनेक चीर बाढत ॥ दौड़के हरि आन खड़े अपने जन काज करे बिलम न लायो नेक दुनीदास आखत ॥ १९४॥

राग सोरठ ।

जानत प्रीति रीति यदुराई । को अस जग मतिमंद मनुज जो भजत न सकल विहाई ॥ कनक भवनमें रुक्मिणिके सँग राजत सब सुख छाई । रंक दीन लखि मीत सुदामहिं धाय लियो उर लाई ॥ यदुकुल कौरव कुल पांडव कुल जहिं जहिं भई सगाई । तहिं तहिं व्रज वासिनकी बातें वर्णत वदन सुखाई ॥ छप्पन विधि व्यंजन दुर्योधन राख्यो सदन बनाई । सो ताजि विदुर साग भोजन किये वहुत सराह मिठाई ॥ सुरदुर्लभ यदुकुल विलास वर प्रभुता प्रभु विसराई । श्रीरघुराज भली भारतमें पारथ सारथि आई ॥१९५॥

राग पूरवी ।

जय मनमोहन श्याम मुरारी । जय व्रजनाथ मुकुंद विहारी ॥ जय नखपर श्रीगिरिवर धारी । जय श्रीकृष्णचन्द्र वनवारी ॥ मोसें नाथ कछु लखी न जाई । वरणों कहँलग तोरि वड़ाई ॥ महिमा तुम्हारी अपार कन्हाई । थकित भये वर्णत श्रुति चारी ॥ हे अपार अलख तव माया । ब्रह्मादिकने भेद न पाया ॥ कोटिन मुनिने ध्यान लगाया । पर कछु समझ परी न तिहारी ॥ कहांतलक गुण तुम्हरे गाऊं । कौन हृदयमें ध्यान लगाऊं ॥ कहा समझ प्रभु तोहिं मनाऊं । शोच भयो जन उर यह भारी ॥ सुध लीजे अव तो प्रभु मेरी । निज जन समझ करो मत देरी ॥ दीनदयालु शरण हूं तेरी । कृपा करो भक्तन सुखकारी ॥ १९६ ॥

राग जंगला ।

जय नारायण ब्रह्मपरायण श्रीपति कमलाकंतं । नाम अनंत कहां लग वरणों शेप न पावत अंतं ॥ नारद शारद शिव सनकादिक ब्रह्मा ध्यान धरंतं । मच्छ कच्छ सूकर नरहरि प्रभु वामन रूप धरंतं ॥ परशुराम श्रीरामचंद्र जग [illegible] लियो

वसुदेव देवि गृह नाम धरयो नँदनन्दं ॥ पैठ पताल कालीनाग नाथ्यो फण२ निरत करंतं। बलभद्र होकर असुर सँहारे कंसके केश गहंतं ॥ जगन्नाथ जगपति चिन्तामणि होय बैठे निश्चिन्तं । कलि-युग अन्त अनन्तत होकर कलकीरूप धरंतं ॥ दश अवतार हरि-जूके गाये सूर शरण भगवंतं ॥ १५७ ॥

लावनी ।

नाथ तुम दीनन हितकारी । पतितपावन कलिमलहारी ॥ प्रथम नरसिंह रूप धारयो । नखन सों हरनाकुश मारयो ॥ ब्रह्मादिक थरथर करैं, लक्ष्मी ढिग नहिं जात । जन अपनें प्रहलादके, धरयो शीश पर हाथ ॥ भक्तकी विपाति कटीं सारी ॥ नाथ० ॥ जुड़े दल दोउ ओर भारी । करी जब भारत-की त्यारी ॥ भरुही दीनहो पुकारी । खबर मेरी लीजो गिरि-धारी ॥ ऐसेको या जगतमें, मेरो राखनहार । इतनी सुनत तब तुरतही, गज घंटा दियो डार ॥ करी अंडनकी रखवारी ॥ नाथ० ॥ सभामें द्रुपदसुता नारी । करन जो लगे जवाब भारी ॥ देखते सकल धर्मधारी । कर्ण भीषम द्रोणाचारी ॥ कहा भयो वैरीप्रबल, जो सहाय बलबीर । दश हजार गज बल घटयो, घटयो न दश गज चीर ॥ दुःशासन बैठ गयो हारी ॥ नाथ० ॥ ग्राहने गजको गहलीनो । परस्पर युद्ध बहुत कीनो ॥ भयो गजराजको बल हीनों । याद तब गोविंदको कीनो ॥ सुनतहि टेर गजेंद्रकी, उठधाये ब्रजराज । सुध ना रही शरीर की, कियो भक्तको काज ॥ जनार्दन सन्तन दुख-हारी । नाथ तुम दीनन हितकारी ॥ १५८ ॥

राग देश ।

हे अच्युत हे पारब्रह्म अविनाशी अघनाश । हे पूरण हे सर्वमें दुख भञ्जन गुण तास ॥ हे सङ्गी हे निरंकार हे निर्गुण सब टेक ।

राग सोरठ।

जानत प्रीति रीति यदुराई। को अस जग मतिमंद मनुज जो भजत न सकल बिहाई॥ कनक भवनमें रुक्मिणिके सँग राजत सब सुख छाई। रंक दीन लखि मीत सुदामहिं धाय लियो उर-लाई॥ यदुकुल कौरव कुल पांडव कुल जहिं जहिं भई सगाई। तहिं तहिं ब्रज वासिनकी बातें वर्णत वदन सुखाई॥ छप्पन विधि व्यंजन दुर्योधन राख्यो सदन बनाई। सो तजि विदुर साग भोजन किये बहुत सराह मिठाई॥ सुरदुर्लभ यदुकुल विलास वर प्रभुता प्रभु बिसराई। श्रीरघुराज भली भारतमें पारथ सारथि आई॥१९५॥

राग पूरवी।

जय मनमोहन श्याम मुरारी। जय ब्रजनाथ मुकुंद विहारी॥ जय नखपर श्रीगिरिवर धारी। जय श्रीकृष्णचन्द्र बनवारी॥ मोसें नाथ कछु लखी न जाई। बरणों कहँलग तोरि बड़ाई॥ महिमा तुम्हारी अपार कन्हाई। थकित भये वर्णत श्रुति चारी॥ है अपार अलख तव माया। ब्रह्मादिकने भेद न पाया॥ कोटिन मुनिने ध्यान लगाया। पर कछु समझ परी न तिहारी॥ कहांतलक गुण तुम्हरे गाऊं। कौन हृदयमें ध्यान लगाऊं॥ कहा समझ प्रभु तोहिं मनाऊं। शोच भयो जन उर यह भारी॥ सुध लीजे अब तो प्रभु मेरी। निज जन समझ करो मत देरी॥ दीनदयालु शरण हूं तेरी। कृपा करो भक्तन सुखकारी॥ १९६॥

राग जंगला।

जय नारायण ब्रह्मपरायण श्रीपति कमलाकंतं। नाम अनंत कहां लग वरणों शेष न पावत अंतं॥ नारद शारद शिव सनकादिक ब्रह्मा ध्यान धरंतं। मच्छ कच्छ सूकर नरहरि प्रभु वामन रूप धरंतं॥ परशुराम श्रीरामचंद्र जग लीला कोटि करंतं। जन्म लियो

वसुदेव देवि गृह नाम धर्यो नँदनन्दं॥ पैठ पताल कालीनाग नाथ्यो फण२ निरत करंतं। बलभद्र होकर असुर सँहारे कंसके केश गहंतं॥ जगन्नाथ जगपति चिन्तामणि होय बैठे निश्चिन्तं। कलि-युग अन्त अनन्तत होकर कलकीरूप धरंतं॥ दश अवतार हरि-जूके गाये सूर शरण भगवंतं॥ १५७॥

लावनी।

नाथ तुम दीनन हितकारी। पतितपावन कलिमलहारी॥ प्रथम नरसिंह रूप धार्यो। नखन सों हरनाकुश मार्यो॥ ब्रह्मादिक थरथर करें, लक्ष्मी ढिग नहिं जात। जन अपने प्रहलादके, धर्यो शीश पर हाथ॥ भक्तकी विपति कटीं सारी॥ नाथ०॥ जुड़े दल दोउ ओर भारी। करी जब भारत-की त्यारी॥ भरुही दीनहो पुकारी। खबर मेरी लीजो गिरि-धारी॥ ऐसेको या जगतमें, मेरो राखनहार। इतनी सुनत तब तुरतही, गज घंटा दियो डार॥ करी अंडनकी रखवारी॥ नाथ०॥ सभामें द्रुपदसुता नारी। करन जो लगे जवाब भारी॥ देखते सकल धर्मधारी। कर्ण भीषम द्रोणाचारी॥ कहा भयो वैरीप्रबल, जो सहाय बलबीर। दश हजार गज बल घट्यो, घट्यो न दश गज चीर॥ दुःशासन बैठ गयो हारी॥ नाथ०॥ ग्राहने गजको गहलीनो। परस्पर युद्ध बहुत कीनो॥ भयो गजराजको बल हीनों। याद तब गोविंदको कीनो॥ सुनतहि टेर गजेंद्रकी, उठधाये ब्रजराज। सुध ना रही शरीर की, कियो भक्तको काज॥ जनार्दन सन्तन दुख-हारी। नाथ तुम दीनन हितकारी॥ १५८॥

राग देश।

हे अच्युत हे पारब्रह्म अविनाशी अघनाश। हे पूरण हे सर्वमें दुख भञ्जन गुण तास॥ हे सङ्गी हे निरंकार हे निर्गुण सब टेक।

हे गोविन्द हे गुणनिधान जाके सदा विवेक ॥ है अपरंपार हर हरे हैं भी होवन हार । हे सन्तनके सदा सङ्ग निराधार आधार ॥ हे ठाकुर हौं दासरो मैं निर्गुण गुण नहिं कोय। नानक दीजै नाम दान राखौं हिये परोय ॥ १५९ ॥

छंद।

श्रीकृष्णजीके कमल नेत्र कटि पीतांबर अधर मुरली गिरिधरं ॥ मुकुट कुण्डल कर लकुटिया सांवरे राधेवरं ॥ कूल यमुना धेनु आगे सकल गोपिन मन हरं । पीत वस्त्र गरुड़ वाहन चरण नित सुखसागरं। करत केलि कलोल निशि दिन कुंज भवन उजागरं । अजर अमर अडोल निश्चल पुरुषोत्तम अपरापरं ॥ गोपीनाथ गुपाल गिरिधर कंस हरनाकुश हरं । गल फूल माल विशाल लोचन अधिक सुन्दर केशवं । वंशीधर वसुदेव छैया बलि छल्यो हरि वामनं ।.जल डूबते गज राख लीनो लंक छेद्यो रावनं ॥ सप्त द्वीप नौखंड चौदा भुवन कीने इक पलं । द्रौपदीकी लाज राखी कहां लौं उपमा करं ॥ दीनानाथ दयालु पूरण करुणामय करुणाकरं । कवि दत्तदास विलास निशिदिन नाम जप नित नागरं ॥ १६० ॥

प्रथम गुरुके चरण वंदो जासों ज्ञानप्रकाशतं । आदि विष्णु युगादि ब्रह्मा सेवते शिव शंकरं ॥ श्रीकृष्ण केशवकृष्ण केशवकृष्ण केशव केशवं । श्रीराम रघुवर राम रघुवर रामरघुवर राघवं ॥ राम कृष्ण गोविन्द माधव वासुदेव श्रीवामनं।मच्छ कच्छ वाराह नरसिंह पाहि रघुपति पावनं ॥ मथुरामें केशोराय विराजै गोकुल वाल मुकुन्दजी । श्रीवृन्दावनमें मदनमोहन गोपीनाथ गोविंदजी ॥ धन्य मथुरा धन्य गोकुल जहां श्रीपति अवतरे । धन्य यमुना नीर निर्मल ग्वाल बाल सखा बने ॥ ग्वाल बाल सङ्ग सखा विराजे सङ्ग राधा

भामिनी।वंशीबट तट निकट यमुना मुरलीकी टेर सुहामिनी॥कृष्ण कलिमल हरन सबके जो भजें हरि चरनको । भक्ति अपनी देहु माधो भवसागरके तरनको ॥ जगन्नाथ जगदीश स्वामी बदरीनाथ विश्वंभरं । द्वारकाके नाथ श्रीपति केशवं करुणाकरं । कृष्ण अष्टपदीकी धुन सुन कृष्णलोक सगच्छतं।गुरू रामानन्द नीमानन्द स्वामी छवि दत्तदास समापतं ॥ १६१ ॥

राग भैरव ।

मङ्गल आरती गोपालकी नित उठ मङ्गल होत निरखं मुख चितवन नयन विशालकी ॥ मङ्गल रूप श्यामसुन्दरको मङ्गल छबि भ्रुकुटी भालकी । चतुरभुज दास सदा मङ्गलनिधि वानिक गिरिधर लालकी ॥ १६२ ॥

राग रामकली ।

आरति कीजे श्याम सुन्दरकी । नन्दकुमार राधिका वरकी भक्ति कर द्वीप प्रेम कर वाती । साधु संगति कर अनुदिनराती ॥ आरति ब्रज युवती मनभावे ॥ श्याम लीला हित हरिवंश गावे ॥ १६३ ॥

आरती. कीजे सुन्दर वर की । नन्दकिशोर यशोदानन्दन नागर नवल ताप तम हरकी ॥ वन विलास मृदुहास मनोहर श्रवण सुधा सुख मोहन करकी । विहारीदास लोचन चकोर नित अंश प्रिया भुजधरकी ॥ १६४ ॥

राग कालिंगड़ा ।

आरती लीजो श्रीनन्दके लाला मदनगुपाला । टेरत हैं कबके जन ठाढे होउ वेग दयाला ॥ कोटि शशि तेरे नखकी शोभा कहाँ लौं दीपक बाला ॥ धुनि मिरदंग अनाहद बाजे क्या

रंका मेरी ताला ॥ नाचत लक्ष्मी सदा तेरे आगे नाना विधि बहु बाला। खण्ड ब्रह्मण्ड त्रैलोक नाचे हौं क्या कीट कंगाला॥ आछी तेरी आरती आछी तेरी शोभा आछी तेरी भक्ति रसाला । भगवानदास पर किरपा कीजै मेटियजी यमजाला ॥ १६५ ॥

राग श्यामकल्याण।

आरति युगलकिशोरकि कीजै । तन मन प्राण निछावर कीजै ॥ गौर श्याममुख निरखन कीजै । हरिको स्वरूप नयन भर पीजै ॥ रवि शशि कोटि बदन जाकी शोभा । ताहि देख मेरो मन लोभा ॥ फूलनकी सेज फूलन गल माला । रत्न सिंहासन बैठे नँदलाला ॥ मोर मुकट कर मुरली सोहै । नटवर वेष निरख मन मोहै ॥ ओढ़े नील पीत पट सारी । कुञ्जन ललना लाल विहारी ॥ श्रीपुरुषोत्तम गिरिवर धारी । आरति करत सकल व्रजनारी ॥ नँदनन्दन वृषभानु किशोरी । परमानँद स्वामी अविचल जोरी ॥ १६६ ॥

राग वरवा।

कञ्चन सिंहासन रत्न जड़ित प्रकाश रवि सम सोहई । तापर विराजत श्यामसुन्दर रूप मुनि जन मोहई ॥ मुख कमल पर अलिमाल सम अलकाँ कुँडल छवि पावई । हरि नासिका गर रुचिर मोती भाल तिलक सुहावई ॥ शिर मुकुट हीरा जड़ित कानन स्वर्ण कुण्डल छाजई । पट पीत गजमणि माल भूषण अंग धाम विराजई ॥ शुभ कण्ठ कण्ठी मणिमयी उर माल बैजंती लसै । भृगु रेख कौस्तुभ माणि जनेऊ देव मुनि जन मन बसै ॥ कङ्कण जड़ाऊ सहित पहुँची श्रीकृष्ण

हाथनमें बने। प्रति अँगुरी मुँदरी विराजत रत्न नग लागे घने॥ हरि बाम अँग सुवरण वरण अनूप अति राजत रमा। जग करन पालक हरन सेवत चरण नित शारद उमा॥ प्रभु चार करमें शङ्ख चक्र गदा पद्म अतिराजई। कटि पीत धोती किंकिणी दोउ चरण नूपुर बाजई॥ श्रीसहित विष्णु स्वरूप ऐसो प्रेमसे जो ध्यावई। तत्काल पावन होतहै चारों पदारथ पावई॥ १६७॥

राग गुर्जरी।

श्रितकमलाकुच मंडल धृतकुण्डल ए॥ कलित ललित बनमाल जय जय देव हरे॥ दिनमणि मंडल मंडन भवखण्डन ए॥ मुनिजन मानहंस जय०॥ कालिय विषधरगंजन जन-रंजन ए॥ यदुकुल नलिन दिनेश जय जय०॥ मधु मुर नरक विनाशन गरुड़ासन ए॥ सुर कुल केलि निधान जय जय०॥ अमल कमल दल लोचन भवमोचन ए॥ त्रिभुवन भवन निधान जय जय०॥ जनकसुताकृत भूषण जित दूषण ए॥ समर शमित दशकंठ जय जय०॥ अभिनव जलधर सुंदर धृतमन्दर ए॥ श्रीमुखचन्द्र चकोर जय जय०॥ तव चरणे प्रणता वयमिति भावय ए॥ कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय०॥ श्रीजयदेव कवेरिदं कुरुते मुदं मङ्गलमुज्ज्वल गीतं जय जय०॥ १६८॥

राग धनाश्री।

परम पुनीत प्रीति नँदनन्दन यही विचार विचार। कहो शुक श्रीभागवत विचार॥ हरिजीकी भक्ति करो निशिवासर अल्प जीवन दिन चार। चिंता तजो परीक्षित राजा सुन शिख शीख हमार॥ कमलनयनकी लीला गावो मिटगये कोटि विकार। भजन करो विश्वास तजो नृप चिंता शोकनिवार॥ खट्वांग दिलीप

मुहूरत उधरे तुमरे हैं सतवार । तुम तो राजा परमभक्त हो मानो वचन हमार ॥ हरिजीकी भक्ति युगोंयुग वरणों आन धर्म दिनचार। एक समय दुर्वासा पठये आये समय विचार ॥ कै राजा मोहिं भोजन दीजै कै जावो व्रत हार । राजा कहै मोहिंका सङ्कट दीजो नाहिन और उपाय । द्रुपदसुता कहै कृष्ण सुमिर लेहु तुमरे सदा सहाय ॥ तब पांडव सुत सुमिरण कीनो प्रगटे कृष्ण मुरार । चक्र सुदर्शनकी सुधि आई ऋषी चले व्रत हार ॥ अष्टादश षट तीन चार मिल करते यही विचार । एको ब्रह्म सकल घट पूरण केवल नाम अधार ॥ सतयुग सत त्रेता तप संयम द्वापर पूजा चार । सूर भजन कलि केवल कीर्त्तन लज्जा कान निवार ॥ १६९ ॥

राग सोरठा ।

टेर सुनो व्रजराज दुलारे । दीन मलीन हीन शुभ गुणसों आय पर्चों हूं द्वार तिहारे ॥ काम क्रोध अति कपट लोभ मद सोइ माने निज प्रीतम प्यारे । भ्रमत रह्यो इन संग विषयनमें तो पद कमलनमें उर धारे ॥ कौन कुकर्म कियो नहिं मैंने जो गये भूल सो लिये उधारे । यहां लौं खेप भरी रच पचके चकित रहे लखिके बनजारे ॥ अबतो एक बार कहो हँसके आजहि सों तुम भये हमारे । याही कृपाते नारायणकी वेगि लगेगी नाव किनारे ॥ १७० ॥

राग मलार ।

हम भक्तनके भक्त हमारे । सुन अर्जुन परतिज्ञा मोरी यह व्रत टरत न टारे॥ भक्तन काज लाज हिय धरके पांय पियादे धाये । जहँ जहँ भीर परी भक्तनको तहँ तहँ होत सहाये ॥ जो भक्तन सो बैर करत है सो निज वैरी मेरो । देख विचार भक्त हित कारण हांकत हों रथ तेरो ॥ जीतो जीत भक्त अपनेकी हारे हार विचारो । सूरश्याम जो भक्त विरोधी चक्र सुदर्शन मारों ॥ १७१ ॥

राग सारङ्ग ।

दास अनन्य मेरो निज रूप । दर्शन निमिष तापत्रयमोचन पर्सत मुकत करत गृहकूप ॥ मेरी बांधी भक्त छुड़ावै बांधै भक्त न छूटै मोहि। एक बेर मौको गहि बांधै तो पुनि मोपै जुवाब न होहि ॥ मैं गुण बन्ध सकलको जीवन मेरो जीवन मेरे दास । नामदेव जाके जिय जैसी तैसो ताको प्रेम प्रकाश ॥ १७२ ॥

राग विभास ।

ऊधो हौं दासनको दास । जो जन मेरो नाम जपतहैं मैं तिनहीके घट परकाश ॥ धन्नेकी मैं गऊ चराई नामेको देहरा फेरिया । त्रिलोचनके मैं भयो प्रतीया सुदामेंको दरिद्र हरिया ॥ कबीरके मैं रह्यो बनिजारा सैनेकी विरती धाया । गजके जाय चरण गहे मैं काढ जलो थल ल्याया ॥ जो जन कहत करौं मैं सोई सन्त मेरी रहरास । हित चित प्राण भक्त हैं मेरे गावतहै दुनीदास ॥ १७३ ॥

राग काफी ।

जो जन ऊधो मोहिं न बिसारे ताहि ना बिसारों छिन एक घरी । जो मोहिं भजे भजूं मैं वाको कल न परत मोहिं एक घरी ॥ काटूं जन्म जन्म मैं फंदन राखों सुख आनन्द करी । चतुर सुजान सभामें बैठे दुःशासन अनरीत करी ॥ सुमिरण कियो द्रौपदी जबहीं खैंचत चीर उबार धरी । ध्रुव प्रहलाद रैनि दिन ध्यावै प्रगट भये वैकुंठ पुरी ॥ भारतमें भरुहीके अंडा तापर गजको घंट ढुरी । अंबरीष गृह आये दुर्वासा चक्र सुदर्शन छांहि करी ॥ सूरके स्वामी गजराज उबारे कृपा करी जगदीश हरी ॥ १७४ ॥

फटकर पद।

राग रामकली।

जयति श्रीराधिके सकलसुख साधिके तरुणि मणि नित्त नवतनु किशोरी। कृष्णतनुलीन यन रूपकी चातकी कृष्ण मुख हिमकरेनकी चकोरी॥ कृष्ण दृग भृंग विश्राम हित पद्मिनी कृष्ण दृग मृगज बन्धन सुडोरी। कृष्ण अनुराग मकरन्दकी मधुकरी कृष्ण गुणगान रससिंधु बोरी॥ और आश्चर्य कहुँ मैं न देख्यों सुन्यो चतुर चौंसठ कला तदपि भोरी। विमुख पर चित्त ते चित्त जाको सदा करत निज नाहकी चित्तचोरी॥ प्रकृति यह गदाधर कहत कैसे बनै अमित महिमा इतै बुद्धि थोरी॥ १७५॥

धनि यह राधिकाके चरण। सुभग शीतल अति सुकोमल कमल कैसे वरण॥ रसिकलाल मन मोदकारी विरह सागर तरण। विवश परमानन्द छिन छिन श्यामजीके शरण॥ १७६॥

मेरी मति राधिका चरण रजमें रहो। यही निश्चय करचो अपने मनमें धरचो भूलके कोऊ कछू औरहू फल कहो॥ करम कोऊ करौ ज्ञान अभ्यास हूं मुक्तिके यत्न कर वृथा दहो देहो। रसिक वल्लभ चरण कमल युग शरण पर आश धर यह महा पुष्ट पथ फल लहो॥ १७७॥

राग मलार।

हमारे माई श्यामजीको राज। जाके अधीन सदाही साँवरो या व्रजको शिरताज॥ यह जोरी अविचल श्री वृन्दावन नहीं औरसे काज। विट्ठल विपुल विनोद विहारन ज्यों जलधर सो गाज॥ १७८॥

राग परज ।

हम श्री श्यामजूके बल अभिमानी। टेढ़े रहैं मोहन रसिया सो बोले अटपटी बानी ॥ पडे रहैं अलमस्त झकोए शिरपर राधा रानी। किशोरी अलीके प्राण जीवन धन वृन्दावन रजधानी ॥ १७९ ॥

सवैया ।

ब्रह्म मैं ढूँढ्यो पुराणन वेदन भेद सुन्यो चित चौगुने चायन ॥
देख्यो सुन्यो न कहूँ कबहूं वह कैसो स्वरूप औ कैसे सुभायन ॥
ढूँढत ढूँढत ढूँढि फिर्यौ रसखानि बतायो न लोग लुगायन ॥
देख्यो कहां वह कुञ्जकुटीनमें बैठे पलोटत राधिका पायन ॥१८०॥

राग कल्याण ।

राधाजी सुहागन राधे रानी। श्याम सुन्दर व्रजराज लाड़िली ताके वश अभिमानी ॥ शोभाको शिर छत्र विराजै वृन्दावन रजधानी। जीत लियो व्रजराज पपिहरा आनँद घन रसदानी ॥१८१॥

राग विहाग ।

राजत निकुंज धाम ठकुरानी। कुसुम सेज पर पौढी प्यारी राग सुनत मृदु बानी ॥ बैठी ललिता चरण पलोटत लाल दृष्टि ललचानी। पांय परत सजनीके मोहन हितसों हाहा खानी ॥ भई कृपालु लाल पर ललिता दे आज्ञा मुसुकानी। आवो मोहन चरण पलोटो जैसे कुँवारि न जानी ॥ आज्ञा दई सखीको प्यारी मुख ऊपर पटतानी। बीण बजाय गाय कछु तानन ज्यों उपजै सुख सानी ॥ गावनलगे रसिक मनमोहन तब जानी महरानी। उठ बैठी व्यासकी स्वामिनी श्रीवृन्दावन रानी॥ १८२॥

राग रामकली।

नव कुँवर चक्र चूडा नृपति सांवरो राधिके तरुणि मणि पट्टरानी शेश गृह आदि वैकुण्ठ पर्यंत लौं लोक थानैत व्रज राजधानी ॥ मेघ छप्पन कोटि बाग सींचत जहां मुक्ति चारों जहां भरत पानी । सूर शशि पहरुआ पवन जल इन्द्रहू वरुण दासी भाट निगम वानी ॥ धर्म कुतवाल शुक सूत नारद जहां करत चरचादि सनकादि ज्ञानी। सत्व गुण पौरिया काल बँधुवा जहां डांडी पति काम रति सुख निसानी ॥ कनक मरकत धरनि कुञ्ज कुसमित महल मध्य कमनीय सैनीय ठानी । पल न बिछुरत दोऊ तहिं न पहुँचत कोऊ व्यास महलिन लिये पीकदानी ॥ १८३ ॥

राग गौरी।

वृन्दावनके राजाहैं दोउ श्याम राधिका रानी । चार पदारथ करत मजूरी मुक्ति भरैं जहँ पानी ॥ कर्म धर्म दोउ बटत जेवरी घर छाये ब्रह्मज्ञानी । योगी यती तपी संन्यासी तिनहूं नेक न जानी ॥ पचिहारे वेद पुराण लगानिया गावत सगुणिया बानी । घर घर प्रेम भक्तिकी महिमा सहचारि व्यास बखानी ॥ १८४ ॥

राग देवगंधार ।

व्रज नव तरुणि कदंब मुकुट मणि श्यामा आज बनी । नख शिख लौं अङ्ग अङ्ग माधुरी मोहे श्याम धनी ॥ यों राजत कवरी गूंथत कच कनक कञ्ज बदनी । चिकुर चंद्रिकन बीच अरध विधु मानो ग्रसत फनी॥ सौभग रस शिर श्रवत पनारी पिय सीमंत ठनी। भ्रुकुटी काम कोदंड नयन शर कज्जलरेख अनी ॥ तरल तिलक ताटंक गंड पर नासा जलज मनी । दशन कुन्द सरसाधर पल्लव प्रीतम मन शमनी ॥ चिबुक मध्य अति चारु सहज सखि श्यामल

बिन्दु कनी । प्रीतम प्राण रतन संपुट कुच कंचुकि कसव तनी ॥ भुजमृणाल बल हरत बलै युत परस सरस श्रवनी । श्याम शीश तरु मनो मिंडवारी रची रुचिर रमनी ॥ नाभि गँभीर मीन मोहन मन खेलनको ह्रदनी । कृश कटि पृथु नितंब किंकिणिभृत कदलि-खंभ जघनी ॥ पद अंबुज जावक युत भूषण प्रीतम उर अवनी । नव नव भाव विलोक भाम इव विहरत वर करनी ॥ हित हरिवंश प्रशंसत श्यामा कीरति विशद घनी । गावत श्रवणन सु-नत सुखाकर विश्व दुरित दमनी ॥ १८५ ॥

राग कान्हरा ।

आज नीकी बनी श्रीराधिका नागरी । व्रज युवति यूथमें रूप औ चतुरई शील शृङ्गार गुण सबनमें आगरी ॥ कमल दक्षिण भुजा वाम भुज अंश सखि गावती सरस मिल मधुरसुर रागरी । सकल विद्या विदित रहस हरिवंश हित मिलत नव कुञ्जमें श्याम बड़ भागरी ॥ १८६ ॥

राग परज ।

आज उज्यारी भई लो रात । आप उज्यारी भई तेरी सेज उज्यारी चमक सुन्दर पिया प्यारी ॥ कान्हके शिर मुकुट विराजै राधा शिर जरद किनारी ॥ १८७ ॥

राग देवगन्धार ।

आज वन राजत युगुल किशोर । नँदनन्दन वृषभानु नन्दिनी उठे उनींदे भोर ॥ डगमगात पग परत शिथिल गति परसत नख शशि छोर । दशन वसन खंडित मुख मंडित गंड तिलक कछु थोर ॥ हित हरिवंश सम्हारन तन मन सुरत समुद्र झकोर ॥ १८८ ॥

आज अति राजत दंपति भोर । सुरत रंगके रसमें भीनें नागरी नंदकिशोर ॥ अंसन पर भुज दिये विलोकत इंदु वदन बिंब ओर । करत पान रस मत्त परस्पर लोचन तृषित चकोर ॥ छूटी लटन लाल मन करष्यो ये बांके चितचोर । परिरंभन चुंबन आलिंगन सुर मन्दिर कल घोर ॥ पग डगमगत चलत वन बिहरत नव निकुंज घनघोर । हित हरिवंश लाल ललना मिलि हियो सिरावत मोर ॥ १८९ ॥

राग बिलावल ।

आज इन दोउअन पै बलि जैये । रोम रोम सो छबि वरसतहै निरखत नयन सिरैये ॥ रूप रास मृदुहास ललित मुख उपमा देत लजैये । नारायण या गौर श्यामको हिये निकुंज बसैये ॥१९०॥

राग रामकली ।

उरझ्यो नीलांबर पीतांबर महियां । कुंडलसों लर लटबेसरसों पीतपट हारनसों बनमाल वहियांसों बहियां ॥ हंस गति अति छवि अङ्ग अंग रही फबि उपमा विलोकिबेको पटतर नहियां । कामके कलोल छूटे सेजहूंके सुख लूटे सूर प्रभु विलसत कदमकी छहियां ॥ १९१ ॥

राग प्रभाती ।

छाँडो कृष्ण युगल वैयां भोर भई अँगना । दीपककी ज्योति फीकी चंद्रहूँको चांदना ॥ मुखको तँवोल फीको नयनहूंको आँजना ॥ पनिघट पनिहारी जात हौंभी जाउँ यमुना । गैयां सब वनको जात पक्षी जात चुगना ॥ घर घर दधि मथन होत छनकत हैं कँगना । ग्वाल वाल द्वारे ठाढे उठो नन्दनँदना ॥ सूरश्याम मदनमोहन ऐसो नयनठगना । श्रीराधाजूके कुण्डल सोहैं कृष्णजूके बँगना ॥ १९२ ॥

राग कालिंगड़ा ।

प्रीतम नूपुर मति न उतारो । इनकी धुनि सुनि पार परोसिन कहा करेगी हमारो ॥ भले करो जग चर्चा मेरी तुम निज प्रण नहिं टारो। नारायण जे शरण चरणकी तिन्हें न कीजै न्यारो॥१९३॥

राग भैरव ।

भोर भयो जागो मनमोहन टेरत राधे प्राणपियारी। बोलत तमचर मुखर सुहावन निशि तम विगत भई उजियारी ॥ दधि मथि माखन तुमपै ल्याई मिश्रित मिश्री मधुर सुधारी। ललितादिक सखियां सब ठाढ़ीं मेवा पान लिये जल झारी ॥ सुन प्रियवानी सुखरस सानी नयन कमल खोले गिरिधारी । दरश परश नयनन फल पायो वारि अपनपौ भई सुखारी ॥ आदि सनातन राधेमोहन विलसत हुलसत सँग सुकुमारी । दंपति लीला सुखद सुशीला गावत दीन मगन बलिहारी ॥ १९४ ॥

राग रामकली ।

लटकत आवत कुंज भवनते । ढुर ढुर परत राधिका ऊपर जाग्रत शिथिल गवनते ॥ चौंक परत कबहूं मारग बिच चलत सुगंध पवनते। भर उसाँस राधा वियोग भय सकुचे दिवस रवनते ॥ आलस मिस न्यारे न होत हैं नेकहूँ प्यारी तनते । रसिक टरो जिन दशा श्यामकी कबहूं मेरे मनते॥ १९५ ॥

राग कान्हरा ।

प्रीतिकि रीति रँगीलोइ जानै । यद्यपि सकल लोक चूडामणि दीन अपनपो मानै ॥ यमुना पुलिन निकुंज भवनमें मान माननी ठानै । निकट नवीन कोटि कामिनि कुल धीरज मनहिं न आनै ॥ नश्वर नेह चपल मधुकर ज्यों आन आनसे वानै ॥ जय श्री हित हरिवंश चतुर सोइ लालहिं छाँड मेंड पहिचानैं॥१९६॥

राग रेखता।

हर इक तरफ चमनमें कैसी वहारछाई । चल देखिये छबीली गुलशन कि खुशनुमाई ॥ गेंदा गुलाब तुर्रा क्या मालती निवारी । फूलोंके भार सेती क्या झुकरही हैं डारी ॥ सखियोंके सङ्ग जाके देखी विपिनकि शोभा । नागर नवल छबीली छबि देखके मन लोभा ॥ फूलनकी गूंध वेनी सखियन भली बनाई । हँस हँसके ललित किशोरी उर कंठसों लगाई ॥ १९७ ॥

इक बंगलामें बैठो बागकी बहार है । घरको न जावो प्यारा यां भइ अवार है ॥ जाही जुही चमेली क्या मालती सुहाई । क्या सर्व सुहागिन सेवती क्या गुल डोरी लगाई ॥ चारों तरफ लगी हैं क्या गुलाबकी क्यारी ॥ क्या सर्व सफेद कनेरहैं क्या गुलाबास न्यारी ॥ हँस करके ललित किशोरी उर कंठसों लगाई । गुलशन सिधारो प्यारी क्या भई चमन सवाई ॥ १९८ ॥

कीजे गवन भवनमें वृषभानुकी दुलारी । देखो वहार कैसी वड़ गोपकी कुमारी ॥ फूले गुलाब चंपा केसर कि फूली क्यारी । सुन्दर खिली चमेली गेंदा खिले हजारी ॥ चहुँओर मोर बोलैं कोयल कि कूक प्यारी । पहरो सम्हार भूषण ओढ़ो सुरंग सारी ॥ जलदी चलो किशोरी अरजी यही हमारी । माखनको चोर ठाढो विनती करै तिहारी ॥ १९९ ॥

दादरा।

महलन चलो नवल अलबेली । रंग महलमें सेज बिछीहै चुन २ कुसुम चमेली ॥ चम्पा मरुवा और केवड़ा विच विच फूल रवेली। चित्रकारी मेरे देखोजी मन्दिरमें सुन्दर गर्व गहेली ॥ पुरुषोत्तम प्रभु रसिक शिरोमणि थारे चरणकी मैं चेली ॥ २०० ॥

लावनी।

चल वृषभानु कुमारी बाग अवलोक बनी शोभा भारी। भाँति भाँतिके खिले हैं फूल झुकी धरणी डारी॥ सुन प्रिय वचन चली हँस सुन्दर पहुँची नजर बागकी ओर। वचन अमीसे कहतहैं नागरिसे पिय नन्दकिशोर॥ देखो बाग मनोहरता क्यारिनमें कैसी बनी मरोर।अति सुढार हैं रोस सुरखी पट्टीकी हरी किनोर॥ फूले चीन गुलाब चारु गुल तुर्रा केतकि है न्यारी। भाँति भाँति०॥ गेंदा गुलाबास गुलतुर्रा गुलसब्बू गुलगोटी। गुलइलायची लगीहै गुलमेंहँदी रँगकी मोटी॥ फूली गुलचाँदनी भली यह गुलबहार झुकमें लोटी। कुन्द केवड़ा भली कचनारनकी सुन्दर जोटी॥ रायबेल चम्पा बेला मोतिया जूही फूली प्यारी। भाँति भाँतिके०॥ गुलखैरा गुलदाउद नीकी आवत महक चमेलीकी। मौलसिरी हैं ललित केवरा माधुरी बेलीकी॥ सर्रो सरस कनेर फुहारनमें वहार जलरेली की। हौज बीचमें भली शोभा बाढी जल केलीकी॥ फूले कंज तड़ागनमें तिनपै अलि पाँती झुकन्यारी। भाँति भाँतिके०॥ करो विहार आज या उपवन सुनो कुँवर जिय भावतहै। कुज छबीली छबीली ऋतु वसन्त सरसावत है॥ बोलत मोर चकोर हंस कोयल मधुरे सुर गावत हैं। पवन सुहावन विविध विधि चलत अनन्द बढ़ावत है॥ कुंजभवन मिलि बैठे दोऊ निर्खे रसिक जन बलिहारी। भाँति भाँतिके॥ २०१॥

राग दादरा।

प्यारी तेरे अंगमें फूलनकी वहार है। फूलनके बाजूबन्द फूलनके गजरे फूलनके सोहैं गलहार॥ चम्पा मरुवा राय चमेली सब फूलनमें गुलाब। चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि सब गोपिनमें गुपाल॥ २०२॥

राग वसन्त।

नई बहार आई मन भाई । ब्रजकी नारि सब बन बन मिल मिल फुलवा बीननको धाई ॥ डारी डारी रस लेत भँवरवा कोयलिया बोल रही । अँबुआ मौल रहे सब शीतल मन्द सुगन्ध मारुत बहे ललित लता द्रुम छाई ॥ बोलत सारस मोर कोकिला नाना पक्षी शब्द सुनाई । चलो न वेग कुँवरि कुञ्जनमें फूल रही फुलवारी प्यारी ॥ तोहिं श्याम बुलावत लेहु प्रेम रस कृष्णदास मन भाई ॥ २०३ ॥

ललित लवंग लता परिशीलन कोमल मलय समीरे । मधुकर निकर करंबित कोकिल कूजित कुंज कुटीरे ॥ विहरति हरिरिह सरस वसन्ते ॥ नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहि जनस्य दुरंते ॥ उन्मद मदन मनोरथ पथिक वधू जन जनित विलापे ॥ अलिकुल संकुल कुसुम समूह निराकुल वकुल कलापे ॥ मृगमद सौरभ रभस वशंवद नव दल माल तमाले ॥ युवजन हृदय विदारण मनसिज नख रुचि किंशुक जाले ॥ मदन महीपति कनक दण्ड रुचि केशर कुसुम विकासे ॥ मिलित शिलीमुख पाटलि पटल कृतस्मर तूण विलासे ॥ विगलित लज्जित जगदवलोकन तरुण करुण कृतहासे ॥ विरहिनि कृंतन कुन्त मुखाकृति केतकि दन्तुरिताशे ॥ माधविका परिमल ललिते नव मालति जाति सुगन्धौ ॥ मुनि मनसा मपि मोहन कारिणि तरुणाकारण बन्धौ । स्फुरदति मुक्तलता परिरंभण मुकुलित पुलकित चूते ॥ वृन्दावन विपिने परिसर परि गत यमुना जल पूते ॥ श्रीजयदेव भणितमिद मुदयतु हरिचरण स्मृति सारं ॥ सरस वसन्त समय वन वर्णन मनुगत मदन विकारं ॥ २०४ ॥

देखो सखि आज बन्यो श्रीवृन्दाविपिन समाज। आनंदित सब लोक ओक सुख सदा श्यामको राज॥ राधारमण वसंत मचायो पञ्चम धुनि सुनि कान। धरणि गिरत सुर किन्नर कन्या विथकित गगन विमान॥ किलकत कोकिल कुँजन ऊपर गुंजत मधुकर पुञ्ज। बजत महारव वेणु झांझ डफ ताल पखावज रुञ्ज॥ केशर भर भर ले पिचकारी छिरकत श्यामहि धांई॥ छिरक कुंवर बूका भर चोवा लिये कण्ठ लिपटाई॥ वर्षत सुमन विबुध कुल ऊपर पावन परम पराग। तन मन धन न्योछावर कीनो निरखि व्यास बड़भाग २०५॥

कोयलिया बोलन लागी रे। फूल रही फुलवारी पिय प्यारी ऋतु वसंत आई मदन जागे केसू फूले अँबुआ मौले भ्रमर करत गुंजार॥ पिया बिन मेरो मन भयो विरागी॥ अवधि बीती अजहूं नाहिं आये कुब्जा सौति बिरमाये॥ रैनि दिवस रसना रटत उनहीं सङ्ग लागी॥ प्रीत रीत श्याम जाने दर्शन देहु सुखनिधान॥ कृष्ण-दास मिटे प्यास आनँद उर बाढ़े॥ २०६॥

राग विभास।

प्यारी तुम कौन हो री फुलवा बीनन हारी॥ नेह लगनको बन्यो बगीचा फूल रही फुलवारी। नन्दलाल वनमाली सों तुम बोलो क्यों नहिं प्यारी॥ हँस ललिता तब कही श्यामसों यह वृषभानु दुलारी। तिहारे कहा लागे या वनमें रोके गैल हमारी॥ राधेजू फल फूल लिये हैं विविध सुगंध सँवारी। शूर श्याम राधे तन चितवत इकटक रहे निहारी॥ २०७॥

राग कालिंगडा।

कोई फुलवा लेहुरी फुलवा। नील श्वेत पीरे पचरंगी वरण वरण के हरवा॥ चुन चुन कली चमेली चटकी टटकी दोना मरुवा। ललित किशोरी विवश होय चट पहराये पिया गरवा॥ २०८॥

राग जंगला दादरा।

प्यारी मैं तो तिहारी मालिनियां। मेरी फुलबगियामें चलोगे के ना विविध रंग फूली फुलवारी अलबेली मन भामिनियां ॥ बहुत दिनाकी आशा लागी सींचसींच कर कामिनियां । सफल करो पद तल अंकित कर ललित किशोरी दामिनियां ॥ २०९ ॥

राग गौरी ।

द्वारे मेरे बंसी कौन बजावै । नई नई तान लेत वंसीमें ठाढ़ो गौरी गावे॥ चलो सखी वाको मुखदेखें नन्दकिधेनु चरावे। सांवरी सखी सोई वड भागन जो हँस कंठ लगावे॥ २१० ॥

राग गौरी ।

मुरलीकी टेर सुनावे री माईको । मोरे आँगनमें ऐडोई डोले मोर मुकुट छवि भावे ॥ श्रवण सुनत रस मीठी वतियां रहस रहस कर गरे लगावे । सूर घूँवट वाहन सुत देखत लज रिपु छूटत जावे ॥ २११ ॥

राग देश ।

अकेली मत जइयो राधे यमुना तीर । बंसीवटमें ठग लागत हैं सुन्दर श्याम शरीर ॥ विन फाँसी विन भुज वल मारत बिन गांसी बिन तीर ॥ वाके रूप जालमें फँसिके को वचिहै ऐसो वीर॥ घर बैठो भर देउँ गगरिया मनकें मनमें राखो धीर । वीर न पान करन हम त्याग्यो कालिन्दीको नीर॥ धन सुत धाम गये नहिं चिंता प्राण गये नहिं पीर । सूरदास कुलकान गई ते धृग धृग जन्म शरीर ॥ २१२ ॥

राग बिहाग।

मेरे गिरिधारीजीसों कवन लरी । गिरिधारी जीके चरण कमल पर वार डारों सगरी ॥ चल री यशोदा मैया तोहिं बताऊं जो हमसे झगरी। गोरे वदन पर नीला पट ओढ़े चंचल चपल खरी ॥ तू तरुणी मेरो गिरिधर बालक कैसे भुज पकरी । गिरिधर मेरो आंसू भर रोवे तू मुसकात खरी ॥ तूतो यशोदा मेरो न्याव न कीनो सुतकी ओर करी। सूरदास वनमें जब पाऊँ तो बातें हमरी ॥ २१३॥

राग रामकली ।

श्रीयमुना तिहारो दरश मोहिं भावै । श्रीगोकुलके निकट बहति है लहरनकी छबि आवै । सुखकरनी दुखहरनी यमुना जो जन प्रात नहावै। मदनमोहनको अतिही प्यारी पटरानी जो कहावै ॥ वृन्दावनमें रास रच्यो है मोहन मुरली बजावै । सूरदास प्रभु तुमरे मिलनको वेद विमल यश गावै ॥ २१४ ॥

राग कालिंगड़ा ।

सखी स्वप्नेमें घबरानी तुझ पर जादू किन डारा रे । स्वप्नेमें देख्यो वाहीको मिलाऊं तनु तेरेकी तपन मिटाऊँ तीन लोक मूरत लिख ल्याऊं चित्ररेखा तब नाम धराऊं पहिले लिखों स्वर्गकी रचना तामें ना कोऊ न्यारा रे ॥ दूजे लिखों पतालके बसैया तामें ना कोउ स्वप्न दिखैया बार बार मोहिं लेत बलैया आन मिलाओ मेरे चितको चुरैया क्या करों कछु वश ना मेरो होत न घटसे न्यारा रे । तीजे लिखों मध्यके वासी श्रीवृन्दावन लिख लइ काशी द्वारावतीके हो तुम बासी श्रीकृष्ण ठाकुर अविनाशी तब सकुचाय रहीं कछु मनमें घूँघट बहुरि सँवारा रे ॥ प्रद्युमनकी मूरत लिखल्याई तब वाको कछु हाँसी आई अनिरुद्धको जब दियो दिखाई प्रेम

सहित अँखियां भर आई पिया पिया कर रोवन लागी स्वप्नेमें मोहिं मारा रे ॥ तभी द्वारका पहुँची जाई पलँग सहित वाको ले आई ऊपाको जब दियो मिलाइ तब वाने कछु दछिना पाई विष्णुदास मथुराको वासी जीवन प्राण हमारा रे ॥ २१५ ॥

पद ।

भजन भावना हीय न परसी प्रेम नहीं उर कपटी । कुआँ परयो आकाश उड़त खग ताको करत जो झपटी ॥ रसिक कहावें वेई जिनके युगल मिलनकी चटपटी । वृन्दावन हित रूप कहां लग वरणों सृष्टि अटपटी ॥ २१६ ॥

कुण्डलिया ।

साँचेश्रीराधा रमण, झूँठो सब संसार । बाजीगरको पेखनो, मिटत न लगत अबार ॥ मिटत न लगत अबार भूतकी संपति जैसे । महरी नाली पूत धुआंके बादर तैसे ॥ भगवत ते नर अधम लोभवश घर घर नाचें । झूँठे घडे सुनार वैनके बोले साँचे ॥ २१७ ॥

छंद ।

देखा देखी रसिक न होइ है रस मारगहै बंका । काह सिंहकी सरवर करिहै गीदर फिरे जो रंका ॥ असहन निंदा करत पराई कभूँ न मानी शंका । वृन्दावन हित रूप रसिक जिन दियो अनन्यपथ डंका ॥ २१८ ॥

सबसों न्यारे सबके प्यारे ऐसी रहनी रहिये । स्तुति अरु निंदा छोड़ पराई युगल जीभ यश गहिये ॥ दुख सुख हानि लाभ मम वर्तन आनि परे सो सहिये । भगवत चरण शरण गह गोविंद मन वांछित सुख लहिये ॥ २१९ ॥

कवित्त ।

कामिनी निहार्‌यो काम सन्तन विचार्‌यो राम, योगी योग ध्यान सिद्ध सिद्धन विशेषिये । दुर्जनको शारदूल मल्लनको वज्र तूल, शत्रुनको सूर प्रजा प्रजापति पेखिये ॥ घन घटा मोरनको चन्द्रमा चकोरनको, भ्रमरको कंज मंजु मकरन्द लेखिये कंस ! जाने काल ग्वाल बाल सब जाने सखा, एक नंदलाल ही अनेक रूप देखिये ॥ २२० ॥

राग विहाग ।

ऊधो चलो विदुर घर जैये । दुर्योधनके कहा काज जहँ आदर भाव न पैये ॥ गुरुमुख नहीं बड़ो अभिमानी कापर सेवक रहिये । टूटी छत्त मेघ जल बरसै टूटो पलँग बिछैये ॥ चरण धोय चरणोदक लीनो त्रिया कहै प्रभु ऐये । सकुचत वदन फिरत छिपाये भोजन काह मँगैये ॥ तुमतो तीन लोकके ठाकुर तुमसे कहा दुरैये । हमतो प्रेम प्रीतिके गाहक भाजी साग चखैये ॥ सूरदास प्रभु भक्तनके वश भक्तन प्रेम बढ़ैये ॥ २२१ ॥

राग जंगला ।

जो मैं हरी न शस्त्र गहाऊँ । तो लाजों गंगा जननीको संतनु सुत न कहाऊं ॥ शर धनु तोड़ महारथ मारूँ कपिध्वज सहित गिराऊँ । पांडव सेन समेत सारथी शोणित सिन्धु बहाऊं ॥ जीवों तो यशलेवँ जगतमें जीत निशान फिराऊँ । मरों तो मण्डल भेदि भानुको सुरपुर जाय बसाऊँ ॥ इतनी शपथ करौं प्रभु तुम्हरी क्षत्रिय गति ना पाऊँ । सूर श्याम रण विजय सखाको जियत न पीठ दिखाऊँ ॥ २२२ ॥

जो मैं पारथ नाम कहाऊँ । हठ कर इंद्र चाप शोणित शर मज्जन वेग कराऊँ ॥ गीध कबंध कन्ध बैठाऊँ काग कराल उड़ाऊँ ।

दे भगदत्त द्रोण दुश्शासन इक इक बाण लगाऊँ ॥ प्रलय करूँ कौरव दल ऊपर जंबुक कुलहिं अघाऊं। भीष्म कर्ण राजा दुर्योधन शरकी सेज सुलाऊं ॥ इतनी न करों शपथ मोहिं कृष्णकी क्षत्रिय गति ना पाऊं। सूरदास पारथ परतिज्ञा इक छत्त राज कराऊं ॥ २२३ ॥

राग सोरठ।

वा पट पीतकी फहरानि । कर गह चक्र चरणकी धावन न हिं बिसरत वह बानि ॥ रथ सों उतर वेगि पग धावन कच रज की लपटानि । मानो सिंह शैलसे उतर्यो महामत्त गज जानि ॥ जन गोपाल मेरो प्रण राख्यो मेट वेदकी आन। सोई सूर सहायक हमरे गावत वेद पुरान ॥ २२४ ॥

कवित्त।

आगे प्रहलाद बाबा तेरो नृप ऐसो रह्यो, जाके हित राम नरसिंह रूप धारयो है। जाको जश परम पुनीत व्यास भागौतमें, गायो सो भयो है भक्त प्रभुजीको प्यारो है ॥ तैसोई सपूत भयो वैरोचन ताके आप, छागो जश जग कुल ऐसो सो तिहारो है । पूजो मनकाम मेरी सुनिये हो राजा बलि, याते आशीर्वाद दानी तुमको हमारो है ॥ २२५ ॥

राग शामकल्याण।

सुन लेहु बात हमारी नगर सब। पढ़ने जाओ प्रहलाद संग सब राम नाम उर धारी ॥ हरनाकुशके नाश करनको होंगे नरसिंह अवतारी। माखन चोर दास यों भाषे यह कह भवन सिधारी॥२२६॥

सुन लेहु राजकुमार। अरज मेरी याके पुत्र चढ़े अगनीमें राम बचावन हार ॥ राम नाम है सत्य कुँवर जी झूठो सब संसार। माखनचोर दास यों भाषे जाके हरि आधार ॥ २२७ ॥

छंद ।

मतले तू रामको नाम । झूठ मत बोले वृथा कुमारी । मेरो जो सुन पावेगो पिता खाल कढ़ लेगा भुस भरवारी ॥ अरी यह तो अगिन चढ़े बच नहीं इनको अपराध हमारी । यह तो बिल्ली करत विलाप दोष भयो भारी ॥ २२८ ॥

राग श्यामकल्याण ।

मतले रामको नाम मौत जिन घेरी कुम्हारी । काल जो तेरे शिरपर आयो आगई दशा तिहारी ॥ राम नामको वाद न कीजै लीजै शोच विचारी । माखनचोर दास यूं भाषे मेरो पिता बलधारी ॥ २२९ ॥

छंद ।

कुम्हरी मनमें अति शोच चली प्रहलाद बुलावन आई । डेउढ़ी पर ठाढ़ी भई अरज दासीने जाय सुनाई । तुम सुनहो राजकुमार मेरो आँवा उतर्यो आज तुम चलो वेग महाराज वेर भई भारी ॥ २३० ॥

माताजी दूँगा द्रव्य अघाय कहूँ मैं सत्य कि वानी । गुण भूलोंगे नाहिं पढाई तैंने राम कहानी ॥ माताजी भले दिये उपदेश मैंने हिरदेमें जानी । विष प्याले छुड़वाय प्याय दियो अम्मृत पानी ॥ २३१ ॥

छंद ।

पाँच वरसके भये कुँवर जी राजा निकट बुलाये जी । ले प्रहलाद गोद बैठाये मनमें मोद वढाये जी ॥ षंडामर्का ब्राह्मण दोनों राजा निकट बुलाये जी । लेजावो चटसार कुँवरको अस कछु रीति पढ़ाओजी ॥ यह है कुलकी रीति हमारे कठिन कठोर कुचाली जी । धर्मको खंडन पापको मंडन हत्या हृदय बसाओ जी ॥२३२॥

बजावत मन्द ॥ मंगल चाल मनोहर मंगल दर्शन होत मिट्यो दुख द्वंद । मंगल व्रजपति मंगल मधुवन मंगल यश गावत श्रुति छंद ॥ २४० ॥

राग भूपाली कल्याण ।

मुकुट पर वारी जाऊँ नागर नन्दा । सब देवनमें कृष्ण बडे हैं ज्यों तारोंमें चन्दा ॥ सब सखियनमें राधे बडी हैं ज्यों नदियों में गंगा । चन्द्र सखी भज बालकृष्ण छवि काटो यमके फन्दा॥१४१॥

राग देश ।

आदि मणि ब्रह्म अवतार मणि कृष्ण युग मणि सतयुग दिशन पूर्व सब घट रमण रमैया । दिवस मणि भास्कर निशा मणि चन्द्रमा उडुगण मणि ध्रुव द्वीपन मणि जंबूद्वीप खण्डन मणि भरतखंड चतुर महैया ॥ स्वर्गमणि वैकुंठ राजन मणि इन्द्र गुरुन मणि बृहस्पति वेद मणि ब्रह्मा सब जग रचैया ॥ हस्तिन मणि ऐरावत विहंगन मणि वैनतेय पुराण मणि श्रीभागवत परमहंस मणि शुकदेव कहैया ॥ ज्ञानिन मणि महादेव ध्यानिन मणि लोमश ऋषि आयुर्बल मणि मार्कण्डेय गिरि मणि सुमेरु थिरैया । तरुण मणि कल्पवृक्ष वीरन मणि महावीर सागर मणि पय समुद्र सरित मणि विष्णुपदी तीरथ मणि व्रज स्थान हरि प्रगटैया ॥ भक्तन मणि प्रहलाद यतियन मणि लक्ष्मण नारिन मणि उर्वशी तुरँगन मणि उच्चैःश्रवा इंद्रधाम रहैया । रागमणि भैरव ऋतुन मणि वसन्तऋतु शास्त्रमणि वेदांत रञ्जन मणि सङ्गीत पार ना लहैया ॥ ताननमणि तान सेन गायन मणि नारद गंधर्व मणि हाहाहूहू वीणन मणि सरस्वती बीनप्रात ही नाम लेया । स्वरन मणि खरज स्वर सुर्तन मणि तीव्यग मूर्छना मणि आनंदी तिथिन मणि एकादशी उत्तम मणि गोविंद नाम ले कृष्णनंद भवसागर पार पैया ॥ २४२ ॥

राग बिलावल।

धर्ममणि मीन मर्याद मणि रामचन्द्र रसिक मणि कृष्ण और तेज मणि नरहरी। कंठन मणि कमठ बल विपुल मणि वाराह छलन मणि वामन देह विक्रम धरी ॥ गिरिन मणि कनकगिरि उदधिन मणि क्षीरनिधि सरन मणि मानसर नदिन मणि सुरसरी। खगन मणि गरुड़ द्रुमन मणि कल्पतरु कपिन मणि हनूमान पुरिन मणि अवध पुरी ॥ सुभट मणि परशुधर क्रान्तमणि चक्र वर शक्ति मणि पार्वती जान शंकर बरी। भक्त मणि प्रहलाद प्रेम मणि राधिके मणिनकी माल गुह कंठ कान्हर धरी ॥ २४३ ॥

राग भैरव।

मदन गुपाल हमारे राम। धनुप बाण धर विमल वेणु कर पीत वसन अरु तन घनश्याम ॥ अपनी भुज जिन जलनिधि बांध्यो रास नचाये कोटिक काम। दशशिर हति सब असुर सँहारे गोवर्द्धन धारयो कर वाम ॥ तब रघुवर अब यदुवर नागर लीला नित्त विमल बहु नाम। परमानन्द प्रभु भेद रहित हरि निज जन मिल गावत गुणग्राम ॥ २४४ ॥

राग सारंग।

हरि हरि हरि सुमिरण करो। हरि चरणारविंद उर धरो ॥ हरिकी कथा होतहै जहां। गङ्गा हूं चल आवै तहां ॥ यमुना सिंधु सरस्वति आवे। गोदावरी विलंब न लावे ॥ सर्व तीर्थको वासो तहां। सूर हरि कथा होतहै जहां ॥ २४५ ॥

राग बिलावल।

नन्दरायके नव निधि आई। माथे मुकुट श्रवण मणि कुण्डल पीत वसन भुज चारु सुहाई ॥ बाजत ताल मृदंग यन्त्र गति चरचि

अरगजा अंग चढ़ाई । अक्षत दूब लिये शिर वन्दत घर घर वन्दन वार बँधाई ॥ छिरकत हरद दही हिय हर्षत गिरत अंक भर लेत उठाई । सूरदास सब मिलत परस्पर दान देत नहिं नन्द अघाई ॥ २४६ ॥

राग जैतश्री।

नंदजू मेरे मन आनंद भयो हौं गोवर्द्धन ते आयो । तुमरे पुत्र भयो हौं सुनिके अति आतुर ह्वै धायो ॥ वंदीजन अरु भिक्षुक सुन सुन जहां तहां ते आये । इक पहले ही आशा लागी बहुत दिनन के छाये ॥ ते पहरे कञ्चन मणि भूषण नाना वसन अनूप । मोहि मिले मारगमें मानो जात कहूंके भूप ॥ तुमतो परम उदार नंदजी जो मांग्यो सो दीनों । ऐसो और कौन त्रिभुवन में तुम सर साटो कीनो ॥ कोटि देहु तो परचो रहैं गो बिन देखे नहिं जैहों । नन्दराय सुन बिनती मोरी तबहीं बिदा भल ह्वैहौं॥ दीजै वेग कृपा कर मोको जो हौं आयों मांगन । यशुमति सुत अपने पांयन चल खेलत आवै आँगन ॥ मदन मोहन मैया कह टेरैं यह सुनके घर जाऊँ । हौं तो तुम्हरे घरको ढाढ़ी सूरदास मोहिं नाऊं ॥ २४७ ॥

राग कान्हरा ।

अनोखा लाड़ला खेलन मांगत चन्द । हँसन खेलनको रारि करत है मनमें भयोरी अनन्द ॥ २४८ ॥

राग जैतश्री।

दूर खेलन जिन जाहु ललन मेरे हाऊ आये हैं। तब हँस बोले कान्हर मैया इनको किन्हो पठाये हैं ॥ यमुनाके तट धेनु चरा वत जहां सघन बन झाऊँ । पैठ पताल व्याल गह नाथ्यो तहां न देखे हाऊँ ॥ अब डरपत सुन सुन यह बातें कहत हँसत बलदाऊ ।

सप्त रसातल शेषासन रहि तबकी सुरत भुलाऊँ ॥ चार वेद लै गयो शंखासुर जलमें रह्यो लुकाऊँ । मीन रूप धरके जब मारयो तबहिं रहे कहँ हाऊ ॥ मथि समुद्र सुर असुरनके हित मन्दर जलहि खिसाऊँ कमठ रूप धरि धरणि पीठ पर सुख पायो सुरराऊँ ॥ जब हरिणाक्ष युद्ध अभिलाष्यो मनमें अति गरबाऊँ । धरि वाराह रूप रिपु मारयो लै क्षित दन्त अगाऊँ ॥ विकटरूप अवतार धरयो जब जन प्रह्लाद बचाऊँ । होय नरसिंह जब असुर विदारयो तहां न देख्यो हाऊ ॥ वामन रूप धरयो बलि छल कर तीन पैग बसुधाऊ । श्रम जल ब्रह्म कमंडलु राख्यो दरश चरण परसाऊँ ॥ मारयो मुनि बिनहीं अपराधहिं कामधेनु लै आऊँ । इकइस बेर करी निछत्र क्षिति तहां न देख्यो हाऊ ॥ राम रूप रावण जब मारयो दश शिर बीस भुजाऊ । लंक जराय छार जब कीनो तहां रहे कहँ हाऊ ॥ माटीके मिस बदन बिकास्यो जब जननी डरपाऊँ । मुख भीतर त्रैलोक दिखायो तबहुँ प्रतीति न आऊ ॥ नृपति भीम सों युद्ध परस्पर तेहि कर भाव बताऊँ । तुर्त चीर द्वै टूक कियो धर ऐसे त्रिभुवन राऊ ॥ भक्त हेतु अवतार धरयो सब असुरन मार बहाऊं । सूरदास प्रभुकी यह लीला निगम नेति नित गाऊ॥२४९॥

राग रामकली ।

किहि मिस यशोमतिके जाऊँ । सकल सुखनिधि मुख निरखके नयन तृपा बुझाऊँ॥ द्वारे आरज सभा जुर रही निकसबे नहिं पाऊँ। बिन गये पतिवर्त्त छूटे हँसै गोकुलगाउँ॥श्याम गात सरोज आनन ललित लेले नाउँ।सूरलगन कठिन मनकी कहो काहि सुनाउँ ॥२५०॥

राग दादरा ।

जगमें देखत हूँ सब चोर । जोर इंद्रिन वश महा लुब्ध मन मोर ॥ पाँच चोर सबके उर भीतर चोरी करैं करावें । चोर चोर

सब जगको खावें कोऊ पार न पावें ॥ हाकिम चोर चोर मुतसद्दी चोर शहर व्यापारी । तैसेई चोर जानिये सबको कहाँ पुरुष कहँ नारी ॥ ब्रह्मा चोर वदत वृन्दावन बालक वत्स चुरायक । साधु चोर हरि हृदय चुरायो जो त्रिभुवनके नायक ॥ पाँच सात मिल चोरी कीनो जो जासों बन आई । सूरदास गुण कहँ लग बरणे माखन चोर कन्हाई ॥ २९१ ॥

दोहा ।

विश्वभरण पोषण करन, कल्पतरोवर नाम ।
सो प्रभु दधि चोरी करत, प्रेम विवश भगधाम ॥

राग धनाश्री ।

कबके बाँधे अखल दाम । कमलनयन बाहर कर राखे तु बैठी सुखधाम ॥ हो निर्दयी दया कछु नाहीं लाग रही घर काम। देख क्षुधाते मुख कुम्हलानो अति कोमल तनु श्याम ॥ छोरो वेग बडी बिरिया भई बीत गये युग याम । तेरी त्रास निकट नहिं आवत बोल सकत नहिं राम ॥ जन कारण भुज आप बँधाई वचन कियो ऋषि काम । ता दिनते यह प्रगट सूर प्रभु दामोदर भो नाम ॥ २९२ ॥

राग सारंग ।

हलधरसों कह ग्वालिं सुनायो । प्रातहिं ते तुम्हरो लघु भैया यशुमति ऊखल बांधि लगायो ॥ काहूके लरिकहिं हरि मार्‍यो भोरहिं आन रोवत गोहरायो । तबहींते बांधे हरि बैठे सो हम तुमको आन जनायो ॥ हम बरजी बरज्यो नहिं मानत सुनतहि बल आतुर है धायो । सूरश्याम बैठे ऊखल लग माता तनु अतिही त्रसायो ॥ २९३ ॥

निरख श्याम हलधर मुसकाने। को बाँधै को छोरे इनको यह महिमा येही पै जाने॥ उत्पति प्रलय करत हैं येई शेष सहस मुख सुयश बखाने। यमलार्जुन तरु उधरन कारण करत आप मन माने॥ असुर सँहारन भक्तहि तारन पावन पतित कहावत बाने। सूरदास प्रभु भाव भक्तिके अति मति यशुमति हाथ बिकाने॥ २५४॥

छन्द।

अनुसार अस्तुति युगल प्रेमानन्द मन सन्मुखखरे॥ जै जै भगत हित सगुण सुन्दर देह धर धावत हरे॥ जो रूप निगम नेति गायो बुद्धि मन वाणी परे। सो धन्य गोकुल आय प्रगटे धन्य यशुमति उर धरे॥ धन्य ब्रज धनि गोप गोपी गाय दधि माखन मही। धन्य गोविंद बाललीला करत माखन चोरही॥ धन धन उरहनो देत नित उठि धन्य अनख बढ़ावहीं। धनिसो जननी बांधि राखत जाहि वेद न पावहीं॥ धन्य सो तरु जासु ऊखल धनि सुजन गढ़ लाइयो। धन्य सो तृण जासुकी रज्ज श्याम भुजन बँधाइयो॥ धन्य ऋषि धनि शाप दीनो अति अनुग्रह सो कियो। जासु शिव ब्रह्मादि दुर्लभ नाथ तुम दर्शन दियो॥ अब कृपा कर देहु वर प्रभु चरण पंकज मति रहै। जहां जन्महि कर्म वश तहँ एक तुमरी रति रहै॥ दीनबंधु कृपालु सुन्दर श्याम श्रीव्रजनाथ जू। राखिये निज शरण अब प्रभु करिये हमहिं सनाथ जू॥२५५॥

पारब्रह्म परमेश्वर अविगत भुवन चतुरदश नाथ हरी। जब जब भीर परी सन्तन पै प्रकट होय प्रतिपाल करी॥ आदि अन्त सबके तुम स्वामी ब्रह्मादिक हैं अनुगामी। कृष्ण नमामि नमामि नमामी दयासिंधु अंतर्यामी॥ जाको ध्यान धरत योगी जन शेष जपत नित नाम नये। सो भव तारण दुष्ट निवारण संतन कारण प्रगट भये॥ जाको नाम सुनत यम डर्पत हरहर कांपत

काल दिये । ताको पकर नन्दकी रानी ऊखल सों लै बांध दियो ॥ जै दुखमोचन पंकजलोचन उपमाजाय न कहत बनी । जै सुखसागर सब गुण आगर शोभा अङ्ग अनङ्ग घनी ॥ नारदको हम अति गुण माने शाप नहीं वरदान दियो । जा कारणते प्रभु आपने दर्शन दियो सनाथ कियो ॥ जो हरहूके ध्यान न आवत अपर अमर हैं किहि लेखे । सो हरि प्रगट नन्दके आँगन ऊखल सङ्ग बँधे देखे ॥ जिनकी पदरजको सुर तरसें अगम अगोचर दनुजारी । त्राहि त्राहि प्रणतारत भंजन जन मन रंजन सुखकारी ॥ तुमारी माया जीव भुलानो किहिं विधि नाथ तुम्हें जाने ।तुमहीं कृपा करो जब स्वामी तवहीं तुमको पहँचाने ॥ हे मुकुंद मधुसूदन श्रीपति कृपानिवास कृपा कीजे । इन चरणनमें सदा रहै मन यह वरदान हमें दीजै ॥ जै केशव जै अधम उधार दयासिंधु हरि नित्य मगन । जै सुन्दर व्रजराज शशीमुख सदा वसो मम हृदय गगन ॥ रसना नित तुमरे गुण गावे श्रवण कथा सुन मोद भरें । कर नित करे तुम्हारी सेवा नयन संत जन दरश करें ॥ नेम धर्म व्रत जप तप संयम योग जज्ञ आचार करें । नारायण विन भक्ति न रीझो वेद सन्त सव साख भरें ॥२५६॥

राग सुघराई ।

वजावे मुरलीकी तान सुनावे यहि विधि कान्ह रिझावे । नटवर वेप वनाय चटकसों ठाढ़ो रहे यमुनाके तीर नित वन मृग निकट वुलावे ॥ ऐसो को जो जाय यमुनाते जल भर घरहि लै आवे । मोर मुकुट कुण्डल वनमाला पीतांबर फहरावे ॥ एक अङ्ग शोभा अवलोकत लोचन जल भर आवे । सूर श्यामके अङ्ग अङ्ग प्रति कोटि काम छवि छावे ॥ २५७ ॥

राग वसन्त ।

बरजं यशोदे तू अपनो बाल । रसिया गोपाल नित उठ हमसे करत रार ॥ स्नान करन गई यमुना तीर, लहि भूषण वस्त्र धरे हैं तीर ॥ जल प्रवाह मोरी लागी दीठ । तेरा कृष्ण कुँवर मोरी मलत पीठ ॥ रहु री ग्वालन मत झूँठ बोल । मेरा कृष्ण कुँवर झूले पलना ओर ॥ ना खावे अन्न ना पीवे नीर । वह कौन समय गयो यमुना तीर ॥ घर आवे जब बाल सार । आंगन धाये जब ढोटा सार । देखो सूर प्रभुके यह ख्याल । उठ चली है ग्वार मुखो भई है लाल ॥ २५८ ॥

राग बरवा ।

माई नित उठ कुंजन रोकत व्रज वनवारी । कल न परत मोरी मटकी फोरी और भीजी पचरँग सारी ॥ जाय कहूं जी मैं नन्दजू के आगे कबके छैल विहारी । हम रँग प्यारा देख मुसकत हैं और देत रस गारी ॥ २५९ ॥

पीलो ।

हे प्यारी नाहिं फोरी गगरिया हेरी छबि हार नई पनिहार । तु तो री मोरी-चकियाँ की डोरी तापै देती है गार ॥ तू जोवन अलमस्त ग्वारन चलत न आप संभार । झूम झूम पग धरत भूम पर मैं तोहिं दीन संभार ॥ २६० ॥

राग गौरी ।

छबीले बंसी नेक बजावो । वलि वलि जात सखा यह कह कह अधर सुधा रस प्यावो ॥ दुर्लभ जन्म दुर्लभ वृन्दावन दुर्लभ प्रेम तरङ्ग । ना जानिये बहुरि कब है हैं श्याम तुम्हारे संग ॥ विनती करत सुवल श्रीदामा सुनो श्याम दे कान । या यशको सनकादि शुकादिक करत अमर मुनि ध्यान ॥ कब पुनि गोप वेप व्रज धरिहो

फिरिहो सुरभिन साथ । कव तुम छाक छीनके खैहो श्रीगोकुलके नाथ ॥ अपनी अपनी कांध कमरिया ग्वालन दई डसाई। सोंह दिवाय नन्द बाबाकी रहे सकल गहि पाई ॥ सुन सुन दीन गिरा मुरलीधर चितये मुख मुसकाई।गुण गंभीर गोपाल मुरलिका लीनी कंठ लगाई ॥ धर कर वेणु अधर मन मोहन कियो मधुर धुन गान। मोहे सकल जीव जल थलके सुन वारें तन प्रान ॥ चपल नयन भ्रुकुटी नाशा पुट सुन सुन्दर मुख बैन ।मानो निर्तत भा दिखलावत गति लिय नायक मैन ॥ चमकत मोर चंद्रिका माथे कुंचित अलक सुभाल। मानो कमल कोमल कोशरस चाख न उड आये अलिमाल ॥ कुंडल लोल कपोलन झलकत ऐसी शोभा देत। मानो सुधासिंधुमें क्रीडत मकर पानके हेत ॥उपजावत गावत गति सुन्दर अनाघातके ताल । रस सभ दियो मदनमोहनका प्रेम हर्ष सभ ग्वाल ॥ लोलित वैजन्ती चरणन पर श्वासा पवन झकोर। मानो सुधा पियन अहि आयो ब्रह्म कमण्डलु फोर ॥ डोलत लता मन्द मारुत गति सुन सुन्दर मुख वैन । खग मृग मीन अधीन भये सब कियो यमुन जल सैन ॥ झलमलात भ्रुकुटी पद रेखा सुभग सांवरे गात । मनु पटवधू एक रथ बैठी उदय कियो अधरात ॥ बाँके चरण कमल भुज बांके अवलोकन जो अनूप । मानो कल्प तरोवर बिरवा आन रच्यो सुर भूप ॥ अति सुख दियो गोपाल सबनको सुखदायक जिय जान । सूरदास चरणन रज माँगत निरखत रूप निधान ॥ २६१ ॥

राग पूरवी।

धरें टेढ़ी पाग टेढ़ी चंद्रिका टेढ़ी त्रिभंगीलाल।कुंडलोंकी छवि देख कोटि रवि उदय होत और सोहै वनमाल ॥ सांवरो वदन पर पीत पट ओढ़न मुख मुरली बाजे मधुर रसाल। श्रीमत वल्लभ वनते आये संग लिये ब्रजवाल ॥ २६२ ॥

राग वसन्त।

घर घरते वनिता जो बन निकसीं आज कंचन थार भर निछावर करन मोहनलाल की। सत सुर गावत कंठ शब्द कोकिला गत उपगत अति रसालकी॥ साज समाज गोपाल झुंडन मिल चलत चाल अति मरालकी। तानसेनके प्रभु रस वश कर लीनी टेढी मूरत चितवन गोपालकी॥ २६३॥

राग कल्याण।

अपने लालको जिमावत मैया। कर कर कौर मुखारविंदमें मधु मेवा पकवान मिठैया॥ व्यंजन खाटे मीठे खारी अतिही खारी स्वाद बन्यो अधिकैया। चतुरभुज प्रभु गिरिधरन लालको ब्यारू करावत लेत बलैया॥ २६४॥

मोहन जानी तिहारी बात। ब्यारू पर घर कर आवत यहां कछू नहीं खात॥ यही स्वभाव तिहारो जनमको चोरी बिन न अघात। नन्ददास कहत नन्दरानी प्रेम लपेटी बात॥ २६५॥

राग नट।

हरिकी लीला कहत न आवै। कोटि ब्रह्मांड छिनहिमें नाशै छिनहीमें उपजावै॥ बालक बच्छ ब्रह्म हर लैगयो ताको गर्व नशावै। ऐसो पुरुषारथ सुन यशुमति खीजत पुनि समझावै॥ शिव सनकादिक अन्त न पावै भक्तबच्छल कहवावै। सूरदास प्रभु गोकुलमें सो घर घर गाय चरावै॥ २६६॥

राग सोरठ।

हमरी फेंट छोड श्रीदामा। काहेको तुम रारि बढावत तनक बातके कामा॥ मेरी गेंद लेहु ता बदले बाहँ गहतहों धाई। छोटो बडो न जानत काहू करत बराबर आई॥ हम काहेको तुमहिं बराबर बडे नन्दके पूत। सूरश्याम दीनेही बनिहै बहुत कहावत धूत॥२६७॥

राग कल्याण ।

तोसों कहा धुताई करिहों। जहां करी तहँ देखी नाहीं कह तोसों मैं लरिहों॥ मुँह सम्हार तू बोलत नाहीं कहत बराबर बात। पावोगे फल अपनो कीयो रिसन कँपावत गात॥ सुनो श्याम तुमहूं सर नाहीं ऐसे गये बिलाई। हमसों सतर होत सूरज प्रभु कमल देहु अब जाई॥ २६८॥

राग देवगंधार ।

कालीके नथन काज कालीनाथ आये हैं। ऐसो रूप धार खडे मानो कोटि शशि चढे चांदना बेहद भयो तिमिर मिटाये हैं॥ ब्रह्मा विचार कही बालिको ना सुध रही भूल गयो सब कछु वेग उठधाये हैं। चरणनमें आय परे हो अधीन आगे खड़े धन्य धन्य भये भाग दरश दिखाये हैं॥ और केती नर नार हर्ष वढी प्रेम धार नख शिख रोम रोम आँनद वढ़ाये हैं। कोई ऐसो कौतुक कियो अहिसुत बांध लियो नाक छेद विष हर कमल लदाये हैं। यमुनाके मध्य काढ़े फणहूंके ऊपर ठाढ़े राग रंग निरत करत अधिक सुहाये हैं॥ कहत यों दुनीदास वृन्दावन भयो विलास इच्छा पूरी नंदकी यशोदा कण्ठ लगायेहैं॥ २६९॥

राग वसन्त ।

राग टोड़ी ।

खोलोजी किवाँर कोहै एती बार हरी नाम है हमार बसो कंद-रा पहारमें । हौं तो आली माधव कोकीलाके साथे भाग मोहन हौं प्यारी फिरों मंत्रके विचारमें ॥ रागी हौं रँगीली जावो क्यों न दाता पास भोगी हौं छबीली जाय धसोजी पतारमें ॥ नायक हौं नागरी तो टांड़ो क्यों न लादों जाय हौं तो घनश्याम प्यारी बरसो जी बहारमें ॥ २७१ ॥

श्रीरघुनाथलीला ।

दोहा ।

मुरली मुकुट दुरायके, नाथ भये रघुनाथ ॥
तुलसी रुचि लखि दास की, धनुषबाण लियो हाथ ॥ १ ॥
तुलसी कौशलराज भज, मत चितवे कहुँ ओर ॥
सीता राम मयंक मुख, तू कर नयन चकोर ॥ २ ॥
राम वाम दिशि जानकी, लषण दाहनी ओर ॥
ध्यान सकल कल्याणमय,तुलसी सुरतरु तोर ॥ ३ ॥
सीतापति रघुनाथजू, तुमलग मेरी दौर ॥
जैसे काग जहाजको, सूझत और न ठौर ॥ ४ ॥
नहिं विद्या नहिं वाहँबल, नहीं गांठमें दाम ॥
तुलसी ऐसे पतितकी, तुम पति राखो राम ॥ ५ ॥
कामिहिं नारि पियारि जिमि, लोभिहिं प्रिय जिमि दाम ॥
ऐसे हो कब लागिहो, तुलसीके मन राम ॥ ६ ॥
बार बार वर माँगहों, हर्षि देहु श्रीरंग ॥
पदसरोज अनपायनी, भक्ति सदा सतसंग ॥ ७ ॥

दीजै दीनदयालु मोहिं, बड़ो दीन जन जान ॥
चरण कमलको आसरो, सत्संगतिकी बान ॥ ८ ॥

राग भूपाली ।

गाइये गणपति जगवन्दन । शंकर सुवन भवानी नन्दन ॥ सिद्धिसदन गजवदन विनायक । कृपासिंधु सुन्दर सवलायक ॥ मोदक प्रिय मुद मङ्गल दाता । विद्या वारिधि बुद्धि विधाता ॥ माँगत तुलसिदास कर जोरे । वसैं राम सिय मानस मोरे ॥ २७२ ॥

राग विभास ।

जै भगीरथ नन्दनी मुनि चित चकोर चन्दनी नर नाग विबुध वन्दनी जै जह्नु वालिका । विष्णु पद सरोज जासि ईश शीश पर विभासि त्रिपथगासि पुण्यराशि पाप छालिका ॥ विमल विपुल वहासि वारि शीतल त्रयताप हारि भँवर वर विभंग तर तरंग मालिका । पुर जन पूजोपहार शोभित शशि धौल धार भञ्जन भवभार भक्त कल्प थालिका ॥ निज तट वासी विहंग जल थल चर पशु पतङ्ग कीट जटिल तापस सब सारिस पालिका । तुलसी तव तीर तीर सुमिरत रघुवंशवीर विचरत मति देह मोह महिप कालिका॥ २७३॥

राग काफी ।

धनि धनि धनि मात गङ्ग चाहत मुनि जन प्रसंग प्रगटी रघुनाथ चरन करन सुख विहारी । दीनी विधि बूँद डार अरि अनङ्ग शीश धार आई मृत मध्य लोक सन्तनको प्यारी ॥ पर्वत द्रुम लता तोर स्वर्ग औ पताल फोर भगीरथ करनधार सगर तनय तारी । अमित वारी अति उतंग चाहत अति रूप रंग दरश परश मज्जन कर पाप-पुंज हारी ॥ माता मैं याँचों तोहिं राम भक्ति देहु मोहिं शरण गही तुलसिदास दीन ह्वै पुकारी ॥ २७४ ॥

आनँद वन गिरिजापति नगरी मन क्यों ना बास लगावत। काशी समान नहीं द्वितिया पुर ब्रह्मादिक गुण गावत॥ वेद पुराण बखानत महिमा शारद पार न पावत। निकट प्रवाह बहत जहँ गंगा सुर नर मुनि हर्षावत॥ जाके दरश परश अरु मज्जन कोटिक पाप नशावत। कीट पतंग जीव नाना विधि सबकी मुक्ति करावत॥ अन्तकाल सदा शिवशंकर तारकमन्त्र सुनावत। अगम अपार अनूपम उपमा शेष सहस मुख गावत॥ राम सिया पद हेत प्रेम प्रभु तुलसिदास गुण गावत॥ २७८॥

राग आसावरी।

आज सुदिन शुभघरी सुहाई। रूप शील गुण धाम राम नृप भवन प्रगट भये आई॥ अति पुनीत मधु मास लगन ग्रह वार योग समुदाई। हर्षवंत चर अचर भूमिसुर तनुरुह पुलक जनाई॥ वर्षहिं विबुध निकर कुसुमावलि नभ दुंदुभी बजाई। कौशल्यादि मात सब हर्षत यह सुख बरणि न जाई॥ सुन दशरथ सुत जन्म लिये सब गुरुजन विप्र बुलाई। वेद विहत कर क्रिया परम शुचि आनँद उर न समाई॥ सदन वेद धुनि करत मधुर मुनि बहु विधि बाज बधाई। पुरबासिन प्रिय नाथ हेतु निज निज सम्पदा लुटाई॥ मणि तोरन बहु केतु पताकन पुरी रुचिर कर छाई। मागध सूत द्वार वन्दीजन जहँ तहँ करत बड़ाई॥ सहज शृंगार किये वनिता चलि मंगल विपुल बनाई। गावहिं देहिं अशीश मुदित चिरजियो तनय सुखदाई॥ बीथिन कुमकुम कीच अरगजा अगर अँबीर उड़ाई। नाचहिं पुर नर नारि प्रेम भरि देह दशा बिसराई॥ अमित धेनु गज तुरँग वसन मणि जातरूप अधिकाई। देत भूप अनुरूप जाहि जोई सकल सिद्धि गृह आई। सुखी भये सुर संत भूमि सुर खल गण मन मलिनाई। सबहिं सुमन विकसत रवि निकसत विपिन कुमुद बिलखाई॥ जो सुख सिंधु

सुकृत सीकरते शिव विरंचि प्रभुताई । सो सुख उमँगि अवध रह्यो दश दिशि कवन जतन कहो गाई ॥ जे रघुवीर चरण चिंतक तिनकी गति प्रगट दिखाई । अविरल अमल अनूप भक्ति दृढ तुलसिदास तव पाई ॥ २७६ ॥

राग भैरव।

सूरजवंशी नमो गुरु इष्ट हमारो दशरथ सुत राजा राम । जानकीके नायक नाथ त्रिभुवनके धनुपधारी सुन्दर श्याम ॥ लक्ष्मण हनूमान भरत शत्रुहन तिनके सँवारे कोटि काम । धीरज प्रवीन रघुकुल तिलक विदित प्रगटे अयोध्या धाम ॥ २७७ ॥

राग तिलंग।

ढाढिन चल दशरथ घर जाइये । ढाढ़ी कहे सुनो मेरी प्यारी जहाँ सकल सिधि पाइये ॥ कंचन वसन रतन भूषण धन अनगिन अशन अघाइये । रतन हरी प्रभु राम जनमकी विमल वधाई गाइये ॥ २७८ ॥

हौं तो रघुवंशिनको ढाढी ॥ सुन दशरथ सुत जन्म दूरते आयो आशा बाढ़ी ॥ तुमरोइ यश गाऊं जहँ जाऊं पूछो दुनिया ठाढी । रतन हरी मेरो नाम रामकी लेहुँ वलैया गाढी ॥ २७९ ॥

राग तिलंग।

कौशल्या मैया चिरजीवो तेरो छौना । राज समाज सकल सुख संपति अधिक २ नित होना ॥ मुनि जन ध्यान धरत निशिवासर अधिक जन्म धर मौना । रत्न हरी प्रभु त्रिभुवन नायक तैं कर लियो खिलौना ॥ २८० ॥

सवैया।

दन्ताकि पंगति कुन्द कली अधराधर पल्लव खोलनकी ॥ चपला च्चमकै घन विज्जु जगे छवि मोतिन माल अमोलनकी ॥ घुंघु-

वारी लटें लटकें मुख ऊपर कुण्डल लोल कपोलन की॥ निवछा-
वर प्राण करै तुलसी वलि जाऊं लला इन बोलन की॥ २८१॥

राग कान्हरो।

ठुमुकि चलत रामचन्द्र बाजत पैंजनियां। किलकत उठि
चलत धाय परत भूमि लटपटाय धाय मोद गोद लेत दशरथकी
रनियां॥ अंचल रज अंग झार विविध भांतिसों दुलार तन मन
धन वारिदेत कहत मृदु वचनियां। मोदक मेवा रसाल मनभावत
लेउ लाल और लेउ रुचिर पान कञ्चन रुनझुनियां॥ आनन्द
सज कंबु कण्ठ ग्रीवा अति रुचिर रेख कच कुटिल वदन मन्दसों
हँसनियां। विद्रुमसों अधर ललित बोलत प्रिय मधुर वचन
नाशा अति सुभगबीच लटकत लटकनियां॥ अद्भुत छबि अति
अपार को कवि नहिं वरणे पार कह न सके शेष जिहि सहस्र तो
रसनियां। तुलसिदास रूप रंग परतरको दिये कहा रघुवरकी छबि
समान रघुवरछबि बनियां॥ २८२॥

राग विभास।

भोर भयो जागो रघुनंदन। गत व्यलीक भक्तन उर चंदन॥
शशि कर हीन छीन द्युति तारे। तमचर मुखन सुनो मेरे प्यारे॥
विकसत कञ्ज कुमुद बिलखाने। लै पराग रस मधुप उड़ाने॥
अनुज सखा सब बोलन आये। बन्दिन अति पुनीत गुण गाये॥
मन भावतो कलेऊ कीजै। तुलसिदासको जूठन दीजै॥ २८३॥

राग प्रभाती।

प्रात समय रघुवीर जगावें कौसिल्या महतारी। उठो लालजी
भोर भयो है सुर नर मुनि हितकारी॥ ब्रह्मादिक इंद्रादिक नारद
सनकादिक ऋषि चारी। वाणी वेद विमल यश गावें रघुकुल यश

विस्तारी ॥ बंदीजन गंधर्व गुण गावें नाचत देदे तारी । उमा सहित शिव द्वारे ठाढे होत कुलाहल भारी ॥ कर अस्नान दान प्रभु दीनो गो गज कञ्चन झारी । जय जयकार करत जन माधो तन मन धन वलिहारी ॥ २८४ ॥

प्रभाती।

जागिये कृपानिधान जानराय रामचंद्र जननी कहै वार वार भोर भयो प्यारे । राजिवलोचन विशाल पीत वापिका मराल ललित कमल वदन ऊपर मदन कोटि वारे ॥ अरुण उदित विगत शर्वरी शशांक किरन हीन दीन दीप ज्योति मलिन द्युति समूह तारे । मनो ज्ञान घन प्रकाश वीते सब भव विलास आश त्रास तिमिर तोप तरनि तेज जारे ॥ बोलत खग निकर मुखर मधुर कर प्रतीत सुनो श्रवण प्राण जीवन धन मेरे तुम वारे । मनो वेद वन्दी मुनि वृन्द सूत मागधादि विरद वदत जय जय जय जयति कैट-भारे ॥ विकसत कमलावली चले प्रपुंज चञ्चरीक गुंजत कल कोमल धुनि त्याग कंज न्यारे । मनो विराग पाय सकल शोक कूप गृह विहाय भृत्य प्रेम मत्त फिरत गुणत गुण तिहारे ॥ सुनत वचन प्रिय रसाल जागे अतिशय दयाल भागे जंजाल विपुल दुख-कदम्ब टारे । तुलसिदास अति अनंद देखके मुखारविंद छूटे भ्रम-फंद परम मंद द्वंद भारे ॥ २८५ ॥

राग विलावल।

आज तो निहार रामचंद्रको मुखारविंद चन्दहूसे अधिक छवि लागत सुहाई री । केसरको तिलक भाल गरे सोहै मुक्तमाल घूंघर-वारी अलकन पर कुण्डल छवि छाई री ॥ अनियारे अरुण नयन बोलत अति ललित वैन माधुरी मुसकान पर मदन हू लजाई री।

ऐसे आनन्दकन्द निरखत मिट जात द्वंद छबिपर वनमाल कान्हर गई हों बिकाई री ॥ २८६ ॥

राग विभास ।

बोलत अवनिप कुमार ठाढे नृप भवन द्वार रूप शील गुण उदार जागो मेरे प्यारे । विलखत कुमुदिन चकोर चक्रवाक हर्ष मोर करत शोर तमचर खग गूँजत अलिन्यारे ॥ रुचिर मधुर भोजन कर भूषण सज सकल अंग संग अनुज बालक सब विविध विधि सँवारे । करतल गह ललित चाप भंजन रिपु निकर दाप कटि तट पटपीत तूण सायक अनियारे ॥ उपवन मृगया विहार कारन गवने कृपाल जननी मुख निरख पुण्य पुंज निज विचारे । तुलसिदास संग लीजै जान दीन अभय कीजै दीजै मति विमल गावै चरित वर तिहारे ॥ २८७ ॥

राग ललित ।

छोटीसी धनुहियाँ पन्हैया पगन छोटी छोटी सी कछोटी कटि छोटी सी तरकसी ॥ लसत झंगुली झीनी दामिनीकी छबि छीनी सुन्दर वदन शिर पगिया जरकसी ॥ वय अनुहरत विभूषण विचित्र अंग जोहे जिया आवत सनेहकी सरकसी ॥ मूरतकी सूरत कही न परै तुलसी पै जाने सोई जाके उर करकै करकसी ॥ २८८ ॥

राग खमाची जंगला ।

पगिया शिर लाल हरी कलँगी उर चन्दन केशर खौरदिये । मनमोहन राम कुमार सखी अनुहार नहीं जब जन्म लिये ॥ पग नूपुर पीत कसे कछनी वर मालतीकी वनमाल हिये । विहरै सरयू तट कुंजनमें तहां रामसखे चित चोरलिये ॥ २८९ ॥

राग आसावरी।

सखी री मुनि सँग बालक काके। रतनारे नयना जाके॥ रवि शशी कोटि वदनकी शोभा श्याम गौर तनु जाके। राम लषण कौशल्या जाये दशरथ नाम पिताके॥ ऋषिको यज्ञ संपूर्ण करके अब आये राजाके। आपदा सबकी हरी रामने कारज करन सियाके॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल धनुष बाण कर जाके। गौतम ऋषिकी नारि अहल्या तारी चरण छुवाके॥ सब सखियां मिल सियाके स्वयंवर पूजा करत उमाके। तुलसिदास सेवक रघुनन्दन लेखे लिख विधनाके॥ २९०॥

राग कान्हरा।

ठुमक ठुमक चलत चाल जनकनन्दनी। मधुर वचन तोतरे त्रयताप मोचनी॥ सोहत नव नील वसन मन्द हास रुचिर दशन झलकत उरमाल सकल देववंदनी। नूपूर पग बजत मानो साम वेद करत गान क्षुद्र घण्ट रुचिर नाद उर आनंदनी॥ जगत मात सखिन सङ्ग विहरत बहु करत रंग अग्रदास निरखत छवि भवनिकंदनी॥ २९१॥

राग मलार।

विहरत बागवामें देखे कुल भानवा। क्रीट मुकुट कंचनको झलकें मकर मनोहर कुण्डल अलकें भाल तिलक केशरको राजे गल बैजंती मालविराजे मधुर वचन करलीने धनुष बानवा॥ पीतांबर कटि पर कस काछे मन मुसकात फिरत वन आछे काकपक्ष शिर सुन्दर सोहैं देखत राम लषण मन मोहे विधि शंकर इनहीको धरें ध्यानवा। कही सखी जब ऐसी बानी अखिल लोक पति जीवन जानी शोभा सकल लोककी जगमें तारी शिला चरणकी रजने दरशन

लीजो तजो गृह मानवा ॥ कुसुम समेत वामकर दोना छोटा कुँअर सखी अति लोना या देखत सब भई सुखारीं तुलसी मुदित विदेह कुमारी बहुरि चलीं गिरिजाके भवनवा ॥ २९२ ॥

राग देश।

मैया मोको वैरन धनुप भयो री। जन्म जन्मको परा शरासन सड घन क्यों न गयो री॥ देश देशके भूपति आये तिल भर कछु न टरचो री। कहा कहौं मैं माइ बापको होतेही विप क्यों न दियो री॥ उठे राम गुरु आज्ञा पाई सुमन समान लियो री। तुलसिदास प्रभुके कर परशे खण्डो खण्ड भयो री॥ २९३ ॥

राग परज।

सखी रँग भीने दोउ राजकुमार। निरख सखी नयनन भर नीके शोभा अमित अपार॥ भुजदण्डन चन्दन मण्डन पर चमक चांदनी चार। ललित कण्ठ रेखा विचित्र सखि उर कमलनके हार ॥ रंगभूमि मणि जटित मञ्च पर वैठे सभा मँझार। मानो रवि उदयाचल गिरिते निकस्यो तिमिर विदार॥ खण्ड खण्ड ब्रह्मंड खण्डके भूपति जुरे: अपार। कैसे धनुप उठायो तोरचो किनहु न पायो पार ॥ कटि निपङ्ग कर धनुप वाण लिये हरन चले महिभार। लाला रामचंद्र छवि ऊपर दास कान्हर बलिहार॥ २९४ ॥

राग केदारो।

लेहुरी लोचनको लाहु। कुँवर सुन्दर साँवरो सखि सुमुखि सुन्दर चाहु ॥ खण्ड हरकोदण्ड ठाढे जानु लंबित बाहु। रुचिर उर जय-माल राजत हेत सुख सबकाहु॥ चितै चित हित सहित नख शिख अंग अंग निबाहु । सुकृत निज सियराम रूप विरंचि मतिहिं

सराहु ॥ मुदित मन वर वदन शोभा उदित अधिक उछाहु । मनो दूर कलंक कर शशि समर सूध्यो राहु ॥ तनय सुखमा अयन झाथ सरोज सुंदरताहु । वसत तुलसीदास उर पुर जानकीको न्हाहु ॥ २९५ ॥

राग केदार ।

मनमें मंजु मनोरथ होरी । सो हर गौर प्रसाद एकते कौशिक कृपा चौगुनी भोरी ॥ प्रण परिताप चाप चिंता निशि शोच सकोच तिमिर नहिं थोरी । रविकुल रवि अवलोकि सभा सर हित चित वारिज वन विकस्यो री॥ कुँवर कुँवरि सब मङ्गल मूरत दोउ धरम धुरन्धर धोरी । राज समाज भूर भागी जिन लोचलाहु लह्यो इक ठोरी ॥ व्याह उछाह राम सीताको सुकृत सकेल विरंचि रच्यो री । तुलसिदास जाने सो यह सुख जा उर बसत मनोहर जोरी ॥ २९६ ॥

राग भूपाली ।

बन्यो सिय प्यारीको बनरा । कि वरवश मोहलेत मनरा ॥मोर शिर सोनेको धारी । विविध मणि चित्र चमतकारी ॥ करन छवि मेंहँदी की भारी । महावर पगन चित्रकारी ॥ कङ्कन की कमनीयता, कही कवन पे जाय । अलक झलक लख खलक ललक, आली पलक न परत सुहाय ॥ गले गज मोतियनको गजरा । चलन चितवन गति चित चोरी ॥ बचनकी चरन लाज तोरी । गरब तज विवस भई गोरी ॥ धामके काम दाम छोरी । हँसन असी मुख म्यान ते, सुधामुखी सित धार ॥ काट कामिनी कतल करी इस दशरथ राज कुमार । रँगीली अँखियनमें कजरा ॥ २९७ ॥

राग परज ।

बन्यो सखि दूलह अजब रँगीलो । दशरथ कुँवर साँवरो अद्भुत सोहत परम छबीलो ॥ अनब्याही ब्याही सब ब्याही देखत रूप ठगीलो । रामसखे अब लगत प्राण सम पियरो अवध नवीलो ॥ २९८ ॥

राग दादरा ।

आली सियावर कैसा सलोना । चितवनमें चित आन फँस्यो है देख सखी चल राज ढटोना ॥ जनकशहरमें कहर मच्यो है भूल्यो खान पान सब सोना । श्रीरघुराज मोरवारे पर अबतो मोहिं फकीरिन होना ॥ २९९ ॥

राग भूपाली कल्याण ।

देख सखी शिर पाग रामके कैसी सोही है । मर्कत गिरिपै चन्द्र चाह चपला जनु मोही है ॥ बडि बडि भुजा विशाल विभूषण लख तृण तोरी है । सुन्दर नयन विशाल वदन पर हांसी थोरी है ॥ उर मोतियनकी माल कान कल कुण्डल जोरी है । नाभि गँभीर उदर त्रिवली लख शारद बौरी है ॥ पीतांबरकी कछनी काछे पीत पिछौरी है । रामगुलाम अनूप रूप लख मति मेरी थोरी है ॥ ३०० ॥

राग कान्हरा ।

देखो री छवि राम वदनकी । कोटि कोटि दामिन दर्पण द्युति निंदत कांति कपोल रदनकी ॥ नासा मृदु मुसकान माधुरी मन्द करी अति घुमड़ मदनकी । फब रह्यो क्रीट मुकुट अलकन पर मनो फांस दृग मीन फँसनकी ॥ चोरत चित भृकुटी दृग शोभा कुण्डल झलक खौर चन्दनकी । रामसखे छवि कहि न जात जब सुधि न रहत लख वदन वसनकी ॥ ३०१ ॥

राग खम्माच।

चंचल दृग रतनारे तेरे चोट लगे सोई जाने । सुन दशरथके कुँवर लाड़िले कासों कहूं को माने । चितवतही घायल कर डारत राखत ना तनु प्राने। रामलला यह प्रीति अलौकिक रामसखे पहिंचाने ॥ ३०२ ॥

राग परज।

तेरे रतनारे नयन लगे कोशलराज किशोर ॥ मिथिलापुरमें आय सबनके वरवस प्राण ठगे। कछुक श्यामता लिये सिताई सुधा शृँगारपगे ॥ राम सखे लखि जनु रतिपतिके सायकसे डर डगे ॥ ३०३ ॥

राग कालिंगड़ा।

पिया तोरी नजरिया जादू भरी । जिहिं चितवत तिहिं वश कर राखत सुन्दर श्याम राम धनुधारिया ॥ जुलफन युत मुख चन्द प्रकाशे नासा मणि लटकत मन हारिया । युगल प्रिया मिथिलापुर बासिन फँसी जाल मनो रूप मछरिया ॥ ३०४ ॥

तेरी नजरों कि सैफली धार । सुनिये हो अवध छैल दशरथके घायल किये तैं हजार ॥ तेरी चितवनमें मन आन फँस्यो है मिथिलापुरके वजार । मधुर अली पिया सांची कहदेट कब आओगे दिलदार ॥ ३०५ ॥

राग भैरवी।

जालम नयन मेरे नहिं रहिंदे । लालच लगे रूप रघुवरके कर आराम नहिं चाहिंदे ॥ वरज वरज रही अरज न मनदे हरज मरज सब सहिंदे ॥ कर कर यत्न रत्न हारि हारे जाय जोरावरी खहिंदे ॥ ३०६ ॥

राग श्यामकल्याण ।

कुँवर दशरथके रंग भरे । कोटि काम सुन्दर सुख मन्दर अंदर आन अरे ॥ रंगीली पगिया पेच धरे । रत्न जडित शिर पेच पेच मोरे मनके बीच परे॥श्रवण शुभ कुण्डल सुघरघरे । अलकां झलक कपोल लोल मन मोह लिये हमरे ॥ बनी मोतियनकी माल गरे । कमल नयन सुखदैन रैन दिन मनते नाहिं टरे ॥ करन कंकन रत्न जरे । श्याम वरण मन हरन रत्न हरी चरण शरण उबरे ॥ ३०७॥

राग विलावल ।

क्रीट मुकुट शीश धरे मोतियनकी माल गरे कानन कुंडल कर धनुप बाण सोहै री । अरुण नयन अनियारे अतिही लगत प्यारे दशरथ दुलारे सबहीको मन मोहे री ॥ सुन्दर नासा कपोल अलक झलक मधुर बोल भाल तिलक राजत बाँकी भौहै री । लंबित भुज अतिविशाल भूपण जड़ित जाल अंग अंग छबि तरंग कोटि मदन मोहै री ॥ पीताम्बर सोहै गात मन्द मन्द मुसकरात जनक भवन चले जात गति गयन्द को है री । कान्हर करुणानिधान मेरे सखि जिवन प्राण जानकी झरोखे बैठी रामको मुख जोहै री ॥ ३०८ ॥

राग खमाच ।

रामकुमार लाल दशरथके या गलियन अबहीं जो गयो री ॥ पहरे तनु भूपण फूलनके अंग अंग अद्भुत रूप छयो री ॥ठाढ़ी देख अटापर मोको खेलन मिस छिन एक ठयो री॥ गेंद उछाल तक्यो हरि मोतन घूँघट पट तब खोल दयो री ॥ तब अपनाय लई मैं बा पिया हियमें प्रेम अँकूर भयो री ॥ रामसखे भूली सुध बुध सब अँखियनमें अब राम रयो री ॥ ३०९ ॥

राग दादरा ।

सखि लखन चलो नृप कुँवर भलो मिथिलापति सदन सिया वनरो। शिर क्रीट मुकुट कटिमें पियरो हँसि हेरि हरत हमरो हियरो ॥ गल साजतहे मोतियन गजरो अनियारी अँखियन सोहत कजरो। चित चाहत है उड़ जाय मिलूं रघुराज छाँड़ सगरो झगरो॥२१०॥

राग देश ।

हँस पूछैं जनकपुरकी नारी नाथ कैसे गजके फन्द छुड़ाये । तिहारे यही अचरज मन भाये ॥ गज और ग्राह लरें जल भीतर दारुण द्वन्द्व मचाये । गजकी टेर सुनी रघुनन्दन गरुड़ छोड़ उठ धाये ॥ भिलनीके वेर सुदामाके तण्डुल रुचि रुचि भोग लगाये । दुर्योधनकी मेवा त्यागी साग विदुर घर पाये ॥ इंद्रने कोप कियो व्रज ऊपर छिनमें वारि वहाये । गोवर्द्धन स्वामी नख पर लीनो इंद्रको मान घटाये ॥ अर्जुनके स्वारथ रथ हाँक्यो महभारतमें गाये । भारतमें भरुहीके अंडा घण्टा तोर बचाये ॥ ले प्रह्लाद खंभसे बाँध्यो राजन त्रास दिखाये । जन अपनेकी प्रतिज्ञा राखी नरसिंह रूप बनाये ॥ छोरे न छुटे सियाजीको कँगना है आप चढ़ाये । कोमल गात अंग अति नीके देखत मनहिं लुनाये ॥ जहँ जहँ भीर परी सन्तन पर तहँ तहँ होत सहाये । तुलसिदास सेवक रघुनंदन आनंद मङ्गल गाये ॥ २११ ॥

राग जंगला ।

लेल्योरी लोचन भर लाहू॥ पुष्पन वर्षत मुनि जन दर्पत सिया रामको अजब विवाहू । मिथिलापुरकी सखी सयानी समझ समझ शिखदेव सब काहू ॥ फिर कब राम जनकपुर ऐहैं हम नहिं नगर अयोध्या जाहू । तुलसीदास परस्पर दोउ मिले नृप दशरथ मिथिलापुरनाहू ॥ २१२ ॥

राग जंगला ।

देखो री यह नयनन भर भर होत बरात बिदा दशरथकी ॥ गलिन गलिन गृह महल अटा पर अरुण भाल कामिनि गावें री ॥ या बिधि सियजीको व्याहन आये कब रघुनाथ बहुरि आवें री ॥ धन्य अयोध्या धनि मिथिलापुर धन्य सिया जिन राम बरचो री ॥ धन्य धन्य बालक दोउ बाँके धनि रानी दशरथ पतनी री ॥ खान पान बिसराय सभी मिलि बार बार सिय रामहिं देखैं ।इत लक्ष्मण उत भरत शत्रुहन भाग भले राजा दशरथके ॥ मणि बिन सर्प चकोर चन्द्र विन जल बिन मीन कहु कैसे जिये री । तुलसिदास छबि वरण कहत है यह मूरति मेरे मनमें वसी री ॥ २१३ ॥

राग कान्हरे ।

भुजन पर जननी वार फेर डारी । क्यों तोरचो कोमल कर कमलन शम्भुशरासन भारी ॥ क्यों मारीच सुबाहु महा वल प्रबल ताड़का मारी। मुनि प्रसाद मेरे राम लपणकी विधि सत्र करवर टारी ॥ चरण रेणु लै नयनन लावत क्यों मुनिवधू उधारी । कहौं धों तात क्यों जीत सकल नृप बरी विदेहकुमारी ॥ दुसह रोप मूरति भृगुपाति अति नृपति निकर छै कारी ॥ क्यों सौंप्यो सारंगहार हिय करत वहुत मनुहारी ॥ उमँग उमँग आनंद विलोकत वधुन सहित सुतचारी । तुलसिदास आरती उतारत प्रेम मगन महतारी ॥ २१४ ॥

राग कालिंगडा

निरखत रूप सिया रघुवरको छबि नहिं जात वखानी । आरति करत कौशल्या रानी कनक थार गज माणिक मुक्ता भरचो वेद विधानी ॥ मारचो मान सकल भूपनको महिमा वेद वखानी । तोरन

धनुप जनक प्रण पूरण तीनलोक में जानी ॥ जनकरायकी लज्जा राखी परशुराम हित मानी । सुरपुर नारि अवध पुरवासी करत विमल यश गानी ॥ नचत नवल अपसरा मुदित मन वरप सुमन हर्षानी । रत्न मंदिरमें रत्न सिंहासन बैठे साँरँगपानी ॥ मात कौशल्या करत आरती हर्ष निरखें मुसकानी । दशरथ सहित अवधपुर वासी उचरत जैजे वानी ॥ तुलसिदास यह अविचल जोरी भक्त अभय पद दानी ॥ २१५ ॥

राग ललित ।

रघुवर आज रहो मेरे प्यारे । जो तुमको वनवास दियो है कैरियो गमन सकारे ॥ रघुवर कहै सुनो मेरि जननी यह व्रत नेम हमारे । अब न रहूं घर मात कौशला दशरथ वाचा हारे ॥ सीता सहित सुमित्रानंदन भये कुटुँवते न्यारे । तुलसिदास प्रभु दूर गमन कियो चलत नयन जल डारे ॥ २१६ ॥

राग पीलू ।

मेरी सुध आन लियो रघुराया । चौदा वरस मोहिं कव लग बीतें मोहि पल इक न रहाया ॥ भरत शत्रुहन प्रजाके वासी रो रो हाल वजाया । राम लपण सिया वनको सिधारे भरत फिरे बौराया ॥ तुलसिदास जिन हरि नहिं सुमिरे व्रिथा जन्म गँवाया ॥ २१७ ॥

राग देश ।

विना रघुनाथके देखे नहीं दिलको करारी है । हमारी मातकी करनी सकल दुनियासों न्यारी है ॥ विमुख जिन रामसों कीना ऐसी जननी हमारी है । लगी रघुवंशमें अगनी अवध सगरी वजारी है ॥ भरत शिर लोट धरणीपे यही करता पुकारी है । सुना जब तातका मरना मनो वरछी सी मारी है ॥ परा व्याकुल हुआ

बेसुध दृगनसे नीर जारी है । धरूं मैं ध्यान सूरतका मुझे तृष्णा जो भारी है ॥ परूं रघुनाथके पाऊँ यही तुलसी विचारी है ॥३१८॥

राग विहाग।

मिल जाना राम प्यारे नयना तरसे तेरे देखनको ॥ वन प्रमोद में खडी पुकारूं सुनियो रूप उजारे। सुन्दर श्याम कमल दल लोचन मो नयननके तारे ॥ राम सखे ज्यों जल बिन मछली तड़फत प्राण हमारे ॥ ३१९ ॥

राग कालिंगड़ा।

मैं कौन वन ढूँढों री माई मेरे दोनों बालकवा ॥ आगे आगे राम चलतहैं पाछे लक्ष्मण भाई । बीच जानकी अधिक विराजे राजा जनककी जाई ॥ अन्तर रोवे मात कौशल्या बाहर भारत भाई। राजा दशरथने प्राण तजेहैं कैकेयी मनमें पछताई ॥ इंद्र गरजे भादों बरसे पवन चले पुरवाई । कौन वृक्ष तले भीगत होंगे सिया लषण रघुराई ॥ रावण मार राम घर आये घर घर वजत बधाई। मात कौशल्या करत आरती तुलसिदास वलि जाई ॥ ३२० ॥

राग विलावल।

नृपति कुँवर राजत मग जात । सुंदर वदन सरोरुह लोचन मर्कत कनक वर्ण मृदु गात ॥ अंशन चाप तूण कटि मुनि पट जटा मुकुट बिच नूतन पात। फेरत पाणि सरोजन सायक चोरत चितहि सहज मुसकात ॥ सङ्ग नारि सुकुमारि सुभग शुठि राजत विनु भूषण नव सात । सुखमा निरख ग्राम वनितनके नलिन नयन विकसत मनु प्रात ॥ अङ्ग अङ्ग अगणित अनङ्ग छवि उपमा कहत सुकवि सकुचात । सिय समेत नित तुलसिदास चित बसत किशोर पथिक दोउ भ्रात ॥ ३२१ ॥

धनुप जनक प्रण पूरण तीनलोक में जानी ॥ जनकरायकी लज्जा राखी परशुराम हित मानी । सुरपुर नारि अवध पुरवासी करत विमल यश गानी ॥ नचत नवल अपसरा मुदित मन वरप सुमन हर्षानी । रत्न मंदिरमें रत्न सिंहासन वैठे सारँगपानी ॥ मात कौशल्या करत आरती हर्ष निर्ख मुसकानी । दशरथ सहित अवधपुर वासी उचरत जैजै बानी ॥ तुलसिदास यह अविचल जोरी भक्त अभय पद दानी ॥ ३१५ ॥

राग ललित ।

रघुवर आज रहो मेरे प्यारे । जो तुमको वनवास दियो है करियो गमन सकारे ॥ रघुवर कहै सुनो मेरि जननी यह व्रत नेम हमारे । अब न रहूं घर मात कौशला दशरथ वाचा हारे ॥ सीता सहित सुमित्रानंदन भये कुटुँवते न्यारे । तुलसिदास प्रभु दूर गमन कियो चलत नयन जल डारे ॥ ३१६ ॥

राग पीलू ।

मेरी सुध आन लियो रघुराया । चौदा वरस मोहिं कव लग वीतें मोहि पल इक न रहाया ॥ भरत शत्रुहन प्रजाके वासी रो रो हाल वजाया । राम लपण सिया वनको सिधारे भरत फिरे वौराया॥ तुलसिदास जिन हरि नहिं सुमिरे विरथा जन्म गँवाया ॥ ३१७ ॥

राग देश ।

विना रघुनाथके देखे नहीं दिलको करारी है । हमारी मातकी करनी सकल दुनियासैं न्यारी है ॥ विमुख जिन रामसो कीना ऐसी जननी हमारी है । लगी रघुवंशमें अगनी अवध सगरी उजारी है ॥ भरत शिर लोट धरणीपै यहीं करता पुकारी है । सुना जब तातका मरना मनो वरछी सी मारी है ॥ परा व्याकुल हुआ

बेसुध दृगनसे नीर जारी है । धरूं मैं ध्यान सूरतका मुझे तृष्णा जो भारी है ॥ परूं रघुनाथके पाऊँ यही तुलसी विचारी है ॥३१८॥

राग बिहाग ।

मिल जाना राम प्यारे नयना तरसे तेरे देखनको ॥ वन प्रमोद में खडी पुकारूं सुनियो रूप उजारे । सुन्दर श्याम कमल दल लोचन मो नयननके तारे ॥ राम सखे ज्यों जल बिन मछली तड़फत प्राण हमारे ॥ ३१९ ॥

राग कालिंगड़ा ।

मैं कौन वन ढूँढों री माई मेरे दोनों बालकवा ॥ आगे आगे राम चलतहैं पाछे लक्ष्मण भाई । बीच जानकी अधिक बिराजे राजा जनककी जाई ॥ अन्तर रोवे मात कौशल्या बाहर भारत भाई । राजा दशरथने प्राण तजेहैं कैकेयी मनमें पछताई ॥ इंद्र गरजे भादों बरसे पवन चले पुरवाई । कौन वृक्ष तले भीगत होंगे सिया लषण रघुराई ॥ रावण मार राम घर आये घर घर बजत बधाई । मात कौशल्या करत आरती तुलसिदास बलि जाई ॥ ३२० ॥

राग बिलावल ।

नृपति कुँवर राजत मग जात । सुंदर वदन सरोरुह लोचन मर्कत कनक वर्ण मृदु गात ॥ अंशन चाप तूण कटि मुनि पट जटा मुकुट बिच नूतन पात । फेरत पाणि सरोजन सायक चोरत्त चितहि सहज मुसकात ॥ सङ्ग नारि सुकुमारि सुभग शुठि राजत बिनु भूषण नव सात । सुखमा निरख ग्राम वनितनके नलिन नयन बिकसत मनु प्रात ॥ अङ्ग अङ्ग अगणित अनङ्ग छवि उपमा कहत सुकवि सकुचात । सिय समेत नित तुलसिदास चित बसत किशोर पथिक दोउ भ्रात ॥ ३२१ ॥

राग कल्याण।

पूछत ग्राम वधू मृदु बानी। गौर श्याम अभिराम सुभग तनु यह तुम्हरे को लगत सयानी॥ शील स्वभाव लषण लघु देवर कर शर धनुष समञ्चल पानी। पिय तन चितै दृष्टि नीचे कर सखिन बिलोकि सिया मुसकानी ॥ को तुम कौन देशते आये जिहि पुर बसो सुमङ्गल खानी। चलत पियादे पाँय त्रान बिन राज-कुँवारि किमि करो बखानी ॥ यह दोउ कुँवर अवधपतिके सुत मैं विदेह तनया जग जानी। ठान कुमति उर बसी सवति पन राज समय वन दीनो रानी॥ सियके वचन सुनि सखी दुखितभईं पल छिन मानो विरह गलानी। एक कहै भल भूप न कीनो वन नहिं दीनो कीनों हानी ॥ राम लषण सिय पंथ कथा सुनि जाके हृदय बसी छिन आनी। सो भवसिंधु तरैं गोपद जिमि जन तुलसी यह करत बखानी॥ ३२२॥

राग विलावल।

फिर फिर राम सिया तन हेरत। तृषित जान जल लेन लषण गये भुज उठाय ऊंचे चढ टेरत॥ अवनि कुरंग विहँग द्रुम डारन रूप निहारत पलक न प्रेरत। मगन न डरत निरख कर कमलन सुभग शरासन सायक फेरत॥ अवलोकत मग लोक चहूं दिशि मनो चकोर चन्द्र महि घेरत । ते जन भूरि भाग्य भूतल पर तुलसि राम पथिक पद जेरत॥ ३२३॥

राग पीलू।

मेरी सुध आन लियो सिय पियारी। मात कैकयी वनवास दियोहै प्राणोंसों अधिक प्यारी॥ कपटी मृगके पाछे धायो लछमन कियो रखवारी। मैं तोहिं सिया बहुत समुझायो तैं एक न मा-

नी हमारी ॥ रामचंद्र जब गिरे धरणि पर लछमन रोय पुकारी। तुलसिदास प्रभु वन वन ढूँढत विधनाकी गति न्यारी ॥ ३२४ ॥

राग गौरी

कुटुम्ब तज शरण राम तेरी आयो। तज गढ लंक महल औ मन्दिर नाम सुनत उठ धायो ॥ भरी सभामें रावण बैठ्यो चरण प्रहार चलायो। मूरख अंध कह्यो नहिं मानै बार बार समुझायो॥ आवत ही लंकापति कीनो हरि हँसकंठ लगायो। जन्म जन्म-के मिटे पराभव राम दरश जब पायो ॥ हे रघुनाथ अनाथके बं-धू दीन जान अपनायो। तुलसिदास रघुवरकी शरणा भक्ति अभ-यपद पायो ॥ ३२५ ॥

राग केदार।

दीन हित विरद पुराणन गायो। आरत बंधु कृपालु मृदुल चित जान शरण हौं आयो ॥ तुम्हरे रिपुको अनुज विभीषण वंश निशाचर जायो। सुन गुण शील स्वभाव नाथको मैं चरणन चित लायो॥ जानत प्रभु दुख सुख दासनके ताते कह न सुनायो। करकरुणा भर नयन विलोको तब जानौं अपनायो॥ वचन विनीत सुनत रघुनायक हँसकर निकट बुलायो। भेंट्यो हरि भर अंक भरत जिमि लंकापति मन भायो ॥ कर पंकज शिर परश अभय कियो जन पर हेतु दिखायो। तुलसिदास रघुबीर भजन कर कौन अभयपद पायो ॥ ३२६ ॥

राग धनाश्री।

सत्य कहौं मेरो सहज स्वभाउ। सुनो सखा कपिपति लंकापति तुमसों कहा दुराउ ॥ सब विधि दीन हीन अति जड़ मति जाको कतहुँ न ठाउँ। आये शरन भजों न तजों तिहि यह जानत ऋषि-

राउ ॥ जिनको हौं हित सब प्रकार चित नाहिंन और उपाउ । तिन हित लगि धर देह करौं सब डरौं न सुयश नशाउ ॥ पुनि पुनि भुजा उठाय कहतहौं सकल सभा पतियाउ । नाहिन कोउ प्रिय मोहिं दास सम कपट प्रीति बहजाउ ॥ सुनि रघुपतिके वचन विभीपण प्रेम मगन मन चाउ । तुलसिदास तज आस त्रास सब ऐसे प्रभुको गाउ ॥ ३२७ ॥

राग काफी जंगला ।

तात कि शोच न मात कि शोच रु शोच नहीं मोहिं औध तजे की । शोच नहीं वनबास लियेहुकि शोच नहीं मोहिं सीय हरे की ॥ बालि हतेकिहु शोच नहीं अरु शोच नहीं मोहिं दुःख परे की । लक्ष्मण भूमि परेकिहु शोच न शोच नहीं मोहिं लंक जरे की । तुलसी शोच भयो इक मोको भक्त विभीषण बाँह गहेकी ॥ ३२८ ॥

राग विहाग ।

शरण गहु शरण गहु शरण गहु रावणा सेतु जल बन्ध रघुवीर आये । अष्टदश पदम योधा जुरे अति बली उड़त पग धूर रवि गगन छाये ॥ कोटि योधा जुरे जनकके नगरमें धनुप ना सक्यो उठाय कोई । तोरचो धनुप गज नाल तोरत जैसे जान लीजो राजा राम सोई ॥ वालिसों शूरमा योधा अतुलित बली ताहि सामर्थ्य ना जगत माहीं । लग्यो जब वाण रघुनाथके हाथको गिरि परचो धरणि फिर उठचो नाहीं ॥ लै मिलो जानकी बात आसान की वेग धावो नहीं विमल कीजे सूर स्वामी रंग लाल लय लाय लै आयो है काल बचाय लीजै ॥ ३२९ ॥

राग गौरी ।

अब देखो रामध्वजा फहरानी । हलकत ढाल फरक्कत नेजा गरद उठी असमानी ॥ लक्ष्मण वीर वालि सुत अंगद हनूमान अग-

वानी। कहत मन्दोदरि सुन पिय रावण कौन कुमति सिय आनी॥ जिस सागरका मान करत है तापर शिला तरानी॥ तिरिया जाति बुद्धिकी ओछी उनकी करत बड़ाई। ध्रुव मण्डलसे पकर मँगाऊं वह तपसी दोउ भाई॥ हनूमान सम पायक उनके लक्ष्मण जैसे भाई। जरत अग्निमें कूद परेंगे शोच कभू नहिं पाई॥ मेघनादसे पुत्र हमारे कुंभकर्णसे भाई। एक बेर सन्मुख होय लड़ैंगे युग युग होत बड़ाई॥ इक लख पूत सवा लख नाती मौत आपनी आई। अग्रके स्वामी गढ़ लंका घेरी अजहुँ समुझ अभिमानी॥२२०॥

राग कालिंगड़ा।

जय जय जय रघुवंश दुलारे। सुखसागर रविवंश उजागर लीला ललित मनोहर प्यारे॥ यज्ञ सुधारन असुर सँहारन गौतम नारी उधारन हारे। जनक स्वयम्बर पावन कीनो भृगुपति गर्व निवारन हारे॥ पिता वचन सुन राज काज तज अनुज सहित वनको पगधारे। वालि वधन वैदेही शोधन लंकापति भुज भंजन हारे॥ जगनायक प्रभु सन्त सहायक गावत वेद पुराण पुकारे। राम सखे रघुनाथ रूप लख युग युग येही विरद तिहारे॥ २२१॥

राग श्यामकल्याण।

सखी वह देखो रघुराई। गगन मगन पुष्पक विमान पर हैं बैठे सुखदाई॥ सङ्गमें फवी जनक जाई। ज्यों सावन घन माहिं दामिनी दमकत छबि छाई॥ कपिनकी भीर संग भारी। हनूमान सुग्रीव विभीषण अंगद युवराई॥ मात कौशल्या हरपाई। कञ्चन थार सुधार आरती करैं सुमन भाई॥ देवगण फूलन झरिलाई। अटल राज सम्पति रघुवरकी सुर नर मुनि गाई॥ याचकन मन मागी पाई। दत अशीश अघाय रतनहारि वलि वलि वलि जाई॥ २२२॥

राग गौरी ।

अवध आनन्द भये घर आये हैं लक्ष्मण राम ॥ पहले मिले भरतजी भया पाछे कैकयी माय । घर घर मिले अयोध्या वासी पाछे कौशल्या हरिकी माय ॥ जबहीं राम सिंहासन बैठे कहो लंककी वात ॥ माऊ कौशल्या पूछन लागीं कैसे तोड़े गढलंक । बाट घाट लक्ष्मणने रोक्यो अवघट रोक्यो राम । दरवाजा अंगद ने रोक्यो कूद पड़े हनुमान ॥ रावण मार अहिरावण मारचो दियो विभीषण राज ॥ गाय बजाय जानकी ल्याये गावत तुलसीदास ॥२२२ ॥

राग पीलू ।

भरत कपिसे उऋण हम नाहीं। सौ योजन मर्याद सिंधुकी कूद गयो छिन माहीं ॥ लंकाजार सिया सुध लाये गरव नहीं मन माहीं । शक्ती वाण लग्यो लक्ष्मणके शोर भयो दल माहीं ॥ द्रोणागिरि पर्वत लै आये भोर होन नहिं पाई । अहिरावणकी भुजा उखारी बैठ रह्यो मठ माहीं ॥ जो पै भरत हनुमत नहिं होते को लावे जग माहीं । आज्ञा भङ्ग कभूं नहिं कीनी जहिं पठयो तहिं जाई ॥ तुलसिदास मारुतसुत महिमा प्रभु अपने मुख गाई ॥२२४॥

राग प्रभाती ।

प्रात समय उठ जनकनन्दनी त्रिभुवन नाथ जगावे । उठो नाथ मम नाथ प्राणपति भूपति भवन बुलावे ॥ उरझी माल गले मोतियनकी कर कङ्कन सुरझावे । घूँघर वारी अलकें झलकें पागके पेच सँवारे ॥ कमलनयन मुख निरख रामको आनन्द उर न समावे । कान्हर दास आश रघुवरकी हरप निरख गुण गावे ॥ २२५ ॥

राग कल्याण ।

देख सखि आज रघुनाथ शोभा बनी । नील नीरद वरण वपुप भुवनाभरन पीत अम्बर धरन हरन द्युति दामनी ॥ सरयू

मज्जन किये सङ्ग सज्जन लिये हेतु जन पर हिये कृपा कोमल घनी । सजनी आवत भवन मत्त गज वर गवन लंक मृगपति ठवन कुँवर कौशल धनी ॥ सघन चिक्कन कुटिल चिकुर विललित मृदुल करन विवरत चतुर सरस सुखमा जनी । ललित अहि शिशु निकर मनो शशि सन समर लरत धरहर करत रुचिर जनु युग फनी ॥ भाल भ्राजत तिलक जलज लोचन पलक चारु भ्रू नासिका सुभग शुक आननी । चिबुक सुन्दर अधर अरुण द्विज द्युति सुघर वचन गंभीर मृदु हास भव भाननी ॥ श्रवण कुण्डल विमल गंड मंडल चपल कलित कल कांति अति भांति कछु तिन तनी । युगल कंचन मकर मनो विधु कर मधुर पियत पहँचान कर सिंधु कीरतिभनी ॥ उरसि राजत पदिक ज्योति रचना अधिक भाल सु विशाल चहूँ पास बनी गजमनी । श्याम नव जलद पर निरख दिनकर कला कौतुकी मनो रही घेर उडुगन अनी॥ मन्दर न पर खरी नारि आनन्द भरी निरख वरपहिं विपुल कुसुम कुंकुम कनी । दास तुलसी राम परम करुणाधाम काम शत कोटि मद हरत छबि आपनी ॥ २३६ ॥

राग पहाड ।

छबि रघुवीरकी चित चोरन ॥ जरकसी पाग तिलक मृगमदको तापर कलङ्गी हीर । उर मणिमाल पीतपट राजत चलत मत्त गज धीर॥कृपा निवासीके प्राण जीवन धन सुध हूं न भूषण चीर॥२३७॥

दृगन बसी रघुबीरकी छबि हो ॥ शोभा सरस रही मोरी आली विहरत सरयूके तीर ॥ शीतल मन्द सुगंध झकोरा वहती हैं त्रिविध समीर ॥ जानकीदास छबि देख मगन भये शोभा श्याम शरीर ॥ २३८ ॥

अँखिया लगीं थारे रूप रँगीले रामा ॥ क्यारी करूं कछु वश ना मेरो बूड गैयां रस कूप । चेटक लाय लुभाय लियो मन चतुराई में अनूप ॥ कृपा निवासी लगन नाछूटे सुनियो अवधके भूप॥३३९॥

राग सोरठ ।

अँखिया राम रूप अनुरागी । श्याम वरनमन हरन माधुरी मूरति अति प्रिय लागी ॥ सुन्दर बदन मदन शतशोभा निरख निरख रस पागी । रत्न हरी पल टरत न टारी मरम प्रेम रङ्ग रागी ॥ ३४० ॥

अँखिया राम रूप रस भीनी । कोटि काम अभिराम श्याम घन निरख भई लय लीनी ॥ लोकलाज कुलकान न मानत नूतन नेह रँगीनी । रत्नहरी कैसे अब निकसे होगइ ज्यों जल मीनी ॥३४१॥

राग खट ।

मेरो दृग लाग्यो जाय सुन रामा रूप तिहारो । वन प्रमोदकी कुंज गलीमें चोरयो चित्त हमारो ॥ मृदु मुसक्यान विलोचन से कछु टोना मो पै डारो । राम सखे अब बिन पिया देखे सब सुख लागत खारो ॥ ३४२ ॥

राग कालिंगड़ा ।

बाँको हमारो यार सँवलिया । बाँकी लटपटी पीत लपेटे बाँकी बाँधे तलवार सँवलिया ॥ बाँके शीश जरतकी पगिया बाँके घोड़े असवार सँवलिया ॥ रामसखेको मन हरिलीनों दशरथ सुत सरदार सँवलिया ॥ ३४३ ॥

राग जंगला ।

काहेको बाँधे तीर कमनियां । भौंहें कमान बनी जो तिहारी नयन पलक दोउ शरकी अनियां ॥ सन्त हृदय वन मन मृग ढूँढत

चुन चुन मारत शब्द रसनियां। रामसखेको घायल कीनो वन आवे लै जाउ घर कनियां॥ ३४४॥

क्या बुलाक अधरन पर हलकें। जबते दृष्टि परी है मेरी तबते छिन पल परत न पलकें॥ किधों असमसर शर संधाने क्या सुखमा पर सरवर झलकें। सियाराम पिया मुख मयंक पर मनो अमीकी मूरत झलकें॥ ३४५॥

यह दोउ चन्द्र बसैं उर मेरे।दशरथ सुत औ जनकनन्दिनी अरुण कमल कर कमलन फेरे॥ चन्द्रवती शिर चमर ढुरावत आस पास ललना गण घेरे। बैठे सघन कुञ्ज सरयू तट चन्द्रकला तन हँस हँस हेरे। ललित भुजा दिये अंस परस्पर झुक रहे केश कपोलन नेरे। रामसखे छबि कहि न परत जब पान पीक मुख झुक झुक गेरे॥ ३४६॥

जय श्रीजानकीवल्लभ लालहिं। मणि मंदिर श्रीकनक महल में विपुल रँगीली बालहिं॥ कोउ गावत कोउ वेणु बजावत कोउ मृदंग डफ तालहिं। युगुल बिहारी भावत दोऊ लालनलखि छबि भई निहालहिं॥ ३४७॥

राग बड़हंस मलार।

तुम झूलो मेरे प्यारे दशरथ राजदुलारे। नवल दुल्हैया अति सुकुमारी तुम जोबन मतवारे॥ झूले देत डरत अति सुन्दर चोरत चित्त हमारे। सुन सखि वचन मधुर मुसकाने प्रिया रूप मतवारे॥ मधुर प्रियाके गरे लाग अव मिलो जानकी प्यारे॥ ३४८॥

राग पीलू।

झूलन सीताराम अवधपुर रंगमहिलमें। मणि कञ्चनको रच्योहै हिंडोरा झूलत पिया प्यारी परम सहिलमें॥ विमलादिक सखी

रसिक झुलावें अतर लगावें परमचहिलमें। सरयू सखी दंपति अनुरागे पान लिये ठाढी परम ठहिलमें ॥ ३४९ ॥

राग देश मलार।

सावन घन गरजे घूम घूम। बरसत शीतल जल झूम झूम॥ कोयल कीर कोकिला बोले हंस चकोर चहूं दिस डोलें नाचत वन अति करत कलोलें मोर मोरनी चूम चूम। कंचनको हिंडोला झलके रेशम पाट मढे मखमलके चुन चुन कली बिछौना हलके कली कली दल तूम तूम॥ चलत समीर त्रिविध पुरवाई मन्द सुगंध महा छबि छाई झूलें जनकसुता रघुराई हु वाल झुलावें ऊम ऊम। गावें राग रागनी भामिन दमक रही मानो छवि दामिन झूटा देत नारि गज गामिन पायल वाजे छम छूम छूम॥ जय जय करत सुमन सुर वर्षत इंद्र निशान बजावत हर्षत दास गणेश युगल छवि निर्खत छाय रह्यो सुख रूम रूम॥ ३५०॥

राग वसंत।

गावो वसंत वसंत पंचमी मङ्गल दिन रघुराज कुँवरको। आवो सब मिल गंधर्ग गुणी जन तान तरंग उमंग रंग भरको॥ वाजत ताल मृदंग झांझ डफ प्रेम रँगी सारंगी करको। गाय गाय रघुनायक गुण गण रतनहरी हिये रामही हरपो॥ ३५१॥

नवल रघुनाथ नव नवल श्रीजानकी नवल ऋतु कन्त वसंत आई। नवल कुसुमावली फूल चहुँ दिशि रही नवल मारुत नवल सुगंध छाई॥ नवल भूषण वसन पहन दोउ रँगमगे नवल पिया सखी निरखै सुहाई। नवलगुण रूप जोवन जड़त नित नयो रतन हरि देत आशिष वधाई॥ ३५२॥

खेलत वसन्त राजाधिराज। देखत नभ कौतुक सुरसमाज॥ सोहैं अनुज सखा रघुनाथ साथ झोरिन अबीर पिच-

कारी हाथ॥ बाजैं मृदंग डफ ताल वेणु। छिरके सुगंध भरे मलै रेनु॥ वरपत प्रसून वर विबुध वृन्द। जै जै दिनकर कुल कुमुद चन्द॥ ब्रह्मादि प्रशंसत अवध बास। गावत कल कीरति तुलसिदास॥ २९३॥

राग टोडी।

अवध नगर सुन्दर समाज लिये खेलत राम लपण होरी। वाजत ताल मृदंग झांझ डफ केशर रंग करी घनघोरी॥ इतते भरत शत्रुहन आये उडत गुलाल लाल भई खोरी। रतन हरी श्रीअवध विहारी चिरजीवो सुन्दर दोउ जोरी॥ २९४॥

राग होरी दादरा।

खेलत रघुराज आज रंग भरी होरी। राम लपण भरत शत्रुहन सुन्दर वर जोरी॥ कंचन पिचकारी करन केशर रँग वोरी। गह गह भर रँग भरत कह कह हो होरी॥ उड़त रंग वर गुलाल भर भर भर झोरी। गारी दे दे अबीर डारत वरजोरी॥ रंगसों मृदंग वाजत डफकी घनघोरी। गाय गाय धाय धाय मींडत मुख रोरी॥ अवध नगर रंग बढ्यो सजनी निरखोरी। रतन हरी रामराज युग युग न टरोरी॥ २९५॥

राग होरी।

दशरथ राज छबीलो छैल होरी खेलत आवै री। राजकुमार हजार संग लिये रंग मचावै री॥ कंचनकी पिचकारी करन लिये अति छवि पावै री॥ उडत गुलाल लाल रँग भीने मन सो भावै री॥ डफ मृदंगकी धुन मिल अद्भुत राग सुहावै री। रतन हरी श्रीअवध विहारी पै वलि वलि जावै री॥ २९६॥

राग परज ।

लाल गुलाल जिन डारो । बरजोरी न करो रघुनन्दन छोड़ोजी हाथ हमारो ॥ झकझोरो न मुरक जाय वैयां छूटे जाय कचवारो । रामसखे थारे पैयां परत मेरो घूंघट पट न उवारो ॥ ३५७ ॥

राग होरी ।

तेरी होरीकी झलक दशरथके लाल मेरे मनमें वसी निकसे न पलक । गाल गुलाल लाल रँग भीनी तेरी प्रेम भरी अँखियनकी पलक ॥ नयन विशाल ललित मतवारे तेरी अजव फँसी कुंडलमें अलक । रतनहरी जो सुनों तो कहूं इक अरज हमारी है तुम्हरे तलक ॥ ३५८ ॥

राग देश ।

रघुवर तुमको मेरी लाज । सदा सदा मैं शरण तिहारी तुम वड़े गरीबनिवाज ॥ पतितउधारन विरुद तिहारो श्रवणन सुनी अवाज। हौं तो पतित पुरातन कहिये पार उतारो जहाज॥अघ खंडन दुखभंजन जनके यही तिहारो काज । तुलसिदास पर किरपा करिये भक्तिदान देहु आज ॥ ३५९ ॥

राग वसन्त ।

वंदौं रघुपति करुणानिधान । जाते छूटे भव भेद ज्ञान ॥ रघुवंश कुमुद सुखप्रद निशेश । सेवत पद पंकज अज महेश ॥ निज भक्त हृदय पाथोज भृंग । लावण्य वपुप अगणित अनंग ॥ अति प्रवल मोह तम मारतंड । अज्ञान गहन पावक प्रचंड ॥ अभिमान सिंधु कुंभज उदार । सुररंजन भंजन भूमिभार ॥ रागादि सर्प गण पन्नगारि । कन्दर्प नाग मृगपति सुरारि ॥ भव जलधि पोत चरणारविंद । जानकीरमण आनन्दकन्द ॥ हनुमंत प्रेम वापी मराल ।

निष्काम कामधुक गो दयाल ॥ त्रैलोकतिलक गुण गहन राम । कह तुलसिदास विश्राम धाम ॥ ३६० ॥

राग नट।

हौं हरि पतित पावन सुने । हौं पतित तुम पतितपावन दोउ बानक बने ॥ व्याध गणिका गज अजामिल साख निगमन भने। और पतित अनेक तारे जात कापै गने ॥ जान नाम अजान लीने जान यमपुर मने। दास तुलसी शरण आयो राखिये अपने ॥ ३६१॥

राग जंगला।

चितहिं राम दीन ओर कोरकी कटाक्षहिं । चितहि दीन ओर कोर बार बार करि निहोर जान दीन विपति छीन साहिबी विचार लीन लाय लीन पाछहिं ॥ गुला रोटि महीन मोटि खरा खोटि बड़ा छोटि तुमसे नहिं कछू ओट हाथ है तिहारे । ना तिहाई रोजगार पेटहीसे ऐहै काज सुनिये गरीबनिवाज राम ररन उदर भरन मेरे राम राखो शरण,यथा धेनु वाछहिं ॥ दासी दास खाय पाय श्वान औ मंजार जाय बारिउ कहार जहां आसन कर डासहिं। बचै जूठनको प्रसाद तोरा कुँवर सरा कुरा तो फिर सुधि लीजो मोरी इनके सब पाछहिं ॥ कौलते वेकौल हों तो सुनिये रघुवंश केतु तो निकेत ते निकार तुमको नहिं खोर राम खेद देव आछहिं। मांगो बलि चरण सेई बार बार हेई हेई नाहिं कछु लेहों देहों राखिये किनारे । ताते कर चरण जोर मोको नाहिं और ठौर तुम तज औरैं जाऊं कहां अवधके दुलारे ॥ दास तुलसी टुकर खोर लाग रहो तुम्हरी ओर चौकट नहीं छूटे नाथ जो कोई झिझकोरे । शीश झगर नाक रगर कल न परै तुम्हरी विगर छूटे नहीं नाम नगर डगर श्याम प्यारे ॥ ३६२ ॥

राग देश ।

करुणानिधान सुनियोजी कछु मेरो काजहै भारी । प्रहलादके हितकारी खंभ फोर देह धारी नरसिंह नाम पाये सब सन्तनके मन भाये ॥ द्रौपदी जो भक्तेरी जो आन सभामें घेरी चीरोंकी लाई ढेरी अब आई बार मेरी ॥ तुमहो विपतिके साथी जल डूबत राख्यो हाथी अब मेरी वेर माधो काहिं सोये हो तो जागो ॥ गजकी जो अरज मानी यह विदित वेद बानी अब मेरी ओर देखो मोहिं अपनो कर लेखो ॥ भक्तनके फंद काटे अघ कोट कोट नाटे जी मैं बारबार टेरूं टुक बाट तेरी हेरूं ॥ कई कोटि पतित तारे जी मैं गिनत गिनत हारे महाराज अवधविहारी भज रामसखे वलिहारी ॥ ३६३ ॥

राग भैरव ।

जाऊं कहां तजि चरण तिहारे । काको नाम पतित पावन जग किहिं अति दीन पियारे ॥ कौन देव बराय विरदहित हठि हठि अधम उधारे । खग मृग व्याध पषाण विटप जड यमन कवन सुर तारे ॥ दवदनुज मुनि नाग मनुज सब माया विवस विचारे । तिनके हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपनपौ हारे ॥ ३६४ ॥

राग टोडी ।

विटप विहँग अपने कर लीने। महाराज दशरथके रंक राव कीने॥ तू गरीबको निवाज मैं गरीब तेरो। बारक कहिये कृपालु तुलसिदास मेरो॥ ३६५॥

राग टोडी।

तू दयालु दीन हौं तू दानि हौं भिखारी। हौं प्रसिद्ध पातकी तू पापपुञ्ज हारी॥ नाथ तू अनाथको अनाथ कौन मोसों। मो समान आरत नहिं आरतहर तोसों॥ ब्रह्म तू हौं जीवहौं तू ठाकुर हौं चेरो। तात मात गुरु सखा तू सब विधि हित मेरो॥ तोहिं मोहिं नातो अनेक मानिये जो भावै। त्यों त्यों तुलसी कृपालु चरण शरण पावै॥ ३६६॥

राग झिंझोटी।

मैं किहि कहौं विपति अति भारी। श्रीरघुबीर दीन हितकारी॥ मम हृदय भवन प्रभु तोरा। तहँ बसे आय बहु चोरा॥ अति कठिन करै बरजोरा। मानैं नहिं विनय निहोरा॥ तम मोह लोभ हंकारा। मद क्रोध बोध रिपु मारा॥ अति करैं उपद्रव नाथा। मरदैं मोहिं जानि अनाथा॥ मैं एक अमित बटपारा। कोउ सुनें न मोर पुकारा॥ भागेहू नाहिं उबारा। रघुनायक करो सँभारा॥ कह तुलसिदास सुन रामा। लूटैं तस्कर तव धामा॥ चिन्ता यह मोहिं अपारा। अपयश ना होय तिहारा॥ ३६७॥

राग आसावरी।

लाज न लागत दास कहावत। सो आचरण विसार शोच तज जो हरि तुमको भावत॥ सकल सङ्ग तज भजत जाहि मुनि जप तप याग बनावत। मो सम मन्द महा खल पामर कौन जतन तिहिं पावत॥ हरि निर्मल मन ग्रसन हृदय असमंजस मोहिं जनावत।

जिहिं सर काक कंक वक शूकर क्यों मराल तहँ आवत ॥ जाकी शरण जाय कोविद दारुण त्रयताप बुझावत। तिहूँ गये मद मोह लोभ अति स्वर्गहिं मिटत नशावत ॥ भवसरिताको नाव सन्त यह, कह औरन समुझावत। हौं तिनसों हरि परम वैर कर तुमसों भलो मनावत ॥ नाहिंन और ठौर मोको ताते हठ नातो लावत। राख शरण उदार चूड़ामणि तुलसिदास गुणगावत ॥ ३६८ ॥

राग कालिंगड़ा।

हम रघुनाथ गुणनके गवैया। ताना रीरी ताना रीरी तानुम तन नाना नाना नहिं जाने ताता थैया ॥ भैरू ध्रुपद कवित्त तलानो नाहिन ख्याल खिलैया। गीत संगीत प्रबंध त्रिवत अति इनके नाहिं गढ़ैया ॥ डूम अथाई कालकलाउँत नाहिनभांडभवैया। रतन-हरी रघुनाथ भजन विन काहूसों राम रमैया ॥ ३६९ ॥

मैं तो पतित उधारो श्रीरामा। मेरे दुःख निवारो श्रीरामा ॥ मैं तो वाबलदे घर नंढड़ी। गलहार हमेल सोहे कंढड़ी ॥ प्यारे बाझों नहीं जीया मैं ठंढडी। मैंतो वाबलदे घरभोलड़ी ॥ आगे जंज पिछे मेरी डोलड़ी ॥ बाझों नहिं मैं सोहदड़ी। हत्थी छड़े छापां-वाहीं हो चूडीयां। प्यारे बाझों सभी गल्लां हो कूड़ीयां ॥ लालन मिले तां सभी गल्लां पूरीयां। शाहुसैन फिरे जी उतावला। पहली चोट न थींदे चिट्टे हो चावला ॥ कोई ढंग मिलें साईं हो रावला ॥ ३७० ॥

राग आसावरी।

कौन जतन विनती करिये। निज आचरण विचार हार हिय मान जान डरिये॥ जिहिं साधन हरि द्रवो जान जन सो हठ परिहरिये। जाते विपति जाल निशिदिन दुख तिहिं पथ अनुसरिये ॥ जानत हूं मन कर्म वचन परहित कीने तरिये।

सो विपरीत देख परसुख विन कारण ही जरिये ॥ श्रुति पुराण सबको मत एही सतसँग सुदृढ धरिये । निज अभिमान मोह ईर्षा वश तिसे न आदरिये ॥ सन्तत सो प्रिय मोहिं सदा जाते भवनिधि परिये । कहो अब नाथ कौन बलते संसार शोक हरिये ॥ जब कब निज करुणा स्वभावते द्रवो तो निस्तरिये । तुलसिदासविश्वास आन नहिं कत पच पच मरिये ॥ ३७१ ॥

सवैया।

आगम वेद पुराण बखानत कोटिक मारग जायँ न जाने । जे मुनि ते पुनि आपुही आपको ईश कहावत सिद्ध सयाने ॥ धर्म सभी कलिकाल ग्रसे जप योग विराग लै जीव पराने । को करि शोच मरै तुलसी हम जानकीनाथके हाथ विकाने ॥ ३७२ ॥

कवित्त।

जाहि हाथ धनुप चढ़ायो तोहि सीतापति जाही हाथ रावण सँहारी लंक जारी है । जाही हाथ तारयो औ उवारयो हाथ हाथी गहि जाहि हाथ सिंधु मथि लक्ष्मी निकारी है ॥ जाही हाथ गिरिको उठाय गिरिधारी भयो जाही हाथ नन्दकाज नाथ्यो नाग कारी है । हौं तो हूं अनाथ हाथ जोर कहौं दीनानाथ वाही हाथ मेरो हाथ गहबेकी बारी है ॥ ३७३ ॥

राग भैरवी ।

कब द्रुरिहौ रघुनाथ हमारे । जैसे द्रुरे भक्त प्रहलादहिं खंभ फारि हिरणाक्ष सँहारे ॥ जैसे द्रुरहे राजा वलिके देत दरश नित नितप्रति द्वारे । जैसे द्रुरहे भक्त विभीपण लंका जार सो रावण मारे॥ जैसे द्रुरहे द्रुपदसुता पै खैंचत चीर दुशासन हारे । ऐसे द्रुरहो दासतुलसी पर हमसे पतित अनेकन तारे ॥ ३७४ ॥

राग धनाश्री ।

हरिजू मेरो मन हठ न तजै । निशि दिन नाथ देउँ शिख बहुविधि करत स्वभाव निजै ॥ ज्यों युवती अनुभवत प्रसव अति दारुण दुख उपजै । होय अनुकूल बिसार शूल सब पुनि खल पतिहिं भजै ॥ लोलुप भ्रमत श्रमित निशिबासर शिर पदत्रान बजै । तदपि अधम बिचरत तिहिं मारग अजहुँ न मूढ़ लजै ॥ हौं हारयो बहु यत्न विविध कर अतिशय प्रबल अजै । तुलसिदास वश होत तबै जब प्रेरक प्रभु बरजै ॥ ३७५ ॥

राग सोरठ ।

ऐसी मूढता या मन की । परिहरि राम भक्ति सुरसारिता आश करत ओसकन की ॥ धूम समूह निरख चातक ज्यों तृषित जान मतिघनकी । नहिं तहँ शीतलता न वारि पुनि हानि होत लोचन की ॥ ज्यों गज कांच विलोकि शेर जड़ छांह आपने तनकी । टूटत अति आतुर अहार वश क्षति बिसार आननकी ॥ कहँ लग कहौं कुचाल कृपानिधि जानतहो गति जनकी । तुलसिदास प्रभु हरो दुसह दुख लाज करो निज पनकी ॥ ३७६ ॥

राग टोड़ी ।

और कौन माँगिये को मांगवो निवारी है । तुम विना दातार कौन दुख दरिद्र टारिहै ॥ धर्मधाम राम काम कोटि रूप रूरो । साहब सब विधि सुजान दान खड्गसूरो ॥ सुसमय द्वै दिन निशान सेवके द्वार वाजै । कुसमय दशरथके दानि तू गरीवनिवाजै ॥ सेवा विन गुण विहीन दीनता सुनाये । जेजे तैं निहाल किये फूले फिरत पाये ॥ तुलसीदास याचकरुचि जान दान दीजिये । रामचन्द्र चन्द्र तू चकोर मोहिं कीजिये ॥ ३७७ ॥

रागजै जैवन्ती ।

प्रीतकी रीति रघुनाथ जाने । जात कुल वरणको नाहिं माने ॥ प्रीत प्रहलादकी जान करुणानिधी खंभसों प्रगटनख उदर भाने। दौड़ गजराजके फन्दको काटने गरुडको छोड़ आये उलाने ॥ अधम कुल भीलनी बेर दिये रामको पाय मन मगन अतिही सराने। गीध पक्षी महा अधम आमिष भखी ताहि तनु परश सुरपुर पठाने॥ जानकी कारणे जोरि कपि भालु दल कोटिसी लंक गढ़ को ढहाने। वैर को भाव उत्साह हरि मिलनको अन्तकी बेर अङ्गमें समाने ॥ भक्त भगवन्त अन्तर निरन्तर नहीं यही तो निगम आगम बखाने । दास कान्हर यही रीति रघुनाथकी आपसे भक्तको सरस माने ॥ ३७८ ॥

राग सोरठ ।

जानत प्रीति रीति रघुराई । नाते सब हाते कर राखत राम सनेह सगाई ॥ नेह निबाह देह तज दशरथ कीरति अचल चलाई । ऐसेहु पितुते अधिक गीध पर ममता गुण गरुवाई ॥ तियविरही सुग्रीव सखा लखि प्राणप्रिया बिसराई । रण पर्‌यो बन्धु विभीषण ही को शोच हृदय अधिकाई ॥ घर गुरु गृह प्रिय सदन सासुरे भई जब जहँ पहुनाई । तब तहँ कही शबरीके फलनकी रुचि माधुरी न पाई ॥ सहज स्वरूप कथा मुनि वर्णत रहत सकुच शिरनाई ।केवट मीत कहत सुख मानत वानर बन्धु बड़ाई ॥ प्रेम कनौडो रामसों प्रभु त्रिभुवन तिहुँ काल न भाई । तेरो ऋणी हौं कह्यो कपिसों ऐसी मानिहै को सेवकाई ॥ तुलसी राम सनेह शील लखि जो न भक्ति उर आई । तौ तोहिं जन्म जाय जननी जड तनु तरुणता गँवाई ॥ ३७९ ॥

राग जैतश्री ।

श्री रघुवीरकी यह बानि । नीच हूं सों करत नेह सों प्रीति मन अनुमानि ॥ परम अधम निषाद पामर कौन ताकी कानि । लियो सो उर लाय सुत ज्यों प्रेमको पहचानि ॥ गीध कौन दयालु जो विधि रच्यो हिंसा सानि । जनक ज्यों रघुनाथ ताको दियो जल निज पानि ॥ प्रकृति मलिन कुजाति शबरी सकल अवगुण खानि । खात ताके दिये फल अति रुचि बखान बखानि ॥ रजनिचर अरु रिपु विभीषण शरण आयो जानि । भरत ज्यों उठ ताहि भेंटत देह दशा भुलानि ॥ कौन सौम्य सुशील वानर जिनहिं सुमिरत हानि । किये ते सब सखा पूजे भवन अपने आनि ॥ राम सहज कृपालु कोमल दीन हित दिन दानि । भजहिं ऐसे प्रभुहिं तुलसी कुटिल कपट न ठानि ॥ ३८० ॥

राग प्रभाती ।

साँचे मनके मीता रघुवर साँचे मनके मीता । कब शबरी काशीको धाई कब पढि आई गीता ॥ जूँठे फल ताके प्रभु खाये नेक लाज नहिं कीता । लङ्कापतिको गर्व हरचो है राज्य विभीषण दीता ॥ सुग्रीवहि सखा कियो रघुनंदन वानर किये पुनीता । सफल यज्ञ मुनि जनके कीने सब भूपन बल जीता ॥ भसम रमाई कहाँ अहल्या गणिका योग न लीता । तुलसिदास प्रभु शुद्धचित्त लख सबहिं मोक्ष पद दीता ॥ ३८१ ॥

राग सोरठ ।

ऐसे राम दीन हितकारी । अति कोमल करुणानिधान बिन कारण पर उपकारी ॥ साधनहीन दीन निज अव वश शिला भई मुनि नारी । गृहते गवन परश पद पावन घोर शाप

ते तारी ॥ हिंसारत निषाद तामस वपु पशु समान बनचारी। भेंट्यो हृदय लगाय प्रेम वश नहिं कुलजाति विचारी ॥ यदपिद्रोह कियो सुरपति सुत कहि न जाय अति भारी। सकल लोक अव-लोकि शोक हत शरण गये भय टारी ॥ विहँग योनि आमिष अहार पर गीध कवन व्रतधारी। जनक समान क्रिया ताकी निज कर सब बात सँवारी ॥ अधम जाति शबरी योपित शठलोक वेदते न्यारी। जान प्रीति दे दरश कृपानिधि सोउरघुनाथ उधारी ॥ कपि सुग्रीव बन्धु भय व्याकुल आयो शरण पुकारी। सहि न सके दारुण दुख जनके हत्यो बालि सह गारी ॥ रिपुको बन्धु विभीषण निशिचर कौन भजन अधिकारी। शरण गये आगे होय लीनो भेट्यो भुजा पसारी ॥ अशुभ होय जिनके सुमिरणते वानर रीछ विकारी। वेद विदित पावन किय तें सब महिमा नाथ तुम्हारी ॥ कहँ लग कहौं दीन अगणित जिनकी तुम विपति निवारी। कलिमल ग्रसित दास तुलसी पर काहे कृपा बिसारी ॥ २८२ ॥

राग भैरव।

ऐसी हरी करत दास पर प्रीति। निज प्रभुता बिसारजनके वश होत सदा यह रीति ॥ जिन बांधे सुर असुर नाग नर प्रबल कर्मकी डोरी। सो परब्रह्म यशोमति बांध्यो सकत नहीं तनु छोरी ॥ जाकी माया वश विरंचि शिव नाचत पार नपायो। करतल ताल बजाय ग्वाल युवतिनसों नाच नचायो ॥ विश्वंभर श्रीपति त्रिभु-वनपति वेदविदित यह लीख। बलिसों कछु न चली प्रभुता वर हो द्विज माँगी भीख ॥ जाके नाम लिये छूटत भव जन्म मरण दुख भार। अंबरीष हित लाग कृपानिधि सो जनम्यो दश बार ॥ योग विराग ध्यान जप तप कर जिहिं खोजत मुनि ज्ञानी। वानर भालु चपल पशु पामर नाथ तहां रति मानी ॥ लोकपाल यम

काल पवन रवि शशि सब आज्ञाकारी। तुलसिदास प्रभु उग्रसेनके द्वार बेंत करधारी ॥ ३८३ ॥

राग जैतश्री।

ऐसी कौन प्रभुकी रीति। बिरदहेतु पुनीत परिहर पामरन पर प्रीति॥ गई मारन पूतना कुच कालकूट लगाय। मातकी गति दियो ताहि कृपालु यादवराय ॥ काम मोहिना गोपिकन पर कृपा अतुलित कीन। जगत पिता विरंचि जिनके चरणकी रज लीन ॥ नेमते शिशुपाल दिन प्रति देत गिन गिन गार। कियो लीन सो आप में हारि राजसभा मँझार ॥व्याध चरणहिं वाण मारचो मूढ़ मति मृग जानि।सो सदेह स्वलोक पठयो प्रगट कर निज बानि॥ कौन तिनकी कहै जिनके सुकृत औ अघ दोय। प्रगट पातक रूप तुलसी शरण राखे सोय ॥ ३८४ ॥

राग सोरठ।

एसा का उदार जग माहीं। विन सेवा जो द्रवै दीनपर राम सरिस कोउ नाहीं ॥ जो गति योग विराग जतन कर नहिं पावत मुनि ज्ञानी। सो गति देत गीध शवरीको प्रभु न बहुत जिय जानी ॥ जो संपति दशशीश अर्प कर रावण शिव पै लीनी। सो सम्पदा विभीपणको अति सकुच सहित हरि दीनी॥ तुलसिदास सब भाँति सकल सुख जो चाहत मन मेरो। तो भज राम काम सब पूरण करै कृपानिधि तेरो ॥ ३८५ ॥

राग जंगला।

ऐसो श्रीरघुवीर भरोसो। वारि न वोर सको प्रहलादहिं पावक नाहिं जरोसो ॥ ऐसो० ॥ हरणाकुश वहु भाँति सतायो हठकर वैर करोसो। मारचो चहै दास नरहरिको आपे दुष्ट मरोसो ॥ ऐसो० ॥ मीराके मारनके कारण पठयो जहर खरोसो। राम

नाम अमृत भयो ताको हँस हँस पान करोसो ॥ ऐसो॰ ॥ द्रुपदसुताको चीर दुशासन मध्यसभा पकरोसो। ऐंचत ऐंचत भुज बलहारे नेक न अँग उघरोसो ॥ ऐसो॰ ॥ भारतमें भरुहीके अण्डा कोटिनदल बिखरोसो। राम नाम जब पक्षी टेरयो घंटाटूट परोसो ॥ ऐसो जारयो लंक अंजनी नन्दन देखत पुर सगरोसो। ताके मध्य बिभीषणको गृह राम कृपा उबरो सो ॥ ऐसो॰ ॥ रावण सभा कठिन प्रण अंगद हठ कर हरि सुमिरोसो। मेघनाद सम कोटिन योधा टारे पग न टरोसो ॥ ऐसो॰ ॥ तुलसिदास विश्वास रामको का कर नारि नरो सो। और प्रभाव कहाँ लग वरणों ज्यहि यमराज डरो सो ॥ ऐसो॰ ॥ २८६ ॥

रेमन राम भरोसो भारी। पानीपर जिन पाहन तारे और अहल्या तारी ॥ यमके बांधे पतित छुडाये ऐसे परउपरकारी। सबकी खबर लेत दुख सुखकी अर्जुनके हितकारी ॥ तू दयालु प्रभु वेद पुकारें महिमा सुनी तिहारी। मिहरदास प्रभु शरण गहेकी राखो लाज हमारी ॥ २८७ ॥

राग काफी।

जानकी नाथ सहाय करैं जब कौन बिगार करै नर तेरो । सूरज मङ्गल सोम भृगू सुत बुध अरु गुरु वरदायक तेरो ॥ राहु केतुकी नहीं गम्यता शनीचर होत उचेरो। दुष्ट दुशासन निवल द्रौपदी चीर उतार कुमन्तर प्रेरो ॥ जाकी सहाय करी करुणानिधि बढ़गये चीरके भार घनेरो। गर्भमें राख्यो परीक्षितराजा अश्वत्थामा जब अस्त्र प्रेरो ॥ भारतमें भरुहीके अंडा तापर गजको घंटा गेरो। जाकी सहायकरी करुणानिधि ताके जगतमें भाग वड़ेरो ॥ रघुवंशी सन्तन सुख दाई तुलसिदास चरणनको चेरो ॥ २८८ ॥

राग वड़हंस ।

जगके रुसे ते क्या भयो जाके राम हैं रखवारहो । अब देख प्यारे खम्भमें नरसिंह होकर अवतरे ॥ हिरण्याक्षको मारके प्रह्लाद रक्षा करे हो । अब देख प्यारे सभामें जहँ कपटके पाँसेपरे ॥ द्रौपदीको चीर वढ़ायके खैंचत दुशासन हरेहो । अब देख प्यारे समरमें तैयार दोऊदल खरे ॥ चिगना वचे भर दूलके गज घंट वापर परे हो । अब देख प्यारे लंकामें संकट विभीषणको परे ॥ तुलसी सराहत रामको जिनको अवध मङ्गल भरेहो ॥ २८९ ॥

राग झंझोटी ।

अस कछु समुझि परै रघुराया। विन तव कृपा दयालु दास हित मोह न छूटै माया॥ वाक्य ज्ञान अत्यन्त निपुण भव पार न पावै कोई। निशि गृह मध्य दीपकी वातन तम निविरत नहिं होई ॥ जैसे कोउ इक दीन दुखित अति अशन हीन दुख पावै । चित्र कल्पतरु कामधेनु गृह लिखे न विपति नशावै ॥ पट रस वहु प्रकार भोजन कोउ दिन अरु रैनि वखानै । विन वोले संतोप जनित सुख खाय सोई पै जानै ॥ जब लग नहिं निज हृदय प्रकाश अरु विपय आश मन माहीं । तुलसिदास तवलग जग भरमत सुपनेहु सुख नाहीं ॥ २९० ॥

हे हरि कस न हरो भ्रम भारी । यद्यपि मृपा सत्य भासे जब लग नहिं कृपा तुम्हारी ॥ अरथ अविद्यमान जानीये संसृत नहिं जाय गुसाई । विन वांधे निज हठ शठ परवश परचो कीरकी नाई ॥ सुपने व्याध विविधवांधा जनु मृत्यु उपास्थित आई । वैद्य अनेक उपाय करें जागे विए पीर न जाई ॥ श्रुति गुरु साधु स्मृतिसम्मत यह दृश्य सदा दुखकारी । तिहि विन तजे भजे विन रघुपति

विपति सकै को टारी ॥ बहु उपाय संसार तरनको विमल गिरा श्रुति गावै। तुलसिदास मैं मोर गए बिन जिय सुख कभूं न पावै॥२९१॥

राग बिलावल।

केशव कहि न जाय क्या कहिये। देखत तव रचना विचित्र हरि समझ मनहिं मन रहिये ॥ शून्य भीत पर चित्र रंग नहिं बिन तनु लिखा चितेरे। धोये मिटै न मरिय भीत दुख पाइय यह तनु हेरे ॥ रवि करनीर बसे अति दारुण मकर रूप तिहि माहीं। वदन हीन सों ग्रसै चराचर पान करन जे जाहीं ॥ कोउ कह सत्य झूंठ कह कोऊ युगल प्रबल कर मानै। तुलसिदास परिहरै तीनभ्रम सो आपन पहँचानै॥ २९२ ॥

राग भैरव।

राम जप राम जप राम जप बावरे। घोर भव नीरनिधि नाम निज नाव रे ॥ एकही साधन सब ऋद्धि सिद्धि साध रे। ग्रसे कालि रोगयोग संयम समाध रे॥ भलो जो है पोचजो है दाहिनो जो वाम रे। रामनामहीसे अंत सबहीको काम रे॥ जग नभ वाटिका रही है फैल फूल रे। धूआँकेसे धौलहैं तू देख मतभूल रे ॥ रामनाम छाँड जो भरोसो करै और रे। तुलसी परोसो त्याग माँगे कूरकौर रे ॥२९३॥

राम नाम जप जिय सदा सानुराग रे। कलि न विराग योग याग तप त्याग रे ॥ राम नाम सुमिरण सब विधिहीको राज रे। रामक बिसारबो निषेधशिरताज रे॥ राम नाम महामणि फणि जगजाल रे। मणि लिये फणिजिये व्याकुल विहाल रे ॥ राम नाम काम तरु देत फल चार रे। कहत पुराण वेद पंडित पुकार रे॥ राम नाम प्रेम परमारथको सार रे। राम नाम तुलसीको जीवन अधार रे ॥ २९४ ॥

राग जैजैवंती ।

राम सुमिर राम सुमिर यही तेरो काज है । मायाको संग त्याग हरिजूकी शरण लाग जगत सुख मान मिथ्या झूठो सब साजहै ॥ सुपने ज्यों धन पछान काहेपर करत मान वारूकी भीत तैसे वसुधा को राजहै । नानक जन कहत बात विनशजैहै तेरो गात छिन छिन कर गयो काल तैसे जात आजहै ॥ २९५ ॥

राग भैरव ।

सुमिर सनेहसों तू नाम रामरायको । संवरनिसंवरको सखा असहायको॥भागहै अभागेहूँको गुण गुणहीनको । गाहक गरीवको दयालु दानि दीनको ॥ कुल अकुलीनको सुन्यो जो वेद साखहै ॥ पांगुरेको हाथ पांव आँधरेको आंखहै ॥ माई वाप भूँखेको अधार निराधारको । सेतु भवसागरको हेतु सुखसारको ॥ पतितपावन रामनामसों न दूसरो।सुमिरि सुभूमि भयो तुलसीसों ऊसरो॥२९६॥

राग पहाड ।

सब मतको मत यह उपदेशू । मूल मंत्र यह उचित शिखावन भज मन सुत अवधेशू ॥ अहिपुर नरपुर देवलोक पुर रंक फकीर नरेशू । जो जापक सिय रामनामको सो भवसिंधु तरेसू ॥ जप तप संयम दान नेम मख तीरथ अमित करेसू । तुलहिं न सीताराम नाम सम वेद पुराण कहेसू ॥ गावत शंभु आदि नारद मुनि व्यास विरंचि गणेशू । यह सब गावत नाम महातम काग भुशुंडि खगेसू ॥ नाम प्रतीत राख हिरदेमें उमा सों कह्यो महेसू । तुलसिदास यह नामकि महिमा कलिमल सकल हरेसू ॥ २९७ ॥

राग कालिंगडा ।

राम सुमिरले सुमिरन करले को जाने कलकी । खबर ना या जगमें पलकी ॥ रैनि अँधेरी निर्मल चंदा ज्योति जगे झलकी ।

धीरे धीरे पाप कटत हैं होत मुक्ति तनकी ॥ कौड़ी कौडी माया जोड़ी कर बातां छलकी । शिरपर गठरी धरी पापकी कौन करै हलकी ॥ भवसागरके त्रास कठिन हैं थाह नहीं जलकी । धर्मी धर्मी पार उतर गये डूबे अधम जनकी ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो काया मंडलकी । भज भगवान आन नहिं कोई आंशा रघुबरकी ॥ ३९८ ॥

राग धनाश्री ।

राम सुमर राम सुमर राम सुमर भाई । राम नाम सुमरन विन वूड़त अधिकाई ॥ वनिता सुत देह गेह संपति सुखदाई । इनमें कछु नाहिं तेरो काल अवधि आई ॥ अजामील गणिका गज पतित कर्म कीने । तेऊ उतर पार परे राम नाम लीने ॥ सूकर कूकर योनि भ्रम्यौ तऊ लाज न आई । राम नाम छाँड़ अमृत काहे विष खाई । तज भर्म कर्म विधि निषेध राम नाम लेही । गुरु प्रसाद जन कवीर राम कर सनेही ॥ ३९९ ॥

राग भैरव ।

रामचरण अभिराम कामप्रद तीरथराज विराजै । शंकर हृदय भक्ति भूतल पर प्रेम अक्षैवट छाजै ॥ श्यामचरण पद पीठ अरुण तल लसत विशद नख श्रेनी । जनु रविसुता शारदा सुरसरि मिल चलि ललित त्रिवेनी ॥ अंकुश कुलिश कमल धुज सुंदर भँवर तरंग विलासा । मज्जहिं सुरसज्जन मुनि जन मन मुदित मनोहर बासा॥विन विराग जप योग योग व्रत विन तीरथ तनु त्यागे॥ सव सुख सुलभ सद्य तुलसी प्रभु पद प्रयाग अनुरागे ॥ ४०० ॥

राग विभास ।

भज मन रामचरण सुखदाई । जिहि चरणनसे निकसी सुरसरी शंकर जटा समाई ॥ जटाशंकरी नाम परचो है त्रिभुवन तारन आई ।

जिहिं चरणनकी चरण पादुका भरत रह्यो लवलाई ॥ सोई चरण केवट धोय लीने तब हरि नाव चलाई।सोई चरण संतन जन सेवत सदा रहत सुखदाई॥सोई चरण गौतम ऋषिनारी परश परमपद पाई। दंडकवन प्रभु पावन कीनो ऋषियन त्रास मिटाई॥ सोई प्रभु त्रिलोकके स्वामी कनक मृगा सँग धाई । कपि सुग्रीव बंधु भय व्याकुल तिन जय छत्र फिराई ॥ रिपुको अनुज विभीषण निशिचर परशत लंका पाई । शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहसमुख गाई ॥ तुलसिदास मारुत सुतकी प्रभु निज मुख करत बड़ाई ॥ ४०१ ॥

राग परज ।

भज मन रामचरण दिन राती । काहेको भ्रमत फिरत हो निशि दिन भजन करत अलसाती ॥ बिरथा जन्म गँवायो मूरख सोवत रह्यो दिन राती । राम सियाको नाम अमीरस सो काहे नहिं खाती ॥ संवत सोलहसौ इकतीसा जेठ मास छठि स्वाती । तुलसिदास यह विनय करत है प्रथम अरजकी पाती ॥ ४०२ ॥

रे मन क्यों न भजो रघुवीर । जाहि भजत ब्रह्मादिक सुर नर ध्यान धरत मुनि धीर ॥ श्याम वरण मृदु गात मनोहर भंजन जनकी पीर । लछिमन सहित सखा सँग लीने विचरत सरयू तीर ॥ ठुमक ठुमक पग धरत धरणि पर चंचल चित हो बीर । मंद मंद मुसकात सखन सों बोलत वचन गँभीर ॥ पीतवसन दामिनि द्युति निंदत कर कमलन धनु तीर । रामदास रघुनाथ भजन विन धृग धृग जन्म शरीर ॥ ४०३ ॥

राग सोरठ ।

काल व्याल ज्यौं परयो डोलै सुख पसारे मीत ॥ आज कल पुनि तोहिं ग्रसिहै समझ राखो चीत । कहै नानक राम भजले जात औसर वीत ॥ ४०४ ॥

राग धनाश्री।

सुन मन मूढ़ शिखावन मेरो। हरिपद विमुख काहू न लह्यो सुख शठ यह समझ सबेरो ॥ बिछुरे शशि रवि मन नयननते पावत दुख बहुतेरो। भ्रमत भ्रमत निशि दिवस गगनमें तहँ रिपु राहु बडेरो ॥ यद्यपि अति पुनीत सुरसरिता तिहुँपुर सुयश घनेरो। तजे चरण अजहूं न मिटत नित बहबो ताहू केरो ॥ छुटै न विपतिभजे बिन रघुपति श्रुति संदेह निबेरो। तुलसिदास सब आश छांड कर होउ रामको चेरो ॥ ४०५ ॥

राग ललित।

गाले रे गोविंद गुणा रे।ऐसो समय बहुरि नहिं पावे फिर पछतावेगा मूढ मना रे ॥ पानीकी बूँदसे पिंड प्रगट कियो नयन नासिका मुख रसना रे। ताको रचत मास दश लागेताहि न सुमिरयो एक छिना ॥ बाल अवस्था खेल गँवाई भर ज्वान बहुरूप बना रे। वृद्ध भयो तब आलस उपज्यो माया मोहके फंद घना रे ॥ अधम तेरे अपराधी तारे जो जो आये हरि शरना रे। ना माने तो साख बताऊँ अजामील गणिका सधना रे॥ धन यौवन अंजलिको जल ज्यों घटत जात है छिना छिना रे।जो सुख चहै भजे रघुनंदन नामदेव आयो हरि शरणा रे ॥ ४०६ ॥

राग भैरव।

जाग जाग जीव जड़ जोहै जग यामिनी। देह गेह नेह जान जैसे घन दामिनी ॥ सोवत सुपने सहे संसृत संताप रे। बूडयो मृग वारि खायो जेवरिके सांप रे ॥ कहे वेद बुध तूतो बूझ मन

माहिं रे । दोप दुख सुपनेके जागे ही पै जाहि रे ॥ तुलसी जागे ते जाय ताप तिहूं ताप रे। राम नाम शुच रुच सहज स्वभाव रे ॥ ४०७ ॥

राग प्रभाती ।

क्यों सोया गफलतका माता जागो रे नर जाग रे ॥ या जागे कोई योगी भोगी या जागे कोई चोर रे । या जागे कोई संत पियारा लगी रामसों डोर रे ॥ ऐसी जागन जाग पियारे जैसी ध्रुव प्रह-लाद रे । ध्रुवको दीनी अटल पदवी दिया प्रहलादको राज रे ॥ हरि सुमिरे सोई हंस कहावे कामी क्रोधी काग रे । तनुका चोला भया पुराना लगा दाग पर दाग रे ॥ मन है मुसाफिर तनुकी सरां बिच तू कीता अनुराग रे । रैनि वसेरा करले डेरा उठ चलना परभात रे । साधु संगत सतगुरुकी सेवा पावे अचल सुहाग रे । निदानंद भज राम गुमानी जागन पूरण भाग रे ॥ ४०८ ॥

राग देश ।

राम ज्यों राखे त्यों रहिये ॥ जो प्रभु करै भलो कर मानो मुखते बुरो न कहिंये । हर होनी अन होनी करदे सो सब शिरपर सहिये ॥ करै कृपा हरि नाम जपावे सो अंतर ले गहिये । मिहर-दास हरि हुकुम मानिये यह सेवकको चहिये ॥ ४०९ ॥

राग पूरवी ।

अपनी ओर निवाहिये वाकी वाहू जाने । भली बुरी कछु जानत नाहीं कर्म लिख्यो सो पाइयो ॥ ४१० ॥

राग सोरठ ।

जाको प्रिय न राम वैदही । सो छाँडिये कोटि वैरी सम यद्यपि परमसनेही ॥ तज्यो पिता प्रह्लाद बिभीषण बंधु भरत मह-

तारी । बलि गुरु ब्रजवनितन पति त्यागे भइँ जग मंगलकारी ॥ नाते नेह रामके मनियत सुहृद सुसेव्य जहां लौं । आंजल कहा आंख जिहिं फूटे बहुतो कहों कहां लौं ॥ तुलसी सो सब भांति परम हित पूज्य प्राण ते प्यारो । जासों होय सनेह रामपद सोइ है हितू हमारो ॥ ४११ ॥

राग मलार ।

जाको लगन रामकी नाहीं । सो नर खर कूकर शूकर सम वृथा जियत जग माहीं ॥ काम क्रोध मद लोभ नींद भय भूख प्यास सबहीके । मनुज देह सुर साधु सराहत सो सनेह सिय पीके ॥ सूर सुजान सुपूत सुलक्षण गनियत गुण गरुवाई । विन हरि भजन इंद्रायनके फल तजत नहीं करुवाई ॥ कीरति कुल करतूति भूँति भलि शील स्वरूप सलोने । तुलसी प्रभु अनुराग रहत जिमि सालन साग अलोने ॥ ४१२ ॥

राग केदारो ।

ऐसे जन्म समूह सिराने । प्राणनाथ रघुनाथसे प्रभु तज सेवत चरणबिराने ॥ जे जड़ जीव कुटिल कायर खल केवल कलिमल साने । सूखत वदन प्रशंसत तिनको हरिसे अधिक कर माने ॥ सुख हित कोटि उपाय निरन्तर करत न पाँय पिराने । सदा मलीन पंथके जल ज्यों कभूं न हृदय थिराने ॥ यह दीनता दूर करवेको अमित जतन उर आने । तुलसी चित चिन्ता न मिटै विन चिंतामणि पहिंचाने ॥ ४१३ ॥

राग भैरव ।

मोह जनित मल लाग विविध विध कोटों जतन न जाई । जन्म जन्म अभ्यास निरत चित अधिक अधिक लपटाई ॥

नयन मलिन परनारि निरखि मन मलिन विषय सँग लागे। हृदयमिलन वासना मान मद जीव सहज सुख त्यागे॥ परनिन्दा सुन श्रवण मलिन भये वचन दोष पर गाये। सब प्रकार मल भार लाग निज नाथ चरण बिसराये॥ तुलसिदास व्रत दान ज्ञान तप शुद्धि हेतु श्रुति गावै। रामचरण अनुराग नीर विन मल अति नाश न पावै॥ ४१४॥

राग धनाश्री।

मेरी प्रीति गोविंदसों ना घटे। मैं तो मोल महँगे लीया जी सटे॥ चित्त सुमरण करूं नयन अवलोकनो श्रवण वाणी सुयश पूर राखूं। मन सुमधुकर करूं चरण हिरदे धरूं रसन अमृत राम नाम भाखूं। साधु संगति विना भाव नहिं ऊपजे भाव विन भक्ति नहिं होय तेरी। कहत रामदास इक विनती प्रभु सों पेज राखो राजा राम मेरी॥ ४१५॥

राग पीलो।

सिया राम विना वीते जात दिना। धन जोवन और सुख सम्पदा रैनिका सुपना॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरो कोउ नहीं अपना। कहतकवीर सुनों भाई साधो झूंठे मित्र घना॥ ४१६॥

राग भैरव।

राम कृष्ण उठ कहिये भोर। यह अवधेश वही व्रज जीवन यह धनुष धरन वह माखन चोर॥ इनके चमर छत्र शिर सोहै उनके लकुट मुकुट कर जोर। इन सँग भरत शत्रुहन लक्षिमन वलदाऊ सँग नन्द किशोर॥ इन सँग जनकलली अति सोहे उत राधा सँग करत कलोर। इन सागरमें शिला तरायो उन गोवर्द्धन नखकी कोर॥ इन मारयो लंकापति रावण उन मारयो कंसा वरजोर। तुलसीके यह दोऊ जीवन दशरथ सुत अरु नन्दकिशोर॥ ४१७॥

राग गौरी ।

श्री रामचन्द्र कृपालु भजुमन हरन भवभय दारुणं । नव कंज लोचन कञ्ज मुख करकञ्ज पदकञ्जारुणं ॥ कन्दर्प अगणित अमित छबि नव नील नीरज सुन्दरं । पटपीत मानो तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥ भज दीनबन्धु दिनेश दानव दैत्य वंश निकन्दनं । रघुनन्द आनँद कंद कौशल चंद दशरथ नंदनं ॥ शिर मुकुट कुण्डल तिलक चारु उदार अङ्ग विभूषणं । आजानु भुज शर चाप धर संग्राम जित खर दूषणं ॥ इमि वदत तुलसीदास शंकर शेष मुनि मन रञ्जनं । मम हृदय कञ्ज निवास कर कामादि खल दल गञ्जनं ॥ ४१८ ॥

छंद–नमामि भक्त वत्सलं कृपालु शील कोमलं ।
भजामि ते पदांबुजं अकामिनां स्वधामदं ॥
निकाम श्याम सुंदरं भवांबु नाथ मंदरं ।
प्रफुल्ल कञ्जलोचनं मदादि दोष मोचनं ॥
प्रलंब बाहु विक्रमं प्रभोऽप्रमेय वैभवं ।
निषंग चाप सायकं धरं त्रिलोकनायकं ॥
दिनेश वंश मण्डनं महेश चाप खंडनं ।
मुनींद्र सन्त रंजनं सुरारि वृन्द भंजनं ॥
मनोज वैरि वन्दितं अजादि देव सेवितं ।
विशुद्ध बोध विग्रहं समस्त दूषणापहं ॥
नमामि इंदिरापतिं सुखाकरं सतांगतिं ।
भजे सशक्ति सानुजं शचीपति प्रियानुजं ॥
त्वदंघ्रि मूल ये नरा भजंति हीन मत्सरा ।
पतंति नो भवार्णवे वितर्क वीचि संकुले ॥
विविक्त वासिनो यदा भजंति मुक्तिदं मुदा ।

निरस्य इंद्रियादिकं प्रयांति ते गतिं स्वकं ॥
त्वमेक मद्भुतं प्रभुं निरीह मीश्वरं विभुं ।
जगद्गुरूंच शाश्वतं तुरीयमेव केवलं ॥
भजामिभाव वल्लभं कुयोगिनां सुदुर्लभं ।
स्वभक्त कल्प पादपं समस्त सेव्य मन्वहं ॥
अनूप रूप भूपतिं नतोहं सुर्विजा पतिं ।
प्रसीद मे नमामि ते पदाब्जभक्ति देहि मे ॥
पठंति ये स्तवं इदं नरादरेण ते पदम् ।
व्रजंति नात्र संशयः त्वदीय भक्तिसंयुता: ॥ ४१९ ॥

अथ चेतावनी सामयिक.

सवैया ।

पूरण ब्रह्म बताय दियो जिन एक अखंड है व्यापक सारे ॥
राग रु द्वेष करे अब कोन सो जोई है मूल सोई सब डारे ॥
संशय शोक मिट्यो मनको सब तत्व विचार कहो निरधारे ॥
सुन्दर शुद्ध किये मल धोयके वा गुरुको उर ध्यान हमारे ॥४२०॥

कवित्त ।

काहू सों न रोप तोप काहू सों न राग दोप काहू सों न वेर भाव काहू की न घात है ॥ काहू सों न वकवाद काहू सों नहीं विपाद काहू सों न सङ्ग नातो कोऊ पक्षपात है ॥ काहू सों न दुष्ट वेन काहू सों न लेन देन ब्रह्मको विचार कछु और न सुहात है ॥ सुन्दर कहत सोई ईशनको महाईश सोई गुरुदेव जाके दूसरी न बातहै ॥ ४२१ ॥

लोह कूँ ज्यों पारस पषाण हूं पलट लेत कञ्चन छुवत होय जगमें प्रमानिये ॥ द्रुमको ज्यों चन्दन हू पलटै लगाय बास आपके समान ताको शीतलता आनिये ॥ कीटको ज्यों भृंगहू पलटके करत भृंग सोऊ उड़जाय ताको अचर्ज न मानिये ॥ सुन्दर कहत यह सगरे प्रसिद्ध बात शुद्ध शीख पलटै सो सतगुरु जानिये॥४२२॥

गुरु बिन ज्ञान नाहिं गुरु बिन ध्यान नाहिं गुरु बिन आतमें विचार न लहत है । गुरु बिन प्रेम नाहिं गुरु बिन प्रीति नाहिं गुरु बिन शीलहू संतोष न गहत है ॥ गुरु बिन वास नाहिं बुद्धिको प्रकाश नाहिं भ्रमहूं को नाश नाहिं संशय रहत है । गुरु बिन बाट नाहिं कौड़ी बिन हाट नाहिं सुन्दर प्रगट लोक वेद यों कहत है ॥ ४२३ ॥

कोऊ देत पुत्र धन कोऊ देत बल धन कोऊ देत राज साज देव ऋषि सुन्योहै । कोऊ देत यश मान कोऊ देत रस आन कोऊ देत विद्याज्ञान जगतमें गुन्यो है । कोऊ देत ऋद्धि सिद्धि कोऊ देत नव निद्धि कोऊ देत और कछु ताते शीश धुन्यो है । सुन्दर कहत एक दियो जिन रामनाम गुरुसों उदार कोऊ देख्यो है न सुन्यो है ॥ ४२४ ॥

भूमिहूकी रेणुकी तो संख्या कोऊ कहतहैं भार हूं अठारह द्रुमनके जो पात हैं । मेघनकी संख्या सोऊ ऋषिन विचार कही बूँदनकी संख्या तेऊ आयके बिलात हैं॥तारनकी संख्याकोऊ कहीहै पुराण माहिं रोमनकी संख्या पुनि जितनेक गात हैं ॥ सुन्दर जहां लौं जन्तु सबहीको आवै अन्त गुरुके अनन्त गुण कापै कहेजात हैं ॥ ४२५ ॥

गोविंदके किये जीव जात हैं रसातलको गुरु उपदेश सो तो छूटैं यमफंद ते ॥ गोविंदके किये जीव वश परैं कमनक गुरुक नि-

-वाज सूं तो फिरत स्वछंद ते ॥ गोविद ये किये जीव वड़ें भवसा-गरमें सुन्दर कहत गुरु काढ़े दुख द्वंद ते ॥ औरहू कहांलौं कछु मुखते कहूं वनाय गुरुकी तो महिमा है अधिक गोविंद ते ॥४२६॥

जोई कछु देखिये सो सकल विनाशवंत बुद्धिमें विचार कर वहु अभिलाषिये ॥ चिन्तामणि पारस हू कल्पतरु कामधेनु औरहू अनेक निधि वारि वारि नाखिये । ताते मन वच कर्म कारि कर जोर कहूं सुन्दर चरण शीश मेल दीन भाषिये ॥ बहुत प्रकार तीनो लोक सब शोधे हम ऐसी कौन भेंट गुरुदेव आगे राखिये ॥४२७॥

कानके गयेते कहा कान ऐसे होत मूढ़ नैनके गयेते कहा नैन ऐसे पाइये॥नासिका गयेते कहा नासिका सुगंध लेत मुखके गयेते ऐसे मुख कहाँ गाइये ॥ हाथके गयेते कहा हाथ ऐसो काम होत पांवके गयेते ऐसे पांव कित धाइये॥याहीते विचार देख सुंदर कहत तोहिं देहके गयेते ऐसी देह कित पाइये ॥ ४२८ ॥

वार वार कह्यो तोहिं सावधान क्यों न होय ममताकी पोट शिर काहेको धरत हैं । मेरो धन मेरो धाम मेरे सुत मेरी वाम मेरे पशु मेरो ग्राम भूल्यो यों फिरत है ॥ तूतो भयो वावरो विकाय गई बुद्धि तेरी ऐसो अंधकूप गृह तामें तू परत है ॥ सुन्दर कहत तोहिं नेकहूं न आवे लाज काजकूं विगारके अकाज क्यों करत है ॥ ४२९ ॥

वैरी घर माहिं तेरे जानत सनेही मेरे दारा सुत वित्त तेरो खोस खोस खायँगे । औरहू कुटुंब लोग लूटें चहूंओरहीसे मीठी मीठी वात कर तोसों लपटायँगे ॥ संकट परेगो जब कोऊ नहीं तेरो तब अंतही कठिन वाकीवेर उठ जायँगे ॥ सुंदर कहत ताते झुठोही प्रपंच सब सुपनेकी नाईं सब देखत विलायँगे ॥ ४३० ॥

श्रवण लै जाय कर नादकी ले. डारैं फाँस नयन ले जाय कर रूप वश करचो है ॥ नासिका लै जाय कर बहुत सुँघावै गंध रसन लैजाय कर स्वाद मन हरचो है ॥ चरम लैजाय कर नारीसों सपर्श करै सुंदर कोऊक साध ठगन सो डस्यो है ॥ काम ठग क्रोध ठग लोभ ठग मोह ठग ठगनकी नगरीमें जीव आय परचोहै ॥ ४३१ ॥

घरी घरी घटत छीजत जात छिन छिन भीगत ही गर जात माटी कोसो डेलहै ॥ मुक्तिके दुआरे आय सावधान क्यों न होय बार बार चढत न त्रियाकोसो तेलहै ॥ करले सुकृत हरी भजन अखंड नर याहीमें अंतर परै यामें ब्रह्म मेल है ॥ मनुप जनम यह जीत भावै हार अब सुन्दर कहत यामें जूवाकोसो खेल है ॥ ४३२ ॥

सवैया ।

इंद्रिनको सुख मानत है शठ याहिते तू बहुतै दुख पावै ॥ ज्यों जलमें झख मांस है लीलत स्वादबँध्यो जल बाहिर आवै ॥ ज्यों कपि मूठ न छांडत है रसनावश बंध परचो बिललावै ॥ सुंदर क्यों पहिले न सम्हारत जो गुर खाय सो कान छिदावै ॥ ४३३ ॥

देखतके नर दीखत हैं पर लक्षण तो पशुके सबही हैं ॥ बोलत चालत पीवत खात सु वे घर वे वन जात सही हैं ॥ प्रात गये रजनी फिर आवत सुंदर यों नित भारवही हैं ॥ और तो लक्षण आय मिले सब एक कमी शिर शृंग नहीं हैं ॥ ४३४ ॥

पेटते बाहिर होतही बालक आयके मात पयोधर पीनों ॥ मोहबँध्यो दिनहीं दिन ऐसे औ तरुण भयो त्रियके रस भीनो ॥ पुत्र प्रपौत्र बँध्यो परिवारसों ऐसेही भाँति गये पन तीनों ॥ सुन्दर रामको नाम बिसारके आपहि आपको बंधन कीन्हों ॥ ४३५ ॥

दुनियाँको दौरताहै औरतको लोरताहै औजूदको मोरताहै बटोई सरायका ॥ मुरगीको मोसताहै बकरीको रोसताहै गरीब को खोंसताहै बेमहर गायका ॥ जुलमको करताहै मालक सों न डरताहै दोजखको भरताहै खजाना बलायका ॥ होगया हिसाब तब आवेगा न ज्वाब कछू सुन्दर कहत गुनहगार है खुदायका ॥ ४३६ ॥

सैवया ।

येमरे देश विलायतहैं गज ये मेरे मंदिर ये मेरे थाती ॥ ये मेरे मात पिता पुनि बांधव ये मेरे पूत सो ये मेरे नाती ॥ ये मेरे कामिनी केलि करैं नित ये मेरे सेवक हैं दिन राती ॥ सुंदर वैसेहि छांडि गयो सब तेल जरयो सो बुझी जब बाती ॥ ४३७ ॥

कै यह देह जरायके छार किया कि किया कि किया कि किया है ॥ कै यह देह जमीनमें खोद दिया कि दिया कि दिया कि दिया है ॥ कै यह देह रहै दिन चार जिया कि जिया कि जिया कि जिया है ॥ सुंदर काल अचानक आय लिया कि लिया कि लिया कि लिया है ॥ ४३८ ॥

तू कछु और विचारतहै नर तेरो विचार धरयो ही रहैगो ॥ कोटि उपाय करै धनके हित भाग लिख्यो तितनोहि लहैगो ॥ भोर कि सांझ घरी पल मांझ सो काल अचानक आय गहै गो ॥ राम भज्यो न कियो कछु सुकृत सुंदर यों पछिताय रहैगो ॥ ४३९ ॥

बीत गये पिछले सबही दिन आवत है अगलो दिन नेरे॥ काल महाबलवंत बडो रिपु साधि रह्यो शर ऊपर तेरे ॥ एक घरीमहँ मारि गिरावत लागत ताहि कछू नहिं बेरे ॥ सुंदर संत पुकार कहैं सब हों पुनि तोहि कहों अब टेरे ॥ ४४० ॥ सोय रह्यो कहा

गाफिल ह्वैकर तो शिर ऊपर काल दहारै ॥ धामस धूंनस लाग रह्यो शठ आय अचानक तोहीं पछारै ॥ ज्यों वनमें मृग कूदत फांदत चित्र गले नख सों उर फारै ॥ सुंदर काल डरै जिहिके डर ता प्रभुको कहि क्यों न सम्हारै ॥ ४४१ ॥ मात पिता युवती सुत वांधव आय मिल्यो इनसे सनबंधा ॥ स्वारथके अपने अपने सब सो यह जानत नाहिंन अंधा ॥ कर्म अकर्म करै तिनके हित भार धरे नित आपने कंधा ॥ अंत विछोह भयो सबसों पुनि याहीते सुंदर है जगधंधा ॥ ४४२ ॥

कवित्त ।

मेरो देह मेरो गेह मेरो परिवार सब मेरो धन माल मैं तो बहु-विध भारो हूं ॥ मेरे सब सेवक हुकम कोऊ मेटै नाहिं मेरी युवती कूं मैं तो अधिक पियारो हूं ॥ मेरो वंश ऊंचो मेरे वाप दादा ऐसे भये करत बडाई मैं तो सभते उजारो हूं ॥ सुंदर कहत मेरो मेरो कर जाने शठ ऐसे नहीं जाने मैंतो कालहीकोचारो हूं॥४४३॥

देह तो सुरूप तौलौं जौलौं है अरूप माहिं सब कोऊ आदर करत सनमान है ॥ टेढ़ीपाग वांध वार वार ही मरोरै मूंछ बाहू उसकारै अति धरत गुमान है ॥ देश देशहीके लोग आयके हजूर होय बैठ कर तखत कहावै सुलतान है ॥ सुंदर कहत जब चेतना शकति गई वही देह ताकी कोऊ मानत न आन है ॥ ४४४ ॥

सवैया ।

नैननकी पलही पलमें छिन आध घरी घटिका जु गई है॥ याम गयो युग याम गयो पुनि सांझ गई तब रात भईहै ॥ आज गई अरु काल गई परसों तरसों कछु औरठई है ॥ सुंदर ऐसेहि आयु गई तृष्णा दिनही दिन होत नई है ॥ ४४५ ॥ जो दश वीस पचास भये शत होयँ हजारन लाख मँगे गी ॥ कोटि अरब्ब खरब्ब-

असंख्य पृथीपति होनकि चाह जगै गी ॥ स्वर्ग पतालको राज्य करा तृपणा अधिकी अति आग लगै गी ॥ मुन्दर एक संतोष बिना शठ तेरी ता भूँख कभी न भगै गी ॥ ४४६ ॥

काहेको दौरतहै दशहूं दिशि तू नर देख कियो हरिजूको ॥ बैठ रहै दुरके मुख मूँद उघारके दंत खवायहै टूको ॥ गर्भ थके प्रतिपाल करी जिन होय रह्यो तब तू जड मूको ॥ सुन्दर क्यों बिललात फिरै अब राख हृदे विसवास प्रभू को ॥ ४४७ ॥

भाजन आप गढ्यो जिनने भरि है भरि है भरि है भरि है जू गावतहै जिनके गुणको ढरि है ढरि है ढरि है ढरि है जू ॥ आदि हू अंत हू मध्य सदा हरि है हरि है हरि है हरि है जू ॥ सुंदर दास सहाय सही करि है करि है करि है करि है जू ॥ ४४८ ॥

कवित्त ।

या शरीर माहिं तू अनेक सुख मान रह्यो ताहि तू विचार यामें कौन बात भली है ॥ मेद मज्जा मांस रग रगनमें रक्त भर्यो पेट हूं पिटारीसीमें ठौर ठौर मली है ॥ हाड़नसों मुख भर्यो हाडनके नैन नाक हाथ पांव सोऊ सब हाडनकी नली है ॥ सुन्दर कहत याहि देख जिन भूलै कोय भीतर भँगार भरी ऊपर ते कलि है ॥ ४४९ ॥

कामिनीको अंग अति मलिन महा अशुद्ध रोम रोम मलिन मलिन सब द्वार हैं ॥ हाड मांस मज्जा मेद चाम सों लपेट राखे ठौर ठौर रकत के भरेहीभँडार हैं ॥ मूत्र हू पुरीष आँत एकमेक मिल रही औरहू उदर माहिं विविध विकार हैं ॥ सुन्दर कहत नारी नख शिख निंदारूप ताहि जो सराहै सो तो बड़ेही गँवार हैं ॥ ४५० ॥

सवैया।

सर्प डसे सु नहीं कछु तालुक बीछू लगे सु भलो कर मानो ॥
सिंह हुँ खाय तो नाहिं कछू डर जो गज मारत तो नहिं हानो ॥
आग जरो जल बूड़ मरो गिरि जाय गिरो कछु भै मत आनो ॥
सुंदर और भले सबही दुख दुर्जन संग भलो जिन जानो ॥ ४५१ ॥

कवित्त।

अपने न दोष देखै परके औगुण पेखै दुष्टको सुभाव उठि निंदाही करत है ॥ जैसे कोऊ महल सँवार राख्यो नीके कर कीरी तहां जाय छिद्र ढूँढत फिरत है ॥ भोरहीते साँझ लग सांझहीते भोर लग सुन्दर कहत दिन ऐसेंही भरत है ॥ पांवके तरेकी नहीं सूझै आग मूरखको और सों कहत शिर ऊपर बरतहै ॥ ४५२ ॥

देखबेको दौरे तो अटक जाय वाही ओर सुनबेको दौरे तो रसिक शिरताज है ॥ सूंघबे को दौरे तो अघाय न सुगंध कर खायबेको दौरे तो न धापै महाराज है ॥ भोगहीको दौरे तो नृपति हू न क्यों ही होय सुन्दर कहत याहि नेकहू न लाज है ॥ काहूको न कह्यो करै आपनीही टेक धरै मन सो न कोऊ हम देख्यो दगाबाज है ॥ ४५३ ॥

सवैया।

जो मन नारीकी ओर निहारत तो मन होत है ताहीको रूपा ॥
जो मन काहू सों क्रोध करै तब क्रोध मयी होयजाय तद्रूपा ॥
जो मन मायाही माया रटै नित तो मन बूड़त मायाके कूपा ॥
सुन्दर जो मन ब्रह्म विचारत तो मन होतहै ब्रह्मस्वरूपा ॥ ४५४ ॥

कवित्त।

मनहीके भ्रमते जगत यह देखियत मनहीको भ्रम गयो जगत बिलात है ॥ मनही के भ्रम जेवरीमें उपजत सांप करके

विचारे सांप जेवरी समात है ॥ मनहीके भ्रमते मरीचिका को जल कहै मनहीके भ्रम सीप रूपा सा दिखात है ॥ सुन्दर सकल यह दीखै मन हीको मनहीके भ्रम भ्रम गये ब्रह्म होय जातहै ॥ ४५५ ॥

काक अरु रासभ उलूक जब बोलत हैं तिनके तो वचन सुहात कहि कौन को ॥ कोकिला सारिका पुनि सूवा जब बोलत हैं सब कोऊ कान दै सुनत रवधौन को ॥ ताहि तैसो वचन विवेक कर बोलियत योहीं आक बाक वक तोरिये न पौन को ॥ सुन्दर समझकर वचन उचार करो नहीं तो समझ कर बैठो गहि मौनको॥४५६॥

सवैया।

कोउक निंदत कोउक वन्दत कोउक देत है आयके भक्षण ॥
कोउक आय लगावत चन्दन कोउक डारत धूरि ततक्षण ॥
कोउ कहै यह मूरख दीसत कोउ कहै यह आय विचक्षण ॥
सुन्दर काहू सा राग न द्वेष सो ये सब जानहु साधुके लक्षण ४५७

तात मिलै पुनि मात मिलै सुत भ्रात मिलै युवती सुखदाई ॥
राज मिलै गज बाज मिलै सब साजमिलै मन वांछित पाई ॥
लोक मिलै सुरलोक मिलै विधि कोक मिलै रु वैकुण्ठ हू जाई ॥
सुन्दर और मिलै सबही सुख सन्तसमागम दुर्लभ भाई ॥ ४५८ ॥

कवित्त।

देव हू भयेते कहा इन्द्र हू भयेते कहा विधिहूके लोक ते बहुरि आइयत है ॥ मानुष भयेते कहा भूपति भयेते कहा द्विजहू भयेते कहा पार जाइयत है ॥ पशु हू भयेते कहा पक्षी हू भयेते कहा पन्नग भयेते कहा क्यों अघाइयत है ॥ छूटिबेको सुंदर उपाय एक साधु संग जिनकी कृपा ते अति सुख पाइयत है ॥ ४५९ ॥

इन्द्राणी शृङ्गार कर चन्दन लगायो अंग ताहि देख इन्द्र अति कामवश भयो है ॥ सूकरी हू कर्दम के चहितमें लोट कर आगे जाय

सूकरको मन हरलियो है ॥ तैसो सुख सूकरको तैसो सुख मघवाको तैसो सुख नर पशु पक्षीहू को दियो है ॥ सुंदर कहत जाके भयो ब्रह्मानंद सुख सोई साधु जगतमें जीत कर गयो है ॥ ४६० ॥

सवैया।

मूयेते मोक्ष कहैं सब पंडित मूयेते मोक्ष कहैं पुनि जैना ॥
मूयेते मोक्ष कहैं ऋषि तापस मूयेते मोक्ष कहैं शिवसैना ॥
मूयेते मोक्ष मलेच्छ कहैं तेहू धोखेहि धोखे बखानत बैना ॥
सुंदर आतमको अनुभौ सोइ जीवत मोक्ष सदा सुख चैना ॥४६१॥

कवित्त।

सोम नाम विप्रवर गिरिजाके बर कर लीनो सुधाफल कर दीनों नरनाहके ॥ भूपति स्वपत्नीको रानी निज मीत हीको ताने दीनों गीतकीको नीको फल चाहके ॥ आगे गणिका सरागे धरापति आगे धरा धरानाथ माथ धुना सुना धुना ताहि के ॥ हाहा कामिनीके हित हते काम नीके अब ताहि तजों ताहि भजों शीश शशी जाहिके ॥ ४६२ ॥

सवैया।

जिनको नित मैं चितमैं चितमों तिनकी रति मो तन माहिं रती ना ॥
वह आन पुमानके संग रती पुनि ता मन मैं गणिका गृह कीना ॥
धृग है अबला भृत कंद्रपही अरु मोहिं धिकार जो मार अधीना ॥
इत रीति समूहकी प्रीति तजी नृप होय योगीश्वर ईश्वर चीना॥४६३॥

कवित्त।

ग्रंथनके ज्ञाते माते मत्सरकी कीचबीच धरान्मथ मद साथ भरे दरशात हैं ॥ दूषण चमोर मोरे भूषणसे भापणको पंडित भूपाल तो न सुनें मोरी बात हैं ॥ पुन आन जंतु जेते दुखी दीन

मूढ़ तेते मोते सकुचात हम ओते सकुचात हैं ॥ पात्र विना भाये राखे हवनको राखे तैसे जीरण मो गात में सुव्रात होतजात हैं ॥ ४६४

सवैया ।

शांत निजांतर क्यों न गहे कत डोले वृथा भवमों सघना ॥
होय यथा सु तथा निज ह्वै तुमते अनथा वह होवत ना ॥
प्रीति न साथ वितीत भली कछु हाथ विली ना यथा स्वपना ॥
मौन गहो अव मौन गहो तुम मोर गिरा जिन मोर मना ॥४६५॥

भावीके भाव अभाव यथा न रमो तिनमो नभके सुमना ॥
मध्यके भोगके मध्य रमो गत राग भ्रमो अन उत्तर ना ॥
ब्रह्म नपुंसक यो मन तूं विन ता तव दंपति मों सुख ना ॥
टेरत में प्रति फेर तुमें तुम मो मतिको मत फेर मना ॥ ४६६ ॥

कवित्त ।

इंद्रियोंके भोग सारे भारे रोग देन वारे ताको कीजे हेय मत श्रेयपथ तज रे ॥ पाप अद्रि नाशनको व्रज पाकशासनको दाहे दोष वासनको मोक्ष शिखी सज रे ॥ हूजो शांत भव बीच प्रापत कदापि नीच आपनी कलोललोल गंत ते न लज रे ॥ क्षणभंग भव राग ताको मन करो त्याग मोक्षको वैराग सहकारी तास भज रे ॥ ४६७ ॥ प्रवार सनेहको निवार देह मन बीच बीची बुदबुदे रेखा दामिनी समानिये ॥ पुन दीप्त अगनमें नागनमें नदी वेग माहिं जैसे सुख नाहिं तैसे ताहि जानिये ॥ देवनदी तीरकी पवित्र धरा पर बैठ नीलकण्ठ माहिं नील उतकंठा ठानिये ॥ अव ऐसी रीत करो भोगनकी प्रीति हरो गुरु वेद वाक्य धरो तीन ताप हानिये॥४६८॥

भूमि सेज मूल फल मेव नव वलकल करने न परें दैव आगे रचधरेहं ॥ करो इन्दं साथ रति प्यारी प्रेम यारी माति उठा उठा

तामें अब जामें बिंब ठरे हैं ॥ तुच्छ अविवेकी शठ मूढ़ मन बोल कटु जाके चित चिंता आग कर सदा जरे हैं ॥ ऐसे धनवाननके नाम मात्र काननमें जाहिं महाकाननमें कवौं नाहिं परे हैं ॥ ४६९ ॥

दीपमें पतंग परे जरे न प्रताप जाने मीन सु अज्ञाने भखे कुंडी मिले मास को ॥ गज गजी हेत परो खात खात अंकुशको रागमें कुरंग राग करे निज नाशको ॥ पंकजकी गंध बीच नीच भृंग मीच गहे इत्यादि अज्ञानी नाश करें निज सासको ॥ अहो हा सघन महामोहको प्रताप लहा शुभाशुभ जानों पै न हानो भोग आसको ॥ ४७० ॥

सवैया।

यह श्रुति ज्ञान सुजाननके अभिमान मदादि विकार निवारे ॥
कोचित मोसम नीचनके चित मों बहु मान मदादिक धारे ॥
शून्य यथा मठ साधनको अति मूपको साधन दोप प्रहारे ॥
सो हमसे मदनातुरको अति कामको कारण वाम समारे ॥४७१॥

कवित्त ।

पुण्यनके वश ते सुभोग चिर वशते न मित्रनसे नशते मर्याद आदि दिनमें ॥ कौन भेद भोगनके भेदमें न तजै जन एकको बियोग तो अवश्य होत तिनमें ॥ स्वते जब जावें तव मनको तपावें भारी मोपै तिनै आप ताप मोपै तिन्हें छिनमें ॥ ऐसे मोप प्रतिबन्धी विपे लखे मैं सम्बन्धीको कुभागी विना मैं जो रागी होत इनमें ॥ ४७२ ॥

जाहि मात पिताते मैं भयो उतपति तेतो काल वशभये चिर काल वीत गयो है ॥ सम वैस वारे द्वारे सुमरत सिधारे सारे रहे हम शेप देह वृद्ध वेप लयो है ॥ नदी रेत तीर पर तरु यों शरीर

मूढ़ तेते मोते सकुचात हम ओते सकुचात हैं ॥ पात्र विना भाये राखे हवनको राखे तैसे जीरण मो गात में सुबात होतजात हैं ॥ ४६४

सवैया ।

शांत निजांतर क्यों न गहे कत डोलै वृथा भवमों सघना ॥
होय यथा सु तथा निज ह्वै तुमते अनथा वह होवत ना ॥
प्रीति न साथ वितीत भली कछु हाथ विली ना यथा स्वपना ॥
मौन गहो अब मौन गहो तुम मोर गिरा जिन मोर मना ॥४६५॥

भावीके भाव अभाव यथा न रमो तिनमो नभके सुमना ॥
मध्यके भोगके मध्य रमो गत राग भ्रमो अन उत्तर ना ॥
ब्रह्म नपुंसक यो मन तूं विन ता तब दंपति मों सुख ना ॥
टेरत मैं प्रति फेर तुमैं तुम मो मतिको मत फेर मना ॥ ४६६ ॥

कवित्त ।

इंद्रियोंके भोग सारे भारे रोग देन वारे ताको कीजै हेय मत श्रेयपथ तज रे ॥ पाप अद्रि नाशनको व्रज पाकशासनको दाहे दोप घासनको मोक्ष शिखी सज रे ॥ ह्वजो शांत भव वीच प्रापत कदापि नीच आपनी कलोललोल गंत ते न लज रे ॥ क्षणभंग भव राग ताको मन करो त्याग मोक्षको वैराग सहकारी तास भज रे ॥ ४६७ ॥ प्रवार सनेहको निवार देह मन बीच बीची बुदबुदे रेखा दामिनी समानिये ॥ पुन दीप्त अगनमें नागनमें नदी वेग माहिं जैसे सुख नाहिं तैसे ताहि जानिये ॥ देवनदी तीरकी पवित्र धरा पर वैठ नीलकण्ठ माहिं नील उतकंठा ठानिये ॥ अब ऐसी रीत करो भोगनकी प्रीति हरो गुरु वेद वाक्य धरो तीन ताप हानिये॥४६८॥
भूमि सेज मूल फल मेघ नव वलकल करने न परें देव आगे रचधरेहैं ॥ करो इन्हें साथ रति प्यारी प्रेम वारी माति उठो उठा

तामें अब जामें बिंब ठरे हैं ॥ तुच्छ अविवेकी शठ मूढ़ मन बोल कटु जाके चित चिंता आग कर सदा जरे हैं ॥ ऐसे धनवाननके नाम मात्र काननमें जाहिं महाकाननमें कबौं नाहिं परे हैं ॥ ४६९ ॥

दीपमें पतंग परे जरे न प्रताप जाने मीन सु अज्ञाने भखे कुंडी मिले मास को ॥ गज गजी हेत परो खात खात अंकुशको रागमें कुरंग राग करे निज नाशको ॥ पंकजकी गंध बीच नीच भृंग मीच गहे इत्यादि अज्ञानी नाश करें निज सासको ॥ अहो हा सघन महामोहको प्रताप लहा शुभाशुभ जानों पै न हानो भोग आसको ॥ ४७० ॥

सवैया।

यह श्रुति ज्ञान सुजाननके अभिमान मदादि विकार निवारे ॥
केचित मोसम नीचनके चित मों बहु मान मदादिक धारे ॥
शून्य यथा मठ साधनको अति मूपको साधन दोप प्रहारे ॥
सो हमसे मदनातुरको अति कामको कारण वाम समारे ॥४७१॥

कवित्त।

पुण्यनके वश ते सुभोग चिर वशते न मित्रनसे नशते मर्याद आदि दिनमें ॥ कौन भेद भोगनके भेदमें न तजै जन एकको बियोग तो अवश्य होत तिनमें ॥ स्वते जब जावें तव मनको तपावें भारी मोपै तिनै आप ताप मोपै तिन्हें छिनमें ॥ ऐसे मोप प्रतिबन्धी विपे लखे मैं सम्बन्धीको कुभागी विना मैं जो रागी होत इनमें ॥ ४७२ ॥

जाहि मात पिताते मैं भयो उतपाति तेतो काल वशभये चिर काल वीत गयो है ॥ सम वैस वारे द्वारे सुमरत सिधारे सारे रहे हम शेप देह वृद्ध वेप लयो है ॥ नदी रेत तीर पर तरु यों शरीर

भयो प्रति दिन मृत तीर तीर अब आयोहै ॥ गिले काल व्याल सम मेंढक के अजे हम भजे भोग मच्छरको मोसों मूढ़ जायोहै ॥ ४७३ ॥

जाके बामे दाहिने सुमंत चक्र होते अग्र राजनकी सभा थी मयंक मुखी नारियां ॥ भूपनके पुत्र थे विचित्र बीर अहंकारी वृंद बंदीजन होते वंशके उचारियां ॥ अहो भाई भारो कष्ट भारी भूप भये नष्ट स्मृति पद प्रविष्ट सु जाकीं कथा भारियां ॥ हंसक प्रपंच सब रंचको असंग पुना ताहि काल बीरको जुहार बार बारियां ॥ ४७४ ॥

गङ्गतीरपर हिमागिरि शिलापर हम बांधे पदमासनको मन इंद्रि जीतके ॥ ब्रह्मजूके ध्यानकी अभ्यास विध सो निवास योग निद्रा माहिं करो हरो ताप चीतके ॥ जठर कुरंग करे शृंगो सङ्ग कंडू मोहिं सुख सों अभीत मोको जाने सम भीतके ॥ पारवती-नाथ मैं अनाथके अभीत वारे उत्तम दिहारे कब आवैं ऐसी रीतके ॥ ४७५ ॥

काशी गङ्गाके किनारे भवते किनारे होय कदो वसों वसन कौपीन एक धारके ॥ दोऊ हाथ जोरे कर नाय माथ नमों करों मृदुबाणी साथ ररों नाम समरार के ॥ भो प्रभो भवानी वर शंकर त्रिनेत्र हर त्रिपुरारी चन्द्रधर भव भवहारके ॥ क्षण सम दिन सब मोरे बीत जावैं जब ऐसे अह आवैं कब कहो कृपाधारके ॥ ४७६ ॥

रुचत सुमेर मो न आवे कहूं काम जो न निज गौरता मैं सोना सदा गलतान है ॥ जीवजे सन्तोष कर त्रिपत सदीव तर ताको शेष आनन्द रह्यो कछून आन है ॥ पुना जेई आन जन धन लोभ कर मन व्याकुल हैं जाके ताकी तृषणा महान है ॥ कौनके निमित्त ऐसी सम्पदा अमित रची इत विधि करके न विधि बुधवान है ॥ ४७७ ॥

हिंसा नाहिं करें परद्रव्य को न हरें सत्य वचन उचारें पुण्य समै पुण्य कर हैं ॥ कथा बितकथा पर नारीकी न सुनें भन तातें गुंग बोला बने भोला सम चरहैं ॥ तृष्णाको प्रवाह भङ्ग गुरो विषे नम्र अङ्ग मित्रभाव सब सङ्ग करें हर हरहैं ॥ गायो सर्व ग्रन्थनमें सन्त ऐसे पन्थनमें राग दोष मोप चरें जैसे दिनकर हैं ॥ ४७८ ॥

कभी भूमि आसन सिंहासनपै वास कभी कभी भिक्षाग्रास कभी व्यञ्जन अहार है ॥ कभी शत खण्डवती गोदरीको ओढ़ें यती कम्बरको कबहूँ दिगम्बरको धार है ॥ कभी भानकर तपे कभी शीश छत्र दीपे कहूँ सतकार होत कहूँ त्रिसकारहै ॥ तदपि न सन्त जन सुखी दुखी होत मन आतमा असंग लख देहको विहार है ॥ ४७९ ॥

देव एक महादेव नदी देवनदी सेव गिरि गुहा धाम एव चीर दिशा चारहै ॥ एव काल मीत नीको व्रत निरदीनताको सङ्ग बुध युवतीको प्रिय बटु डार है ॥ सुता निरवैरता कुँमार ब्रह्मको विचार और कहा भनों जाको बन्यो या अचार है ॥ ऐसे सदाचार परवार कर जोऊ नर सदा परवारों सदा ताहिको जुहार है ॥ ४८० ॥

शुचि वनके निवासी मृगों सङ्ग हासी खेल मेल दास-दासीको न मेधफल आसी है ॥ कभी व्रत नदी तट कभी समसाने मठ कबहूँ पषाण वट तरु तरे वासीहै ॥ केवल प्रशांत मन तुल्य आयतनवन तदपि एकांत घन वासी सुखराशी है ॥ ईशके उपासीकी प्रकाशी या विभूत ताहि गावै सुनै ध्यावै नाहिं पावै यमफांसी है ॥ ४८१ ॥

तजे दुराराध्य स्वामी कृपण कुमगगामी वजावत चल चित भूपनके भामिये ॥ ताते मैं सथूल चाह पूरीहोत नाहिं ताते लियो मन ताहि माहिं पद जो महानिये ॥ जरा हरे काय हरे काल

समुदाय प्राण ताते तप करो सखे विदुषो बखानिये ॥ तप बिन आन मग श्रेयको न मध्य जग तप नाम चित्तकी एकाग्रताको जानिये ॥ ४८२ ॥

सवैया ।

शुचि गंग तरंगकी बूँद कनीकर शीतल चारु हिमंचलकी सिल ॥
जिहिं फूल फलान उपान धरे शिवको नित सेवत देववधू मिल ॥
परभोजनमें निज जो जनदे दिल ता गिरको कत काल लयो गिल॥
अपमानसही अपमानसही विद धीर सही नृपधाम अही बिल ॥
प्रति कानन विर्छन तेमन बांछित लाभ सुखेन फलादि अपारा ॥
सरिताके सुथान सुथान विषे शुचि शीतल मिष्ट मिले बहु बारा ॥
जल पत्रवती मृदु सापर शीतल पादके होवत भूपन द्वारा ॥
सटके मतिमान महा भटके मतिमान तहां कंत होत खुवारा ॥
॥ ४८३ ॥ ४८४ ॥

कवित्त ।

कन्दरा ते कन्द मूल कहा निरमूल भये बार बार नग किधों देतहैं न वन को ॥ मीठे फलों वारी डारी तरों की न फल देत कैधों द्रुम देत हैं न वलकल जन को ॥ दुखसों मनाक धन साधके मदांध भय मद व्यार साथ जो भ्रमावें भूल तनको ॥ खलोंके कुमुखोंको सबल सुपुरुष पेखे अहो कैसे तजे ऐसे चिंता-मन वनको ॥ ४८५ ॥

तुंग भोग इन्द्रलोक सत्त लोक लग जेते तेतेही तरंग सम भंग पहिचानोरे ॥ जीवनके जीवनेकी रास एक सास सोऊ दामिनी समान क्षण माहिं हानि जानेरे ॥ जोवनको सुख थोरे दिनमें विसु-रहोरे मीतनकी प्रीति पुनि नीत न पछानेरे ॥ सकल संसारको वि-चारके असार तजो बोध हेत बुद्धिमानो मेरी बुद्धि मानो रे ॥४८६॥

मांस ग्रंथि कुचन को कञ्चनके कुम्भ कहें सोम सम मुख कफधामको उचारे हैं ॥ चम्पाकलीके समान दाडिमके दाने माने हाडनकी दांत पांत को दिवाने सारे हैं ॥ मूतभिगी जंघनकी संघनी बड़ाई भने निंदत गजिंदकर केला को निवारे हैं ॥ अहो निन्द योग्य रूप अङ्गनाको ताकी ऊप धुनि मतवारे शीश धुने मतिवारे हैं ॥ ४८७ ॥

जरा कर श्वेत बार नरोंके निहार नार करे ताहि त्रिसकार भागे फेर नारको ॥ हाड घटी रज्जु नार मन्दर सहेर डार विप्र नार, वृद्ध रूप कूप चमिआरको ॥ दाहे तीन ताप भान नैन ज्ञान कान तजे तजे ताहि मान आदि यों उदार दार को ॥ अहो कष्ट जीव दुष्ट तजे न अनिष्ट अजे नारी तजे तन भजे मन अजे नारको ॥ ४८८ ॥

आननकी छबि वली गणों कर टली गली काननकी गली नल अंकों में न भास है ॥ लोइनाके माहिं कछु लोइ नाहि परे स्वच्छ रसना सो रसनासो नास कला नास है ॥ केश भये उजर न रह्यो कछु उजर जवानी गई उजर न सासको विसास है ॥ तृष्णा तो अनन्त अन्त भयो है संघातसभ शान्त भई शान्ति नाहिं शांत भोग आसहै ॥ ४८९ ॥

तनु वृद्ध भयेते न वृद्ध भई भोग आश मन में तो भोगनकी कोटि मन रत है ॥ सनै सनै उच्चस्थान लोचनकी द्युतिहान मानवको वहु मान हान भयो अत है ॥ सखे समवैस वारे प्राणों वत जेई प्यारे कवके पधारे नाक देख ऐसी गत है ॥ अहो अजे नीच निज मीच वीच हासी भजे जीव ना चहत मृत जीवना चहत है ॥ ४९० ॥

शुभ शत संवत नरानकी प्रमान आयु तास आधभाग नास होय रैन सोय है ॥ बाल वृद्ध माहिं ताहिं आधो भाग बाधो जाहि जाड़ता अशक्य ताकी खाण वैस दोय है ॥ शेषकी अवधि जोऊ आधि व्याधि संग सोऊ भ्रमनो विदेश होऊं सेवकादि खोय है ॥ जीवनकी आयुमाहिं सुखको तो नाउँ नाहिं तोयके तरंगके समान भंग होय है ॥ ४ ९ ॥

विविध प्रकार वेद अर्थके संवेद वारी चेतना मों चञ्चलाई सों निकाई हत है ॥ नानाविध वाक्यनके कौतुकमें रस जोऊ सो विरस भयो जाहि माहि विलसत है ॥ भाँति भाँति सकल विकलपै प्रशांत जामें रजो तमो रहत सु सतोके सहतहै ॥ ईश्वरकी सेव हित ऐसो चित्त चाहियैत ऐसे चितहीमों सत चित विकसतहै ॥४९२॥

हरि मैं सनेह तर जनम मरन डर उर माहिं कीनो घर बंधु मैं न राग है ॥ मनोभव जो विकार मंद संसकार डार संग दोप दुख टार वसे कांत वाग है ॥ या वैराग्य भये कहा होर त्याग योग रहा हती सब चाह जो बैराग ते वैराग है ॥ हेतु परमारथको उत्तम वैराग ऐसो भाग बडे भागको अभाग ताते भाग है ॥ ४९३ ॥

भोगनमें रोग भय सुखों विपे क्षय भय धन मध्य भय भूप चोर को रहत है ॥ दास माहिं स्वामि भय जय माहिं रिपु भय भय कुल बीच नीच नारीको महत है ॥ मान में महान भय गुणी में खलान भय काय में कृतांत भय भय सर्वगत है ॥ निर्भय वैराग एक धरो नरो सविवेक गायो मैं अनेक वार थाकी मोरी मत है ॥ ४९४ ॥

सवैया ।

तीर्थन माहि सनान समान करै बहुदान महान मनीके ॥
समसान मठान तरून तरे असथान करै उत तीर नदीके ॥

मुख मौन धरे तज भौन चरे अरु वेद ररें सुपढावत नीके ॥
गुण येतत वृंद बरात जना बर एक बैराग विना सब फीके॥४९५॥

कवित्त।

अंत तो मलीन दीन हीन पुरुषारथ सों कर्मन विहीन पीन पापको कहा कहों ॥ विषया अधीन और कहा लौं कहै प्रबीन काम क्रोध लोभ मोह मदके धका सहों ॥ रावरे समर्थ है सो मोसे खल तारबेको अधम उधारन हो और ते नदा चहों ॥ सरल सुजान संत प्यारेकी निछार मोहि दीजे शर्णागत संत संग मों परो रहों ॥ ४९६ ॥

सवैया।

आपनो रूप पिछान सी लाभ न भूल सी हान बड़ी नहिं जीको॥
नाहिं वडो सुख भक्ति ते दूसरो दुःख न जानिवो राधिका पीको॥
चारिहु नीक न जान परैं विन साधुके संग कहो कर नीको ॥
वेद कहै अरु लोक लखे सतसंगत सेव्य सही सबहीको ॥ ४९७ ॥

झूलना।

समता गहै सचको जानै दुःख सुक्ख सम आड़ा है॥ मेंटे मान मोह मगरूरी काम क्रोध सो खाड़ा है॥ छोड़ कुसंग संग सम साधै सुरत शब्द मन गाड़ा है॥ यों शिरके पद चलै संग ढिग क्या तनु हलुवा माडा है॥ ४९८ ॥

इंद्रिय जीत करे वश अपने तजै जगतकी आसा है। जोड़े प्रेम नेम साईं सों रहै दरस रस प्यासा है॥ आपा मेट गर्द कर डारै शिर दे लखै तमासा है॥ यहि विधि गहै संत तब होवै यों क्या दूध बतासा है॥ ४९९॥

कवित्त ।

मूठी एक माटीको घरौंदा सो शरीर मन ताको कहै मेरो वपु अति अभिराम है ॥ आगे पाछे भाव नाहिं मध्य दुःख भोग यामें जानै जाको खेह विट कृमि परिनाम है ॥ विषयको भोग जैसे दाद को खुजाये सुख अंत दुःखराशिं तामें मानत बिश्राम है ॥ इंद्रिन के संग लाग्यो आपनो स्वरूप त्याग्यो कुसंग अनुराग्यो यामें याको कहा काम है ॥ ५०० ॥

कुण्डलिया ।

भेड़िनमें जिमि सिंहको शावक रह्यो भुलाय ॥ तिनके सँग भेंभें करै निज पौरुष बिसराय ॥ निज पौरुष बिसराय तिनहिके धारे लच्छन ॥ यों नहिं समुझै नेक सकल ये मेरे भच्छन ॥ तैसे गो गण संग फिरत मन पग भ्रम बेड़ी । आप अपनपौ खोय भयो भेड़िनमें भेड़ी ॥ ५०१ ॥

कवित्त ।

रविको प्रकाश जैसे देखिये मुकुर मध्य मुकुर प्रकाश जैसे जलको अभास है ॥ जलके प्रकाश हू ते होत जो प्रकाश ताते देख्यो परै मंदिरके भीतर उजास है ॥ तैसे परमातमा ते आतमा विचार लीजे आतमाते मन ताते जगत बिलास है ॥ साक्षी परमातमा अखंडित सभीके माहिं सबही ते न्यारो सदा आनंदकी रास है ॥ ५०२ ॥

स्वपनेमें सती जाती मुनि राव रंक सब स्वपनेमें चार दश लोकन फिरत है ॥ स्वपनेमें मेरो तात मात भ्रात नारी सुत मेरो यह धाम ग्राम नाम यों कहत है ॥ स्वपनेमें भवके समुद्र माँझ बह्यो फिरै पैरत थकत पुनि बूडत तरत है ॥ जागे बिन जानै नाहिं आपही सकल भयो आपही तो निरखत आपही निरत है५०२

सवैया।

चाह जितो चित चाहे अनेकन होत तितो दुख ही जु बिचारै ॥
है इन इंद्रिनको सुख हेर सु तेरो न हेत जो नीके निहारै ॥
पेट लफायें फिरे जु कहा अतिदीन दुवारन दांत निकारै ॥
लै हरिकी किन भक्तिसदा जु चहे सुखसों अपनी निसतारै ॥५०४॥

दैने दई फल फूल अनेक औ मूल जितै तित तोहि अहारै ॥
डासनको कुश लै परी भूमि चहै जितही तित पायँ पसारै ॥
ताल तरंगिनि ताप हरै अरु सूरज पावक शीत निवारै ॥
याके लिये हठकै शठ तू कह पांवर पौरिन हाथ पसारै ॥ ५०५ ॥

कवित्त।

जाको जाको चाहै सो तो जात है चला है सब कौनसी निबाहैं नेह देहहू तो छीजिये ॥ रवि शशि तारागण सुरासुर सातों सिंधु भूमिहू अकाशको विनाशिही पतीजिये ॥ ब्रह्मा अरु कीट लौं विनाशमन्त दीसैं सब आपा मानरह्यो सो तो आपहू न जीजिये ॥ कासों मानों नातो कासों करत हिताहित सो देख जो परत शोच काको काको कीजिये ॥ ५०६ ॥

अंगी अरधंगी हितबन्ध सनबन्धी ताके हेत मति बंधी मन पाछे पछताय है ॥ अंग ही लौं अंग छिनभंगी जब होय गयो नाश भे अनंगी तब अंगी कहा पाय है ॥ घर ही लौं कोई कोई आंगन डगरही लौं चिताके समीप कोऊ जाय है तो जाय है ॥ जेतो है हुतंगी दिना चारहीके रंगी सब अंतके समैको तेरो संगी रामराय है ॥ ५०७ ॥

सवैया।

आये कहांते कहो तुम आप है आये कहांते तुम्हारे ये नात है ॥
जात भये कितको सिगरो अरु तू मरके कितको कहँ जात है ॥

नाचत पूतरी पेखनो लो जग डोर नचावन हारके हाथ है ॥ तेरो कहा जो तू मेरो कहै हठ हेरो विचार कहा बिललात है॥५०८॥

कवित्त।

मान लियो तात भ्रात मान लियो पिता मात मान लियो आरि मित्र जाति अरु पांति है ॥ मान लियो आपा पर मान लियो नारि नर मान लियो दुःख सुख दिन अरु रात है ॥ मान लियो नर्क स्वर्ग पाप पुण्य मान लियो मान लियो हानि लाभ भाँति हू विभांतहै॥ जग सब झूठहै मरिचिकाकी ज्योति जैसे जान लियो सांच मान लियो एक बात है ॥ ५०९ ॥

राग विहाग।

औह्ले बह बह झाकी दाहुण पड़दा किसतों राखीदा । जिस तन इशक का जोर हुआ वह बेखुद है बेहोश हुआ वह क्योंकर रहे खमोश हुआ जिन प्याला पीता साफी दा॥ तुसीं आप असां-वल आएहो किस कोलों भेद छिपाएहो किते अदम पीर बन आएहो बिच पड़दा रखिया खाकीदा। तुसीं आपे कहंदे सारे हो तुसीं आपे कहंदे न्यारेहो तुसीं आपे लयो नजारे हो किते लाला नयन इमाकीदा ॥ तूँ ना कर इतना झेड़ा हैं तुध बाझों दूज केहड़ा है असां देख्यो बड़ा अंधेरा है अपने आप नूँ दूजा आखीदा। किते रूमी हो कित शामी हो तुसीं आपने आप तमामी हो किते साहिब किते सलामीहो केन्हों खोटा खरा सुलाकीदा ॥ मनसूर नूँ सूली चाव्या ईशाह शम्मस पोश उतारयाई हुण मिसकीनांवल आया हैं कुछ लेखा रहिंदा बाकीदा। बुल्या इस तन दी तूँ भाठी कर बाल हड्डा नूँ काठी कर ज्ञान अगन सों ताती कर फिर तिस पर मधुवा चाखीदा ॥ ५१० ॥

राग जंगला।

कोई मोड़ो दिलांदियां बागां नूँ ॥ मन समझाया समझे नाहीं रात दिने उठ पैंदा राहीं ढूंडन जाय स्वादां नूँ ॥ यह मनमेरा कौआ कहिये विना हंस क्यों मोती लहिये मिल हंसा तज कागां नूं ॥ और किसीको दोष न दीजे जो कछु बीजिया सो लुन लीजे दोप है अपन्याँ भागां नूं ॥ कहै हुसैन सुनो भाई साधो मन मजबूत पकड़ जब बांधो फेरकी करो किताबांनूं ॥ ५११ ॥

तेरा राम बसता है तेरेही मनमें मूरख काहेको भटकत बनमें ॥ दूध दहीकी मटिया जमाई तामें माखन वस्तु लभाई मथन विना कुछ हाथ न आवे जैसे चंदा छिप जात घन में ॥ पथरीमें आग जाने सब कोई चकमक झाडके धूनी रमाई गुरू अपनेसे आज्ञा पाई जैसें मुख देखत दर्पनमें ॥ महिंदीके पातमें लाली रहत है बिन घोटे रंग चढे न हाथ पै ऐसी खोजना करो मन अपने निश्चय कर चितला साधनमें ॥ जगके कुंभ सों निकस्यो मोती अँधेरेसे क्या कीमत होती हेमदास कोई बिरला जाने ज्ञानी समझतहैं सैननमें ॥ ५१२ ॥

सतगुरु पूरा पाया भला मैं साहब पूरा पाया है ॥ गढ कञ्चन के महल त्यागे त्यागी सगरी माया है ॥ दारा सुत दोनों मैं त्यागे गोविंद हिरदे में समाया है ॥ जन्म २ का सामैं दुखिया छिनमें दुःख गँवाया है ॥ खुदी गई आनंद संग राता गोविंदका गुण गाया है ॥ मन महलां मैं सेज बिछावा सुखमें जाय समाया है ॥ जाग्रत स्वपना दोनों त्यागे तुरिया मर्हि जमायाहै ॥ पवन दा घोड़ा सुरत लगामां भयदा चाबुक लाया है ॥ प्यादेते असवार बनाया विन पंखा उडाया है ॥ शौह अपने दी रैणी रंगसां

गूढारंग रँगायाहै ॥ कहत विचारा दिलसुख प्यारा प्याला प्रेम पिलाया है ॥ ९१३ ॥

केती हजारां अलिम हैं तांतूं केहडी कुडे तांतू केहडी कुड़ेनी॥ तेरे जेहीयां लखँ हजारां बाह बाह पट्टियां फिरन बजरां इस फिरने सिर लाख पजारां तांतू आपई इछत सहेडी कुडे ॥ सुरमापा मट-केनी है तांतू सवदी वछ तकेनी वें मिरगां वाग टपेनी हैं तेरे मगरे ई फिरदा लैं हेडी कुडे ॥ जद तूं ओथों आई सी तेरी सूरत सकल अलाही सी तेरी चुनडी नूं दान न स्याहीसी हुण तैं आपेई चिक्कड़ लबेडी कुडे ॥ उमर गँवालई मार पंज गिटड़ा एह जग तैनूं लगदा मिठडा एथे रहन किसीदा न दिसदा आचढ हुसैनां दी वेंडी कुडे ॥ ९१४ ॥

कवित्त।

दाताऊ महीप मानधाताऊ दिलीप जैसे जाके जश अजहूं लों द्वीप द्वीप छाये हैं। बलि ऐसो वलवान को भयो जहान बीच रावण समान को प्रतापी जग जाय हैं ॥ बानकी कलानमें सुजान द्रोण पारथसे जाके गुण दीनद्याल भारतमें गाये हैं ॥ कैसे कैसे सूर रचे चातुरी विरंचि जूने फेर चकचूर कर धूरमें मिलाये हैं ॥ ९१५ ॥

चलेगये छांड हिरण्याक्ष हिर्ण्यकशिपू से वलि जैसे बांधे सो पातालमें चलेगये ॥ चलेगये रावण रु कुम्भकर्ण महाजोधा केते तो नरेश मारे घर में रलेगये ॥ रलेगये जरासन्ध कंस शिशुपाल जैसे दुर्योधन आदि वीच गर्वके गलेगये ॥ गलेगये केते येते असुर महानदुष्ट आयके जमीनपर हो होके चलेगये ॥ ९१६ ॥

श्वासके भरोसे गढ मासमें निवास लियो आशा मन माहिं राखी मान न शरीरकी ॥ वडे वडे शूरवीर देख छोड गये मूर्ख रही नाहीं निशानी शाहां अरु वजीरा की ॥ भज निरं-

जन दुखभंजन रे आलमकी नित्य रोज खब्र लेत पाहनमें कीरा की ॥ कहे कवि थारामल स्मरनेको यही पल एक एक घडी जात लाख लाख हीराकी ॥ ५१७ ॥

सवैया ।

परिपूरण पापके कारणते भगवन्त कथा न रुचै जिनको ॥ तिन एक कुनारि बुलाय लई नचवावत हैं दिनको रिनको ॥मिर-दंग कहे धिगहै धिगहै रु मँजीर कहे किनको किनको ॥ तब हाथ उठायके नारि कहै इनकों इनको इनको इनको ॥ ५१८ ॥

कवित्त ।

सन्तनकी गहो रीत त्यागो जगकी प्रतीत औसर है यही मीत विमल चुकाइये ॥ निशिदिन सन्त संग जग प्रीति करो भंग रामजू सों लाय रंग आन नहिं जाइये ॥ आन गयां सुख नाहिं बूझ देख हृदै माहिं भलो दाव बन्यो आय बाद ना गँवाइये ॥ प्रभुध्यान हिये धार सर्व आशको बिसार संत मिल-गहो सार बेग मुक्ति पाइये ॥ ५१९ ॥

सवैया ।

ए मन भूल रह्योहे कहा विषयारसमें निशि द्यौस वहै ॥
है जगझूँठ धुवांको सों धाम मृगाजल सोहत प्यास चहै ॥
धावत धावत धाय मरो श्रमही इक केवल हाथ रहै ॥
चेत अजों ममता तजके समता सुख आँनद सिंधु लहै ॥ ५२०॥

मात पिता हित बंधु सगे सुत नारि सबै अरु चाकर चेरे ॥
तू हित मानरह्यो इनसों निशि द्यौस भ्रमें जिमि भौंरके वेरे ॥
इनके दुखते दुखपावतहै सोतो है सब ये हित स्वारथ केरे ॥
जीवत जारतहैं तोहि तात मुये पुनि जारनहार हैं तेरे ॥५२१॥

छोड़के आश सभी जगकी हियमें सुख शांतिको वासकरो ॥
यह जीवनहू की तजो शरधा जग जीवत ही बिन मीच मरो ॥
अबलों जु भई सु भई अबहू चित चेत विवेक की ओर ढरो ॥
तुम काके हो को हो कहां हो कछू अपनी सुधि आपन आप धरो ॥
काल निहारत काल सदा सब लोग विचारत ही पच हारें ॥
कोऊ बच्यो न कहूं कितहूं जलहूं थल व्योम पताल विचारें ॥
है छिन एक को पेखनोसो तू तहां कहँ कौनकी आश निहारें ॥
यामें कहा तोहिं अर्थ मिलै यों विनर्थहिं मानुष जन्म निवारें ॥
तु ममता मद माहिं पग्यो रचके पचके बहु धाम सवारें ॥
लोभ अधीन जो पापको मूल रह्यो चित भूल न आप सँभारे ॥
काल रह्यो ढिग श्वास गिनै छिन मांझ लवा जिमि बाज पछारे ॥
नंदके नंदहि क्यों न भजै जो सदा अपने जनको प्रतिपारे ॥५२४ ॥
संत सदा उपदेश बतावत केश सभी शिर श्वेत भये हैं ॥
तू ममता अजहूं नहिं छांडत मौतने आय सँदेश दये हैं ॥
आज कै कालिह चलै उठ मूरख तेरेही देखत केते गये हैं ॥
सुंदर क्यों नहिं राम सम्हारत या जगमें थिर कौन रहे हैं ॥ ५२५॥

राग प्रभाती ।

तु खुश भर नींद क्यों सोया । नगारा कूचका होया ॥ नगारा मौत का वाजे । ज्यों सावन मेघुला गाजे ॥ जिन्हा सँग नेह सी तेरा । तिन्ह किया खाकमें डेरा ॥ न आये फेर कर फेरा । कहां गये मुल्क के वाली । जो चलते हंसकी चाली ॥ गये दर-वार कर खाली ॥ कहँ गये खान मद माते । जो सूरज चंद्र लों जाते ॥ न देखे वह किसी जाते ॥ कहां गये मीर और काजी । जो चढ़ते तुरकियां ताजी ॥ गये वेरान कर वाजी ॥ जो टूटी अंबकी डाली । जो सोता वाग का माली ॥ बढेही शोकसे पाली । जिन्हां सिर केश थे काले ॥ मलाइयां दूधसे पाले ।

कि आखर अगनमें जाले॥ जिन्होंके लाख थे पछे। वो खाली हाथ कर चल्ले॥ उन्होंने जंगले मल्ले॥ जिन्हा शिरसोहँदे चीरे। चबावैं पानके बीरे॥ तिन्हांको खा गये कीरे॥ जिन्हां घर रेशमी बसते। तिन्हां पर बैठ कर हँसते॥ सो देखे खाकमें धसते॥ जिन्हां घर पालकी घोड़े। सोहैं तन मखमली जोड़े॥ सोई मुख मौतने तोडे॥ जिन्हां घर झूलते हाथी। हजारों लोगथे साथी॥ तिन्हां-को खागई माटी॥ जो तन धन गर्व नहिं करना। कि आखर खाक में रलना॥ बली कहे फिर नहिं मिलना॥ ५२६॥

राग जंगला।

इस दुनिया पर रोज मुसाफिर नित उठ बाग बहार नहीं॥ काची कंध वालुका गारा तिस पर महक उसार नहीं॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरा भीर परी कोइ यार नहीं॥ बारू भीत बनाई रच पच सो रहती दिन चार नहीं॥ कहत कबीर सुनो भई साधो आवन दूजी वार नहीं॥ ५२७॥

राग भैरवी।

याद करेगा इस जीवन नू भला मुसाफर बंदे॥ आयासी कछु लाहे कारन रुँझगिया केहडे धंधे॥ भवसागर तैनू तरना पौसी पाप पुण्य धर कंधे॥ भाई बंधु कुटुंब घनेरा जन्म जन्मके अंधे॥ कहत कबीर सोई पार उतर गये हरि हर नाम जपंदे॥५२८॥

राग परज।

बात चलन दी करहो जग रहना नाहीं॥खाय खुराकां पहिपुसकां जमदाबकरा पल हो॥ गंगा जावे गोदावरी न्हावे अजे न समझे खलहा॥उमर तेरी ऐवें पई जांदी घड़ी घड़ी पल पल हो॥ कहे हुसन फकीर साईंदा भय साहिब दा कर हो॥ ५२९॥

राग प्रभाती।

अबतो जाग मुसाफर प्यारे रैनि घटी लटके सब तारे॥ आवा गौन सराई डेरे साथ तयार मुसाफर तेरे अजे न सुनदा कूच नगारे॥ करले आज करनदी वेला वहुरि नहोसी आवन तेरा साथ तेरा चल चल्ल पुकारे॥ आपो आपने लाहे दौड़ी क्या सरधन क्या निरधन वौरी लाहा नाम तू लेहु सँभारे। बुल्हा शोहदी पैरी परिवै गफलत छोड़ हीला कछु करिये मिर्ग जतन विन खेत उजारे॥८२०॥

किहीं राहीं जानरो मुसाफर कल्हे॥ इन्हां मुसाफरांदे दूर ठिकाने खरच न वन्हदे पल्हे॥ इन्हां मुसाफरांदी की आशनाइ आज आये क़ल्ह चल्हे॥८२१॥

बैठरे मन सबरके हुजरें। जैसी जैसी आवै तैसी तैसी गुजरे॥ शांत वहारी हत्थ गहलीजे धूर खुदी दी दूर करीजे तब अँधेरेको सब कछु सुझरे॥ वृथा जन्म गँवायो रे प्राणी कभू न सुमिर्यो अंतर्यामी उमर तेरी ऐवें पैया उजरे॥ शिर पर मन्न लई सब रजाई हरदम आखी साई सबही मुशक्कतां पावेगा मुजरे॥ जे मन जांदा मोड ल्यावें तांरजादाशाह कहावें अपना मरम तू आपही बुझरे॥ ८२२॥

राग वड़हंस।

अरी अरी एरी माई डरदी तेरीयांनकी वांदेकोलों रव्वा आल्ह छिपके मैं खलोनीहां॥ मैली टोपी साबुन थोड़ा मल मल धोदिय पीया तेरा जोड़ा दागां दा कोई ओडक नाहीं नालों धोदीयां नाले मैं रोनीहां॥ दुःखांसूला ने कीता एका नाकोई साहरा नाकोई पेका दर तेरे ते पई तड़फदी सुनले हाल न मानीदा॥ शाहहुसैन खड़ा तिन गाजे काल नगारा तेरे शिरपर वाजे चार दिहाडे गोरीं वासा आखर कूच व पारीदा॥ ८२३॥

राग प्रभाती ।

रहुवे बीवी रहुवे अड़या बोलनदी नहीं जावे अडया ॥ जे शिर कट्ट लवे धड़ नालों पाछे कदम नदेवीं हालों तदभी कुछ न कहुवे अडया ॥ जे तैं हक दा राह पछाता दमना मारीं रहीं चुपाता गरदन कट्ट ना बहु वे अडया ॥ गोर न मानी दियां छमकां केहीयां हू हवा बिच रह गैयां सैयां कहिंदा शाहहुसैन वे अड़या ॥५३४ ॥

राग जंगला ।

हँसके गुजार दम साईं नाल लावीं नेह देवीं तेहँढावीं खावीं कित कारण संचना ॥ जोडे सीवथेरे दम आये भी न किसे कम लखांते हजारां बालेनंगी पैरी चल्लना ॥ सीधे मारग पाउँराख चुभे नहीं कंडाकाख बिंगेमारगपाँउ न धरिये होवे अंग भंगना ॥ शाह-बादशाहझूरे किसेदेन न कम पूरे बुल्हैदी बलाय झूरे आखिर मर बंजना ॥ ५३५ ॥

लाज मूल न आइया नाम धरायो फकीर ॥ रातीं रातीं वदियां करें दादिन नूँसदावें पीर ॥ अपना भारा चाय न सकदा लोकां बंधावें धीर ॥ कुडम कुटंब दी फाही फस्या गल बिच पालाईया लीर ॥ दर गह लेखा मंगीये हुसैना रोवेंगा नीरोनीर ॥ ५३६ ॥

राग धनाश्री ।

मेरी आंख दिया हो लाज मूलन आइया यार ॥ मेरी मेरी रावण कर गये शाह सिकंदर दारा ॥ बाजीगर दी बाजी वांगूँ रच्या कूड़ पसारा ॥ मेरी मेरी कैरो कर गये दुर्योधनके भाई ॥ सोलां योजन छत्र झुलत सी देही गिझन खाई ॥ मेरे पुत्र मेरी यां धीयां मेरा कुटुंब मेरे भाई ॥ जिन्हां दी खातर पाप कमावें तिन्हा ठौर न कांई ॥ यह दुनिया है चार दिहाड़े नाकर मन दा भाणा ॥ कहै हुसैन फकीर साईं दा नंगी पैरीं जाणा ॥ ५३७ ॥

राग भैरवी।

माटी खुदी करेंदी यार ॥ माटी जोड़ा माटी घोड़ा माटी दा असवार ॥ माटी माटी नूं मारन लागी माटी दे हथियार ॥ जिस माटी पर बहुती माटी तिस माटी हंकार ॥ माटी बाग बगीचा माटी माटी दी गुलजार ॥ माटी माटी नूँ देखन आई माटी दी बहार ॥ हंस खेल फिर माटी होई पौंदी पांव पसार ॥ बुल्लाशाह बुझारत बुज्झी लाह सिरों भों मार ॥ ९३८॥

ग़ज़ल।

जिन प्रेम रस चाख्या नहीं अमृत पिया तो क्या हुआ। जिन इश्कमें शिर ना दिया युग युग जिया तो क्या हुआ ॥ मशहूर हुआ पंथमें साबित न कीया आपको । आलिम और फाजिल बना दाना हुआ तो क्या हुआ ॥ देखी गुलिस्तां बोस्तां मतलब न पाया शेखका। सारी किताबां याद कर हाफ़िज हुआ तो क्या हुआ ॥ जबलग प्याला प्रेमका पीकरके मतवाला नहीं । राग तार मंडल बाजते जाहिर सुना तो क्या हुआ ॥ जोगी वंजंगम वेषकर कपड़े रँगाकर पहिनते। वाकिफ नहीं उस हालके कपडेरँगे तो क्या हुआ॥ दिलमें दरद नहिं दिया को बैठा मुशाइख होयके ॥ दिलका हरट फिरता नहीं तसबी फिरी तो क्या हुआ ॥ औरांनसीहत तू करे आप अमल करता नहीं। दिलका कुफर टूटा नहीं हांजी हुआ तो क्या हुआ ॥ जब इश्कके दरियायमें गर्काब तू होता नहीं। गंगा यमुन गोदावरी न्हाता फिरा तो क्या हुआ ॥ बलीराम पुकारत है यही पीपी जो करते जी दिया । मतलब हासिल ना हुआ रो रो मुआ तो क्या हुआ ॥ ९३९ ॥

राग जंगला।

क्यों वे वीवा मान भरचा रमता योगी गुल चमन दुनियाके पर इक लहिजे का मुकाम है। करता है मेरी मेरी

रे यां तेरा कौन है ॥ टुक दम का है बसेरा दुनिया आवा-गौन है ॥ भाई बंधु बिरादरी फरजंद यार मन । सब सुखके हैं समीपी रे तूं समझ यार मन ॥ रावण सरीखे होगये जिनके गाढे निशान । इक पलमें मार डारे तेरा क्या चले अभिमान ॥ अब कहत है कबीर रे तूं समझ यार मन । इक राम नाम सांचा है और झूँठा सभ जतन ॥ ५४० ॥

राम रंग लागा हरी रंग लागा । मेरे मनका संसा भागा ॥ जब मैं होतीथी अहिल दिवानी तब पिया मुखों न बोले । जब बंदी भई खाक बराबर साहब अंतर खोले ॥ साहब बोलेतो अंतर खोलें सेजाडेयां सुख दीजे ।रोम रोम प्यारे रंग रत्तीयां प्रेम प्याला पीके । साँचे मनते साहब नेडे झूँठे मन ते भागा । हरि जन हरि-जीको ऐसे मिलत जैसे कंचन संग सुहागा ॥ लोक लाज कुलकी मरयादा तोड दियो जैसे धागा । कहत कबीर सुनो भइ साधो भाग हमारा जागा ॥ ५४१ ॥

राग काफी ।

नाजानूं मेरा राम कैसा है । मुल्ला होके बाग जो देवे क्या तेरा साहिब बहरा है ॥ कीडीके पग नेंवर बाजे सोभी साहिव सुनता है । माला पहरी तिलक लगाया लंबियां जटां बढ़ाता है ॥ अंतर तेरे कुफुर कटारी यूं नहिं साहिब मिलता है । कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी जोड़ जमीं पर धरता है ॥ चलनेकी जब त्यारी होई हाथ पसारे चलता है । हीरा होवे परख दिखायां कौड़ी परखन कैसा है । कहत कबीर सुनो भइ साधो हरि जैसे को तैसाहै ॥ ५४२ ॥

राग सोरठ ।

उपजे निपजे निपज समाई । नयनन देख चल्यो जग जाई ॥ लाजन मरो कहो घर मेरा । अंतकी वार नहीं कछु तेरा ॥

अनेक जतन कर काया पाली । मरतीबेर अगन सँग जाली ॥ चोआ चंदन मरदन अंगा । सो तनु जले काठके संगा ॥ कहत कबीर सुनोरे गुनिया । विनशेगो रूप देखेगी दुनिया ॥ ९४३ ॥

राग होरी ।

तन मन रंग बनाय पिया सँग खेलिये होरी । तार बनाऊँ जियाकी तनका करूंजी तँबूरा ॥ खेलूं अपने श्याम सों सब कारज पूरा । शीशी भरी गुलाबकी हत्थ लेहों पिचकारी । छिरकूं अपने श्याम पै सब देखन हारी ॥ चोआ चंदन मेलके हत्थ लीयोजी अबीरा।सब संतन मिल खेल्यो सँग दास कबीरा॥९४४॥

राग धनाश्री ।

प्रीतम जान लेहु मन माहीं । अपने सुखसे सब जग बाँध्यो को काहूको नाहीं ॥ सुखमें आय सभी मिल बैठत रहत चहूं दिशि घेरे । विपति परी सबही सँग छाँड़त कोउ न आवत नेरे ॥ घरकी नारि बहुत हित जासों सदा रहत सँग लागी । जबहीं हंस तजी यह काया प्रेत प्रेत कर भागी ॥ याविधिको व्यौहार बन्योहै जासों नेह लगायो । अन्तकाल नानक विन हरिजी कोऊ काम न आयो ॥ ९४५ ॥

राग सोरठ ।

मनरे प्रभुकी शरण विचारो । जिहि सुमिरत गणिका सी उधरी ताको यश उर धारो ॥ अटल भयो ध्रुव जाके सुमिरन अरु निर्भय पद पाया ॥ दुख हरता या विधि को स्वामी तैं काहे बिसराया ॥ जबहीं शरण गही किरपानिधि गज ग्राह तें छूटा॥ महिमा नाम कहां लग वरणों राम कहत बंधन तिहिं टूटा ॥ अजामील पापी जग जाने निमिष माहिं निस्तारा॥नानक कहत चेत चिंतामणि तैंभी उतरसपारा ॥ ९४६ ॥

या जग मीत न देख्यो कोई ॥ सकल जगत अपने सुख-लाग्यो दुखमें संग न होई । दारा मीत पूत संबंधी सगरे धन सों लागे ॥ जबहीं निरधन देख्यो नरको सङ्ग छाँड़ सब भागे ॥ कहा कहूं या मन बौरेको इनसों नेह लगाया॥दीनानाथ सकल भय भञ्जन यश ताको बिसराया ॥ श्वान पूँछ ज्यों भयो न सूधो बहुत जतन मैं कीनो ॥ नानक लाज विरदकी राखो नाम तिहारो लीनो ॥५४७॥

राग बरवा ।

हरि नाम लाहा लेत रे तेरो जन्म बीत्यो जात ॥ जैसे वृक्ष पक्षी आन बैठे उठ चले परभात ॥ गयो श्वास न बहुड़ियो तेरी पलक लखियो न जात ॥ जुए जुवारी धन हरयो मन खेलने दे चाउ ॥ खेड़कर पछतायगारे तू हार घर क्यों जात ॥ बनजारेने बैल जैसे टांडा लदियो जाय ॥ लाभ कारन आयो प्रानी चल्यो मूल गँवाय ॥ आछे दिन पाछे गये तैं हरि सों कियो न हेत ॥ अब पछतावा क्या करे जब चिडियाँ चुग गईं खेत ॥ काची काया काच की रे समझ देखो लोय ॥ सगुरे को समझ परतहै निगुरा जावे खोय ॥ जबलग तेल दीवेमें बाती सूझत है सब कोय ॥ जल गया तेल निकस गई बाती लेचल लेचल होय ॥ रल मिल सखी सागर चली शिर फूट गागर परी ॥ पछतायगी पनिहार जिउँ कर रीते घर क्यों जात॥फटी सुरनाही फूक निकसी जायसुनी अब धेहि ॥ कहे नानक दास प्रभु का तेरी अन्त हो जाऊ खेदि॥५४८॥

राग परज ।

मन पछितैहै औसर बीते ॥ दुर्लभ देह पाय हरि पद भज कर्म वचन मन हीते ॥ सहसबाहु दशवदन आदि नृप बचे न काल बलीते ॥ हम हमकर धनधाम सँवारे अंत चले उठ रीते ॥ सुत वनितादि जान स्वारथरत ना कर नेह इन्हीं ते ॥ अंतौ तोहिं तजेंगे पामर तू न तजे अबहीं ते ॥ अब नाथहिं अनुराग जाग

जड़ त्याग दुराशा जीते । बुझै न काम अगिनि तुलसी जिमि विषय भोग बहुघीते ॥ ५४९ ॥

राग भैरवी ।

वार वार समझाय रहो मैं मानलेरे मन मेरी कहीको॥दुख सुख सो वीती सो वीती याद न कर बरबाद बहीको ॥ एक ब्रह्म पूरण सब जगमें छोड कपटकी गाँठ गही को ॥ जानकी दास सुमिरु श्रीरघुवर गई सो गई अब राख रही को ॥ ५५० ॥

राग कालिंगड़ा।

क्या देख दिवाना हुआ रे ॥ माया वनी सारकी सूली नारि नरकका कूआरे॥ हाड चाम नाड़ी को पिंजर तामें मनुआं सूआरे। भाई बंधु कुटुम्ब घनेरा तिनमें पच पच मूआरे ॥ कहत कबीर सुनो भइ साधो हार चल्यो जग जूआरे ॥ ५५१ ॥

राग जंगला ।

पीले रे अवधू हो मतवारा प्याला प्रेम हरी रसका रे ॥ पाप पुण्य दोउ भुगतन आये कौन तेरा है तू किसका रे ॥ जो दम जीवे हरि के गुण गाले धन यौवन स्वपना निशिका रे ॥ वाल अवस्था खेल गँवाई तरुण भयो नारी वश कारे ॥ वृद्ध भयो कफ वाईने घेरयो खाट पड़ा नहिंजाय मसका रे ॥ नाभिकमलमें है कस्तूरी कैसे भरम मिटे पशुका रे ॥ विन सतगुरु ऐसे दुख पावे जैसे मृगा फिरे वनका रे ॥ लाख चुरासी छनरयो चाहे छोड कामिनीका चसका रे ॥ प्रेम मगन चरणदास कहत हे नख शिख रूप भरयो विसका रे ॥ ५५२ ॥

राग कान्हरा ।

सुमिरन कर श्रीरामनाम दिन नीके वीते जाते हैं ॥ तज विषय भोग सब और काम तेरे संग न चलसी एक दाम जो देते हैं सो

पातेहैं॥कौन तुम्हारा कुटुंब परिवारा किसके हो यां कौन तुम्हारा किसके बल हरिनाम बिसारा सब जीते जीके नाते हैं॥लाख चुरासी भ्रमके आया बडे भाग्य मानुष तनु पाया तापर भी नहिं करी कमाई फिर पीछे पछतातेहैं॥जो तू लागे विषय विलासा मूरख फँसे मौजकी फाँसा क्या देखे श्वासनकी आसा गये फेर नहिं आतेहैं ॥ ५५३ ॥

राग तिलंग।

यह जग दर्शन मेला है ॥ जे तूँ आया है ईहां पै कछु देख भाल मिल जुल चल फिर हंस बोल बतादे लेखा भी किस कारन ते सब को इक ठौर इकेला है ॥ दिल भरके देख सकुच मत रे जिस जागे जो जो माया है ईहां तेरी जिनस जमाहे और कोई नहीं पराया है॥ पर इतना कहना मान मेरा जो करना है सो जलदी कर ॥ टुक देर तोहिं कोइ दम की है और ज्यादा नहीं झमेला है ॥ इस मंदर बीच निरख तूँ क्या रंग बरंगी मूरत है ॥ हिरदेसे तनक परख तू इस मूरतमें क्या सूरत है ॥ धनि उस कारीगरको कहिये जिन अपने हाथ बनाई है ॥ गुन ज्ञान जोबन छविरूप रंगमें एकहीएक नवेलाहै ॥ यह जो तू देखे आपसमें इहां एकसे एक का है नाता ॥ कोई बाप बना कोई बेटा कोई चाचा भतीजा कहलाता ॥ कोई मीयां आपको जाने है कोई दास आपको मानेहै ॥ कोई पीर मुरीद कहाता है कोई गुरू कोई चेला है ॥ अबलों तब ईहां है सबको सैरे हैं बाग बहारें हैं ॥ मन आनंद और चैनें हैं करते हैं लहरे मारे हैं ॥ पर सुखके समें यह हैं सगरे यह देखन हारे हैं ॥ आजही के कल आप आप को चल जायेगा एक इकेला है ॥ जिस दम यह अपना अपना है ईहां से रस्ता गंह जावेंगे॥यह दोस्ती निस्वत नाते सब इहांके इहां रह जावेंगे ॥ यह बूँदें जिस दरिया की हैं सब मौजहीसे मिल जावेंगी ॥ फिर कछु टंटा है न बखेडा है झगड़ा है ना झमेला है ॥ ५५४ ॥

राग झिंझोटी।

आरती सदाही होत संतन घट माहीं ॥ ब्रह्म जोत प्रगट भई विकसत दर्शाई ॥ वेदके बजंत्र बाजें ज्ञान धूप धुखन लागे समता चित छाय रही जिह्वा गुण गाई ॥ प्रेमकी जो वाती लागी सकल ब्रह्म जोत जागी अनुभवसों द्रुमत भाग इक संग मिल जाई ॥ सोहं धुन शंख पूर भेद भर्म कियेचूर इत उत सब चिद् स्वरूप आत्म दर्शाई ॥ कहहै कवि लोक दास आश्चर्य गुरु कियो प्रकाश अति हुलास होत जहाँ जन्ममर्ण नाहीं ॥ ५५५ ॥

राग सोरठ।

रेमन समझ ऐसी बात ॥ नदीके परवाह ज्यों सब जगत चल्यो जात ॥ सुत मात भ्रात अरु पिता वनिता बन्यो आय सँघात ॥ वसे संग सरायके परभात को उठ जात ॥ आकाश धरती पौन पानी चंद सूरज रात ॥ काल सबको खायगा मन लाय बैठो घात॥ भजन कर गोविंदका सद्गुरु बताई बात ॥ नँदलाल प्रभुजी सुमिर रे मन उतर भौ जलजात ॥ ५५६ ॥

राग विहाग।

काहेको विसारी रे जपाकर माला ॥ रामभजनको तुलसी की माला ओढनको मृगछाला ॥ खानपानको वासी जो टुकरा रहने को कुञ्ज तमाला ॥ धन जोवन मद में मत भूले जम करि है वेहाला ॥ निशिदिन रट हरि नाम छिनहि छिन रहो प्रेम मतवाला ॥ कृष्ण-प्रिया विन हितू न जगमें सब झूंठा जंजाला ॥ ५५७ ॥

राग धनाश्री ।

केते दिन हरि सुमिरन विन खोये ॥ परनिंदा रसनाके रससे अपने करम विगोये ॥ तेल लगाय कियो तनु मर्दन वस्तर मल मल धोये ॥ तिलक लगाय चले वन स्वामी विषयनके सँग जोये ॥

काल बली ते सब जग कांप्यो ब्रह्मादिक मुनि रोये ॥ सूर अधम की कौन गती है उदर भरे भर सोये ॥ ५५८ ॥

सब दिन गये बिषयके हेत ॥ तीनों पन ऐसेही बीते केश भये शिर श्वेत ॥ रूंधो श्वास मुख बैन न आवत चन्द्र ग्रस्यो जिमि केत ॥ तजि गङ्गोदक पियत कूप जल हरि तजि पूजत प्रेत ॥ कर प्रमाद गोबिंद बिसारयो बूड्यो कुटुँब समेत ॥ सूरदास कछु खरच न लागत राम नाम मुख लेत ॥ ५५९ ॥

राग सारंग।

तजो मन हरि विमुखन को सङ्ग ॥ जिनके संग कुबुद्धि ऊपजे परत भजन में भङ्ग ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह में निशि दिन रहत उमंग ॥ कहा भयो पय पान कराये विप नहिं तजत भुवंग ॥ कागहिं कहा कपूर खवाये श्वान न्हवाये गंग ॥ खरको कहा अरगजा लेपन मर्कट भूपण अंग ॥ पाहन पतित बान नहिं भेदत रीतो-करत निपंग ॥ सूरदास खल कारी कामर चढत न दूजो रंग ॥ ५६० ॥

राग देश।

राधे कृष्णा क्यों नहिं बोलो पीछे पछताओगे ॥ जाने तोको जन्म दियो ताको नाम क्यों ना लियो यह तो मानुप देही बंदे फेर नहीं पाओगे ॥ त्रिया और कुटुंबकी खातर पच पचके कमाओगे ॥ माया तेरे संग न चाले जगमें भरम गमाओगे ॥ आवेंगे वे जमके दूत पकर ले जावेंगे ॥ मजबूत तुमसे मांगेंगे हिसाव प्यारे क्या बतलाओगे। सूर प्रभुकी शरण आओ आवागमन मिटाओगे ॥ श्रीठाकुर जी को ध्यान धरले पार लगजाओगे ॥ ५६१ ॥

राग विभास।

गायो न गोपाल मन लायके निवारि लाज पायो न प्रसाद साधु मण्डलीमें जायके ॥ धायो न धमक वृन्दाविपिनकी कुञ्जन

म रह्यो न शरण जाय विट्ठलेश रायके ॥ नाथ जू न देख छक्यो छिन हूँ छबीली छबिसिंह पौंरि परचो नाहिं शीशहूँ नवायके। कहे हरिदास तोहिं लाजहू न आवे नेक जनम गँवायो ना कमायो कछु आयके॥ ५६२ ॥

राग जैजैवन्ती।

रच के सँवारे नाहिं अंग अंग श्यामा श्याम एरी धिक्कार और नाना कर्म कीवे पै ॥ पाँयन को धोय निज करते न पान कियो आली अँगार परे शीतलपय पीवे पै ॥ विचरे ना वृन्दावन कुंजन लतान तरे गाज गिरे अन्य फुलवारी सुख लीवे पै ॥ ललित किशोरी बीते वरष अनेक हग देखे नाहिं प्राण प्यारे छार ऐसे जीवे पै ॥ ५६३॥

राग सिंधु काफी।

रटत रटत राधा मन मोहन रसना ना फलका झलकाई ॥ लिखत लिखत लीला रस द्वन्द्वज अँगुरिन पोर जो ना घिस जाई॥ ललित किशोरी धिग यह देही ऐसो जीवन जन्म वृथाई ॥ युगल विहारीको मग जोवत जो न भई नयनमें झाई ॥ ५६४ ॥

राग देश।

ऐसी चतुरता पर छार ॥ करत वाद विवाद जित तित हित न नन्दकुमार ॥ रूप कुलगुण कूप मण्डित वढ्यो गर्व अपार ॥ और हम सम नाहिं कोऊ दूसरो संसार ॥ मात पित सुत भ्रात मरगये औ सकल परिवार ॥ जानत हैं हमहूँ मरेंगे तउ न तजत विकार ॥ लेतनाहिं प्रसाद सादर करत लोकाचार ॥ नारि मुखपे जाय पीवत अधरलिपटी लार ॥ सन्तजनसों द्रोह मानत सुहृद साहू सार ॥ काम क्रोध और लोभ व्याप्यो मोह मदहंकार ॥ सूर त्रिभुवन परिहरहु सतसंग वारंवार ॥ ५६५ ॥

राग कालिंगड़ा।

मूरख छांड़ वृथा अभिमान ॥ औसर बीत चल्यो है तेरो दो दिनको महिमान ॥ भूप अनेक भये पृथिवीपर रूप तेज बलवान ॥ कौन बच्यो या काल व्याल ते मिट गये नाम निशान ॥ धवल धाम धन गज रथ सेना नारी चंद्रसमान॥ अंत समय सबहीको तज कर जाय बसे शमशान ॥ तज सतसंग भ्रमत विषयनमें जाविधि मर्कट श्वान ॥ छिन भर बैठ न सुमिरन कीनो जासों होय कल्यान ॥ रे मन मूढ अंत जिन भटके मेरो कह्यो अब मान ॥ नारायण ब्रजराज कुँवरसों बेगहिं कर पहिचान ॥ ५६६ ॥

राग कालिंगड़ा।

सब दिन होत न एक समान ॥ इक दिन राजा हरीचंद गृह संपति मेरु समान ॥ इक दिन जाय श्वपच गृह सेवत अंबर हरत मशान ॥ इक दिन दूलह बनत बराती चहुँ दिशि गड़त निशान ॥ इक दिन डेरा होत जंगल में कर सूधे पग तान ॥ इक दिन सीता रुदन करत है महा विपिन उद्यान ॥ इक दिन रामचंद्र मिल दोऊ विचरत पुष्प विमान ॥ इक दिन राजा राज युधिष्ठिर अनुचर श्रीभगवान ॥ इक दिन द्रौपदी नग्न होत है चीर दुशासन तान ॥ प्रगटत हैं पूरवकी करनी तज मन शोच अजान ॥ सूरदास गुण कहँ लग वरणों विधिके अंक प्रमान ॥ ५६७ ॥

भज मन श्रीराधा गोपाल ॥ गोल कपोल अधर बिंबाफल लोचन परम विशाल ॥ शुक नासा भौं दूज चंद सम अति सुंदर हैं भाल ॥ मुकुट चंद्रिका शीश लसत हैं घुँघरारे वर बाल ॥ रतन जडित कुंडल कर कंकण गल मोतियनकी माल ॥ पग नूपुर मणि खचत वजत जब चलत हंस गति चाल ॥ गौर श्याम तनु

वसन अमोलक कर मेंहँदी सौं लाल ॥ मृदु मुसक्यान मनोहर चितवन बोलन अधिक रसाल ॥ कुंज भवनमें बैठ दोउ जन गावत अद्भुत ख्याल ॥ नारायण या छविको निरखत पुनि पुनि होत निहाल ॥ ५६८ ॥

जैजै युगल किशोर विहारी ॥ जै निकुंजमें अविचल जोरी जै मन मोहन प्रीतम प्यारी ॥ जै मुखचंद्र चकोर परस्पर जै छवि सिन्धुरूप मनुहारी ॥ जै ब्रज जीवन रसिक शिरोमणि महिमा अमित अपार तिहारी ॥ जै भक्तनवश रहत निरंतर नाना चरित करत सुख कारी॥भक्तराम निशि दिन यह जाचत चरन कमल राखों उरधारी ॥ २६९ ॥

यह रस रीत प्रिया प्रीतमकी दिव्यदृष्टि जल जैसे री ॥ विषयी ज्ञानी भक्त उपासक प्राप्त सबनको तैसे री ॥ कदली खंभ पपीहा सीपी स्वाति बूँद जल जैसे री ॥ भगवत् कछू विषमता नाहीं भूमि भाग फल तैसे री ॥ ५७० ॥

संतनको यह परम धन, सब ग्रंथन को सार ॥ भक्तन को सर्वस्व यह,रसिकन प्राण अधार ॥ सादर जो जन याहि को, पढ़ें नित्त कर नेम ॥ निश्चयते जन पावहीं, हरि चरणन दृढ प्रेम ॥ हरि चरणन दृढ प्रेम जिहि, धन्य धन्य ते धन्य ॥ भक्तराम को देहि वर, सकल होय परसन्य ॥ पढत सुनत याके भयो, जो मन अधिक हुलास ॥ मेरीहू सुध लीजियो, जान आपनो दास ॥ जै वृंदावनचंद्रकी, जैजैजै सुखरास ॥ निज चरणनमें राखिये, एक तुम्हारी आस ॥ ५७१ ॥

इति रागरत्नाकर दूसरा भाग समाप्त ।

॥ श्रीः ॥

अथ हियहुलासप्रारम्भः ।



दोहा ।

प्रथमहिं ताको सुमिरिये, जिनदीन्हौंगुणज्ञान ॥
ज्ञानीगुणगावैं सदा, ध्यानी धरैंजुध्यान ॥ १ ॥
अंबरथाप्योथंभविन, धरणीअधरधराय ॥
मनुपरूपह्वै अवतर्‌यो, देखत कलिको भाय ॥ २ ॥
वाबिनतीनौंलोकमें, दूजानाहींकोय ॥
मनमेंनिजकरिदेखिये, होनीहोयसुहोय ॥ ३ ॥
पुनिकछुवरणौंरीतिरस, रसहै जगको जीव ॥
रसनारसकोजसकहै, सुनिसुखउपजैहीव ॥ ४ ॥
हियहुलासयाग्रंथको, राख्योनामविचार ॥
यामेंसगरे रागके, सबैरूपशृंगार ॥ ५ ॥
आदिनादअनहदभयो, ताते उपज्योवेद ॥
पुनिपायोवावेदते, सकलसृष्टिकोभेद ॥ ६ ॥
प्राणखरे षट्रागसुनि, तव उपज्योवैराग ॥
बारेतरुनैवृद्धको, तातेभावतराग ॥ ७ ॥
जगकोधीरजरागहै, रागसंगकीखान ॥
मनमंजनइहरागहै, राग प्रेमकेप्रान ॥ ८ ॥
रागअभूषणरूपको, रूपरागको भोग ॥
याहीते सबकहतहैं, रागरंगसंयोग ॥ ९ ॥
रागहरैसवरोगको, राग चहै रसभोग ॥
विरहीबूझैरागको, उपजै विरह वियोग ॥ १० ॥

अथ षट्रागवर्णनम् ।

दोहा--रागप्रथमभैरोंकह्यो, मालकोस पुनिजानि ॥
हिंडोलरागतीजो कहत, दीपकरागबखानि ॥ ११ ॥
श्रीरागकविकहतहैं, मेघराग पुनिसार ॥
षट्रागनके नाम ये, कहैं भेद विस्तार ॥ १२ ॥

अथरागनकी रागिनी वर्णन ।

दोहा--भैरोंकी धुनि भैरवी, बंगालीवैरारि ॥
मधु माधव अरु सिंधवी, पाँचौं विरहिनि नारि ॥ १३ ॥
टोडी गौरी गुनकली, खंमायत पहँचानि ॥
और कुँकविको कहत हैं, मालकोसकी जानि ॥ १४ ॥
रामकली पटमंजरी,और कहैं देवसाखि ॥
ए नारीहिंडोलकी, ललित बिलावल राखि ॥ १५ ॥
देशी नट अरु कान्हरो, केदारो कामोद ॥
दीपककी प्यारी सबै, महाप्रेम परमोद ॥ १६ ॥
धनाशरी आसावरी, मारू बहुरि वसंत ॥
श्रीरागकी रागिनी, मालसिरी है अन्त ॥ १७ ॥
भोपाली अरुगूजरी, देशकार मल्लार ॥
वंकवियोगनिकामिनी, मेघरागकी नार ॥ १८ ॥

अथपट्र रागनके गुणवर्णन ।

भैरोंसुरसुरतागदे, कोल्हू चलें जु धाय ॥
मालकोस जब जानिये, पाहन पिघलि बहाय ॥ १९ ॥
चलें हिंडोलो आपतें, सुनत राग हिंडोल ॥
बरसे जलघन धार अति, मेघरागके बोल ॥ २० ॥

श्रीरागके सुर सुने, सूखो वृक्ष हराय ॥
दीपक दीयो बारि उठै, जो कोउ जानै गाय ॥ २१ ॥

अथ रागका समय वर्णन ।

दोहा-पिछले पहरे निशि समैं, भैरों राग बखान ॥
मालकोस तब गाइये, जब सब निकसै भान ॥ २२ ॥
एक पहर जब दिन चढै, करै राग हिंडोल ॥
ठीक दुपहरीके समय, दीपकके सुरबोल ॥ २३ ॥
श्रीराग चौथे पहर, जौलौं दिन अथवाय ॥
मेघराग जबही भलो, तबै मेह बरसाय ॥ २४ ॥
फागुनमें ए राग सब, जागत आठौं याम ॥
वसंत ऋतुमें निशि समैं, एक याम विश्राम ॥ २५ ॥
भैरों शरदकुशक शिशिर, अरु हिंडोल बसन्त ॥
दीपक ग्रीषम हेम श्री, मेघ सुपावस अन्त ॥ २६ ॥

अथ बाजनके भेद वर्णन ।

दोहा-जगमें सब सुरता कहैं, बाजे साढे तीन ॥
खाल तार अरु फूंक पुनि, अरधताल सुरहीन ॥ २७ ॥
खाल नगारे ढोल डफ, और पखावज जानि ॥
तार तँबूरा बीनहै, बहुरि रबाबबखानि ॥ २८ ॥
फूँक नफीरी बाँसुरी, सुरनाई करनाय ॥
ताल मँजीरा झाँझ सब, बाजे दिये बताय ॥ २९ ॥
आधोबाजो कहत हैं, कठतारी सुरहीन ॥
भेद कहे बाजेनके, गुणिजन जे परवीन ॥ ३० ॥

अथ अलाप करनेकी युक्ति ।

दोहा-बैठे आसन ऊंटके, तो शुध होय अलाप ॥
चलते टेढे सुर भरै, जानो महाकलाप ॥ ३१ ॥

अथ स्वरनिमित्त सरस्वतीचूर्ण ।

दोहा-शाखाहूली मुलहटी, ब्राह्मी वासा आनि ॥
हरड कूच वच वावची, सेंधौ जीरा जानि ॥ ३२ ॥
भंगरेह अजमोद पुनि, बहुरि शतावरि लेहु ॥
समकरि पीसै छानि करि, प्रात सुमुखमें देहु ॥ ३३ ॥
एक हथेलीभरि सदा, साधै दिन चालीस ॥
सुर सुन्दर हो बुद्धि बहु, विधिविद्या जगदीश ॥ ३४ ॥

इति हियहुलास सम्पूर्ण ।

अथ रागमालाप्रारंभः ।

भैरों रागको स्वरूपवर्णन ।

दोहा-भैरों शिव छबि शिर जटा, श्वेत वसन त्रय नैन ॥
मुण्डनकी माला गरे, सिंहरूप सुखदैन ॥ ३५ ॥

सवैया ।

शिवमूरति भैरों को भावबन्यो त्रयनैन समुण्डकि मालगरे॥
पटश्वेतसवै तनुमें पहिरे हिरदे भगवानको ध्यानधरे ॥
तिरसूल विराजत है करमें सब भामिनिकी मतिलेत हरे ॥
सुख छारलगी द्युति दूनी भई चित चाहनमें छबि जातछरे ॥३६॥

अथ भैरोंकी रागनी भैरवीको स्वरूप ।

दोहा-शिवपूजत कैलासपरि, दोउकरनमेंताल ॥
श्वेत चीर अँगिया अरुण, रूपभैरवी बाल ॥ ३७ ॥

अथ बंगालीरागिनीकोस्वरूप ।

दोहा-भस्मपिटारी कर गहे, हाथ लिये तिरसूल ॥
बंगालीव्याकुल भई, गई सबै सुधिभूल ॥ ३८ ॥

---

१ सुर॥७॥ २ सुर॥७॥

अथ वैरारीरागिनीस्वरूप।

दोहा—कर्दम पुष्प काननधरे, करकंचन शृंगार ॥
शीशकेश सोहतछुटे, श्वेतवसनवैरार ॥ ३९ ॥

अथ मधुमाधवीस्वरूप।

दोहा—कंचन तनु लोचन कमल, नागरि महा अनूप ॥
पिय पैठेही हँसत है, मधुमाधवी स्वरूप ॥ ४० ॥

अथ सिंधवी रागिनी स्वरूप

दोहा—कानफूलदुपहारिया, पहेरवस्तरलाल ॥
क्रोधवन्त तिरशूलकर, रूपसिंधवीबाल ॥ ४१ ॥

अथ मालकौंस रागको स्वरूप।

दोहा—मालकोस नीले वसन, श्वेत छरी लिय हाथ ॥
मुतियनकी माला गरे, सकल सखी हैं साथ ॥ ४२ ॥

अथ सवैया।

कौसकको उनमान भलो तनु गौर विराजत है पट नीले ॥
माल गरे कर श्वेत छरी रस प्रेम छक्यो छबि छैलछबीले ॥
कामिनिके मनमोहत हैं सबके मन भावत रूप रसीले ॥
भोर भये उठिबैठ्यो ही भावत नागर नायक रंग रँगीले ॥ ४३ ॥

अथ मालकौंसकी रागिन टोडीको स्वरूप।

दोहा—टोडी करवेणी गहे, गावत पियके हेत ॥
चंचल छबि मृग मोहनी, पहरे वस्तर श्वेत ॥ ४४ ॥

गौरी रागिनीको स्वरूप।

दोहा—गौरी छबि अति साँवरी, अंध कूप धारि कान ॥
तृपावंत नित कामकी, गावत मीठी तान ॥ ४५ ॥

---

३ सुर ॥ ७ ॥ ४ सुर ॥ ७ ॥ ५ सुर ॥ ७ ॥ ६ सुर ॥ ७ ॥ ७ सुर ॥ ७ ॥

अथ गुनकली रागिनीको स्वरूप।

दोहा—छुटे केश शिर गुनकली, बैठी पियके पास ॥
नीची ग्रीवा करि रही, अति ही चित्त उदास ॥ ४६ ॥

खंभायत रागिनीको स्वरूप।

दोहा—खंभायत गोरे वदन, गावत कोकिल बैन. ॥
अति आतुर चातुर खरी, कामवती दिनरैन ॥ ४७ ॥

अथ कँकुवि रागिनी स्वरूप।

दोहा—कँकुवि नायिका निशिसमै, जागी पियके संग ॥
रति माने के चहन अति, अंगअंगभे रंग ॥ ४८ ॥

अथ हिंडोल राग स्वरूप।

दोहा—पीत वसन हिंडोलके, हे जु हिंडोले माहिं।
सखी झुलावैं चावसों, गाय गाय मुसकाहिं ॥ ४९ ॥

सवैया।

कीन्हे बनाव महाछवि सुंदर भावते बैठ्यो हिंडोलहिं डोले ॥
झोलझुलावत औरीनहू सब गावत हे सखियाँ मुख खोले ॥
गोरे जो गात दिपात भरीद्युति दामिनिसी मानों पीत पटोले ॥
केलि करे अवला अलवेली अलोल सबे रस काम किलोले ॥५० ॥

अथ हिंडोल रागकी रागिनी रामकलीको स्वरूप।

दोहा—रामकली नीले वसन, कंचनसी सब देह ॥
प्रिय वाणी गावत उठी, पियके परम सनेह ॥ ५१ ॥

अथ पटमंजरी रागिनी स्वरूप।

दोहा—विरहभरी पटमंजरी, मनमैली तनुछीन ॥
सखी सीख अति देतहै, भई आधीन ॥ ५२ ॥

देवसाखि रागिनी स्वरूप।

दोहा–पियके करपर कर धरे, अति व्याकुल मन काम ॥
तनु दुर्बल देवसाखि है, महाविरहनी नाम ॥ ९३ ॥

ललित रागिनी स्वरूप ।

दोहा–ललित गरे माला पुहुप, सुंदर तरुणी जानि ॥
गोरी छबि बस्तर अरुण, वदन मदनकी खानि ॥ ९४ ॥

बिलावल रागिनीको स्वरूप।

दोहा–कामदेवको ध्यान धरि, पटते पटसंगीत ॥
करत शृँगारविलावली, नीले वस्तरप्रीत ॥ ९५ ॥

अथ दीपकरागका स्वरूप ।

दोहा–दीपक गजकी पीठपर, बैठ्यो बागेलाल ॥
मुक्तमाल पहरे गरे, चहूँओर रसबाल ॥ ९६ ॥

सवैया ।

दीपकको परताप बडो चढ़ी बैठ्यो गयंदकी पीठि विराजे ॥
अंबर रातो शरीर सबै मुकतानकी माल गरे छबिछाजै ॥
संग सखी सब सोहत हैं तिनमाहिं जो आय गयंदसो गाजे ॥
साँवरो रूप अनूप महाद्युति देखत दुःख दिगंतर भाजै ॥ ९७ ॥

अथ दीपकरागकी रागिनी देशीको स्वरूप।

दोहा–देशीके बस्तर हरे, काम सताई नार ॥
पतिको टेर जगावती, मिस करि वारंवार ॥ ९८ ॥

नटरागिनीको स्वरूप ।

दोहा–अरुन वरन सगरे वसन, नटवासी नरनारि ॥
ग्रीवा पकरे करनसों, पिय तनु रही निहारि ॥ ९९

अथ रागिनी कान्हरो स्वरूप ।

दोहा–शीशपत्र गजदंतको, कर नँगी तरवारि ॥
मोर कंठके वरन है, रूप कान्हरो नारि ॥ ६० ॥

अथ रागिनी केदारो स्वरूप ।

दोहा– शीश जटा सब तनु लटा, गरे जनेऊ नाग ॥
केदारो इह रूप है, धरे ध्यान वैराग ॥ ६१ ॥

अथ कामोद रागिनीको स्वरूप

दोहा–कामवंत कामोदनी, पीत वसन वनदास ॥
चहूँओर पियको तकत, अतिही चित्त उदास ॥ ६२ ॥

अथ श्रीरागको स्वरूप ।

दोहा–श्रीय रागके कर कमल, पुहुप रूप पट लाल ॥
वरस अठारहुको तरुण, गावत कंठरसाल ॥ ६३ ॥

श्रीरागकी–सवैया ।

वर्ष अठारहको तरुनो मुख देखतही सेवक मन भावे ॥
वाम सबै वशकी अपने गुण गायके भावते भेद बतावे ॥
रातो जो वागो विराजत है कर वारिज फूल लिये मुसकावे ॥
पुष्पके रूप स्वरूप बन्यो सवहींमें भलो श्रीराग कहावे ॥ ६४ ॥

अथ श्रीरागकी रागिनी धनाश्रीको स्वरूप ।

दोहा–धनासरी रोवत खरी, हिरदे विरह अपार ॥
सब तनु पीरो ह्वै रह्यो, निपट विरहनी नार ॥ ६५ ॥

आसावरी रागिनी स्वरूप ।

दोहा–चन्दन टीको भाल पर, गरे नागको हार ॥
छवि अति सुंदर साँवरी, आसावरी कुँवारि ॥ ६६

अथ मारू रागिनीको स्वरूप ।

दोहा—मारूके माला गरे, पिये प्रेम मधुमात ॥
तरुणी सुंदर साँवरी, बैठी अति अरसात ॥ ६७ ॥

वसन्तरागिनीको स्वरूप ।

दोहा—मोरपंख शिर पर धरे, वसन जु पीत वसंत ॥
कानन मौर जु अंवके, चहुँदिशि भौंर भ्रमंत ॥ ६८ ॥

मालसरी रागिनीकोस्वरूप ।

दोहा—मालसरी दुर्बल वदन, सखी हाथ पर हाथ ॥
अंबतरे बैठी रहत, बिछुरे पियको साथ ॥ ६९ ॥

अथ मेघरागको स्वरूप ।

दोहा—श्याम वसन है मेघको, गहै हाथ करबारि ॥
अति आतुर चातुर खरो, गावत सुरति विचारि॥ ७० ॥

मेघरागस्वरूप सवैया ।

मेघ मलार महाद्युति सुंदर इंद्रहिकी छवि आप बनो ॥
पहरे पट श्याम गहे तरवारि जु ग्रंथनमें इह भाँति भनो ॥
जैसो जहाँ चहिये सोइ अंग सु तैसिय भाँतिते ठीक ठनो ॥
कामको आतुर है अतिही तियके रतिको चित चाव घनो ॥

अथ मेघरागकी रागिनी भोपालीको स्वरूप ।

दोहा—भोपाली विरहनि बड़ी, केशरि गेरे चीर ॥
भयो विरहकी ज्वालते, पियरो सबै शरीर ॥ ७२ ॥

अथ गूजरी रागिनीको स्वरूप ।

दोहा—विरहसताई गूजरी, रोवत छूटे केश ॥
कामदेव कानन लग्यो, ईह दियो उपदेश ॥ ७३ ॥

देशकाररागिनीको स्वरूप।

दोहा—देशकार कञ्चनवरण, खेलत पियके सङ्ग ॥
हिय हुलाश जो कामकी, चल्यो चौगुनो रंग ॥ ७४ ॥

अथ मलाररागिनीको स्वरूप।

दोहा—बीन गहे गावत बहुत, रोवत है जलधार ॥
तनु दुर्बल विरहादही, विरहिनि नारि मलार ॥ ७५ ॥

टंकरागिनीको स्वरूप।

दोहा—सेज बिछाई कमल दल, लेटिरही मनमारि ॥
लेत उसास जु सीयसे, टंकवियोगिनि नारि ॥ ७६ ॥

इति षट्राग तीस रागिनीनके स्वरूपवर्णनम् ।

अथ आमेजी रागवर्णन।

दोहा—राग रागिनी सब कहै, जैसी जाकी रीति ॥
अब आमेजी रागको, सुनौ सकल करि प्रीति ॥ ७७ ॥

छप्पय।

देशकारको पुत्र पास दरशात राजधन॥ मंडित मुख तंबोल तेज बल गहर गौर तन ॥श्वेत सरस मिलि वसन कंठ मणिमाल मनोहर ॥ कंजअक्ष शिरछत्र विजन दहुँ विदित विजै वर ॥ बैठ्यो कल्याण सिंहासनहिं, रतनराग संचारियो ॥ पंडित प्रवीन परिजनसहित, दिवस अंत उच्चारियो ॥ ७८ ॥

दोहा।

तिलक गौड़ कामोदये, मिले मिश्रता मान ॥
इनकेकिये अलापको, जानौ सुध कल्याण ॥ ७९ ॥
तिलक पर्जकामोदयुत , आलापिनमें होत ॥
कामोदक पहले कह्यो, बहुरि गौड़को सेत ॥ ८० ॥

इतने मिलि आलापसों, श्लेप सकलसरसाय ॥
सुर उच्चार यों समुझियो, प्रगट रूप दरशाय ॥ ८१ ॥
शंकरभरनस्वरूपहै, गौररक्त तनुवास ॥
कमलमाल शृंगारहै, सखीरूपहै तास ॥ ८२ ॥
प्रथमराग केदारमें, मिलै बिलावल आनि ॥
इनको मिले अलापसों, शंकरभरानि सुजानि ॥ ८३ ॥
केदारो ईमनमिले, मिलै शुद्ध कल्यान ॥
इनके मिले अलापसों, राग हमीरह जान ॥ ८४ ॥
केदारो कल्याण सम, तनक बिलावल भास ॥
इनके किये अलापसों, ईमन होत उजास ॥ ८५ ॥
साँरग मारूके मिले, केदारो सम आनि ॥
मिश्रित करि आलापिये, इहे विहंगम जानि ॥ ८६ ॥
तीनि रागतो येमिलैं, फेरि मलार मिलाय ॥
इनकी समतासों नहीं, सो सांवंत कहाय ॥ ८७ ॥
जैतासिरी शंकरभरन, नटनारायणतुल्य ॥
इनके मिले विभागसों, राग सरस्वतीतुल्य ॥ ८८ ॥
बहुला आसावरि मिलै, अरु मलारसमभाग ॥
कछुक मेलि गंधारको, पडज जानियोराग ॥ ८९ ॥
प्रथमपूरवीनाटसुध, धनाशरीसमभाय ॥
समलेभागअलापिये, भीवपलासीआय ॥ ९० ॥
रामकली पुनिगूजरी, गुनकलीजुगंधार ॥
पूरविरागनिमिश्रिता, शक्तिवल्लभासार ॥ ९१ ॥
भैरवसुधिआसावरी, अरुगौरीको मानि ॥
देवगिरीसंभावले, योंगंधाराहिजानि ॥ ९२ ॥
विलावलीवागेश्वरी, नूनविलावलशुद्ध ॥

वागेश्वरसुरपूरहै, रागसुहासुदबुद्ध ॥ ९३ ॥
मिलिधनासिरीकान्हरो, संभागिनिआलाप ॥
सुरउचारसोंजानियो, वागेसुरीजुछाप ॥ ९४ ॥
मूलसदेवगिरीगिनौ, नटमलारहैनून ॥
करिसमानआलापिये, सारँगरागासिवून ॥ ९५ ॥
समैजुसारंगकीसुनौ, दिनग्रीपमऋतुपाय ॥
द्वितिययामतेपहर लग, गुनीरूपदरशाय ॥ ९६ ॥
आसावरीअहीरिमिलि, समभागिनि उच्चार ॥
तौलकरो आलापको, सिंधुरागगुनकार ॥ ९७ ॥
भैरव पंचम गूजरी, बंगाली गंधार ॥
संभागिनिउच्चारसों, सोरठसबसोसार ॥ ९८ ॥
एकअहीरीरागिनी, करनाटीसमजोर ॥
रागअडानोजानिये, तानसुमिलिताघोर ॥ ९९ ॥
श्रीतीनिकर नाटकी, मंगलअष्टप्रधान ॥
कारिसमान आलापिये, जानिपूरियातान ॥ १०० ॥
देशकारिअरुगूजरी, स्वलपरूपआरंभ ॥
तान मिलावैयुक्तिसो, रागअहीरीयंभ ॥ १ ॥
फिरैदसूकरनाटयो, समताकरैसमस्त ॥
छायासावतअंडहै, भूपालीपरसस्त ॥ २ ॥
जैत शिरीअरुद्रावेंडी, समलेकरोउचार ॥
श्रुतिभगननहिंसोभिये, धौलसिरीविस्तार ॥ ३ ॥
जैतश्रीकरनाटकी, केदारोकल्यान ॥
समकरितानामिलाइये, मंगलअष्टप्रमान ॥ ४ ॥
प्रथमशुद्धकल्यानमें, मिलैजैतश्रीआनि ॥
उभयरूपगायालखै, जैतकल्यानहिजानि ॥ ५ ॥

मारूटोडीरागिनी, आसामिलैसमान ॥
इनहीकीसंभावना, षेमपरजपहिचान ॥ ६ ॥
प्रथमपूरवीसारँगहि, जैतोशिरीकोजानि ॥
एसमभाग अलापिये, देवगिरीपहिचानि ॥ ७ ॥
कामोदकषड्जागयो,समकरिकरैअलाप ॥
तिलकरागकोजानियें,मिटतसकलसंताप ॥ ८ ॥
सिंधूअरुबडहंसको, नूनअधिक संभाव ॥
इनकेदुहूँप्रतापतें, शिवरीरागहिगाव ॥ ९ ॥
धनाशिरीशिवरीनिरा, समअलापकोकीन ॥
कहतकुमारीरागिनी,तानतरलपरवीन ॥ ११० ॥
चतुरविहारीसममिलै, धनाशरीसमजानि ॥
चैतीमारूचारिये, बडहंसहिपहिचानि ॥ ११ ॥
चतुरबिहारीरागिनी, केदारहिसमभाग ॥
इनकेहोतामिलापसों, लंकधैनइहराग ॥ १२ ॥
नटनारायणशुद्धनट, औरमलारमिलाय ॥
इनकेमिलेअलापसों,रागमाधवीगाय ॥ १३ ॥
मधुमाधवलकधैनलै, शुद्धबिलावलआनि ॥
चौथेशंकरभरनसों, नटनारायणजानि ॥ १४ ॥
ककुभबिलावलपूरवी, केदारो समभाग ॥
इनकेजुरे मिलापसों, इहेदक्तनटराग ॥ १५ ॥
धौलसिरीदेखास मिलि, फेरिविलावलि मेलि ॥
करिउचारसमभागसों, जैतशरीकीकेलि ॥ १६ ॥
केदारोकल्यानहै, औरविलावलनाम ॥
इनकेसमआलापते, तीछनरागसुनाम ॥ १७ ॥

रामकलीअरुगूजरी, देशकरीबंगाल ॥
पंचमसमभागनिमिलै, बहुलीराग विशाल ॥ १८ ॥
सोरठ और धनासिरी, बिलावली समकीन ॥
इनके मिश्रितगानते, जैजैवंतिप्रवीन ॥ १९ ॥
धनाशरीटोडीमिलै, समकारितान बिलाव ॥
रागअनूपमनामहै, तानसुरनतेगाव ॥ १२० ॥
नटसंभागकल्यानकरि, मिश्रितउभैबताय ॥
न्यूनअधिकसमजानिकै, इहैशुद्धनटगाय ॥ २१ ॥
नटजोमिलैहमीरसों, उहहैनाटहमीर ॥
नटकेदारोसमकर, नटकेदारहमीर ॥ २२ ॥
सारँगमेंटोडीमिलै, मिश्रितउभैप्रमान ॥
समअलापसोंगाइये, सारंगगौडनिधान ॥ २३ ॥
प्रथमधनाश्रीपूरवी, दाऊसुरसंयोग ॥
इहधनाशरी पूरवी, गुणिजनगावोलोग ॥ २४ ॥
गौरीसारँगसमकरो, स्वल्पललितकीभास ॥
सोचैती गौरीकही, समझो बुद्धिप्रकास ॥ २५ ॥
सारँगकेसुरसोंमिलै, करोगौडकोज्ञान ॥
तामेंपूरोपूरवी, रागचूरिया जान ॥ २६ ॥
आमेजी ये रागहैं, कहैंगरतिजनगाय ॥
भेदरागअरुरागिनी, एसबदियेबताय ॥ १२७ ॥

[रा]ग ६ रागिनी ३० रागरागिनी ३६ ये मिलिकै आमेजी रागरागिनी ९९९ मियां तानसेन गाई संवत् १८५५ चैत्रवदि २ शुक्रवार ॥

इति श्रीरागरत्नाकर द्वितीयभागाङ्क दियदुलासादि समाप्त ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ रागरत्नाकर.

तृतीय भाग ३.

श्लोक–नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायंति तत्र तिष्ठामि नारद ॥
सोरठा–हरिपद प्रीति न होय, विन हरि गुण गाये सुने।
भव ते छुटत न कोय, बिना प्रीति हरिपद भये ॥
दोहा–अपनी ओर निहारि कै, क्षमा करो अपराध।
जिहिं तिहिं विधिहरिगाइये,कहतसकलश्रुतिसाध॥
संतनको यह परम धन, सब ग्रंथनको सार ॥
भक्तनको सर्वस्व यह, रसिकन प्राण अधार ॥
सादर जो जन याहिको, पढैं नित्त कर नेम।
निश्चय ते जन पावहीं, हरि चरणन दृढ प्रेम ॥
हरि चरणन दृढ़ प्रेम जिहि, धन्य धन्य ते धन्य।
भक्तराम पर द्रवहि सब, हृदय होय परसन्य ॥
पढ़त सुनत याके कछू, जो मन होय हुलास।
मेरी हूं सुध लीजियो, जान आपनो दास ॥
जय वृन्दावनचंद्रकी, जय जय जय सुखरास।
निज चरणनमें राखिये, एक तुम्हारी आस ॥

कवित्त।

गिरिको उठाय बृज गोपको बचाय लियो अग्निते उबारयो पुनि बालक मँजारीको ॥ गजकी अरज सुन ग्राह ते छुटाय लीनो राख्यो

व्रत नेम धर्म पांडवकी नारीको॥ राख्यो गज घंट तरे बालक विहंगनको राख्यो प्रण भारतमें भीष्म ब्रह्मचारीको ॥ त्रिविध संताप हारी निज संत सुखकारी मोहिं तो भरोसो भारी ऐसे गिरिधारीको ॥ १ ॥

कमला निवास निजदासनकी पूरै आस ताके विसवास विष भख्यो मीराबाई है ॥ केशव कमलनैन सन्तन करन-चैन सैन हित भये भूप मंजनको नाई है ॥ इन्द्र जू को हर्यो मान सुदामाको दियो दान भक्त जान छान नामदेव जीकी छाई है ॥ नन्दके कन्हाई निज संतनके सुखदाई बलदेव भाई सो हमारोहू सहाई है ॥ २ ॥

काहूके अधार सेवा वणिज व्यौपारहूको काहूके अधार थित वित्त खेत गामको ॥ काहूके अधार तन सार भ्रात बंधुनको काहूके अधार प्रिय सार निज नामको ॥ काहूके अधार विद्या बुद्धि बल को है अरु काहूके अधार हाथी घोड़ा धन धामको ॥ मैंतो निराधार मेरी हरिहि करैंगे सार मेरे तो अधार एक जानो हरि नामको ॥ ३ ॥

केऊ कर्म वादी केऊ अनभौ प्रसादी भये केतनकी मति भई न्याय सांख्य मतकी ॥ केते जग दानी यम नेमको प्रमाण करैं केते परतीत गहैं तीरथ हू व्रतकी ॥ केऊ ब्रह्मचारी केऊ योगी जटाधारी भये वानप्रस्थ केतनको दया साँच सतकी ॥ मैंतोहूँ पतित मेरी कौन ध्यौस ह्वैहै गति पद्मापति राखो पति मोसेहू पतितकी ॥ ४ ॥

केऊ प्रेम लक्षण भगति में विचक्षण ह्वै नीचे भांति सेवा कर जाने निधि ज्ञानकी ॥ केऊ तत्त्ववोध सेती आतमको शोध करैं साधैं नित्त योग गति जानैं रोध पानकी ॥ केऊ तनु सासना-

सवासना जतन सहैं केऊक उपासना गणेश शिव भानकी ॥ हौंतो हूं अजान ताकी काहूसे पछान नाहिं कोऊ कछु जानै हौं तो जानूं नाथ जानकी ॥ ५ ॥

जैसे खग बालकको राख लियो घंटा तरे लाक्षा गृह बीच राख्यो पांडवन साथको ॥ राख लियो प्रीक्षितको माताके उदर माहिं राख्यो व्रज ग्वाल बाल गिरि धारचो हाथको ॥ पारथके स्वारथको सारथी भये हो तुम सखा निज जानके जितायो है भारथको ॥ पावक प्रजारी तहां राख्योहै मजारी सुत वैसी भाँति राखो नाथ मोसम अनाथको ॥ ६ ॥

केऊ ध्यान धारना समाधि विषे लीन भये मिलावैं पर्मातमाको आतमा विचारीको ॥ केते निषकाम मन अजपाको जाप जपैं केते भजैं शंकर धतूरके अहारीको ॥ केते है सकाम मंत्र यंत्र आठों याम जपैं केते लोभ दामते गणेश सुखकारीको ॥ तेरो ध्यान ज्ञान तेरो आसरो तिहारो मोहिं कोई कछु ध्यावो मैंतो ध्यावों गिरिधारीको ॥ ७ ॥

लीलातो अगाध व्रजवासिनके हेत सेती धनाजूके खेत विन बोये उपजाय है ॥ भीषमको प्रण अरु द्रौपदीकी लाज राखी अशरण शर्ण कीर्ति वेद मध्य गाई है ॥ बूड़त बचायो व्रज कर पर गिरि धारचो साह बन नरसी की हुंडी सकराई है ॥ करिये न बार अब सुनिये पुकार मेरी मोपै व्रजराज गजराज कीसी आईहै ८॥

दीनबंधु दयासिंधु मेटो दुख द्वंदन के ऐसे तो अनेक विध ग्रंथन में कही है ॥ गोप मेह ते उबारे राजा बन्दि ते निवारे भारत में पार्थ हित एते शर सही है ॥ नामदे कवीर गीध गणिका रु कीर तारे चीर बाढ़ो द्रौपदीको जग जश लही है ॥ वेर हेर मांझ धार मेरो दुख वार देक एहो नाथ कृपानिधि मेरो हाथ गही है ॥ ९ ॥

तब तो भक्तनके सहाय काज ब्रजराज कंसको विदार्‌यो मति धरी नाहिं मामाकी ॥ बाल्द भरल्याये सो जुलाहाके दयाल होय गऊ हू जिवाई अरु छानि छाई नामा की ॥ सन्तनको प्रण ग्वाल गण राख्यो व्याल सेती बिपति हरी है सम्प ति देके सुदामा की ॥ अहो बलवीर तुम द्रौपदीको बाढ्यो चीर हरो क्यों न पीर अब मोसे निपकामा की ॥ १० ॥

कबको पुकारत हों सुनो नहीं एको बात एहो नंदलाल तुम कैसे प्रतिपाल हो ॥ कहैं हैं दयाल सो तो दयाहू न देखियत मेरी मति ऐसी आछे नीके पशुपाल हो ॥ धर्‌यो हो नृसिंह रूप तबहीं प्रह्लाद काज अबतो न लाज कछु गोधन में ग्वाल हो ॥ डार्‌यो तेल कान में कि बस्यो जाय काननमें शेप सेज लेट कीधौं पौढ़े जा पताल हो ॥ ११ ॥

बेर बेर टेर टेर जीभहू शिथिल भई हरत न मेरी पीर कैसे अभिमानी हो ॥ कृपण भये हो कीधौं मौनको गहेहो कान्ह दयाहू न आवै अब कैसे उनमानी हो ॥ कैसेकै उदार तुम होत हो मुरारि प्रभु गोपिनके प्यारे छांछ दूधहूके दानी हो ॥ वक वक थकी वानी कछुहू न चित्त आनी जानी हम जानिबूझ करो आनाकानी हो ॥ १२ ॥

वेद औ पुराणन मैं कीनोहै बखान ऐसो सतयुग वीच ध्रुव प्रह्लादकों तूठे हो ॥ त्रेता बीच नीच कुलकी न करी कानि कछु भीलनीके हाथ प्रभु भखे बेर जूंठे हो ॥ द्वापरके अन्त तुम द्रौपदी- की लाज राखी पांडवके काज दल कौरवके रूठे हो ॥ अब कलि कालमें जो करो न सहाय मेरी तोहि लोग हँसके कहेंगे हरि झूठे हो ॥ १३ ॥

गौतमकी नारी ताकी कथा बहु विसतारी यद्यपि उधारी तिन छिद्र उघरायके ॥ दुःशासन द्रोपदीके सभा बीच केश खैंचे तब लाज राख लई लाजकुं गमायके ॥ भयो बल हीन तनु अतिही अधीर छिन्न तब गज काज हरि आये तुम धायके ॥ दीनन दयालु प्रभु यामें तौ सँदेह नाहीं करो हो सहाय आप नीको तनु तायके ॥ १४ ॥

सवैया ।

दास सुदामाको संपति दै चुटकी भर चावल पहलेहि लीने ॥
सागके पात पँचालीके खाय तबै ऋषि भोजन दीने नबीने ॥
कंस की दासी पै चन्दन ले पटरानी करी कहों मान करीने ॥
कारज जो जगमें यदुराय अकोर लिये बिन कौनके कीने ॥ १५ ॥

कवित्त ।

ब्रह्मा रु महेश शेष नारद गणेश कहैं भक्तनके काज हरि आप देह धारी है ॥ मङ्गलकरण दुख द्वंद्वके हरण पुनि पोपण भरण ऐसे रटैं नर नारी है ॥ विरद भक्तवत्सल वेद हू पुराण कहैं जानत हौं जाके अब खोबेकी विचारी है ॥ द्वारकाके वासी भये जायके मेवासी अब मेरी होत हाँसी यामें हाँसी तो तिहारीहै ॥ १६॥

करों अपराध भोर सांझ तरकोर नित अतिही कठोर मति चोर को निकाम हों ॥ आतुर अधीर ताते धीरता धरत नाहीं ऊंच नीच बोल गति बकों आठों याम हों ॥ अरचा न जानूं कछू चरचा न बूझत हों कछु हेत प्रात से न लेत हरि नाम हों ॥ सब तकसीर बलवीर मेरी माफ करो कहै माधोदास प्रभु तिहारो गुलाम हों॥१७॥

छंद ।

जन्मे श्रीकृष्ण मुरारि भगत हित कारने ॥ मथुरा लियो अवतार गोकुल झूले पालने ॥ तिथि आठैं बुधबार भाद्रपदकी

करी ॥ रोहिणी नक्षत्र आधीरातको जनमें हरी ॥ धनि धनि वसुदेव देवकी जहां प्रभु अवतरे ॥ धनि धनि गोपी ग्वालकी जिन प्रभु बस करे ॥ धन्य धन्य सुर नर मुनि सब जय जय करें ॥ दुंदुभी वजत आकाश सुमन वर्षा करें ॥ ब्रजवासी गोरस भर भर कर लावहीं ॥ दधिकांदो बाबा नन्द सु कीच मचावहीं ॥ बाजत ताल मृदंग बीण अरु बांसुरी ॥ निरखैं गोपी ग्वाल चलौं चित चावरी ॥ यशुमती चीर पहराय नौरँग भई ग्वालनी ॥ सुंदर वदन निहार चकित भई भामिनी ॥ श्री बलभद्रजूके वीर असुर दल खंडना ॥ भगत वछल महाराज सु यदुकुल मंडना ॥ शंकर धरत हैं ध्यान सु गोद खिलावहीं ॥ सो मुख चूमत माय सु पलन झुलावहीं ॥ श्रीनंददास जु नेह चरण चित लावहीं ॥ हरिगुण मंगल गाय जन्मफल पावहीं ॥ १८ ॥

राग जंगला।

जै जानकी नाथा जै श्री रघुनाथा ॥ दोउ कर जोड़े विनवों प्रभु मोरी सुनो बाता ॥ तुम रघुनाथ हमारे प्राण पिता माता ॥ तुमहीं सज्जन संगी भक्ति मुक्ति दाता ॥ जय० ॥ चौरासी प्रभु फंद छुडावो मेटो यम त्रासा ॥ निशि दिन प्रभु मोहिं राखो अपने संग साथा ॥ जय० ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन सँग चारों भैया ॥ जग मग ज्योति विराजै शोभा अति लहिया ॥ जय० ॥ हनुमत नाद वजावत नेवर ठिमकाता ॥ सुवर्ण थाल आरती करत कौशल्या माता ॥ जय० ॥ क्रीट मुकुट कर धनुप विराजै शोभा अति भारी ॥ मनीराम दरशनको पल पल बलिहारी ॥ जय० ॥ १९ ॥

कवित्त ।

जलकी न घट भरैं मगकी न पग धरैं घरकी न कछु करैं बैठी भरैं सांसु री ॥ एकै सुन लोट गई एकै लोट पोट भई एक-नके दृगन निकस आये आंसु री॥ कहै रसनायक सो व्रज बनितन विध बधिक कहाये हाय हुई कुलहांसु री ॥ करिये उपाय बाँस डारिये कटाय नाहिं उपजैंगे बाँस नाहिं बाजै फेरि बांसुरी ॥२०॥

भिक्षुक तिहारो कहां बलि मखशाला जहां सर्पन को संगी कहां ह्वै है क्षीर निधि में ॥ एरी बहुरंगी बैलवालो कहां नाचत है कीन्हे तिरभगा कहीं ह्वै है ग्वालगन में ॥ चाउर चबैया कहूं होय है सुदामा पास विषको अहारी कहां पूतनाके घर में ॥ सिंधुसुता आन मिली तर्कसों तरक करी गिरिजा मुसक्यात जात झारी लिये कर में ॥ २१ ॥

सवैया ।

शेष महेश गणेश दिनेश सुरेशहु जाहि निरंतर गावैं ॥
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सु वेद बतावैं ॥
नारद लै शुक व्यास रटैं पचिहारे तऊ पुनि पार न पावैं ॥
ताहि अहीरकी छोहरियां छछियाभर छाछपै नाच नचावैं ॥२२ ॥
गुंज गरे शिर मोरपखा अरु चाल गयंदकी मोमन भावैं ॥
सांवरो नंदकुमार सबै व्रजमंडल में व्रजराज कहावैं ॥
साजैं समाज सबै शिरताजकी लाजकी बात कही नहिं आवैं
ताहि अहीरकी छोहरियां छछियाभर छाछपै नाच नचावैं ॥२३ ॥
आज गईहुति भोरहिं हौं रसखानि रई कहँ नंदके भौनहिं ॥
वाको जियौ जुग लाख करोर जशोमतिको सुख जात कह्यो नहिं ॥
तेल लगाय लगाय के अंजन भौंह बनाय बनाय डिठोनहिं ॥
डार हमेल निहारति आनन वारति ज्यों चुचकारति छौनहिं॥२४॥

धूर भरे अति शोभित श्याम जु तैसी बनी शिर सुंदर चोटी ॥
खेलत खात फिरैं अँगना पग पैंजनियां कटि पीरी कछोटी ॥
वा छबिको रसखानि विलोकत वारत काम कलानिधि कोटी ॥
कागके भाग कहा कहिये हरिहाथते लैगयो माखन रोटी २५ ॥
एकते एक अनेरे रहे सब ढीठ सखा सँग लीन्हें कन्हाई॥
आवतहीं हौं कहां लौं कहों कोऊ कैसे सहै अतिकी अधिकाई ॥
खायो दही मटकी घटकी नहिं छोड़त चीर दिवाये दुहाई ॥
रसखानि तिहारिये सौंह यशोमति भागि मरूं कर छूट न पाई॥२६॥
लोककि लाज तजी तबहीं जब देख्यो सखी ब्रजचंद्र सलोनो ॥
खंजन मीन सरोजनकी छबिगंजन नैन लला दिन होनो ॥
रसखानि निहार सकै जु सम्हारकै को तिय है वह रूप सु टोनो॥
भौंह कमान सु जोहनको शर बेधत प्राणन नन्दको छौनो २७ ॥
सोहत हैं चँदवा शिर मोरके तैसिये सुन्दर पाग कसी है ॥
तैसिये गोरज भाल विराजत तैसी हिये वनमाल लसी है ॥
रसखानि विलोकत बौरी भई दृग मूँदके ग्वालि पुकार हँसी है ॥
खोल री घूँघट खोलौं कहा वह मूरति नैनन माँझ वसी है॥२८॥
भौंह भरी बरुनी सुथरी अतिकै अधरान रँग्यो रँग रातो ॥
कुंडल लोल कपोल महाछबि कुंजन ते निकस्यो मुसकातो ॥
रसखानि लखे मन खोयगयो मग भूलगई तनुकी सुधि सातो ॥
फूटिगयो दधिको शिरभाजन टूटिगो नैनन लाजको नातो ॥२९॥
जादिन ते निरख्यो नँदनन्दन कान तजी घरबन्धन छूट्यो ॥
चारु विलोकन की न सुमार सम्हार गई मन मारने लूट्यो ॥
सागरको सरिता जिमिधावत रोक रह्यो कुल को पुल टूट्यो ॥
मत्त भयो मन संग फिरै रसखानि स्वरूप सुधारस घूट्यो ॥ ३० ॥
बांकी विलोकन रंग भरी रसखानि खरी मुसकान सुहाई ॥

बोलत बैन अमीरस दैन महारस ऐन सुने सुखदाई ॥
कुंजनमें पुरबीथिनमें पिय गोहन लागि फिरों मेरी माई ॥
बांसुरि टेर सुनाय अरी अपनाय लई ब्रजराज कन्हाई ॥ ३१ ॥
देखनको सखि नैंन भये सुसने तनु आवत गाइन पाछैं ॥
कानभये इन बातनके सुनबेको अमीनिधि बोलत आछैं ॥
पै सजनी न सम्हार परै वह बांकी बिलोकन कोर कटाछैं ॥
भूमि भयो न हियो यह आलीजहाँ पिय खेलत काछनि काछैं॥३२॥
खंजन नैंन फँदे छबिपिंजर नाहिं रहैं थिर कैसेहु माई ॥
छूटगई कुलकानि सखी रसखानि लखी मुसकानि सुहाई ॥
चित्रलिखी सी भई सब देह न बैन कढ़ैं मुख दीन्हें दुहाई ॥
कैसी करौं जित जावँ तितै सब बोल उठै यह बावरी आई ॥ ३३ ॥
बंक विलोकन है दुखमोचन दीरघ लोचन रंगभरे हैं ॥
घूमत बारुनि पान किये जिमि झूमत आनन रंग ढरे हैं ॥
गंडनपै झलकै छबि कुंडल नागरि नैन बिलोकि अरे हैं ॥
रसखानि हरे ब्रजबालनिके मन ईषदहांसिकि फांसी परे हैं ॥३४॥
अति लोककी लाज समूहमें घेरके राख थकी सबसंकटसों ॥
पल मैं कुलकानकी मेड़ नखी नहिं रोकी रुकीं पलकैं पटसों ॥
रसखानि सों केती उचाटि रही उचटीं न सकोच की औंचटसों ॥
अलि कोटि करी हटकी न रही अटकी अँखियां लटकीलटसों॥३५॥
आज सखी नँदनन्दन री तकि ठाढ़ोहै कुंजनकी परछाहीं ॥
नैंन विशालकी जोहनको शर वेध गयो हियरा जिय माहीं ॥
घायल घूम खुमार गिरी रसखानि सम्हार रह्यो तनु नाहीं ॥
तापर वा मुसकानकी डौंड़ी वजी व्रजमें अवला कित जाहीं ॥३६॥
जा दिनते मुसकान चुभी उर ता दिनते जु भयो व्रज वारी ॥
कुंडल लोल कपोल महाछबि कुंजनते निकस्यो सुखकारी ॥

हौं सखि आवत ही बगरें पग पैंड़ तजी रिझई बनवारी ॥
रसखानि परी मुसकानके पानिन कौन गनैकुलकानिविचारी॥३७॥
कौनको लाल सलोनों सखी वह जाकीवड़ी अँखियां अनियारी॥
जोहनि वंक विशाल के बानन बेधत हैं हिय तीछन भारी ॥
रसखानि सम्हार परै नहिं चोट सु कोटि उपाय करो सुखकारी॥
भाल लिख्योविधिनेहकोबंधन खोलसकैऐसोको हितकारी॥३८॥
मैन मनोहर बेनु बजे सु सजे तनु सोहत पीत पटा है ॥
यों दमके चमके झमके द्युति दामिनि की मनु श्याम घटा है ॥
रसखानि महामधुरी मुखकी मुसक्यान करै कुलकान कटा है ॥
ये सजनी ब्रजराज कुमार अटा चढ़ि फेरत लाल बटा है॥ ३९ ॥
नैन लख्यो जब कुंजनते बनिकै निकस्यो मटक्यो मटक्यो री ॥
सोहत कैसो हरा टटको शिर तैसे किरीट लसै लटक्यो री ॥
को रसखान रहै अटक्यो हटक्यो ब्रज लोग फिरै भटक्यो री ॥
रूपअनूपमवानटको हियरे अटक्यो अटक्यो अटक्यो री ॥४० ॥
एक दिना मुरलीधुनि में रसखानि लियो उन नाम हमारो ॥
ता दिन ते यह बैरी बिसासिनि झांकन देति नहीं है दुआरो ॥
होत चवाव बचावनो क्यों कर क्योंआलि देखिये प्राणपियारो ॥
दीठपरेही लग्यो चटको अटको हियरे पियरे पटवारो ४१ ॥
कानन दै अँगुरी रहिहौं जबहीं मुरली धुनि मन्द बजै हैं ॥
मोहनि तानन सों रसखान अटा चढ़ गोधन गैहैं तौ गैहैं ॥
टेर कहौं सिगरे ब्रजलोगन काहि कोऊ कितनो समुझै हैं ॥
माई री वा मुखकी मुसकान सम्हार न जैहैं न जैहैं न जैहैं ॥४२॥

कवित्त।

गोरज विराजै भाल लहलही बनमाल आगे गैयां पाछे ग्वाल गावैं मृदु तान री ॥ तैसी धुनि वांसुरी की मधुर मधुर तैसी वंक

चितवनि मन्द मन्द मुसकान री ॥ कदम विटपके निकट तटनीके तट अटाचढ़ देख पीत पट फहरान री ॥ रस बरसावै तन तपन बुझावै नैन प्राणन रिझावै वह आवै रसखान री ॥ ४३ ॥

अबई गई खरिक गायके दुहायबे को बावरी ह्वै आई डार दोहनी यो पान की ॥ कोऊ कहै छरी कोऊ भौन परी डरी कोऊ कहै मरी मरी गति हरी अँखियान की ॥ सास व्रत ठाने नन्द बोलत सयाने धाय दौर दौर जानै मानै खौर देवतान की । सखी सब हँसे सुरझान पहिचान कहूँ देखी मुसकान वा अहीर रसखान की ॥ ४४ ॥

ब्याही अनब्याही ब्रजमाही सब चाही तासों दूनी सकुचाही दीठ परे जु जुन्हैया की । नेक मुसकान रसखानकी विलोकतही चेरी होत एक वार कुंजनफिरैया की ॥ मेरो कह्यो मान अन्त याको गुण मानहै री हौं तौ हौं सकात खातजात सौंह भैया की ॥ माय की अटक तौलौं सासुकी हटक जौलौं देखी ना लटक मेरे दूलह कन्हैयाकी ॥ ४५ ॥

सवैया ।

नैनन बंक बिशालके बाणन झेलि सकै वह कौन नवेली ॥
वेधत है हिय तीखन कोर सो मार गिरी तिय केतिक हेली ॥
छोडैं नहीं छिनहूं रसखानि सुलागी फिरैं द्रुमसो जनु बेली ॥
रोर परी छबिकी ब्रजमण्डल कुण्डल गण्डन कुन्तल केली ॥४६॥

सुन्दर श्याम सजे तनु मोहन जोहन में चित चोरत है ॥
बांके बिलोचन की अवलोकन नोकन के दृग जोरत है ॥
रसखानि मनोहर रूप सलोनेको मारग ते मन मोरत है ॥
काजसमाज सबै कुललाज लला ब्रजराज को तोरत है ॥ ४७ ॥

मकराकृत कुण्डल गुञ्ज कि माल सु लाल लसैं पग पांवरियां ॥
बछरान चरावन के मिस भावतो देगयो भावती भाँवरियां ॥

रसखानि विलोकत ही सिगरी भई बावरियाँ ब्रजडावरियाँ ॥
सजनी सब गोकुलमें विष सो बगरायो है नंदके सांवरियां ॥४८॥

कानन कुण्डल मोरपखा शिर कंठमें माल विराजत है ॥
मुरली करमें अधरा मुसकान तरंग महाछवि छाजत है ॥
रसखानि लखे तनु पीत पटा शत दामिनिकी दुति लाजत है ॥
वह बांसुरिकी धुनि कानपरे कुलकान हियो तज भाजत है ॥ ४९॥

कवित्त ।

दूध दुह्यो सीरोपरयो तातो न जमायो वीर जामनदयो सो धरयो धरयोई खटायगो ॥ आन हाथ आन पायँ सवहीके तवहीं ते जबहींते रसखान तानन सुनायगो ॥ ज्योहीं नर त्योहीं नारी तैसेई तरुनि बारी कहिये कहा री सब ब्रज बिललायगो ॥ जानिये न आली यह छोहरा यशोमतिको बाँसुरी बजायगो कि विष बगरायगो ॥ ५० ॥

सवैया ।

बजी है बजी रसखान बजी सुनिकै अब गोप कुमारि न जी हैं ॥
न जी है कदाचित कामिनि कोऊ जु कान परी वह तान अजी है ॥
अजी है बचावके कौन उपाय तियान पैं मैनने सैन सजी है ॥
सजी है तो मेरी कहा वश है जब बैरिन बांसुरि फेर बजी है॥५१॥

आज अली इक गोप लली भई बावरि नेक न अंग सम्हारै॥
मात अघात न देवनि पूजत सासु सयानी सयानी पुकारै ॥
यों रसखान घिरयो सिगरो ब्रज आनको आन उपाव विचारै ॥
कोउ न कान्हरके करते वह बैरिन बांसुरिया गहि डारै ॥ ५२ ॥
कौन ठगोरी करी हरी आज बजायके बांसुरिया रसभीनी ॥
कान परी जिनके जिनके तिनही तिन लाज बिदा करदीनी ॥

घूमें खरी खरी नंदके द्वार नवीन कहा कहौं बाल प्रवीनी ॥
या ब्रजमंडलमें रसखान सु कौन भटू जु लटू नहिं कीनी ॥ ५३॥
ए सजनी वह नंदको सांवरो या बन धेनु चरायगयो है ॥
मोहनी तानन गोधन गाय कै बेनु वजाय रिझायगयो है ॥
ताहि घरी कछु टोनो सो कै रसखान हिये में समायगयो है ॥
कोउ न काहूकी कान करै सिगरो ब्रज बीर बिकायगयो है ॥५४॥
मोहनकी मुरली सुनिकै वह बौरी ह्वै आन अटा चढ़ झांकी ॥
गोप बडेनकी दीठ बचाय कै दीठ सों दीठ जुरी दुहुवांकी ॥
देखत मोल भयो अँखियानमें को करै लाज ओ कान कहां की ॥
कैसे छुटाई छुटै अटकी रसखान दुहूंकी विलोकन बांकी ॥ ५५ ॥
बेनु वजावत गोधन गावत ग्वालनके सँगमें इत आयो ॥
बांसुरी के मधि मेरोई नाम लै साथिनके मिस टेर सुनायो ॥
ए सजनी सुन सासके त्रासन नंदन के पास उसासन आयो ॥
कैसी करौं रसखान तहीं हित चैन नहीं चित चोर चुरायो ॥ ५६ ॥
मेरो सुभाव चितैबेको माई री लाल निहार कै वंसी वजाई ॥
वा दिनते मोहिं लाग ठगोरि सी लोग कहैं लख वावरि आई ॥
यों रसखान घिरयो सगरो ब्रज जानत है जियकी जियराई ॥
जो कोउ चाहै भलो अपनो तो सनेह न काहूसों कीजियोमाई॥५७॥
जब कान्ह भये बश बांसुरीके अब कौन सखी हमको चहि है ॥
यह रात दिना सँग लागी रहै यह सौतकि सांसत को सहि है ॥
जिन मोहलियो मन मोहनको रसखान सु क्यों न हमें दहि है ॥
मिल आयो सबै कहिं भाग चलैं अवतो ब्रज में बँसुरी रहि है॥५८॥
सुनरी पिय मोहनकी बतियां अति ढीठ भयो नहिं कान करै ॥
निशि वासर औसर देत नहीं छिनही छिन द्वारेहि आन अरै ॥
निकसो मत नागरी डौंडि वजी ब्रजमंडलमें यह कौन भरै ॥

अब रूपकी रौर परी रसखान रहै तिय कोउ न मांझ घरै ॥५९॥
आयोंहुतो नियरे रसखान कहा कहो तू न गई वहि ठैयां ॥
या ब्रजकी वनिता जिहि देखकै वारहिं प्राणन लेहिं वलैयां ॥
कोउ न काहु की कान करै कछु चेटक सो है करचो यदुरैयां ॥
गायगो तान जमायगो नेह रिझायगो प्राण चरायगो गैयां॥६०॥
हेरत बारहिं बार उतै यह बावरी बाल कहा धौं करैगी ॥
जो कहुँ देखपरचो रसखान तौ क्यों हूं न वीर री धीर धरैगी ॥
मानि है काहूकी कान नहीं जब रूपठगी हारि रंग ढरैगी ॥
याते कहौं शिख मान भटू यह हेरन तेरेइ पैंड परैगी ॥ ६१ ॥
रंग भरो मुसकात लला निकस्यो कल कुंजन ते सुखदाई ॥
मैं तबहीं निकरीं घरते तक नैन विशाल की चोट चलाई ॥
रसखान सो घूम गिरी धरनी हरनी जिमि बान लगे गिरै भाई ॥
टूटि गयो घरको सब बंधन छूटिगो आरज लाज बडाई ॥ ६२ ॥
आज सखी इक गोपकुमारनें रास रच्यो इक गोपके द्वारे ॥
सुंदर बानिक सो रसखान बन्यो वह छोहरा भाग हमारे ॥
ये विधिना जो हमें हँसतीं अब नेक कहूं उतको पग धारे ॥
ताहि बदौं फिरि आवे घरै बिनही तन औ मन जोवन वारे॥६३॥
वह गोधन गावत गोधनमें जब ते यह मारग ह्वै निकस्यो ॥
तबते कुल कान कितीये करों नहीं मानत पापी हियो हुलस्यो
अबतो जु भई सुभई कह होतहै लोग अजान हँस्यो सुहँस्यो ॥
कोउ पीर न जानत जानत सो जिसके हियमें रसखान वस्यो६४॥
आज री नन्दलला निकसो तुलसीवनते बनकै मुसकातो ॥
देखे बनै न बनै कहते कछु सो सुख जो मुखमें न समातो ॥
हों रसखान विलोकबेको कुलकानको काज कियो हिय हातो ॥
आयगई अलबेली अचानक ए भटू लाजको काज कहा तो॥६५॥

समझी न कछू अजहूँ हरि सों व्रज नैन नचाय नचाय हँसै ॥
नित सासकी सीरी उसासनसों दिनही दिन मायकी कांति नसै ॥
चहुँओर बबाकि सों सोर सुने मन मेरेउ आवत रीस कसै ॥
पै मैं कहा कहु वा रसखान विलोक हियो हुलसै हुलसै ॥ ६६ ॥
बाँकी कटाक्ष चितैबो सिख्यो बहुधा बरज्यो हितकै हितकारी ॥
तू अपने ढिगकी रसखान सिखावन दै दिन हौं पचिहारी ॥
कौन सी सीख सिखी सजनी अजहूं तजिदे बलि जावँ तिहारी ॥
नंदननन्दके फंद कहूं परिजैहै अनोखी निहारनहारी ॥ ६७ ॥
पूरब पुण्यनते चितई जिन ये अँखियाँ मुसकान भरी री ॥
कोऊ रही पुतरी सी खरी कोऊ घाट डरी कोउ बाट परी री ॥
जे अपने घरही रसखान कहैं अरु हौंस न आज मरी री ॥
लाजहिं बाल बिहाल करी ते बिहाल करी न निहाल करी री ६८ ॥
बैरिन तैं बरजी न रहै अबहीं घर बाहर बैर बढैगो ॥
टोना सों नंद ढुटोना पढे सजनी तिहि देख विशेष बढैगो ॥
सुनिहै सब गोकुल गांव अरी रसखान जबै सब लोक रढैगो ॥
बैस चढ़े घर ही रह बैठ अटान चढ़े बदनाम चढ़ैगो ॥६९॥
तेरी गलीनमें जा दिन ते निकसे नँदनन्दन गोधन गावत ॥
ये व्रजलोग सों कौनसी बात चलायकै जो नहिं नन चलावत ॥
वे रसखान जो रीझहीं नेक तो रीझकै क्यों न बनाय रिझावत ॥
बावरी जोपै कलंक लग्यो तौ निशंक ह्वै काहे न अंकलगावत ॥७०॥
औचक दीठपरे कहुं कान्हजू तामें कहै ननदी अनुरागी ॥
सो सुन सास रही मुख फेर जिठानी फिरै जियमें रिसपागी ॥
नीके निहार कै देखे न आंखन हौं कबहूं सँग रैन न जागी ॥
है पछितैबो यही सजनी कि कलंक लग्यो पर अंक न लागी ७१॥
कालिह परयो मुरली धुनि में रसखान जु कानन नाम हमारो ॥

ता छिनते नहिं धीर रह्यो जग जान महा मन कीनो पवाँरो॥
गाँवन गाँवन में अवतो वदनाम भई सबसों कै किनारो॥
तौ सजनी फिर फेर कहौं पिय मेरो यही जग ठोक नगारो॥ ७२॥
मो मन मोहनसों मिलिकै मधुरी मुसकान दिखाई दई॥
मोहनी मूरत मैनमई सवहीं चितई हमहूं चितई॥
उनतो अपने अपने घरकी रसखान भलीविधि गैल लई॥
मोहिं को पाप परयो पलमें पग पावक पौंरि पहार भई॥ ७३॥
प्रेमपगे जु रँगे रँग साँवरे मानै मनाये न लालची नैना॥
धावत हैं उतही जित मोहन रोके रुकैं नहिं घूँघट ऐना॥
कानन लौं कल नाहिं परै सखि प्रीतिमें भीजे सुने मृदु वैना॥
रसखानभई मधुकी मखियां अव नेहको वंधन क्योंहूं छुटै ना॥७४॥
नव रंग अनङ्ग भरी छवि सों वह मूरति आँखि गड़ी ही रहै॥
वतियां मनकी मनहीमें रहैं घतियाँ उर वीच अड़ी ही रहै॥
तबहूं रसखान सुजान अली नालिनी जलबून्द पड़ी ही रहै॥
जियकी नहिं जानत हौं सजनी रजनी अँसुवान लड़ी ही रहै७५॥
आवत हैं वनते मनमोहन गोहन संग लसैं व्रजग्वाला॥
वेणु बजावत गावत गीत अमीत इतै करिगो कछु ख्याला॥
हेरत टेर थकी चहुँओर ते झांकि झरोखन ते व्रजवाला॥
देख सु आननके रसखान तज्यो सव द्यौसको ताप कशाला ७६॥
वंशी वजावत आनकढ्यो री गली में छली कछु जादू सी डारे॥
नेक चितै तिरछी कर भौंहें चलोगयो मोहन मूठ सी मारे॥
वाही घरीते परी वह सेज पै वोलै न डोलै है प्राण से वारे॥
जागि है जीहै तो जीहैं सवै नहिं पीहैं सवै विष नंदके द्वारे ७७॥
अंग हीं अंग जराव जरी अरु शीश वनी पगिया जरतारी॥
मोतिन माल हिये लटकैं लटुआ लटकैं सव घूंघरवारी॥

पूरण पुण्यहुँ ते रसखान ये मोहनि मूरत आन निहारी ॥ चारों दिशाको महाअघ हांके जो झांके झरोखे में बांकेविहारी ७८॥

कवित्त ।

मीन मृग खंजन खसान भरे नैन बान अधिक गलान भरे कंज कल तालके ॥ राधे छबिलीके छैल छबिछाके छाक भरे छैल ताके छोरे भरे छबि साथ जाल के ॥ ग्वालकवि आन भरे सान भरे स्यान भरे कछु अलसान भरे भरे मान मालके ॥ लाड भरे लाज भरे लागभरे लोभ भरे लाली भरे लोचन ललौंहे नंद-लालके ॥ ७९ ॥

फूल फूल फूलनके फूल फूल लिये तोड रंग रंग रंगीन की रंगत निहारी है ॥ सूत सूत सूतडोर रेशम रसान भरे गहक गहक गूंध गूंधना निहारी है ॥ ग्वालकवि सौरभ समुद्र ते निकाली मानो ललित ललाई कोमलाई बेकरारी है ॥ बानक विशाल वारों मोतिन की माल जापै ऐसी वनमाला नंदलाल हिये धारी है ॥ ८० ॥

पीरे बन बाग अनुराग भरे भाग भरे अंग अंग रंगकी उमंग मन पैठे हैं ॥ पीरे पीरे हिये पर पीरे ही वसन सने पीरे ही रतन तन अतन अमैठे हैं ॥ ग्वालकवि पीरे गोले गेंदुवा पलंग पीरे पीरे पान चावें पीरे हार हार ऐंठे हैं ॥ है नई वसंत ह्वै वसंत रही राधि-काके दोऊ पां वसंत में वसंत बन बैठे हैं ॥ ८१ ॥

सुंदर पलास अरु सुंदर अँध्यारे वन फूली फूली बेल जाकी छावि लागै खासी है ॥ कोकिला की कूक तेरी वानी में पिछानी जात भौंरन की मांग आछी श्यामता प्रकासी है ॥ वन उपवन में मयंककी सी शोभा देत चांदनी प्रत्यच्छ मानो नीकी छविरासी है ॥ रीस तेरी करबे को आई है वसंत ऋतु तू तो है वसंत ये वसंत तेरी दासी है ॥ ८२ ॥

वसी रहै शशिछवि ज्यों मन चकोरनके अति मति मालती सुमनमें वसी रहै ॥ वसी रहै गज मन रेवाकींच अरु रेणु मोरनकी रुचि घनाघन मे बसी रहै ॥ वसी रहै श्रीपतिसदन कमलाजू जैसे लोभी मन रुचि चित्त धनमें बसी रहै ॥ बसी रहै त्योंहीं तेरे छविं की लगन कृष्ण मूरति तिहारी मेरे मन में बसी रहै ॥ ८३ ॥

सवैया ।

सोई है रासमें नेकुसु नाचिके नाच नचाये कितै सवको जिन॥
सोई है री रसखान इहै मनुहारहु सूधे चितौत नहीं छिन ॥
तो मैं धौं कौन मनोहर भाव विलोकि भयो वश हाहा करी तिन ॥
औसर ऐसो मिलै न मिलै फिर लंगर मोड़ो कनोड़ो करै किन८४॥
बारहिं गोरस बेंच री आज तू मायके मूड चढै कित मोडी ॥
आवत जात लौं होयगी साँझ भटू यमुना भतरौंड़ लौं औंडी ॥
एतेमें भेटत ही रसखान ह्वैहैं अँखियां बिन काज कनौंडी ॥
एरी बलाय ल्यों जायगी बाज अवै ब्रजराजसनेहकी डौंडी ८५॥
मोरकी चंद्रिका मोर लसैं दिन दूलह है आलि नंदको नंदन ॥
श्रीवृषभानुसुता दुलही लही जोरी बनी विधिना सुखकंदन ॥
रसखान न आवत मोपै कह्यो कछु दोऊ फँदे छवि प्रेम के फंदन ॥
जाहि विलोके सभी सुख पावत ये ब्रजजीवन दुःखनिकंदन॥८६॥
आज अचानक राधिका रूपनिधानसों भेंट भई बनमाह़॥
देखत दीठ जुरी रसखान मिले भर अंक दिये गलबाहीं ॥
प्रेमपगी बतियां दुहुँवांकी दुहूँको लगी अतिही चित चाहीं ॥
मोहनीमंत्र वशाकर तंत्र हाहा पियकी तियकी नहिं नाहीं ॥८७॥
लाड़िली लाल लसैं लखिये अलिपुंजन कुंजनमें छवि गाढ़ी ॥
ऊजरी ज्यों बिजरी सी जुरी चहुँ गूजरी केलिकला सम काढ़ी ॥
त्यों रसखान न जान परे सुखमा तिहुँ लोकनकी अति वाढ़ी ॥

लालन वाल लिये विहरैं छहरैं शिर मोरपखी ठग ठाढ़ी ॥ ८८॥
दृग दूने खिंचे रहैं कानन लौं लट आनन पै लहराय रही ॥
छक छैल छबीली छटा छहरायकै कौतुक कोटि देखाय रही ॥
झुक झूम झमाकन चूम अमी चहि चाँदनि चंद दुराय रही ॥
मन भाय रही रसखान महा लखि मोहनकी तरसाय रही ॥८९॥
जात हुती जमुना जलको मनमोहन घेरलियो मग आयकै ॥
मोद भरे लपटाय गयो पट घूँगट टार दियो चित चायकै ॥
और कहा रसखान कहौं मुख चूमत घात न वात बनायकै ॥
कौन निभै कुलकान लिये हिये सांवरिमूरतिकी छबिछायकै॥९०॥
मोहनके मन भायगयो इकभाव सों ग्वालिन गोधन लायो ॥
ताते लग्यो चट चौहन सों हरवाय दै गात सों गात छुवायो ॥
रसखान लही यह चातुरता चुपचाप रही जबलौं घर आयो ॥
नैन नचाय चितै मुसकाय सु ओट ह्वैजाय अँगूठे दिखायो॥९१॥

कवित्त।

एरी आज कालिह सब लोक लाज त्यागि दोऊ सीखेहैं सबै विधि सनेह सरसायबो॥ यह रसखान दिन द्वै में वात फैल जैहै कहांलौं सयानी चन्द हाथन छिपायवो ॥ आज हौं निहारयो बीर निपट कलिंदी तीर दोउन को दोउन सों मुख मुसकायवो ॥ दोउ परें पैयां दोउ लेत हैं वलैयां उन्हें भूल गई गैयां उन्हें गागर उठायवो ॥ ९२ ॥

सवैया।

एक समै जमुनाजलमें सव मज्जन हेत धसीं व्रज गोरी ॥
त्यों रसखान गयो मनमोहन लैकर चीर कदम्ब की छोरी ॥
न्हाय जबै निकसीं वनिता चहुँओर चितैं चित रोप करयो री ॥
हार हियो भर भावन सों पट दीने लला वचनामृत वोरी ॥ ९३ ॥

नागर छैल ह्वै गोकुल में मग रोकत संग सखा लिये तै हैं ॥
जाहिन ताहि दिखावत आँख सु कौन गई अब तोसों करैहै ॥
हाँसीमें हार हर्यो रसखान सु जो कहुँ नेक तगा टुटिजैहै ॥
एकहि मोतीके मोल लला सिगरे ब्रज हाटही हाट विकैहै ॥ ९४ ॥
क्षीर जु चाहत चीर गहै अजु लेहु न केतक क्षीर अँचैहो ॥
चाखन के हित माखन मांगत खाहु न माखन केतिक खैहो ॥
जानंत हौं जियकी रसखान सु काहेको एतिक बात बढ़ैहो ॥
गोरसके मिस जो रस चाहत सो रस कान्हजू नेक न पैहो॥९५॥
दानी भये नये मांगत दान सुने जु पै कंस तो बांधे न जैहो ॥
रोकत हौ मगमें रसखान पसारत हाथ कछू नहिं पैहो ॥
टूटैं छरा बछरा अरु गोधन जो धन है सु सबै घर दैहो ॥
जैहै अभूषण काहू सखीको तौ मोल छलाके लला न विकैहौ॥९६॥

भजन।

राग विहाग।

कर मन नन्दनँदन को ध्यान। यह अवसर तोहिं फिर न मिलैगो मेरो कह्यो अब मान ॥ घूँघरवारी अलकैं मुखपर कुंडल झलकत कान। नारायण अलसाने नयना झूमत रूपनिधान॥९७॥

राग जंगला।

आज महरि घर देउ री बधाई। शुभ लक्षण सुन्दर सुत जायो बड़ भागिन है यशुमति माई ॥ वृद्ध वधू सब जुर मिल आई यथा योग कुल रीति कराई। दान मान विप्रनको दीनो मणि मुक्ता पट भूषण ताई । मृगनयनी कल कोकिल वयनी कर शृङ्गार बैठीं अँगनाई ॥ लैलै नाम नन्द यशुमतिको गावत गारी परम सुहाई ॥ ध्वज पताक तोरण मणि [illegible] बँधाई । नारायण व्रज आनँद [illegible] भय [illegible] ।९८॥

राग भैरव।

आज सखी प्रातकाल दृग मींडत जगे लाल रूपके विशाल सिंधु गुणनके जहाज। कुण्डलसों उरझी माल मुखपर अलकन को जाल भई मैं निहाल निरख शोभाकी समाज॥ आलस वश झुकत ग्रीव कबहूं अँगडाई लेत उपमा सम देत मोहिं आवत है लाज। नारायण यशुमति ढिग हौं तो गई बात कहन याहीमें भये री एक पंथ दोउ काज॥ ९९॥

राग देश।

कैसे जाउँ री वीर घट भरवे नीर। ठाढो यमुना तीर साँवरो अहीर मारे दृगों के तीर हरे सुध शरीर॥ नित यही चितमें चिंता समाज ब्रजराज सों कैसे बचैगी लाज जियाकांपै आजनहीं धरत धीर। वाको रूप है कै कोऊ जादू यंत्र कैधों नारायण वशीकरण मंत्र कैधों तंत्र कै पल ही में करै फकीर॥ १००॥

राग झंझोटी।

जिन मग रोंको नंदकिशोर। तोहिं उरझनकी बानपरीहै सांझ तकत नहिं भोर॥ देर लगत मोहिं सास रिसावे तुम्हें छैल नित रार सुहावै इन कुचाल कछु हाथ न आवै गागरिया दई फोर। तुम अति चंचल छैल विहारी कैसे कूख रखे महतारी यह अचरज मोको है भारी नर घर तेरो शोर॥ नारायण अब क्यों इतरावो भई सो भई न बातबढ़ावो ताहीको तुम आँख दिखावो जो होय तेरी बँदोर॥ १०१॥

राग बरवा।

आप भले गुणवान बनो तुम औरन को अति खोट बतावो॥ माखनचोर कहावत हो नित तौऊ नहीं मन माहिं लजावो॥ रत्न

जडे आभूपण पहरे छाँछ लियें करको फैलावो ॥ नारायण सब लोग हँसेंगे प्रथम उतार इन्हें घर आवो ॥ १०२ ॥

राग मलार।

क्योंरे छैल मेरी मट्ठुकिया पटकी। करके ढिठाई मग दधि बिखराई सब चूरी मुरकाई सुकुमार वैयां झटकी॥ अबहीं यशोदा-ढिग पकर लै जाऊं तोहिं एक न सुनूंगी तेरी बात नटखट की॥ बदलो लेउँगी न डरूंगी नारायण कौनसी गरज मेरी तोसों अब अटकी॥ १०३॥

राग खम्माच।

प्रीतम तुम मोहिं प्राण ते प्यारो। जो तोहिं देख हिये सुख पावत सो बड़ भागिन वारो॥ तुम जीवन धन सरवस तुमहीं तुमहीं दृगनके तारो। जो तुमको पलभर न निहारूं दीखत जग अँधियारो॥ मोद बढ़ावनके कारण हम माननी रूपको धारो। नारायण हम दोऊ एक हैं फूल सुगंधि न न्यारो॥ १०४॥

राग देश।

सखि जबसों नँदलाल निहारे। तबहीं सों बौरी भई डोलूं इत उत गली गिरारे॥ शीश मुकुट शिरपेंच रतनको लसत बार घुँघरारे। खंजन नयन मैन मद गंजन अंजन रेख समारे॥ कुंडल लोल कपोल मनोहर कोटि भानु उजियारे। मानो रूपसिंधु में खेलत मकरन के द्वै बारे॥ मंद हँसन मुख श्याम बरन छवि शशि मनोज लख हारे। दशन पाँति ज्यों मुतियनकी लर अधर सोहें अरुणारे॥ नाक बुलाक कुटिल वर भ्रुकुटी वचन रचन अति प्यारे। नारायण नख शिख शृंगार कर ठाढ़े भवनके द्वारे॥ १०५॥

राग सोरठ।

जाहि लगन लगै घनश्याम की। धरत कहूं पग परत हैं कितहूं भूल जाय सुध धाम की॥ छबि निहार नहिं रहत सार कछु घरी पल निशि दिन याम की। जित मुँह उठै तितैही धावै सुरति न छाया घामकी॥ कोई करो निंदा कोई स्तुति मेड़ तजी कुल ग्राम-की। नारायण बौरी भई डोलै रहै न काहू काम की॥ १०६॥

राग काफी।

यह नैना रिझवार नये री। एक बेर लख रूप श्यामको तज घर-बार फकीर भये री॥ अब देखे बिन डारत आँसू युग समान पल बीत गये री। नारायण येहू अति चंचल फल पाये जो बीज बये री॥ १०७॥

राग भैरवी।

अब मैं कैसे कहूंरी बीर। हौं तो घनो चाहूँ न करूं सुध मन तो धरत न धीर॥ जो घायल उन नयन बानके सो जानत यह पीर। नारायण करगयो बावरी सुन्दर श्याम शरीर॥ १०८॥

राग परज।

अब नन्द भवनमें चलोरी बीर। साँवरे कन्हाई बिन कल न परत घरी पल छिन मन न धरत है धीर॥ हग अति अंकुलावें नहिं पलक लगावें पुनि उतही को धावें परी इनपै भीर। तनु सुरत बिसारी लगी चटपटी भारी नारायण हमारी को जानत पीर॥ १०९॥

राग खट।

एक सखी उठ बड़े भोरही नन्दरायके भवनगई। ताही समय जगे मनमोहन आलसवश मुखकांति नई॥ नैन उनींदे झूमत पलकें शिथिल वचन अति मोद मई। नारायण यह छवि लख ग्वालिन मानो भीतको चित्र भई॥ ११०॥

देख सखी नव छैल छबीलो प्रात समै इतसों को आवे। कमल समान बड़े दृग जाके श्याम सलोने मृदु मुसक्यावे ॥ जाकी सुन्दरता जग वरणत मुख शोभा लख चन्द्र लजावै । नारायण यह किधों वही है जो यशुमतिको कुँवर कहावे ॥ १११ ॥

राग विभास।

यही मोहन जिन मोही व्रजवाला। गजगति चलत वजत पग नूपुर उर सोहै वनमाला ॥कमल फिरावत मृदु मुसक्यावत बोलत वचन रसाला । श्याम वरन लख लजत नीलमणि पंकज मेघ तमाला ॥ नैन सैन कर हरत मैन मन मुख द्युति चन्द विशाला। नारायण प्रगट्यो जादूगर नन्दरायको लाला ॥ ११२ ॥

राग भैरव।

आज सखी प्रातकाल मेरे गृह आये लाल भई मैं निहाल वाके रूपको निहार री। पूरण शशि सम कपोल तिनपै कुंडल किलोल मधुर मधुर सुनके बोल रही ना सँभार री॥ नाकमें बुलाक सोहै चितवन चितहीको मोहै अद्भुत शृंगार चरण नूपुर झनकार री। नारायण हौं तो उठी मिलन इतसों आई लाज मनकी मनहीमें रही कर नसकी प्यार री ॥ ११३ ॥

राग आसावरी।

सखी मेरे मनकी को जाने। कासों कहूं सुनै जो चितदे हितकी वात वखाने ॥ऐसो को है अन्तर्यामी तुरत पीर पहिचाने । नारायण जो वीत रही है कब कोई सच माने ॥ ११४ ॥

राग सोरठ।

मनमोहन जाकी दृष्टि परत ताकी गति होतहै और और । न सुहात भवन तन अशन वसन वनहीको धावत दौर दौर ॥ नहीं

धरत धीर हिय विरह पीर व्याकुल भई भटकत ठौर ठौर ॥ कब अँसुवन भर नारायण मग झाँकत डोलत पौर पौर ॥ ११५ ॥

राग झंझोटी ।

साँवरे क्यों मोसों रिस मानी । तेरे काज घर बार त्याग के गलियन फिरत दिवानी ॥ लोकलाज कुल रीति प्रीत जग इनहुं को दियो पानी । नारायण अब तो हँस चितवो एरे रूप गुमानी ॥ ११६ ॥

राग काफी ।

लाल तेरे जादूभरे दोउ नैन । चितवन में चित वश कर लेवें मोहनी मन्त्र है सैन ॥ अति बाँके सुन्दर मतवारे अनियारे छवि ऐन ॥ नारायण इनके बिन देखे पल छिन परत न चैन ॥ ११७ ॥

राग कालिंगड़ा ।

सखी तबसों चैन नहिं आव । जबसों मैं निरख्यो नँदलाल गल मुतियन माल सुहावै ॥ घुँघरारी अलकैं मुख राज कोटि मदन दृग छबि लखि लाजैं कुण्डल हलन चलन श्रवणन में वंसी मधुर बजावै । सुध बुध हरन वचन हँस बोलै चाल मराल इतै उत डोलै बजत चरन छम छननन नूपुर ताहू पर मुसक्यावै ॥ कर कंकन पहुँची मणि झलकैं देख स्वरूप लगत नहिं पलकैं नारायण बेसर को मोती लटकत हिये समावै ॥ ११८ ॥

सखि यह दृग वा रूप लुभाने । मचल रहे शशि मुख निरखन को जा विधि बाल अयाने ॥ लोकलाज कुलधर्म खिलौना दिये तऊ नहिं माने । नारायण सोऊ हन फोरे ऐसे निडर सयाने ॥ ११९ ॥

राग झिंझोटी।

श्याम दृगनकी चोट बुरी री । ज्यों ज्यों नाम लेत तुम वाको मो घायल पै नौंन पुरी री ॥ न जानूं अब सुध बुध मेरी कौन विपिनमें जाय दुरी री । नारायण नहिं छूटत सजनी जाकी जासों प्रीति जुरी री ॥ १२० ॥

राग ईमन दादरा।

लगन नहीं छूटे एरी वीर । ताने देह भले नाम धरो चाहे कोटि करो तदवीर ॥ छिनमें करत चतुरको बौरा नृपको करत फकीर। नारायण अब कठिन है बचबो बिंधे हिये दृग तीर ॥ १२१ ॥

मोपै कैसी यह मोहन डारी। चितचोर छैल गिरिधारी ॥ गृह कारज में जी न लगतहै खान पान लगै खारी । निपट उदास रहत हूं जबसों सुरत देखि तिहारी॥ संगकी सखी देत मोहिं धीरज वचन कहत हितकारी। एक न लगत कही काहूकी कहत कहत सब हारी ॥ रही न लाज सकुच गुरुजनकी तन मन सुरति बिसारी । नारायण मोहिं समझ बावरी हँसत सकलनरनारी ॥ १२२॥

राग सोरठ।

सखी री यह मेरो चित चोर। भृकुटी कुटिल बंक अवलोकन सुन्दर नवल किशोर ॥ गैल चलतमें सहजहि निरखी या छलिया की ओर। नारायण जानै कहा कीयो इन लख नैनन कोर॥ १२३॥

मोहन बसगये मेरे मनमें ॥ लोकलाज कुलकान छूटगई इनकी लगन लगन में । जित देखूं तितही यहि दीखे घर बाहर आँगन में । अंगअंग प्रति रोम रोममें छाय रहे सब तन में ॥ कुण्डल झलक कपोलन सोहै बाजूबंद भुजनमें । कंकन कलित ललित मणिमाला नूपुर धुन चरणन में ॥ चपल नयन भृकुटी वर बाँकी

ठाढे सघन लतनमें । नारायण बिन मोल बिकी मैं इनकी नेक हँसन में ॥ १२४ ॥

राग झँझोटी ।

ये दोऊ झूलें री मनकी मोहन हार । सजनी री इक साँवरे रंग की सँग वृषभानु कुमार ॥ सावन मास सुहावन भावन फूल रही फुलवार । रेशम डोर जड़ाऊ पटली सघन कदमकीडार ॥ गरजत घन चमकतहै चपला बूँदन परत फुहार । ठौर ठौर मिल मोर नचत हैं या सुखको नहिं पार ॥ भाँति भाँति के पक्षी बोलें शीतल चलत बयार । फूले कमल सरोवर माहीं भ्रमर करत गुंजार ॥ चहूं ओर छाई हरियाली अद्भुत विपिन बहार । लिपट रहीं बर वेलि द्रुमनसों हरषत युगल निहार ॥ बरन बरनके लाल सोसनी सखियन किये शृंगार। विविध प्रकार बजावत बाजे गावत राग मलार ॥ चतुर सखी इक जान गई तब उरसों चीर उघार । हँस हँस परत लखावत औरन यह लंगर छलवार ॥ ललिता कहै इन नहिं व्यापै तनक लाज संसार । पल पल माहिं स्वांगधर आवत कभूँ पुरुष कभूँ नार ॥ नारायण बोली प्रीतमसा कीरति प्राण अधार । वनिता वेष उतार आपनो रूप लियो निज धार ॥ १२५ ॥

राग मलार ।

सखी री यह सावन मनभावन । चातक मोर चकोर कोकिला बोलत वचन सुहावन ॥ गरजत वन घन घननन घननन कर लगे मेह बरसावन । नारायण भीजत मेरे गृह श्याम सुँदरको आवन ॥ १२६ ॥

राग जंगला ।

आवो री यह शोभा निहारें । नन्दलाल वृषभानु नन्दनी झूल रहे गरवयां डारें ॥ परत फुहार विपिन हरियाली वन पक्षी मृदु

वचन उचारें । अति निर्मल जल भरे सरोवर फूले कमल भ्रमर गुंजारें ॥ पवन झकोर उडत प्रिय को पट झट प्रीतम निज हाथ सँभारें ॥ नारायण इनकी या छवि पै आज सखी हम सरवस वारें ॥ १२७ ॥

राग कान्हरो ।

आज वंशीवट वरसत रंग । यमुना तीर समीर सुहावत वोलत विविध विहंग ॥ कीरत कुँवर लाल नन्दजीको झूल रहे इक संग। रूपसिंधुके अंग अंगते छविकी उठत तरंग । बजत वीन ताऊस सरंगी वंशी झांझ मृदंग । नारायण गावत मिल सजनी हियमें बढत उमंग ॥ १२८ ॥

राग मलार ।

सघन वन झूलें दोउ सुकुमार । हिय हरषत छवि निरख परस्पर छिन छिन बाढत प्यार ॥ कवहुँ मुदित मन तान लेत मिल होत सखी वलिहार । नारायण द्रुम वेलि सुहावन हरो कियो शृंगार ॥ १२९ ॥

राग काफी ।

गोरी कुंजनमें आज होरी मची तू कहा वैठी मांग सँवारे। मेरी कही जो सांच न मानै सुनलै डफ धुधकारे ॥ उठ सजनी चल फाग खेल ले प्रीतम तोहिं पुकारे । नारायण तव वात है तेरी तू जीतै पिय हारे ॥ १३० ॥

पिय प्यारी आज होरी खेलत यमुना तीर । हँस हँस वदन अरगजा डारत मारत मूठ अवीर॥ चलत कुमकुमा रंग पिचकारी भीज रहे तनु चीर । जनु घन दामिनि रूप धरे हैं गोरे श्याम शरीर ॥ वजत अनेक भांति मृदु वाजे होय रही अति भीर । नारायण या सुख निरखे विन कौन धरे मनधीर ॥ १३१ ॥

देख सखी वृषभानु किशोरी । निज प्रीतमको रूप निहारत जा विध चंद चकोरी ॥ भलौ फाग खेलन को निकसी बीच भई चित चोरी । नारायण अटके दृग छविमें भूल गई सुधिहोरी ॥ १३२ ॥

राग झंझोटी ।

आज श्याम मग धूम मचाई । धूम मचाई करत ढिठाई ॥ बिन रँग डारे देत नहिं निकसन मैं तेरीसों देखके आई । तू कहूं भूलके मत उत जैयो जाने कहा वह करे लँगराई ॥ नारायण होरीके दिननमें अपने ही हाथ है अपनी बड़ाई ॥ १३३ ॥

राग काफी ।

मति मारो पिचकारी श्याम अब देउँगी मैं गारी । भीजैगी लाल नई मेरी अँगिया चूंदर विगरैगी न्यारी ॥ देखेगी सास रिसायगी मोपै संगकी ऐसी हैं दारी ॥ हँसेंगी दैदै तारी ॥ घाट बाट सबसों अटकत हो लैलै रारि उधारी ॥ कहांलों तेरी कुचाल कहूं मैं एक एक ब्रजनारी ॥ जानत करतूत तिहारी ॥ मूठ अबीर न डारो दृगनमें दूखेगी आंख हमारी ॥ नारायण न वहुत इतरावो छांडो डगर गिरिधारी ॥ नये भये तुमहीं खिलारी ॥ १३४॥

राग होरी काफी ।

होरी हो ब्रजराज दुलारे । अब क्यों जाय छिपे जननी ढिग रे द्वै बापन वारे ॥ कै तो निकसके होरी खेलो कै मुखसों कहो हारे ॥ जोर कर आगे हमारे ॥ वहुत दिननसों तुम मनमोहन फागहिं फाग पुकारे ॥ आज देखियो सैल फागकी पिचकारिनके फुहारे ॥ चलें जब कुमकुमा न्यारे ॥ निपट अनीति उठाई तुमने रोकत गैल गिरारे ॥ नारायण सव खवर परैगी नेक तो आयके द्वारे ॥ सुरति अपनी तू दिखारे ॥ १३५ ॥

राग कान्हरो ।

नंदनँदन के ऐसे नैन । अति छविभरे नागके छौंना तुरत डसैं कर सैन ॥ इन सम सांवरि मंत्र न होई जादू यंत्र तंत्र नहिं कोई एक दृष्टिमें मन हर लेवें कर देवें वेचैन ॥ चितवनमें घायल कर डारें इनपै कोटि वाण लै वारें अति पैने तिरछे हिय कसकैं श्वास न देवें लैन ॥ चंचल चपल मनोहर कारे खंजन मीन लजावनहारे नारायण सुंदर मतवारे अनियारे खुखदैन ॥१२६॥

राग मलार ।

मनमोहन सम सुंदर को है । मैं अपने अनुमान कहूं अत्र उनकी पटतर और न सोहै ॥ चितवन चपल रूप उजियारो जाको मुख नित चंद हू जोहै । नारायण जो एक दृष्टिमें सुर नर नाग सकल को मोहै ॥ १२७ ॥

राग जैजैवंती ।

आज सखी प्रीतम जो पाऊं तो अपने वड़भाग मनाऊं । सांवरी सूरत नैन विशाला चंद वदन गल मुतियन माला रूप मनोहर चाल मराला सुंदरता पर वलि वलि जाऊं ॥ जो प्यारो इन गलियन आवै मो विरहनको दरश दिखावै वठ निकट मृदु वचन सुनावै मैं उनको हँस कंठ लगाऊं । नारायण जीवन गिरिधारी कव लैंगे सुध आय हमारी जव मोसों वो कहेंगे प्यारी तव मैं फूली अँग न समाऊं ॥ १२८ ॥

राग नायकी कान्हरा ।

आज रचो रसरास विहारी। जैसोइ वृन्दा विपिन सुहावन तैसिही शरद रैन उजियारी ॥ यमुना तीर पुलिनकी शोभा फूल रही चहुँ दिशि फुलवारी । चलत पवन मन मोद वढावन शीतल मन्द

सुगंधित प्यारी ॥ निरतत लाल सहित व्रजबाला चपल चतुर गति लै लै न्यारी । बजत अनेक भांति मृदु बाजे परमप्रवीन बजावत वारी ॥ कोऊ सखी स्वर दुगन अलापत करत बड़ाइ लाल गिरिधारी । नाचत सुमन झरत हैं शीशतें मुख श्रमबिंदु देत छबि न्यारी ॥ कबहूं श्याम बिलम ह्वै नाचत ताल देत मिल गोप कुमारी । नारायण नभते सुर निरखत वर्षत फूल सहित निज नारी ॥ १३९ ॥

राग भैरव।

बंशीवट जमुना तट निरतत बनवारी । अति सुगंध मंद मंद पवन चलत प्यारी ॥ चन्दवदन श्याम रसिक मुकुट चन्द शीश लसत चन्द्रमुखी प्रिया शरद चाँदकी उजारी । बाजे बाजत बिशाल गति मति सुर अधिक ताल रागरंग विविध भांति नूपुर धुन न्यारी । नारायण शिव सुजान गोपिकाको वेष ठान निर-ख निरख नृत्य गान भये चित्रकारी ॥ १४० ॥

राग जोगिया।

आज सखी सुपनों में देखो रैन । जवहीं सों जिय भई अति व्याकुल पल छिन परत न चैन ॥ श्याम वरण इक पुरुष मनोहर नव जोवन छवि ऐन । शीश मुकुट कुंडल गल माला सुन्दर वांके नैन ॥ मैं उनसों कछु कहन न पाई सुने न उनके वैन । नारायण तब आंख उघर गई ना कछु लैन न दैन ॥ १४१ ॥

सवैया।

मानकी औधिहै आधी घरी अरु जो रसखानि डरै डरके डर ॥
तोरिये नेह न छोडिये पां परों ऐसे कटाक्ष महा हियरो हर ॥

राग कान्हरो ।

नंदनँदन के ऐसे नैन । अति छबिभरे नागके छौना तुरत डसें कर सैन ॥ इन सम सांवरि मंत्र न होई जादू यंत्र तंत्र नहिं कोई एक दृष्टिमें मन हर लेवें कर देवें बेचैन ॥ चितवनमें घायल कर डारें इनपै कोटि बाण लै वारें अति पैने तिरछे हिय कसकैं श्वास न देवें लैन ॥ चंचल चपल मनोहर कारे खंजन मीन लजावनहारे नारायण सुंदर मतवारे अनियारे सुखदैन ॥१३६॥

राग मलार ।

मनमोहन सम सुंदर को है । मैं अपने अनुमान कहूं अब उनकी पटतर और न सोहै ॥ चितवन चपल रूप उजियारो जाको मुख नित चंद हू जोहै । नारायण जो एक दृष्टिमें सुर नर नाग सकल को मोहै ॥ १३७ ॥

राग जैजैवंती ।

आज सखी प्रीतम जो पाऊं तो अपने बड़भाग मनाऊं । सांवरी मूरत नैन विशाला चंद बदन गल मुतियन माला रूप मनोहर चाल मराला सुंदरता पर बलि बलि जाऊं ॥ जो प्यारो इन गलियन आवै मो बिरहनको दरश दिखावै बठ निकट मृदु वचन सुनावै मैं उनको हँस कंठ लगाऊं । नारायण जीवन गिरिधारी कब लैंगे सुध आय हमारी जब मोसों वो कहैंगे प्यारी तब मैं फूली अँग न समाऊं ॥ १३८ ॥

राग नायकी कान्हरा ।

आज रचो रसरास बिहारी। जैसोइ वृन्दा विपिन सुहावन तैसिही शरद रैन उजियारी ॥ यमुना तीर पुलिनकी शोभा फूल रही चहुँ दिशि फुलवारी । चलत पवन मन मोद बढावन शीतल मन्द

सुगंधित प्यारी ॥ निरतत लाल सहित ब्रजबाला चपल चतुर गति लै लै न्यारी। बजत अनेक भांति मृदु बाजे परमप्रवीन बजावत वारी ॥ कोऊ सखी स्वर दुगन अलापत करत बड़ाइ लाल गिरिधारी। नाचत सुमन झरत हैं शीशतें मुख श्रमबिंदु देत छबि न्यारी ॥ कबहूं श्याम बिलम ह्वै नाचत ताल देत मिल गोप कुमारी। नारायण नभते सुर निरखत वर्षत फूल सहित निज नारी ॥ १३९ ॥

राग भैरव।

बंशीबट जमुना तट निरतत बनवारी। अति सुगंध मंद मंद पवन चलत प्यारी ॥ चन्दवदन श्याम रसिक मुकुट चन्द शीश लसत चन्द्रमुखी प्रिया शरद चाँदकी उजारी। बाजे बाजत बिशाल गति मति सुर अधिक ताल रागरंग विविध भांति नूपुर धुन न्यारी। नारायण शिव सुजान गोपिकाको वेष ठान निरख निरख नृत्य गान भये चित्रकारी ॥ १४० ॥

राग जोगिया।

आज सखी सुपनों मैं देखो रैन। जबहीं सों जिय भई अति व्याकुल पल छिन परत न चैन ॥ श्याम वरण इक पुरुष मनोहर नव जोवन छवि ऐन। शीश मुकुट कुंडल गल माला सुन्दर वांके नैन ॥ मैं उनसों कछु कहन न पाई सुने न उनके वैन। नारायण तब आंख उघर गई ना कछु लैन न दैन ॥ १४१ ॥

सवैया।

मानकी औधिहै आधी घरी अरु जो रसखानि डरै डरके डर ॥
तोरिये नेह न छोडिये पां परों ऐसे कटाक्ष महा हियरो हर ॥

लाल गुपालको हाल बिलोक री नेक छुवै किन द्वै करसों कर ॥
ना कहबेपर वारत प्राण कहा लख वारिहै हां कहिये पर ॥१४२॥
वह साँवरो नन्दको छैल अली अब तो अतिही इतरान लगो ॥
नित घाटन बाटन कुंजनमें मोहिं देखतही नियरान लगो ॥
रसखान बखान कहा कहिये तक सैननसों मुसकान लगो ॥
तिरछी बरछी सम मारतहै दृगबान कमान सु कान लगो ॥१४३॥
आई सबै व्रज गोप लली ठिठकी ह्वै गली यमुना जल न्हानें ॥
औचक आय मिले रसखान बजावत वेणु सुनावत तानें ॥
हाहाकरी सिसकीं सिगरी मति मैन हरी हियरा हुलसानें ॥
घूमें दिमाने अमाने चकोरसे ओरसे दोऊ चलैं दृग बानें ॥१४४॥
मोरपखा शिर ऊपर राखिकै गुंजकी माल हिये पहरौंगी ॥
ओढ पिताम्बर लै लकुटी बन गावत गोधन संग फिरौंगी ॥
भावतो मोहिं वही रसखान सों तेरे कहे सब स्वांग करौंगी ॥
ये मुरली मुरलीधरकी अधरान धरी अधरान धरौंगी॥ १४५ ॥
को रिझवारिन सों रसखान कहै मुकतान सों मांग भरौंगी ॥
कोऊ कहे गहनों अँग अंग दुकूल सुगंध सन्यो पहरौंगी ॥
तू न कहै यों कहै तौ कहैं हूं कहूं न कहूं तेरे पाँय परौंगी ॥
देखहुयाहिसुफूलकी माल यशोमतिलाल निहाल करौंगी ॥१४६॥
लीने अबीर भरे पिचका रसखान खरो बहु भाव भरो जू ॥
मार से गोपकुमार कुमार वे देखत ध्यान टरौ न टरौ जू ॥
पूरब पुण्यन दांव पर्यो अब राज करो उठ काज करो जू ॥
अङ्क भरो निश्शंक उन्हें यहि पाख पातिव्रत ताख धरो जू ॥१४७॥

कवित्त ।

गोकुलको ग्वाल एक चौमुँहकी ग्वालिन सों चांचारि रचाई अति धूमहिं मचायगो । हियो हुलसाय रसखान तान गाय

वाके सहज सुभाय सब गांव ललचायगो ॥ पिचका चलाय सब युवती भिजाय लोल लोचन नचाय उरपुरमें समायगो ॥ सास हितचाय गोरी नंदहि नचाय मोरी वैरिन संचाय गोरी मोहिं सकुचायगो ॥ १४८ ॥

सवैया ।

एक समै इक सुंदरिको ब्रजजीवन खेलत दीठि परयो है ॥
बाल प्रवीन प्रवीनता के सरकायके कांधले चीर धरयो है ॥
यों रस ही रस ही रसखान सखी अपनो मनभायो करयो है ॥
नन्दके लाडिले ढांकद शीश हहा मेरो गोरस हाथ भरयो है ॥२४९॥
दूर ते आय दुरे ही दिखाय अटा चढ जाय गह्यो तहँ बारो ॥
चित्त कहूं चितवै कितहू हित और सों चाहि करै चखचारो ॥
रसखान कहै इहि बीच अचानक जाय सिढी चढ सास पुकारो ॥
सूख गई सुकुमारहियो हानि सैननसों कह्यो कान्ह सिधारो ॥१५०॥

कवित्त ।

आपनो सो ढोटा हम सबहीको जानतैं दोऊ प्राणी सबही के काज नित धावहीं ॥ तेतो रसखान सब दूर ते तमासो देखें तरनि तनूजाके निकट हु न आवहीं ॥ आन दिन बात अनहितु न की कहौं कहा हितू जेजे आये तेऊ लोचन दुरावहीं ॥ कहा कहौं आली खाली देत सब ठाली हाय मेरे बनमालीको न कालीते छुडावहीं ॥ १५१ ॥

सवैया ।

लोग कहैं ब्रजके रसखान अनंदित नन्द यशोमति जू पर ॥
छोहरा आज नयो जनम्यो तुम सों कोउ भाग भरयो नहीं भू पर ॥
वारक दाम सँवार करौ घनी पाना पियौ सु उतार ललू पर ॥
नाचतरावरोलाल गुपालहो कालसेव्याल कपालके ऊपर ॥१५२॥

कंसके कोपकी फैल गई जबहीं ब्रजमंडल बीच पुकार है ॥
आय गयो तबहीं कछनी कसिकै नटनागर नन्दकुमार है ॥
ढ़ैरदको रद खैंच लियो रसखान तवै मन आयो विचार है ॥
लागी कुठौर लइ लख ऐंच कलंक तमाल ते कीरति डारहै ॥ १५३ ॥
लाजके लेप चढायकै अंग पचीं सब सीखको मंत्र सुनाय कै ॥
गारुड़ है ब्रज लोग थक्यो कर औषध वासुक सौंह दिवायकै ॥
ऊधो सों को रसखान कहै जिन चित्त धरौं तुम एते उपायक ॥
कारेबिसारेकोचाहैउतारचो अरी विष बावरो रावलगायकै ॥ १५४ ॥
सारकी सारी सो भारी लगै धारि है कहां शीश बघंवर दैया ॥
दासी जु सीख दई सु दई पै लई गह क्यों रसखान कन्हैया ॥
योग गयो कुबजाकी कलान में री कब ऐहै यशोमति छैया ॥
हाहा न ऊधो कुढ़ाय हमैं अबहीं कह दे ब्रज बाजे बधैया ॥ १५५ ॥
जानत हों न कछू हम ह्यां उन ह्वां पढ़ि मन्त्र कहा धौं दयोहै ॥
सांची कहैं जियमें निज जानकै जानती हो जस जैसो लयोहै ॥
रसखान यहै सुनकै गुनकै हियरा सत टूक ह्वै फाट गयो है ॥
लोग लुगाईं सबै ब्रज माहिं कहैं हरि चेरीको चेरो भयो है ॥ १५६ ॥
जानें कहा हम मूढ़ सबै समझी न तवै जबहीं बन आई ॥
शोच रहीं मनही मन में अब कीजै कहा बतियां कछु भाई ॥
नीचो भयो ब्रज लोकको शीश भली न भई रसखान दुहाई ॥
चेरीको चेटक देखहु री हरी चेरी कियोधौं कहापढ़ आई ॥ १५७ ॥
काहूको माई कहा कहिये सहिये सु जोई रसखान सहावैं ॥
नेम कहा जब प्रेम कियो अब नाचिये सोई जु नाच नचावैं ॥
चाहत हैं हम और कहा सखि क्योंहू कहूँ पिय देखन पावैं ॥
चोरिही सों जु गुपाल रस्यो तौ चलोरी सबैमिलचेरी कहावैं ॥ १५८ ॥

कवित्त ।

ग्वालनके संग जैबो ऐबो औ चरैबो गाय हेरी तान गैबो शोचि नैन फरकत हैं ॥ ह्यांके गजमोतिमाल वारौं गुंजमालनपै कुंज सुध आये हाय प्राण धरकत हैं ॥ गोबरको गारो सुतौ मोहिं लगै प्यारो नाहिं भावैं ये महल जे जडित मरकतहैं ॥ मंदर ते ऊंचे कहा मंदिर हैं द्वारकाके ब्रजके खरक मेरे हिय खरकत हैं ॥ १५९॥

सवैया ।

मोहनजूके बियोगकी ताप मलीन महाद्युति देह तियाकी ॥
पंकज सो मुख गो मुरझाय लगैं लपटैं विरहागि हियाकी ॥
ऐसेमें आवत कान्ह सुने तुलसी सुतनी तरकी अँगियाकी ॥
यों जग ज्योति उठी तनुकी उसकाय दई मनौं बाती दियाकी॥१६०॥
इक ओर किरीट लसैं दुसरी दिशि नागनके गण गाजत री ॥
मुरली मधुरी धुनि ओंठन पै तुरही कलनाद सों बाजत री ॥
रसखान पितंबर एक कँधा पर एक वघंबर छाजत री ॥
अरी देखहु संगम लै बुड़की निकसे वर वेप विराजत री ॥१६१॥
यह देख धतूरके पात चबात सुगात में धूरि लगावत हैं ॥
चहुँओर जटा अटकीं लटकैं शुभ शीश फनी फहरावत हैं ॥
रसखान जोई चितवै चित दै तिहिके दुख द्वंद्व भजावत हैं ॥
गज खाल कपालकी माल धरे हर गाल बजावत आवत हैं॥१६२॥
वैदकी औषधि खात कछू न करै कछु संयम री सुन मोसे ॥
तेरोइ पानी पियैं रसखानि सजीवन जानि लहै सुख तोसे ॥
एरी सुधामयी भागीरथी सब पथ्य कुपथ्य वनैं तोहिं पोसे ॥
आक धतूर चबात फिरैं विप खात फिरै शिव तेरे भरोसे ॥१६३॥
सुनिये सबकी कहिये न कछू रहिये इमि या भव बागर में ॥

करिये व्रत नेम सचाई लिये जिनते तरिये भवसागरमें ॥
मिलिये सबसों दुरभाव बिना रहिये सतसंग उजागरमें ॥
रसखानगोविंदही योंभजियेजिमिनागरिको चित गागरमें॥१६४॥
प्राण वही जु रहैं रिझ वा पर रूप वही जिहि वाहि रिझायो ॥
शीश वही जिहि वे परसे पद देह वही जिन वा परसायो ॥
दूध वही जु दुहायो री वाहीने सोई दही जु वही ढरकायो ॥
और कहांलौं कहूं रसखान सुभाव वही जु वही मनभायो॥१६५॥
कंचन मंदिर ऊंचे, बनायके माणिक लाय सदा झमकावै॥
प्रातहिं त सगरी नगरी गजमोतिन ही की तुलानि तुलावै ॥
पालै प्रजानि प्रजापति सो घन संपति सो मघवाहि लजावै ॥
ऐसो भयो तो कहा रसखान जु साँवरे ग्वारसों नेह न लावै॥ १६६॥
संपति सों सकुचावै कुबेरहि रूप सों देत चुनौति अनंगहि ॥
भोग लखे ललचाय पुरंदर योगमें गंग लई धरि मंगहि ॥
ऐसो भयो तो कहा रसखान रसै रसना जिहिं मुक्त तरंगहि ॥
जो चितवाको न रंगरँग्यो जु रह्योरँगि राधिकारानीके रंगहि॥१६७॥
द्रौपदी औ गणिका गज गीध अजामिल सों कियो सो न निहारो ॥
गौतमगेहनी कैसी तरी प्रहलादकी कैसो हरयो दुख भारो ॥
काहेको शोच करै रसखान कहा करिहै यमराज विचारो ॥
कौनकि शंक परी है जु माखनचाखन हारो है राखनहारो॥१६८॥
देश विदेशके देखे नरेश न रीझको कोऊ न बूझ करैगो ॥
ताते तिन्हें तज जाऊँ गिरौं गुण को गुण औगुण गांठ परैगो ॥
बांसुरीवारो बड़ो रिझवार है जो कहुँ नेसुक ढार ढरैगो ॥

कोउ रमा भजि लेहु महाधन कोऊ कहूं मन वांछित पाओ ॥
है रसखान मेरे वही साधन और त्रिलोक रहौ कि नशाओ ॥१७०॥
वा लकुटी अरु कामरिया पर राज तिहूं पुरको तजि डारौं ॥
आठहूँ सिद्धि नवो निधिको सुख नंदकि गाय चराय बिसारौं ॥
रसखान कबै इन नैननसों व्रजके वन बाग तड़ाग निहारौं ॥
कोटिन हूं कलधौतके धाम करीलकी कुंजन ऊपर वारौं ॥ १७१ ॥
जो रसना रस ना बिलसै तेहि देहु सदा निज नाम उचारन ॥
मो करनी कर नीकी करैं जु पै कुंज कुटीरन देहु बुहारन ॥
सिद्धि समृद्धि सबै रसखान लहौं व्रजरेणुका अंग सवाँरन ॥
खाननि वास मिलै तो सही वहि कालिंदिकूल कदंबकी डारन १७२॥

कवित्त ।

कहा रसखान सुख संपति सुमार महा कहा महा योगी ह्वै लगाये अंग छारको ॥ कहा साधे पंचानल कहा सोये बीच जल कहा जीत लीने राज सिंधु वार पारको ॥ जप बार बार तप संयम अपार व्रत तीरथ हजार अरे बूझत लवार को ॥ सोई है गँवार जिंहि कीनो नहीं प्यार नहीं सेयो दरबार यार नंदके कुमारको ॥ १७३ ॥

कंचनके मंदिरन दीठ ठहरात नाहिं सदा दीपमाल लाल रतन उजारे सों ॥ और प्रभुताई सब कहांलौं बखानौं प्रतिहारनिकी भरि भूप टरत न द्वारे सों ॥ गंगाजूमें न्हाय मुकताहल लुटाय वेद बीस बार गाय ध्यान कीजत सकारे सों ॥ ऐसेही भये तौ कहा कीन्हौं रसखान जु पै चित्त दै न कीन्हीं प्रीति पीत पटवारे सों ॥ १७४ ॥

श्रीरामचन्द्रजीके कवित्त ।

सवैया ।

अवधेशके द्वारे सकारे गई सुत गोदकै भूपति लै निकसे ॥
अवलोकि हौं शोचविमोचनको ठगि सी रही जो न ठगे धिकसे ॥
तुलसी मनरंजन रंजित अंजन नैन सु खंजनजात कसे ॥
सजनी शशिमें समशील उभै नवनील सरोरुहसे विकसे ॥१७५॥
पग नूपुर औ पहुँची कर कंजन मंजु बनी मणिमाल हिये ॥
नव नील कलेवर पीत झँगा झलकैं पुलकैं नृप गोद लिये ॥
अरविंद सो आनन रूप मरंद अनंदित लोचन भृंग पिये ॥
मनमों न बस्यो ऐसो बालक जो तुलसीजगमेंफलकौनजिये १७६॥
तनु की द्युति श्याम सरोरुह लोचन कंज कि मंजुलताइ हरैं ॥
अति सुन्दर सोहत धूर भरें छवि भूरि अनंगकि दूर धरैं ॥
दमकैं दतियां द्युतिदामिनि ज्यों किलकैं कलबाल विनोद करैं ॥
अवधेशके बालक चारि सदा तुलसीमन मंदिरमें विहरैं ॥१७७ ॥
कबहूं शशि मानत आरि करैं कबहूं प्रतिबिंब निहारि डरैं ॥
कबहूं करताल बजाय कै नाचत मातु सबै मन मोद भरैं ॥
कबहूं रिस आइ कहैं हठिकै पुनि लेत सोई जिहिं लागि अरैं ॥
अवधेशके बालक चारि सदा तुलसीमनमंदिरमें विहरैं ॥ १७८ ॥
पदकंजन मंजु बनीं पनहीं धनुहीं शर पंकजपाणि लिये ॥
लरिका सँग खेलत डोलत हैं सरयूतट चौहट हाट हिये ॥
तुलसी अस बालक सों नहिं नेह कहा जप योग समाधि किये ॥
नर वे खर शूकर श्वान समान कहौ जगमें फल कौन जिये १७९ ॥
सरयू वर तीरहिं तीर फिरैं रघुवीर सखा अरु वीर सबै ॥

धनुहीं कर तीर निषंग कसे कटि पीत दुकूल नवीन फवै ॥
तुलसी तेहि औसर लावणिता दश चार नौ तीन एकीस सवै ॥
मति भारति पंगु भई जो निहार विचार फिरी उपमा न फवै॥१८०॥

कवित्त।

लोचनाभिराम घनश्याम रामरूप शिशु सखी कहै सखिन सों प्रेमपथ पालि री॥ बालक नृपालजूके ख्याल ही पिनाक तोर्यो मंडलीक मंडली प्रताप दाप दाल री॥ जनकको सिया को हमारो तेरो तुलसीको सबको भावतो ह्वैहै मैं जो कह्यो काल री॥ कौशला की कोखि परतोषि तनु वारिये री राय दशरत्थकी बलाय लीजै आलि री॥ १८१॥

दूब दधि रोचना कनकथार भरभर आरती सँवार वर नार चलीं गावतीं॥ लीने जयमाल करकंज सोहै जानकीके पहिरावो राघोजीको सखियां सिखावतीं॥ तुलसी मुदित मन जनक नगर जन झांकतीं झरोखे लागी शोभा रानी पावतीं॥ मनहुँ चकोरी चारु बैठीं निज निज नीड़ चंदकी किरन पीवैं पलको न लावतीं॥ १८२॥

भले भूप कहत भले भदेश भूपन सों लोक लख बोलिये पुनीत रीतमारखी॥ जगदम्बा जानकी जगतपितु रामचन्द्र जान जिय जोहो जो न लागै मुख कारखी॥ देखेहैं अनेक व्याह सुने हैं पुराण वेद बूझेहैं सुजान साधु नर नारि पारखी॥ ऐसे सम समधी समाज न विराजमान रामसे न वर दुलही न सीय सारखी॥ १८३॥

सवैया।

दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सिय सुन्दर मंदिर माहीं॥
गावत गीत सबै मिल सुन्दरि वेद युवा ज्जुरि विप्र पढाहीं॥

रामको रूप निहारत जानकी कंकणके नगकी परछाहीं ॥
याते सबै सुधि भूल गई कर टेकरही पल टारत नाहीं ॥ १८४ ॥
गर्भ के अर्भके काटनको पटु धार कुठार कराल है जाको ॥
सोइ हौं बूझत राजसभा धनुके दल हौं दल हौं वल ताको ॥
लघुआनन उत्तर देत बड़े लरि है मरि है करि है कछु साको ॥
गोरो गरूर गुमानभरचो कहो कौशिक छोटोसो ढोटो है काको १८५

कवित्त ।

मख राखबेके काज राज मेरे संग दये दले यातुधान जे जितैया विबुधेश के ॥ गौतमकी तीय तारी मेटे अघ भूरिभारी लोचन अतिथि भये जनक जनेश के ॥ चंड वाहु दंड बल चंडीशकोदंड खंड्यो ब्याही जानकी नरेश जीते देश देश के ॥ साँवरे गोरे शरीर धीर महावीर दोऊ नाम राम लषण कुमार कोशलेशके ॥ १८६ ॥

सवैया ।

काल कराल नृपालनके धनुभंग सुने फरशा लिये धाये ॥
लक्ष्मण राम विलोकि सप्रेम महा रिसहा फिरि आँखि दिखाये ॥
धीरशिरोमणि वीर बड़े विनयी विजयी रघुनाथ सुहाये ॥
लायक हौ भृगुनायक सो धनु सायक सौंपि सुभाय सिधाये १८७॥
कीरके कागर ज्यों नृप चीर विभूषण उप्पम अंगनि पाई ॥
औध तजी मग वासके रूख ज्यों पंथ के साथ में लोग लुगाई ॥
संग सुबंधु पुनीत प्रिया मानो धर्म क्रिया धर देह सुहाई ॥
राजिवलोचन राम चले तजि बापको राज बटाऊकी नाई ॥१८८॥
कागर कीर ज्यों भूषण चीर शरीर लस्यो तज नीर ज्यों काई ॥
मातु पिता प्रिय लोग सबै सनमान सुभाय सनेह सगाई ॥

संग सुभामिनि भाय भलो दिन है जनु अवधहु ते पहुनाई ॥
राजिव लोचन राम चले तजि बापको राज बटाऊकी नाई॥१८९॥

कवित्त ।

शिथिल सनेह कहैं कौशला सुमित्राजू सों मैं न लखी सौति सखी भगिनी ज्यों सेई है । कहैं मोहिं मैया मैंन मैया आलि भरत की वलैयां लैहौं भैया तेरी मैया कैकेई है ॥ तुलसी सरल भाय रघुराय माय मानी काय मन बानी हूं न जानके मतेई है। वास विधि मेरो सुख सिरिस सुमनसम ताको छल छुरी कोह कुलिश लै टेई है ॥ १९० ॥ कीजै कहा जीजै जु सुमित्रा परि पांय कहै तुलसी सहावै विधि सोई सहियत है। रावरो सुभाव राम जन्म हीते जानियत भरत कि मात को कीवो सो चहियत है॥जाई राज-घर व्याही आई राजघर महाराज पूत याहूं पै न सुख लहियत है। देह सुधा गेह ताहि मृगने मलीन कियो ताहू पर चाहु विन राहु गहियत है ॥ १९१ ॥

सवैया ।

नाम अजामिलसे खल कोटि अपार नदीभव बूड़त काढ़े ॥
जो सुमिरे गिरि मेरु शिलाकन होते अजा खुर वारिधि बाढ़े ॥
तुलसी जेहिके पदपंकज ते प्रगटी तटनी जो हरै अघ गाढ़े ॥
ते प्रभु या सरिता तरबे कहँ मांगत नाव किनारे ह्वै ठाढ़े॥ १९२ ॥
यहि घाट ते थोरिक दूर अहै कटिलोंज ल थाह देखाइहौं जू ॥
परसे पग धूरि तरै तरनी घरनी घर क्यों समुझाइहौं जू ॥
तुलसी अवलंब न और कछू लरिका केहि भाँति जियाइहौं जू ॥
वरु मारिये मोहिं विना पग धोये हौं नाथ न नाव चढाइहौं जू१९३
रावरे दोप न पाँयनको पगधूरिको भूरि प्रभाउ महा है॥
पाहन ते वलवान न काठको कोमल ह्वै जल खाइ रहा है ॥

तुलसी सुन केवटके वर बैन हँसे प्रभु जानकि ओर हहा है ॥
पावन पाँय पखारिकै नाउ चढाय हौं आयसु होत कहाहै॥१९४॥

कवित्त ।

पात भरी सहरी सकल सुत बारे बारे केवटकी जाति कछु वेद न पढाय हौं । सब परिवार मेरो याही लगि राजा जी हौं दीन वित्त हीन कैसे दूसरी गढ़ायहौं ॥ गौतमकी घरनी ज्यों तरनी तरैगी मेरी प्रभुसों निषाद ह्वैकै बाद ना बढायहौं । तुलसीके ईश राम रावरे सों सांची कहौं विना पग धोये नाथ नाव न चढायहौं ॥ १९५ ॥

जिनको पुनीत वारि शिरसि बहैं पुरारि त्रिपथगामिनी यश वेद कहैं गाय कै । जिनको योगींद्र मुनि वृंद देव देह दम करत विविध योग जप मन लायकै ॥ तुलसि जिनकी धूरि परसि अहल्या तरी गौतम सिधारे गृह गौंनो सो लिवायकै । तेई पायँ पायके चढ़ाय नाव धोये बिनु ख्वैहौं न पठावनीकै ह्वैहों न हँसायकै ॥ १९६ ॥

प्रभु रुख पायकै बोलाय बाल घरनीको वंदिकै चरण चहुँ दिशि बैठे घेर घेर ॥ छोटो सो कठौता भर आन पानी गंगाजूको धोय पाँय पियत पुनीत वारि फेर फेर ॥ तुलसी सराहैं ताको भाग सानुराग सुर बरपैं सुमन जय जय कहैं टेर टेर । विवुध सनेह सानी बानी असयानीसुन हँसे राघो जानकी लषण तन हेर हेर ॥ १९७ ॥

सवैया ।

जलको गये लक्ष्मण हैं लरिका परखौ पिय छांहिं घरीक ह्वै ठाढ़े ॥
पोंछि पसेउ बयारि करों अरु पांय पखारिहौं भूभुर डाढ़े ॥
तुलसी रघुवीर प्रिया श्रम जानिकै बैठिविलंव सों कंटक काढ़े ॥
जानकी नाहको नेह लख्यो पुलकी तनु वारि विलोचन बाढ़े१९८॥

ठाढ़े हैं नव द्रुम डार गहे धनु कांधे धरे कर सायक लै॥ विकटी भ्रुकुटी बड़री अँखियां अनमोल कपोलनकी छबिहै॥ तुलसी ऐसी मूरति आनु हिये जड़ डारधौं प्राण निछावरिकै॥ श्रम सीकर साँवरि देह लसै मानो रारि महातम तारकमैं ॥१९९॥

कवित्त।

जलज नयन जलजानन-जटा हैं शिर यौबन उमंग अंग उदित उदार हैं। साँवरे गोरेके वीच भामिन सुदामिनी सी मुनि पट धरे उर फूलनके हारहैं॥ करन शरासन शिलीमुख निषंग कटि अतिही अनूप काहू भूपके कुमार हैं॥ तुलसी विलोकके तिलोकके तिलक तीन रहे नर नारि ज्यों चितेरे चित्र सार हैं ॥२००॥

आगे सोहै साँवरो कुँवर गोरो पाछे आछे आछे मुनिवेष धरे लाजत अनंग है। बान विशिखासन वसन वनहीं के कटि कसेहैं बनाय नीके राजत निषंगहै॥ साथ निशिनाथमुखी पाथ नाथ नंदनी सी तुलसी विलोके चित लाईलेत संगहै॥आनंद उमंग मन यौबन उमंग तनु रूपकी उमंग उमगत अंग अंग ह॥ २०१॥

सुन्दर बदन सरसीरुह सोहाये नैन मंजुल प्रसून माथे मुकुट जटनके॥ अंशन शरासन लसत शुचि शर कर तूण कटि मुनि पट लूटक पटनके॥ नारि सुकुमारि संग जाके अंग उबटके विधि विरचैं वरूथ विद्युत छटनके। गोरेको वरन देखे सोनो न सलोनो लागे सांवरो विलोके गर्व घटत घटनके॥ २०२॥

वल्कल वसन धनु तान पाणि तूण कटि रूपके निधान घन दामिनी वरन हैं॥ तुलसी सुतीय सग सहज सोहाये अंग नवल कमलहू ते कोमल चरन हैं। औरे सो वसन्त औरे रति औरे रति-पति मूरति विलोके तन मनके हरन हैं॥ तापस बनाये वेष पथिक पंथै सोहाये चले लोकलोचनन सुफल करन हैं॥ २०३॥

सवैया।

बनिता बनि श्यामल गोरेके बीच विलोकहु री सखिमोंहिंसी ह्वै॥
मग योग न कोमल क्यों चलिहैं सकुचात मही पदपंकज छ्वै॥
तुलसी सुन ग्रामवधू विथकीं पुलकी तनु औ चले लोचन च्वै॥
सब भाँति मनोहर मोहनरूप अनूप हैं भूपके बालक द्वै॥२०४॥
साँवरे गोरे सलोने सुभाय मनोहरता जित मैंन लियो है॥
बान कमान निषंग कसे शिर सोहै जटा मुनि वेष कियो है॥
संग लिये विधु वेनी वधू रतिको जेहिं रंचक रूप दियो है॥
पाँयन तौ पनहीं न पयादेहिं क्यों चलिहैसकुचात हियो है॥२०५॥
रानी मैं जानी अयानी महा पवि पाहन हू ते कठोर हियो है॥
राजहुँ काज अकाज न जान्यो कह्यो तियको जिहि कान कियोहै॥
ऐसी मनोहर मूरति ये बिछुरे कैसे प्रीतम लोग जियो है॥
आँखिनमें सखि राखबे योग इन्हें किमिकै वनवास दियो है॥२०६॥
शीश जटा उर बाहु विशाल विलोचन लाल तिरीछी सी भौंहैं॥
तूण शरासन बाण धरे तुलसी वन मारगमें सुठि सोहैं॥
सादर बारहिं बार सुभाय चितै तुम त्यों हमरो मन मोहैं॥
पूँछत ग्रामवधू सिय सों कहो साँवरो सो सखि रावरो को हैं॥२०७॥
सुन सुन्दर बैन सुधारस साने सयानी है जानकी जान भली॥
तिरछे कर नैन दै सैन तिन्हें समुझाय कछू मुसकाय चली॥
तुलसी तेहि औसर सोहैं सबै अवलोकति लोचन लाहु अली॥
अनुराग तड़ागमें भानु उदै विकसी मानौं मंजुल कंजकली॥२०८॥
धर धीर कहैं चल देखिय जाय जहाँ सजनी रजनी रहि हैं॥
कहि है जग पोच न शोच कछू फल लोचन आपन तौ लहि हैं॥
सुख पाय हैं कान सुने बतियां कल आपुसमें कछु पै कहि हैं॥
तुलसी अति प्रेमलखी पलकैं पुलकी लखि राम हिये महिहैं२०९॥

पद कोमल श्यामल गौर कलेवर राजत कोटिमनोज लजाये ॥
वर बाण शराशन शीश जटा सरसीरुह लोचन सोन सोहाये ॥
जिन देखे सखी सतभावहुतें तुलसी तिन तौ मन फेरि न पाये ॥
यहिमारगआजकिशोरवधू विधु बैनीसमेत सुभावसिधाये ॥२१०॥
मुख पंकज कंज विलोचन मंजु मनोज शरासन सी वनी भौंहैं ॥
कमनीय कलेवर कोमल श्यामल गौर किशोर जटा शिर सोहैं ॥
तुलसी कटि तूण धरे धनु बाण अचानक दृष्टि परी तिराछेहैं ॥
केहि भाँतिकहौंसजनीतोहिसों मृदुमूरतिद्वैनिवसीमनमोहैं २११॥
शर चारिक चारु बनाय कसे कटि पाणि शरासन सायक लै॥
वन खेलत राम फिरैं मृगया तुलसी छवि सों वरणै किमिकै ॥
अवलोक अलौकिक रूप मृगी मृग चौंक चकै चितवै चित दै ॥
न डगैं न भगै जियजान शिलीमुख पंच धरे रतिनाह कहै २१२॥
पंचवटी वर पर्णकुटी तर बैठेहैं राम सुभाय सुहाये ॥
सोहैं प्रिया प्रिय बन्धु लसैं तुलसी सब अंग घने छवि छाये ॥
देख मृगा मृगनैनी कहैं प्रिय बैन ते प्रीतमके मन भाये ॥
हेम कुरंग के संग शरासन सायक लै रघुनायक धाये ॥ २१३॥

कवित्त।

देख ज्वालाजाल हाहाकार दशकन्ध सुन कह्यो धरो धरो धाये वीर बलवान हैं ॥ लिये शूल शैल पाश परिघ प्रचंड दंड भाजन सनीर धीर धरे धनु बान हैं ॥ तुलसी समिध सौज लंक यज्ञकुंड लखि यातुधान पूंगीफल यव तिल धान हैं ॥ स्रुवा से लँगूर बल मूल प्रतिकूल हवि स्वाहा महा हाँक हाँक हन हनुमान हैं ॥ २१४ ॥ बड़ो विकराल वेष देख सुन सिंह नाद उठ्यो मेघनाद सविषाद कहै रावनो ॥ वेग जितो मारुत प्रताप मारतण्ड कोटि कालऊँ करालता बड़ाई जितो बावनो ॥ तुलसी

सयानेयातुधाने पछिताने कहैं जाको ऐसो दूत सो तो प्रभु अबै आवनो ॥ काहेकी कुशलरोपे राम वामदेव हूँ की विषम वली सों वादि वैरको वढ़ावनो ॥ २१५ ॥

हाट वाट कोट ओट अटन अगार पौर खोर खोर दौर दौर दीनी अति आगि हैं ॥ आरत पुकारत सँभारत न कोऊ काको व्याकुल जहाँ सों तहाँ लोक चले भागि हैं ॥ वालधी फिरावै वार वार झहरावै झरैं बूँदिया सी लंक पघिलाई पागि पागि हैं । तुलसी विलोक अकुलानी यातुधानी कहैं चित्रहूके कपि सों निशाचर न लागि हैं ॥ २१६ ॥

आय हनुमान प्राण हेतु अंकमालदेत लेत पग धूरि एक चूँवत लँगूर है । एक बूझे वार वार सीय समाचार कहौ पवनकुमार भो विगत श्रम शूल है । एक भूँखे जान आगे आन कन्द मूलफल एक पूजे वाहु वल मूल तोर फूल है ॥ एक कहै तुलसी सकल सिधि ताके जाके कृपानाथ नाथ सीतानाथ सानुकूल है २१७॥

सवैया ।

विश्व जयी भृगुनायक से विनु हाथ भये हानि हाथ हजारी ॥
वातुल मातुलकी न सुनी सिख का तुलसी कपि लंक न जारी ॥
अजहूँतौ भलो रघुनाथ मिलैं फिर वुझिहै को गज कौन गजारी॥
कीर्ति बड़ो करतूत वड़ो जन वातबड़ो सो वड़ाई वजारी २१८ ॥

कवित्त ।

दूषण विराध खर त्रिशिरा कबन्ध वधे तालहू विशाल वेधे कौतुक है कालिको ॥ एकही विशिष वश भयो वीर वांकुरो सों तहूं है विदित वस महाबली वालि को ॥ तुलसी कहत हित मानत न नेक शंक मेरो कहा जैहै फल पैहै तू कुचालि को ॥ वीरजा-

ति केसरी कुठारपाणि मानी हार तेरी यहा चली बूड़े तोसे गने घालिको ॥ २१९ ॥

सवैया।

तोंसो कहों दशकंधर रे रघुनाथ विरोध न कीजिये बौरे ॥
वालि बली खर दूषण और अनेक गिरे जेते भीतिमें दौरे ॥
ऐसिय हाल भई तोहि कौंन तो लै मिलु सीय चहै सुख जोरे ॥
रामके रोप न राखिसकैं तुलसी विधि श्रीपति शंकर सोरे २२०॥
तू रजनीचरनाथ महा रघुनाथके सेवकको जन में हौं ॥
बलवानहै श्वान गली अपनी तोहि लाज न गाल बजावत सो हौं॥
बीस भुजा दश शीशहरौं न डरौं प्रभु आयसु भंग ते जो हौं ॥
खेतमें केहरी ज्यों गजराज दलौं दल वालिको बालक तो हौं २२१॥
कौशलराजके काज हौं आज त्रिकूट उपारि लै वारिधि बोरौं ॥
त्यों भुजदंड द्वै अंडकटाह चपेटके चोट चटाक दे फोरौं ॥
आयसु भंगते जो न डरों सब मींजि सभासद शोणित घोरौं ॥
वालिको बालक तौ तुलसी दशहू मुखके रणमें रद तोरौं ॥२२२॥
अतिकोपसों रोप्योहै पाउँ सभा सबलंक सशंकित शोर मचा ॥
तमके घननाद से वीर प्रचारके हार निशाचर सैंन पचा ॥
न टरे पग मेरुहुते गरु भो सो मनों महिसंग विरंचि रचा ॥
तुलसी सब शूर सराहतहैं जगमें बलशालि है वालिबचा ॥२२३॥

झूलना।

कनकगिरि शृंग चढ़ देख मर्कट कटक वदत मंदोदरी परम भीता ॥ सहजभुज मत्त गजराज रण केशरी परशुधर गर्व जेहि देख वीता ॥ दास तुलसी समर सबल कौशल धनी ख्याल ही वालि बलशालि जीता ॥ रे कन्त तृण दन्तगहि शरन श्रीराम कहि अजहुं यहि भाँति ले सौंप सीता ॥ २२४ ॥

सयानेयातुधाने पछिताने कहैं जाको ऐसो दूत सो तो प्रभु अबै आवनो ॥ काहेकी कुशलरोपे राम वामदेव हूँ की विषम वली सों वादि वैरको वढ़ावनो ॥ २१५ ॥

हाट वाट कोट ओट अटन अगार पौर खोर खोर दौर दौर दीनी अति आगि हैं ॥ आरत पुकारत सँभारत न कोऊ काको व्याकुल जहाँ सों तहाँ लोक चले भागि हैं ॥ वालधी फिरावै वार वार झहरावै झरैं बूँदिया सी लंक पघिलाई पागि पागि हैं । तुलसी विलोक अकुलानी यातुधानी कहैं चित्रहूके कपि सों निशाचर न लागि हैं ॥ २१६ ॥

आय हनुमान प्राण हेतु अंकमालदेत लेत पग धूरि एक चूँवत लँगूर है । एक बूझे वार वार सीय समाचार कहौ पवनकुमार भो विगत श्रम शूल है । एक भूँखे जान आगे आन कन्द मूलफल एक पूजे वाहु वल मूल तोर फूल है ॥ एक कहै तुलसी सकल सिधि ताके जाके कृपानाथ नाथ सीतानाथ सानुकूल है २१७॥

सवैया ।

विश्व जयी भृगुनायक से विनु हाथ भये हनि हाथ हजारी ॥
बातुल मातुलकी न सुनी सिख का तुलसी कपि लंक न जारी ॥
अजहूँतौ भलो रघुनाथ मिलें फिर बुझिहै को गज कौन गजारी॥
कीर्ति बड़ो करतूते बड़ो जन वातबड़ो सो बड़ाई वजारी २१८ ॥

कवित्त ।

दूषण विराध खर त्रिशिरा कवन्ध वधे तालहू विशाल वेधे कौतुक है कालिको ॥ एकही विशिष वश भयो वीर वांकुरो सो तहूं है विदित वस महावली वालि को ॥ तुलसी कहत हित मानत न नेक शंक मेरो कहा जैहै फल पैहै तू कुचालि को ॥ वीरजा-

ति केसरी कुठारपाणि मानी हार तेरी यहा चली बूड़े तोसे गने घालिको ॥ २१९ ॥

सवैया।

तोंसो कहों दशकंधर रे रघुनाथ विरोध न कीजिये बौरे ॥
वालि बली खर दूषण और अनेक गिरे जेते भीतिमें दौरे ॥
ऐसिय हाल भई तोहि कौंन तो लै मिलु सीय चहै सुख जोरे ॥
रामके रोप न राखिसकैं तुलसी विधि श्रीपति शंकर सोरे २२०॥
तू रजनीचरनाथ महा रघुनाथके सेवकको जन मैं हौं ॥
बलवानहै श्वान गली अपनी तोहि लाज न गाल बजावत सो हौं॥
बीस भुजा दश शीशहरौं न डरौं प्रभु आयसु भंग ते जो हौं ॥
खेतमें केहरी ज्यों गजराज दलौं दल बालिको वालक तो हौं २२१॥
कौशलराजके काज हौं आज त्रिकूट उपारि लै वारिधि बोरौं ॥
त्यों भुजदंड द्वै अंडकटाह चपेटके चोट चटाक दे फोरौं ॥
आयसु भंगते जो न डरों सब मींजि सभासद शोणित घोरौं ॥
बालिको बालक तौ तुलसी दशहू मुखके रणमें रद तोरौं ॥२२२॥
अतिकोपसों रोप्योहै पाउँ सभा सबलंक सशंकित शोर मचा ॥
तमके घननाद से वीर प्रचारके हार निशाचर सैंन पचा ॥
न टरे पग मेरुहुते गरु भो सो मनों महिसंग विरंचि रचा ॥
तुलसी सब शूर सराहतहैं जगमें बलशालि है बालिबचा ॥२२३॥

झूलना।

कनकगिरि शृंग चढ़ देख मर्कट कटक वदत मंदोदरी परम भीता ॥ सहजभुज मत्त गजराज रण केशरी परशुधर गर्व जेहि देख बीता ॥ दास तुलसी समर सबल कौशल धनी ख्याल ही वालि बलशालि जीता ॥ रे कन्त तृण दन्तगहि शरन श्रीराम कहि अजहुं यहि भाँति ले सौंप सीता ॥ २२४ ॥

रे नीच मारीच विचलाय हति ताडका भंजि शिवचाप सुख सबहि दीनो ॥ सहस दसचार खल सहित खर दूपणहि पठै यम धाम तैं तउन चीनो ॥ मैं जो कहो कन्त सुन मन्त भगवंत सों विमुख ह्वै वालि फल कौन लीनो ॥ बीस भुज शीश दश खीस गे तबहिं जब ईशके ईश सों बैर कीनो ॥ २२५ ॥

वालि दल कालि जल यान पापान किये कंत भगवंत तैं तब न चीने ॥ विपुल बिकराल भट भालु कपि कालसे संग तरु तुंग गिरि शृंग लीने॥ आयगो कौशलाधीश तुलसीश जिहँ छत्र मिस मौलि दश दूर कीने ॥ ईश बकसीस जनि खीस करु ईश सुनु अजहुँ कुल कुशल वैदेहि दीने ॥ २२६ ॥

कवित्त ।

कह्यो मत मातुल विभीपणहुँ बार बार अंचल अपार पिय पाँय लैलै हौं परी ॥ विदित विदेहपुर नाथ भृगुनाथ गति समय सयानी कीनी जैसी आइ गौं परी ॥ वायस विराध खर दूपण कवंध वाली वैर रघुवीरके न पूरी काहूकी परी ॥ कंत वीस लोचन विलोकिये कुमंत फल ख्याल लंका लाय कपि रांड कीसी झोंपरी ॥ २२७ ॥

रोपो रण रावण बोलाये बीर बानइत जानत जे रीति सब संयुग समाज की ॥ चली चतुरंग चमू चपर हने निसान सैना सरहान योग रातिचरराज की ॥ तुलसी विलोक कपि भालु किलकत ललकत लख ज्यों कँगाल पातरी सुनाज की ॥ राम रुख निरख हरष्यो हिय हनुमान मानों खेलवारे खोलो शीश ताज वाज की ॥ २२८ ॥

हाथिन सों हाथी मारे घोरे सों घोरे सँहारे रथन सों रथ विद-रानि बलवानकी ॥ चंचल चपेट चोट चरण चकोर चाहें दावि

हहरानी फौजें भारी यातुधानकी ॥ बार बार सेवक सराहना करत राम तुलसी सराहैरीति साहब सुजानकी ॥ लांबी लूम लसत लपेट पटकत भट देखो देखो लषण लरनि हनुमानकी॥ २२९ ॥

सवैया ।

कानन वास दशानन सो रिपु आननश्री शशि जीतलियो है ॥
वालि महाबलशालि दल्यो कपि पाल विभीषण भूप कियोहै ॥
तीय हरी अरु बंधु परचो पै भरचो शरणागत शोच हियो है ॥
बांहपगार उदार कृपाल कहां रघुवीर सों बीर बियो है ॥ २३० ॥
शोकसमुद्र निमज्जन काढि कपीश कियो जग जानत जैसो ॥
नीच निशाचर बैरीको बंधु विभीषण कीनो पुरंदर तैसो ॥
नाम लिये अपनाय लियो तुलसी सो कहो जग कौन अनैसो ॥
आरतआरतिभंजन राम गरीबनेवाज न दूसर ऐसो ॥ २३१ ॥
मीत पुनीत किये कपि भालुको पाल्यो न काहूज्यों वालतनूजो ॥
सज्जनसींव विभीषण भो अजहूँ बिलसै बर बंधु वधू जो ॥
कोशलपाल विना तुलसी शरणागतपाल कृपालु न दूजो ॥
कूर कुजाति कुपूत अघी सबकी सुधरै जो करै नर पूजो ॥ २३२ ॥
अपराध अगाध भये जन ते अपने उर आनत नाहिंन जू ॥
गणिका गज गीध अजामिल के गनि पातकपुंज सराहि न जू ॥
लिये बारक नाम सुधाम दियो जिंहि धाम महामुनि जाहिं न जू ॥
तुलसी भज दीनदयालहि रे रघुनाथ अनाथहि दाहिनजू ॥ २३३॥
प्रभु सत्य करी प्रहलाद गिरा प्रगटे नर केहरि खंभ महां ॥
झपराज ग्रस्यो गजराज कृपा ततकाल विलंब किये न तहां ॥
सुर साखी दै राखी है पांडुवधू पट लूटत कोटिक भूप जहां ॥
तुलसी भज शोचविमोचनको जनको प्रण राम न राख्यो कहां२३४
नर नारि उघारि सभामहँ होत दिये पट शोच हरयो मनको ॥

प्रहलाद विपाद निवारन वारन तारन मीत अकारनको ॥
जो कहावत दीनदयालु सही जेहि भार सदा अपने पनको ॥
तुलसी तज आन भरोस भजै भगवान भलो करिहैं जनको २३५
ऋषिनारि उधारि कियो शठ केवट मीत पुनीत सुकीर्ति लही ॥
निजलोक दियो शबरी खगको कपि थाप्यो सो मालुम है सबही॥
दशशीश विरोध सभीत विभीषण भूप कियो जग लीक रही ॥
करुणानिधिको भजु रे तुलसी रघुनाथ अनाथके नाथ सही२३६॥
कौशिक विप्र वधू मिथिलाधिपके सब शोच दले तलमाहें ॥
बालि दशानन बंधु कथा सुन शत्रु सुसाहिब शील सराहें ॥
ऐसी अनूप कहैं तुलसी रघुनायककी अगुनी गुनगाहें ॥
आरत दीन अनाथनको रघुनाथ करैं निज हाथन छाहें ॥ २३७ ॥

कवित्त ।

यातुधान भालु कपि केवट विहंग जो जो पालो नाथ सद्य सो सो भयो कामकाजको ॥ आरत अनाथ दीन मलिन शरण आये राखे सनमान सों सुभाउ महाराजको ॥ नाम तुलसी पै भोंडे भाग सों कहायो दास किये अंगीकार ऐसे बड़े दगाबाज को ॥ साहेब समर्थ दशरत्थके दयाल देव दूसरो न तोसों तुही आपनेकी लाज को ॥ २३८ ॥

महाबलि बालि दलि कायर सुकंठ कपि सखा किये महाराज हौं न काहू कामको ॥ भ्रातघात पातकी निशाचर शरन आये किये अंगीकार नाथ एते बड़े वामको ॥ राय दशरत्थके समर्थ तेरे नाम लिये तुलसी से कूर को कहत जग रामको ॥ अपने निवाजे की तो लाज महाराज को सुभाउ समुझत मन मुदित गुलामको ॥ २३९ ॥

रूप शील सिंधु गुण सिंधु वन्धु दीनको दयानिधान जान मणि बीर बाहु बोलको॥ श्राद्ध कियो गीधको सराहे फल शबरीके शिला शाप सबन निबाह्यो नेह कोलको॥ तुलसी उचाउ होत राम को सुभाउ सुनि को न बलि जाय न बिकाय बिन मोल को॥ ऐसेहू सुसाहिब सों जाको अनुराग न सो बड़ोई अभागो भाग जागो लोभ लोलको ॥ २४० ॥

शूराशिरताज महाराजनके महाराज जाको नाम लेतही सुखेत होत ऊसरो॥ साहिब कहां जहान जानकीश सो सुजान सुमिरे कृपालुके मराल होत खूसरो॥ केवट पषाण यातुधान कपि भालु तारे अपनायो तुलसी सो धींग धम धूसरो॥ बोलेको अटल बाँह को पगार दीनबंधु दूबरोको दानी को दयानिधान दूसरो॥ २४१॥

कीबे को विशोक लोक लोकपालहू ते सब कहूं कोऊ भो न चरवाहो कपि भालु को। पविको पहार कियो ख्याल ही कृपालु राम वापुरो विभीषण घरोंधा हुतो बाल को॥ नाम ओट लेत हीं निखोट होत खोटे खल चोट बिन मोट पाय भयो न निहाल को। तुलसी की वार बलि ढील होत शीलसिंधु बिगरी सुधारबे को दूसरो दयाल को॥ २४२॥

नाम लिये पूतको पुनीत कियो पातकीश आरति निवारी प्रभु पाहि कहे फील की। छलिनकी छोडी सी निगोडी छोटी जाति पांति कीनी लीन आपमें भामिनी भोडे भीलकी॥ तुलसी औतारबो बिसारबो न अन्त मोहुं नीके है प्रतीत रावरे सुभाव शीलकी॥ देवतो दयानिकेत देत दाद दीननकी मेरी वार मेरेही अभाग नाथ ढीलकी॥ २४३॥

आगे परे पाहन कृपा किरात कोलन कपीश निशिचर अपनाये नाये माथ जू। सांची सेवकाई हनुमानकी सु जान

राय रिनियां कहाये हो बिकाने ताके हाथ जू ॥ तुलसीसे खोटे खरे होत ओट नामहीकी महंगी माटी मगहू की मृगमदसाथ जू॥ वात चले बात कौन मानवो बिलग बलि काकी सेवा रीझको निवाजो रघुनाथ जू ॥ २४४ ॥

शिला शापपाप गुह गीध को मिलाप शेवरी के पास आप चलिगये हो सो सुनी मैं । सेवक सराइ कपिनायक विभीषण को भरत सभा सादर स्नेह सुरधुनी मैं ॥ आलसी अभागी अघी आरत अनाथ पाल साहिब समर्थ कर नीके मन गुनी मैं । दोष दुख दारिद दुलैया दीनबन्धु राम तुलसी न दूसरो दयानिधान दुनी मैं ॥ २४५ ॥

भूमिपाल व्यालपाल नाकपाल लोकपाल नग्रत कृपालक मैं सबै के जी की थाह ली । कादरको आदर काहूके नाहिं देखियत सबन सोहात हैं सेवा सुजान टाहली ॥ तुलसी सुभाय कहै नहिं कछु पक्षपात कौने ईश किये कीश भालु खासमाहली ॥ रामहीके द्वारेपै बोलाय सनमानियत मोसे दीन दूबर कपूत कूर काहली ॥ २४६ ॥

सवैया ।

जाके विलोकत लोकप होत विशोक लहै सुरलोक सुठौरहिं ॥
सो कमला ताजि चंचलता अरु कोटि कला रिझवै शिरमौरहिं ॥
ताको कहाय कहै तुलसी तुल जाहिन मांगत कूकर कौरहिं ॥
जानकीजीवनको जन ह्वैजरजाउ सो जीह जो जाचत औरहि२४७॥
सुन कान दिये नित नेम लिये रघुनाथहिंके गुन गाथहिं रे ॥
सुख मन्दर सुन्दर रूप सदा उर आन धरे धनु भाथहिं रे ॥
रसना निशिवासर सादर सो तुलसी जर जानकीनाथहिं रे ॥
कर संग सुसंतनसों नितही तज कूर कुपंथ कुसाथहिं रे ॥२४८॥

सुत दार अगार सखा परिवार विलोक महा कुसमाजहिं रे ॥
सबकी ममता तजिकै समता सज संत सभान बिराजहिं रे ॥
नर देह कहा कर देख विचार बिगार गवाँर न काजहिं रे ॥
जनि डोलहि लोलुप कूकर ज्यों तुलसी भज कौशलराजहिं रे२४९
जनम्यो जेहि योनि अनेक क्रिया सुखलाग करी न परैबरनी ॥
जननी जनकादि हितू भये भूरि बहोरि भई उर की जरनी ॥
तुलसी अब रामको दास कहाय हिये धर चातककी धरनी ॥
कर हंसको वेश बड़ो सबसे तजदे बक वायस की करनी ॥२५०॥
भल भारतभूमि भले कुल जन्म समाज शरीर भलो लहिकै ॥
ममता करखा तजिकै बरखा हिम मारुत घाम सदा सहिकै ॥
भजिहैं भगवान सयान सोई तुलसी हठ चातक ज्यों गहिकै ॥
नत और सबै विषबीज बुये हर हाटक कामधुका नहिकै २५१ ॥
सो सुकृती शुचि संत सुसन्त सुजान सुशील शिरोमणि स्वै ॥
सुर तीरथ तासु मनावत आवत पावन होत हैं ता तन छ्वै ॥
गुनगेह सनेह को भाजन सो सबही सों उठाय कहों भुज द्वै ॥
सतभाव सदाछलछाँड़ि सबै तुलसी जो रहै रघुवीर को ह्वै ॥२५२॥
सो जननी सो पिता सोई भ्रात सो भामिनि सो सुत सो हितमेरो ॥
सोई सगा सो सखा सोई सेवक सो गुरु सो सुर साहिब चेरो ॥
सो तुलसी प्रिय प्रानसमान कहाँलौं वनाय कहों बहुतेरो ॥
जो तज देहको गेहको नेह सनेह सों रामको होय सचेरो ॥२५३॥
राम है मातु पिता सुत बंधु औ संगी सखा गुरु स्वामि सनेही ॥
राम की सौंह भरोसो है राम को राम रँगी रुचि राचो नकेही ॥
जीवत राम मुये पुनि राम सदा रघुनाथहिं की गति जेही ॥
सोई जिये जगमें तुलसी नतु डोलत और मुये धर देही २५४ ॥
सिय राम स्वरूप अगाध अनूप विलोचन मीनन को जल है ॥

श्रुति रामकथा मुख रामको नाम हिये पुनि रामहिको थल है ॥
मति रामहिं सों गति रामहि सों रति राम सों रामहि को बल है ॥
सबकी न कहै तुलसीके मते इतनो जग जीवनको फलहै २५५ ॥
झूठो है झूठो है झूठो सदा जग संत कहंत न अंत लहा है ॥
ताको सहै शठ संकट कोटिक काढ़त दंत करंत हहा है ॥
जान पने को गुमानबडो तुलसी के बिचार गवाँर महा है ॥
जानकीजीवन जान न जान्यो तो जान कहावत जान कहा है२५६
तिनते खर सूकर श्वान भले जड़ता वश ते न कहैं कछु वै ॥
तुलसी जिहि राम सों नेह नहीं सो सही पशु पूछ विषाण न द्वै ॥
जननी कत भार मुई दसमास भई किन बांझ गई किन च्वै ॥
जरिजाउ सो जीवन जानकीनाथ जिये जगमें तुम्हरो बिन ह्वै २५७॥
गज बाजि घटा भले भूरि भटा बनिता सुत भौंह तकै सब कै ॥
धरनी धन धाम शरीर भला सुरलोकहू चाहि इहै सुख स्वै ॥
सब फोट्टक सोट्टक है तुलसी अपनो न कछू सपनो दिन द्वै ॥
जरिजाउ सो जीवन जानकीनाथ जिये जगमें तुम्हरो बिन ह्वै २५८॥
सुरराज सो राजसमाज समृद्ध विरिंचि धनाधिप सो धन भो ॥
पवमान सो पावन सो यम सोम सो पूषन सो भवभूषन भो ॥
कर योग समाधि समीरन साधिकै धीर बड़ो वशहू मन भो ॥
सबजाय सुभाय कहै तुलसी जो न जानकीजीवनको जन भो २५९॥
व्याल कराल महाविष पावक मत्त गयंदन के रद तोरे ॥
सासत संग चली डरपैहुते किंकर ते करनी मुख मोरे ॥
नेक विषाद नहीं प्रहलादहिं कारन केहरि के बल हो रे ॥
कौनकी त्रास करै तुलसी जोपै राखिहै राम तो मारिहै को रे २६०॥
कृपा जेहि की कछु काज नहीं न अकाज नहीं जेहिको मुख मोरे॥
करै तिनकी परवाहि को जाहि विषाण न पूंछ फिरै दिन दोरे॥

तुलसी जिहिके रघुवीर से नाथ समर्थ सो सेवक रीझत थोरे ॥
कहा भव भीर परी तिहिं धौं विचरै धरनी तिनसों तृण तोरे २६१॥
कानन भूधर वारि बयारि महाविष व्याधि दवा अरि घेरे ॥
संकट कोटि जहां तुलसी सुत मात पिता हित बंधु न नेरे ॥
राखिहैं राम कृपाल तहां हनुमान से सेवक हैं जेहिकेरे ॥
नाक रसातल भूतल में रघुनायक एक सहायक मेरे ॥ २६२ ॥
जबै यमराज रजायसु ते मोहिं लै चलिहैं भट बांधि नटैया ॥
तात न मात न स्वामि सखा सुत बंधु विशाल विपत्ति बटैया ॥
सासत घोर पुकारत आरत कौन सुनै चहुँओर डटैया ॥
एक कृपाल तहां तुलसी दशरत्थको नंदन बंदि कटैया ॥ २६३ ॥
जहां यम जातन घोर नदी भट कोटि जलच्चर दंत टेवैया ॥
जहां धार भयंकर वार न पार न बोहित नाव न मीत खेवैया ॥
तुलसी जहां मात पिता न सखा नहीं कोऊ कहूं अवलंब देवैया ॥
तहां बिनकारन रामकृपाल विशाल भुजागहि काढि लेवैया २६४॥
जहां हित स्वामि न संग सखा वनिता सुत वंधु न बाप न मैया ॥
काय गिरा मनके जनके अपराध सबै छल छांडि छमैया ॥
तुलसी तेहि काल कृपाल विना दूजो कौन है दारुनदुःखदमैया ॥
जहां सब संकट दुर्घट सोच तहां मेरो साहिब राखे रमैया ॥२६५॥
जप जोग विराग महामख साधन दान दया दम कोटि करै ॥
मुनि सिद्ध सुरेश गणेश महेश से सेवत जन्म अनेक मरै ॥
निगमागम ज्ञान पुरान पढ़े तपसानल में जुगपुंज जरै ॥
मन सो पन रोपि कहै तुलसी रघुनाथ विना दुख कौन हरै॥२६६॥
पाप हरे परिताप हरे तन पूजि भो हीतल शीतलताई ॥
हंस कियो वक ते वलि जाऊँ कहाँ लौं कहौं करुना अधिकाई ॥
काल विलोक कहै तुलसी मनमें प्रभुकी परतीति अघाई ॥

जन्म जहां तहँ रावरेसों निबहै भरि देह सनेह सगाई ॥ २६७ ॥
लोक कहै अस हौंहुँ कहौं जन खोटो खरो रघुनायक ही को ॥
रावरी राम बड़ी लघुता जश मेरो भयो सुखदायक ही को ॥
कै यह हानि सहो बलि जाउँ कि मोहू करो निजलायक ही को ॥
आनहियेहितमानकरो जो हौं ध्यान धरौं धनुशायक ही को॥२६८॥

कवित्त ।

छार ते सवार कै पहार हू ते भारी कियो गारो भयो पांचमें पुनीत पच्छ पाइ कै ॥ हौं तो जैसो तब तैसो अब अधमाइकै कै भरों पेट राम रावरोई गुन गाय कै ॥ आपने निवाजे कीजे कीजे लाज महाराज मेरी ओर हेरि कै न बैठिये रिसाय कै ॥ पालकै कृपाल व्यालवाल को न मारिये औ काटिये न नाथ विषहूको रूख लायकै ॥ २६९ ॥

वेद न पुरान गान जानो न विज्ञान ज्ञान ध्यान धारना समाधि साधन प्रवीनता ॥ नाहिन विराग जोग जाग भाग तुलसी के दया दान दूबरो हौं पापहीकी पीनता ॥ लोभ मोह काम कोह दोष कोप मो सो कौन कलिहू जो सिखि लइ मेरी ये मलीनता ॥ एकही भरोसो राम रावरो कहावत हौं रावरे दयाल दीनबंधु मेरी हीनता ॥ २७० ॥

रावरो कहावों गुन गावों राम रावरोई रोटी द्वै हौं पावों राम रावरी ही कानि हौं ॥ जानत जहान मन मेरेहू गुमान बडो मान्यो मैं न दूसरो न मानत न मानि हौं ॥ पांचकी प्रतीत न भरोसो मोहिं आपनोई तुम अपनायहो तबहि पर जानिहौं ॥ गढगूढ छोलछाल कुंद कैसी भाई बातें जैसी मुख कहौं तैसी जीय जब आनिहौं ॥ २७१ ॥

वचन विकार करतबहु खुआर मन विगतविचार कलिमलको निधान है ॥ रामको कहाय नाम बेंच बेंच खाय साधसंगत न जाय पाछिलेको उपखान है ॥ तेहू तुलसीको लोग भलो कहै ताको पुनि दूसरो न हेत एक नीके कै निदान है ॥ लोक-रीत विदित विलोकियत जहां तहां स्वामिके सनेह श्वानहूको सनमान है ॥ २७२ ॥

स्वारथको साज न समाज परमारथको मो सो दगावाज दूसरो न जगजाल है ॥ कौन आयो करो न करौंगो करतूति भली लिखी न विरिंचिहूं भलाई मोरे भाल है ॥ रावरी शपथ रामनाम हीकी गति मेरे इहां झूँठो झूँठो सो तिलोक तिहूंकाल है ॥ तुलसी को भलो पै तुम्हारेही किये कृपाल कीजै न विलंव बलि पानी-भरी खाल है ॥ २७३ ॥

रागको न साज न विराग जोग जाग जिय कायर न छांडिदेत ठाटिवो कुठाट को ॥ मनोराज करत अकाज भयो आज लग चाहै चारु चीर पै लहै न टूक टाट को ॥ भयो करतार वडे कूरको कृपाल अति पायो नाम पारस हौं लालची वराट को ॥ तुलसी वनी है राम रावरे बनाये न तो धोवी कैसो कूकर न घरको न घाटको ॥ २७४ ॥

सब अँग हीन सब साधन विहीन मन वचन मलीन हीन कुल करतूति हौं ॥ बुधि वल हीन भाव भगति विहीन दीन गुन ज्ञान हीन हीन भाग हू विभूति हौं ॥ तुलसी गरीवकी गई वहोर राम-नाम जाहि जप जीह राम हूं को बैठो धूति हौं ॥ प्रीत रामनामसों प्रतीत रामनामको प्रसाद रामनाम के पसारि पायँ सूति हौं २७५॥

जोग न विराग जप जाग तप त्याग व्रत तीरथ न धर्म जानों वेदविधि किमि है ॥ तुलसी सों पोच न भयो है नहिं ह्वै है

कहूं सोच सब याके अघ कैसे प्रभु छमि है ॥ मेरे तौ न डर रघु-वीर सुनो साँची कहौं खल अनखैहैं तुम्हें सज्जन न गमि है ॥ भले सुकृतीके संग मोहि तुला तौलिये तौ नामके प्रसाद भार मेरीओर नमिहै ॥ २७६ ॥

जातिके सुजातिके कुजातिके पेटागिवश खाये टूक सबके विदित बात दुनी सो ॥ मानस वचन काय किये पाप सतभाय रामको कहाय दास दगाबाज पुनि सो ॥ रामनामको प्रभाउ पाउ महिमा प्रताप तुलसी सो जग मानियत महामुनि सो ॥ अतिही अभागे अनुरागत न रामपद मूढ एतो बड़ो अचरज देख सुनी सो ॥ २७७॥

वेदहूं पुरान कही लोकहूं विलोकियत रामनाम ही से रीझे सकल भलाई है ॥ काशीहूं मरत उपदेशत महेश सोई सधन अनेक चितई न चित लाई है ॥ छाँछको ललात जेते रामनामके प्रसाद खात खुनसात सोंधे दूधकी मलाई है ॥ रामराज सुनियत राजनी-तकी अवधि नाम राम रावरो तो चामकी चलाई है ॥ २७८ ॥

जपकी न तप खप कियो न कमाई जोग जाग न विराग त्याग तीरथ न तनको ॥ भाईको भरोसो न खरोसो वर रिपुहू सो वल अपनो न हित जननी जनक को ॥ लोकको न डर परलोकको न सोच देवसेवा न सहाई गर्व धामको न धन को ॥ रामहीके नामते जो होई सोई नीकी लागे ऐसी ही सुभाउ कछु तुलसीके मनको ॥ २७९ ॥

ईश न गनेश न धनेश न दिनेश न सुरेश सुर गौरी गिरा पति नहिं जपने ॥ तुमरोई नामको भरोसो भवतरवेको वैठे उठे जागत वागत सोये सपने ॥ तुलसी है वावरो सो बावरोई रावरो सो रावरेहु जान जीव कीजिये जू अपने ॥ जानकीजीवन मेरे रावरे वदन फेरे ठाउँ न समाउँ कहूँ सकल निरपने ॥ २८० ॥

स्वारथ सयानप प्रपंच परमारथ कहायो राम रावरे हों जानत जहान है॥ नामके प्रताप बाप आज लौं निबह नीकी आगेकी गोसाईं स्वामी सबल सुजान है॥ कलिकी कुचाल देख दिन दिन दूनी देव पाहरोई चोर हेर हिय हहरान है॥ तुलसी की लिपि बार बार ही सम्हार कीबो यद्यपि कृपानिधान सदा सावधान है॥२८१॥

जागिये न सोइये बिगोइये न जन्म जाय दिन दुःख रोइये कलेश को है काम को॥ राजा रंक रागी औ विरागी भूरिभागी ये अभागी जीव जरत प्रभाव कलि बामको॥ तुलसी कबन्ध कैसो धायबो विचार अन्ध धन्ध देखियत जग सोच परिनाम को॥ सोइवो जो रामके सनेहकी समाधिसुख जागिवो जो जीह जपै नीके रामनाम को॥ २८२॥

बरन धरम गयो आमश्र निवास तज्यो त्रासन चकृत सों परावनों परोसो है॥ करम उपासना कुवासना बिनास्यो ज्ञान वचन विराग वेप जगत हरो सो है॥ गोरख जगायो जोग भगति भगायो लोग निगम नियोगते सो कलिते छरो सो है॥ काय मन वचन सुभाय तुलसी है जाहि रामनाम को भरोसो ताहि को भरोसो है॥ २८३॥

सवैया।

वेद पुरान विहाय सुपन्थ कुमारग कोटि कुचाली चली है॥
काल कराल नृपाल कृपाल न राजसमाज वड़ोही छली है॥
वर्णविभाग न आश्रमधर्म दुनी दुख दोप दरिद्र दली है॥
स्वारथको परमारथको कलि रामको नाम प्रताप वली है॥ २८४॥
न मिटे भवसंकट दुर्घट है तप तीरथ जन्म अनेक अटो॥
कलिमें न विराग न ज्ञान कहूँ सव लागत फोकट झूँठ जटो॥

नट ज्यों जिन पेट कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो॥
तुलसी जो सदासुख चाहिये तो रसना निशिवासर राम रटो॥२८५॥
दम दुर्मद दान दया मख कर्म सुधर्म अधीन सबै धनको॥
तप तीरथ साधन योग विराग सु होय नहीं दृढ़ता तनको॥
कलिकाल करालमें राम कृपाल इहै अवलम्ब बड़ी मनको॥
तुलसी सब संजम हीन सबै एक नाम अधार सबै जनको॥२८६॥
पाय सुदेह विमोह नदी तरनी न लही करनी न कछूकी॥
रामकथा बरनी न बनाय सुनी न कथा प्रहलाद न ध्रूकी॥
अब जोर जरा जर गात गये मन मान गलान कुबान न मूकी॥
नीकैकै ठीक दई तुलसी अवलम्ब बडी उर आखर दूकी॥२८७॥
राम विहाय मरा जपते बिगरी सुधरी कवि कोकिलहूकी॥
नामहिंते गजकी गनकाहू अजामिलकी चलिगै चल चूकी॥
रामप्रताप बडे कुसमाज बचाय रही पति पांडुवधूकी॥
ताको भलो अजहूँ तुलसी जेहि प्रीति प्रतीतिहै आखर दूकी॥२८८॥

कवित्त।

बबुर बहरको बनाय बाग राखियत रूँधबेको सोऊ सुरतरु काटियत है। गारी देत नीच हरिचंदहू दधीचहूको आपने चना चबाय हाथ चाटियत है॥ आप महापातकी हँसत हरि हरहूको आप है अभागी भूरिभागी डाटियत है॥ कलिकी कलुप मन मलिन किये महत मशककी पाँसुरी पयोधि पाटियत है॥२८९॥

सवैया।

कीबे कहा पढ़बेको कहा फल बूझ न वेदको भेद विचार्यो॥
स्वारथको परमारथका कलि कामद रामको नाम विसार्यो॥
वाद विवाद विपाद बढायकै छाती पराई औ आपनि जार्यो॥
चारहुकोछहुको नवको दसआठको पाठ कुकाठ ज्यों कार्यो॥२९०॥

कवित्त।

नाहीं मेरे जाति पाँति नाहीं मेरे माय बाप नाहीं मेरे कोऊ काम हौं न काहू कामको ॥ लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब भारी है भरोसो तुलसीके एक नामको ॥ अति ही सयानो उपखानो नहिं बूझे लोग साहिबके गोत गोत होत है गुलामको ॥ साधुके असाधुके भलौंके पोच सोच कहां का काहू के द्वार परचो जो हौं सो हौं रामको ॥ २९१ ॥

कोऊ कहै करत कुसाज दगाबाज बडो कोऊ कहै रामको गुलाम खरो खूब है ॥ साधु जाने महा साधु खल जाने महाखल बानी झूँठी सांची कोटि उठत हबूब है ॥ चहत न काहू सो कहत न काहूको कछू सबकी सहत उर अन्तर न ऊब है ॥ तुलसीको भलो पोच हाथ रघुनाथ हीके रामकी भगति भूमि मेरी मति दूब है ॥ २९२ ॥

जागे जोगी जंगम जती समाधि ध्यान धरैं डरैं उर भारी लोभ मोह कोह कामके ॥ जागे राजा राज काज सेवक समाज साज सोचैं सुन समाचार बडे वैरी वामके ॥ जागे बुध विद्याहित पंडित चकित चित जागे लोभी लालच धरनि धन धामके ॥ जागे भोगी भोग ही वियोगी रोगी रोगवश सोवे सुख तुलसी भरोसे एक रामके ॥ २९३ ॥

छंद षट्पद।

राम मात पितु बंधु सुजन गुरु पूज्य परम हित । साहब सखा सहाय नेह नातो पुनीत चित ॥ देश कोश कुल धर्म कर्म धन धाम धरनि गति । जाति पांति सबभांति लागि रामहि हमारि पति ॥ परमारथ स्वारथ सुयश सुलभ रामते सकल फल । कहै तुलसिदास अब जब कबहुँ एक रामते मोर भल ॥ २९४ ॥

महाराज बलजाउँ राम सेवक सुखदायक । महाराज बलजाउँ राम सुन्दर सबलायक॥ महाराज बलजाउँ राम सबसंकटमोचन॥ महाराज बलजाउँ राम राजीवविलोचन ॥ बलजाउँ राम करुणायतन प्रणतपाल पातकहरन । बलजाउँ राम कलिमलविकल तुलसिदास राखिय शरन ॥ २९५ ॥

जय ताड़का-सुबाहुमथन मारीचमानहर । मुनिमखरक्षण दक्ष शिला तारन करुनाकर ॥ नृपगन बल मद सहित शंभुकोदंड विहंडन ॥ जय कुठारधर दर्पदलन दिनकर कुलमंडन ॥ जय जनकनगर आनन्दप्रद सुख सागर सुखमा भवन ॥ कहे तुलसिदास सुरमुकुटमणि जय जय जय जानकिरमन ॥ २९६ ॥

जाय सो सुभट समर्थ पाय रन रारि न मंडे ॥ जाय सो यती कहाय विषै वासना न छंडे ॥ जाय धनिक विन दान जाय निरधन बिन धर्महि॥जाय सो पंडित पढ़ पुरान जो रत न सुकर्महि ॥ सुत जाय मात पितु भगति विन तिय सो जाय जिहि पति न हित ॥ सब जाइ दास तुलसी कहै जो न रामपदनेह नित ॥२९७॥

को न क्रोध निरदहेउ काम वश केहि नहिं कीनो ॥ को न लोभ दृढफंद बांध त्रासन करदीनो ॥ कवन हृदय नहिं लाग कठिन अंति नारिनयन शर ॥ लोचनयुत नहिं अंध भयो श्री पाय कवन नर ॥ सुर नाग लोक महिमंडलहु को जु मोह कीनो जय न॥ कहै तुलसिदास सो उबर जेहि राख राम राजिवनयन ॥ २९८ ॥

सवैया ।

भौंह कमानसँधानसुठान जे नारि विलोकन वान ते वाचे ॥
कोप कृशानु गुमान अवाँवट ज्यों जिनके मन आवत आंचे ॥
लोभ सबे नटके वश ह्वै कपि ज्यों जगमें बहु नाचन नाचे ॥
नीके हैं साधु सबै तुलसी पै तेई रघुवीरके सेवक सांचे ॥ २९९ ॥

कवित्त।

भेष सुबनाय भले वचन कहे चुबाय जाय तो न जरानि धरनि धन धामकी। कोटिक उपाय कर लाल पालियत देह मुख कहियत गति रामहीके नाम की॥ प्रगटै उपासना दुरावे दुर्वासना हि मानस निवासभूमि लोभ मोह काम की। राग रोष ईरषा कपट कुटिलाई भरे तुलसीसे भगत भगति चहै रामकी ॥३००॥

काल ही तरुन तन काल ही धरनि धन काल ही जितौंगो रन कहत कुचालि है॥ काल ही साधोंगो काज काल ही राजा समाज मोसों कोऊ कहा भारो महि मेरु हालि है॥ तुलसी यही कुभांति घने घर घालि आये घने घर घालत है घने घर घालि है॥ देखत कहत समुझत हूँ न सूझे सोई कबहूँ कह्यो न कालहूँ को काल कालि है॥ ३०१॥

भयो न तिकाल तिहूँ लोक तुलसी सो मन्द निंदैं सब साधु सुनि मानो न सँकोच हौं। जानको अयोगहिय हानि मानै जानकीश काहेको परेखो हौं प्रपंची पापी पोच हौं॥ पेट भरवेके काज महाराजको कहायो महाराजहू कह्यो है प्रनतविमोच हौं॥ निज अघजाल कलिकालकी करालता विलोकि होत व्याकुल करत सोई सोच हौं॥ ३०२॥

राग देवगंधार।

यह मन नेक न कह्यो करै। सीख सिखाय रह्यो अपनी सी दुरमति ते न टरै॥ मद माया के भयो बावरो हरि यश नहिं उचरै। कर परपंच जगत को डहकै अपनो उदर भरै॥ श्वान पूछ ज्यों होय न सूधो कह्यो न कान धरै। कहु नानक भज राम नाम नित जाते काज सरै॥ ३०२॥

राग देवगंधार।

सब कछु जीवतको व्यवहार। मात पिता भाई सुत बांधव अरु पुन गृहकी नार॥ तनते प्राण होत जब न्यारे टेरत प्रेत पुकार। आध घरी कोऊ नहीं राखै घरते देत निकार॥ मृगतृष्णा ज्यों जग रचना यह देखो हृदय विचार॥ कहु नानक भजराम नाम नित जाते होत उधार॥ ३०४॥

राग देवगंधार।

जगतमें झूँठी देखीप्रीति। अपनेही सुखसों सब लागे क्या दारा क्या मीत॥ मेरो मेरो सभी कहत हैं हित सो बांध्यो चीत। अंतकाल संगी नहिं कोऊ यह अचरज है रीत॥ मन मूरख अजहूं नहिं समझत शिख देहारचोनीत। नानक भौ जल पार परै जो गावै प्रभुके गीत॥ ३०५॥

राग सोरठ।

मनकी मनही माहिं रही। ना हरि भजे न तीरथ सेवे चोटी काल गही॥ दारा मीत पूत रथ संपति धन जन पूर्ण मही। और सकल मिथ्या यह जानो भजन राम को सही॥ फिरत फिरत बहुते जुग हारचो मानस देह लही। नानक कहत मिलनकी बिरियां सुमिरत कहा नहीं॥ ३०६॥

राग सोरठ।

मन रे कौन कुमति तैं लीन्ही। पर दारा निंदा रस राच्यो राम भगति नहिं कीनी॥ मुक्ति पंथ जान्यो तैं नाहिंन धन जोरन को धायो। अन्त सङ्ग काहू नहिं दीनो बिरथा आप बँधायो॥ ना हरि भजे न गुरु जन सेयो नहिं उपज्यो कछु ज्ञाना। घट ही माहिं निरंजन तेरे तैं खोजत उद्याना॥ बहुत जन्म भरमत तैं हारचो अस्थिर मति नहिं पायो। मानस देह पाय पद हरि भज नानक बात बतायो॥ ३०७॥

कवित्त।

धरमको सेतु जगमंगल को हेतु भूमिभार हरबे को अवतार लिये नर को। नीति औ प्रतीति प्रीति पाल चाल प्रभुनाम लोक वेद राखबेको पन रघुवीरको॥ वानर विभीषणकी ओरको कनावड़ो है सो प्रसंग सुने अंग जरै अनुचर को। राखे रीति अपनी जो होय सोई कीजै बलि तुलसी तिहारो घर जाइडोहै घरको॥ ३०८॥

नाम महाराजके निवाही नीकी कीजे उर सबहि सोहात मैंन लोगन सोहातहौं। कीजै राम बार एक मेरीओर चषकोर ताहि लग रंक ज्यों सनेह को ललात हौं॥ तुलसी विलोक कलिकालकी करालता कृपालको सुभाउ समुझत सकुचातहौं। लोक एक भांति-को त्रिलोक नाथ लोक बस आपनो न सोच स्वामीसोचही सुखातहौं॥ ३०९॥

तोलौं लोभ लोलुप ललात लालची लवार बार वार लालच धरनि धन धामको॥ तवलौं वियोग रोग सोगभोग यातनाके युग सम लागत जीवन जाम जाम को॥ तौलौं दुख दारिद दहत अति नित तन तुलसी है किंकर विमोह कोह कामको। सब दुख अपने निरापने सकल सुख जोलौं जन भयो न वजाय राजा राम को॥ ३१०॥

तबलौं मलीन हीन दीन सुख सपने न जहां तहां दुखी जन भाजन कलेस को। तबलौं उवेने पाये फिरत पेटौ खलाये वाये मुह सहत पराभौ देस देस को॥ तवलौं दयावनो दुसह दुख दारिद को साथरी को सोइबो ओढवो झूनेखेसको। जबलौं न भजै जीह जानकीजीवन राम राजन को राजा सो तो साहिब महेसको॥ ३११॥

ईसनके ईस महाराजन के महाराज देवन के देव दव प्रानहूके प्रान हौ। कालहूके काल महाभूतन के महाभूत कर्महू के करम निदान के निदान हौ। निगम को अगम सुगम तुलसीहू से कोऊ एते मान शील सिंधु करुना निधान हौ॥ महिमा अपार काहु बोल को न वारपार वडी साहिवी में नाथ वडे सावधान हौ॥ ३१२॥

सवैया।

आरतपाल कृपाल जो राम जहीं सुमिरेतिहको तहिं ठाढे॥
नाम प्रताप महामहिमा अकरे किये खोटेउ छोटेउ वाढ़े॥
सेवक एक ते एक अनेक भये तुलसी तिहुं तापन डाढ़े॥
प्रेम वदौं प्रहलादहि को जिन पाहन ते परमेश्वर काढे॥ ३१३॥
काढ कृपान कृपा न कहूं पितु काल कराल विलोकि गे भागे॥
राम कहां सव ठांउहे खंभमें हांसुनि हांक नृकेहरी जागे॥
वैरी विदार भये बिकराल कहे प्रहलादहिं के अनुरागे॥
प्रीतिप्रतीत वढ़ी तुलसी तवते सव पाहन पूजन लागे॥ ३१४॥
अंतरजामिहु ते वढ वाहिर जामि हैं राम जे नाम लिये ते॥
धावत धेनु पन्हाय लवाय ज्यों वालक वोलन कान कियेते॥
आपन वूझ कहै तुलसी कहवे की न वावरि वात वियेते॥
पैज परे प्रहलाद हु को प्रगटे प्रभु पाहन ते न हियेते॥ ३१५॥
वालक वोल दियो वलि काल को कायर कोटि कुचालचलाई॥
पापी हे वाप वडो परिताप तें आपनि ओर ते खोर न लाई॥
भूरि दई विप मूरि भई प्रहलाद सुधाई सुधाकी मलाई॥
रामकृपा तुलसी जनको जग होत भले को भलोई भलाई ३१६॥
कंस करी व्रजवासिन पै करतूति कुभांति चली न चलाई॥
पांडु के पूत सपूत कपूत सुयोधन भो कलि छोटे छलाई॥

कान्ह कृपाल बड़े नतपाल गये खल खेचर खीस खलाई ॥
ठीक प्रतीत कहै तुलसी जग होय भले को भलोई भलाई ॥२१७॥
अवनीस अनेक भये अवनी जिनके डर ते सुर सोच सुखाहीं ॥
मानव दानव देव सतावन रावन घाट रच्यो जग माहीं ॥
ते मिलये धर धूर सुयोधन जे चलते बहु छत्रकी छाहीं ॥
वेद पुरान कहै जग जान गुमान गोविंदहिं भावत नाहीं ॥ २१८ ॥
जब नैनन प्रीत गई ठग स्याम सों स्यानी सखी हठ हौं बरजी ॥
नहीं जानो वियोग सुरोगसो आगे झुकी तब हौं तेहिंसों तरजी ॥
अब देह भई पट नेह के छाले सो ब्योंत करे बिरहा दरजी ॥
ब्रजराज कुमार विना सुन भृंग अनंग भयो जियको गरजी ॥२१९॥
योग कथा पठई ब्रज को सब सो शठ चेरी को चाल चलाकी ॥
ऊधोजी कौन कहै कुबरी जो वरी नटनागर हेर हलाकी ॥
जाहि लगे पर जाने सोई तुलसी सो सुहागिनि नंदललाकी ॥
जानिहै जान पनी हरिकीअब बांधियेगी कछु पोट कलाकी॥२२०॥

कवित्त ।

पठयो है छपद छबील कान्ह केहू कहूं खोजके खवास खासे कूबरीसी बालको । ज्ञानको गढ़ैया विन गिरिको पढ़ैया वार खालको कढ़ैया सो बढ़ैया उर सालको ॥ प्रीतिको वधिक रस रीतिको अधिक नीति निपुण विवेक है निदेश देश कालको ॥ तुलसी कहे न बने सहे ही बनेगो सब योग भयो योगको वियोग नंदलालको ॥ २२१ ॥

हनुमान ह्वै कृपाल लाडिले लखन लाल भावते भरत हैं सेवक सहायं जू ॥ विनती करत दीन दूबरो दयावनो सो विगरे ते आप ही सुधारि लीजे भायजू । मेरी साहिबनी सदा शीश पर विलसत

देवि क्यों न दासको देखाइयत पाय जू ॥ खीझहूमें रीझवेकी बानी राम रीझत है रीझि हैं ई रामकी दोहाई रघुराय जू ॥ ३२२ ॥

सवैया ।

वेप विरागको राग भरो मनभाव कहों सत भाव हौं तोसों ॥ तेरेही नाथको नामलै वेचहों पातकी पाँवर प्रानन पोसों ॥ एते वडे अपराध अघी कहूँ तू कहूँ अंब कि मेरे तु मोसों ॥ स्वारथको परमारथको परिपूरन भो फिर घाट न होसों ॥३२३॥

कवित्त ।

जहाँ वालमीक भये व्याधते मुनिंद साधु मरा मरा जपे सिख सुन ऋषि सात की । सियको नेवास लव कुश को जनम थल तुलसी छुवत छाँह ताप गरे गात की ॥ विटप महीप सुर सरित समीप सोहै सीतावट पेखत पुनीत होत पात की । वारि पुर दिग पुर बीच विलसत भूमि अंकित जो जानकी चरन जल जातकी ॥ ३२४ ॥

मरकतवरन परन फल मानिकसे लसे जटाजूट जनु रूख वेख हर है । सुखमाको ढेर कैधों सुकृत सुमेरु कैधों संपदा सकल मुद मङ्गलको घर है ॥ देत अभिमत जो समेत प्रीत सेइये प्रतीत मान तुलसी विचार काको थर है ॥ सुरसरि निकट सोहावानि अवनि सोहै रामरवनीको वट कलि कामतर है ॥ ३२५ ॥

देवधुनि पास मुनिवास श्रीनिवास जहाँ प्राकृत हू वट वुट वसत पुरारि है । जोग जपें जोग को विराग को पुनीत पीठ रागिन को सींठी डीठी वाहरो निवार है ॥ आहस अँदेस वात्र भलो भलो भाव सिध तुलसी विचार जोगी कहत पुकार है । राम भगतनको तो कामतरु ते अधिक सियवट सेये करतल फल चार है ॥ ३२६ ॥

जहाँ वन पावनो सुहावने विहंग मृग देख अति लागत अनन्द खेत खूट सो ॥ सीता राम लक्ष्मण निवास वास मुनिनको सिद्ध साध साधक सबै विवेक बूट सो ॥ झरना झरत झार शीतल पुनीत वारि मन्दाकिनि मंजुल महेश जटाजूट सो । तुलसी जो राम सों सनेह साँचो चाहिये तौ सेइये सनेह सों विचित्र चित्रकूट सों ॥ ३२७॥

सवैया ।

ब्रह्म जो व्यापक वेद कहैं गम नाहिं गिरा गुन ज्ञान गुनीको ॥
जो करता भरता हरता सुरराय सुसाहिब दीनदुनीको ॥
सोई भयो द्रवरूप सही जोहै नाथ विरंचि महेश मुनीको ॥
मान प्रतीत सदा तुलसी जल काहेन सेवत देवधुनीको ॥३२८ ॥
दानि जो चारि पदारथ को त्रिपुरारि तिहूँ पुरमें सिरटीको ॥
भोरो भलो भले भाय को भूखो भलोई कियो सुमिरे तुलसी को॥
ता विन आसको दासभयो कवहूं न मिट्यो लघु लालच जीको ॥
साधो कहा कर साधन ते जो पै राधो नहीं पति पारवती को॥३२९॥
जाते जरे सव लोक विलोक त्रिलोचन सो विप लोक लियो है॥
पान कियो विप भूपण भो करुणा वरुणालय साईं हियो है ॥
मेरोई फोरवेयोग कपार किधों कछु काहू लखाय दियो है ॥
काहे न कान करो विनती तुलसी कलिकाल विहाल कियो है३३०॥

राग विलावल ।

दीन दयाल दिवाकर देवा । कर मुनि मनुज सुरासुर सेवा ॥
हिम तम करि केहरि करमाली । दहन दोप दुख दुरितरुजाली ॥
कोक कोकनद लोक प्रकासी । तेज प्रताप रूप रस रासी ॥
सारथि पंगु दिव्य रथ गामी । हरि शंकर विधि मूरति स्वामी ॥
वेद पुरान प्रगट यश जागे । तुलसी राम भगति वर मांगे ॥३३१॥

को याचिये शंभु तज आन । दीन दयाल भगत आरति हर सब प्रकार समरथ भगवान ॥ कालकूट ज्वर जरत सुरासुर निज पल लाग कियो विप पान । दारुण दनुज जगत दुख दायक माऱ्यो त्रिपुर एक ही वान ॥ जो गति अगम महामुनि दुरलभ कहत सन्त श्रुति सकल पुरान । सोई गति मरन काल अपने पुर देत सदाशिव सबहि समान । सेवत सुलभ उदार कलपतरु पारवती पति परम सुजान । देहु राम पद नेहु काम रिपु तुलसि दास कहँ कृपा निधान ॥ २३२ ॥

राग धनाश्री ।

दानी कहुँ शंकर से नाहीं । दीन दयाल दिवो ही भावे याचक सदा सुहाहीं ॥ मारिके मार थप्यो जगमें जाकी प्रथम रेख भट माहीं ॥ ता ठाकुरको रीझ निवाजवो कह्यो क्यों परत मो पाहीं ॥ योग कोटि करि जो गति हरिसों मुनि माँगत सकुचाहीं । वेद विदित तेहि पद पुरान पुर कीट पतंग समाहीं ॥ ईश उदार उमापति परिहर अनत जे याचन जाहीं । तुलसिदास ते मूढ़ माँगने कवहुँ न पेट अघाहीं ॥ २३३ ॥

वावरो रावरो नाह भवानी । दानी वड़ो दिन देत दिये विन वेद वड़ाई भानी ॥ निज घरकी वर वात विलोकहु हो तुम परम सयानी । शिवकी दई सम्पदा देखत श्री शारदा सिहानी ॥ जिनके भाल लिखी लिपि मेरी सुखकी नहीं निसानी । तिन रंकनको नाक सँवारत हौं आयो नकवानी ॥ दुखी दीनता दुखियनके दुख याचकता अकुलानी । यह अधिकार सौंपिये औरहिं भीख भली में जानी ॥ प्रेम प्रशंसा विनय व्यंग युत सुन विधिकी वर वानी । तुलसी मुदित महेश मनाई मन जगत मातु मुसकानी ॥ २३४ ॥

भजन-राग रामकली ।

मांगिये गिरिजापति कासी । जासु भवन अणिमादिक दासी॥ औढर दानि द्रवत पुनि थोरे । सकत न देखि दीन कर जोरे ॥ सुख सम्पति मति सुगति सुहाई । सकल सुलभ शंकर सेवकाई ॥ गये जे शरण आरतिके लीने । निरख निहाल निमिष महँ कीने॥ तुलसिदास याचक यश गावै । विमल भक्ति रघुपतिकी पावै २२५॥

कस न दीन पर द्रवहु उमा वर । दारुणविपति हरण करुणा कर वेद पुराण कहत उदार हर । हमरी बेर का भयो कृपिनंतर ॥ कवनि भक्ति कीनी गुणनिधि द्विज । ह्वै प्रसन्न दीन्यो शिव पद निज ॥ जो गति अगम महामुनि गावहिं । तव पुर कीट पतंग हु पावहिं ॥ देहु काम रिपु रामचरण रति । तुलसिदास प्रभु हरहु भेद मति ॥ २२६ ॥

जय जय जग जननि देवि सुर नर मुनि असुर सेवि भक्त भूति दायनि भयहरनि कालिका । मंगल मुद सिद्ध सदनि पर्व शर्वरीश वदनि ताप तिमिर तरुक तरणि किरणि मालिका॥ वर्म चर्म कर कृपाण शूल शक्ति धनुष बाण धरणि दलनि दानव दल रण करालिका । पूतना पिशाच प्रेत डाकिनी शाकिनी समेत भूत ग्रह वेताल खग मृगालि जालिका ॥ जय महेश भामिनी अनेक रूप नामिनी समस्त लोक स्वामिनी हिम शैल बालिका ॥ रघुपति पद परम प्रेम तुलसी चहैं अचल नेम देहु ह्वै प्रसन्न पाहि प्रणत पालिका ॥ २२७ ॥

राग धनाश्री ।

जयति जय सुरसरी जगदखिल पावनी । विष्णुपद कञ्ज मकरंद इव अंबु वर वहसि दुख दहसि अघ वृन्द विद्रावनी ॥ मिलत जल पात्र अज युक्त हरि चरण रज विरज वर वारि त्रिपुरारि शिर

धामिनी । जह्नु कन्या धन्य पुण्य कृत सगर सुत भूधर द्रोणि विद्दरणि बहु नामिनी ॥ यक्ष गंधर्व मुनि किन्नरोरग दनुज मनुज मज्जहिं सुकृत पुञ्ज युत कामिनी । स्वर्ग सोपान विज्ञान ज्ञानप्रदे मोह मद मदनपाथोज हिम यामिनी ॥ हरित गंभीर वानीर दुहुँ तीर वर मध्यधारा विशद विश्व अभिरामिनी । नील पर्यङ्क कृत शयन सर्पेश जनु सहस शीशावली स्रोत सुर स्वामिनी ॥ अमित महिमा अमित रूप भूपावली मुकुट मणि वंध त्रैलोक पथ गामिनी देहु रघुवीर पद प्रीति निर्भर मातु दास तुलसी त्रास हरणि भव भामिनी ॥ २२८ ॥

सेइये सहित सनेह देह भर कामधेनु कलिकासी । शमन शोक सन्ताप पाप रुज सकल सुमंगलरासी ॥ मर्यादा चहुँ ओर चरण-वर सेवत सुरपुर वासी । तीरथ सव शुभ अंग रोम शिव लिंग अमित अविनाशी ॥ अंतर अयन अयन भल थल फल वच्छ वेद विश्वासी । गल कंवल वरुणा विभाति जनु लूम लसत सरितासी ॥ दण्डपाणि भैरव विषाण मल रुचि खल गण भय दासी । लोल दिनेश त्रिलोचन लोचन कर्ण घंट घंटासी ॥ मणिकर्णिका वदन शशि सुंदर सुर सरिस सुखमासी । स्वारथ परमारथ परिपूरण पंचकोश महिमा सी ॥ विश्वनाथ पालक कृपाल चित लालति नित गिरिजा सी । सिद्धि शची शारद पूजहिं मन जोगवत रहत रमासी ॥ पंचाक्षरी प्राण मुद माधव गव्य सुपंच नदासी । ब्रह्म जीव सम राम नाम दोउ आखर विश्वविकासी ॥ चारितचारि कुकर्म कर्मकर मरतजीव गण घासी । लहत परमपद पय पावन जिहि चहत प्रपंच उदासी ॥ कहत पुराण रची केशव निज कर करतूति कलासी । तुलसी बस हर पुरी राम जप जो भयो चहै सुपासी ॥ २२९ ॥

राग वसन्त ।

सब शोच विमोचन चित्रकूट । कलिहरन करन कल्याण बूट ॥ शुचि अवनि सुहावति आलवाल । कानन विचित्र वारीविशाल ॥ मंदाकिनि मालिनि सदा सींच । वर वारि विषम नर नारि नीच ॥ शाखा सुशृंग भूरुह सुपात । निरझर मधु वर मृदु मलय वात ॥ शुक पिक मधुकर मुनिवर विहार । साधन प्रसून फल चारु चार ॥ भव घोर घाम हर सुखद छाँह । थप्यो थिर प्रभाउ जानकी नाह ॥ साधक सुपथिक बडे भाग पाइ । पावत अनेक अभिमत अघाइ ॥ रस एक रहत गुण कर्म काल ॥ सिय राम लषण पालक कृपाल ॥ तुलसी जो रामपद चहिय प्रेम । सेइय गिरि कर निरुपाधि नेम ॥ ३४० ॥

अब चित चेत चित्रकूटहिंचल । कोपित कलि लोपित मंगल मग विलसत बढ़त मोह माया मल ॥ भूमि विलोक रामपद अंकित वन विलोकि रघुवर विहार थल ॥ शैल शृंग भव भंग हेतु लख दलन कपट पाखंड दंभ दल ॥ जहँ जन्मे जग जनक जगतपति विधि हरि हर परिहर प्रपंच छल । सुकृत प्रवेश करत जिहिं आश्रम विगत विषाद भये पारथनल ॥ नकरविलंब विचार चारु मति वर्ष पाछिले सम अगिलेपल । मंत्र सो जाय जपहिं जो जपत में अजर अमर हर अचय हलाहल ॥ रामनामजप याग करत नित मज्जत पय पावन पीवत जल । करि हैं राम भावतो मनको सुखसाधन अनयास महाफल ॥ कामदमणि कामदा कल्पतरु सो युग युग जागत जगतीतल । तुलसी तोहिं विशेष बूझिये एक प्रतीति प्रीति एकैबल ३४१

राग सारंग ।

जाके गति है हनुमान की । ताके पयज पूज आई यह रेखा कुलिश पषानकी ॥ अघटित घटन सुघट विघटन ऐसी विरुदावली

नहिं आनकी। सुमिरत संकट शोच विमोचन मूरति मोद निधान की ॥ तापर सानुकूल गिरिजा हर लषण राम अरु जानकी। तुलसी कपिकी कृपा विलोकन खानि सकल कल्यानकी ॥ ३४२ ॥

अति आरत अति स्वारथी अतिदीन दुखारी। इनको विलग न मानिये बोलहिं न विचारी ॥ लोकरीति देखी सुनी व्याकुल नर नारी। अति वरपे अन वरपे हूं देहि देवहि गारी ॥ नाकहि आये नाथसों सासत भयभारी। कहआयो कीबी क्षमा निज ओर निहारी ॥ समय सांकरे सुमिरिये समरथ हितकारी। सो सब विधि ऊपर करै अपराध विसारी ॥ बिगरी सेवककी सदा साहिबहिं सुधारी। तुलसी पर तेरी कृपा निरुपाधि निहारी ॥ ३४३ ॥

राग गौरी।

मंगल मूरति मारुतनंदन। सकल अमंगल मूल निकंदन ॥ पवनतनय संतन हितकारी। हृदय विराजत अवध विहारी ॥ मात पिता गुरु गणपति शारद। शिवा समेत शंभु शुक नारद ॥ चरण बंदि विनवों सब काहू। देहु रामपद नेह निबाहू ॥ बंदों राम लषण वैदेही। जो तुलसीके परम सनेही ॥ ३४४ ॥

राग केदार।

कबहुँक अंब अवसर पाइ। मेरियै सुधि द्यायबी कछु करुण कथा चलाइ ॥ दीन सब अंग हीन क्षीन मलीन अघी अघाय। नाम ले भरों उदर इक प्रभु दासी दास कहाय ॥ बूझिहैं सो है कौन कहबो नाम दशा जनाय। सुनत राम कृपालुके मेरी बिगरिऔ बनिजाय ॥ जानकी जग जननि जनकी किये बचन सहाय। तरै तुलसीदास भव तव नाथ गुण गण गाय ॥ ३४५ ॥

राग केदार।

कबहुँ समय सुधि द्यायबी मेरी मातु जानकी ॥ जन कहाय नाम लेत हों पन चातक ज्यों प्यास सुप्रेम पानकी ॥ सरल प्रकृति आप जानिये करुणानिधानकी ॥ निज गुण अरिकृत अनहितो दास दोष सुरति चित रहत न दिये दानकी ॥ बानि बिसारणशील है मानद अमानकी ॥ तुलसीदास न बिसारिये मन क्रम वचन जाके सपनेहुं गति नहिं आनकी ॥ ३४६ ॥

राग रामकली।

ऐसी आरती राम रघुबीरकी करहि मन ॥ हरण दुख द्वंद्व गोविंद आनन्द घन ॥ अचर चर रूप हरि सर्वगत सर्वदा वसत इति वासना धूप दीजे ॥ दीप निज बोध गत क्रोध मद मोह तम प्रौढ़ अभिमान चित्तवृत्ति छीजे ॥ भाव अतिशय विशद प्रवर नैवेद्य शुभ श्रीरमण परम संतोषकारी ॥ प्रेम तांबूल गत शूल संशय सकल विपुल भव वासना बीजहारी ॥ अशुभ शुभ कर्म घृत पूर्ण दश वर्तिका त्याग पावक सतोगुण प्रकासं ॥ भक्ति वैराग्य विज्ञान दीपावली अर्पि नीराजनं जग निवासं ॥ विमल हृदि भवन कृत शांति पर्यंङ्क शुभ शयन विश्राम श्रीराम राया ॥ क्षमा करुणा प्रभु स्वतंत्र परिचारिका यत्र हरि तत्र नहिं भेद माया ॥ यह आरती निरत सनकादि श्रुति शेष शिवदेव ऋषि अखिल मुनि तत्त्व दरशी ॥ करै सोई तरै परिहरै कामादि मल वदत इति अमल मति दास तुलसी ॥ ३४७ ॥

राग रामकली।

हरत सब आरति आरती राम की ॥ दहत दुख दोष निर्मूल नी-कामकी ॥ सुभग सौरभ धूप दीप वर मालिका ॥ उड़त अघ विहंग सुन ताल करतालिका ॥ भक्त हृदि भवन अज्ञान तम हारिणी ॥

विमल विज्ञान मय तेज विस्तारणी ॥ मोहमद कोह कालि कंज हिम यामिनी ॥ मुक्तिकी दूतिका देह द्युति दामिनी ॥ प्रणत जन कुमुद वन इंदु कर जालिका । तुलसि अभिमान महिपेश बहु कालिका ॥ ३४८ ॥

राग जैतश्री।

मन इतनोई या तनुको परम फल । सब अँग सुभग विंदु माधव छवि तज सुभाव अवलोक एक पल ॥ तरुण अरुण अंभोज चरण मृदु नख द्युति हृदय तिमिर हारी । कुलिश केतु यव जलज रेख वर अंकुश मन गज वशकारी ॥ कनक जटित मणि नूपुर मेखल कटि तट रटत मधुर वानी ॥ त्रिवली उदर गँभीर नाभिसर जहि उपजे विरिंचि ज्ञानी ॥ उरवनमाल पदिक अति शोभित विप्र चरण चित कहँ करषैं । श्याम तामरस दाम वरण वपु पीतवसन शोभा वरषै ॥ कर कंकण केयूर मनोहर देत मोद मुद्रिक न्यारी ॥ गदा कंज दर चारु चक्र धर नाग शुंड सम भुज चारी । कंबु ग्रीव छवि सींव चिबुक द्विज अधर अरुण उन्नत नासा ॥ नव राजीव नयन शशि आनन सेवक सुखद विशद हासा । रुचिर कपोल श्रवण कुण्डल शिर मुकुट सुतिलक भाल भ्राजे ॥ ललित भ्रुकुटी सुन्दर चितवन कच निरख मधुप अवली लाजे । रूप शील गुण खानि दक्षि दिशि सिंधुसुता रत पदसेवा ॥ जाकी कृपा कटाक्ष चहत शिव विधि मुनि मनुज दनुज देवा ॥ तुलसिदास भव त्रास मिटै तब जब मति यह स्वरूप अटकै । नाहिं तो दीन मलीन हीन सुख कोटि जनम भ्रमि भ्रमि भटकै ॥ ३४९ ॥

राग भैरव ।

राम राम रम राम राम रट राम राम जप जीहा ॥ राम नाम नव नेह मेहको मन हठ होहि पपीहा ॥ सब साधन फल

कूप सरित सर सागर सलिल निरासा ॥ रामनाम रति स्वाति सुधा शुभ सीकर प्रेम पियासा ॥ गरज तरज पाषान वरष पवि प्रीति परख जियजानै ॥ अधिक अधिक अनुराग उमँग उर पर परमित पहिचानै ॥ राम नाम गति राम नाम मति राम नाम अनुरागी ॥ ह्वैगये हैं जे होइँगे तेई गनियत त्रिभुवन बड़ भागी ॥ एक अंग मग अगम गवन कर विलँब न छिन छिन छाहैं ॥ तुलसी हित अपनी अपनी दिशि निरुपाधि नेम निवाहैं ॥ ३९० ॥

भलो भली भाँति है जो मेरे कहे लागि है ॥ मन राम नाम सों सुभाव अनुरागि है ॥ राम नामको प्रभाव जान जूड़ी आगि है ॥ सहित सहाय कलिकाल भीरु भागि है ॥ राम राम नाम सों विराग योग जागिहै ॥ वाम विधि भाल हू न कर्म दाग दागि है ॥ राम नाम मोदक सनेह सुधा पागि है ॥ पाइपरतोप तू न द्वार द्वार वागि है ॥ कामतरु राम नाम जोइ जोइ माँगि है ॥ तुलसिदास स्वारथ परमारथ न खांगि है ॥ ३९१ ॥

ऐसेऊ साहब की सेवा सों होत चोर रे ॥ आपनी न बूझ कहै को राड रोररे ॥ मुनि मन अगम सुगम माय बापसों ॥ कृपा-सिन्धु सहज सनेही सखा आपसों ॥ लोक वेद विदित बड़ो न रघुनाथसों ॥ सबदिन सब देश सबहीके साथसों ॥ स्वामीसर्व-ज्ञसों चलै न चोरी चारकी ॥ प्रीति पहिचान यह रीति दरवार की ॥ काय न कलेश लेश लेत मान मनकी ॥ सुमिरे सकुचि रुचि जोगवत जनकी ॥ रीझे वश होत खीझे देत निज धामरे ॥ फलत सकल फल काम तरुनाम रे ॥ वेचे खोटो दाम न मिलै न राखे कामरे ॥ सोऊ तुलसी निवाज्यो ऐसो राजा राम रे ॥३९२॥

मेरो भलो कियो राम आपनी भलाई ॥ हौंतो साईं द्रोही पै सेवक हित साईं ॥ रामसों बड़ो है कौन मोसों कौन छोटो ॥ रामसों खरो है कौन मोसों कौन खोटो ॥ लोक कहै रामको गुलाम हौं कहावों ॥ एतो बड़ो अपराध भौ न मन पावों ॥ पाथ माथे चढ़े तृण तुलसी जो नीचो ॥ बोरत न बारि ताहि जान आपनो सींचो ॥ ३९३ ॥

राग विलावल ।

आज महामङ्गल कोशलपुर सुनि नृपके सुत चारि भये । सदन सदन सोहिलो सुहावन नभ अरु नगर निशान हये ॥ सज सज यान अमर किन्नर मुनि जान समय सम गान ठये ॥ नाचहिं नभ अप्सरा मुदित मन पुनि पुनि वर्षहिं सुमन चये ॥ अति सुख वेग बोल गुरु भूसुर भूपति भीतर भवन गये ॥ जातकर्म कर नेक वसन मणि भूषित सुरभि समूह दये । दल रोचन फल फूल दूब दधि युवतिन भर भर थार लये ॥ गावत चलीं भीर भई वीथिन वान्दिन बांकुर विरद वये ॥ कनक कलश चामर पताक ध्वज जहँ तहँ वन्दरवार नये ॥ भरहिं अबीर अरगजा छिरकहिं सकल लोक इक रंग रये । उमँग चल्यो आनन्द लोक तिहुँ देत सबन मन्दिर रितये ॥ तुलसिदास पुनि भरेइ देखियत राम कृपा चितवन चितये ॥ ३९४ ॥

सुभग सेज सोहात कौशल्या रुचिर राम शिशु गोद लिये । वार वार विधु वदन विलोकत लोचन चारु चकोरे किये ॥ कबहुँ पौढि पय पान करावत कबहुँ कि राखत लाय हिये ॥ बाल केलि गावत हलरावत पुलकित प्रेम पियूप पिये । विधि महेश मुनि सुर सिहात सब अम्बुद ओट दिये ॥ तुलसिदास ऐसो सुख रघुपति पै काहू तो पायो न बिये ॥ ३९५ ॥

राग सोरठ।

ह्वैहो लाल कबहिं बडे बलि मैया। राम लषण भावत भरत रिपुदमन चारु चारयो भैया॥ बाल विभूषण वसन मनोहर अंगन विरचि बनैहौं॥ शोभा निरखि निछावर कर उर लाय वारने जैहौं॥ छगन मगन अँगना खेलिहौ मिलि ठुमुक ठुमुक कब धैहौ॥ कल बल वचन तोतरे मंजुल कह मा मोहिं बुलैहौ। पुरजन सचिव राव रानी सब सेवक सखा सहेली॥ लेहैं लोचन लाहु सुफल लखि ललित मनोरथ बेली। जा सुखकी लालसा लटू शिव शुक सनकादि उदासी॥ तुलसी तिहि सुख सिंधु कौशला मगनपै प्रेम पियासी॥ ३९६॥

राग बिलावल।

पगन कब चलिहौ चारौ भैया। प्रेम पुलकि उर लाय सुवन सब कहत सुमित्रामैया॥ सुन्दरतनु शिशु वसन विभूषण नख शिख निरखनिकैया॥ दल तृण प्राण निछावर कर कर लेहै मात बलैया॥ किलकन नटन चलन चितवन भज मिलत मनोहरतैया॥ मणि खंभन प्रतिबिंब झलन छबि छलकहिं भर अँगनैया॥ बाल विनोद मोद मंजुल विधु लीला ललित जुन्हैया॥ भूपति पुण्य पयोनिधि उमँगेउ घरघर बाजै आनंद बधैया॥ ह्वैहैं सकल सुकृत सुख भाजन लोचन लाहु लुटैया। अनायास पाइहैं जन्मफल तोतरे वचन सुनैया॥ भरत राम रिपुदमन लषण के चरित सरित अन्हवैया। तुलसी तब कैसे अजहुं जानवे रघुवर नगर बसैया॥ ३९७॥

राग केदार।

राम शिशु गोद महा मोद भरे दशरथ कौशिलहु ललक लषण लाल लिये हैं। भरत सुमित्रा लिये केकयी शत्रुशमन तन प्रेम

पुलक मगन मन भये हैं ॥ मेढी लटकन मणि कनक रचित वाल भूषण वनाय आछे अंग अंग ठये हैं । चाहि चुचुकार चूंवि लालन लावत उर तैसे फल पावत जैसे सुवीज वये हैं ॥ घन ओट विबुध विलोकि वरसत फूल अनुकूल वचन कहत नेह नये हैं ॥ ऐसे पितु मात पूत पुर परिजन विधि जानियत आयु भर एई निरमये हैं ॥ अजर अमर होहु करो हरि हर छोह जरठ जठेरिन आशिरवाद दियेहैं ॥ तुलसी सराहे भाग तिनके जिनके हिये डिंभ रामरूप अनुराग रंग रये हैं ॥ ३५८ ॥

आज अनरसे हैं भोरके पय पियत न नीके ॥ रहत न बैठे ठाढे पालने झूलतहु रोवत राम मेरो सो सोच सवही के ॥ देव पितर ग्रह पूजिये तुला तौलिये घीके ॥ तदपि कवहुं कवहुंक सखी ऐसेही अरत जव परत दृष्टि दुष्टती के ॥ वेग वोल कुल गुरु छुवै माथे हाथ अमीके ॥ सुनत आय ऋपि कुश हरे नरसिंह मंत्र पढ़ जो सुमिरत भय भी के ॥ जासु नाम सर्वस्व सदाशिव पारवती के ॥ ताहि झरावत कौसिला यह रीत प्रीत की हिय हुलसत तुलसी के ॥ ३५९ ॥

राग आसावरी।

माथे हाथ जव दियो ऋपि राम किलकनलागे । महिमा समुझ लीला विलोक गुरु सजल नयन तन पुलक रोम रोम जागे ॥ लिये गोद धाये गोद ते मोद मुनि मन अनुरागे ॥

य सुमित्रा लिये हिये फनि मनि ज्योंगोये । तुलसीनिछावर करत मातु अति प्रेम मगन मन सजल सुलोचन कोये ॥ ३६१ ॥

मातु सकल कुल गुरु वधू प्रिय सखी सुहाई । सादर सब मंगल किये महि मनि महेश पर सबन सुधेनु दुहाई ॥ बोल भूप भूसुर लिये अति विनय बडाई । पूजि पांय सन्मानि दान दिये लहि अशीप सुन बरषैं सुमन सुर साई ॥ घर घर पुर बाजन लगीं आनंद बधाई । सुख सनेह तिहिं समयको तुलसी जानै जाको चोरो है चित चहुँ भाई ॥ ३६२ ॥

राग धनाश्री ।

या शिशुके गुन नाम बडाई । को कहि सकै सुनो नरपति श्रीपति समान प्रभुताई ॥ यद्यपि बुधि वय रूप शील गुण समै चारु चारयो भाई । तदपि लोक लोचन चकोर शशि राम भगत सुखदाई ॥ सुर नर मुनि कर अभय दनुज हति हरिहि धरनि गरुआई । कीरति विमल विश्व अघ मोचन रहहि सकल जग छाई ॥ याके चरन सरोज कपट तजि जो भजिहै मनलाई । सो कुल युगल सहित तरि है भव यह न कछू अधिकाई ॥ सुनि गुरु वचन पुलकि तन दंपति हर्ष न हृदय समाई । तुलसिदास अवलोकि मातु मुख प्रभु मनमें मुसकाई ॥ ३६३ ॥

राग विलावल ।

अवध आज आगमी यक आयो । करतल निरखि कहत सब गुन गन बहुतन परचो पायो ॥ बूढ़ो बड़ो प्रमानिक ब्राह्मण शंकर नाम सुहायो । सँग शिशु शिष्य सुनत कौशिल्या भीतर भवन बुलायो ॥ पाँय पखारि पूजि दियो आसन असन वसन पहिरायो । मेलें चारु चरन चारोंसुत माथे हाथ दिवायो ॥ नख शिख बाल विलोकि विप्र तनु पुलक नयन जल छायो ॥ लैलै गोद कमल

कर निरखत उर प्रमोद अनमायो ॥ जन्म प्रसंग कह्यो कौशिक मिस सीय स्वयंवर गायो । राम भरत रिपुदमन लषणको जय सुख सुयश सुनायो ॥ तुलसिदास रनवास रहस वस भयो सबको मन भायो । सनमान्यो महिदेव अशीसत सानँद सदन सिधायो ॥ ३६४ ॥

राग सारंग ।

प्रभु हौं सब पतितन को टीको ॥ और पतित सब दिवस चार के हौं तो जन्मत ही को । वधिक अजामिल गनिका तारी और पूतना ही को ॥ कोऊ न समरथ अघ करवेको खेंचि कहत लीको। मरियत सूर लाज पतितन में हमते को है नीको ॥ ३६५ ॥

हौं तो पतित शिरोमणि माधो । अजामील बातनही तार्यो हुतो जो मोते आधो ॥ कै प्रभु हार मान कर बैठो कै अबहीं निस्तारो। सूर पतितको और ठौर नहिं है हरि नाम सहारो ॥ ३६६ ॥

राग गौरी ।

प्रानी को हरि यश मन नहिं आवे । अह निशि मगन रहै माया में कहु कैसे गुन गावै ॥ पूत मीत माया ममता सों यहि विधि आप बँधावे। मृगतृष्णा जिमि झूठो यह जग देखि तासु उठि धावे ॥ भुक्ति मुक्ति का कारन स्वामी मूढ़ ताहि विसरावे । जन नानक कोटिन में कोऊ भजन राम को पावे ॥ ३६७ ॥

साधो यह मन गह्यो न जाई। चंचल तृष्णा संग बसत है याते थिर न रहाई ॥ कठिन क्रोध घटही के भीतर जिहि सुधि सब बिसराई । रत्न ज्ञान सबको हर लीना तासों कछु न बसाई ॥ योगी यतन करत सब हारे गुनी रहे गुण गाई । जन नानक हरि भये दिआला तो सब विधि बनि आई ॥ ३६८ ॥

साधो गोविंदके गुन गावो । मानस जन्म अमोलक पायो बिरथा काहे गँवावो ॥ पतित पुनीत दीन बांधव हरि शरण ताहि तुम आवो ॥ गजकी त्रास मिटी जिहिं सुमिरत तुम काहे बिसरावो ॥ तजि अभिमान मोह माया पुनि भजन राम चित लावो । नानक कहत मुक्त पथ एही गुरुमुख होय तुम पावो ॥ २६९ ॥

कोऊ माई भूल्यो मन समुझावे ॥ वेद पुरान साध मग सुनकर निमिष न हरिगुन गावै ॥ दुर्लभ देह पाय मानसकी बिरथा जन्म सिरावै ॥ माया मोह महासंकट वनिता सों रुचि उपजावै ॥ अंतर बाहर सदा संग प्रभु तासों नेह न लावै ॥ नानक मुक्ति ताहि तुम मानो जिहिं घट राम समावै ॥ २७० ॥

साधो राम शरण विश्रामा । वेद पुराण पढे को यह गुण सुमिरे हरि को नामा । लोभ मोह माया ममता पुनि औ विषयनकी सेवा ॥ हर्ष शोक परसै जिहि नाहिन सो मूरति है देवा । स्वर्ग नरक अमृत विष यह सब त्यों कंचन अरु पैसा ॥ अस्तुति निंदा यह सम जाके लोभ मोह पुनि तैसा ।.दुख सुख यह बांधे जिहिं नाहिन तिहि तुम जानो ज्ञानी ॥ नानक मुक्ति ताहि तुम मानो यहि विधि को जो प्रानी ॥ २७१ ॥

मन रे कहा भयो तैं बौरा । अहनिशि औध घटै नहिं जानै भयो लोभ सँग हौरा ॥ जो तन तैं अपनो कर मान्यो अरु सुंदर गृह नारी ॥ इनमें कछु तेरो रे नाहिन देखो सोच विचारी । रतन जन्म अपनो तैं हारयो गोविंद गति नहिं जानी ॥ निमिष न लीन भयो चरणनसों बिरथा औध सिरानी । कहु नानक सोई नर सुखिया राम नाम गुण गावै ॥ और सकल जग माया मोह्या निर्भय पद नहिं पावै ॥ २७२ ॥

राग विहाग।

हरि हौं सब पतितनको राऊ। को करि सकै वरावर मेरी सो धौं मोहिं वताऊ॥ व्याध गीध गज गनिका पूतना तिनमें वडो जु और॥ तिनमें वडो अजामिल पापी मैं उनको शिरमौर। जहँ तहँ सुनियत यही वड़ाई मो समान नहिं आन॥ यह सब आज कल्हके राजा मैं तिनमें सुलतान। अवलौं तो तुम विरद बुलावत भई न मोसों भेंट॥ तजो विरदके मोहिं उधारो सूर गही कर फेंट॥ ३७३॥

राग सारंग।

हरि हौं सब पतितनको नायक॥ को करिसकै वरावरि मेरी और नहीं कोइ लायक॥ जैसे अजामील को दीने सो पाटो लिख पाऊं॥ तो विश्वास होय मन मेरे औरौ पतित बुलाऊं। यह मारग चोगुनो चलाऊं तो पूरो व्योपारी॥ वचन मान लै चलो गांठ दे पाऊं सुख अतिभारी। अवके तो इतनै लै आयो वेर बहुर की और॥ पतित उधारन नाम सुन्यों जब शरन गही तक दौर। होडा होड़ी मनहिं भावते पाप किये भर पेट॥ सवै पतित पायँन तर मेरे यहै तुम्हारी भेंट। वहुत भरोसो जान तुम्हारो अव कीने भर भांडो॥ लीजे वेगि निवेर तुरत ही सूर पतित को टांडो॥ ३७४॥

राग आसावरी।

श्याम वलराम गुन सदा गाऊं॥ श्याम वलराम विन दूसरे देवको सुपनहूं माहिं नहिं हृदे ल्याऊं॥ यहै जप यहै तप यहै यम नेम व्रत यहै मम प्रेम फल यहै पाऊं। यहै मम ज्ञान यह ध्यान सुमिरन यहै सूर प्रभु देहु मैं यहै पाऊं॥ ३७५॥

राग सारंग ।

कह्यो शुक श्रीभागवत विचार ॥ जाति पांति कोउ पूछत नाहीं श्रीपतिके दरबार । श्रीभगवत सुमिरे जो हित कर तरे सो भौजल पार ॥ सूर श्याम गुन रट निशिवासर राम नाम निज सार ॥ ३७६ ॥

राग कान्हरा ।

बड़ी है राम नामकी ओट । शरण गये प्रभु काटि देतहैं करत कृपाके कोट । बैठत सभी सभा हरिजूकी कौन बड़ो को छोट॥ सूरदास पारसके परसे मिटत लोहके खोट ॥ ३७७ ॥

राग धनाश्री ।

सोई बड़ो जो हरि गुन गावै । शौच पवित्र होत पद सेवा बिन गुपाल ऊंच जन्म न भावै ॥ वाद विवाद यज्ञ व्रत साधन कितहूं जाय जन्म डहकावै । होय अटक जगदीश भजनते सेवा तासु चार फल पावै ॥ कहूं ठौर नहिं चरण कमल बिन भृंगी ज्यों दशहूं दिशि धावै । सूरदास प्रभु संत समागम आनँद अभय निशान बजावै ॥ ३७८ ॥

मन माधवको नेक निहारहि । सुन शठ सदा रंकके धन ज्यों छिन छिन प्रभुहि सँभारहि ॥ शोभा शील ज्ञान गुनमंदर सुन्दर परम उदारहिं । रंजन संत अखिल अघ गंजन भंजन विषय विकारहिं ॥ जो बिन योग यज्ञ व्रत संयम गयो चहहि भव पारहि । तौ जिन तुलसिदास निशिवासर हरिपद कमल बिसारहि ॥ ३७९ ॥

नाचतही निशि दिवस मरचो । तबहीं ते न भयो हरि थिर जबते जीवनाम धरचो ॥ बहु वासना विविध कंचुक भूषण लोभादि भरचो । चर अरु अचर गगन जल थलमें कौन स्वांग न

राग विहाग ।

हरि हौं सब पतितनको राऊ । को करि सकै बराबर मेरी सो धौं मोहिं बताऊ ॥ व्याध गीध गज गनिका पूतना तिनमें बडो जु और ॥ तिनमें बडो अजामिल पापी मैं उनको शिर-मौर । जहँ तहँ सुनियत यही बड़ाई मो समान नहिं आन ॥ यह सब आज कल्हके राजा मैं तिनमें सुलतान । अबलौं तौ तुम बिरद बुलावत भई न मोसों भेंट ॥ तजो बिरदके मोहिं उधारो सूर गही कर फेंट ॥ ३७३ ॥

राग सारंग ।

हरि हौं सब पतितनको नायक ॥ को करिसकै बराबरि मेरी और नहीं कोइ लायक ॥ जैसे अजामील को दीने सो पट्टो लिख पाऊं ॥ तो विश्वास होय मन मेरे औरौ पतित बुलाऊं । यह मारग चौगुनो चलाऊं तो पूरो व्योपारी ॥ वचन मान लै चलो गांठ दै पाऊं सुख अतिभारी । अबके तो इतनै लै आयो बेर बहुर की और ॥ पतित उधारन नाम सुन्यों जब शरन गही तक दौर । होडा होड़ी मनहिं भावते पाप किये भर पेट ॥ सबै पतित पायँन तर मेरे यहै तुम्हारी भेंट । बहुत भरोसो जान तुम्हारो अब कीने भर भांडो ॥ लीजे वेगि निवेर तुरत ही सूर पतित को टांडो ॥ ३७४ ॥

राग आसावरी ।

श्याम बलराम गुन सदा गाऊं ॥ श्याम बलराम बिन दूसरे देवको सुपनहूं माहिं नहिं हृदे ल्याऊं ॥ यहै जप यहै तप यहै यम नेम व्रत यहै मम प्रेम फल यहै पाऊं । यहै मम ज्ञान यह ध्यान सुमिरन यहै सूर प्रभु देहु मैं यहै पाऊं ॥ ३७५ ॥

राग सारंग।

कह्यो शुक श्रीभागवत विचार ॥ जाति पांति कोउ पूछत नाहीं श्रीपतिके दरबार । श्रीभगवत सुमिरे जो हित कर तरे सो भौजल पार ॥ सूर श्याम गुन रट निशिवासर राम नाम निज सार ॥ ३७६ ॥

राग कान्हरा।

बड़ी है राम नामकी ओट । शरण गये प्रभु काटि देतहैं करत कृपाके कोट । बैठत सभी सभा हरिजूकी कौन बड़ो को छोट॥ सूरदास पारसके परसे मिटत लोहके खोट ॥ ३७७ ॥

राग धनाश्री।

सोई बड़ो जो हरि गुन गावै । शौच पवित्र होत पद सेवा बिन गुपाल ऊंच जन्म न भावै ॥ वाद विवाद यज्ञ व्रत साधन कितहु जाय जन्म डहकावै । होय अटक जगदीश भजनते सेवा तासु चार फल पावै ॥ कहूं ठौर नहिं चरण कमल बिन भृंगी ज्यों दशहूं दिशि धावै । सूरदास प्रभु संत समागम आनँद अभय निशान बजावै ॥ ३७८ ॥

मन माधवको नेक निहारहि । सुन शठ सदा रंकके धन ज्यों छिन छिन प्रभुहि सँभारहि ॥ शोभा शील ज्ञान गुनमंदर सुन्दर परम उदारहिं । रंजन संत अखिल अघ गंजन भंजन विषय विकारहिं ॥ जो बिन योग यज्ञ व्रत संयम गयो चहहि भव पारहि । तौ जिन तुलसिदास निशिवासर हरिपद कमल बिसारहि ॥ ३७९ ॥

नाचतही निशि दिवस मरयो । तबहीं ते न भयो हरि थिर जबते जीवनाम धरयो ॥ बहु वासना विविध कंचुक भूषण लोभादि भरयो । चर अरु अचर गगन जल थलमें कौन स्वांग न

करचो ॥ देव दनुज मुनि नाग मनुज नहिं याँचत कोउ उबरचो। मेरो दुसह दरिद्र दोष दुख काहू तो न हरचो ॥ थके नयन पद पाणि सुमति बल संग सकल बिछुरचो। अब रघुनाथ शरण आयो जब भव भय विकल डरचो ॥ जिहिं गुण ते वश होहु रीझकर सो मोहिं सब बिसरचो। तुलसिदास निज भवन द्वार प्रभु दीजे रहन परचो ॥ ३८० ॥

माधोजू मो सम मन्द न कोऊ। यद्यपि मीन पतंग हीन मति मोहि न पूजे ओऊ ॥ रुचिर रूप आहार वश्य उन पावक लोह न जान्यो। देखत विपति विषय न तजत हौं ताते अधिक अयान्यो ॥ महा मोह सरिता अपार महि सन्तत फिरत बह्यो। श्रीहरिचरण कमल नौका तज फिर फिर फेन गह्यो ॥ अस्थि पुरातन क्षुधित श्वान अति ज्यों भर मुख पकरचो। निज तालूगत रुधिर पानकर मन संतोष धरचो ॥ परम कठिन भव व्याल ग्रसित हो त्रसित भयो अति भारी। चाहत अभय भेक शरणागत खगपति नाथ बिसारी ॥ जलचर वृन्द जाल अन्तरगत होत सिमिटि इक पासा। एकहि एक खात लालच वश नहिं देखत निज नासा ॥ मेरे अघ शारद अनेक युग गनत पार नहिं पावै। तुलसीदास पतित पावन प्रभु यह भरोस जिय आवै ॥ ३८१ ॥

राग धनाश्री।

कृपा-सो कहां विसारी रामु ॥ जिहि करुणा सुन स्रवतदीन दुख धावत हो ताजि धाम। नागराज निज बल विचार हिय हार चरण चित दीन ॥ आरत गिरा सुनत खगपति तजि चलत विलम्ब न कीन। दिति सुत त्रास त्रसित निशिदिन प्रह्लाद प्रतिज्ञा राखी ॥ अतुलित बल मृगराज मनुज तनु दनुज हत्यो श्रुति साखी। भूप सदसि सब नृप विलोकि प्रभु राख कह्यो

नर नारी ॥ वसन पूरि अरि दर्प दूरि करि भूरि कृपा दनुजारी। एक एक रिपु ते त्रासित जन तुम राख्यो रघुवीर॥ अब मोहिं देत दुसह दुख बहु रिपु कस न हरहु भव भीर। लोभ ग्राह दनुजेश क्रोध कुरुराज बंधु खल मार॥ तुलसिदास प्रभु यह दारुण दुख भंजहु राम उदार॥ ३८२॥

काहे ते हरि मोहिं बिसारो। जानत निज महिमा मेरे अघ तदपि न नाथ सँभारो॥ पतित पुनीत दीन हित अशरन शरन कहत श्रुति चारो। हौं नहिं अधम सभीत दीन किधौं वेदन वृथा पुकारो॥ खग गनिका गज व्याध पांति जहिं तहिं हौंहूं बैठारो॥ अब किहिं लाज कृपानिधान परसत पनवारो फारो। जों कलि काल प्रबल अति होतो तुव निदेश ते न्यारो॥ तौ हरि शेष भरोस दोष गुन तेहि भजते तजगारो। मशक विरिंचि विरिंचि मशक सम करहु प्रभाव तुम्हारो॥ यह सामर्थ्य अछत मोहिं त्यागहु नाथ तहां कछु चारो। नाहिन नर्क परत मोकहँ डर यद्यपि हौं अति हारो॥ यह बड़ त्रास दास तुलसी प्रभु नामहुँ पाप न जारो॥ ३८३॥

राग आसा।

आज बनी छबि भारी श्री राघोजीकी। सहित जानकी रत्न सिंहासन राजत अवध विहारी॥ रवि शशि कोटि देख छवि लाजे तिलक पटल द्युतिकारी। वदन मयंक तापत्रय मोचन मन्द हास अति प्यारी॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल अरु वनमाल सुधारी। बाहु विशाल विभूषण सुन्दर कर गह शारँगधारी॥ कटिपर पीत वसनकी शोभा मोहत मदन निहारी। मुनिजन चरण सरोरुह ध्यान धरत त्रिपुरारी॥ चतुर सखी मिलि करत आरती सज कंचन की थारी। राम सेवक जय जय धुनि उचरत गावत पुर नर नारी॥ ३८४॥

राग भैरवी ।

जानकी जीवन की बलिजैहौं । चितकहैं राम सिया पद परिहरि अब न कहूं चलि जैहौं ॥ उपजी उर प्रतीति सपने सुख हरिपद विमुख न ह्वैहौं । मन समेत सब तनके वासिन यही सिखावन देहौं ॥ श्रवणन और कथा नहिं सुनिहौं रसना और न गैहौं । रोकिहौं नयन विलोकत औरहि शीश ईश पद नैहौं ॥ नातो नेह राम सों करि सब नातो नेह निबैहौं । सेवक चरण शरण नित रहिहौं मुँह मांगे यह पैहौं ॥ ३८५ ॥

आज बनी छबि श्रीराघोजीकी भारी । क्रीट मुकुट मकराकृत कुण्डल धनुप बान करधारी ॥ सुन्दर भाल तिलककी शोभा अलकैं घूँघरवारी । नयन कमल वदनकी शोभा सयननमें रस न्यारी ॥ बायें अंग जानकी सोहैं हनुमत आज्ञाकारी । गौर श्याम सुन्दर तन सोहै चन्द्रवदन उजियारी ॥ रतन जडित आभूपण सोहै मोतियन की छबि न्यारी । मात कौशल्या करत आरती तुलसिदास बलिहारी ॥ ३८६ ॥

अथ सीहरफी ।

अलिफ आपणे आपनूं समझ पहिलेकी वस्तुहे तेरडारूप प्यारे ॥ बाझ आपणे आपदे सही कीते रह्यो विच वसूरे दे दुःख भारे ॥ होर लक्खउपाय ना सुक्ख होवी पुच्छ वेख सिआनडे जग्ग सारे ॥ सुखरूप अखंड चैतन्य है तू बुल्लाशाह पुकारदे वेद चारे ॥ ३८७ ॥

बे बन्ह अक्खी अते कन्न दोवै गोसे बैठके वात विचारिये जी ॥ छड्ड ख्वाहिशां जान जहान कूडा कह्ला आरफां दा हिये धारिये जी ॥ पैरी पाय जंजीर बेख्वाहिशी दे इस नफ़सनूं कैद करडारिये जी ॥ नान जानदीनूं जान रूप तेरा बुल्लाशाह एवँ खुशी गुजारिये जी ॥ ३८८ ॥

ते तनक छिद्र नाहिं विच तेरे जित्थे कक्ख ना इक्क समाउँदा ही ॥ ढूँड़ देख जहानदी ठौर कित्थे अनहुंदड़ा नजरीं आउँदा ही ॥ जैसे ख्वाबदा ख्याल होय सुत्तिआँ नूं तरां तरां दे रूप दिखाउँदा ही ॥ बुल्लाशाह नां तुज्झ थी कुज्झ बाहर तेरा भरम तैनूं भरमाउँदा ही ॥ ३८९ ॥

से समझ हिसाब कर बैठ अंदर तूँही आसरा कुल्लजहानदा है ॥ तेरे डिट्ठाँ दिस्सदा सभ्भकोई नहीं कोई ना किसे पछाणदा है ॥ तेरा ख्याल ही होय हरतराँ दिस्से जिवें बाल वैताल कर जाणदा है ॥ बुल्लाशाह फाहे कौन डाबरेनूं फसे आप आपे फाही ताणदा है ॥ ३९० ॥

जीम जीवणा भला कर मन्निया तैं डरें मरणथीं एही अज्ञान भारा । इक्क तूँहीं ताँ जिंद जहानकेरी घटाकाश जिउँ मिलै सभमाहिं न्यारा ॥ तेरा ख्याल ही होय हरतराँ दिस्से आदि अंत बाझों लगे सदा प्यारा । बुल्लाशाह संभाल तूं आपताईं तूँताँ अमर है सदा नहीं मरनहारा ॥ ३९१ ॥

हे हिरस हैरान कर सट्टयो तू तैनूँ आपणा आप भुलाय आसू। बादशाहीयों सुट्ट कंगाल कीता कर लक्ख थों कक्ख दखलाय आसू ॥ मदमत्तड़े शेरनूं तंद कच्ची पैरीं पायके वन्न वहाय आसू । बुल्लाशाह तमाशड़ा होर देखो लै समुद्र नूं कुज्जड़ी पायआसू ॥३९२॥

खे खबर ना आपणी रक्खदा है लग ख्याल दे नाल तूं ख्याल होया । जरा ख्यालनूं सुट्ट बेख्याल होसां जिमें होय अधजाग्या नाहिं सोया ॥ तदों देख खां अंद्रों कौन देखे नहीं घास में छप्प हाथी खलोया । बुल्लाशाह जिउँ गले दे विच्च गहिणा फिरे ढूँडदा तांहिते नांहि खोया ॥ ३९३ ॥

चे चानणा कुल्ल जहान दा तूं तेरे आसरे होय विवहार सारा । होय सभ्भकी आँख मों देखदा है तुझे सूझदा चांनणा औ

अंधारा ॥ नित जागणा सोवणा ख्वाब तीनों देख तेरे आगे होए कई बारा । बुल्लाशाह प्रकाशस्वरूप तेरा घट्ट बद्ध ना होत है एकसारा ॥ ३९४ ॥

दाल दिलगीर ना होय मूले दीगर चीज नापैद तहकीक कीजै । अव्वल जाय करो सुहबत आरफां दी सुखन तिन्हा दे आबहयात पीजै । चशम जिगर दे मलन होरहे मूले नहीं सूझदा तिनोंको साफ कीजै ॥ बुल्लाशाह सँभाल तूं आपताई तूँ ताँ एक आनंदमय सदा जीजै ॥ ३९५ ॥

जाल जरा भी शक्क ना रक्ख मन ते हो बेशक तूँ ही खुद खमस साईं । जिवें सिंह भुलाय बल आपणे नूं चरे घास मिल अजा में अजान्याईं ॥ पिच्छों समझ बल गरज्या अजा मारी भयो सिंह को सिंह कछु भेद नाहीं । तैसे तोहि तरां कछु कौर धारी बुल्लाशाह संभाल तूँ आपताईं ॥ ३९६ ॥

रे रंग जहान दे देखदा है सोहणे बास विचारयां दिस्सदे नी । जिवें होत हुव्वाब बहु रंग दे जी अंदर आव दे जरा विच फिस्सदे नी ॥ आव खाक आतिश बाद भये कट्ठे देख अज्नके कल्ह विच खिस्सदे नी । बुल्लाशाह संभालके देख खां तूँ सुख दुःख सभी कहु किस्सदे नी ॥ ३९७ ॥

जे जावणा आवणा नहीं ओथे कोह वांग हमेश अडोल है जी । जिवें बद्दलां दे चले चंद चलदा लगे बालकाँ नूं पडा भोल है जी ॥ मन्न इंद्री देह प्राणआदिक [illegible] देखणे दा अडोल है जी । बुल्लाशाह संभाल[illegible] ।[illegible] हूँ[illegible] [illegible]ारफाँहां

रोवणा जी ॥ जरामैल नाहीं देख भुल्लना है लग्ग जिक्कडों जाण क्यों धोवणा जी । बुल्लाशाह जंजाल नहीं मूल कोई जाणबुज्झके बुज्झ खलोवणा जी ॥ ३९९ ॥

शीन शुवा नहीं कोई जरा इसमें सदा आपणा आप सरूप है जी । नहीं ज्ञान अज्ञान की ठौर ऊहां कहां सूर में छाउँ अरु धूप है जी ॥ पडा सेज ही माहिं मैं सही सोया कूडा सुपनका रंक अरु भूप है जी । बुल्लाशाह संभाल जब मूल देखा ठौर ठौर में आप अनूप है जी ॥ ४०० ॥

स्वाद सबर करना आयबणी उत्ते देख रंग ना चित्त डोलाइये जी । सदा तुखम दी तरफ निगाह करनी पात फूल फल ओर ना जाइये जी ।। जोई आय अर जाय टिक रहे नाहीं तासों कौन दानिश चित्त लाइये जी ॥ बुल्लाशाह संभाल खुद खण्ड चाखी जिसे विषे फल तिसे क्यों खाइये जी ॥ ४०१ ॥

ज्वाद जिकर अरु फिकर को छोड दीजे कीजे नहीं कछु यही पछानणा है । जासों उठ्याँ ताहीं के वीच डारो हो अडोल देखो आप चानणा है ॥ सदा चीज नापैदही देखियेजी यही यही कर जीयमैं आनणा है ॥ बुल्लाशाह संभाल तूँ आपताईं तूं तां सदा आनन्दमय जानणा है ॥ ४०२ ॥

तोय तोर महबूबदा जिन्हा डिट्ठा तिन्हां दूई तरफों मुख मोडयाई ॥ काईलटक प्यारेदी लुट्टलीते हटे नांहि ऐसा जीउ जोडियाई ॥ अट्ठो पहिर दिवान मस्तान फिरदे ओनां पैर आलूद ना वोडियाई ॥ बुल्लाशाह उह आप महबूब होये शोक यारदे कुफर सभ तोडियाई ॥ ४०३ ॥

जोय जुदा नहीं तेरा यार तैंथीं फिरें ढूंड़दा किसनूँ दस्स मैनूँ ॥ पहिले ढूंडणेहार नूँ ढूंड खां जी परतक्ख घरे निज रस्स तेनूँ ॥

मत तूहीं होवे आप यार सभ दा फिरें ढूँडदा जंगला विच जेनूँ॥ बु-ल्लाशाह तूँ आप महिबूबप्याराभुलआपथीं ढूँडदा फिरे केनूँ ॥४०४॥

ऐन ऐन ही है आप बिना नुकते सदा चैन महबूब दिलदार मेरा ॥ इक्क वार महबूब नूँ जिन्हाँ दिट्ठा उह ताँ देखणेहार है सव केरा ॥ उसतों लक्ख बिहिशत कुर्बान कीते पहुतामहिल वेगंम चुकाय झेरा ॥ बुल्लाशाह हरहाल विच मस्त फिरदे हाथी मत्तडे तोड जंजीर जेरा ॥ ४०५ ॥

गैन गंमने मार हैरान कीती अट्ठे पहिर प्यारे नूँ लोडदी सां ॥ मैनूँ खावणा पीवणा भुल्ल गइया रब्बा मेल जानी हत्थ जोडदीसां ॥ सैयां छड्ड गेयां मैं इकल्लडी नूँ अंग साक नालों नाता तोडदीसां॥ बुल्लाशाह जब आपनूँ सही कीता तां मैं सुत्तडी अंग नां मोड़दीसां ॥ ४०६ ॥

फे फिकर गिया सैयो मेरीयो नी मैं नां आपणे आपनूँ सही कीता । कूडी देह सों नेह चुकाइयाई खाक छाणके लाल नूं टोल लीता ॥ देख धूएं दे धौलरे जग्ग सारा सुट्ट पाया है जीया तैं हार जीता ॥ बुल्लाशाह अनन्त अखण्ड सत्ता लक्ख आपनूं आवहयात पीता ॥ ४०७ ॥

काफ कौन जाणे जान जाणदी नूँ आप जानणेहार इह कुछ-दा है ॥ परतक्ख थीं आद परमाण जेते सिद्धकीते इसदे नहीं भुल्ल दा है ॥ नेत नेत कर वेद पुकारदे नी नहीं दूसरा एसदे तुल्ल-दा है ॥ बुल्लाशाह जब आप वेचार देखा सदा स्वयं प्रकाश एह झुल्लदा है ॥ ४०८ ॥

गाफ गुजर गुमान ते समझ वहिके अहंकार दा आसरा कोय नाहीं । बुद्धि आदि संघात जडि देखिये जी पड़ा कठा पखान जिउं भूमिमाहीं ॥ आप आत्माज्ञान सरूप सत्ता सदा नहीं फुरदा

खड़ा एक जाहीं ॥ बुल्लाशाह विवेक विचार सेती खुदी छोड़ खु होयके लहे नाहीं ॥ ४०९ ॥

लाम लग्ग आंखें जाय कहांसोया जाणंबुज्झके दुःख क्यों पावन है॥ जरा आप नांहटें बुरि आइयां तो कड्ढ मस्सले लोक सुनावण है ॥ कागविष्ट ज्यों जानके तजे संता विषे मूढ़ क्यों चित्त लुभ वना है ॥ बुल्लाशाह उह जानणेहार दिलदी करें चोरियां सा कहाउनां हैं ॥ ४१० ॥

मीम सदा मौजूद हरजाय मौला तिसे देख क्या भेशवना यासू ॥ जिवें एकही तुखम बहु तरां दिस्से तिवें आपणा आप फैल यआसू ॥ मांहि आपणे आपदे खेल करदा नरनार होय चित्त भाय आसू ॥ बुल्लाशाह नां मूलथीं कुज्झहोया सोई जाणदा जि जणायआसू ॥ ४११ ॥

नून नाम अर रूप उठाय दीजे पीछे अस्ति अरु भाति प्रि साच है जी ॥ जोई चित्त की चितवनी बीच आवे सोई जान त कीक कर काच है जी ॥ तीन बुद्धि की वृत्ति का तूंही साक्षी तू जाण निजरूप तैं राच है जी । बुल्लाशाह तूं भूप अचल्ल वैठा त आगे प्रकृती का नाच है जी ॥ ४१२ ॥

वाव वखत इह हत्थना आवणाई इक्क पलकदे लक्ख करो देवे॥जतन करें तां आप अचाह होवे तूं तां पहिर अट्ठे विषय वि सेवे ॥ कूड बैपार कर कूड लय मेलदा चिंतामणि दे जड क लेवे ॥ बुल्लाशाह संभाल तूं आप ताईं तूं अनन्त लघुदेहु में क मेवे ॥ ४१३ ॥

हे होय हरतरां दिलदार प्यारा रंगारंगदा रूप वनाय आई कहूं आपको भूल रंजूल होया ऊरध अरध भरम होय सन्ता आई ॥ जदों आपणे आप में प्रगट होया निजानंदके माहिं सम

य आई ॥ वुल्लाशाह जो आदि था अन्त सोई भया नीर में नीर मिलाय आई ॥ ४१४ ॥

अलफ अज्ज वणया सभो चज्ज मेरा शादी गमी थीं पार ख लोयआमें ॥ भया दूर भ्रम मर्म सभ पाइयाईभय कालदा जिय थीं खोयआ मैं॥ साधसंगकी दयाथीं भया निर्मल घट घट चैतन सुख सोयआ में ॥ वुल्लाशाह जब आपनूं सही कीता जो आदिथा अंत फिर होयआ में ॥ ४१५ ॥

ये यार पाया सैयो मेरीयो नी मैं तां आपणा आप गँवायकेजी ॥ रही सुद्धना बुद्ध जहानकेरी थकी विरति आनन्द में जायके जी ॥ अट्ठों पहर विश्राम नां कामकोई दूई ज्ञान की भाय जलायके जी ॥ वुल्लाशाह मुबारकां लक्ख देवो भई जान जानी गललायके जी ॥ ४१६ ॥

छंद ।

दूधपियें सिध साध वालकबच्छियां । काम रखे सिध साध खोजे खस्सियां ॥ अस्नान करे सिध साध मेंडक मच्छियां । नानक मन संभाल सब गल्ल अच्छियां ॥ ४१७ ॥

ग़ज़ल ।

खाक आपको समझना अकसीर है तो यह है ॥ इकलाक सब से रखना तसवीर है तो यह है ॥ सभकाम अपना करना तकदीर क हवाले । नज़दीक आरफोंके तदवीर है तो यह है ॥ ४१८ ॥

अथ वारामासा ।

चैतर चित विच समझ प्यारे दुनियाँ कूड़ा वानाई ॥ जिन्हा नाल तूं लाई दोस्ती उन्हांने भी चलजानाई ॥ सभदे सिर पर काल कूकदा क्या राजा क्या रानाई ॥ मोतीराम कदी समझ प्यारे जगविच रहण नमाणाई ॥ ४१९ ॥

विशाख बिसारयो नाम साईंदा आकड़ आकड़ चलनाहै॥ खाय खुराकां पहन पुशाकां जमदा बकरा पलना है॥ चारदिना दे रहणे कारण महल माडियां मलना है॥ मोतीराम तूं समझ प्यारे अंत खाकविच रलना है॥ ४२०॥

जेठ मायादा मान न करिये माया काग बनेरे दा॥ पलविच आवे छिनविच जावे सैर करे चौफेर दा॥ इक मन होके नाम न जप्या क्या नफा दम तेरे दा॥ मोतीराम तूं समझ प्यारे अंत काल जम घेरेदा॥ ४२१॥

हाढ होश कर दिलविच प्यारे काल नगारा बजदाई॥ यह दुनियां भाँडेकी नाईं जो घड़्या सो भजदाई॥ माया जोडी लाख करोडी अजे न मूरख रजदाई॥ मोतीराम कदी समझ प्यारे माण ताण दिल तजदाई॥ ४२२॥

सावण शौक मायादा कीता साईं दा शौक न कीता तैं। जिस साहिब तैनूं पैदा कीता उसदा नाम न लीता तैं॥ अपने हत्थीं जाणबूझके जहरप्याला पीता तैं॥ मोतीराम कदी समझ प्यारे जन्म अकारथ कीता तैं॥ ४२३॥

भादों भार पिया सिर तेरे किसविध पार उतारेगा। डूँगी नदी कहरादियां लहरां कंढे बेठ पुकारेगा॥ ओथे तेरा कोई न बोली रो रो धाहीं मारेगा। मोतीराम तूं समझ प्यारे जितके बाजी हारेगा॥ ४२४॥

अस्सू ओड़क चलना प्यारे चलोचलीदा डेराई। सबका बासा जंगल होसी जो कोई भला भलेराई॥ साथ तेरे कोई ना जासी क्या मेरा क्या तेराई। मोतीराम कदी समझ प्यारे कोई दिनदा रैन बसेराई॥ ४२५॥

कत्तक किसमत भली उन्हांदी जिन्हां नाम जप लीताई। सोई अमर जगत विच होए जिन्हां साधसँग कीताई॥ रामनाम दा प्रेम

३पियाला भर के कदी न पीताई। मोतीराम कदी समझ प्यारे जन्म अमोलक बीताई ॥ ४२६॥

मगहर मस्त होया विच दिलदे आप खुदाय कहावें तूं । सभदे शिरपर कर तदवीरां सभपर हुकम चलावें तूं ॥ ओथे तेरा कोई ना वेली रो रो हाल गँवावें तूं । मोतीराम कदी समझ प्यारे राह अवल्लड़े जावे तूं ॥ ४२७ ॥

पोह पियारा याद न कीता कीती गल्ल नकारी तैं। ऐसा नाम अमोलक प्रभु दा नां लीता इक्कबारी तैं ॥ बार बार समझा रहे तैनूं इक्क ना जरा विचारी तैं। मोतीराम कदी समझ प्यारे जीतके बाजी हारी तैं ॥ ४२८॥

माघ मानना करिये बंदे नाल गरीबी रहणाई। जो कोई आखे गल्ल वधीकी ओह भी शिरते सहणाई ॥ ऊंचे होके मूल न वाहिये नींचे होके रहणाई। मोतीराम कदी समझ प्यारे बाजी नूँ जित लैणाई ॥४२९ ॥

फागुन पकड्यो जदो जमां ने रती न जावे पेशपेरी । राम भुलाया क्या फल पाया पच्छोतावेंगा बहुवेरी ॥ वार वार समझा-रहे तैनूं साहिब दे दरहो ढेरी ॥ मोतीराम कदी समझ प्यारे अव लगाय नां कछु देरी ॥ ४३० ॥

राग आसा ।

है कोई दस की वात जगत में हर को सुमिर दिन रात ॥ उस बिन नहिं तेरा पार उतारा क्यों नाहिं हरिगुन गात ॥ चार पहर नींदर में बीते जाग होई परभात ॥ यह दुनियां है रैन वसेरा जो आवत सो जात॥ काम क्रोध तज लोभ प्रानी चारों वेद वखात ॥ धन यौवनका मान न करिये चार दिननकी बात ॥ कोई जात नहिं संग तिहारे मात पिता क्या भ्रात ॥ माया लोभमें नित ही

भरमत काल लगाई घात ॥ रामकृष्ण सुमिरों निशिवासर छोड़ छाड़ पछपात ॥ रोग दोष त्रैताप विनाशे गंगा जमुना न्हात ॥ रूपचंद हैं वे नर मूरख जिन्हें न हारि यश भात ॥ ४३१ ॥

भैरवी।

प्रभु तेरी लीला अपरंपार अगम अपार । खण्ड ब्रह्मंड रचे सभ तेरे कोउ न पावत पार ॥ सुर नर मुनि जन खोजत हारे पढ़ पढ़ वेद विचार । प्रभु तेरी० ॥ अगम निगम सभ तोहिं पुकारें हे प्रभु सिरजन हार । चन्द्र सूरज दोउ दीपक कीने अगम जोत निरंकार ॥ प्रभु तेरी० ॥ अनहद शब्द बजत झंकारा संतन प्राण अधार ॥ नानारूप धरचो सभ अंतर निरगुण सगुण अकार ॥ प्रभु० ॥ दश अवतार धरे या जगमें हैं सभ मुक्त दुआर॥ रूपचंद सुमिरो हितचितकर निशिदिन कृष्ण मुरार ॥ प्रभु० ॥ ४३२ ॥

प्रभु मेरी नाउ उतारो पार ॥ बलिहारी नन्द कुमार ॥ भवसागर संसार अगम है तिरछी जाकी धार ॥ पार उतरना कठिन भयो है सूझत वार न पार ॥ प्रभु० ॥ लोभ मोहके बादल उमड़े भयाँ महा धुँधकार॥ काम क्रोध पवन सँग लीने बरसत है हंकार॥ प्रभु० ॥ डोलत है यह नाव पुरानी भवसागर मँझधार ॥ बिजली चमकत बादल गरजत लरजत जिया हमार ॥ प्रभु० ॥ दीन दयाल भरोसे तेरे चढ़ाया सब परिवार ॥ इस बेडे को पार उतारो हे दयाल करतार ॥ प्रभु० ॥ महा मली मैं कपटी कामी तुमहो बखशनहार ॥ रूपचन्द निज ठौर नहीं कोउ नाम तेरा आधार ॥ प्रभु० ॥ ४३३ ॥

राग जंगला।

इकदिन होगा कूच जरूर ॥ चलना होसी साहिब हजूर ॥ कूड़ा करे प्रदेसी माणा ॥ रैन गुजार भोर उठ जाणा ॥ दौलत

इपियाला भर के कदी न पीताई। मोतीराम कदी समझ प्यारे जन्म अमोलक बीताई ॥ ४२६॥

मगहर मस्त होया विच दिलदे आप खुदाय कहावें तूं। सभदे शिरपर कर तदबीरां सभपर हुकम चलावें तूं ॥ ओथे तेरा कोई ना बेली रो रो हाल गँवावें तूं। मोतीराम कदी समझ प्यारे राह अवल्लड़े जावे तूं ॥ ४२७॥

पोह पियारा याद न कीता कीती गल्ल नकारी तैं। ऐसा नाम अमोलक प्रभु दा नां लीता इक्कवारी तैं ॥ वार वार समझा रहे तैनूं इक ना जरा विचारी तैं। मोतीराम कदी समझ प्यारे जीतके बाजी हारी तैं ॥ ४२८॥

माघ मानना करिये बंदे नाल गरीबी रहणाई। जो कोई आखे गल्ह वधीकी ओह भी शिरते सहणाई ॥ ऊंचे होके मूल न बहिये नींचे होके रहणाई। मोतीराम कदी समझ प्यारे बाजी नूँ जित लैणाई ॥४२९॥

फागुन पकड्यो जदो जमां ने रती न जावे पेशपेरी। राम भुलाया क्या फल पाया पच्छोतावेंगा बहुतेरी ॥ वार वार समझा- रहे तैनूं साहिब दे दरबो ढेरी ॥ मोतीराम कदी समझ प्यारे अब लगाय नां कछु देरी ॥ ४३० ॥

राग आसा।

है कोई दम की बात जगत में हर को सुमिर दिन रात ॥ उस बिन नहिं तेरा पार उतारा क्यों नाहिं हरिगुन गात ॥ चार पहर नींदर में बीते जाग होई परभात ॥ यह दुनियां है रैन बसेरा जो आवत सो जात॥ काम क्रोध तज लोभ प्रानी चारों वेद बखात ॥ धन यौवनका मान न करिये चार दिननकी बात ॥ कोई जात नहिं संग तिहारे मात पिता क्या भ्रात ॥ माया लोभमें नित ही

भरमत काल लगाई घात ॥ रामकृष्ण सुमिरों निशिवासर छोड़ छाड़ पछपात ॥ रोग दोष त्रैताप विनाशे गंगा जमुना न्हात ॥ रूपचंद हैं वे नर मूरख जिन्हें न हरि यश भात ॥ ४३१ ॥

भैरवी ।

प्रभु तेरी लीला अपरंपार अगम अपार । खण्ड ब्रह्मंड रचे सभ तेरे कोउ न पावत पार ॥ सुर नर मुनि जन खोजत हारे पढ़ पढ़ वेद विचार । प्रभु तेरी० ॥ अगम निगम सभ तोहिं पुकारें हे प्रभु सिरजन हार । चन्द्र सूरज दोउ दीपक कीने अगम जोत निरंकार ॥ प्रभु तेरी० ॥ अनहद शब्द बजत झंकारा संतन प्राण अधार ॥ नानारूप धरचो सभ अंतर निरगुण सगुण अकार ॥ प्रभु० ॥ दश अवतार धरे या जगमें हैं सभ मुक्त दुआर॥ रूप-चंद सुमिरो हितचितकर निशिदिन कृष्ण मुरार ॥ प्रभु० ॥ ४३२ ॥

प्रभु मेरी नाउ उतारो पार ॥ बलिहारी नन्द कुमार ॥ भव-सागर संसार अगम है तिरछी जाकी धार ॥ पार उतरना कठिन भयो है सूझत वार न पार ॥ प्रभु० ॥ लोभ मोहके बादल उमड़े भयाँ महा धुँधकार॥ काम क्रोध पवन सँग लीने बरसत है हंकार॥ प्रभु० ॥ डोलत है यह नाव पुरानी भवसागर मँझधार ॥ बिजली चमकत बादल गरजत लरजत जिया हमार ॥ प्रभु० ॥ दीन दयाल भरोसे तेरे चढ़ाया सब परिवार ॥ इस वेडे को पार उतारो हे दयाल करतार ॥ प्रभु० ॥ महा मली मैं कपटी कामी तुमहो बखशनहार ॥ रूपचन्द निज ठौर नहीं कोउ नाम तेरा आधार ॥ प्रभु० ॥ ४३३ ॥

राग जंगला ।

इकदिन होगा कूच जरूर ॥ चलना होसी साहिब हजूर ॥ कूड़ा करे प्रदेसी माणा ॥ रैन गुजार भोर उठ जाणा ॥ दौलत

माथा छोड गरूर ॥ क्यों सोया है जाग प्यारे ॥ रैन गई छिपे सब तारे ॥ मंजिल भारी चलना दूर ॥ कंकन चुन चुन महल उसारे। झूठे हैं यह सभ विसतारे ॥ इक दिन होसी चकना चूर ॥ मात पिता अरु घर की नारी॥ कोई नहिं दुख बाँटन हारी॥सुख के हाथी न हो मसरूर ॥ दौलत माया जोड खजाने ॥ इकट्ठे कीने जोर धिगाने ॥ यह जग किशती का है पूर ॥ क्या ऊंच नीच अमीर फकीर ॥ सबपर चलती है तकदीर ॥ इक दिन जम मुँह देसी धूर ॥ यह दुनिया सुपनेकी नाई ॥ जो आया सोही चल जाई ॥ एक रहेगा प्रभु का नूर ॥ इस दम दा कुछ करले भाई ॥हरि के विन नहीं और सहाई ॥ घट घट आप रह्या भरपूर ॥ काम क्रोध सब तजदे प्रानी। झूठी मति क्यों दिलमें ठानी ॥ आखर होवेगा मजबूर॥ जब जम आवे पकड लेजावे ॥ दौलत दुनिया पल में छुडावे ॥ नहीं चलेगा कुछ मकदूर ॥ कहत रूपचंद सुनहो प्रानी ॥ यह दुनिया है बिलकुल फानी ॥कृष्णचरणका हो मशकूर॥४३४॥

हरि नाम कभी ना पुकारा ॥ गया विरथा जनम है सारा ॥ मोह माया में उमर गुजारी ॥ नित धन के रहे व्योपारी ॥ और दुरलभ नाम विसारा ॥ किया दिन को मेरा तेरा ॥ सुख नींदने रैन को घेरा ॥ हँस बोला काल नगारा ॥ गया विर० ॥ थे वार वार क्या कहते ॥ जब गरभमें थे दुख सहते ॥ ना भूलूंगा कभी मुरारा ॥ गया० ॥ कीनी धरती ज़र से पोली ॥ झट मौत आ सिरपर बोली ॥ है जग से तेरा किनारा ॥ ग० ॥ किले महल मकान बनाये ॥ और बाग बगीचे लगाये ॥ संग गया न बुरज मुनारा ॥ किस बात पे है मन भूला ॥ किस करनी पे है फूला ॥ तज मोह कुटुंब संसारा कुछ करले अब भी भाई ॥ नहीं हरि बिन कोई सहाई ॥ नहीं साथी कोई प्यारा ॥ मानस देह

नहीं नित मिलती ॥ नहीं बाग बहार नित खिलती ॥ निकट आयाहै जमका द्वारा इस कालने है सब घेरे ॥ रुख रावन कंस के फेरे ॥ दुरयोधन भीमको मारा ॥ गये कौरव पांडव राजे ॥ जग डंका था जिन का बाजे ॥ इस कालने पकड़ा ॥ गर्व कारूं जैसे के तोड़े ॥ जिन लाख खजाने थे जोड़े ॥ औरंगे को बड़ा हंकारा ॥ नौशेरवा हातमताई ॥ सखावत जिन थी बनाई ॥ कर जगमें गये चमकारा ॥ श्री विक्रम भोज करनथे ॥ जो नित ही धरम की शरन थे ॥ कर गये धर्म जयकारा ॥ हो ध्यान न जबतक सगुण का ॥ कभी ज्ञान नहीं होता निगुर्ण का ॥ मन किया न सोच विचारा ॥ कर अबही हरिसेवा ॥ तो पावे ज्ञान हरि मेवा ॥ हो रूप तेरा निस्तारा ॥ ४३९ ॥

राग प्रभाती ।

छोड़ बिस्तरा उठरे गाफल अमृतवेला छाया रे ॥ सगरी रैन नींद में काटी बिरथा समा बिताया रे ॥ जिस माया के मान ने मूरख सुख से तुम्हें सुलाया रे ॥ अंध घोर में उस माया ने तुमको पकड़ गिराया रे ॥ आध भाग तेरी आयू का बाला पन में भाया रे ॥ दूजा भाग गयो मोह माया में कुटिल कुटुम्ब जो पाया रे ॥ चलता है अब भाग तीसरा वृद्ध हुई तेरी काया रे ॥ आया निकट द्वारा जम का नहीं मूरख समझाया रे ॥ यह दुनिया है पलक बसेरा जिसपर ठाट जमाया रे ॥ क्या भरवासा है सासों का दम आया ना आया रे ॥ माटी होगी पल छिन में सब जब यम तुझे बुलाया रे ॥ सभी ठाट ह्यां पड़ा रहेगा जिससे मन भटकाया रे ॥ नरक घोर में तड़पेंगे वह जिन हर को नहीं ध्याया रे ॥ इस्त्री और सन्तान पियारी जिससे मोह बढ़ाया रे ॥ कह कह अपना उन्हें अज्ञानी नाहक जिया जलाया रे ॥ अपना

तू मत समझ किसी को सभको समझ पराया रे ॥ एक वार भी मन चित दे जिन ईश्वर का गुन गाया रे ॥ लोक प्रलोक में अहकर उसने मानसजन्म सुधाया रे ॥ ४२६ ॥

ग़ज़ल।

तुम्हें धनबाद ऐ ईश्वर तेरे सब खेल न्यारे हैं ॥ तेरे बेअन्त सागर में कई पैराक हारे हैं ॥ महा अंध घोरसे जल पर पृथिवी का रचा मंडल ॥ कमल से ब्रह्मा पैदा करके चारों वेद उचारे हैं ॥ कहीं जल और कहीं खुश्की कहीं पहाड़ों को कर कायम ॥ जुदा हर द्वीप और चश्में जो धरती पर सिंगारे हैं ॥ सतूं विन अरश कायम कर लगाया रंग कुदरत का ॥ जमाया चांद सूरज को सजाये क्या सतारे हैं ॥ बनाकर पेड़ फूलों किये तकसीम गुलशनमें। अयां कुदरतहै हरगुलसे अजब तेरे नजारेहैं ॥ हुई कायम य जब हस्ती फना को भी दी तब शक्ती । किसी की बसनहीं चलती जो रावन जैसे मारे हैं ॥ किसे ताकत दुनीचंद उसकी लीला जो करे वर्णन । ऋषीश्वर औ मुनीश्वर और योगीश्वर सभ पुकारे हैं ॥ ४२७ ॥

जगत सभ गैर है लोको । य कूडी सैर है लोको ॥ य जग पल छिनक मेला है सफर पड़ना इकेला है ॥ गई रैन अब सवेला है । जपो राम अब भी वेला है ॥ तजो मोह माया तुम भाई । जनम विरथा ही सभ जाई । चले नहीं सँग पिता माई ॥ य जग सुपने की है नाई । तू क्यों मस्ते में वेरा है ॥ करे नित मेरा तेरा है ॥ जहां पर पडना फेरा है । कठिन रस्ता अँधेरा है ॥ जो प्रभुको मनसे ध्यातेहैं । उसीके गीत गाते हैं ॥ व बैकुंठमें जाते हैं । अटल पदवीको पाते हैं ॥ वही साकार सरगुण है । उसीका नाम निरगुणहै ॥ नहीं कोई भी उस बिन है । उसीकी

रात और दिनहै ॥ जहांपर उसको ध्यायाहै । वहीं मौजूद पाया है ॥ शरण अहकर भी आया है । यही अब जीमें भाया है ॥ ४३८ ॥

राग पीलो ।

हर से भी मन प्रीत लगाले । जिंदगीका कछु नफा कमाले ॥
यह जीना है चार दिहाडे । किस हस्ती पर पाउँ पसारे ॥
इस दिहका नहिं कुछ भरवासा । काहे दर दर फिरत पियासा ॥
जैसा मोह माया में कीना । अंत समय वैसा दुख दीना ॥
मुनि जन कर कर गये पुकारा । ऐसाही जीवन संसारा ॥
नये साल नित खुशी मनाई । खुशी नहीं यह उमर घटाई ॥
जिस खातर जग ठाट बनावे । आखिर कुछ तेरे साथ न जावे ॥
हाजिर होगा जब जम द्वारे ॥ तुझे मिलेंगे संकट भारे ॥
समझ सोचकर समां बिताओ । अंत समै पूरा सुख पाओ ॥
दुनीचंद हरि प्रीत सहारे । कर मँझधारसे नाव किनारे ॥ ४३९ ॥

राग प्रभाती ।

क्यों सोयाहै जाग मुसाफिर भोर हुआ पथ भारी है । वहुत मुसाफिर पार उतर गये और पूर की त्यारी है ॥ किस कारण तुम वने बिदेशी क्यों गफलत बुध मारी है ॥ नींद त्याग कर उत्तम सौदा सफर न बारंबारी है ॥ नेक अमल हरि नाम नफे विन सब बिरथा जर जारी है । मोह माया के जाल में पडना जिल्लत और खुवारी है ॥ स्याही गई सफेदी आई अजल कि दस्तक जारी है । विन खरीद हरी रस सौदाके जीती वाजी हारी है ॥ मेरी मेरीमें मन मूरख आयू कट गइ सारी है ॥ विन सत नाम यह सकल कमाई आखर सभ नाकारी है ॥ सच्चे सफर का फिकर भी करले वहां न किसीसे यारी है । रूप विना हरि नाम कमाई कोई नहीं उपकारी है ॥ ४४० ॥

तू मत समझ किसी को सभको समझ पराया रे ॥ एक वार भी मन चित दे जिन ईश्वर का गुन गाया रे ॥ लोक भ्रलोक में अहकर उसने मानसजन्म सुधाया रे ॥ ४३६ ॥

ग़ज़ल।

तुम्हें धनबाद ऐ ईश्वर तेरे सब खेल न्यारे हैं ॥ तेरे वेअन्त सागर में कई पैराक हारे हैं ॥ महा अंध घोरसे जल पर पृथिवी का रचा मंडल ॥ कमल से ब्रह्मा पैदा करके चारों वेद उचारे हैं ॥ कहीं जल और कहीं खुश्की कहीं पहाड़ों को कर कायम ॥ जुदा हर द्वीप और चश्में जो धरती पर सिंगारे हैं ॥ सतूं विन अरश कायम कर लगाया रंग कुदरत का ॥ जमाया चांद सूरज को सजाये क्या सतारे हैं ॥ बनाकर पेड़ फूलों किये तकसीम गुलशनमें। अयां कुदरतहै हरगुलसे अजब तेरे नजारेहैं ॥ हुई कायम य जब हस्ती फना को भी दी तब शक्ती । किसी की बसनहीं चलती जो रावन जैसे मारे हैं ॥ किसे ताकत दुनीचंद उसकी लीला जो करे वर्णन । ऋषीश्वर औ मुनीश्वर और योगीश्वर सभ पुकारे हैं ॥ ४३७ ॥

जगत सभ गैर है लोको । य कूड़ी सैर है लोको ॥ य जग पल छिनक मेला है सफर पड़ना इकेला है ॥ गई रैन अब सवेला है । जपो राम अब भी वेला है ॥ तजो मोह माया तुम भाई । जनम विरथा ही सभ जाई । चले नहीं सँग पिता माई ॥ य जग सुपने की है नाई । तू क्यों मस्ते में घेरा है ॥ करे नित मेरा तेरा है ॥ जहां पर पडना फेरा है । कठिन रस्ता अँधेरा है ॥ जो प्रभुको मनसे ध्यातेहैं । उसीके गीत गाते हैं ॥ व वैकुंठोंमें जाते हैं । अटल पदवीको पाते हैं ॥ वही साकार सरगुण है । उसीका नाम निरगुणहै ॥ नहीं कोई भी उस विन है । उसीकी

रात और दिनहै ॥ जहांपर उसको ध्यायाहै। वहीं मौजूद पाया है ॥ शरण अहकर भी आया है। यही अब जीमें भाया है ॥ ४३८ ॥

राग पीलो।

हर से भी मन प्रीत लगाले। जिंदगीका कछु नफा कमाले ॥
यह जीना है चार दिहाडे । किस हस्ती पर पाउँ पसारे ॥
इस दिहका नहिं कुछ भरवासा। काहे दर दर फिरत पियासा ॥
जैसा मोह माया में कीना। अंत समय वैसा दुख दीना ॥
मुनि जन कर कर गये पुकारा। ऐसाही जीवन संसारा ॥
नये साल नित खुशी मनाई। खुशी नहीं यह उमर घटाई ॥
जिस खातर जग ठाट बनावे। आखिर कुछ तेरे साथ न जावे ॥
हाजिर होगा जब जम द्वारे ॥ तुझे मिलेंगे संकट भारे ॥
समझ सोचकर समां बिताओ। अंत समै पूरा सुख पाओ ॥
दुनीचंद हरि प्रीत सहारे। कर मँझधारसे नाव किनारे ॥ ४३९ ॥

राग प्रभाती।

क्यों सोयाहै जाग मुसाफिर भोर हुआ पथ भारी है। बहुत मुसाफिर पार उतर गये और पूर की त्यारी है ॥ किस कारण तुम बने बिदेशी क्यों गफलत बुध मारी है ॥ नींद त्याग कर उत्तम सौदा सफर न बारंबारी है ॥ नेक अमल हरि नाम नफे विन सब बिरथा जर जारी है। मोह माया के जाल में पडना जिल्लत और खुवारी है ॥ स्याही गई सफेदी आई अजल कि दस्तक जारी है। बिन खरीद हरी रस सौदाके जीती बाजी हारी है ॥ मेरी मेरीमें मन मूरख आयू कट गइ सारी है ॥ बिन सत नाम यह सकल कमाई आखर सभ नाकारी है ॥ सच्चे सफर का फिकर भी करले वहां न किसीसे यारी है। रूप विना हरि नाम कमाई कोई नहीं उपकारी है ॥ ४४० ॥

हमें इक दिन फिर आखर को उसी घर सभको जाना है। समझ लो दिल में यहाँ किसका ठिकाना है॥ करो मत वैर तुम हरगिज अगरचिह जोरो ताकद है। चलो सभ मिलके आपस में कि यह चंदे जमाना है॥ कोई दम का य मेला है य क्यों आपसके झगडे हैं। नाहक यह मुफ्त में हर इक को दुश्मन क्यों बनाना है॥ जपो निशिदिन हरिहरको कहे गिरिधर जो हित चाहो। नहीं तो आप पछताओ मुझे केवल चिताना है॥ ४४२॥

राग जंगला।

मेरे मन राम को नाम अधारा। शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक निशिदिन करत विचारा॥ जाके जपंत कटत दुख दारुण उतर जात भवपारा। शबरी गीध अजामिलसे खल तिनहूं को प्रभु तारा॥ जिन जिन शरणलीन संकट में तिनको आप सुधारा। नाम महातमको बरनै सभ पाप कटन को आरा॥ प्रेम लाय जो ध्यान लगावे सो पावै सुख सारा॥ आयो तव पद शरण नाथ मैं औगुण अमित अपारा। गिरिधर पार उतारा मोको लैहों नाम तुम्हारा॥ ४४३॥

भ्रातृगण यह उपदेश हमारा। वेद शास्त्र पुराण निगमागम सब ग्रंथन को सारा॥ रघुवर चरण शरण होय उतरो भवसागरसे पारा। जाहि वेद कहै शुद्ध ब्रह्म सो दशरथ राज दुलारा॥ सर्व व्यापी सर्व अन्तरयामी सर्व जगत आधारा। छोड़ो सकल कुतर्क कपट मन जो होवे निस्तारा। सत्यनाम इक श्रीरघुवरका मिथ्या सब संसारा॥ ध्रुव प्रहलाद आदि भगतन हित होत अकार मकारा। दीन दयाल स्वामी सोई भये मनुज अवतारा॥ ४४४॥

राग पीलो।

राम बिना तेरा कोई ना सहाई। रात दिना तू सुमिरले भाई॥ यह जग है कोइ दिन का मेला क्यों झूठी है प्रीति लगाई। भाई

बंधु कुटुम्ब छोड़ कर तनहा जावेगा तू भाई ॥ कछु भी तेरे सँग चलना नाहीं महल माडियां खूब बनाई ॥ इक पल भी हरि नाम न लीन्हा आयु आपनी वृथा गँवाई ॥ कोईहै सुखमें दुखमें है कोई यह रचना हैं राम बनाई ॥ माधव रहु ईश्वरकी शरणी जो परलोक में हो सुखदाई ॥ ४४५ ॥

गज़ल ।

तू गोविंदहै और तू गोपालहै ॥ तूही कृष्ण लाला तू नंदलाल है ॥ एके रूप तेरा जगत् में समाया । पछावां तेरा कहीं ढूँढे न पाया ॥ मैं ढूँढू किधर नाथ देखूँ तुझे । कृपा करके अब दर्श दीजो मुझे ॥ मैं अनाथ हूं और तू नाथोंका है नाथ । नाम अपने की लाज पालो मेरे साथ ॥ तेरे चरणोंमें नित मेरी हो नमाम । गंगाविष्णुकी विनती है सुदाम ॥ ४४६ ॥

राग जंगला ।

नर अचेत पापसे डर रे ॥ दीन दयाल सकल भय भंजन शरण ताहि तू पड़ रे ॥ वेद पुराण जिसका गुण गावें ताको नाम हिये में धर रे ॥ पावन नाम जगत्में हरिको सुमिर सुमिर पापां मल हर रे ॥ मानस देह बहुरि नहिं पावे कछू उपाउ मुक्तिका कर रे ॥ नानक कहत गाय करुणामय भवसागर से पार उतर रे ४४७

विरथा कहों कौन सों मन की ॥ लोभ ग्रस्यो दशहूं दिशि धावत आशा लागी धनकी ॥ सुखके हेत बहुत दुख पावत सेव करत जन जनकी ॥ द्वारे द्वारे श्वान ज्यों डोलत नहिं सुधि राम भजनकी ॥ मानस जन्म अकारथ खोयो लाज न लोग हँसनकी ॥ नानक हरि यश क्यों नहिं गावत कुमति विनाशे मनकी ॥ ४४८ ॥

राग सोरठ।

भूल्यो मन माया उरझायो ॥ जो जो कर्म कियो लालच लगि तिहि तिहि आप बँधायो ॥ समझ न पड़ी विषयरस राच्यो यश हरि को बिसरायो ॥ सँग स्वामी सो जान्यो नाहीं बन खोजत को धायो ॥ रत्न राम घट ही के भीतर ताको ज्ञान न पायो ॥ नानक जन भगवंत भजन बिन बिरथा जन्म गँवायो ॥ ४४९ ॥

राग भैरवी।

हरि यश रे मन गाय ले जो संगी है तेरो । अवसर बीत्यो जातहै कहा मान ले मेरो ॥ संपति धन रथ राजसों अति नेहु लगायो । काल फांस जब गल पड़ी सभ भयो परायो ॥ जान बूझके बावरे तैं काज बिगारयो । पाप करत सकुच्यो नहिं नहिं गर्व निवारयो ॥ जिहि विधि गुरु उपदेशिया सो सुन रे भाई । नानक कहत पुकार के गहु प्रभु शरनाई ॥ ४५० ॥

हरजू राख लेहु पति मेरी ॥ काल को त्रास भयो उर अंतर शरण गही प्रभु तेरी ॥ भय मरन को बिसरत नाहीं तिहिं चिंता तन जारा ॥ किये उपाय मुक्तिके कारण दह दिशको उठधाया ॥ घट ही भीतर बसे निरंतर ताको मर्म न पाया ॥ नाहीं गुण नाहीं कछु जप तप कौन कर्म अब कीजे ॥ नानक हार परयो शरणागत अभय दान प्रभु दीजे ॥ ४५१ ॥

अब मैं कौन उपाय करूं । जिहि विधि मनको संशय चूके भवनिधि पारपरूं ॥ जन्म पाय कछु भलो न कीनो ताते अधिक डरूं ॥ गुरु मत सुन कछु ज्ञान ऊपज्यो पशुवत उदर भरूं । कहु नानक प्रभु बिरद पछानों तब हौं पतित तरूं ॥ ४५२ ॥

राग भैरव।

मन राम सुमिर पछतायगा ॥ पापी जीउड़ा लोभ करत है आज कल्ह उठ जायगा ॥ लालच लागे जन्म गँवायो माया भरम

भुलाय गा ॥ धन यौवन का गर्व न करिये कागज सा गलजायगा ॥ सुमिरन भजन दया नहिं कीनी ता मुख चोटा खायगा। धर्मराय जव लेखा मांगे क्या मुख लेकर जायगा ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो साधु संग तर जायगा ॥ ४५३ ॥

रग भैरवी ।

हरिसे लाग रहो रे भाई। तेरी विगड़ी वात वनजाई ॥ रंका तारचो वंका तारचो तारचो सधन कसाई। सुआ पढ़ावत गनिका तारी तारी है मीरा वाई ॥ दौलत दुनियां माल खजाने वधिया वैल चराई। जवहीं काल का डंका वाजे खोज खवर पर नहिं पाई ॥ ऐसी भक्ति करो घट भीतर छोड कपट चतुराई। सेवा वंदगी और अधीनता सहज मिलें रघुराई ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो सतगुरु वात वताई। यह दुनियां दिन चार दिन दिहाडे रहो रामलवलाई ॥ ४५४ ॥

राग जंगला ।

कोउ हरि समान नहिं राजा ॥ यह भूपति सव दिवस चार के झूंठे करत दिवाजा। जन तेरा सो कभूं न डोले तीन भुवन पर छाजा ॥ चेत अचेत मूढ़ मनमेरे करो हरीके काजा। हाथ पसार सके नहिं कोई वोल न सके अंदाजा ॥ कहत कबीर संशय भ्रम चूका ध्रुव प्रहलाद निवाजा ॥ ४५५ ॥

राग भैरवी।

सव सुख राम नाम लव लाई। नामविना सुख सकल वृथाई ॥ ना सुख होवन मूंड मुंडाई। ना सुख घर घर अलख जगाई ॥ ना सुख हे अपने वर माई। ना सुख भगवें भेप वनाई ॥ ना सुख वनमें ना सुख धन में ना सुख चिंता हरपाई। ना सुख योग यज्ञ तप पूजा ना सुख झूंठ समाधि लगाई ॥ ना सुख राजे

ना सुख रानी ना सुख हास विलास कहानी । ना सुख मानी ना अपमानी ना सुख झूँठी कर चतुराई ॥ ना सुख वेद किताब पुराना ना सुख कछू कथे मुख ज्ञाना । सगरे सुख कबीर सो पाई जो जन राम नाम लवलाई ॥ ४५६ ॥

राग सोरठ।

जबलग मेरी मेरी करै। तबलग काज एक नहिं सरै॥ जो मेरी मेरी मिट जाय। तो प्रभु काज सँवारे आय ॥ ऐसा ज्ञान विचार मना। हरी क्यों न सुमिरे दुख भंजना ॥ जबलग सिंह रहे वन माहीं। तबलग वन फूले ही नाहीं ॥ जबहीं स्याल सिंहको खाय। फूल रही सकली बनराय ॥ जीतो बूड्यो हारो तारचो। गुरुप्रसाद सोइ पार उतारचो ॥ दास कबीर कहे समुझाय। केवल राम रहो लव लाय ॥ ४५७ ॥

ऐसो है रे भाई हरि रस ऐसो है रे भाई जाके पिये अमरहो जाई ॥ ध्रुव पीया प्रहलाद ने पीया पीया है मीराबाई ॥ बलख बुखारेके मीयां पीया छोडी है बादशाही । हरिरस मँहगा मोल कारे पीये विरला कोय ॥ हरि रस महँगा सो पिये जाके धर पे शीश न होय । आगे आगे दौ चले रे पछि हरिया होय॥ कहत कबीर सुनो भाइ साधो हरि भज निर्मल होय ॥४५८ ॥

राग देश।

चुनरी मेरी रँग डारी मेरे सतगुरु हैं रँगरेज । भाउके कुंड नेह के जलमें प्रेम रंग दई बोर ॥ चस की चास लगाय के खूब रँगी झक झोर। स्याही रंग छुडायके दिया मँजीठा रंग ॥ बूंद पडी ठहरे नहीं दिन दिन होय सुरंग। सतगुरुने चुनरी रँगी है सतगुरु चतुर सुजान ॥ सब कछु उनको वार दूं तन मन धन औ प्राण । कहे कबीर चुनरी रंगी गुरु मुझपर होये दियाल ॥ शीतल चुनरी ओढ़ कर मगन भई हौं निहाल ॥ ४५९ ॥

संतो ऐसा धुंध पसारा। इस घट अंतर वाग वगीचा इसीमें सिरजन हारा॥ इस घट अंतर सात समुद्रा इसीमें वारा पारा। इस घट अंतर हीरा मोती इसीमें परखन हारा॥ इस घट अंतर चांद सूरज हैं इसीमें बेहद तारा॥ इस घट अंतर अनहद गरजे इसीमें उठत फुआरा॥ कहैं कवीर सुनो भाई साधो याही में गुरू हमारा॥ ४६०॥

राग भैरवी।

राम जपो जीया ऐसे ऐसे॥ ध्रुव प्रहलाद जप्यो हरि जैसे॥ दीन दयाल भरोसे तेरे॥ सव परवार चढ़ायो वेड़े॥ जां तिस भावे तां हुकम मनावे॥ इस वेडे को पार. लँघावे॥ गुरु प्रसाद ऐसी बुद्धि समानी॥ चूकगई फिर आवन जानी॥ कहत कवीर भज शारँग पानी॥ वार पार सम एको जानी॥ ४६१॥

जिहि मरने ते सव जग त्रासा॥ सो मरना गुरु शब्द प्रकासा॥ अव कैसे मरो मरन मन मान्या॥ मर मर जाते जिन राम न जान्या॥ मरनो मरन कहे सव कोई॥ सहजे मरे अमर होय सोई॥ कह कवीर मन भया अनंद॥ गया भरम रह्या परमानंद॥ ४६२॥

राग सोरठ।

यही घडी यह वेला साधो॥ लाख खर्चे फिर हाथ न आवे मानस जन्म सुहेला॥ ना कोइ संगी ना कोई साथी यह जाता भँवर इकेला॥ क्यों सोया उठ जाग सवेरे काल मरेंदा सेला॥ कहत कवीर गोविंद गुण गावो झूँठा है सव मेला॥ ४६३॥

राग झंझोटी।

मेरे राना जी में गोविंद के गुन गाना॥ राजा रूठे नगरी राखे अपनी मेहर रूठे कहां जाना॥ राने भेजा जहर प्याला में

अमृत कर पीजाना ॥ डबिया में काला नाग जो भेजा मैं सालगराम कर जाना ॥ मीराबाई प्रेम दिवानी मैं सांवरिया वर पाना ॥ ४६४ ॥

तुम मेरी राखो लाज हरी । तुम जानत सब अन्तरयामी करनी कछु न करी ॥ औगुण मोसे बिसरत नाहीं पल छिन घरी घरी । सब प्रपंच की पोट बांध कर अपने शीश धरी ॥ दारा सुत धन मोह लिये हौ सुध बुध सब बिसरी । सूर पतित को बेग उधारो अब मेरी नाव भरी ॥ ४६५ ॥

राग खमाच ।

काया हरि के काम न आई ॥ भक्ति भाव जहँ हरि यश सुनियत तहां जात अलसाई ॥ काम मनोरथ लोभातुर है तहां सुनत उठ धाई ॥ जब लग प्रेम रंग नहिं परसत अंधे ज्यों भरमाई ॥ सूरदास भगवंत भजन बिन विषय परम बिष खाई ॥४६६॥

भले बुरे तो तेरे ठाकुर ॥ हमरे कुल की लाज बड़ाई विनती सुनो प्रभु मेरे ॥ सब तज तुम शरणागत आयो दृढ कर चरण गहेरे ॥ तव प्रसाद हम वदत न काहू निडर भये घर घेरे ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरी कृपा से पाये सुक्ख घनेरे ॥ ४६७ ॥

राग सारंग ।

जिहिं तन ना हरि भजन कियो ॥सो तन सूकर श्वान मीन ज्यों यह सुख कहा जियो ॥ जो जगदीश ईश सबहिन को ताहि न चित्त दियो ॥ प्रकट जान यदुनाथ बिसारयो आशा मद्य पियो ॥ चार पदारथ को प्रभु दाता तिन्हें न मिल्यो हियो ॥ सूरदास रसना वश अपने टेर न नाम लियो ॥ ४६८ ॥

मन मेरो गज जिह्वाकाती ॥ मप मप काटो जमकी फांसी ॥ कहा करूं जाती कहां करूं पांती ॥ राम का नाम जपों दिन राती॥

रंगन रंगों सीवन सीवों ॥ राम नाम विन घडी न जीवों ॥ भक्ति करों हरि के गुन गाऊँ ॥ आठ पहर अपना खसम ध्याऊँ ॥ सोनेकी सूई रूपे का धागा ॥ नामेका चित्त हरि संग लागा ॥४६९॥

जस भूँखे प्रीत अनाज ॥ तृषावंत जल सेती काज ॥ जैसे मूढ कुटुंब परायण ॥ ऐसे नामे प्रीति नरायण ॥ नामे प्रीत नारायण लागी । सहज सुभाय भयो वैरागी ॥ जैसे पर पूरुप रत नारी ॥ लोभी नर धनका हितकारी ॥ कामी पुरुप कामिनी प्यारी। ऐसी नामे प्रीत मुरारी ॥ जैसे प्रीत वालक अरु माता । ऐसा हर सेती मन राता ॥ प्रणवेनाम देउ लागी प्रीत। गोविंदंसे हमारो चीत ॥ ४७० ॥

राग भैरवी।

रे प्रानी क्या मेरा क्या तेरा। जैसे तरुवर पंख वसेरा ॥ जल का भीत पवन का थंभा रक्त विंदु का गारा । हाडमाँस नाड़ीका पिंजर पंखी वसे विचारा ॥ राखो कंध उसारो नीवां। साढे तीन हाथ तेरी सीवां ॥ वाँके वाल पाग शिर टेढ़ी । यह तन होगा भस्मकी ढेरी ॥ ऊंचे मंदिर सुंदर नारी। राम नाम विन वाजी हारी ॥ मेरी जात कमीनी बुद्ध कमीनी ओछा जन्म हमारा । तुमरी शरणागत में प्रभुजी कहे रामदास चमारा ॥ ४७१ ॥

राग कान्हरा।

साँची प्रीत हम तुमसँग जोड़ी । तुमसँग जोड़ अवर सँग तोड़ी ॥ जो तुम वादर तो हम मोरा । जो तुम चंद हम भये चकोरा ॥ जो तुम दीवा तो हम वाती। जो तुम तीरथ तो हम जात्री। जहाँ जाउँ तहँ तुम्हरी सेवा ॥ तुमसा ठाकुर और न देवा। तुमरे भजन कटे भय फाँसा। भक्ति हेतु गावे रविदासा ॥ ४७२ ॥

राग सोरठ ।

मुकुंद मुकुंद जपो संसार । बिन मुकुंद तन होसी छार ॥ सोई मुकुंद मुक्तिका दाता । सोई मुकुंद हमरा पितु माता ॥ जिवत मुकुंदे मरत मुकुंदे । ताके सेवकको सदा अनंदे ॥ मुकुंद मुकुन्द हमारे प्रान । मुकुन्द हमारे मस्तक निशान ॥ उपज्यो ज्ञान हुआ प्रकास । कर किरपा लीने कीटदास ॥ कहे रविदास अब तृष्णा चूकी । जप मुकुंद सेवा ताहूकी ॥ ४७३ ॥

राग देश ।

ब्राह्मण वैश्य शूद्र अरु क्षत्री डोम चंडाल म्लेच्छ पुनि होई । होय पुनीत भगवंत भजनते आप तार तारे कुल दोई ॥ धन्य सो गाउँ धन्य सो थाऊँ धन्य कुटुंब पुनीत सभ लोई ॥ जिन पियासा रस तजे आन रस होय मगन डारे विष खोई । पंडित शूर छत्रपति राजा भगत बराबर और न कोई ॥ ४७४ ॥

राग काफी ।

तैं शौंह मनमें किया रास रोस । मुझ औगुन शौह नाहीं दोस ॥ तैं साहिबकी मैं सार न जानी ॥ जोवन खोय पाछे पछ-तानी ॥ काली कोयल तू कित गुण काली ॥ अपने प्रीतम के हौं विरहों जाली ॥ पिय बिहूनी न किते सुख पाये ॥ जां होय कृपाल तां प्रभु मिलाये ॥ कर कृपा प्रभु साध संग मेली ॥ जां फिर देखा मेरा साहिब बेली ॥ बहुत दूर है शौहर मेरा ॥ शेख फरीदा पंथ सम्हार सवेरा ॥ ४७५ ॥

राग जंगला ।

दिलों मुहब्बत जिन्हां सेई सच्यां ॥ जिन मन होर मुख होर सेई काढे कच्यां ॥ रत्तेइशक खुदा रंग दीदारके ॥ विसरया

जिन्हा नाम ते भोये भार भे ॥ आप लये लड़ लाय दरवेशसे ॥ तिन धन्य जनेदी मां आये सफलसे ॥ परवरदिगार अपार अगमवेअंततूं ॥ जिन्हां पछाता सच्च चुम्मां पैर भूं ॥ तेरी पनाह खुदाय तू वखशिदगी । शेख फरींदे खैर दीजे वंदगी ॥ ४७६ ॥

अंतरमल निर्मल नहिं कीनी बाहर भेख उदासी ॥ हृदेकमलघट ब्रह्म न चीन्हा काहे भयो संन्यासी ॥ भरमें भूले रे जैचंदा नहिं नहिं चीना परमानंदा ॥ घर घर खाया पिंड बधाया किंथा मुंदा माया ॥ भूमि मसान कि भस्म लगाई गुरु विन तत्त्व न पाया ॥ काहे जपो रे काहे तपो रे काहे वलोवो पानी ॥ यह सृष्टि है जिन उपाई सो सिमरो निमरो निरवानी ॥ कायक मंडल का पड़िया रे अठसठ काहे फिराई । वदत त्रिलोचन सुर रे प्रानी हरी शरनी गत पाई ॥ ४७७ ॥

राग आसा ।

ऐसा नाम रत्न निरमोलक पुण्य पदारथ पाया ॥ अनेक यत्न कर हिरदे राख्या रत्न न छिपे छपाया । हरि गुण कहते कहते कहन न जाई ॥ जैसे गूँगे की मठयाई । रसना रमत सुनत सुख श्रवणा चित चेते सुख होई ॥ कह भीषण दोय नयन संतोषे जहिं देखा तहिं सोई ॥ ४७८ ॥

कवित्त ।

कोई एक पंडित हो विद्या गुण मंडित हो डस्यो कालीनाग गयो गणिका निवास में ॥ कीनो मैथुन निवेश ह्वै विषय को प्रवेश रैन बीती सारी सुख कामके हुलासमें ॥ केलि कर भयो भोर मुसकाय मुख मोर बोली एहो प्राणप्यारे मिलोगे अब कासमें ॥ जो पै वेद औ पुराण स्मृति सब सांचे होंय मेरी तेरी भेंट होय कुंभी पाक वासमें ॥ ४७९ ॥

कुंडलिया ।

मंडल है ऐश्वर्य को सज्जनता सन्मान । वाणी सज्जन शूरता मंडल धनको दान ॥ मंडल धन को दान ज्ञ   मंडल इन्द्रीदम । तप मंडल अक्रोध नियम मंडल सोहत सम ॥ प्रभुता मंडन माफ धर्म मंडन छर छंडन । सबहिनमें सरदार शीलता सबका मंडन ॥ ४८० ॥

कबित्त ।

रहाहै न कोई यहां रहिहै न कोई यहां जाने सब कोई पै न मानै मोहपरिगे ॥ हाथी अरु घोड़े रथछोडे सब ठौर ठौर भौननमें गाड़े भूरि भांडे ते बिसरिगे । कहै छबिनाथ रघुनाथके भजन बिन ऐसेही बिचारे जन्म कोटिन निसारिगे ॥ जंगवाले जोरवाले जाहिर जरबवाले जोशवाले जालिम चिता की आग जरिगे ॥ ४८१ ॥

सवैया ।

भोग में रोग वियोग सँयोग में योगमें काया कलेश कमायो ॥ त्यों पद्माकर वेद पुराण पढ्यो पढ़के बहु बाद बढ़ायो ॥ दौर्यो दुराशा में दास भयो पै कहूं विशराम को धाम न पायो । काया कमायो सो ऐसेहि जीवन हाय मैं राम को नाम न गायो ॥४८२॥

कवित्त ।

नारि के विकार सब ख्वार किये जीव जंतु नारि के विकार ब्रह्मादिक भरमाये हैं ॥ नारि के विकार हार चले सब ऋषी मुनी नारिके विकार शिव ध्यानसा छुडाये हैं ॥ नारिके विकार शशि सूर कला दूर भये नारी के विचार राउ रंक मरवायेहैं । कहै एक साईं लोक नारि का विकार तज ताते योगीजन संत तभी तो कहाये हैं ॥ ४८३ ॥

पकड लै चलें घराथी कौन करे निरवैर ॥ खुदी खोई अपना पद चीन्हा तब हो कुल खैर ॥ बुल्लाशाह दोहीं जहानी कोई न दिसदा गैर ॥ ४९१ ॥

राग विहाग ।

वस्स कर जी हुन वस्स कर जी ॥ काई वात असा नाल दस्स कर जी ॥ तूसी दिल मेरे विच वसदेसी ॥ तदों सानूं दूर क्यों दस देसी ॥ तदों घत्त जादू दिल खसदेसी ॥ हुनाकितवल जासू नस्स कर जी ॥ तुसीं मोयां नू मार न मुकदे सी ॥ नित्त खुदों वांगू कुटदे सी ॥ गल्ल करदे से गल घुटदेसी ॥ हुन तीर लायो तन कस्सकर जी ॥ तुसीं छिपदे से असां पकड़े हो ॥ तुसीं अजे छिपण नूँतकड़े हो ॥ असां विच जिगर दे जकड़े हो ॥ हुनकहां जाओ दिल खस्स कर जी ॥ बुल्लाशाह असीं तेरे वरदे से ॥ तेरे मुख देखन नूं मरदे से ॥ तुध वांगू मिन्नता करदे से हुन वैठे पिंजरे विच वस्स कर जी ॥ ४९२ ॥

इश्क दीनवीं ओं नवीं वहार ॥ जो मैं सवक इशक दा पढ्या॥ जीवडा मसजद कोलों डरया ॥ नां सद वाना शिरपर धरया ॥ घर विच पाया महरम यार ॥ जो मैं रमज इशक दी पाई ॥ मैंनां तूती मार गँवाई ॥ अंदर बाहर होई सफाई ॥ जितवल देखां यारो यार ॥ वेद पुराण पढ़ पढ़ थक्के ॥ सिजदे कर दियां घस गये मत्थे॥ नां रव तीरथ नारव मक्के ॥ जिन पाया तिन नूर जमाल ॥ इशक भुलाया मेरा तेरा हुन क्यों रोवें झेडा ॥ वुल्ला रहिंदा चुप चुपाता दिल विच खुल्हे सभ इसरार ॥ ४९३ ॥

गज़ल ।

प्यारे गम छोड दुनिया का साहव से आशनाई कर ॥ सभी कुछ छोड जाना है सादिनसे ना जुदाई कर ॥ भिखारिन नाम है मेरा

करूंगी हर घडी फेरा॥ बता देवो पिया का डेरा बिरहों ने जिसके है घेरा॥ लागी है प्रेम की लोकी तुम्हारे दरश की भूँखी वली को ला मिलाओगे नहीं तो जान अब सूखी॥ ४९४॥

गज़ल।

काफरे इशकम मुसलमानी मरा दरकार नेस्त॥ हर रगे मन् तरा गश्तह हाजते जुन्नार नेस्त॥ अजसिरे बालीने मन् बरखेज अय नांदां तबीब॥ दर्दशोरे बुलबुल कम न गर्दद गर रवद गुल अज चमन्॥ हुस्न बेबुनियाद बाशद इश्क बे बुनियाद नेस्त॥ शाद बाश ऐ दिलकी फरदा अज सिरे बाजारे इश्क॥ वादये कतलस्त बाशद दावए दीदार नेस्त॥ मा गरीबां रा तमाशय चमन् दरकार नेस्त॥ दागहाय सीना बर मन कमतर अज गुलजार नेस्त॥ नाखुदा दर किश्तिये मन गर न बाशद गो मुवाश॥ मा खुदा दारेम मारा न खुदा दरकार नेस्त॥ मंदे इशक रा दारू बजुज् दीदार नेस्त॥ खल्क मेगोयद कि खिसरो बुत्परस्ती मेकुनद॥ आरे आरे मेकुनम वा खुलके आलम कार नेस्त॥ ४९५॥

अय चिहरए जेबाय तो रशके बुताने आजरी हरचंद वसूफत मेकुनम् लेकिन अजां बाला तरी॥ आफाक रागरदी दह अम मिहरे बुतां वरजी दहअम्॥ बिस्यार खूबां दीदह अम अम्मा तो चीजें दीगरी॥ मनतो शुदम तो मन शुदी मन् तन् शुदम् तो जाँ शुदी॥ ता कस न गोयद बादजीं मन् दीगरम तो दीगरी॥ खिसरो गरीबस्तो गदा उफ़तादह दर सहरे शुमा॥ बाशद कि अज बहरे खुदा सूये गरीबां बिंगरी॥ ४९६॥

राग परज।

तू बात चलन दी कर रे एथे रहना नाहिं॥ इस देही विच पांच चोर हैं इन्हां दा कह्या न करे। इह संसार कंड्यां दी बाड़ी

तू सँभल सँभल पग धररे ॥ साढे तीन हत्थ जिमीं वन्द तू एडड़े मुल्क, न मल्ल रे ॥ हुसेन फकीर स्वाणा झूँठी दुनिया कूडा वाणा तू हरि चर्नन चित धररे ॥ ४९७ ॥

गज़ल ।

तुझसे मैंने दिलको लगाया॥ एक तुझको अपना पाया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ सब कीनो मकां दिल में तू ॥ कौन दिल है जिसमें नहीं तू हर एक दिल में तू ही समाया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ कैसा मुलायक कैसा इन्सां ॥ कैसा हिंदू कैसा मुसल्मां ॥ जैसा चाहा तूने बनाया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ काबे में क्या और देर में क्या ॥ तेरी परस्तिश है सब जा ॥ आगे तेरे सिर सबने झुकाया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ अरश से लेकर फरसे जिमी तक ॥ और जमीं से अरशे वरीं तक ॥ जहां में देखा तू ही नजर आया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ सोचा समझा देखा भाला ॥ तुझे छान कर ढूँढ़ निकाला ॥ अब यही समझमें जफ़र के आया ॥ जो कुछ है सो तूही है ॥ ४९८ ॥

राग आसा ।

क्यों मन भूलाहै संसारा ॥ मन मत दे टुक कर ले गुजारा ॥ इस जगमें सुख नित नहिं भाई यह तो है जैसे पानी की धारा ॥ मात पिता अरु खेश कुटुंब सब संग नहीं कोइ जावन हारा ॥ अंत समै सब देखन आवें छिन भर में सब होवें न्यारा ॥ जो कुछ अंगमें होगा तुम्हारा वह भी सब मिल लेवैं उतारा ॥ भाई नरकोंमें जब तुम पड़ोगे तब नहीं कोई बचावन हारा ॥ भाई मुक्तिका तुम भी करो खोज करुणामय प्रभु तारन हारा ॥४९९॥

ग़ज़ल।

सुनोरे भाइयो तुमको यहाँसे कूच करना है ॥ रहो तुम याद हकमें जब तलक ह्यां आवो दानाहै ॥ क्यों इतना होके गाफिल भूले इस दुनियाँ के लालच में ॥ करो कुछ ख्याल भाई हकका अगर जिन्नत को पाना है ॥ पडे सोतेहो गफ़लत् में ज़रा टुक् आंख को खोलो ॥ हुई है शाम उठ बैठो मुसाफिर घरको जाना है ॥ न दौलत काम आवेगी न इस दुनियांसे कुछ हासिल ॥ अगर तुम सोच कर देखो यह सब कुछ छोड़ जाना है ॥ हयात अबदी अगर चाहो तो छोड़ो तुम गुनाहों को ॥ कहे मुकती प्रभू सुमिरो वही सच्चा ठिकाना है ॥ ५०० ॥

बस अब मेरे दिल में बसा एक तू है ॥ मेरे दिलका अब दिल-रुबा एक तू है ॥ फकत तेरे कदमों से अय मेरे खालक ॥ लगा अब मेरा ध्यान शामो सुबू है ॥ मेरा दिल तो तुझसेही पाता है तसकीं ॥ बसी मगज में प्रेमकी तेरी बू है ॥ समझते हैं यूं मुझको अकसर दिवाना ॥ तेरा जिक्र विरदे जवां कू बकू है ॥ नहीं मुझको दुनियावी खुशबू से उल्फत ॥ तेरा प्रेम ही अब मेरा मुश्को बू है॥ रँगूँ प्रेम से तेरे दिलका य चोला ॥ जिसे ज्ञान से अब किया कुछ रफ़ू है ॥ न पाला पडे नफसे शैतांसे मुझको तेरे दास की अब यही आरज़ू है ॥ ५०१ ॥

प्रभू प्रेम एक शरबते दिलकशा है ॥ गुनह के मरीजो कि नादर दवा है ॥ जो प्रेम एक वारी सिदक दिलसे पीयो ॥ गुनह के मरज से तो हुकमन सफाहै ॥ सिदक दिल से इक वार पीकर तो देखो खुदा के लिये यह मेरी इलतजा है ॥ फँसा जो गुनह में निकलता है मुश्किल ॥ य जालम बुरी रूह के हक

में ववा है॥ जो निकला नफस की गुलामी से यारो॥ उसे मरहवा मरहवा मरहवा है॥ फिदा हूं हरंदाज पर उसके में भी॥ खुदा को ही जिसने दिल अपना दिया है॥ गनी होगया जव मिला जिस गदा को॥ प्रभू प्रेम क्या नुस्खये कीमियाँ है फिदा तूभी विश्वासि हो अव खुदा पर॥ न ला काम गफलत को अव दूर क्या है॥ ९०२॥

अजव तेरा कानून देखा खुदाया॥ जहां दिल दिया फिर वही तुझको पाया॥ न यां देखा जाता है मंदिर व मसाजिद॥ फकत यह कि तालव सिदक दिल से आया॥ जो तुझपे फिदा दिल हुआ एक वारी॥ उसे प्रेम का तूने जलवा दिखाया॥ तेरी पाक सीरत क आशक हुआ जो॥ वही रँग रँगा फिर जो तूने रँगाया॥ है गुमराह जिस दिल में वाकी खुदी है॥ मिला तुझसे जिसने खुदी को गँवाया॥ हुआ तेरे विश्वासी को तेरा दरशन॥ गदा को दुरे वेवहा हाथ आया॥ ९०३॥

जलवए हक जहां जिस दिल में नमूदार हुआ॥ खुद को सदकह किया रुसवा सिरे वाजार हुआ॥ जिसने पाया नहीं मुमकिन कि वह खामोश रहे खुद वखुद जलवय हक वाइसे इजहार हुआ॥ कशिश उलफते दुनिया है वहुत सद्दे राह॥ जिसने दफा इसको किया वही खवरदार हुआ॥ भक्ती और प्रेम के फूलों से सजा गुलशने दिल॥ इक नये तरज क गुलदस्तए वेखार हुआ॥ डूवा वह दिल जो फँसा उलफते दुनियावी में॥ जिसने दिल हक को दिया वही वशर पार हुआ॥ तूभी विश्वासी शरण ले उसी हकताला की॥ जिसको लेकरही हर एक पापी का उद्धार हुआ॥ ९०४॥

ग़ज़ल।

समझ बूझ दिल खोज पियारे आशक होकर सोना क्या॥ जिन नैनोंसे नींद गँवाई तकिया लेफ बिछौना क्या॥ रूखा सूखा राम क टुकड़ा चिकना और सलोना क्या॥ कहत कमाल प्रेमके मारग शीश दिया फिर रोना क्या॥ ५०५॥

नाम जपन क्यों छोड़ दिया॥ क्रोध न छोड़ा झूँठ न छोड़ा सत्य वचन क्यों छोड़ दिया॥ झूँठे जगमें दिल ललचाकर असल वतन् क्यों छोड़ दिया॥ कौड़ी को तू खूब सँभाला लाल रतन् क्यों छोड दिया॥ जिहिं सुमिरन ते अति सुख पावे सो सुमिरन क्यों छोड दिया॥ खालसइक भगवान भरोसे तन मन धन क्यों छोड़ दिया॥ ५०६॥

राग आसा।

प्रभु को सुमिर सुमिर मन मेरे॥ पाप कटें सब तेरे॥ नाम दान असनान नरार्थ जब प्रीत नहीं मन तेरे॥ जात पाँत की बात न पूछें पूछ काज भलेरे॥ जिन करतार अकाल पछाना सोई जात उचेरे॥ दो दिनके सुख कारन मूरख पावत उमर बखेरे॥ गंग यमुन काशी बन जगल हर घट मों हर नेरे॥ पर जो उस को ढूँढ़न जावत ऊजड फिरत अँधेरे॥ सांच त्याग मिथ्या जिन पकडी अति उन दुःख सहेरे॥ खालस जिन भगवान पछाता हम तिनके हैं चेरे॥ ५०७॥

राग गौरी।

साधो मनका मान त्यागो॥ काम क्रोध संगत दुर्जनकी ताते अह निस भागो॥ सुख दुख दोनों सम कर जानें और न अपमाना। हर्ष शोक ते रहै अतीता तिन जग तत्त्व पछाना॥

अस्तुति निंदा दोऊ त्यागै खोजै पद निरवाना ॥ जननानक खेल कठिन है किनहूं गुरमुख जाना ॥ ५०८ ॥

साधो रचना राम बनाई ॥ इक विनशै इक अस्थिर मानै अचरज लख्यो न जाई ॥ काम क्रोध मोह वश प्राणी हरि मूरत विसराई ॥ झूँठा तन सांचा कर मान्यो ज्यों सुपना रैनाई ॥ जो दीसै सो सकल विनाशै ज्यों बादर की छाई ॥ जन नानक जग जानो मिथ्या रहो राम शरनाई ॥ ५०९ ॥

राग कान्हरा।

तुही एक मेरा मददगार है ॥ तेरा आसरा मुझको दरकार है ॥ किये मैंने अपराध बख्शो सभी नहीं जिनका कुछभी तो शुम्मार है ॥ कई पतित तारे सुनाऊं मैं क्या क्या बताने में ब्रह्मा भी लाचार है ॥ भगत राम भी दर तेरे पै पडा तू चाहै तो अबही बेडा पार है ॥ ५१० ॥

दोहा—कहा करै रसखान को, कोऊ कुटिल लबार।
जो पै राखन हार है, माखन चाखन हार ॥

इति श्रीरागरत्नाकरे तृतीयभागः समाप्तः।



ओं तत् सत् परमात्मने नमः।

अथ रागरत्नाकर.

चतुर्थभागप्रारंभः।

अथ ग्रंथसाहिबके शब्द।

जे युग चारे आरजा होर दसूणी होय ॥ नवां खंडां बिच जाणिये नाल चले सभ कोय ॥ चंगा नाँउ रखायके यश कीरति जग लेय ॥ जे तिस नदर न आवई तां बात न पुच्छे केय ॥ कीटां अंदर कीट कर दोसीं दोस धरेय ॥ नानक निर्गुण गुण करे गुणवंत्यां गुण देय ॥ तेहा कोय न सूझई जे तिस गुण कोय करेय ॥ १ ॥

जत्त पहारा धीरज सुनिआर ॥ अहरण मत्त वेद हथियार ॥ भौ खल्लां अग्नि तपाउ ॥ भांडा भाउ अमृत तित ढाल ॥ वड़ीये शब्द सच्ची टकसाल ॥ जिनको नदर करम तिन कार ॥ नानक नदरीं नदर निहाल ॥ २ ॥

पवन गुरू पाणी पिता माता धरति महत्त ॥ दिवस रात दोय दाईं दाया खेल सकल जगत्त ॥ चंगि आइयां बुरी आइयां वाचै धर्म हजूर ॥ करमी आयो आपणी के नेडै के दूर ॥ जिन्हीं नाम ध्याइया गये मुशकत घाल ॥ नानक ते मुख उज्जले केती छुट्टी नाल ॥ ३ ॥

राग आसावरी।

सो दर तेरा केहा सौ घर केहा जित बहि सर्व समाले ॥ वाजेतेरे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी

अस्तुति निंदा दोऊ त्यागै खोजै पद निरवाना ॥ जननानक खेल कठिन है किनहूं गुरमुख जाना ॥ ५०८ ॥

साधो रचना राम बनाई ॥ इक विनशै इक अस्थिर मानैं अचरज लख्यो न जाई ॥ काम क्रोध मोह वश प्राणी हरि मूरत विसराई ॥ झूठा तन सांचा कर मान्यो ज्यों सुपना रैनाई ॥ जो दीसै सो सकल विनाशै ज्यों बादर की छाई ॥ जन नानक जग जानो मिथ्या रहो राम शरनाई ॥ ५०९ ॥

राग कान्हरा।

तुही एक मेरा मददगार है ॥ तेरा आसरा मुझको दरकार है ॥ किये मैंने अपराध वख्शो सभी नहीं जिनका कुछभी तो शुम्मार है ॥ कई पतित तारे सुनाऊ मैं क्या क्या बतानें में ब्रह्मा भी लाचार है ॥ भगत राम भी दर तेरे पै पडा तू चाहैं तो अबहीं बेडा पार है ॥ ५१० ॥

दोहा—कहा करे रसखान को, कोऊ कुटिल लवार।
जो पै राखन हार है, माखन चाखन हार ॥

इति श्रीरागरत्नाकरे तृतीयभागः समाप्तः।



ओं तत् सत् परमात्मने नमः।

अथ रागरत्नाकर.

चतुर्थभागप्रारंभः।

अथ ग्रंथसाहिबके शब्द ।

जे युग चारे आरजा होर दसूणी होय ॥ नवां खंडां बिच जाणिये नाल चले सभ कोय ॥ चंगा नाँउ रखायके यश कीरति जग लेय ॥ जे तिस नदर न आवई तां वात न पुच्छे केय ॥ कीटां अंदर कीट कर दोसीं दोस धरेय ॥ नानक निर्गुण गुण करे गुणवंत्यां गुण देय ॥ तेहा कोय न सूझई जे तिस गुण कोय करेय ॥ १ ॥

जत्त पहारा धीरज सुनिआर ॥ अहरण मत्त वेद हथियार ॥ भौ खल्लां अग्नि तताउ ॥ भांडा भाउ अमृत तित ढाल ॥ वड़ीये शब्द सच्ची टकसाल ॥ जिनको नदर करम तिन कार ॥ नानक नदरीं नदर निहाल ॥ २ ॥

पवन गुरू पाणी पिता माता धरति महत्त ॥ दिवस रात दोय दाई दाया खैल सकल जगत्त ॥ चंगि आइयां बुरी आइयां वाचै धर्म हजूर ॥ करमी आयो आपणी के नेडै के दूर ॥ जिन्हीं नाम ध्याइया गये मुशक्कत घाल ॥ नानक ते मुख उज्जले केती छुट्टी नाल ॥ ३ ॥

राग आसावरी ।

सो दर तेरा केहा सौ घर केहा जित वहि सर्व समाले ॥ बाजेतेरे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी

सिउ कहीअहीं केते तेरे गावणहारे ॥ गावण तुधनूं पवन पाणी बैसंदर गावै राजा धर्म द्वारे ॥ गावन तुधनूं चित्रगुप्त लिख जानण लिख लिख धर्म बीचारे ॥ गावन तुधनूं ईश्वर ब्रह्मा देवी सोहन तेरे सदा सवारे ॥ गावन तुधनूं इंद्र इंद्रासन बैठे देवतियाँ दर नाले ॥ गावन तुधनूं सिद्ध समाधी अंदर गावन तुधनूं साध विचारे ॥ गावन तुधनूं यती सती संतोष गावन तुधनूं वीर करारे॥ गावन तुधनूं पंडित पढ़न ऋषीश्वर युग युग वेदां नाले ॥ गावन तुधनूं मोहनियां मनमोहन सुरंगा मच्छ प्याले ॥ गावन तुधनूं रत्न उपाये तेरे अठसठ तीरथ नाले ॥ गावन तुधनूं जोध महाबल सूरा गावन तुधनूं खाणी चारे ॥ गावन तुधनूं खंड मंडल ब्रह्मांडा कर कर रखे तेरे धारे॥ सेई तुधनूं गावन जो तुध भावन रत्ते तेरे भगत रसाले ॥ होर केते तुधनूं गावन से मैं चित्त न आवन नानक क्या वीचारे ॥ सोई सोई सदा सच साहिब सांचा सांची नाईं ॥ है भी होसी जाय न जासी रचना जिन रचाई ॥ रंगी रंगी भातीं कर कर जिनसीं माया जिन उपाई ॥ कर कर देखे कीता अपणा ज्यों तिसदी बडिआई ॥ जो तिस भावै सोई करसी फिर हुकम न करना जाई ॥ सो पातशाह शाहां पति साहिब नानक रहण रजाई ॥ ९ ॥

राग गुजरी ।

काहे रे मन चितवै उद्यम जां आहर हरिजी उपरिआ शैल ॥ पत्थर में जंत उपाये तांका रिजक आगे-कर धरिआ ॥ मेरे माधो जी सतसंगति मिले सो तरचा ॥ गुरु प्रसाद परमपद पाया सूके-काशट हरचा ॥ जननी पिता लोक सुत वनिता कोय न किसकी धरया ॥ सिर सिर रिजक सँवाहे ठाकुर काहे मन भौं करचा ॥ ऊडे ऊड आवें से कोसां तिस पाछे बच्छेर छरचा ॥ तिन कवन खलावें कवन चुगावे मनमें सिमरन करचा ॥ सभ निधान दस

अष्ट सिधान ठाकुर कर तल धरचा ॥ जन नानक बल बल सद बल जाइये तेरा अंत न पारावरचा ॥ ५ ॥

राग आसावरी ।

घटघट अंतर सर्व निरंतर जी हरएको पुरुष समाणा ॥ इ-कदाते इक भेखारी जी सभ तेरे चोज बिडाना ॥ तूँ आपे दाता आपे भुगता जी हौं तुध बिन अवर न जाणा ॥ तूँ पारब्रह्म वे अं-त बे अंत जी तेरे क्या गुण आख बखाणा ॥ जो सेवाही जो से-वहिं तुधजी जन नानक तिन कुरबाणा ॥ ६ ॥

भई प्राप्त मानुष्य देहारिया ॥ गोविंद मिलनकी यह तेरी बेरिया ॥ अवर काज तेरे किते न काम ॥ मिल साध संगत भज केवल नाम ॥ सरंजाम लाग भव जल तरन के ॥ जन्म वृथा जात रंग मायाके ॥ ॥ जप तप संयम धर्म न कमाया ॥ सेवा साध न जान्या हरिराया ॥ कह नानक हम नीच कर्म्मा ॥ शरणपडेकी राखो शर्मा ॥ ७ ॥

राग धनाश्री ।

गगन मय थाल रवि चंद्र दीपक बने तारिका मंडला जनक मोती ॥ धूप मलिआन लो पवन चवरो करे सकल वनराय फूलंत जोती ॥ कैसी आरती होय भव खंडना तेरी आरती अनहदा शब्द वाजंत भेरी ॥ सहस तव नयन नन नयन हैं तोहिको सहस मूरत नना एक तोही ॥ सहस पद विमल नन एक पद गंध विन सहस तव गंध इव चलत मोही ॥ सब में जोति जोति है सोय ॥ तिसदे चानण सबमें चानण होय ॥ गुर साखी जोत परगट होय ॥ जो तिस भावै सो आरती होय ॥ हरि चरण कमल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहिआहि प्यासा ॥ कृपा जल देहु नानक सारंग को होय जाते तेरे नाइँ वासा ॥ ८ ॥

राग गौरी पूरवी ।

करों बिनती सुनो मेरे मीता संत टहिल की बेला ॥ ईहां खाट चलो हरि लाहा आगे बसन सुहेला ॥ औध घटे दिन सुरैना रे ॥ मन गुरु मिल काय सवारे ॥ यह संसार विकार संशय माहिं तरचो ब्रह्मज्ञानी ॥ जिसहिं जगाय प्यावै यह रस अकथ कथा तिन जानी ॥ जाको आये सोइ बिहाझहु हरि गुरु ते मनहि बसेरा ॥ निजघर महल पावो सुख सहजे बहुर न होयगो फेरा ॥ अंतरयामी पुरुष विधाते सरधा मनकी पूरे ॥ नानक दास इहै सुख मांगै मोकों कर संतन की धूरे ॥ ९ ॥

राग श्री ।

मोती तां मंदर ऊसरहिं रतनी तां होहिं जडाउ ॥ कस्तूरि कुंगू अगर चंदन लीप आवै चाउ ॥ मत देख भूला वीसरे तेरा चित न आवे नाउ ॥ हरि बिन जीव जलबल जाउ ॥ मैं आपणा गुरु पूँछ देख्या अवसर नाहीं थाउ ॥ धरती तां हीरे लाल जड़ती पलँग लालजडाउ ॥ मोहणी मुख मणी सोहै करे रंग पसाल ॥ मत देख भूला बीसरे तेरा चित्त न आवे नाउ ॥ सिद्ध होवां सिद्ध रिद्ध आखां आउ ॥ गुप्त परगट होय वैसा लोक राखे भाउ ॥ मत देख भूला बीसरे तेरा चित्त न आवे नाउ ॥ सुलतान होवां मेल लशकर तखत राखां पाउ ॥ हुकम हासम करी बैठा नैनका सब वाउ ॥ मत देख भूला वीसरे तेरा चित्त न आवै नांउ ॥१०॥

जाको मुशकल अति बणे ढोई कोय देय ॥ लागू होय दुशमना साक भी भज्ज खले ॥ सभो भज्ज आसरा चुके सभ असराउ ॥ चित्त आवे उस पारब्रह्म लगे न तत्ती वाउ ॥ साहिब निताणिआं का ताण ॥ आय न जाई थिर सदा गुरु सबदीं सच

जाण ॥ जेको होवे दुर्बला नंग भूँख की पीर ॥ दमडा पल्ले ना पवे ना को देवे धीर ॥ स्वार्थ स्वाउ न को करे ना किछु होवे काज ॥ चित्त आवे उसपार ब्रह्मछता निश्चल होवे राज ॥ जाको चिंता बहुत बहुत देही व्यापे रोग ॥ गिरिस्तकुटुंब पलेस्या कदे हर्ष कदे सोग ॥ गौण करे कहुं चहुँ कुंटका घडी न बैसन होय ॥ चित्त आवे उस पारब्रह्म तन तन मन शीतल होय ॥ काम .क्रोध मोह बस कीया किरपन लोभ प्यार ॥ चारे किलबिप उन अघकिये होया असुर संहार ॥ पोथी गीत कवित्त कछु कदे न करन धरचा ॥ चित्त आवे उस पारब्रह्म तां निमिष सिमरत तरचा ॥ सासत सिमृत वेद चार मुखाकर बिचरे ॥ तपी तपीसर योगीया तीर्थ गमन करे ॥ खट करमां ते दुगुने पूजा करता न्हाय ॥ रंगन लग्गी पारब्रह्म तां सरपर नरके जाय ॥ राज मिलक सिकदारीआ रस भोगन विस्तारा ॥ बाग सुहावे सोहणे चल्ले हुकुम अफार ॥ रंग तमासे वहु विधि चाय लग रहिया ॥ चित्त न आयो पारब्रह्म तां सरप की जून गया ॥ बहुत धनाढ्य अचारवंत शोभा निर्मल रीत ॥ मात पिता सुत भाइयां साजन संग प्रीत ॥ लशकर तरकस वंद वंद जीउ जीउ सगली कीत ॥ चित्त न आयो पारब्रह्म तां खड रसातल दीत ॥ कायां रोग न छिद्र कछु नां कछु काढ़ा सोग ॥ मिरत न आवी चित्त तिस अह निस भोगें भोग ॥ सभ कछु कीतोन आपणा जीउ निशंक धरचा ॥ चित्त न आयो पारब्रह्म जम किंकर वस परचा ॥ कृपा करे जिस पारब्रह्म होवे साधू संग ॥ ज्यों ज्यों ओह वधाइये त्यों त्यों हरि सों रंग ॥ दोहां सिरां काखसम आप अवर न दूजा थाउँ ॥ सतगुरु तुठे पाइया नानक सच्चा नाउँ ॥ ११ ॥

कीता लोड़िये कम्म सो हरि पै आखिये ॥ कारज देय सवार सतगुरु सच साखिये ॥ संतां संग निधान अमृत चाखिये ॥ भय भंजन मिहरबान दास की राखिये ॥ नानक हरि गुण गाय अलख प्रभु लाखिये ॥ १२ ॥

राग माँझ ।

पारब्रह्म अपरंपर देवा ॥ अगम अगोचर अलख अभेवा ॥ दीन दयाल गोपाल गोविंदा हरि ध्यावो गुरुमुख गाती जी ॥ गुरुमुख मधुसूदन निस्तारे ॥ गुरुमुख संगी कृष्ण मुरारे ॥ दयाल दामोदर गुरुमुख पाइये होर तूं किते न भाती जी ॥ निरहारी केशव निरवैरा ॥ कोट जनां जाके पूजें पैरा ॥ गुरुमुख जाके हिरदे हरहर सोई भगत इकाती जी ॥ अमोघ दर्शन वे अंत अपारा ॥ बड समरत्थ सदा दातारा ॥ गुरुमुख नाम जपियें तित तरिये गति नानक विरली जाती जी ॥ १३ ॥

राग गौरी ।

जाके वश खान सुलतान ॥ जाके वश है सकल जहान ॥ जाका किया सभ कछु होय ॥ तिससे बाहर नाहीं कोय ॥ कहु बेनती अपने सतगुरु पाहि ॥ काज तुम्हारे देय निबाहि ॥ सभते ऊँच जाका दरबार ॥ सकल भगत जाका नाम अधार ॥ सर्व व्यापत पूर्ण धनी ॥ जाकी शोभा घट घट बनी ॥ जिस सिमरत दुख डेरा ढहे ॥ जिस सिमरत जम कछू न कहे ॥ जिस सिमरत होत सूके हरे ॥ जिस सिमरत डूबत पाहन तरे ॥ संत सभाको सदा जैकार ॥ हर हर नाम जन प्राण अधार ॥ कह नानक मेरी सुनि अरदास ॥ संत प्रसाद मोको नाम निवास ॥ १४ ॥

बड़े बड़े जो दीसहिं लोग ॥ तिनको व्यापै चिंता रोग ॥ कौन बड़ा माया बडिआई ॥ सो बडा जिन राम लिव लाई ॥ भूमिआ भूमि ऊपर नित लूझे ॥ छोड चलै तृष्णा नहीं बूझे ॥ कहु नानक इह तत्त्व बिचारा ॥ बिन हरि भजन नहीं छुटकारा ॥ १५ ॥

राग सोरठ ।

अंतर की गति तुमहीं जानी तुझही पास निबेरो ॥ बखश लेहु साहिब प्रभु अपने लाख खते कर फेरो ॥ प्रभुजी तू मेरो ठाकुर नेरो ॥ हरि चरण शरण मोहिं चेरो ॥ बेशुमार बेअंत स्वामी ऊंचो गुनीगहेरो ॥ काट सिलक कीनो अपनो दासरो तौ नानक कहा निहोरो ॥ १६ ॥

जीय जंत सभ तिसके कीये सोई संत सहाई ॥ अपने सेवककी आपे राखे पूरन भई बड़ाई ॥ पारब्रह्म पूरा मेरे नाल गुरु पूरे पूरी सभ राखी होवे सर्व दियाल ॥ अनुदिन नानक नाम ध्याये जीय प्राण का दाता ॥ अपने दास को कंठ लाय राखै ज्यों बारिक पितु माता ॥ १७ ॥

राग धनाश्री ।

कितै प्रकार न तूटो प्रीत ॥ दास तेरे की निर्मल रीत ॥ जीय प्राण मन धन ते प्यारा ॥ हौं मैं बंध हरि देवन हारा ॥ चरण कमल सों लागो नेह ॥ नानक की है विनती एह ॥ १८ ॥

राग गौरी ।

थिर घर बैसो हरिजन प्यारे ॥ सतगुरु तुमरे काज सँवारे ॥ दुष्ट दूत परमेश्वर मारे ॥ जनकी पैज रखी करतारे ॥ बादशाह शाह सब वश करदीने ॥ अमृत नाम महारस पीने ॥ निरभय होय भजो भगवान ॥ साधु संगत मिल कीनो दान ॥ शरण पडे प्रभु अंतरयामी । नानक ओट पकड़ी प्रभु स्वामी ॥ १९ ॥

उवरत राजा राम की शरणी । सर्व लोक माया के मंडल गिर गिर परते धरणी ॥ शास्त्र सिमृत वेद विचारे महा पुरुपन यूँ कह्या ॥ बिन हरि भजन नाहीं निस्तारा सुख न किनहूं लह्या॥ तीनभवन की लक्ष्मी जोरी बूझत नाहीं लहरे ॥ बिन हरि भगत कहा थित पावे फिरतो पहरे पहरे ॥ अनक विलास करत मनमोहन पूरन होत न कामा ॥ जलतो जलतो कभू न बूझत सकल वृथे बिन नामा । हरि का नाम जपो मेरे मीता इहै सार सुख पूरा । साधु संगत जन्म मरण निवारे नानक जनकी धूरा ॥ २० ॥

माधो हरि हरि हरि मुख कहिये । हमते कछु न होवै स्वामी ज्यों राखो त्यों रहिये ॥ क्या कछु करे कि करनेहारा क्या इस हाथ बिचारे । जित तुम लावो तितही लागा तितही पूरण खसम हमारे ॥ करहु कृपा सर्व के दाते एक रूप लवलाइहु ॥ नानक की विनती हरि पै अपना नाम जपावहु ॥ २१ ॥

ब्रह्मे गर्व किया नहीं जान्या ॥ वेदकी बिपत पड़ी पछतान्या ॥ जहिं प्रभु सिमरे तही मन मान्या ॥ ऐसा गर्व बुरा संसारे ॥ जिस गुरु मिलै तिस गर्व निवारे ॥ वलि राजा माया अहंकारी ॥ जगन करे वहु भार अफारी ॥ विन गुरु पूछे जाय पियारी ॥ हरीचंद दान करै यश लेवै ॥ विन गुरु अंत न पाया भेवै ॥ आम भुलाय आपे मति देवै ॥ दुर्मत हरनाकुश दुराचारी प्रभु नारायण गर्व प्रहारी ॥ प्रहलाद उधारे किरपा धारी ॥ भूलो रावण मुगध अचेत । लूटी लंका सीस समेत ॥ गर्व गिआ विन सतगुरु हेत ॥ सहँसवाहू मधु कीट महिपासा ॥ हरनाकुश ले नखहु विधासा ॥ दैत सँहारे विन भगति अभ्यासा ॥ जरासंध कालयवन संहारे ॥ रक्तबीज कालनेमि बिदारे ॥

दैत सँहार संत निस्तारे ॥ आपे सतगुरु शब्द विचारे ॥ दूजे भाय देत संहारे ॥ गुरुमुख साँचि भगति निस्तारे ॥ बूडा दुरयोधन पति खोई ॥ राम न जान्या करता सोई ॥ जन को दूख पचै दुख होई ॥ जन्मेजय गुरु शब्द न जान्या ॥ क्यों सुख पावै भर्म भुलान्या ॥ इकतिल भूले बहुरि पछतान्या ॥ कंस केशी चाणूर न कोई । राम न चीन्हा अपनी पति खोई ॥ बिन जगदीश न राखै कोई ॥ बिन गुरु गर्व न मेटचा जाय ॥ बिन गुरु मति धर्म धीरज हरि नाय ॥ नानक नाम मिलै गुण गाय ॥२२॥

अब मोहिं जलत रामजल पाया ॥ राम उदक तन जलत बुझाया ॥ मन मारण कारण वन जाइ ये॥सो जल बिन भगवंत न पाइये ॥ जिहिं पावक सुर नर हैं जारे ॥ राम उदक जन जलत उबारे । भव सागर सुखसागर माहीं ॥ पीव रहे चल निखुटत नाहीं ॥ कह कबीर भजु शारँगपानी ॥ राम उदक मेरी तृषा बुझानी ॥२३॥

माधो जलकी प्यास न जाय ॥ जल महिं अग्नि उठीअधिकाय ॥ तू जलनिधि हौं जल की मीन ॥ जल महिं रहौं जलहिं बिन खीन ॥ तूं पिंजर हौं सुअटा तोर ॥ जम मंजार कहा करै मोर । तू तरुवर हौं पंखी आहिं ॥ मंद भागी तेरो दर्शन नाहिं ॥ तूं सतगुरु हौं नौतन चेला ॥ कह कबीर मिल अंत कि वेला ॥२४॥

जब हम एको एक कर जान्या ॥ तब लोगहिं काहे दुख मान्या ॥ हम आपतहिं अपनी पति खोई ॥ हमरे खोज परो मत कोई ॥ हम मंदे मंदे मनमाहीं ॥ सांझपात काहू सों नाहीं ॥ पतिअपति ताकी नहीं लाज ॥ तब जानहुँगे जब उघरैगो पाज ॥ कह कबीर पति हरि परमान ॥ सर्व त्याग भज केवल राम ॥२५॥

अंधकार सुख कभूं न सोइहै ॥ राजा रंक दोऊ मिलि रोइहै ॥ जोपै रसना राम न कहबो ॥ उपजत विनशत रोवत रहबो ॥

जस देखिये तरुवर की छाया ॥ प्राण गये कहु काकी माया ॥ जसनंती महिं जीउ समाना ॥ मुये मर्म को काकर जाना ॥ हंसा सरवर काल शरीर ॥ राम रसायन पिउ रे कबीर ॥ २६ ॥

जो जन परमित परम न जाना ॥ वा तनही बैकुंठ समाना ॥ ना जाना बैकुंठ कहाही ॥ जान जान सभ कहहिं तहाँहीं ॥ कहन कहावन नहीं पतियैहै ॥ तौ मनमानै जांते हौं मैं जैहै ॥ जवलग मन बैकुंठ की आस ॥ तब लग होय नहीं चरण निवास ॥ कहु कबीर इह कहिये काहि ॥ साधु संगत बैकुंठहि आहि ॥ २७ ॥

अवर मूये क्या सोग करीजै ॥ तो कीजै जो आपन जीजै ॥ मैं न मरों मरबो संसारा ॥ अब मोहिं मिल्यो जियावन हारा ॥ या देही मरमल महकंदा ॥ ता सुख बिसरे परमानन्दा ॥ कुंअटा एक पंच पनिहारी ॥ टूटी लाज भरैं मतिहारी ॥ कह कबीर इक बुद्धि विचारी ॥ ना वह कुअटा ना पनिहारी ॥ २८ ॥

स्थावर जंगम कीट पंतगा ॥ जन्म अनेक किये बहुरंगा ॥ से घर हम बहुत बसाये ॥ जब हम राम गरभ ह्वै आये ॥ योगी यती तपी ब्रह्मचारी ॥ कबहूं राजा छत्रपति कबहूं भिखारी ॥ शाकत मरहिं सन्त सभजीवहिं ॥ राम रसायन रसना पीवहिं ॥ कहकबीर प्रभु किरपा कीजै ॥ हार परे अब पूरा दीजै ॥ २९ ॥

चोआचंदन मरदनअंगा ॥ सो तन जलै काठके संगा ॥ इस तन धन की कवन बडाई ॥ धरनिपरै उर बार न जाई ॥ रात जो सोवहिं दिस करे काम ॥ इक क्षण लेहि न हरिको नाम ॥ हाथ तां डोर मुख खायो तंबोर ॥ मरती बार कस बांध्यो चोर ॥ गुरु मति रस रस हरि गुन गावै ॥ रामहिं राम रमत सुख पावै ॥ किरपा करके नाम दृढ़ाई ॥ हरि हरि वास सुगंध बसाई ॥ कहत कबीर चेतरे अंधा ॥ सत्य राम झूँठा सब धंधा ॥ ३० ॥

जम ते उलट भये हैं राम ॥ दुख बिनसे सुख-कियो विश्राम ॥ वैरी उलट भयेहैं मीता ॥ शाकत उलट सुजन भये चीता ॥ अब मोहिं सर्व कुशल कर मान्या ॥ शांत भई जब गोविंद जान्या ॥ तन में होती कोटि उपाधि ॥ उलट भई सुख सहज समाधि ॥ आप पछानै आपै आप ॥ रोग न व्यापें तीनों ताप ॥ अब मन उलट सनातन हूआ ॥ तब जान्या जब जीवत मूआ ॥ कहु कबीर सुख सहज समावो ॥ आप न डरो न अवर डरावो ॥ २१ ॥

कंचन सो पाइये नहिं तोल॥ मनदे राम लियाहै मोल ॥ अब मोहिं राम अपना कर जान्या ॥ सहस सुभाय मेरा मन मान्या ॥ ब्रह्मा कथ कथ अंत न पाया ॥ राम भगति बैठे घर आया ॥ कह कबीर चंचल मति त्यागी ॥ केवल राम भगति निज भागी २२

जिहिं मरने सम जगत त्रास्या॥ सो मरना गुरु शब्द प्रगास्या॥ अब कैसे मरौ मरन मनमान्या ॥ मरमर जाते जिन राम न जान्या ॥ मरनो मरन कहै सब कोई ॥ सहजे मरै अमर होय सोई ॥ कहकबीर मन भया अनंदा॥ गया भरम रह्या पर्मानंदा ॥२३॥

जाके हरिसा ठाकुर भाई ॥ मुक्ति अनन्त पुकारन जाई ॥ अब कहु राम भरोसा तोरा ॥ तब काहूका कवन निहोरा ॥ तीन लोक जाके हैं भार ॥ सो काहे न करेप्रतिपार ॥ कह कबीर इक बुद्धि विचारी ॥ क्या वश जो विषदे महतारी ॥ २४ ॥

बिन सत सती होय कैसे नारि ॥ पंडित देखो हृदै विचारि ॥ प्रीति बिना कैसे बँधे सनेह ॥ जबलग रस तबलग नहिं नेह ॥ साहनिसत करै जीय अपने ॥ सो रमैये को मिले न सुपने ॥ तन मन धन गृह सौंप शरीर ॥ सोई सुहागन कहै कबीर ॥ २५ ॥

विषय व्याप्या सकल संसार॥ विषया ले डूबी संसार ॥ रे नर नाव चौंड कत वोडी ॥ हरि सों तोड विषयासँग जोडी ॥ सुर नर

दाधे लागी आग॥ निकटनीरपशु पीवस न झाग ॥ चेतत चेतत निकस्यो नीर ॥ सो जल निर्मल कथत कबीर॥ ३६ ॥

जिहिं कुल पूत न ज्ञान विचारी॥ विधवा कस न भई मह- तारी ॥ जिहिं नर राम भगति नहिं साधी ॥ जन्मत कस न मुयो अपराधी ॥ मुच मुच गरभ गये किन बच्या ॥ बुड भुज रूप जीवै जग मइया ॥ कहु कबीर जैसे सुंदर सरूप ॥ नाम बिना जैसे कुब्ज कुरूप ॥ ३७ ॥

जो जन लेहिं खसमका नाउँ ॥ तिनके सद बलिहारे जाउँ ॥ जो निर्मल निर्मल हरिगुण गावै ॥ सो भाई मेरे मन भावै ॥ जिहिं घट राम रह्यो भरपूर॥ तिनकी पग पंकज हम धूर । जाति जुलाहा मति का धीर । सहज सहज गुण रमे कबीर॥ ३८ ॥

जिहिं मुख पांचों अमृत खाये । तिहिं मुख देखत लूकद लाये ॥ इक दुख रामराय काटहु मेरा । अगनि दहै अर गरभ बसेरा ॥ काया बिगूती बहु विध भाँती । को जारे को गड़ले माटी ॥ कहु कबीर हरि चर्ण दिखावहु । पाछेते जम क्यों न पठावहु ॥ ३९ ॥

आपै पावक आपै पवना ॥ जारै खसम तो राखै कवना ॥ राम जपत तन जर क्यों न जाय ॥ राम नाम चित रह्या समाय॥ काको जरै काहि दोय हान ॥ नट वर खेलै शारंगपान ॥ कहु कबीर अक्षर दोय भाख ॥ होयगा खसम तो लेगा राख ॥ ४० ॥

ना मैं योग ध्यान चितलाया ॥ बिनवै राग न छूटै माया ॥ कैसे जीवन होय हमारा ॥ जब न होय राम नाम अधारा ॥ कहु कबीर खोजहुं असमान ॥ राम समान न देखो आन ॥ ४१ ॥

जिहिं सिर रच रच बांधत पाग॥ सो सिर चुंच सवाँरहिं काग ॥ इस तन धन को क्या गरबैया॥ राम नाम काहे न दृढ़ैया ॥ कहत कबीर सुनहु मन मेरे ॥ यही हवाल होहिंगे तेरे ॥ ४२ ॥

अहनिशि एक नाम जो जागे ॥ केतक सिद्धि भये लव लागे ॥ साधक सिद्ध सकल मुनि हारे ॥ एक नाम कलिपतर तारे ॥ जो हरि हरे सो होहिं न आना ॥ कह कबीर राम नाम पछाना ॥ ४३ ॥

राग सोरठ ।

रे जीव निलज लाज तोहिं नाहीं ॥ हरितजकत काहूके जाहीं ॥ जाको ठाकुर ऊँचा होई ॥ सो जन परघर जात न सोही ॥ सो साहिब रह्या भरपूर ॥ सदा संग नाहीं हरिदूर ॥ कमला चरण शरण है जाके। कहु जन का नाहीं घर ताके ॥ सब कोऊ कहे जासु की वाता ॥ सो समर्थ निज पति है दाता ॥ कहै कबीर पूरन जग सोई ॥ जाके हिरदय अवर न होई ॥ ४४ ॥

कौन को पूत पिता को काको । कौन मरै को देय संतापो ॥ हरि हठ जग को ठगौरीलाई । हरिके व्योग कैसे जीवो मेरी माई॥ कौन को पुरुष कौन की नारी । या तत्व लेहु शरीर विचारी ॥ कह कबीर ठग सों मन मान्या । गई ठगौरी ठग पहँचान्या॥४५॥

अब मोकों भये राजा रामसहाई ॥ जन्म मरण कट परमगति पाई ॥ साधू संगत दियो रलाय ॥ पंच दूत ते लियो छुडाय ॥ अमृत नाव जपोंजप रसना ॥ अमोल दास कर लीनो अपना ॥ सतगुरु कीनो परउपकार ॥ काढ लीनसागर संसार ॥ चरण कमल सों लागीप्रीति ॥ गोविंद वसै निता नित चीत ॥ माया तत्त बुझ्या अंगार ॥ मन संतोष नाम आधार ॥ जल थल पूर रहे प्रभु स्वामी । जत पेखो तत अन्तरयामी ॥ अपनी भगति आपही दृढाई। पूरव लिखत मिल्यो मेरे भाई ॥ जिस कृपा करे तिस पुरनसाज ॥ कबीर को स्वामी गरीवनिवाज ॥ ४६ ॥

राग गौरी ।

हरी यश सुनहि न हरी गुन गावहिं ॥ बात नहीं असमान गिरावहिं ॥ ऐसे लोगन सो क्या कहिये ॥ जो प्रभु किये भगति ते बाहिज तिनते सदा डरानेरहिये ॥ आप न देहिं चुरू भर पानी ॥ तिहिं निंदहिं जिहिं गंगाआनी ॥ बैठत उठत कुटिलता चालहि ॥ आप गये औरनं हूं घालहि ॥ छाँड कुचर्चा आन न जानहि ॥ ब्रह्मांहू को कह्यो न मानहि ॥ आप गये औरनहूं खोवहिं ॥ आग लगाय मंदिर में सोवहिं ॥ अवरन हँसत आप हैं काने ॥ तिनको देख कबीर लजाने ॥ ४७ ॥

जेते यतन करत ते डूबे भवसागर नाहिं तारचो रे॥ कर्म धर्म करते बहु संयम अहं बुद्धि मन जारचो रे ॥ सास ग्रासको दातो ठाकुर सो क्यों मनो विसारचो रे ॥ हीरालाल अमोल जन्म है कौडी वदले हारचो रे॥ तृष्णा तृषा भूँख भ्रम लागी हिरदय नाम विचारचो रे ॥ उनमत मान रह्यो मनमाहीं गुरुका शब्द न धारचो रे ॥ स्वाद लुब्ध इंद्रीरस प्रेरचो मन्द रस लेत विकारचोरे ॥भर्म भाग संतन संगाने कासट लोह उधारचो रे॥ धावत योनि जन्म भ्रम थाके अब दुख कर हम हारचो रे ॥ कह कबीर गुरु मिलत महारस प्रेम भक्ति निस्तारचो रे ॥ ४८ ॥

एक ज्योति एका मिली किंवा होय महोय ॥ जित घट नाम न ऊपजे फूट मरे जन सोय ॥ सांवल सुन्दर रामैया मेरा मन लागा तोहिं ॥ साध मिले सिद्ध पाइये कि यह योग की भोग ॥ दुहुँ मिल कारज ऊपजै राम नाम संयोग ॥ लोग जाने यह गीतहै यह तो ब्रह्म विचार ॥ ज्यों काशी उपदेश होय मानस मरती वार ॥ कोई गावै को सुनै हरी नामा चित लाय ॥ कहु कबीर संशय नहीं अंत परमगति पाय ॥ ४९ ॥

कालबूतकी हस्तनी मन बौरारे चलित रच्यो जगदीश ॥ काम सुआय गज वश परे मन बौरारे अंकुश सह्यो शीश ॥ विषय वाच हरि राच समझ मन बौरारे ॥ निरभय होय न हरी भज्यो मन बौरारे ॥ गह्यो न राम जहाज मरकट मुष्टी अनाजकी मन बौरारे लीनी हाथ पसार ॥ छूटन को संसार परचा मन बौरारे नाच्यो घर घर बार ॥ ज्यों नलनी सूअटा गह्यो मन बौरारे माया यह व्योहार ॥ जैसा रंग कुसुंभ का मन बोरारे त्यों पसरचो पासार ॥ न्हावनको तीर्थ घने मन बौरारे पूजन को बहु देव ॥ कह कबीर छूटन नहीं मन बौरा रे छूटन हरि की सेव ॥ ९० ॥

अगिन न दहैं पवन नाहिं मगनै तस्कर नेर न आवैं ॥ राम नाम धन कर संचोनी सो धन कतहुँ न जावे । हमारा धन माधव गोविंद धरणीधर यही सार धन कहिये ॥ जो सुख प्रभु गोविंदकी सेवा सो सुख राज न लहिवे ॥ इस धन कारण शिव सनकादिक खोजत भये उदासी ॥ मन मुकुंद जिह्वा नारायण परै न जमकी फाँसी ॥ निज धन ज्ञान भगति गुरु दीनी तासु सुमति मन लागा ॥ जलत अंभ थंभ मन धावत भ्रम बंधन भय भागा ॥ कहै कबीर मदन के माते हिरदय देख विचारी ॥ तुम घर लाख कोटि अश्व हस्ती हम घर एक मुरारी ॥ ९१ ॥

ज्यों कपि के कर मुष्टि चनन की लुब्ध न त्याग दियो ॥ जो जो कर्म कियो लालचसों ते फिर गरहि परचो ॥ भगति विन बिरथे जन्म गयो ॥ साधु संगत भगवान भजन विन कहीं न सचु रह्यो ॥ ज्यौं उद्यान कुसुम प्रफुल्लित किनहूं न प्राण लियो ॥ तैसे भ्रमत अनेक योनिमें फिर फिर काल हयो ॥ या धन यौवन अरु सुत दारा पेखन को जो दियो ॥ तिनहीं माहीं अटक जो उरझे इंद्री प्रेर लियो ॥ अवध अनल तन तृणको मंदिर

चहुँदिशि ठाट ठयो ॥ कह कबीर भवसागर तरण को पै सतगुरु ओट लियो ॥ ९२ ॥

राग गौरी पूरवी ।

स्वर्ग वास नहिं वांछिये डरिये न नर्क निवास ॥ होनाहै सो होय है मनहिं न कीजे आस ॥ रमैया गुन गाईये जाते पाइये परम निधान ॥ क्या जप क्या तप संयमो क्या व्रत क्या अस्नान ॥ जबलग जुगति न जानिये भाव भगति भगवान ॥ संपति देख न हरषिये विपति देख न रोय ॥ ज्यों संपति त्यों विपति है विधि ने रच्या सो होय ॥ कह कबीर अब जान्या संतन हृदय मँझार ॥ सेवक सो सेवा भले जिहिं घट बसहिं मुरार ॥ ९३ ॥

राग गौरी ।

आस पास घन तुलसीक बिरवा मांझ बनारस गाउँ रे ॥ वाका सरूप देख मोहिं ग्वारनि मोको छोड न आउ न जाउँ रे ॥ तोहि शरण मन लागो ॥ सारंगधर सों मिलै जो बडभागो ॥ वृन्दा-वन मनहरन मनोहर कृष्ण चरावत गाउँ रे ॥ जाका ठाकुर तुहीं शारंगधर मोहिं कबीरा गाउँ रे ॥ ९४ ॥

लख चौरासी जीय योनि में भ्रमत नन्द बहु थाको रे ॥ भगति हेत अवतार लियोहै भाग बडो बपुरा को रे ॥ तुम जो कहतहो नन्द को नन्दन नन्द सो नन्दन काको ॥ धरणि अकाश दशोंदिशि नाहीं तब यह नंद कहां थो रे ॥ संकट नहीं परे योनि नहीं आवे नाम निरंजन जाको रे ॥ कबीर को स्वामी ऐसो ठाकुर जाके माई न बापो रे ॥ ९५ ॥

राग गौरी चेती ।

देवा पाहन तारीयलें ॥ राम कहत जन कस न तरे ॥ तारी ले गनिका बिन रूप कुब्जा व्याध अजामिल तारीयले ॥ चरण बधक जन तेऊ मुक्त भये ॥ हौं बल बल जिन रामकहे ॥ दासी सुत जन विदुर सुदामा उग्रसेन को राज दिये ॥ जप हीन तप हीन कुल हीन कर्म हीन नामें के स्वामी तेऊ तरे ॥ ९६ ॥

सतयुग सत त्रेता यज्ञ द्वापर पूजा चार ॥ तीनों युग तीनों दृढे कलि केवल नाम अधार ॥ पार कैसे पायबो रे ॥ मोसों कोऊ न कहे समुझाय ॥ जाते आवागमन बिलाय ॥ बहुविध धर्म निरूपिये करता दीसै सब लोय ॥ कवन कर्म ते छूटिये जिहिं साधे सब सिध होय ॥ कर्म अकर्म विचारिये शंका सुन वेद पुराण ॥ संसासद हिरदय वसे कौन हरे अभिमान ॥ बाहर उदक पखारिये घट भीतर विविध विकार ॥ शुद्ध कवन पर होयबो शुचि कुंजर विध व्योहार ॥ रवि प्रकाश रजनी यथा गति जानत सभ संसार ॥ पारस मानो तांबो छुये कनक होत नहिंबार ॥ परमपुरुष गुरु भेंटिये पूरब लिखत ललाट ॥ उनमन मन मनही मिले छुटकत बजर कपाट ॥ भगति जुगति मति सति करी भ्रम बंधन काट विकार ॥ सोई वस रस मन मिले गुण निर्गुण एक विचार ॥ अनिक यतन निग्रह किये टारी न टरै भ्रम फाँस ॥ प्रेम भगति नहीं ऊपजै ताते रविदास उदास ॥ ९७ ॥

राग आसावरी ।

पवन उपाय धरी सव धरती जल अगिनि का वंध किया ॥ अंधले दहसिर मूड कटाया रावण मार क्या बड़ाभया ॥ क्या उपमा तेरी आँकी जाय तू सरवे ॥ पूर रह्या लव लाय ॥ जीय उपाय जुगति हथ कीनी काली नथ क्या वड़ा भया ॥ किस तूँ

पुरुष जोरू कौन कहिये सर्व निरंतर रम रह्या ॥ नाल कुटुंब साथ वरदाना ब्रह्मा भालण सृष्टि गया॥ आगे अंत न पायो ताका कंस छेद क्या वड़ा भया॥ रत्नउपाय धरे क्षीर मथ्या होर भख-लाये जिअसी कीया ॥ कहै नानक छपै क्यों छप्या एकी एकी वड दीया ॥ ५८ ॥

राज मिलक जोवन गृह शोभा रूपवंत जो आनी ॥ वहुत द्रव्य हस्ती अरु घोड़े लाल लाख वयआनी ॥ आगे दरगहिं काम न आवहिं छोड़ चलै अभिमानी ॥ काहे एक विना चित लाइये ॥ ऊठत वैठत सोवत जागत सदा सदा हरि ध्याइये ॥ महा विचित्र सुंदर आखाड़ रणमें जिते पवाड़े ॥ हौं मारों हौं वंधों छोड़ों मुखते एव वबाडे ॥ आया हुकुम पारब्रह्मका छोड चल्या एक दिहाडे ॥ कर्म धर्म जुगति वहु करता करने हार न जानै ॥ उपदेश करै आप न कमावै तत्त्व शब्द न पछानै ॥ नामा आया नांगो जासी ज्यों हस्ती खाक छानै ॥ संत सुजन सुनहु सभ मीता झूँठा एक पसारा ॥ मेरी मेरी कर कर डूबे खप खप मुयें गँवारा ॥ गुरु मिल नाएक नाम ध्याया साँच नाम निस्तारा ॥५९॥

जिस नीच को कोई न जानै ॥ नाम जपत सो चहुँ कुंट मानै ॥ दर्शन मांगों देहु प्यारे ॥ तुमरी सेवा कौन कौन न तारे ॥ जाके निकट न आवै कोई ॥ सकल सृष्टि वाके चरण मल धोई ॥ जो प्राणी काहू न आवत काम ॥ संत प्रसाद ताको जपिये नाम ॥ साधु संग मन सोवत जागे ॥ तब प्रभु नानक मीठे लागे ॥ ६० ॥

उक्ति सयानप कछू न जानां ॥ दिन रैन तेरा नाम वखानां ॥ मैं निगुर्ण गुण नाहीं कोय । करन करावन हार प्रभु सोय ॥ मूरख मुगध अज्ञान अविचारी ॥ नाम तेरे की आश मन धारी ॥ जप

तप संयम कर्म न साधा ॥ नाम प्रभूका मनहिं अराधा ॥ कछु नँ जाना मति मेरी थोरी ॥ विनवत नानक ओट प्रभु तोरी ॥ ६१ ॥

चरण कमलकी आस प्यारे ॥ यम किंकर नस गये विचारे ॥ तूं चित आवहि तेरी मया ॥ सिमरत नाम सकल रोग पया ॥ अनिक दूख देवहि अवरां को ॥ पहुँच न साकहि जन तेरे को ॥ दरश तेरेकी प्यास मन लागी ॥ सहज आनंद वसै वैरागी ॥ नानककी अरदास सुनीजै ॥ केवल नाम हृदयमें दीजै ॥ ६२ ॥

आठ पहर निकट कर जानै ॥ प्रभुका कीया मीठा मानै ॥ एक नाम संतन आधार ॥ होय रहै सभकी पग छार ॥ संत रहत सुनो मेरे भाई ॥ वाकी महिमा कथन न जाई ॥ वरतन जाके केवल नाम ॥ अनंद रूप कीर्तन विश्राम ॥ मित्र शत्रु जाके एक समानै ॥ प्रभु अपने बिन अवर न जानै ॥ कोटि कोटि अघ काटनहारा ॥ दुख दूर करन जीयके दातारा ॥ शूरबीर वचन के बली । कमला बपुरी संतन छली ॥ तांका संग वाछहिं सुरदेव ॥ अमोघ दरश सफल जाकी सेव ॥ कर जोर नानक करे अरदास ॥ मोहिं संतहि टहल दीजे गुण तास ॥ ६३ ॥

भगत वच्छल हरि विरद आप बनाइया ॥ जहिं जहिं संत अराधहिं तहिं तहिं प्रगटाइया ॥ प्रभु आप लिये समाय सहज सुभाय भगत कारज सारिया ॥ आनंद हरि यश महामंगल सर्व दुःख विसारिया ॥ चमत्कार प्रकार दह दिस एक तहिं दरशाइया ॥ नानक पिअंपै चरण जंपै भगत वच्छल हरि विरद आप बनाइया ॥ ६४ ॥

थिर संतन सुहाग मरे न जावहे ॥ जाके गृह हरि नाहु सों सदही रावहे ॥ अविनाशी अविगत सो प्रभु सदा न वतन निर्मला ॥

नहिं दूर सदा हजूर ठाकुर दह दिस पूरन सद सदा ॥ प्राण पाति गति मतिजाते प्रिय प्रीति प्रीतम भावहे ॥ नानक बखाने गुरु वचन जाने स्थिर संतन सुहाग मरै न जावहे ॥ ६५ ॥

कूड़ राजा कूड़ परजा कूड़ सभ संसार ॥ कूड़ मंडप कूड़ माड़ी कूड़ बैसनहार ॥ कूड सोना कूड़ रूपा कूड पैनणहार ॥ कूड कायां कूड कप्पड कूड रूप अपार ॥ कूड मीयां कूड बीवी खप्प होये खार ॥ कडे कडे नेहु लग्गा विसरया करतार ॥ किसनाल कीजै दोस्ती सभ जगत चल्लणहार ॥ कूड मिट्ठा कूड माप्यो कूड़ डोबे पूर ॥ नानक बखाने विनती तुध बाझ कूडो कूड ॥ ६६ ॥

जबलग तेल देवे मुख बाती तब सूझे सभ कोई ॥ तेल जले बाती ठहरानी सूना मंदिर होई ॥ रेवो रे तोहिं घरी न राखे कोई ॥ तूं राम नाम जप सोई ॥ काकी मात पिता कहु काको कवन पुंर्प की जोई ॥ घट फूटे कोउ बात न पूछे काढो काढो होई ॥ देहुरी बैठी माता रोवे खटिया लेगये भाई ॥ लट छिटकाये तिरिया रोवे हंस इकेला जाई ॥ कहत कबीर सुनोरे संतहु भवसागर के ताई ॥ इस बंदे सिर जुलम होतहे जम नहीं हटे गुसाईं ॥ ६७ ॥

हज्ज हमारी गोमती तीर ॥ जहां वसहिं पीतंबर पीर ॥ वाह वाह क्या खूब गावताहे ॥ हरि का नाम मेरे मन भावताहे॥ नारद शारद करहिं खवासी ॥ पास बैठी बीबी कमला दासी ॥ कंठे माला जिहवा राम ॥ सहस नाम लै लै करूं सलाम ॥ कहत कबीर राम गुन गावों ॥ हिंदू तुरक दोऊ समझावों ॥ ६८ ॥

कहा श्वान को सिमृत सुनाये ॥ कहा शाकत पे हरि गुन गाये ॥ राम राम राम रमे रम रहिये ॥ शाकत सों भूल नहिं कहिये ॥ कौआ कहा कपूर चुगाये ॥ कहिं बिसीयर को दूध पिआये ॥ सतसंगत मिल विवेक बुद्ध होई ॥ पारस परस लोहा कंचन सोई ॥ शाकत श्वान सभ करे कराया ॥ जो धुर लिख्या

सो कर्म कमाया ॥ अमृत लै लै नीम सिंचाई ॥ कहत कबीर वाको सहज न जाई ॥ ६९ ॥

लंका सा कोट समुंद्र सी खाई ॥ तिहिं रावण घर खबर न पाई ॥ क्या मांगों कछु थिर न रहाई ॥ देखत नयन चल्यो जग जाई ॥ इक लख पूत सवालख नाती ॥ तिहिं रावन घर दिया न बाती ॥ चंद सूरज जाके तपत रसोई ॥ बैसन्दर जाके कपडे धोई ॥ गुरु मति रामहिं नाम बसाई ॥ अस्थिर रहै न कतहूँ जाई ॥ कहत कबीर सुनोरे लोई ॥ राम नाम बिन मुक्ति न होई ॥ ७० ॥

कियो शृंगार मिलनके ताईं ॥ हरि न मिले जग जीवन-गुसाई ॥ हरि मेरो पीर हौं हरि की बहुरिया ॥ राम बडे मैं तनक लहुरिया ॥ धनि पुर एकै संग बसेरा ॥ सेज एक पै मिलन दुहेरा ॥ धन्य सुहागन जो पिय भावे ॥ कह कबीर फिर जन्म न आवे ॥ ७१ ॥

अतर मैल जो तीरथ न्हावे तिस बैकुंठ न जाना॥ लोक पतीने कछू न होवे नाहीं राम अयाना ॥ पूजो राम एकही देवा ॥ साँचा न्हावन गुरुकी सेवा ॥ जलके मज्जन जे गति होवे नित नित मेंडक न्हावहिं ॥ जैसे मेंडक तैसे ओह नर फिर फिर योनी आवहिं ॥ मनों कठोर मरें बनारस नरक न वाच्या जाई ॥ हरिका संत मरे हाढंवहिं सकली सैन तराई ॥ दिन सुरैन वेद नाहीं शास्त्र तहाँ बसै निरंकारा । कह कबीर नर तिसहि ध्यावो बावरिया संसारा ॥ ७२ ॥

एक अनेक व्यापक पूरक जत देखों तत सोई ॥ माया चित्र विचित्र विमोहत विरला बूझे कोई ॥ सब गोविंदहै सब गोविंद है गोविंद बिन नहिं कोई ॥ सूत एक मणि शत सहस जैसे ओत प्रोत प्रभु सोई ॥ चलतरंग अरु फेन बुदबुदा जल ते भिन्न न होई

यह प्रपंच पारब्रह्म की लीला बिचरत आन न होई ॥ मिथ्या भ्रम अरु स्वपन मनोरथ सत्य पदारथ जान्या ॥ सुकृत मनसा गुरू उपदेशी जागतही मन मान्या ॥ कहत नामदेउ हरिकी रचना देखो हृदय विचारी ॥ घट घट अंतर सर्व निरंतर केवल एक मुरारी ॥ ७३ ॥

राग गूजरी।

मुस मुस रोवै कबीर की माई ॥ यह बारिक कैसे जीवहि रघुराई ॥ तनना बुनना सभ तज्यो है कबीर ॥ हरि का नाम लिख लियो शरीर ॥ जबलग तागा बाहों वेहों बेही ॥ तबलग बिसरे राम सनेही ॥ ओछी मति मेरी जाति जुलाहा ॥ हरि का नाम लह्यो मैं लाहा ॥ कहत कबीर सुनहु मेरी माई ॥ हमरा इनका दाता एक रघुराई ॥७४ ॥

जो राज देहिं तो कवन बडाई ॥ जो भीख मँगावहिं तो क्या घट जाई ॥ तूं हरि भज मन मेरे पद निरवान ॥ बहुरि न होय तेरा आवन जान ॥ सब तैं उपाई भर्म भुलाई ॥ जिस तूं देवहि तिसहिं बुझाई । सतगुरु मिले तां संशय जाई ॥ किस हों पूजो दूजो नजर न आई ॥ एकै पाथर कीजे भाउ ॥ दूजे पाथर धरियें पाउ ॥ जे वह देवता वहभी देवा ॥ कह नामदेव हम हारिकी सेवा ॥ ७५ ॥

दूध तो बछेर थनों बिटारयो ॥ फूल भमर जल मीन बिगारयो ॥ माई गोविंद पूजा कहा ले चढावों ॥ अवर न फूल अनूपम पावों ॥ मलियागिर वेढे हैं भुजंगा ॥ विष अमृत बसहिं इकसंगा ॥ धूपदीप नैवेदहि बासा ॥ कैसे पूज करे तेरी दासा ॥ तन मन अरपों पूज चढावों ॥ गुरु प्रसाद निरंजन पावों ॥ पूजा अरचा आहि न तोरी ॥ कह रामदास कवन गति मोरी ॥ ७६ ॥

अंतर मल निर्मल नहिं कीना बाहर भेष उदासी ॥ हृदय कमल घट ब्रह्म न चीन्हा काहे भया संन्यासी ॥ भरमें भूलीरे जैचंदा ॥ नहीं नहीं चीन्हा परमानंदा ॥ घर घर खाया पिंड बधाया खिंथा मुंदा माया ॥ भूमि मसान की भसम लगाई गुरु बिन तत्त्व न पाया ॥ काय जपोरे काय तपोरे काय बिलोको पानी ॥ लख चौरासी जिन उपजाई सो सुमिरो निरवानी ॥ काय कमंडल कापडियारे अठसठ काहि फिराही ॥ वदतत्रिलोचन सुनरे प्राणी कण बिन गाहुकि पाही ॥ ७७ ॥

अंतकाल जो लक्ष्मी सुमिरै ॥ ऐसी चिंता में जो मरै ॥ सरप योनि वल वल औतरै ॥ अरी बाई गोविंद नाम मत बिसरै ॥ अंतकाल जो इस्त्री सुमिरै ॥ ऐसी चिंतामें जे मरै ॥ वेसवा योनि वल वल औतरै ॥ अंतकाल जो लड़के सुमिरै ॥ ऐसी चिंतामें जे मरैं ॥ शूकर योनि बल बल औतरै ॥ अंतकाल जो मंदिर सुमिरै ॥ ऐसी चिंतामें जे मरै ॥ प्रेत योनि वल बल औतरै ॥ अंतकाल नारायण सुमिरै ॥ ऐसी चिंता में जे मरै ॥ वदत त्रिलोचन ते नर मुक्ता पीतांबर वाके हृदय वसे ॥ ७८ ॥

राग देवगंधार ।

अब हम चली ठाकुर पहिं हार ॥ जब हम शरण प्रभूकी आईं राख प्रभु भावे मार ॥ लोकन की चतुराई उपमा ते वैसंदर जार॥ कोई भला कहो भावे बुरा कहो हम तन दियोहै ढार ॥ जो आवत शर्ण ठाकुर प्रभु तुमरी तिस राखो किरपा धार ॥ जन नानक शर्ण तुम्हारी हरजी राखो लाज मुरार ॥ ७९ ॥

हरि राय नाम जप लाहा । गतिपावहि सुख सहज अनंदा काटे जमके फाहा । खोजत खोजत खोज सुविचारयो हरि संत जनां पहि आहा । तिन्हा प्रात यह निधाना जिनके कर्म लिखा-

हा ॥ से वड भागी से पतिवंते सेई पूरें शाहा । सुंदर सुघड़ सुरूप ते नानक जिन हरि हरि नाम विसाहा ॥ ८० ॥

प्रभु एही मनोरथ मेरा । कृपानिधान दयाल मोहिं दीजे कर संतनका चेरा । प्रातहिं काल लागो जन चरनींनिशिवासर दर्शन पावों ॥ तन मन अर्प करों जन सेवा रसना हरी गुन गावों । साँस साँस सुमिरो प्रभु अपना संत संग नित रहिये । एक अधार नाम धन मोरा अनंद नानक यह लहिये ॥ ८१ ॥

राग सोरठ ।

आपै सेवा लांयदा प्यारा आपे भगति उमाहा । आपे गुणगावां यदा प्यारा आपै शब्द समाहा । आपै लेखण आप लिखारी आपै लेख लिखाहा ॥ मेरे मनजप रामनामउमाहा॥ अनुदिन अनँद होवै वडभागी लैगुर पूरे हरि लाहा ॥ आपै गोपी कान्ह है प्यारा वन आपै गऊ चराहा ॥ आपै साँवल सुंदर प्यारा आपै वंशीवजाहा॥ कुवलयापीड आप मरांयदा प्यारा कर बालक रूपपचाहा ॥ आप अखाडा पायँदा प्यारा कर देखैं आप जो चाहा ॥ कर बालक रूप उपायँदा प्यारा चंडुर कंस केस मराहा ॥ आपे ही वल आपहै प्यारा बल भनैं मूरख मुगधाहा ॥ सभ आपे जगत उपायँदा प्यारा वस आपै जुगति हथाहा ॥ गल जेवडी आपे पायदा प्यारा ज्यों प्रभु खिंचे त्यों जाहा ॥ जो गरवे सो पचशी प्यारे जप नानक भगति समाहा ॥ ८२ ॥

जौलौं भाव अभाव यह मानें तोलों मिलण दुराई ॥ आन आपना करत विचारा तौलों वीच त्रिपाई ॥ माधव ऐसी देहु वुझाई ॥ सेवों साधु गहों ओट चरना नहिं विसरे मुहुत चसाई॥ रे मन मुगध अचेत चंचल चित तुम ऐसी हृदय न आई ॥ प्राण पति त्याग आन तूं रच्या उरझो संग वैराई ॥ शोक न व्यापे आपन थापे

साधु सङ्गत बुद्धि पाई ॥ शाकत का वकना एंउ जानो जसे पवन झुलाई ॥ कोट प्राध अछादयो एह मन कहना कछु न जाइ ॥ जन नानक दीन शरण आयो प्रभु सब लेखा रखो उठाई ॥ ८३ ॥

तन सन्तन का धन सन्तन का मन संतनका कीया ॥ सन्तप्रसाद हरि नाम ध्याया सर्व कुशल तब थीया ॥ सन्तन बिन अवर न दाता बीया ॥ जो जो शरण परै साधूकी सो पारगामी कीया ॥ कोटि अपराध मिटहिं जन सेवा हरि कीर्तन रस गाइये ॥ईहां सुख आगे मुख ऊजल जनका संग बड़भागी पाइये ॥ रसना एक अनेक गुण पूरन जनकी केतक उपमा कहिये ॥ अगम अगोचर सद अविनाशी शरण सन्तनकी लहिये ॥ निरगुण नीच अनाथ अपराधी ओट सन्तनकी आही ॥ बूडत मोहगृह अन्ध कूपमें नानक लेहु निबाही ॥ ८४ ॥

खोजत खोजत खोज विचारयो राम नाम तत्त्वसारा ॥ किल विष काटे निमिष अराध्या गुरुमुख पार उतारा ॥ हरिरस पीवो पुरुष ज्ञानी ॥ सुन सुन महा तृप्त मन पावै साधू अमृत वानी ॥ मुक्ति भुगति जुगति सचु पाइये सर्व सुखांका दाता ॥ अपने दासकों भगति दान देवै पूरण पुरुष विधाता ॥ श्रवणीं सुनिये रसना गाइये हिरदय ध्याइये सोई ॥ करन कारन समरत्थ स्वामी जात वृथा न कोई ॥ वड़े भाग रत्न जन्म पाया करो कृपा कृपाला ॥ साधु संग नानक गुण गावै सुमिरै सदा सदा गोपाला ॥ ८५ ॥

जेती समग्री देखहु रे नर तेती ही छड जानी ॥ राम नाम संग कर व्योहारा पावहिं पद निरवानी॥ प्यारे तू मेरो सुखदाता ॥ गुरु पुरे दीया उपदेशा तुमहीं संग पराता ॥ काम क्रोध लोभ मोह अभिमाना तामें सुख नहिं पाइये ॥ होहु रैनि तू सकलकी मेरे मन तौ आनँद मंगल सुख पाइये ॥ घाल न भानै अन्तरविधि जानै

ताकी कर मन सेवा ॥ कर पूजा होम एह मनुआँ अकाल मूरत गुरु देवा ॥ गोविंद दामोदर दयाल माधवे पारब्रह्म निरंकारा ॥ नाम वर तन नामोअलेखा नाम नानक प्राण अधारा ॥ ८६ ॥

रत्न छाँड़ कौड़ी सँग लागे जाते कछू न पाइये ॥ पूरन पारब्रह्म परमेश्वर मेरे मन सदा ध्याइये ॥ सुमिरो हरि हरि नाम प्रानी ॥ विनशै काची देह अज्ञानी ॥ मृगतृष्णा अरु सुपन मनोंरथ ताकी कछु न वड़ाई ॥ राम भजन बिन काम न आवसि संग न काहू जाई ॥ हौं हौं करत विहाय अवरदा जिय को काम न कीना ॥ धावत धावत नहिं तृपतास्या राम नाम नहिं चीना ॥ स्वाद विकार विषय रस मातो असंख खते कर फेरे ॥ नानक की प्रभु पाहि वीनती काटो अवगुण मेरे ॥ ८७ ॥

गुण गावो पूरण अविनाशी काम क्रोध विष जारे ॥ विषम अग्निको सागर साधू संग उधारे । पूरे गुरु मेट्यो भ्रम अंधेरा। भज प्रेम भगति प्रभु मेरा। हरि हरि नाम निधान रस पीया मन तन रहे अघाई। जतकत पूर रह्यो परमेश्वर कत आवे कत जाई। जप तप संयम ज्ञान तत्त्ववेत्ता जिस मन बसै गुपाला। नाम रतन जिन गुरुमुख पाया तांकी पूरण घाला। कालि कलेश मिटे दुख सकले काटी यमकी फाँसा। कहु नानक प्रभु किरपा धारी मन तन भये विकासा ॥ ८८ ॥

माया मोह मगन अँधियारे देवनहार न जाने। जीउ पिंड साज जिन रच्या बल अपनो कर माने। मन मूढ़े देख रह्यो प्रभु स्वामी ॥ जो कछु करहिं सोई सोई जाणे रहे न कछु ऐछानी। जिह्वा स्वाद लोभ मद मातो उपजे अनिक विकारा ॥ बहुत योनि भ्रमत दुख पाया हौं में बन्दनके भारा। देय किवाँड अनिक पडदे म परदारा सँग फाके॥ चित्रगुप्त जब लेखा मांगहिं तब कौन पड द

तेरा ढाकै ॥ दीन दयाल पूरन दुख भंजन तुम बिन ओट न काई। काढि लेहु संसार सागर महि नानक प्रभु शरनाई ॥ ८९ ॥

सकल वनस्पति मैं बैसंदर सकल दूधमें घीया ॥ ऊँच नीच में जोति समानी घट घट माधोजीया ॥ संतोघटघट रह्यो समाह्यो ॥ पूरनपूर रह्यो सर्वमें जल थल रमैया आह्यो ॥ गुणनिधान नानक यश गावै सतगुरु भर्म चुकायो ॥ सर्व निवासी सदा अलेपा सबमें रह्यो समायो ॥ ९० ॥

अविनाशी जीवनको दाता सुमिरत सब मल खोई ॥ गुण निधान भगतन को वर्तन विरला पावै कोई ॥ मेरे मन जप गुरु गोपाल प्रभु सोई ॥ जाकी शरण परे सुख पाइये बहुरि दुःख न होई ॥ बड़भागी साधुसंग प्राप्त तिन भेटत दुर्मति खोई ॥ तिनकी धूर नानक दास बांछै जिन हरि नाम हृदय परोई ॥९१॥

रामदास सरोवर न्हाते। सब उतरे पाप कमाते ॥ निर्मल होय कर अस्नाना। गुरुपूरे कीने दाना ॥ सब कुशल क्षेम प्रभु धारे। सही सलामत सब थोकदा उबारे ॥ गुरुका शब्द विचारे ॥ साधु संग मल लाथी ॥ पारब्रह्म भयो साथी ॥ नादक नाम ध्याया ॥ आदि पुरुप प्रभु पाया ॥ ९२ ॥

प्राणी कौन उपाव करै। जाते भगती रामकी पावै यमको त्रास हरै ॥ कौन कर्म विद्या कह कैसी धर्म कौन पुनि करई ॥ कौन नाम गुरु जाके सुमिरे भवसागर को तरई ॥ कलिमें एक नाम किरपानिधि जाहि जपै गतिपावै ॥ और धर्म ताकेसम नाहिंन यह विधि वेद बतावै ॥ सुख दुख रहत सदा निरलेपी जाको कहत गुसाईं ॥ सो तुमहीमें वसै निरंतर नानक दर्पण न्याईं ॥ ९३ ॥

माई मैं किहि विधि लखों गुसाईं ॥ महा मोह अज्ञान तिमिर में मन रह्यो उरझाई ॥ सकल जन्म भ्रम ही भ्रम खोयो नहीं

स्थिर मति पाई ॥ विषयासक्त रह्यो निशिवासर नहिं छूटी अधमाई। साधु संग कबहूं नहिं कीना नहिं कीरति प्रभु गाई ॥ जन नानक मैं नाहीं कोऊ गुण राखि लेहु शरणाई ॥ ९४ ॥

माई मन मेरो वश नाहिं ॥ निशि वासर विषयनको ध्यावत किहि विधि रोकों ताहि ॥ वेद पुराण सिमृति के मतं सुन निमिष न हिये वसावै ॥ पर धन पर दारा सों राच्यों विरथा जन्म सिरावै ॥ मद माया के भयो वावरो सूझत नहिं कछु ज्ञाना ॥ घट ही भीतर वसत निरंजन ताको मर्म न जाना ॥ जवहीं शरण साधु की आयो दुरमति सकल विनासी ॥ तव नानक चेत्यो चिंतामणि काटी यमकी फाँसी ॥ ९५ ॥

रे नर यह सांची जिय धार ॥ सकल जगतहै जैसे सुपना विनशत लगत न वार ॥ वारू भीत वनाई रचपच रहत नहीं दिन चार ॥ तैसेही यह सुख माया को उरझ्यो कहा गवाँर ॥ अजहूँ समझ कछू विगरयो नाहिन भजले नाम मुरार ॥ कहु नानक निजमति साधनको भाष्यो तोहिं पुकार ॥ ९६ ॥

मन रे गह्यो न गुरु उपदेश ॥ कहा भयो जो मूँड मुँडायो भगवो कीनो भेष ॥ साँच छाडकै झूठहिं लाग्यो जन्म अकारथ खोयो ॥ कर परपंच उदर निज पोष्यो पशु की नाई सोयो ॥ राम भजन की गति नहिं जानी माया हाथ विकाना ॥ उरझ रह्यो विषयन सँग बौरा नाम रत्न विसराना ॥ रह्यो अचेत न चेत्यो गोविंद विरथा औध सिरानी ॥ कहु नानक हरि विरद पछानो भूले सदा परानी ॥ ९७ ॥

जो नर दुखमें दुख नहिं माने ॥ सुखसनेह अरु भय नहिं जाके कंचन माटीमानै॥नहिं निन्दा नहिं अस्तुति जाके लोभमोह अभिमाना ॥ हर्ष शोक ते रहे नियारो नाहिं मान अपमाना ॥ आसा मनसा

सकल त्यागिकै जगत रहे नीरासा ॥ काम क्रोध जिहिं परसै नाहिं न तिहिं घट ब्रह्म निवासा ॥ गुरु किरपा जिहिं नरको कीनी तिहिं यह जुगति पछानी ॥ नानक लीन भयो गोविंद सों ज्यों पानी सँग पानी ॥ ९८ ॥

जब जरिये तब होय भसम तन रहै किरम दल खाई ॥ काची गागर नीर परत है या तन की यही बड़ाई ॥ काहे भया फिरतो फूल्या फूल्या ॥ जब दश मास ऊर्ध्व मुख रहता सो दिन कैसे भूल्या ॥ ज्यों मधु माखी त्यों सठोर रस जोर जोर धन कीया ॥ मरती बार लेहु लेहु करिये भूत रहन क्यों दीया ॥ देहरी लौं बरी नारि संग भई आगे सजन सुहेला ॥ मरघट लौं सब लोग कुटुंब भयो आगे हंस इकेला ॥ कहत कबीर सुनो रे प्रानी परे काल ग्रस कूआ ॥ झूँठी माया आप बँधाया ज्यों नलिनी भ्रम सूआ ॥ ९९ ॥

वेद पुराण सभी मत सुनके करी कर्मकी आशा ॥ काल ग्रसत सब लोग सयाने उठ पंडितपहिं चले निराशा ॥ मन रे सरयो न एकौ काजा भज्यो न रघुपति राजा ॥ वनखंड जाय योग तप कीनो कंदमूल चुन खाया ॥ नादी वेदी शब्दी मौनी यमके पट लिखाया ॥ भक्ति नारदी हृदय न आई काछ पूछ तन दीना ॥ रात रागिन डिंभ होय वैठा उन हरि पहिं क्या लीना ॥ पर्‍यो काल सभी जग ऊपर माहिं लिखे ब्रह्मज्ञानी ॥ कहु कबीर जन भये खलासे प्रेम भगति जिहिं जानी ॥ १०० ॥

क्या पढिये क्या सुनिये ॥ क्या वेद पुराणा सुनिये ॥ पढे सुने क्या होई ॥ जो सहज न मिल्या सोई ॥ हरिका नाम न जपासि गवाँरा ॥ क्या सोचहिं वारंवारा ॥ अँधियारे दीपक चहिये ॥ इकवस्तु अगोचर लहिये ॥ वस्तु अगोचर पाई ॥ घट दीपक रह्यो

समाई ॥ कह कवीर अव जान्या ॥ जव जान्या तो मन मान्या ॥ मैंनें माने लोग न पतीजै ॥ न पतीजै तो क्या कीजे ॥ १०१ ॥

हृदय कपट मुख ज्ञानी ॥ झूँठें कहा विलोकत पानी ॥ काया मांसज कौन गुना ॥ जो घट भीतर है मलना ॥ लोकी अठसठ तीरथ न्हाई ॥ करुणापन तऊ न जाई ॥ कह कवीर वीचारी ॥ भवसागर तार मुरारी ॥ १०२ ॥

वहु प्रपंच कर परधन ल्यावे ॥ सुत दारा वहिं आन लुटावे ॥ मन मेरे भूले कपट न कीजे ॥ अंत निवेरा तेरे जीय पहिं लीजे ॥ छिन छिन तन छीजे जरा जनावे ॥ तव तेरी ओप कोई पानी हूं न पावे ॥ कहत कवीर कोई नहिं तेरा ॥ हिरदय राम क्यों न जपहि सवेरा ॥ १०३ ॥

भूँखे भगति न कीजे ॥ यह माला आपनि लीजे ॥ हों मांगों संतन रेना ॥ मैं नाहीं किसीका देना ॥ माधो कैसी वने तुम संगे ॥ आपन देहु तो लेवों मंगे ॥ दोय सेर मांगों चूना ॥ पाउ घीउ संग लूना ॥ आधसेर मांगों दाले ॥ मोको दोनों वखत जिमाले ॥ खाट मांगा चौपाई ॥ सिरहाना अवर तुलाई ॥ ऊपर को मांगो खींधा ॥ तरी भगति करें जन वींधा ॥ मैं नाहीं कीता लब्बो ॥ इक नाम तेरा में फब्बो ॥ कह कवीर मनमान्या ॥ मन-मान्या तो हरि जान्या ॥ १०४ ॥

पार परोसन पूछले नामा का पहिंछान छवाई हो ॥ तो पहिं दुगनी मजूरी देहों मोकों वेढी देहु वताई हो ॥ री वाई वेढी देन नजाई देख वेढ़ी रह्यो समाई ॥ हमारे वेढी प्राण अधारा ॥ वेढी प्रीति मजूरी मांगे जो कोउ छान छवावेहो ॥ लोक कुटुंब सवहू ते तोरे तो आप न वेढी आवेहो ॥ ऐसो वेढी वर्न नसाको सभ अंतर सभ ठाईं हो ॥ गूँगे महा अमृत रस चाख्या पूछे

कहन न जाई हो ॥ बेढी के गुण सुन री बाई जलधि बांध ध्रुव थाप्योहो ॥ नामें के स्वामी सीय बहोरी लंक बिभीषण आप्यो हो ॥ १०५ ॥

जब हम होते तब तू नाहीं अब तूहीं मैं नाहीं ॥ अनल अगम जैसे लहरि मय उदधि जल केवल जल माहीं ॥ माधव क्या कहिये भ्रम ऐसा ॥ जैसा मानिये होय न तैसा ॥ नरपति एक सिंहासन सोया सुपने भयो भिखारी ॥ अछत राज बिछुरत दुख पाया सो गति भई हमारी ॥ राज भुवंग प्रसंग जैसे हैं अब कछु मर्म जनाया ॥ अनिक कटक जैसे भूले परे अब कहतें कहन न आया ॥ सर्वे एक अनेकै स्वामी सब घट भुगवे सोई ॥ कह रामदास हाथ पै नरै सहजें होय सो होई ॥ १०६ ॥

जो हम बांधे मोह फांस हम प्रेमबंधन तुम बांधे ॥ अपने छूटन को यतन करो हम छूटे तुम आराधे ॥ माधवे जानतहो जै तैसी ॥ अब कहा करोगे ऐसी ॥ मीन पकर फांक्यो अरु काट्यो रांध कियो बहु बानी ॥ खण्ड खण्ड कर भोजन कीनो तऊ न बिसरचो पानी ॥ आपन बापै नाहीं किसी को भावन को हरि राजा ॥ मोह पटल सब जगन व्याप्यो भगत नहीं संतापा ॥ कह रामदास भगति इक बाढी अब यह कासों कहिये ॥ जा कारन हम तुम आराधे सो दुख अजहूं सहिये ॥ १०७ ॥

दुर्लभ जन्म पुण्य फल पायो वृथा जात अविवेकै ॥ राज इंद्र सम सर गृह आसन बिन हरि भगति कहो किहिं लेखै ॥ न विचारचो राजा रामको रस जिहिं रसअनरस वीसर जाहीं ॥ जान अजान भये हम बावर सोच असोच दिवस जाहीं ॥ इंद्री सबल निबल विवेक बुधि परमारथ प्रवेश नाहीं ॥ कहियत आन अचारियत अनकछु समझ न परै अपर माया ॥ कह रामदास उदास दासमति परिहर कोप करो जियदाया ॥ १०८ ॥

सुखसागर सुरतरु चिंतामणि कामधेनु वश जाके ॥ चार पदारथ अष्ट दशा सिधि नव निधि करतल ताके ॥ हरि हरि हरि न जपहि रसना ॥ अवर सव त्याग वचन रचना ॥ नानाख्यान पुराण वेद विध चौंतिस अक्षरमाहीं ॥ व्यास विचार कह्यो परमारथ राम नाम सर नाहीं ॥ सहज समाधि उपाधि रहत पुनि वड़े भाग लिवलागी ॥ कह रामदास प्रकाश हृदय धर जन्म मरन भय भागी ॥ १०९ ॥

नैनों नीर वहै तन क्षीना भये केश दुधवानी ॥ रूँधा कंठ शब्द नहिं उचरै अब क्या करहि परानी ॥ रामराय होय वैद वनवारी अपने संतन लेहु उवारी ॥ माथे पीर शरीर जलन है करक कलेजे माहीं ॥ ऐसी वेदन उपज खरी भई वाकी औषध नाहीं ॥ हरि का नाम अमृत जल निर्मल यह औषध जग सारा ॥ गुरुप्रसाद कहै जन भीषण पावो मोक्ष द्वारा ॥ ११० ॥

राग धनाश्री ।

वड़े वड़े राजन अरु भूमन ताकी त्रिसना न वूझी ॥ लपट रहे माया रँग माते लोचन कछु न सूझी ॥ विषयामाहिं किनहूं तृप्ति न पाई ॥ ज्यों पावक ईंधन नहीं धरापै विन हरि कहो विन अघाई ॥ दिन दिन करत भोजन वहु व्यंजन ताकी मिटै न भूखा ॥ उद्यम करै श्वान की नाईं चारों कुंटा धोखा ॥ कामवंत कामी वहु नारी पर गृह जोह न चूकै ॥ दिन प्रति करै करै पछतावे शोक लोभ में सूकै ॥ हरि हरि नाम अपार अमोलक अमृत एक निधाना ॥ सुख सहज आनंद सन्तनके नानक गुरुते जाना ॥ १११ ॥

हरि एक सिमर एक सिमर प्यारे ॥ कलिकलेश लोभ मोह महा भवजल तारे ॥ श्वास श्वास निमिष निमिष दिन रैन

चिता रे ॥ साधु संग जप निसंकमन निधान धारे ॥ चरनकमल नमसकार गुण गोविंद वीचारे ॥ साधु जनांकी रेणु नानक मंगल सुख सधा रे ॥ ११२ ॥

काहे रे वन खोजन जाई ॥ सर्व निवासी सदा अलेपा तोहिं संग समाई ॥ पुष्पमध्य ज्यों वास वसत है मुकर माहीं जैसे छाई ॥ तैसेही हरि वसै निरंतर घट ही खोजो भाई ॥ वाहर भीतर एक जानो यह गुरु ज्ञान बताई ॥ जननानक विन आपा चीने मिटे न भ्रमकी काई ॥ ११३ ॥

साधो यह जग भर्म भुलाना ॥ राम नाम का सिमरन छोड्या माया हाथ विकाना ॥ मात पिता भाई सुत वनिता ताके रस लपटाना ॥ यौवन धन प्रभुताके मदमें अहनिशि रहै दिवाना ॥ दीन दयाल सदा दुखभंजन तासों मन न लगाना ॥ जन नानक कोटिनमें किनहूं गुरुमुख होय पछाना ॥ ११४ ॥

तिहिं योगी को जुगत न जानो ॥ लोभ मोह माया ममता पुनि जिहिं घट मोहिं पछानो ॥ परनिंदा स्तुति नहीं जाके कंचन लोह समानो ॥ हर्ष शोक ते रहै अतीता योगी ताहि वखानो ॥ चंचल मन दह दिशको धावत अचल जाहि ठहरानो ॥ कहु नानक यह विधि को जो नर मुक्त ताहि तुम मानो ॥ ११५ ॥

दिनते पहर पहरते घाडियां आयु घटे तन छीजै ॥ काल अहेरी फिरे वधिक ज्यों कहो कवन विधि कीजै ॥ सो दिन आवन लागा मात पिता भाई सुत वनिता कहो कोउ है है कांका ॥ जवलग जोति कायामें वरतें आपा पशू न वूझे ॥ लालच करे जीवन पद करन लोचन कछू न सूझे ॥ कहत कवीर सुनो रे प्राणी छोडो मनके भरमा ॥ केवल नाम जपो रे प्राणी परो एक की शरणा ॥११६ ॥

इक मुहूर्त न यह मनलायो ॥ विगरयो पेख रंग कसुंभको पर गृह जोहन जायो ॥ चरणकमलसों भाव न कीनो नहीं सतपुरुष मनायो ॥ धावत को धावहि बहु भांती ज्यों तेली वृषभ भ्रमायो ॥ नाम दान अस्नान न कीयो। इक निमिष न कीरति गायो ॥ नाना झूँठ लाय मन तोष्यो नहिं बूझ्यो अपनायो ॥ पर उपकार न कबहूँ कीये नहिं सतगुरु सेव ध्यायो ॥ पंच दूत रच संगत गोष्टी मतवारो मद मायो ॥ करों बीनती साधु संगत हरि भगतवच्छल सुन आया ॥ नानक भाग परयो हरि पाछे राख लाज अपनायो ॥ १२५ ॥

माँगों दान ठाकुर नाम ॥ अवर कछु मेरे सँग न चाले मिलै कृपा गुण ग्राम ॥ राज माल अनेक भोग रस सकल तरुवर की छाम ॥ धाय २ बहु विधिको धावै सकल निरारथ काम ॥ विन गोविंद अवर जे चाहों दीसै सकल बात है खाम ॥ कहु नानक संत रेणु मांगों मेरो मन पावै विश्राम ॥ १२६ ॥

कहों कहा अपनी अधमाई । उरझ्यो कनक कामिनीके रस नहिं कीरति प्रभु गाई ॥ जग झूँठेको साँच जानके तासों रुचि उपजाई ॥ दीनबंधु सिमिरयो नहिं कबहूं होत जो संग सहाई ॥ मगन रह्यो मायामें निशिदिन छुटी न मनकी काई ॥ कह नानक अब नाहिं अनत गति विन हरिकी शरनाई ॥ १२७ ॥

राग तिलंग।

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर गोश कुन करतार ॥ हक्का कबीर करीम तू बेऐब परवरदिगार ॥ दुनिया मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥ मम सर मू ईजराईलं गरिफ्तह दिल हेच नादानी ॥ जन पिसर पिदर बिरादरा कस नेस्त दस्तंगीर ॥ आखिर बियफ्तम कस नदारत चूं शवद तकबीर ॥ शब रोज गश्तम दर हवा करदेम

बदी ख्याल ॥ गाहे न नेकी कार करदम् गम ईंचुनी अहवाल ॥ बद बख्त हमचू बखील गाफिर बेनजर बेबाक ॥ नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पा खाक ॥ १२८ ॥

चेतनाहै तो चेतले निशिदिनमें प्रानी ॥ छिन छिन अवध बिहात है फूटे घट ज्यों पानी ॥ हरि गुनि काहे न गावही मूरख अज्ञाना ॥ झूँठे लालच लागके नहिं मर्म पछाना ॥ अजहूं कछु बिगरचो नहीं जो प्रभु गुण गावै ॥ कहु नानक तिहिं भजन ते निरभय पद पावै ॥ १२९ ॥

मैं अंधले की टेक तेरा नाम खुदकारा ॥ मैं गरीब मैं मिस कीन तेरा नाम है अधारा ॥ करीमा रहीमा अलाह तू गनी ॥ हाजरा हजूर दरपेश तो मनी ॥ दरियाउ तू दिहंद तू बिस्यार तू धनी ॥ देहि लेहिं एक तू दिगर को नहीं ॥ तू दाना तू बीना मैं बीचार क्या करी ॥ नामे चे स्वामी बखशिंद तू हरी ॥ १३० ॥

हले यारां हले यारां खुश खबरी ॥ बलबल जाउँगहौं बलबल जाउँ ॥ नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउँ ॥ कुजा आमद कुजा रफ्ती कुजा मेरवी ॥ द्वारका नगरी रास्ता बुगोई ॥ खूब तेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥ द्वारका नगरी काहेके मगोल ॥ चंदी हजार आलम एक लखाना ॥ हमचुनी पातशाह सांवले बरना ॥ अश्वपति गजपति तरह नरिंद ॥ नामे के स्वामी मीर मुकुंद ॥ १३१ ॥

राग सूही ।

नीच जाति हरि जपत्यां उत्तम पदवी पाय ॥ पूछो बिदुर दासी दासी सुतहिं कृष्ण उतारचा धर जिस जाय ॥ हरिकी अकथ कथा सुनों जन भाई जित संशय दूख भूक सब लहजाय ॥ रामदास चमार अस्तुति करे हरि कीरति निमिप इक गाय ॥ पतित जाति

इक मुहूर्त न यह मनलायो ॥ बिगरचो पेख रंग कसुंभको पर गृह जोहन जायो ॥ चरणकमलसों भाव न कीनो नहीं सतपुरुप मनायो ॥ धावत को धावहि वहु भांती ज्यों तेली वृपभ भ्रमायो ॥ नाम दान अस्नान न कीयो। इक निमिप न कीरति गायो ॥ नाना झूँठ लाय मन तोष्यो नहिं वूझ्यो अपनायो ॥ पर उपकार न कवहूँ कीये नहिं सतगुरु सेव ध्यायो ॥ पंच दूत रच संगत गोष्टी मतवारो मद मायो ॥ करों वीनती साधु संगत हरि भगतवच्छल सुन आया ॥ नानक भाग परचो हरि पाछे राख लाज अपनायो ॥ १२५ ॥

माँगौं दान ठाकुर नाम ॥ अवर कछु मेरे सँग न चालै मिलै कृपा गुण ग्राम ॥ राज माल अनेक भोग रस सकल तरुवर की छाम ॥ धाय २ बहु विधिको धावै सकल निरारथ काम ॥ बिन गोविंद अवर जे चाहों दीसै सकल बात है खाम ॥ कहु नानक संत रेणु मांगों मेरो मन पावै विश्राम ॥ १२६ ॥

कहों कहा अपनी अधमाई । उरझ्यो कनक कामिनीके रस नहिं कीरति प्रभु गाई ॥ जग झूँठको साँच जानके तासों रुचि उपजाई ॥ दीनवंधु सिमिरचो नहिं कवहूं होत जो संग सहाई ॥ मगन रह्यो मायामें निशिदिन छुटी न मनकी काई ॥ कह नानक अब नाहिं अनत गति बिन हरिकी शरनाई ॥ १२७ ॥

राग तिलंग।

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर गोश कुन करतार ॥ हक्का कवीर करीम तू वेऐव परवरदिगार ॥ दुनिया मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥ मम सर मू ईजराईल गरिफ्तह दिल हेच नादानी ॥ जन पिसर पिदर विरादरा कस नेस्त दस्तंगीर ॥ आखिर वियफ्तम कस नदारत चूं शवद तकवीर ॥ शव रोज गश्तम दर हवा करदेम

बदी ख्याल ॥ गाहे न नेकी कार करदम् गम ईंचुनी अहवाल ॥ बद बख्त हगचू बखील गाफिर बेनजर बेबाक ॥ नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पा खाक ॥ १२८ ॥

चेतनाहै तो चेतले निशिदिनमें प्रानी ॥ छिन छिन अवध बिहात है फूटे घट ज्यों पानी ॥ हरि गुनि काहे न गावही मूरख अज्ञाना ॥ झूँठे लालच लागके नहिं मर्म पछाना ॥ अजहूं कछु बिगरचो नहीं जो प्रभु गुण गावै ॥ कहु नानक तिहिं भजन ते निरभय पद पावै ॥ १२९ ॥

मैं अंधले की टेक तेरा नाम खुदकारा ॥ मैं गरीब मैं मिस कीन तेरा नाम है अधारा ॥ करीमा रहीमा अलाह तू गनी ॥ हाजरा हजूर दरपेश तो मनी ॥ दरियाउ तू दिहंद तू बिस्यार तू धनी ॥ देहि लेहिं एक तू दिगर को नहीं ॥ तू दाना तू बीना मैं बीचार क्या करी ॥ नामे चे स्वामी वखशिंद तू हरी ॥ १३० ॥

हले यारां हले यारां खुश खबरी ॥ बलबल जाउँगहौं बलबल जाउँ ॥ नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउँ ॥ कुजा आमद कुजा रफ्ती कुजा मेरवी ॥ द्वारका नगरी रास्ता बुगोई ॥ खूब तेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥ द्वारका नगरी काहेके मगोल ॥ चंदी हंजार आलम एक लखाना ॥ हमचुनी पातशाह सांवले वरना ॥ अश्वपति गजपति तरह नरिंद ॥ नामे के स्वामी मीर मुकुंद ॥ १३१ ॥

राग सूही।

नीच जाति हरि जपत्यां उत्तम पदवी पाय ॥ पूछो बिदुर दासी दासी सुतहिं कृष्ण उतारचा धर जिस जाय ॥ हरिकी अकथ कथा सुनों जन भाई जित संशय दूख भूक सब लहजाय ॥ रामदास चमार अस्तुति करे हरि कीरति निमिप इक गाय ॥ पतित जाति

इक मुहूर्त न यह मनलायो ॥ बिगरचो पेख रंग कसुंभको, पर गृह जोहन जायो ॥ चरणकमलसीं भाव न कीनो नहीं सतपुरुप मनायो ॥ धावत को धावहि बहु भांती ज्यों तेली वृपभ भ्रमायो ॥ नाम दान अस्नान न कीयो । इक निमिप न कीरति गायो ॥ नाना झूँठ लाय मन तोष्यो नहिं बूझ्यो अपनायो ॥ पर उपकार न कवहूँ कीये नहिं सतगुरु सेव ध्यायो ॥ पंच दूत रच संगत गोष्टी मतवारो मद मायो ॥ करों बीनती साधु संगत हरि भगतवच्छल सुन आया ॥ नानक भाग परचो हरि पाछे राख लाज अपनायो ॥ १२५ ॥

माँगों दान ठाकुर नाम ॥ अवर कछु मेरे सँग न चाले मिलै कृपा गुण ग्राम ॥ राज माल अनेक भोग रस सकल तरुवर की छाम ॥ धाय २ बहु विधिको धावै सकल निरारथ काम ॥ बिन गोविंद अवर जे चाहों दीसै सकल वात है खाम ॥ कहु नानक संत रेणु मांगों मेरो मन पावै विश्राम ॥ १२६ ॥

कहों कहा अपनी अधमाई । उरझ्यो कनक कामिनीके रस नहिं कीरति प्रभु गाई ॥ जग झूँठेको साँच जानके तासों रुचि उपजाई ॥ दीनबंधु सिमिरचो नहिं कबहूं होत जो संग सहाई ॥ मगन रह्यो मायामें निशिदिन छुटी न मनकी काई ॥ कह नानक अब नाहिं अनत गति बिन हरिकी शरनाई ॥ १२७ ॥

राग तिलंग ।

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर गोश कुन करतार ॥ हक्का कबीर करीम तू बेऐब परवरदिगार ॥ दुनिया मुकामे फानी तहकीक दिल दानी ॥ मम सर मू ईजराईल गरिफ्तह दिल हेच नादानी ॥ जन पिसर पिदर बिरादरा कस नेस्त दस्तंगीर ॥ आखिर बियफ्तम कस नदारत चूं शवद तकबीर ॥ शव रोज गश्तम दर हवा करदेम

बदी ख्याल ॥ गाहे न नेकी कार करदम् गम इंचुनी अहवाल ॥ बद बख्त हमचू बखील गाफिर बेनजर बेबाक ॥ नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पा खाक ॥ १२८ ॥

चेतनाहै तो चेतले निशिदिनमें प्रानी ॥ छिन छिन अवध बिहात है फूटे घट ज्यों पानी ॥ हरि गुनि काहे न गावही मूरख अज्ञाना ॥ झूँठे लालच लागके नहिं मर्म पछाना ॥ अजहूं कछु बिगरचो नहीं जो प्रभु गुण गावै ॥ कहु नानक तिहिं भजन ते निरभय पद पावै ॥ १२९ ॥

मैं अंधले की टेक तेरा नाम खुदकारा ॥ मैं गरीब मैं मिस कीन तेरा नाम है अधारा ॥ करीमा रहीमा अलाह तू गनी ॥ हाजरा हजूर दरपेश तो मनी ॥ दरियाउ तू दिहंद तू बिस्यार तू धनी ॥ देहि लेहिं एक तू दिगर को नहीं ॥ तू दाना तू बीना मैं बीचार क्या करी ॥ नामे चे स्वामी बखशिंद तू हरी ॥ १३० ॥

हले यारां हले यारां खुश खबरी ॥ बलबल जाउँगहौं बलबल जाउँ ॥ नीकी तेरी बिगारी आले तेरा नाउँ ॥ कुजा आमद कुजा रफ्ती कुजा मेरवी ॥ द्वारका नगरी रास्ता बुगोई ॥ खूब तेरी पगरी मीठे तेरे बोल ॥ द्वारका नगरी काहेके मगोल ॥ चंदी हजार आलम एक लखाना ॥ हमचुनी पातशाह सांवले बरना ॥ अश्वपति गजपति तरह नरिंद ॥ नामे के स्वामी मीर मुकुंद ॥ १३१ ॥

राग सूही ।

नीच जाति हरि जपत्यां उत्तम पदवी पाय ॥ पूछो विदुर दासी दासी सुतहिं कृष्ण उतारचा घर जिस जाय ॥ हरिकी अकथ कथा सुनों जन भाई जित संशय दूख भूक सब लहजाय ॥ रामदास चमार अस्तुति करे हरि कीरति निमिष इक गाय ॥ पतित जाति

उत्तम भया चार वर्ण परे पग आय ॥ नामदेव प्रीति लगी हरिसेती लोक छीपा कहे बुलाय ॥ क्षत्री ब्राह्मण पीठ दे छोड़े हरि नामदेव लिया मुख लाय ॥ जितने भगत हरि सेवका मुख अठसठ तीर्थ तिन तिलक कढाय ॥ जन नानक तिनको अनुदिन परसे जे कृपा करे हरिराय ॥ १३२ ॥

बाजीगर जैसे बाजीपाई ॥ नानारूप भेष दिखलाई ॥ स्वांग उतार थंम्यो पासारा ॥ तब एको एकंकारा ॥ कवन रूप दृष्टयो नशायो ॥ कतहिं गयो वह कतते आयो ॥ जलते उठहिं अनीक तरंगा ॥ कनक विभूषण कीने बहु रंगा ॥ बीज ते जो देख्यो बहु प्रकारा ॥ फल पाके ते एकंकारा ॥ सहस घटामें एक अकाश ॥ घटफूटते वही प्रकाश ॥ भ्रम लोभ मोह माया विकार ॥ भ्रम छूटेते एककार ॥ वह अविनाशी विनशत नाहीं ॥ नाको आवे नाको जाहीं ॥ गुरु पुरे हौं मैं मल धोई ॥ कहु नानक मेरी परमगति होई ॥ १३३ ॥

सेवा थोरी मांगन बहुता ॥ महल न पावै कहतौं पहुता ॥ जो प्रिय मानै तिनकी रीसा ॥ कूडे मूरख की हाठीसा ॥ भेष दिखावै सच न कमावै ॥ कहतो महली निकट न आवै ॥ अतीत सदा ये मायाका माता ॥ मन नहीं प्रीत कहै मुखराता ॥ कहु नानक प्रभु विनय सुनीजे ॥ कुचल कठोर कामी मुक्त कीजे ॥ १३४ ॥

बुरे कामको ऊठ खलोया ॥ नामकी बेला पैपै सोया ॥ अवसर अपना बूझे न अयाना ॥ माया मोह रंग लपटाना ॥ लोभ लहर को विकस फूल बैठा ॥ साधु जनांका दर्शन डीठा ॥ कबहू न समझे अज्ञान गँवारा ॥ बहुर बहुर लपट्यो जंजारा ॥ विषय नाद करण सुन भीना ॥ हरियश सुनत आलस मन कीना ॥

दृष्टनाहीं रे पेखत अंधे ॥ छोड़जाहिं झूठे सब धंधे ॥ कहु नानक प्रभु बखस करीजै । कर किरपा मोहिं साधु संग दीजै ॥ तौ कछु पाइये जो होइये रेना ॥ जिसहि बुझाये तसनाम लेना ॥ १२५॥

कवन काज माया बड़ियाई ॥ जाको बिनशत बार न काई ॥ यह सुपना: सोवत नहिं जानै ॥ अचेत व्यवस्था में लपटानै ॥ महामोह मोह्यो गवाँरा ॥ पेखत पेखत ऊठ सिधारा ॥ ऊँच ते ऊँच ताका दरबारा ॥ कई जंतु बिनाहि उपारा ॥ दूसर होया ना कोई होई ॥ जप नानक प्रभु एको सोई ॥ १२६ ॥

सुमिर सुमिर ताको हौं जीवा ॥ चरणकमल तेरे धोय धोय पीवा ॥ सो हरि मेरा अंतरयामा ॥ भगत जनांके संग स्वामी ॥ सुन सुन अमृत नाम ध्यावां ॥ आठ पहर तेरे गुण गावां ॥ पेख पेख लीला मन आनंदा ॥ गुण अपार प्रभु परमानंदा ॥ जाके सिमरन कछु भय न व्यापे ॥ सदा सदा नानक हरि जापे ॥ १२७ ॥

भली सुहावी छापरी जामें गुण गाये ॥ कितहीं काम न धौलहर जित हरि बिसराये ॥ अनंद गरीबी साधुसंग जित प्रभु चित आये ॥ जल जाउ एह वड़पना माया लपटाये ॥ पीसन पीस ओढ़ कामरी सुख मन सन्तोपाये ॥ ऐसो राज न किते काज जित नहिं तृप्ताये ॥ नग्न फिरत रंग एकके ओहं शोभा पाये ॥ पाटपटंवर बिरथिया जिहिं रच लोभाये ॥ सब कछु तुम्हरे हाथ प्रभु आप करे कराये ॥ साँस साँस सिमरत रहां नानक दान पाये ॥ १२८ ॥

संताके कारज आप खलोया हरि कम्म करावन आया राम ॥ धरति सुहावी ताल सुहावा बिच अमृत जल छाया राम ॥ अमृतजल छाया पूरन साज कराया सकल मनोरथ पूरे ॥ जैजैकार भया जग अंतर लाथे सकल वसूरे ॥ पूरन पुरुष अच्युत अविनाशी

यशवेद पुराणी गाया ॥ अपना विरद रख्या परमेश्वर नानक नामहिं ध्याया ॥ १३९ ॥

अवतर आय कहा तुम कीना ॥ राम को नाम न कबहूं लीना ॥ राम न जपो कवन मतिलागे ॥ मरजैवेको क्या करो अभागे ॥ दुख सुखके करके कुडुम्ब जिवाया ॥ मरती बार इकसर दुख पाया ॥ कंठ गहन तब करन पुकारा ॥ कह कबीर आगे ते न सँभारा ॥ १४० ॥

अमल सिरानो लेखा देना ॥ आये कठिन दूत यम लेना ॥ क्या तैं खट्या कहां गवाँया ॥ चलो शताब दिवान बुलाया ॥ चल दरहाल दिवान बुलाया ॥ हरि फरमान दरगह का आया ॥ करो अरदास गाव कछु बाकी ॥ लेहु निबेर आजकी राती ॥ कछु भी खर्च तुम्हारा सारो ॥ सुबह नमाज सराय गुजारो ॥ साधु संग जाको हरि रँग लागा ॥ धनि धनि सो जन पुरुष सभागा ॥ ईत ऊत जन सदा सुहेले ॥ जन्म पदारथ जीत अमोले ॥ जागत सोया जन्म गवाँया ॥ माल धन जोरया भया पराया ॥ कहु कबीर तेई नर भूले ॥ खसम विसार माटी सँग रूले ॥ १४१ ॥

जो दिन आवें सो दिन जाहीं ॥ करना कूच रहन थिर नाहीं संग चलत है हमभी चलना ॥ दूर गमन सिर ऊपर मरना ॥ क्या तू सोया जाग अयाना ॥ तैं जीवन जग सच कर जाना ॥ जिन जिउ दिया सो रिजक अँबरावे ॥ सब घट भीतर हाट चलावे ॥ कर बंदगी छाँड मैं मेरा ॥ हिरदय नाम सम्हार सवेरा ॥ जन्म सिरानो पंथ न सवाँरा ॥ सांझ परी दह दिशि अँधियारा ॥ कह रामदास निदान दिवाने ॥ चेतत [illegible] फनखाने ॥ १४२ ॥

ऊंचे मंदिर साल रसोई ॥ एक घरी पुनि रहन न होई ॥ यह तन ऐसा जैसे घासकी टाटी ॥ जल गयो घास रलगयो माटी ॥ भाई बंधु कुटुम्ब सहेरा ॥ वहभी लागे कांढ़ सबेरा ॥ घरकी नारि वह रहे तन लागी ॥ वह तो भूत भूत कर भागी ॥ कह रामदास सभी जग लूट्या ॥ हौं तो एक राम कह छूट्या ॥ १४३ ॥

राग बिलावल।

मनमें सिंचो हरि हरि नाम ॥ अनुदिन कीर्तन हरि गुण ग्राम ॥ ऐसी प्रीति करो मन मेरे ॥ आठ पहर प्रभु जानो नेरे ॥ कहु नानक जाके निर्मल भाग ॥ हरि चरनी तांका मन लाग ॥ १४४ ॥

ताती वाउ न लागई पारब्रह्म शरनाई ॥ चौगिरद हमारे राम कार दुख लगे न भाई ॥ सतगुरु पूरा भेट्या ॥ जिन बनत बनाई ॥ राम-नाम औषध दीया एका लिव लाई ॥ राख लिये तिन रखन हार सब व्याधि मिटाई ॥ कह नानक कृपा भई प्रभु भये सहाई ॥ १४५ ॥

प्रभुजी तूं मेरे प्राण अधारे ॥ नमसकार डंडौत वंदना अनिक बार जाऊँ बलिहारे ॥ ऊठत बैठत सोवत जागत यह मन तुझे चिता रे ॥ सुख दुख इस मनकी बिरथा तुझकी बिरथा तुझही आगे सारे ॥ तूं मेरी ओट बल बुद्धि धन तुमहीं तुमहीं मेरे प्रवारे ॥ जो तुम करो सोइ भल हमरे पेख नानक सुख चरना रे ॥ १४६ ॥

दुख हरता हरि नाम पछानो ॥ अजामील गनिका जिहिं सिमरत मुक्त भये जिय जानो ॥ गजकी त्रास मिटी छिनहूंमें जबहीं राम बखानो ॥ नारद कहत सुनत ध्रुव बालक भजन माहिं लपटानो ॥ अचल अमर निरभय पद पायो जगत जाहिं हैरानो ॥ नानक कहत भगत रक्षक हरि निकट ताहि तुम मानो ॥ १४७ ॥

हरिके नाम बिना दुख पावै ॥ भगति बिना संशय नहिं चूकै गुरु यह भेद बतावै ॥ कहा भयो तीरथ व्रत कीये राम शरण नहिं

आवै ॥ योग यज्ञ निष्फल तिहिं मानो जो प्रभु यश बिसरावै ॥ मान मोह दोनोंको परिहारि गोविंदके गुण गावै ॥ कहु नानक यहि विधि को प्राणी जीवनमुक्त कहावै ॥ १४८ ॥

जामें भजन राम को नाहीं ॥ तिहिं नर जन्म अकारथ खोयो यह राखो मन माहीं ॥ तीरथ करै वर्त पुनि राखै नहिं मनुआ वश जाको ॥ निष्फल धर्म ताहि तुम मानो साँच कहत मैं याको ॥ जैसे पाहन जलमें राख्यो भेदै नाहिं तिहि पानी ॥ तैसेही तुम ताहि पछानो भगतिहीन जो प्रानी ॥ कलिमें मुक्ति नाम ते पावत गुरु यह भेद बतावै ॥ कहु नानक सोई नर गरुवा जो प्रभु के गुणगावै ॥ ऐसे यह संसार पेखना रहन न कोऊ पइहै रे ॥ सूधे सूधे रँग चलो तुम नतरक धका देवइहै रे ॥ वारे बूढे तरुने भैया सबहू यम लैजइहै रे ॥ मानस वपुरा मूसा कीनो मीच बिलैया खइहै रे ॥ धनवंता अरु निरधन मनई ताकी कछू न कानी रे ॥ राजा परजा सम कर मानै ऐसो काल वडा-नी रे ॥ हरिके सेवक जो हरि भाये तिनकी कथा निरारी रे । आवहिं जाहिं न कबहूं मरते पारब्रह्म संगारी रे ॥ पुत्र कलत्र लक्ष्मी माया इहै तजहु जियजानु रे ॥ कहत कबीर सुनो रे संतहु मिलिहै शारँगपानी रे ॥ १४९ ॥

विद्या न पढ़ों वाद नहिं जानों ॥ हरि गुण कथत सुनत बौ-रानों ॥ मेरे बाबा मैं बौरा सब खलक स्यानी मैं बौरा ॥ मैं बि-गरयो बिगरै नति औरा ॥ आपन बौरा राम कियो बौरा ॥ सत-गुरु जार गयो भ्रम मोरा ॥ मैं बिगरै अपनी मति खोई । मेरे भर्म भूलो मत कोई ॥ सो बौरा जो आप न पछानै ॥ आप पछानै तो एकै जानै ॥ अबहिं न माता सो अरु कबहूं न माता ॥ कह कबीर रामहिं रँग राता ॥ १५० ॥

गृह तज वनखंड जाइये चुन खाइये कंदा॥ अजहूं विकार न छोडई पापी मन मंदा॥ क्यों छूटो कैसे तरों भव जलनिधि भारी॥ राख राख मेरे बीठुला जन शरण तुम्हारी॥ विषय विषयकी वासना तजी नहिं जाई॥ अनिक यतन कर राखिये फिर फिर लपटाई॥ जरा जीवन यौवन गया कछु किया न नीका॥ यह जियरा निरमोलको कौडीलग मीका॥ कहु कबीर मेरे माधवा तूं सर्वव्यापी॥ तुम समसर नाहीं दयाल मोहिं समसर पापी॥ १९१॥

नित उठ कोरी गाजर आनै लीपत जीउ गयो॥ ताना नान कछू न सूझै हरि हरि रस लपट्यो॥ हमारे कुल कौने राम कह्यो॥ जबकी माला लई निपूते तबते सुख न भयो॥ सुनहु जिठानी सुनहु दिरानी अचरज एक भयो॥ सात सूत इन मुंडिये खोये यह मुंडिया क्यों मुयो॥ सर्व सुखांका एक हरि स्वामी सो गुरु नाम दियो॥ संत प्रहलादकी पैज जिन राखी हरनाकुश नख विदरयो॥ घरके देव पितर को छोडी गुरु को शब्द लियो॥ कहत कबीर सकल अघखंडन संतहिं लै उधरयो॥ १९२॥

राखिलेहु हमते बिगरी॥ शील धर्म जप भगति न कीनी हों अभिमान टेढ़ पगरी॥ अमर ज़ान संची यह काया यह मिथ्या काची गगरी॥ जिनहिं निवाज साज हम कीये तिनहिं बिसार अवर लगरी॥ संधिकि तोहि साध नहिं कहियो शरण परे तुमरी पगरी॥ कहु कबीर यह विनती सुनियो मत घालो यमकी खबरी॥ १९३॥

दारिद देख सबकोय हँसै ऐसी दशा हमारी॥ अष्टादश सिद्धि करतले सब कृपा तुम्हारी॥ तूं जानत मैं कछु नहीं भव खंडन राम॥ सकल जीवन शरणागती प्रभु पूरण काम॥ जो तेरी शर-

णागती तिन नाहीं भार ॥ ऊँच नीच तुमते तरे आल जु संसार ॥ कह रामदास अकथ कथा बहु काय करीजै ॥ जैसा तू तैसा तुहीं क्या उपमा दीजे ॥ १५४ ॥

जिहि कुल साधु वैष्णव होय ॥ वर्ण अवर्ण रंक नहिं ईश्वर विमल वास जानिय जग सोय ॥ ब्राह्मण वैश्य शूद्र अरु क्षत्रिय डोम चंडाल मलेच्छ मन सोय ॥ होय पुनीत भगवंत भजन ते आप तार तारे कुल दोय ॥ धन्य सो गाउँ धन्य सो ठाउँ धन्य पुनीत कुटुंब सब लोय ॥ जिन पीया सार रस तजे आन रस होय रस मगन डारे विष खोय ॥ पंडित शूर छत्रपति राजा भगत बराबर और न कोय ॥ जैसे पुरैन पात रहै जल समीप भनत रामदास जन्में जग ओय ॥ १५५ ॥

नृप कन्याके कारने इक भयो भेष धारी ॥ कामारथी स्वारथी वाकी पैज सवारी ॥ तव गुण कहा जगत गुरा जो कर्म न नासै ॥ सिंह शरण कत जाइये जो जंबुक ग्रासै ॥ एकबूँद जल कारने चातक दुख पावै ॥ प्राण गये सागर मिले पुनि काम न आवै ॥ प्राण जो थाके थिर नहीं कैसे बिरमावो ॥ बूडमुये नौका मिले कहु काहि चढ़ावो ॥ मैं नाहीं कछु हों नहीं कछु आहि न मोरा ॥ औसर लज्जा राखलेहु सधना जन तोरा ॥ १५६ ॥

राग गौड ।

निमाने को जो देतो मान ॥ सकल भूँखे को करतो दान ॥ गरभ घोरमें राखनहार ॥ तिस ठाकुरको सदा नमसकार ॥ ऐसो प्रभु मन माहिं ध्याय ॥ घट अवघट जत कतहिं सहाय ॥ रंकराउ जाके एक समान ॥ कीट हस्ती सकल पूरन ॥ बीयो पूछ न मसलत धरे ॥ जो कछु करे सो आपहिं करे ॥ जाका अंत न जानत कोय ॥ आपे आप निरंजन सोय ॥ आप अकार आप निरंकार ॥

घट घट घट सब घट आधार ॥ नाम रंग भगत भये लाल॥ जस करते संत सदा निहाल॥ नाम रंग जन रहे अघाय ॥ नानक तिन जन लागै पाय॥ १५७॥

गुरुकी मूरत मनमें ध्यान ॥ गुरुके शब्द मंत्र मन मान ॥ गुरुके चरण हिरदै लै धारो॥ गुरु पारब्रह्म सदा नमसकारो॥ मत को भ्रम भूलै संसार ॥ गुरु बिन कोय न उतरत पार ॥ भूलेको गुरु मारग पाया॥ अवर त्याग हरि भगती लाया ॥ जन्म मरण की त्रास मिटाई ॥ गुरु पूरे की वे अंबबड़ाई ॥ गुरुप्रसाद ऊरध कमल विकास॥ अंधकारमें भया प्रकाश॥ जिन कीया सो गुरु ते जान्या॥गुरु कृपाते मुगध मन मान्या॥ गुरु करता गुरु करने योग्य ॥ गुरु परमेश्वर है भी होग ॥ कह नानक प्रभु यही जनाई ॥ बिन गुरु मुक्ति न पाइये भाई॥ १५८॥

राम राम संग कर व्योहार॥ राम राम राम प्राण अधार॥ राम राम राम कीर्तन गाय॥ रमत राम सब रह्यो समाय ॥ संत जनां मिल बोलो राम ॥ सबते निरमल पूरण काम॥ राम राम धन संच भँडार॥ राम राम राम कर अहार॥ राम राम वीसर नहीं जाय॥ कर किरपा गुरु दियो बताय॥ राम राम राम सदा सहाय ॥ राम राम राम लव लाय ॥ राम राम जप निर्मल भये ॥ जन्मजन्म के किलिमप गये ॥ रमत राम जन्म मरन निवारै ॥ उचरत राम भय पार उतारै ॥ सभते ऊँच राम परकास ॥ निशि वासर जप नानक दास॥ १५९॥

अचरज कथा महा अनूप॥ परमात्मापारब्रह्मका रूप॥ ना यह बूढा ना यह बाला॥ ना इस दूख नहीं यमजाला॥ ना यह विनशै ना यह जाय॥ आद जुगादी रह्या समाय॥ ना इस उष्ण नहीं इस शीत॥ ना दुशमन ना इस मीत ॥ ना इस हर्ष नहीं

इस शोग ॥ सभ कछु इसका यह करने योग ॥ ना इस बाप नहीं इस माया ॥ इह अपरंपर होता आया ॥ पाप पुण्य का इस लेप न लागै ॥ घट घट अंतर सदही जागै ॥ तीन गुणां इक शक्ति उपाया ॥ महामाया ताकी है छाया ॥ अछल अछेद अभेद दयाल ॥ दीन दयाल सदा कृपाल ॥ ताकी गति मित कछु न पाय ॥ नानक ताके बलबल जाय ॥ १६० ॥

संत मिलै कछु सुनिये कहिये ॥ मिलै असंत मष्ट कर रहिये ॥ बावा बोलना क्या कहिये ॥ जैसे राम नाम रम रहिये ॥ संतनसों बोले उपकारी ॥ मूरखसों बोले झखमारी ॥ बोलत बोलत बढ़े विकारा ॥ विन बोले क्या करैं विचारा ॥ कह कबीर छूछा घट बोलै ॥ भरचा होय सो कबहुँ न डोलै ॥ १६१ ॥

नरू मरै नर काम न आवै ॥ पशू मरै दश काज सवाँरै ॥ अपने कर्मकी गति मैं क्या जानों मैं क्या जानों बावा रे ॥ हाड जले जैसे लकरी का तूला ॥ केश जलैं जैसे घासका तूला ॥ कहत कबीर तबहीं नर जागे ॥ यम का डंड मूंडमें लागे ॥ १६२ ॥

भजा बांधे भिला कर डारचो ॥ हस्ती कोप मूड महिंमा-रहचो ॥ हस्ती भागके चीसां मारे ॥ या मूरत के हों वलिहारे ॥ आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोर ॥ काजी बकवो हस्ती तोर ॥ रे महावत तुझ डारों काट ॥ इसहिं तुरावहु घालो साट ॥ हस्तन तोरै धरै ध्यान ॥ वाके हिरदय बसै भगवान ॥ क्या अपराध संत है कीना ॥ बांध पोट कुंचर को दीना ॥ कुंचर पोट लेलै नमसकारै ॥ बूझी नहीं काजी अँध्यारै ॥ तीन बार पतीया भरलीना ॥ मन कठोर अजहूँ न पतीना ॥ कह कबीर हमरा गोविंद ॥ चौथे पदमें जनकी जिंद ॥ १६३ ॥

ना इह मानस ना इह देउ ॥ ना इह यती कहावै सेउ ॥ ना इह योगी ना अवधूता ॥ ना इस माय न काहू पूता ॥ या मंदिर में कौन बसाई ॥ ताका अंत न कोऊ पाई ॥ ना इह गिरही नाहिं उदासी ॥ ना इह राज न भीखमँगासी ॥ ना इस पिंड न रकतू राती ॥ ना इह ब्राह्मण ना इह खाती ॥ ना इह तपा कहावै शेख ॥ ना इह जीवे न मरता देख ॥ इस मरते को जे कोउ रोवै ॥ जो रोवे सोई पति खोवै ॥ गुरुप्रसाद मैं डगरो पाया ॥ जीवन मरन दोऊ मिटवाया ॥ कहु कवीर इह रामकी अंस ॥ जस कागद पर मिटै न मंस ॥ १६४ ॥

अश्वमेध जगने ॥ तुलापुरुष दाने ॥ प्राग अस्नाने ॥ तौ न पुंजहिं हरि कीरती नामा ॥ अपने रामहिं भज रे मन आलसिया ॥ गयो पिंड भरता बनारस असि वसता ॥ मुख वेद चतुर पढ़ता ॥ सकल धर्म अछिता ॥ गुरु ज्ञान इंद्री दृढ़ता ॥ षट् कर्म सहित रहता ॥ शिवा शक्ति संवादं ॥ मन छोड छोड़ सकल भेदं ॥ सिमर सिमर गोविंदं ॥ भज नामा तरसि भवं ॥ १६५ ॥ नाद भ्रमे जैसे मिरगाये ॥ प्राण तजे वाको ध्यान न जाये ॥ ऐसे रामा ऐसे हेरों ॥ राम छोड चित अनत न फेरों ॥ ज्यों मीना हेरै पशुआरा ॥ सोना गढ़ते हेरै सुनारा ॥ ज्यों विषयी हेरै परनारी ॥ कौडी डारत हिरै जुआरी ॥ जहिं जहिं देखों तहिं तहिं रामां ॥ हरि के चरण नित ध्यावै नामां ॥ १६६ ॥

मोको तारले रामा तारले ॥ मैं अजान जन तरबे न जानों बाप बीठुला बांहिदे ॥ नर ते सुर होयजात निमिषमें सतगुरु बुध सिखलाइ ॥ नरते उपज स्वर्गको जीत्यो सोअवपध में पाई ॥ जहां जहां ध्रुव नारद टेके नेके टिकावो मोहिं ॥ तेरे नाम अवलंब बहुत जन उधरे नामेकी निज मति इह ॥ १६७ ॥

इस शोग ॥ सभ कछु इसका यह करने योग ॥ ना इस बाप नहीं इस माया ॥ इह अपरंपर होता आया ॥ पाप पुण्य का इस लेप न लागै ॥ घट घट अंतर सदही जागै ॥ तीन गुणां इक शक्ति उपाया ॥ महामाया ताकी है छाया ॥ अछल अछेद अभेद दयाल ॥ दीन दयाल सदा कृपाल ॥ ताकी गति मित कछु न पाय ॥ नानक ताके बलबल जाय ॥ १६० ॥

संत मिले कछु सुनिये कहिये ॥ मिले असंत मष्ट कर रहिये ॥ बाबा बोलना क्या कहिये ॥ जैसे राम नाम रम रहिये ॥ संतनसों बोले उपकारी ॥ मूरखसों बोले झखमारी ॥ बोलत बोलत बढ़े विकारा ॥ बिन बोले क्या करें विचारा ॥ कह कबीर छूछा घट बोलै ॥ भरचा होय सो कबहुं न डोलै ॥१६१॥

नरू मरै नर काम न आवै ॥ पशू मरै दश काज सवाँरै ॥ अपने कर्मकी गति मैं क्या जानों मैं क्या जानों बाबा रे ॥ हाड जले जैसे लकरी का तूला ॥ केश जलैं जैसे घासका तूला ॥ कहत कबीर तबहीं नर जागे ॥ यम का डंड मूंडमें लागै ॥ १६२ ॥

भजा बांधे भिला कर डारयो ॥ हस्ती कोप मूड महिंमा-रहयो ॥ हस्ती भागके चीसां मारे ॥ या मूरत के हौं बलिहारे ॥ आहि मेरे ठाकुर तुमरा जोर ॥ काजी बकवो हस्ती तोर ॥ रे महावत तुझ डारों काट ॥ इसहिं तुरावहु घालो साट ॥ हस्तन तोरै धरै ध्यान ॥ वाके हिरदय बसै भगवान ॥ क्या अपराध संत है कीना ॥ बांध पोट कुंचर को दीना ॥ कुंचर पोट लैलै नमसकारै ॥ बूझी नहीं काजी अँध्यारे ॥ तीन बार पतीया भरलीना ॥ मन कठोर अजहूं न पतीना ॥ कह कबीर हमरा गोविंद ॥ चौथे पदमें जनकी जिंद ॥ १६३ ॥

ना इह मानस ना इह देउ ॥ ना इह यती कहावै सेउ ॥ ना इह योगी ना अवधूता ॥ ना इस माय न काहू पूता ॥ यां मंदिर में कौन बसाई ॥ ताका अंत न कोऊ पाई ॥ ना इह गिरही नाहिं उदासी ॥ ना इह राज न भीखमँगासी ॥ ना इस पिंड न रकतू राती ॥ ना इह ब्राह्मण ना इह खाती ॥ ना इह तपा कहावै शेख ॥ ना इह जीवे न मरता देख ॥ इस मरते को जे कोउ रोवै ॥ जो रोवै सोई पति खोवै ॥ गुरुप्रसाद मैं डगरो पाया ॥ जीवन मरन दोऊ मिटवाया ॥ कहु कबीर इह रामकी अंस ॥ जस कागद पर मिटै न मंस ॥ १६४ ॥

अश्वमेध जगने ॥ तुलापुरुष दाने ॥ प्राग अस्नाने ॥ तौ न पुंजहिं हरि कीरती नामा ॥ अपने रामहिं भज रे मन आलसि-या ॥ गयो पिंड भरता बनारस असि बसता ॥ मुख वेद चतुर पढ़ता ॥ सकल धर्म अछिता ॥ गुरु ज्ञान इंद्री दृढ़ता ॥ षट् कर्म सहित रहता ॥ शिवा शक्ति संवादं ॥ मन छोड छोड़ सकल भेदं ॥ सिमर सिमर गोविंदं ॥ भज नामा तरसि भवं ॥ १६५ ॥ नाद भ्रमे जैसे मिरगाये ॥ प्राण तजे वाको ध्यान न जाये ॥ ऐसे रामा ऐसे हेरों ॥ राम छोड चित अनत न फेरों ॥ ज्यों मीना हेरै पशुआरा ॥ सोना गढ़ते हेरै सुनारा ॥ ज्यों विषयी हेरै परनारी ॥ कौडी डारत हिरै जुआरी ॥ जहिं जहिं देखों तहिं तहिं रामां ॥ हरि के चरण नित ध्यावै नामां ॥ १६६ ॥

मोको तारले रामा तारले ॥ मैं अजान जन तरबे न जानों बाप बीठुला बांहिदे ॥ नर ते सुर होयजात निमिषमें सतगुरु बुध सिखलाइ ॥ नरते उपज स्वर्गको जीत्यो सोअवपध मैं पाई ॥ जहां जहां ध्रुव नारद टेके नेके टिकावो मोहिं ॥ तेरे नाम अवलंब बहुत जन उधरे नामेंकी निज मति इह ॥ १६७ ॥

हरि हरि करत मिटे सब भर्मा ॥ हरि को नाम लै उत्तम धर्मा ॥ हरि हरि करत जाति कुल हरी ॥ सो हरी अंधले-की लाकरी ॥ हरये नमस्ते हरये नमः ॥ हरि हरि करत नहीं दुख जमः॥ हरि हरनाकुश हरे ॥ प्राण अजामिल कीयो वैकुंठहि थान ॥ सुआ पढ़ावत गनिका तरी ॥ सो हरि नैनो-की पूतरी ॥ हरि हरि करत पूतना तरी ॥ बालघातनी कपट हि भरी ॥ सिमरन द्रौपद सुता उद्धरी ॥ गौतम सती शिला निस्तरी॥ केशी कंस मथन जिन कीया ॥ जीय दान कालीको दीया ॥ प्रणवै नामा ऐसो हरी ॥ जासु जपत भय आपदा टरी ॥ १६८ ॥

जे ओह अठसठ तीरथ न्हावै ॥ जे ओह द्वादश शिला पुजावै॥ जे ओह कूप तटा देवावै ॥ करै निंद सब विरथा जावै ॥ साधु-का निंदक कैसे तरै ॥ सरपर जानो नरकहि परै ॥ जे वह ग्रहण करै कुरुखेत ॥ अरपै नारि शृंगार समेत ॥ सकली सिमृति श्रणी सुनै॥ करै निंद कवनै नहा गुनै ॥ जे ओह आनक प्रसाद करावे ॥ भूमिदान शोभा मंडप पावै ॥ अपना विगार विराना सांढ़ै ॥ कर निंदा बहु योनीहांढ़ै ॥ निंदा कहा करो संसारा ॥ निंदक का परगट पाहारा ॥ निंदक शोध साधु वीचारचा ॥ कहु रामदास पापी नर्क सिधारचा ॥ १६९ ॥

राग रामकली।

चार पुकारहि ना तू मानहि ॥ पट भी एका बात वखानहि ॥ दस अष्टी मिल एको कह्या ॥ तौ भी योगी भेद न लह्या ॥ किंगुरी अनूप बाजे ॥ योगीया मतवारो रे ॥ प्रथमें वस्या सतका खेडा ॥ तृतीये में कछु भया दुतेडा ॥ दुतीया अरधो अरध समाया ॥ एक रह्या तो एक दिखाया ॥ एकै सूत परोये मणिये ॥ गांठी भिन भिन भिन भिन ताणिये ॥ फिरती माला बहु विधि भया ॥

खिच्या सूत तो आई थाय ॥ चहुँमें एकै मट है किया ॥ ताहि बिखडे थान अनिक खिडकिया ॥ खोजत खोजत द्वारे आया ॥ तौ नानक योगी महल घर पाया ॥ १७० ॥

कोडी बदले त्यागै रतन ॥ छोड जाय ताहूँ का यतन ॥ सो संचय जो होछी बात ॥ माया मोह्या टेढा जात ॥ अभागे तैं लाज नाहीं ॥ सुखसागर पूरन परमेश्वर हरि न चेत्यो मनमाहीं ॥ अमृत कौडा विषया मीठी ॥ शाकतकी विधि नैनै डीठी ॥ कूड़ कपट अहंकार रिझाना ॥ नाम सुनत जनु बिछू डसाना ॥ माया कारन सदही झरै ॥ सनमुख कबहुन अस्तुति करै ॥ निर्भय निरंकार दातार ॥ तिससों प्रीति न करै गवाँर ॥ सब साहाँ शिर साचाँ साह ॥ बेसुहताज पूरा पातसाह ॥ मोह मगन लपट्यो भ्रम गिहरे ॥ नानक तरिये तेरी मिहरे ॥ १७१ ॥

गऊ को चारे शारदूल ॥ कौडी का लख हुआ मूल ॥ बकरीको हस्ती प्रतिपाले ॥ अपना प्रभु नदर निहालै ॥ कृपानिधान प्रीतम प्रभु मेरे ॥ वर्णन साकौं बहु गुण तेरे ॥ दीसत मासन खाय बिलाई ॥ महा कसाब छुरी सटपाई ॥ करनहार प्रभु हिरदय बूठा ॥ फाथी मछलीका जाला तूठा ॥ सूखे काष्ट हरे चलूल ॥ ऊचे थल फूले कमल अनूप ॥ अग्नि निवारे सतगुरु देव ॥ सेवक अपनी लायो सेव ॥ किरत धनाका करे उधार ॥ प्रभु मेरा है सदा दियार ॥ संतजनाका सदा सहाई ॥ चरण कमल नानक शरणाई ॥१७२॥

रे मन ओट लेहु हरिनामा ॥ जाके सुमिरन दुरमति नाशै पावहिं पद निरवाना ॥ बडभागी तिहि जनको जानो जो हरिके गुण गावै ॥ जन्म जन्मके पाप खोयकै पुनि वैकुंठ सिधावै ॥ अजामलको अंतकालमें नारायण सुधि आई ॥ जा गतिको योगीश्वर वांछत सो गति छिनमें पाई ॥ नाहिंन गुण नाहिंन कछु

बिद्या धर्म कौन गज कीना ॥ नानक बिरद रामका देखो अभयदान तिहि दीना ॥ १७३ ॥

साधो कौन जुगत अब कीजे ॥ जाते दुर्मति सकल बिनाशै राम भगति मन जीजे ॥ मन मायामें उरझ रह्योहै बूझे नहिं कछु ज्ञाना ॥ कौन नाम जग जाके सिमरे पावै पद निरबाना ॥ भये दयाल कृपाल संतजन तब इह बात बताई ॥ सर्व धर्म मानो तिहिं कीये जिहिं प्रभु कीरत गाई ॥ राम नाम नर निशिबासरमें निमिप एक उर धारै ॥ यमको त्रास मिटै नानक तिहिं अपनो जन्म सवाँरै ॥ १७४ ॥

प्राणी नारायण सुध लेहु ॥ छिन छिन औध घटै निशिबासर बृथा जात है देह ॥ तरुनापै बिपयनसों खोयो बालापन अज्ञान ॥ बिरध भयो अजहूं नहिं समझै कोन कुमति उरझाना ॥ मानस जन्म दियो जिहिं ठाकुर सो तूं क्यों बिसरायो ॥ मुक्त होत नर जाके सिमरे निमिप न ताको गायो ॥ मायाको मद कहा करतहै संग न काहू जाई ॥ नानक कहत चेत चिंतामणि ह्वैहै अंत सहाई ॥ १७५ ॥

कवन काज सिरजे जग भीतर जन्म कवन फल पाया ॥ भवनिधि तरन तारन चिंतामणि इक निमिप न इह मन लाया ॥ गोविंद हम ऐसे अपराधी ॥ जिन प्रभु जीउ पिंड था दीया तिसकी भाउभक्ति नहिं साधी ॥ परधन परतन परतिय निंदा पर अपवाद न छूटै ॥ आवागमन होतहै पुनिपुनि इह प्रसंग ना टूटै ॥ जिहिं घर कथा होत हरि संतन इकनिमिप न कीनो मैं फेरा ॥ लंपट चोर दूत मतवारे तिन सँग सदा बसेरा ॥ काम क्रोध माया मद मत्सर इह संपै मो माहीं ॥ दया धर्म अरु गुरुकी सेवा इह सुपनंतर नाहीं ॥

दीनदयाल कृपाल दामोदर भगत बछल भयहारी ॥ कहत कबीर भीर जिन राखो हरि सेवा करों तुम्हारी ॥ १७६ ॥

आनीले कागद काटीले गूडी आकाश मध्ये भरमीयले ॥ पंच जानां सों बात बतौआ चीत सो डोरी राखीयले ॥ मन राम नामा वेधीयले ॥ जैसे कनक कला चित मांडीयले ॥ आनीले कुंभ भराईले ऊदक राज कुआरि पुरंदरये ॥ हँसत विनोद विचार करतिहै चीत सो सागर राखीयले ॥ मंदिर एक द्वार दस जाके गऊ चरावन छांड़ीयले ॥ पांच कोस पर गऊ चरावत चीत सो बछरा राखीयले ॥ कहत नामदेउ सुनो त्रिलोचन बालक पालन पौढ़ीयले ॥ अंतर बाहर काज बिरूधी चीत सो बालक राखीयले ॥ १७७ ॥

बानारसी तप करे उलट तीर्थ मरे अग्नि दहे काया कलप कीजै ॥ अश्वमेध यज्ञ कीजै सोना दान दीजै राम नाम सर तऊ न पूजै ॥ छोड़ छोड़ रे पाखंडी मन कपट न कीजै ॥ हरिका नाम नित नितहिं लीजै ॥ गंगाजी गोदावरी जाइये कुंभ जो केदार न्हाइये ॥ गोमती सहस गऊ दान कीजै ॥ कोटि जो तीर्थ करै तन जो हिमाले गोरै रामनाम सर तऊ न पूजै ॥ अश्वदान गजदान सिहजा नारी भूमिदान ऐसो दान नित नितहिं कीजै ॥ आत्मजो निर्मायलकीजै आप बराबर कंचन दीजै ॥ रामनाम सर तऊ न पूजै ॥ मनाहिं न कीजै रोप जमहि न दीजै दोप निर्मल निर्वाण पद चीन लीजै ॥ दशरथराय नंद राजा मेरा रामचंद्र प्रणवै नामा तत्वरस अमृत पीजै ॥ १७८ ॥

पढ़िये गुनिये नाम सब सुनिये अनुभव भाव न दरसे ॥ लोहा कंचन हिरंण्य होय कैसे जो पारसहिं न परसै ॥ देव संशय गांठ न छूटै काम क्रोध माया मत्सर इन पंचों मिल लूटै ॥ हम बड़ कवि कुलीन हम पंडित हम योगी संन्यासी ॥ ज्ञानी गुनी शूर

हम दाते इह बुद्धि कबहिं न नासी ॥ कहु रामदास सभी नहीं समझत भूल परे जैसे बौरे ॥ मोहिं अधार नाम नारायण जीवन प्राण धन मोरे ॥ १७९ ॥

राग नटनारायण।

राम हौं क्या जाना क्या भावै ॥ मन प्यास बहुत दरशावै ॥ सोई ज्ञानी सोई जन तेरा जिस ऊपर रुचि आवै ॥ कृपा करो जिस पुरुष विधाते सो सदा सदा तुध ध्यावै ॥ कवन योग कौन ज्ञान ध्यान कवन गुनी रीझावै ॥ सोई जन सोई निज भगता जिस ऊपर रँग लावै ॥ सोई मति सोई बुद्धि स्यानप जित निमिष न प्रभु बिसरावै ॥ संत संग लग इह सुख पायो हरिगुन सदही गावै ॥ देख्यो अचरज महामंगल रूप कछु आन नहिं दृष्टावै ॥ कहु नानक मोरचा गुरु लाह्यो तहिं गरभ योनि कहिं आवै ॥ १८० ॥

राग नट।

मेरे सर्वस नाम निधान ॥ कर किरपा साधू संग मिल्यो सतगुरु दीनो दान ॥ सुखदाता दुख भंजन हारा गाउँ कीर्तन पूरण ज्ञान ॥ काम क्रोध लोभ खंड कीने बिनश्यो मूढ़ अभिमान॥ क्या गुण तेरे आँख वखाणां प्रभु अंतरयामी जान ॥ चरण कमल शरण सुखसागर नानक सद कुर्वान॥ १८१ ॥

राग माली गौडा।

धन्य धन्य राम वेणु वाजे ॥ मधुर मधुर धुन अनहद गाजे ॥ धन धन मेघा रोमावली ॥ धन धन कृष्ण ओढ़े कांबली ॥ धन धन तू माता देवकी ॥ जिहिं गृह रमैया कमलापती ॥ धन धन वन खंड वृंदावना ॥ जहिं खेलै श्रीनारायना ॥ वेणु बजावै गोधन चारे ॥ नामे का स्वामी आनंद करे ॥ १८२ ॥

मेरो बाप माधो तू धन केशो साँवलियो वीठुलायले ॥ कर धरे चक्र वैकुंठ ते आये गज हस्तीके प्राण उधारियले ॥ दुश्शासनकी सभा द्रौपदी अंबरलेत उबारियले ॥ गौतम नारि अहल्यातारी पावन केतक तारियले ॥ ऐसा अधम अजाति नामदेव तव शंरणागति आइयले ॥ १८३ ॥

राग मारू ।

डरपै धरती अकाश नक्षत्रा शिर ऊपर अमर करारा ॥ पौण पाणी बैसंदर डरपै डरपै इंद्र विचारा ॥ एका निरभय बात सुनी ॥ सो सुखीया सो सदा सुहेला जो गुरु मिल गाय गुनी ॥ देह धार अर देवा डरपहिं सिद्ध साधक डर मोया ॥ लख चौरासी मर मर जन्में फिर फिर योनी जोया ॥ राजस सात्विक तामस डरपहिं केते रूप उपाया ॥ छल बपुरी इह कमला डरपै अति डरपै धर्मराया ॥ सकल समग्री डरहिं व्यापी बिन डर करनेहारा ॥ कहु नानक भक्तन का संगी भक्त सोहैं दरबारा ॥ १८४ ॥

पांच वर्ष को अनाथ ध्रुरू बालक हरि सुमिरत अमर अटा रे ॥ पुत्र हेत नारायण कह्यो यम किंकर मार विदारे ॥ मेरे ठाकुर केते अगनित उधारे ॥ मोहिं दीन अलपमति निर्गुण परचो शरण द्वारे ॥ वालमीक सुपचारो तरचो बधिक तरे बिचारे ॥ एक निमिष मन माहिं अराध्यो गजपति पार उतारे ॥ कीनी रक्षा भगत प्रहलादहिं हरनाकुश नखहिं विदारे ॥ विदुर दासीसुत भयो पुनीता सकलै कुल उज्यारे ॥ कवन अपराध बतावों अपने मिथ्या मोह मग्ना रे ॥ आयो साम नानक ओट हरिकी लीजै भुजा पसारे ॥ १८५ ॥

हरिको नाम सदा सुखदाई ॥ जाको सिमर अजामिल उधरचों गनिकाहू गति पाई ॥ पंचालीको राजसभामें रामनाम सुध आई ॥

ताको दूख हरयो करुणामय अपनी पैज बजाई ॥ जिहि नर यश किरपा निधि गायो ताको भयो सहाई ॥ कहु नानक में यही भरोसे गही आन शरणाई ॥ १८६ ॥

अब मैं कहा करों री माई ॥ सकल जन्म विषयन सों खोयो सिमरयो नाहिं कन्हाई ॥ काल फाँस जब गरमें मेली तिहिं सुध सब बिसराई ॥ रामनाम बिन या संकटमें को अब होत सहाई ॥ जो संपति अपनी कर मानी छिनमें भई पराई ॥ कहु नानक यह सोच रही मन हरियश कबहुँ न गाई ॥ १८७ ॥

माई मैं मनको मान न त्याग्यो ॥ माया के मद जन्म सिरायो राम भजन नहिं लाग्यो ॥ यम को दंड परयो शिर ऊपर तब सोवत तें जाग्यो ॥ कहा होत अबके पछिताये छूटत नाहिन भाग्यो ॥ यह चिंता उपजी घटमें जब गुरु चरणन अनुराग्यो ॥ सुफल जन्म नानक तब हूआ जो प्रभु यशमें पाग्यो ॥ १८८ ॥

अच्युत पारब्रह्म परमेश्वर अंतरयामी ॥ मधुसूदन दामोदर स्वामी ॥ हृषीकेश गोवर्धन धारी मुरलीमनोहर हारिरंगा ॥ मोहन माधव कृष्ण मुरारे ॥ जगदीश्वर हरिजी असुर सँहारे ॥ जगजीवन अविनाशी ठाकुर घट घट वासी हैं संगा ॥ धरणीधर ईश नृसिंह नारायण ॥ दाढ़ा अग्रे पृथिवी धरायण ॥ बावन रूपकी यातुध करते सहबी सेती है चंगा ॥ श्रीरामचन्द्र जिस रूप न देख्या ॥ बनमाली चक्रपाणि दर्श अनूप्या ॥ सहस नेत्र मूरत है सहंसा इक दाता सबहैं मंगा ॥ भगत बच्छल अनाथहिनाथे ॥ गोपीनाथ सकल हैं साथे ॥ बासुदेव निरंजन दाते वर्णनसाको गुण अंगा ॥ मुकुंद मनोहर लक्ष्मीनारायण ॥ द्रौपदी लज्जा निवार उधारण ॥ कमलाकांत करें कौतूहल अनँद विनोदी निहसंगा ॥ अमोघ दर्शन अजूनी संभो ॥ अकाल मूरत जिस कदे नाहीं खो अविनाशी

अविगत अगोचर सब कछु तुझही है लग्ग ॥ श्रीरंग नकुठक वासी ॥ मच्छ कच्छ कूर्म आज्ञा औतरासी ॥ केशव चरित करे निराले कीता लोडे सो होयगा ॥ निरहारी निरवैर समाया ॥ धार खेल चतुर्भुज कहाया ॥ सांवले सुन्दर रूप बनावहिं बेणु सुनत सब मोहेगा ॥ वनमाला विभूषण कमल नयन ॥ सुन्दर कुंडल मुकुट बैन ॥ शंख चक्र गदा है धारी महासारथी सत्संगा ॥ पीत पीतांबर त्रिभुवन धनी ॥ जगन्नाथ गोपाल मुख भणी ॥ शारंगधर भगवान बीठुला मैं गणत न आवे सरबंगा ॥ निहकंटक निहकेवल कहिये धनंजय जल थल है महिये ॥ मिरतलोक ध्याल समीपत स्थिर थान जिस है अभंगा ॥ पतितपावन दुख भय भंजन ॥ अहंकार निवारण है भव खंडन ॥ भगति तोपत दीन कृपाला गुणे न कितही है भग्गा ॥ निरंकार अछल अडोलो जोतिसरूपी सब जग मोलो ॥ सो मिलै जिस आप मिलाये आपहु कोय न पावेगा ॥ आपे गोपी आपे कान्हा ॥ आपे गऊ चरावे बाना ॥ आपि उपावहिं आपि खपावहि तुध लेप नहीं इक तिल रंगा ॥ एक जीह गुण कवन बखानै ॥ सहस फणी शेषे अन्त न जानै ॥ नूतन नाम जपै दिनराती इक गुण नाहीं प्रभु कहसंगा ॥ ओठ गही जग तपित शरनाया ॥ भय भ्यानक यमदूत दुस्तर है माया ॥ होहु कृपाल इच्छा कर राखो साधु सन्तनके संग संगा ॥ दृष्टिमान है सकल मिथेना ॥ इक मांगो दान गोविन्द सन्त रेना ॥ मस्तक लाय परमदप पावों जिस प्राप्त सो पावेगा ॥ जिनको कृपा करी सुखदाते ॥ तिन साधू चरण लै हिरदे पराते ॥ सकल नाम निधान तिन पाया अनहद शब्द मन वाजंगा ॥ कृत्तम नाम कथे तेरे जिहवा ॥ सत्त नाम तेरा परा पूर्वला ॥ कह नानक भगत पराशननाई देहु दर्श मन रंग लगाई ॥ १८९ ॥

जिन गढ़ कोट किये कंचनके छोड गया सो रावन ॥ काहे कीजत है मनभावन ॥ जब यम आय केशतें पकरै तहि हरिको नाम छुडावन ॥ काल अकाल खसमका कीना इह प्रपंच बधावन ॥ कह कबीर ते अंते मुक्त जिन हिरदै राम रसायन ॥ १९० ॥

राजन कौन तुम्हारे आवै ॥ ऐसो भाव विदुर को देख्यो वह गरीब मोहि भावै ॥ हस्तीदेख भर्मते भूला श्रीभगवान न जान्या ॥ तुमरो दूध विदुरको पानी अमृत कर मैं मान्या ॥ खीर समान साग मैं पाया गुण गावत रैनि विहानी ॥ कबीरको ठाकुर आनँद विनोदी जाति न काहूकी मानी ॥ १९१ ॥

चार मुक्ति चारों सिद्धि मिलके दुलह प्रभुकी शरण परयो ॥ मुक्ति भयो चौहूं युग जान्यो यश कीरति माथे छत्र धरयो ॥ राजा राम जपत को को न तरयो ॥ गुरु उपदेश साधुकी संगति भगत भगत ताको नाम परयो ॥ शंख चक्र माला तिलक विराजत देख प्रताप यम डरयो ॥ निरभयभये राम बल गर्जत जन्म मरन संताप हरयो ॥ अम्बरीषको दियो अभयपद राज विभीषण अधिक करयो ॥ नौ निधि ठाकुर दई सुदामहि धरू अटल अजहूं न टरयो ॥ भगत हेत मारयो हरनाकुश नृसिंहरूप होय देह धरयो ॥ नाभा कहे भगतबश केशव अजहूं बलिके द्वार खरो ॥ १९२ ॥

दीन विसारयो दिवाने तैने दीन विसारयो ॥ पेट भरयो पशुआ ज्यों सोयो मानुप जन्म है हारयो ॥ साधु संगत कबहूं नहिं कीनी रच्यो धंधे झूठ ॥ श्वान शूकर वायस जिवं भटकत चाल्यो ऊठ ॥ आपनको दीर्घ कर मानै औरन को लघुमात ॥ मनसा वाचा कर्मनामें देखे दोजक जात ॥ कामी क्रोधी चातुरी बाजीगर बेकाम ॥ निंदा करते जन्म सिरानो कबहुं न सिमरयो राम ॥ कह कबीर चेतै नहीं मूरख मुगध गवाँर ॥ रामनाम जान्यो नहीं कैसे उतरसो पार ॥ १९२ ॥

ऐसी लाल तुझ बिन कौन करै॥ गरीब निवाज गुसैंयां मेरे माथे छत्र धरै॥ जाकी छोतैं जगत कों लागे तापर तुही ढरै॥ नीचहि ऊंच करै मेरा गोविंद काहू ते न डरै॥ नामदेव कबीर त्रिलोचन सधना सैन तरै॥ कह रामदास सुनहु रे संतहु हरिजीते सभी सरै॥ १९४॥

सुखसागर सुरतरु चिंतामणि कामधेनु वश जाके रे॥ चारि पदारथ अष्ट महासिधि नवनिधि करतल ताके रे॥ हरि हरि हरि न जपहि रसना॥ अवर सब छाँड वचन रचना॥ नानाख्यान पुराण वेद विधि चौंतीस अक्षर माहीं॥ व्यास विचार कह्यो परमारथ रामनाम सर नाहीं॥ सहज समाधि उपाधि रहित ह्वै बड़े भाग लव लागी॥ कह रामदास उदास दास मति जन्म मरण भयभागी॥ १९५॥

राग केदारा।

हरि बिन जन्म अकारथ जात॥ तज गोपाल आन रँग रात्त मिथ्या पहिरत खात॥ धन यौवन संपै सुख भुगवै संग न निबहत मात॥ मृगतृष्णा देख रच्यो बावर द्रुम छाया रँग रात॥ मान मोह महामद मोह्यो काम क्रोधके खात॥ कर गहि लेहु दास नानक को प्रभुजी होय सहात॥ १९६॥

बिसरत नाहिं मनते हरी॥ अब इह प्रीत महाप्रबल भई आन विषय जरी॥ बूँद कहा त्याग चातक मीन रहत न घरी॥ गुण गोपाल उचारत रसना टेंव एह परी॥ महानाद कुरंग मोह्यो वेध तीक्षण सरी॥ प्रभु चरनकमल रसाल नानक गांठ बांध परी॥ १९७॥

अस्तुति निंदा दोऊ विवर्जित तजो मान अभिमाना॥ लोहा कंचन सम कर जानै ते मूरत भगवाना॥ तेरा जन एक आधकोई॥

काम क्रोध लोभ मोह विवर्जित हरिपद चीन्है सोई ॥ रजगुण तमगुण सतगुण कहिये यह तेरी सभ माया ॥ चौथेपदको जो नर चीन्है तिनहीं परमपद पाया ॥ तीर्थ व्रत नेम शुचि संयम सदा रहै निहकामा ॥ तृष्णा अरु माया भ्रम चूका चितवत आतम रामा ॥ जिहिं मंदिर दीपक प्रकास्या अंधकार तहिं नासा ॥ निरभय पूर रहे भ्रम भागा कह कबीर जन दासा ॥ १९८ ॥

किनहीं वनज्या कांसी तांबा किनहीं लौंग सुपारी ॥ संतन वनज्या नाम गोविंद का ऐसी खेप हमारी ॥ हरिके नामके व्योपारी ॥ हीरा हाथ चढ्या निरमोलक छूट गई संसारी ॥ साँचे लाये तौ सच लोगे साँचके व्योहारी ॥ साँची वस्तुके भार चलाये पहुँचे जाय भँडारी ॥ आपहिं रत्न जवाहर मानक आपेहिं पासारी ॥ आपे दह दिस आप चलावे निहचल है व्यापारी ॥ मन कर बैल सुरत कर पैडा ज्ञान गोन भरडारी ॥ कहत कबीर सुनो रे संतहु निवही खेप हमारी ॥ १९९ ॥

काम क्रोध तृष्णाके लीने गति नहिं एकै जानी ॥ फूटी आंखें कछू न सूझै बूड मुये बिन पानी ॥ चलत कत टेढे टेढे टेढे ॥ अस्थित चर्म विष्टाके मूंदे दुर्गंधहिके बेढे ॥ राम न जपहु कवन भ्रम भूले तुमते काल न दूरे ॥ अनिक यतन कर इह तन राखहु रहै अवस्था पूरे ॥ आपन कीया कछू न होवै क्या को करै परानी ॥ जां तिस भावे सतगुरु भेंटै एको नाम बखानी ॥ बलुआके घरुआ में बसते फुलवत देह अयाने ॥ कहु कबीर जिहिं राम न चेत्यो बूडे बहुत सयाने ॥ २०० ॥

टेढी पाग टेढे चले लागे बीरे खान ॥ भाव भक्ति सों काज न कछुहै मेरो काम दिवान ॥ राम बिसारयोहै अभिमानी ॥ कनक कामिनी महासुंदरी पेख पेख सचु मान ॥ लालच झूठ

विकार महामद इह विधि औध विहानी ॥ कह कबीर अंतकी त्रिरियां लागो काल निदान ॥ २०१ ॥

चार दिन अपनी नौबत चले बजाय ॥ इतनाकु खटीया गढीया मटीया संग न कछू लैजाय ॥ देहुरी बैठी मिहरी रोवे द्वारे लौं सँग माय ॥ मरघट लग सब लोक कुटुंब मिल हंस इकेला जाय ॥ वह सुत वह वित वह पुर पाटन बहुरि न देखे आय ॥ कहत कबीर राम क्यों न सिमरो जन्म अकारथ जाय२०२

षट् कर्म कुल संयुक्त है हरि भगति हिरदय नाहिं ॥ चरणारविंद न कथा भावे श्वपच तुल्य समान ॥ रे चित चेत चेतअ चेत काहे न वालमीकहिं देख ॥ किस जातिते किहिं पदहिं अमरयो राम भगति विशेख ॥ श्वान शत्रु अजात सभते कृष्ण लावे हेत ॥ लोक बपुरा क्या सराहे तीन लोक परवेश ॥ अजामल्ल पिंगुला लुभत कुंजर गये हरिके पास ॥ ऐसे दुर्मति निस्तरे तूं क्यों न तरे रामदास ॥ २०३ ॥

राग भैरव ।

मेरी पटीयां लिखहु हरि गोविंद गोपाला ॥ दूजे भाय फाथे यम जाला ॥ सतगुरु करे मेरी प्रतिपाला ॥ हरि सुखदाता मेरे नाला ॥ गुरु उपदेश प्रहलाद हरि उचरे ॥ सासना ते बालक गमन करे ॥ माता उपदेशै प्रहलाद प्यारे ॥ पुत्र राम नाम छोडो जीय लेहु उवारे ॥ प्रहलाद कहे सुनो मेरी माय ॥ राम नाम न छोडो गुरु दीया बुझाय ॥ पंडामरका सभ जाय पुकारे ॥ प्रहलाद आप विगड्या सभ चाटड़े विगाडे ॥ दुष्ट सभामें मंत्र पकाया ॥ प्रहलादका राखा होय रघुराया ॥ हाथ खड़्ग कर धाइया अति अहंकार ॥ हरि तेरा कहां तुझ लये उवार ॥ छिनमें भ्यानक रूप निकस्या थंभ उपार ॥ हरनाकुश नखीं

विदारचा प्रहलाद लीया उवार ॥ संतजनांके हरिजी कारज सवाँरे ॥ प्रहलाद जनके इकीस कुल उधारे ॥ गुरुके शब्द हौं मैं विष मारे ॥ नानक राम नाम संत निस्तारे ॥ २०४ ॥

तूं मेरा पिता तूंहीं मेरी माता तूं मेरे जीव प्राण सुखदाता ॥ तूं मेरा ठाकुर हौं दास तेरा ॥ तुझ विन अवर नहीं कोइ मेरा ॥ कर किरपा करो प्रभु दात ॥ तुमरी अस्तुति करों दिनरात ॥ हम तेरे जंत तूं वजावनहारा ॥ हम तेरे भिखारी दान देहु दातारा ॥ तवप्रसाद रंगरस माणे ॥ घटघट अंतर तुमहिं समाणे ॥ तुमरी कृपाते जपिये नाउँ ॥ साधु संग तुमरे गुणगाउँ ॥ तुमरी दयाते होय दरद विनास ॥ तुमरी मायाते कमल विकास ॥ हौं वलिहार जाउँ गुरुदेव ॥ सफल दर्शन जाकी निर्मल सेव ॥ दया करो ठाकुर प्रभु मेरे ॥ गुण गावे नानक नित तेरे ॥ २०५ ॥

प्रथमें छोडी पराई निंदा ॥ उतर गई सभ मनकी चिंदा ॥ लोभ मोह सभ कीनो दूर ॥ परम वैशनो प्रभु पेख हजूर ॥ ऐसो त्यागी विरला कोय ॥ हरि हरि नाम जपे जन सोय ॥ अहंबुद्धि का छोडा संग ॥ काम क्रोध का उतरा रंग ॥ नाम ध्याये हरि हरिहरे ॥ साधु जनांके संग निस्तरे ॥ वरी मीत होये संमान ॥ सर्व महिं पूर्ण भगवान ॥ प्रभुकी आज्ञा मान सुख पाया ॥ गुरु पूरे हरिनाम दृढाया ॥ कर किरपा जिस राखे आप ॥ सोई भगत जपे नाम जाप ॥ मन प्रकाश गुरुते मति लई ॥ कहु नानक तांकी पूरी पई ॥ २०६ ॥

सुख नाहीं वहुते धन खाटे ॥ सुख नाहीं पेखे निर्त नाटे ॥ सुख नाहीं वहु देश कमाये ॥ सर्व सुखां हरि हरि गुण गाये ॥ सुख सहज आनंद लहो ॥ साधु संगत पाइये वड़भागी ॥ गुरु-मुख हरिहरि नाम कहो ॥ वंधन मात पिता सुत वनिता ॥ वंधन

कर्म धर्म हौं कर्ता ॥ बंधन काटनहार मन वसै ॥ तौ सुख पावै निज घर वसै ॥ सव याचक प्रभु देवनहार ॥ गुणं निधान वेअंत अपार ॥ जिसनूं कर्म करे प्रभु अपना ॥ हरि हरि नाम तिन्हीं जन अपना ॥ गुरु अपने आगे अरदास ॥ कर किरपा पुरुष गुण तास ॥ कहु नानक तुमरी शरणाई ॥ ज्यों भावै त्यों रखहु गुसाई ॥ २०७ ॥

लाज मरै जो नाम न लेवै ॥ नाम विहून सुखी क्यों सोवै । हरि सिमरन छाँड परमगति चाहै ॥ मूल विना शाख कत आहै ॥ गुरु गोविंद मेरे मन ध्याय ॥ जन्म जन्म की मैल उतारै ॥ बंधन काट हरि संग मिलाय ॥ तीर्थ न्हाय कहा शुच सैल ॥ मनको व्यापै हौं मैं मैल ॥ कोट कर्म बंधन का मूल ॥ हरिके भजन बिन विरथा पूल ॥ विन खाये बूझै नहिं भूँख ॥ रोग जाय तो उतरै दूख ॥ काम क्रोध लोभ मोह व्याप्या ॥ जिन प्रभु कीनों सो प्रभु नहीं जाप्या ॥ धन धन साधु धन्य हरि नाउँ ॥ आठ पहर कीर्तन गुण गाउँ ॥ धन हरि भगति धन्य करनेहार ॥ शरण नानक प्रभु पुरुप अपार ॥ २०८ ॥

नाम लेत कछु विघ्न न लागे ॥ नाम सुनत यम दूरहुं भागे ॥ नामलेत सभ दूखहिंनास ॥ नामजपत हरिचरण निवास ॥ निरविघ्न भगति भज हरि हरि नाउँ ॥ रसिक रसिक हरिके गुण गाउँ ॥ हरि सिमिरत कछु चाख न जोहै ॥ हरि सिमरत देत देउ न पोहै ॥ हरि सिमरत मोह मान न वधै ॥ हरि सिमरत गर्भ योनि न रुधै ॥ हरि सिमरन की सगली वेला ॥ हरि सिमरन वहु माहिं इकेला ॥ जाति अजाति जपै जन कोय ॥ जो जापै तिसकी गति होय ॥ हरि का नाम जपीयै साधु संग ॥ हरि के नाम का पूरन रंग ॥ नानकको प्रभु किरपा धार॥श्वास श्वास हरि देहु चितार॥२०९॥

तिन करते इक चरित उपाया ॥ अनहदबानी शब्द सुनाया ॥ मनमुख भूले गुरुमुख बुझाया ॥ कारन कर्ता करदा आया ॥ गुरु का शब्द मेरे अंतरध्यान ॥ हौं कबहुँ न छोड़ो हरि का नाम ॥ पिता प्रहलाद पढ़न पठाया ॥ लै पाटी पांधे के आया ॥नाम बिना नहिं पढो अचार ॥ मेरी पटीया लिख देहु गोविंद मुरार ॥ पुत्र प्रहलाद सों कह्यो माय ॥ प्रविर्ते न पढ़हु रही समझाय ॥ निरभय दाता हरिजी मेरे नाल ॥ जेःहरि छोड़ो तो कुल लागै गाल ॥ प्रहलाद सभ वाटड़े बिगारे ॥ हमरा कहा न सुनै आपणे कारज सवाँरे॥ सभ नगरी में भगति दृढाई॥ दुष्ट सभा का कछु न बसाई ॥ संडे मरके कीनी पुकार ॥ सभी दैत्य रहे झखमार ॥ भगत जना की पति राखै सोई ॥ कीते के कहिये क्या होई ॥ किरत संयोगी देत राज चलाया ॥ हरि न बूझे बिन आप भुलाया ॥ पुत्र प्रहलाद सों वाद रचाया ॥ अंधा न बूझे काल नेड़े आया ॥ प्रहलाद कोठे विच राख्या बार दीया ताला ॥ निरभय बालक मूल न डरई मेरे अंतर गुरु गोपाला ॥ कीता होवे सरीकी करे अणहोंदा नाउँ धराया ॥ जो धुर लिखया सो आय पहुँचा जनसों वाद रचाया ॥ पिता प्रहलादसों गुरुज उठाई ॥ कहां तुम्हारा जगदीश गुसाई ॥ जगजीवन दाता अंत सखाई ॥ जहिं देखां तहिं रह्या समाई ॥ थंभ उपाड़ हरि आप दिखाया ॥ अहंकारी दैत मार पचाया ॥ भगतां मन आनंद बजी बधाई ॥ अपने सेवक को दे वडिआई ॥ जंमण मरना मोह उपाया ॥ आवण जाणा करते लिख पाया ॥ प्रहलादके कारज हरि आप दिखाया ॥ भगतां का बोल आगे आया ॥ देव कुली लक्ष्मी को करहिं जैकार ॥ माता नरसिंह का रूप निवार॥ लक्ष्मी भय करे नसाके जाय ॥ प्रहलाद जन चरणों लागा आय॥ सतगुरु नाम निधान दृढ़ाया ॥ राज माल झूठी सभ माया ॥

लोभी नर रहे लपटाय ॥ हरि के नाम बिन दरगह मिले सजाय॥ कहे नानक सब को करे कराया ॥ सो प्रमाण जिन्हीं हरिसों चित लाया ॥ भगतांका अंगीकार करदा आया ॥ करते आपणा रूप दिखाया ॥ २१० ॥

इह धन मेरे हरि को नाउँ ॥ गांठ न बाँधों बेंच न खाउँ ॥ नाउँ मेरे खेती नाउँ मेरे बारी॥ भगति करों जन शरण तुम्हारी ॥ नाउँ मेरे माया नाउँ मेरे पूँजी ॥ तुमहिं छोड जानों नाहिं दूजी ॥ नाउँ मेरे बांधव नाउँ मेरे भाई॥ नाउँ मेरे संग अन्त होय सखाई ॥ माया में जिस रखे उदास ॥ कह कबीरहौं ताको दास ॥ २११ ॥

नांगे आवन नांगे जाना ॥ कोय न रहिहै राजा राना ॥ रामराजा नौनिध मेरे ॥ संपै हेत कलत धन तेरे ॥ आवत संग न जात सँगाती॥ कहा भयो दर बांधे हाथी ॥ लंका गढ़ सोने का भया ॥ मूरख रावण क्या ले गया ॥ कह कबीर कछु गुण वीचार ॥ चले जुआरी दोय हथझार ॥ २१२ ॥

गंगा के संग सरिता बिगरी ॥ सो सरिता गंगा होय निबरी ॥ बिगरचो कबीरा राम दुहाई ॥ साँच भयो अनकतहिं नजाई ॥ चंदनके सँग तरुवर बिगरचो ॥ सो तरुवर चंदन होय निवरचो ॥ पारस के सँग तांबा बिगरचो ॥ सो तांबा कंचन होय निवरचो ॥ संतन संग कबीरा बिगरचो ॥ कबीर रामहिं होय निवरचो ॥ २१३ ॥

माथे तिलक हथ माला बाना ॥ लोगन राम खिलौना जाना ॥ जो हौं बौरा तौ राम तोरा ॥ लोग मर्म कहि जानैं मोरा ॥ तोरों न पाति पूजों न देवा ॥ राम भगति बिन निहफल सेवा ॥ सतगुरु पूजों सदा सदा मनावों ॥ ऐसी सेव दरगाहि सुख पावों ॥ लोग कहैं कबीर बौराना ॥ कबीर का मर्म राम पहिचाना ॥ २१४ ॥

निरधन आदर कोई न देय ॥ लाख यतन करै ओह चित न धरेय ॥ जो निरधन सरधन के जाय ॥ आगे बैठा पीठ फिराय ॥ जो सरधन निरधन के जाय ॥ दीया आदर लिया बुलाय ॥ निरधन सरधन दोनों भाई ॥ प्रभुकी कला न मेटी जाई ॥ कह कबीर निरधनहै सोई ॥ जाके हिरदय नाम न होई ॥ २१५ ॥

गुरु सेवा ते भगति कमाई॥तब इह मानस देही पाई ॥ इस देही को सिमरे देव॥सो देही भज हरि की सेव॥ भजहु गोविंद भूल मत जाहु॥ मानस जन्म का एही लाहु ॥ जबलग जरा रोग नहिं आया ॥ जबलग काल ग्रसी नहिं काया ॥ जबलग विकल भई नहिं बानी ॥ भजले रे मन सारँगपानी ॥ अबना भजहिं भजहिं कब भाई ॥ आवै अन्त न भज्या जाई ॥ जो कछु करहि सोई अब सार ॥ फिर पछताहु न पावहु पार ॥ सो सेवक जो लायो सेव॥ तिनहीं पाये निरंजन देव ॥ गुरु मिल ताके खुले कपाट ॥ बहुरि न आवे योनी बाट ॥ इही तेरा औसर इह तेरी बार ॥ घटभीतर तूं देख विचार ॥ कहत कबीर जीत के हार ॥ बहुविध कह्यो पुकार पुकार ॥ २१६ ॥

सभ कोइ चलन कहत वहां ॥ न जानो बैकुंठ है कहां ॥ आप आपका मर्म न जाना ॥ बातनहीं बैकुंठ बखाना ॥ जबलग मन बैकुंठ की आस ॥ तबलग नाहीं चरण निवास ॥ खाई कोट न परल पगारा ॥ ना जानो बैकुंठ दुआरा ॥ कह कबीर अब कहिये काहि ॥साधु संगत बैकुंठहि आहि॥ २१७॥

क्यों लीजे गढबंका भाई ॥ दोवर कोट अर तेवर खाई ॥ पांच पचीस मोह मद मत्सर आड़ी परबल माया ॥ जन गरीब को जोर न पहुँचे कहा करो रघुराया ॥ काम किवाँरी दुख-सुख दरवानी पाप पुण्य दरवाजा ॥ क्रोध प्रधान महाबड दंद

तहिं मन मवासी राजा ॥ स्वाद सनाह टोप ममताको कुबुद्धि कमान चढाई ॥ तृष्णा तीर रहे घट भीतर यो गढ लियो न जाई ॥ प्रेम पलीता सुरत हवाई गोला ज्ञान चलाया ॥ ब्रह्म अग्नि सहजे परजाली एकहि चोट सिझाया ॥ सत संतोष ले लरने लागा तोरे दोय दरवाजा ॥ साधु संगत अरु गुरुकी किरपा ते पकरचो गढ को राजा ॥ भगवत भीरि शक्ति सिमरनकी कटी काल भय फाँसी ॥ दास कबीर चढचो गढ ऊपर राज लियो अविनासी ॥ २१८ ॥

गंग गुसाइँन गहर गंभीर ॥ जंजीर बाँध कर खरे कबीर ॥ मन न डिगै तन काहेको डराय ॥ चरण कमल चित रह्यो समाय ॥ गङ्गाकी लहर मेरी टुटी जंजीर ॥ मृगछाला पर बैठे कबीर ॥ कह कबीर कोउ सङ्ग न साथ ॥ जल थल राखतहै रघुनाथ ॥ २१९ ॥

कोटिसूर जाके परकास ॥ कोटि महादेव अरुक विलास ॥ दुरगा कोटि जाके मर्दन करै ॥ ब्रह्मा कोटि वेद उच्चरै ॥ जो जांचो तो केवल राम ॥ आन देव सो नाहीं काम ॥ कोटि चन्द्रमें करहिं चराक ॥ सुर तैतीसों जेवहिं पाक ॥ नव ग्रह कोटि ठाढे दर्बार ॥ धर्म कोटि जाके प्रतिहार ॥ पवन कोटि चौवारे फिरहि॥ बासक कोटि सेज बिस्तरहि ॥ समुद्र कोटि जाके पनिहार ॥ रोमांवलि कोटि अठारहि भार ॥ कोटि कुबेर भरहिं भंडार ॥ कोटिक लक्ष्मी करहि शृंगार ॥ कोटिक पाप पुण्य वहु हरहिं ॥ इंद्र कोटि जाके सेवा करहिं ॥ छपन कोटि जाके प्रतिहार ॥ नगरी नगरी खियत अपार ॥ लट छूटी वरतै विकराल ॥ कोटि कला खेलै गोपाल ॥ कोटि यक्ष जाके दर्बार ॥ गंधर्व कोटि करहिं जैकार ॥ विद्या कोटि सभी गुण कहै ॥ तऊ पारब्रह्म क

अंत न लहे ॥ बावन कोटि जाके रोमावली ॥ रावणसेना जहि ते छली ॥ सहसकोटि वहु कहत पुरान ॥ दुर्योधनका मथ्या मान ॥ कंदर्प कोटि जाके लवे न धरहिं ॥ अन्तर अन्तर मनसा हरहिं ॥ कहकवीर सुन सारँग पान॥देहअभयपद मांगोदान॥२२०॥

रे जिहूवा करों शतखंड ॥ नाम न उचरस श्रीगोविंद ॥ रँगीली जिहूवा हरि के नायँ ॥ सुरँग रँगीले हरि हरि ध्याय ॥ मिथ्या जिहूवा अवरे काम ॥ निर्वाण पद इक हरि का नाम ॥ असंख्य कोटि अन पूजाकरी ॥ एक न पूजस नामहि हरी ॥ प्रणवे नामदेउ इह कारण ॥ अनंत रूप तेरे नारायण ॥ २२१ ॥

परधन परदारा परहरी ॥ ताके निकट वसहि नरहरी ॥ जो न भजंते नारायना ॥ तिनका में न करों दर्शना ॥ जिनके भीतर है अन्तरा ॥ जैसे पशु तैसे वह नरा॥प्रणमत नामदेउ ना कहि विना॥ ना सोहै वत्ती सुलक्षना ॥ २२२ ॥

दूध कटोरी गडवे पानी ॥ कपिल गाय नामे दुह आनी ॥ दूध पियो गोविंदेराय ॥ दूधपियो मेरो मन पतिआय ॥ नाहीं तो घरको वाप रिसाय ॥ सोयन कटोरी अमृत भरी ॥ ले नाम हरि आगे धरी ॥ एक भगत मेरे हिरदे वसे ॥ नामे देख नारायण हँसे ॥ दूध प्याय भगत घर गया ॥ नामे हरि का दर्शन भया ॥२२३॥

में वहुरी मेरा रामभ्रतार ॥ रचरच ताको करो शृँगार ॥ भले निंदो भले निंदो भले निंदो लोग ॥ तनमन राम प्यारे योग ॥ वाद विवाद काहू सों न कीजे ॥ रसना राम रसायन पीजे ॥ अव जिय जान ऐसी वन आई ॥ मिलों गुपाल निशान वजाई ॥ अस्तुति निंदा कर नर कोई ॥ नामे श्रीरंग भेटल सोई ॥ २२४॥

कवहूं खीर खांड घिउ न भावे ॥ कवहूं घर घर टूक मँगावे ॥ कवहूं कूरन चने विनावे ॥ ज्यों राम राखे त्यों रहिये रे भाई ॥

हरि की महिमा कछु कथन नजाई ॥ कबहूं तुरे तुरंग नचावे ॥ कबहूं पांय पनहीं हूं नपावै ॥ कबहूं खाट सुपदी सुहावै ॥ कबहूं भूमिपे आर नपावे ॥ भनत नामदेव इक नाम निस्तारे ॥ जिहिं गुर मिले तिहिं पार उतारे ॥ २२५ ॥

हँसत खेलत तेरे देहुरे आया ॥ भगति करत नामा पकर उठाया ॥ हीनड़ी जाति मेरे यादव राया ॥ छीपे के जन्म काहेको आया ॥ ले कमलीं चल्यो पलटाय ॥ देहुरे पाछे बैठा जाय ॥ ज्यों ज्यों नामा हरिगुण उचरे ॥ भगत जनां को देहुरा फिरे ॥ २२६॥

घर की नारि त्यागे अंधा ॥ परनारी सों घाले धंधा ॥ जैसे सिंबल देख सुआ बिगसाना ॥ अंत की बार मूआ लपटाना ॥ पापी का घर अग्नी माहिं ॥ जलत रहै मिटवे कव नाहिं ॥ हरि की भगति न देखे जाय ॥ मारग छोड़ अमारग पाय ॥ मूलहु भूला आवै जाय ॥ अमृत डार लाद विष खाय ॥ ज्यों वेश्याके पडे अखारा ॥ कापर पहर करै शृंगारा ॥ पूरे ताल निहाले सास ॥ वाके गले यमका है फांस ॥ जाके मस्तक लिख्यो कर्मा ॥ सो भज परहै गुरु की शर्ना ॥ कहत नामदेउ इह बीचार ॥ इन विधि संतहु उतरो पार ॥ २२७ ॥

संडा मरका जाय पुकारे ॥ पढ़ै नहीं हमहीं पचहारे ॥ राम कहै करताल बजावे ॥ चटिया सभी बिगारे ॥ राम नाम जपवो करै हिरदय हारजी को सिमरन धरै ॥ वसुधा वश कीनी सभराज बिनती करै पटरानी ॥ पत प्रहलाद कह्यो नाह मानै तिनतो औरहि ठानी ॥ दुष्ट सभा मिलि मंत्र उपाया करसहि औध घनेरी॥ गिरि तर जल ज्वाला भय राख्यो राजा राम माया फेरी ॥ काढ खड्ग काल भय कोप्यो मोहिं वताय जो तोहि राखे ॥ पीत पीतांबर त्रिभुवन धनी थंभ माहिं हरि भाखे हरनाकुश जिन

अंत न लहे ॥ बावन कोटि जाके रोमावली ॥ रावणसेना जहि ते छली ॥ सहसकोटि बहु कहत पुरान ॥ दुर्योधनका मथ्या मान ॥ कंदर्प कोटि जाके लवै न धरहिं ॥ अन्तर अन्तर मनसा हरहिं ॥ कहकबीर सुन सारँग पान॥देहअभयपद मांगोदान॥२२०॥

रे जिहूबा करों शतखंड ॥ नाम न उचरस श्रीगोविंद ॥ रँगीली जिहूबा हरि के नायँ ॥ सुरँग रँगीले हरि हरि ध्याय ॥ मिथ्या जिहूबा अवरे काम ॥ निर्वाण पद इक हरि का नाम ॥ असंख्य कोटि अन पूजाकरी ॥ एक न पूजस नामहि हरी ॥ प्रणवै नामदेउ इह कारण ॥ अनंत रूप तेरे नारायण ॥ २२१ ॥

परधन परदारा परहरी ॥ ताके निकट बसहि नरहरी ॥ जो न भजंते नारायना ॥ तिनका मैं न करों दर्शना ॥ जिनके भीतर है अन्तरा ॥ जैसे पशु तैसे वह नरा॥प्रणमत नामदेउ ना कहि विना॥ ना सोहै बत्ती सुलक्षना ॥ २२२ ॥

दूध कटोरी गडवे पानी ॥ कपिल गाय नामे दुह आनी ॥ दूध पियो गोविंदेराय ॥ दूधपियो मेरो मन पतिआय ॥ नाहीं तो घरको बाप रिसाय ॥ सोयन कटोरी अमृत भरी ॥ ले नाम हरि आगे धरी ॥ एक भगत मेरे हिरदे वसे ॥ नामे देख नारायण हँसे ॥ दूध प्याय भगत घर गया ॥ नामे हरि का दर्शन भया ॥२२३॥

मैं बहुरी मेरा रामभ्रतार ॥ रचरच ताको करो शृँगार ॥ भले निंदो भले निंदो भले निंदो लोग ॥ तनमन राम प्यारे योग ॥ वाद विवाद काहू सों न कीजे ॥ रसना राम रसायन पीजे ॥ अब जिय जान ऐसी बन आई ॥ मिलों गुपाल निशान बजाई ॥ अस्तुति निंदा कर नर कोई ॥ नामे श्रीरंग भेटल सोई ॥ २२४ ॥

कबहूं खीर खांड घिउ न भावे ॥ कबहूं घर घर टूक मँगावे ॥ कबहूं कूरन चने बिनावे ॥ ज्यों राम राखे त्यों रहिये रे भाई ॥

हरि की महिमा कछु कथन नजाई ॥ कबहूं तुरे तुरंग नचावै ॥ कबहूं पांय पनहीं हूं नपावै ॥ कबहूं खाट सुपदी सुहावै ॥ कबहूं भूमिपै अग्र नपावै ॥ भनत नामदेव इक नाम निस्तारै ॥ जिहिं गुर मिलै तिहिं पार उतारै ॥ २२५ ॥

हँसत खेलत तेरे देहुरे आया ॥ भगति करत नामा पकर उठाया ॥ हीनड़ी जाति मेरे यादव राया ॥ छीपे के जन्म काहेको आया ॥ ले कमली चल्यो पलटाय ॥ देहुरे पाछे बैठा जाय ॥ ज्यों ज्यों नामा हरिगुण उचरै ॥ भगत जनां को देहुरा फिरै ॥ २२६ ॥

घर की नारि त्यागै अंधा ॥ परनारी सों घालै धंधा ॥ जैसे सिंबल देख सुआ बिगसाना ॥ अंत की बार मूआ लपटाना ॥ पापी का घर अग्नी माहिं ॥ जलत रहै मिटवै कब नाहिं ॥ हरि की भगति न देखे जाय ॥ मारग छोड़ अमारग पाय ॥ मूलहु भूला आवै जाय ॥ अमृत डार लाद विप खाय ॥ ज्यों वेश्याके पडै अखारा ॥ कापर पहर करै शृंगारा ॥ पूरे ताल निहाले सास ॥ वाके गले यमका है फांस ॥ जाके मस्तक लिख्यो कर्मा ॥ सो भज परहै गुरु की शर्नां ॥ कहत नामदेउ इह बीचार ॥ इन विधि संतहु उतरो पार ॥ २२७ ॥

संडा मरका जाय पुकारे ॥ पढै नहीं हमहीं पचहारे ॥ राम कहै करताल बजावै ॥ चटिया सभी बिगारे ॥ राम नाम जपवो करै हिरदय हरिजी को सिमरन धरै ॥ वसुधा वश कीनी सभराज बिनती करै पटरानी ॥ पत प्रहलाद कह्यो नाह मानै तिनतो औरहि ठानी ॥ दुष्ट सभा मिलि मंत्र उपाया करसहि औंध घनेरी॥ गिरि तर जल ज्वाला भय राख्यो राजा राम माया फेरी ॥ काढ खड्ग काल भय कोप्यो मोहिं वताय जो तोहि राखै ॥ पीत पीतांबर त्रिभुवन धनी थंभ माहिं हरि भाखै हरनाकुश जिन

नखहिं विदारयो सुर नर किये सनाथा ॥ कह नामदेउ हम नरहरि ध्यावहिं राम अभय पददाता ॥ २२८ ॥

सुलतान पूँछे सुन वे नामा ॥ देखों राम तुम्हारे कामा ॥ नामा सुलताने बांधला ॥ देखो तेरा हरि वीठुला ॥ बिसमल गऊ देहु जिवाय ॥ नातर गरदन मारों ठांय ॥ बादशाह ऐसी क्यों होय ॥ बिसमल किया न जीवै कोय ॥ मेरा कीया कछू न होय ॥ करिहै राम होयहै सोय ॥ बादशाह चढयो अहंकार ॥ गज हस्ती दीनों चमकार ॥ रुदन करै नामे की माय ॥ छोड राम क्यों न भजहि खुदाय ॥ ना हौं तेरा पूंगडा ना तूं मेरी माय ॥ पिंड पड़े तो हरिगुण गाय ॥ करे गजिंद शुंड की चोट ॥ नामा उबरै हरिकी ओट ॥ काजी मुल्ला करहि सलाम ॥ इन हिंदू मेरा मल्या मान ॥ बादशाह बीनती सुनेह ॥ नामेसरभर सोना लेह ॥ माल लेउँतो दोजक परों ॥ दीनछोड दुनिया को भरों ॥ पावों वेडी हाथों ताल ॥ नामा गावे गुण गोपाल ॥ गंग यमुन जो उलटी वहै ॥ तौ नावा हरि करता रहै ॥ सात घडी जव बीती सुनी ॥ अजंहू न आयो त्रिभुवन धनी ॥ पाखंतन बाज बजायला ॥ गरुड़ चढे गोविंद आयला ॥ अपने भगत पर की प्रतिपाल ॥ गरुड़ चढे आये गोपाल ॥ कहहि तो धरनि इकोड़ी करों ॥ कहहि तो लेकर ऊपर धरों ॥ कहहि तो मूई गऊ देहुं जिवाय ॥ सब कोई देखे पतियाय ॥ नामा प्रणवे सेलम सेल ॥ गऊ दुहाई वछरा मेल ॥ दूध हि जब मटुकी भरी ॥ ले बादशाहके आगे धरी ॥ बादशाह महलमें जाय ॥ औवटकी बट लागी आय ॥ काजी मुल्लाँ विनती फरमाय ॥ बखशी हिंदू मैं तेरी गाय ॥ नामा कहे सुनो बादशाह ॥ इह कछु पतीया मुझे दिखाय ॥ इस पतीयेका इहै प्रमान ॥ साँच सील चालहु सुलतान ॥ नामदेव सब रह्या समाय ॥ मिल हिंदू सभ

नामे पहि जाहि ॥ जो अबकी बार न जीवै गाय ॥ तो नामदेवका पतीया जाय ॥ नामे की कीरति रही संसार ॥ भगत जनां लै उधरचा पार ॥ सकल कलेश निंदक भ्या खेद ॥ नामे नारायण नहीं भेद ॥ २२९ ॥

जो गुरुदेव तो मिलै मुरार ॥ जो गुरुदेव तो उतरै पार ॥ जो गुरुदेव तो वैकुण्ठ तरै ॥ जो गुरुदेव तो जीवत मरै ॥ सत्य सत्य सत्य सत्य सत्य गुरुदेव झूठ झूठ झूठ झूठ आन सभ सेव ॥ जो गुरुदेव तो नाम दृढावै ॥ जो गुरुदेव न दह दिस धावै ॥ जो गुरुदेव पंच ते दूर ॥ जो गुरुदेवन मरबो झूर ॥ जो गुरुदेव तो अमृत बानी ॥ जो गुरुदेव तो अकथ कहानी ॥ जो गुरुदेव तो अमृत देह ॥ जो गुरुदेव नाम जप लेह ॥ जो गुरुदेव भवन त्रय सूझै ॥ जो गुरुदेब ऊँचपद बूझै ॥ जो गुरुदेव तो सीस अकास ॥ जो गुरुदेव सदा सावास ॥ जो गुरुदेव सदा वैरागी ॥ जो गुरुदेव परनिंदा त्यागी ॥ जो गुरुदेव बुरा भला एक ॥ जो गुरुदेव ललाटहि लेख ॥ जो गुरुदेव कंध नहिं हिरै ॥ जो गुरुदेव देहुरा फिरै ॥ जो गुरुदेव तो छापर छाई ॥ जो गुरुदेव सहस निकसाई ॥ जो गुरुदेव तो अठसठ न्हाया ॥ जो गुरुदेव तन चक्र लगाया ॥ जो गुरुदेव तो द्वादश सेवा ॥ जो गुरुदेव सभी विप मेवा ॥ जो गुरुदेव तो संशा टूटै ॥ जो गुरुदेव तो यमते छूटै ॥ जो गुरुदेव तो भौजल तरै ॥ जो गुरुदेव तो जन्म न मरै ॥ जो गुरुदेव अठदश व्योहार ॥ जो गुरुदेव अठारहि भार ॥ विन गुरुदेव अवर-नहिं जाई ॥ नामदेव गुरुकी शरणाई ॥ २३० ॥

आउ कलंदर केशवा ॥ कर अवदाली भेशवा ॥ जिन आकाश कुलहि शिर कीनी कोशै सप्त पियाला ॥ चमर पोसका मंदिर तेरा इह विधि बने गुपाला ॥ छपनकोट का पेहन तेरा सोलह

तहस हजारा ॥ भार अठारह मुदगर तेरा सहनक सभ संसारा ॥ देही महजिद मन मौलाना सहज निमाज गुजारे ॥ बीबीकौला सौंका इन तेरा निरंकार आकारे ॥ भगति करत मेरे ताल छिनाये किहि पै करो पुकारा ॥ नामे का स्वामी अंतरयामी फिरे सकल बेदेसारा ॥ २३१ ॥

राग वसंत हिंडोल।

शालग्राम विप्र पूज मनावो सुकृत तुलसी माला॥राम नाम जप बेड़ा बांधो दया करो दयाला ॥ काहे कलरा सिंचो जन्म गवाँवो ॥ काची ढहग दिवाल काहे गच लावो ॥ कर हरिहट माल टिंड परावो तिस भीतर मन जोवो ॥ अमृत सिंचो भरो क्यारे तौ मालीके होवो ॥ काम क्रोध दोय करो वसोले गोडो ॥ धरतीभाई ज्यों गोडौ त्यों तुम सुख पावो किर्त न मेव्यो जाई ॥ वगुले ते पुनि हँसुला होवे जे तू करहिं दयाला ॥ प्रणमत नानक दासनदासा दया करो दयाला ॥ २३२ ॥

साधो इह तन मिथ्या जानो ॥ या भीतर जो राम वसत है सांचो ताहि पछानो ॥ इह जग है संपति सुपने की देख कहा ऐड़ानो ॥ संग तिहारे कछू न चाले ताहि कहा लपटानो ॥ अस्तुति निंदा दोऊ परिहरि हरि कीरति उर आनो ॥ जन नानक सभही में पूरन एक पुरुष भगवानो ॥ २३३ ॥

राग वसन्त।

पापी हीये में काम वसाय ॥ मन चंचल याते रह्यो न जाय ॥ योगी जंगम अरु संन्यास ॥ सभही पर डारी इह फाँस ॥ जिहिं जिहिं हरि को नाम सम्हार ॥ ते भवसागर उतरे पार ॥ जन नानक हरि की शरनाय ॥ दीजे नाम रहे गुण गाय ॥ २३४ ॥

माई मैं धन पायों हरि नाम ॥ मन मेरो धावन ते छूट्यो कर बैठो विश्राम ॥ माया ममता तनते भागी उपज्यो निर्मल ज्ञान ॥ लोभ मोह यह परस नसाके गही भगति भगवान ॥ जन्म जन्म का संशय चूका रत्न नाम जब पाया ॥ तृष्णा सकल विनाशी मनते निज सुख माहिं समाया ॥ जाको होत दयाल कृपानिधि सो गोविंद गुणगावे ॥ कहु नानक यह विधि की संपै कोऊ गुरुमुख पावै ॥ २३५ ॥

मन कहा बिसारयो रामनाम ॥ तन विनशै यम सो परै काम ॥ इह जग धूएँ का पहार ॥ तैं सांचा मन्यो किहिं विचार ॥ धन दारा संपति और गेह ॥ कछु संग न चालै समझले-ह ॥ इक भगति नारायण होय संग ॥ कहु नानक भज तिहिं एक रंग ॥ २३६ ॥

कह गुल्योरे झूठे लोभ लाग ॥ कहु विगरयो नाहिंन अजहुं जाग ॥ सम सुपनेके इह जग जान ॥ विनशै छिनमें साँचीमान ॥ संग तेरे हरि वसत नीत ॥ निशिवासर भज ताहि मीत ॥ बार अंत की होय सहाय ॥ कहु नानक गुण ताके गाय ॥ २३७॥

सुन साखी मन जप प्यार ॥ अजामल्ल उधरया कह एकवार ॥ वालमीकहिं होया साधु संग ॥ ध्रुव को मिल्यो हरि निशंक ॥ तेरयां संतां जाचौं चरण रेन ॥ ले मस्तक लावों कर कृपा देन ॥ गणिका उधरी हरि कहे तोत ॥ गजेंद्र ध्यायो हरि कियो मोक्ष ॥ विप्र सुदामे दारिद भंज ॥ रे मन तू भी भज गोविंद ॥ वधिक उधारयो खम प्रहार ॥ कुबजा उधरी अंगुष्ठ धार ॥ विदुर उधारयो दासत भाय ॥ रे मन तू भी हरि ध्याय ॥ प्रहलाद रखी हरि पैज आप ॥ वस्त्र छीनत द्रौपदी रखी लाज ॥ जिन जिन सेवया अंत वार ॥ रे मन सेव तू परहिं पार ॥ धन्ने सेवया

बाल बुद्धि ॥ त्रिलोचन गुरु मिल भई सिद्धि ॥ वेणी को गुरु कियो प्रकास ॥ रे मन तूभी होहिं दास ॥ जैदेव त्याग्यो अहंमेव ॥ नाई उधरयो सैन सेव ॥ मन डिगै न डोलहि कहूं जाय ॥ मन तूभी तरसहि शरण पाय ॥ जिहिं अनुग्रह ठाकुर कियो आप ॥ सो तैं लीने भगत राख ॥ तिनका गुण अवगुण न विचारयो कोय ॥ इह विध देख मन लगासेव ॥ कवीर ध्यायो एक रंग ॥ नामदेव हरजी वससि संग ॥ रामदास न्याये प्रभु अनूप ॥ गुरु नानक देव गोविन्द रूप ॥ २३८ ॥

पंडित जन माते पढ़ पुरान ॥ योगी माते योग ध्यान ॥ संन्यासी माते अहंमेव ॥ तपसी माते तप के भेव ॥ सभ मद माते कोऊ न जाग ॥ संग ही चोर घर मुसन लाग ॥ जागे शुकदेव अरु अक्रूर ॥ हनुमंत जागे धर लंकूर ॥ शंकर जागे चरण सेव ॥ कलि जागे नामा जैदेव ॥ जागत सोवत बहु प्रकार ॥ गुरु-मुख जागे सोई सार ॥ इस देही के अधिक काम ॥ कह कवीर भज राम नाम ॥ २२९ ॥

इस तन मन मध्ये मदन चोर ॥ जिन ज्ञान रत्न हरि लीन मोर ॥ मैं अनाथ प्रभु कहों काहि ॥ को को न बिगूलो मैं को आहि ॥ माधो दारुन दुख सह्यो न जाय ॥ मेरो चपल बुद्धि सों कहा बसाय ॥ सनक सनंदन शिव शुकादि ॥ नाभि कमल जाने ब्रह्मादि ॥ कवि जन योगी जटा धार ॥ सभ आपन औसर चले सार ॥ तूं अथाह मोहिं थाह नाहिं ॥ प्रभु दीनानाथ दुख कहों काहि ॥ मेरो जन्म मरण दुख आथ धीर ॥ सुखसागर गुण रम कबीर ॥ २४० ॥

कहत जाइये रे घर लागो रंग ॥ मेरा चित न चले मन भयो पंग ॥ एक दिवस मन भई उमंग ॥ घस चन्दन चोआ बहुसुगन्ध ॥ पूजन चाली ब्रह्म ठाय ॥ सो ब्रह्म बतायो गुरु मनहि

माहिं ॥ जहाँ जाइये तहिं जल पखान ॥ तूं पूर रह्यो हैं सभ समान ॥ वेद पुराण सब देखे जोय ॥ ऊहाँ तौ जाइये जो ईहाँ न होय ॥ सतगुरु मैं बलिहारी तोर जिन सकल विकल भ्रम काटे मार ॥ रामानन्द स्वामी रमत ब्रह्म गुरुका शब्द काटै कोटि कर्म ॥ २४१ ॥

तुझहिं सुझन्ता कछु नाहिं ॥ पहिरावा देखे ऊभ जाहिं ॥ गर्ववती का नाहीं ठाऊँ ॥ तेरी गर्दन ऊपर लवै काउँ ॥ तू काहि गर्वहिं बावली ॥ जैसे भादों खूबरा जो तूं तिससे खरी उतावली ॥ जैसे कुरंग नहीं पायो भेद ॥ तन सुगन्ध ढूँढ प्रदेश ॥ अप तन का जो करे विचार ॥ तिस नहिं यम किङ्कर करे खुआर ॥ पुत्र कलत्र का करहि अहंकार ॥ ठाकुर लेखा मंगन हार ॥ फेडेका दुख सहे जीउ ॥ पाछे किसहि पुकारहिं पीउ पीउ ॥ सांधू की जो लेहि ओट ॥ तेरे मिटहिं पाप सभ कोट कोट ॥ कह रामदास जो जपहि नाम ॥ तिस जाति न जन्म न योनि काम ॥ २४२ ॥

सुरहि की जैसी तेरी चाल ॥ तेरी पूंछट ऊपर झमक बाल ॥ इस घर में है सो तू ढूँढ़ खाहि ॥ और किसही के तू मतिही जाहि ॥ चाकी चाटहि चूनखाहि ॥ चाकीका चीथरा कहां लैजाहि ॥ छीकेपर तेरी बहुत डीठ ॥ मत लकरी सोंटा तेरी परै पीठ ॥ कह कबीर भोग भले कीन ॥ मति कोऊ मारै ईंट डींम ॥ २४३ ॥

राग सारंग ।

जप मन राम नाम पढ सार ॥ राम नाम विन थिर नहिं कोई और निष्फल सभ निस्तार ॥ क्या लीजै क्या तजिये बौरे जो दीसे सो छार ॥ जिन विषय को तुम अपने कर जानो सो छोड जाहु शिर भार ॥ तिल तिल पल पल औध पुनि घाटै बूझ न सके

गवाँर ॥ सो कछु करे जो साथ न चाले इह शाकत का आचार ॥ सन्त जनां के सङ्ग मिल बौरे तौ पावहिं मोक्ष द्वार ॥ विन सतसंग सुख किने न पाया जाय पूछहु वेद विचार ॥ राणा राउ सभी कोऊ चाले झूठ छोड़ जाय पासार ॥ नानक सन्त सदा स्थिर निश्चल जिन राम नाम आधार ॥ २४४ ॥

ठाकुर तुम शरणाई आया ॥ उतर गयो मेरे मनका संशा जबते दर्शन पाया ॥ अनबोलत मेरी बिर्था जानी अपना नाम जपाया ॥ दुख नाठे सुख सहज समाये अनद २ गुण गाया ॥ बाहँ पकर कढ लीने अपने गृह अंध कूप ते माया ॥ कहु नानक गुरु बंधन काटे बिछुरत आन मिलाया ॥ २४५ ॥

गोविंदजी तूं मेरे प्राण अधार ॥ साजन मीत सहाई तुमहीं तूं मेरो परिवार ॥ कर मस्तक धारयो मेरे माथे साधु सङ्ग गुण गाये ॥ तुमरी कृपा ते सभ फल पाये रसिक राम नाम ध्याये ॥ अविचल नींव धराई सतगुण कबहूं डोलत नाहीं ॥ गुरु नानक जब भये दयाला सर्व सुखांनिधि पाहीं ॥ २४६ ॥

हरि विन तेरो कौन सहाई ॥ काकी मात पिता सुत वनिता को काहूको भाई ॥ धन धरनी अरु सम्पति सगरी जो जो मान्यो अपनाई॥ तन छूटे कछु सङ्ग न चाले कहा ताहि लपटाई ॥ दीन दयाल सदा दुखभंजन तासों रुचि न वढाई ॥ नानक कहत जगत सभ मिथ्या ज्यों सुपना रैनाई ॥ २४७ ॥

कहा मन विषयनसो लपटाई ॥ या जग में कोउ रहन न पावे इक आवे इक जाई ॥ काको तन धन संपति काकी कासों नेह लगाई ॥ जो दीसे सो सकल [illegible] ज्यों बादर की छाई ॥ तज अभिमान शरण संत[illegible] मुक्त[illegible] माहीं ॥ जन नानक भगवंतभजन विन[illegible] २४८ ॥

कहा नर अपनो जन्म गँवावे ॥ माया मद विषया रस राच्यो राम शरण नहिं आवे ॥ इह संसार सकल है सुपनो देख कहा लोभावै ॥ जो उपजे सो सकल विनाशे रहन न कोऊ पावे॥मिथ्या तन सांचों कर मान्यो इह विधि आप बँधावे ॥ जन नानक सोऊ जग मुक्ता राम भजन चित लावै ॥ २४९ ॥

मन कर कबहुँ न हरिगुण गायो ॥ विषयासक्त रह्यो निशि वासर कीनो अपनो भायो ॥ गुरु उपदेश सुन्यो नहीं कानन परदारा लपटायो ॥ परनिंदा कारन बहु धावत आगम नहिं समझाया ॥ कहा कहों मैं अपनी करनी जिहिं विध जन्म गवाँयो ॥ कह नानक सभ औगुण मोमें राख लेहु शरनायो ॥ २५० ॥

कहा नर गरबस थोरी बात ॥ मन दश नाज टका चार गांठीं ऐंडो टेढ़ो जात ॥ बहुत प्रताप गाउँ सों पाये द्वै लख टका बरात॥ दिवस चार की करो साहिबी जैसे वन हर पात ॥ ना कोऊ लै आयो इह धन ना कोऊ लै जात ॥ रावण हूं ते अधिक छत्रपति छिन मैं गये बिलात ॥ हरिके सन्त सदा थिर पूजा जो हरि नाम जपात ॥ जिनको कृपा करत है गोविंद ते सतसङ्ग मिलात ॥ मात पिता वनिता सुत सम्पति अंत न चलत सँगात ॥ कहत कबीर राम भज बौरे जन्म अकारथ जात ॥ २५१ ॥

काहे रे मन विषया वन जाय ॥ भूलो रे ठग मूरी खाय ॥ जैसे मीन पानी में रहै ॥ काल जाल की सुध नहिं लहै ॥ जिह्वा स्वादी लीलत लोह ॥ ऐसे कनक कामिनी बांध्यो मोह ॥ ज्यों मधु माखी सँचै अपार ॥ मधु लीनो मुख दीनो छार ॥ गऊ बाछ को संचै क्षीर ॥ गला बांध दुह लेय अहीर ॥ माया कारन श्रम अति करै ॥ सो माया ले गाडै धरै ॥ अति संचै समझै नहिं मूढ ॥ धन धरती तन है गयो धूड़ ॥ काम क्रोध तृष्णा अति जरै ॥ साधु

संगत कवहूं नहिं करै ॥ कहत नामदेउ ताचीआन ॥ निरभय ह्वै भजिये भगवान ॥ २९२ ॥

वदो क्योंना होड़ माधो मोसों ॥ ठाकुर ते जन जन ते ठाकुर खेल परचोहै तोसों ॥ आपन देव देहरा आपन आप लगावे पूजा॥ जल ते तरंग तरंग ते है जल कहन सुनन को दूजा ॥ आपहिं गावें आपहिं नाचै आप वजावै तूरा॥ कहत नामदेउ तू मेरो ठाकुर जन-ऊरा तू पूरा ॥ २९३ ॥

तैं नर क्या पुराण सुन कीना ॥ अनपायनी भगति नहिं उपजी भूखे दान न दीना ॥ काम न विसरचो क्रोध न विसरचो लोभ न छूटचो देवा ॥ परनिंदा मुखते नहिं छूटी निफल भई सभ सेवा ॥ वाट पार घर मूस विरानो पेट भरै अपराधी ॥ जिहिं पर-लोक जाय अपकीरत सोई अविद्या साधी ॥ हिंसा तो मन ते नहिं छूटी जीय दया नहिं पाली ॥ परमानंद साधु संगत मिल कथा पुनीत न चाली ॥ २९४ ॥

हरि विन कौन सहाई मनका ॥ मात पिता भाई सुत वनिता हित लागो सभ फनका ॥ आगेको कछु तुलहा वांधो क्या भर-वासा धनका ॥ कहा विसासा इस भांडे का इतनक लागै ठनका॥ सकल धर्म पुण्य फल पावो धूर वांछहु सभ जनका ॥ कहै कवीर सुनो रे संतहू इह मन उडन परवेरू वनका ॥ २९५ ॥

राग मलार।

माई मोहिं प्रीतम देहु मिलाई ॥ सकल सहेली सुख भर सूती जिहिं घर लाल वसाई ॥ मोहिं अवगुण प्रभु सदा दयाला मोहिं निर्गुण क्या चतुराई ॥ करौं वरावर जो पिया संग राती इह मेरी ढीठाई ॥ भई निमाणी शरण इक ताकी श्रीसतगुरु पुरुप सुख-

दाई ॥ एक निमिष में मेरा सभ दुख काटचा नानक सुख रैन बिहाई ॥ २५६ ॥

मेरे प्रीतम प्राण पियारे ॥ ॥ प्रेमभक्ति अपनो नाम दीजै दयाल अनुग्रह धारे ॥ सुमरों चरण तिहारे प्रीतम हृदय तिहारी आसा ॥ संत जनां पै करों वेनंती मन दर्शनकी प्यासा ॥ बिछुरत मरन जीवन हरि मिलते जल को दर्शन दीजै ॥ नाम अधार जीवत धन नानक प्रभु मेरे किरपा कीजै ॥ २५७ ॥

हरिके भजन कौन कौन न तारे ॥ खग तन मीन तन मृग तन वराह तन साधू संग उधारे ॥ देव कुल दैत्य कुल यक्ष किन्नर नर सागर उतरे पारे ॥ जोजो भजन करे साधूसंग ताके दुःख विदारे ॥ काम क्रोध महा विषया रस इनते भये निरारे ॥ दीन दयाल जपहिं करुणामय नानक सद बलिहारे ॥ २५८ ॥

हे गोविंद हे गोपाल हे दयाल लाल ॥ प्राणनाथ अनाथ सखे दीन दरद निवार ॥ हे समर्थ अगम्यपूर्ण मोहि मया धार ॥ अंध कूप महा ध्यान नानक पार उतार ॥ २५९ ॥

सेवीले गोपाल राय अकुल निरंजन ॥ भगति दान दीजै याचहि संतजन ॥ याचहिं धरि दिग दिसै सरायचा बैकुंठ भवन चित्रशाला सप्त लोक सामान पूरीयले ॥ याचाहिं घर लक्ष्मी कुआरी ॥ चंद सूरज दीवड़े कौतुक काल वपुड़ा कोतवाल सुकरासिरी ॥ सो ऐसा राजा श्रीनरहरी ॥ याँचे घर कुलाल ब्रह्मा चतुर्मुख डांवडा जिन विश्व संसार राचीले ॥ जाके घर ईश्वर वावला जगत गुरु तत्व सारखा ज्ञान भापीले ॥ पाप पुण्य याँचे डांगी द्वारे चित्रगुप्त लेखी या ॥ धर्मराय परली प्रतिहार ॥ सो ऐसा राजा श्रीगोपाल ॥ याँचे घर गण गंधर्व ऋषि वपुरे ढाडीया गावत आछे ॥ सर्व शास्त्र बहुरूपिया अनगरूआ आखाड़ा ॥ मंडलीक बोल

बोलहिं काछे ॥ चौर ढूल याँचै हैं पवन॥ चेरी शक्ति जीतले भवन ॥ अंड टूक याचै भसमती ॥ सो ऐसा राजा त्रिभुवन पती ॥ यॉचै घर कूर्मा पाल सहस्र फनी वासक सेज वालूआ ॥ अठारा भार वनासपती मालणी छिनवे करोडी मेघ माला पाणी हारीया ॥ नख प्रसेव यॉचै सुरसरी सप्त समुंद याचै पडथली ॥ एते जीव यांचे वरतनी ॥ सो ऐसा राजा त्रिभुवन धनी ॥ यांचे घर निकटवर्ती अर्जुन धरू प्रहलाद अंबरीप नारद नेजे सिद्ध बुद्ध गण गंधर्व वानवे हेला ॥ एते जीय यॉचहि हैं घरी ॥ सर्वव्यापक अंतर हरी ॥ प्रणवे नामदेउ तांची आण ॥ सकल भगत याचे नीसाण ॥ २६० ॥

मोको तू न विसार तू न विसार॥ तू न बिसारे रामैया ॥ आलावंती एहभ्रम जोहैं मुझ ऊपर सभकोपिला ॥ शूद्रशूद्र कर मारउठायो कहा करों वाप वीठला ॥ मूए हुए जो मुक्ति देहमें मुक्ति न जानै कोयला ॥ एहपंडीया मोको ढेढ कहत तेरी पैज पिछोडी होयला ॥ तूं जो दयाल कृपाल कहियत हैं अति भुज भयो अपारला ॥ फेर दिया देहुरा नामे को पंडीयन को पिछ वारला ॥ २६१ ॥

नागर जनां मरी जाति विख्यातचमारं ॥ हृदय राम गोविंद गुणसारं ॥ सुरसरी सलिल कृत वारुणी रेसंत जन करत नहीं पानं ॥ सुरा अपवित्र नत अवर जल रे सुरसरी मिलत नहीं होय आनं ॥ तरतार अपवित्र कर मानीये रे जैसे कागरा करत वीचारं ॥ भगति भागवत लिखिये तिहिं ऊपरे पूजिये कर नमस्कारं ॥ मेरी जाति कुट वांढला ढोर ढोवतां नितहिं वानारसी आस पासा ॥ अव विप्र प्रधान तिहिं करहिं डंडौत तेरे नाम शरनाथ रामदासदासा ॥ २६२ ॥

हरि जपत तेऊ जनां पदम कमलास पति तास सम तुल्य नहीं आन कोऊ ॥ एक ही एक अनेक ह्वै विस्तरचो आन रे आन भरपूर सोऊ ॥ जाके भागवत लेखिये अवर नहिं पेखिये तासु की जाति आछोप छीपा ॥ व्यासमें लेखिये सनक में पेखिये नाम की नामना सप्तदीपा ॥ जाके ईद बकरीद कुलगऊ रे बध करहिं मानिये सेखसहीद पीरा ॥ जाके बाप वैसी करी पूत ऐसी सरी तिहूं रे लोक प्रसिद्ध कबीरा ॥ जाके कुटुंब के ढेढ़ सभ ढोर ढावन्त फिरहिं अजहूं बंनारसी आस पासा ॥ आचार सहित विप्र करहि डंडौत तिन तनय रामदास दासानुदासा ॥ २६३ ॥

राग कान्हरा।

चरण शरण गोपाल तेरी ॥ शोह मान द्रोह भ्रम राख लीजै काट बेरी ॥ बूडत संसार सागर ॥ उधरे हरि सिमर रत्नाकर ॥ शीतला हरि नाम तेरा ॥ पूरनो ठाकुर प्रभु मेरा ॥ दीनदरद निवार तारन ॥ हरि कृपानिधि पतित उधारन ॥ कोटि जन्म दूख कर पायो ॥ सुखी नानक गुरु नाम दृढायो ॥ २६४ ॥

राग प्रभाती।

प्रभु की सेवा जन की शोभा ॥ काम क्रोध मिटे तिस लोभा ॥ नाम तेरा जन के भंडार ॥ गुणगावहिं प्रभु दर्शनप्यार ॥ तुमरी भगती प्रभु तुमहीं जनाई काठ ॥ जेवरी जन लिये छुडाई ॥ जो जन राता प्रभुके रंग ॥ तिन सुख पाया प्रभु के संग ॥ जिस रस आया सोई जाने ॥ पेख पेख मनमें हैराना ॥ सो सुखिया सभते ऊतम सोय ॥ जाके हिरदय वस्य प्रभु सोय ॥ सोई निहचल आवे न जाय ॥ अनुदिन प्रभु के हरिगुण गाय ॥ ताको करो सकल

नमस्कार ॥ जाके मन पूरण निरंकार ॥ कर किरपा मोहिं ठाकुर देवा ॥ नानक उधरे जनकी सेवा ॥ २६५ ॥

गुण गावत मन होय अनंद ॥ आठ पहर सिमरो भगवंत ॥ जाके सिमरन कलिमल जाहि ॥ तिस गुरु की हम चरनी पाहि ॥ सुमति देवो संत प्यारे ॥ सिमरो नाम मोहिं निस्तारे ॥ जिन गुरु कह्या मारग सीधा ॥ सकल त्याग नाम हरि गीधा ॥ तिस गुरु के सदा बल जाइये ॥ हरि सिमरन जिस गुरुते पाइये ॥ बूडत प्रानी जिन गुरुहि तराया ॥ जिस प्रसाद मोहे नहिं माया ॥ हलत पलत जिन गुरा सँवाऱ्या ॥ तिस गुरु ऊपर सदा हौं वाऱ्या ॥ महा मुगधते कीया ज्ञानी ॥ गुरु पूरेकी अकथ कहानी ॥ पारब्रह्म नानक गुरुदेव ॥ वड़े भाग पाइये हरि सेव ॥ २६६ ॥

मनमें क्रोध महा अहंकारा ॥ पूजा करहिं बहु विस्तारा ॥ कर अस्नान तन चक्र बनाये ॥ अंतरकी मल कबहूं न जाये ॥ इत संयम प्रभु किनहूं न पाया ॥ भगौती मुद्रा मन मोह्या माया ॥ पाप करहिं पंचो के बसरे ॥ तीर्थ न्हाय कहहिं सब उतरे ॥ बहुरी कमावहिं होय निशंक ॥ ॥ यमपुर बांध खरे कालंक ॥ घुँघर बांध बजावहिं ताला ॥ अंतर कपट फिरहिं बेताला ॥ बरमी मारी सांप न मूआ ॥ प्रभु सब कछु जानें जिन तूं कीया ॥ पूंअर ताप गेरी के वस्त्रा ॥ अपदा का माऱ्या गृहते नसता ॥ देश छोड पर-देशहिं धाया ॥ पंच चंडाल नाले ले आया ॥ कान फराय हिराये टूका ॥ घर घर मांगे तृसावनते चूका ॥ बिनता छोड बद नजर परनारी ॥ वेस न पाइये मादुखारी ॥ बोले नाहीं होय बैठा मौनी ॥ अंतर कपल भवाइये जोनी ॥ अन्न ते रहिता दुख देही सहिता ॥ हुकम न बूझे व्याप्या ममता ॥ बिनसतगुरु किने न पाई परमगते ॥ पूछहु सकल वेदासिमृते ॥ मन मुख कर्मकरे अजाई ॥ ज्यों बालू

घर ठौर नठाई ॥ जिसनूं भये गोविंद दयाला ॥ गुरु का वचन तिन बांध्यो पाला ॥ कोटि मध्ये कोई संत दिखाया ॥ नानक तिनके संग तराया ॥ जे होवै भाग तौ दर्शन पाइये आप तरै सभ कुटुंब तराइये ॥ २६७ ॥

राग जैजैवंती ।

राम भज राम भज जन्म सिरातहै ॥ कहों कहा बार बार समझत नहिं क्यों गवाँर बिनशत नहीं लगै बार और सम गात है ॥ सकल भर्म डार देह गोविंद को नाम लेह अंत वार संग तेरे यही एक जात है ॥ विषया विष ज्यों बिसार प्रभु को यश हिये धार नानक जन कह पुकार औसर बिहात है ॥२६८॥

रे मन कौन गति होयहै तेरी ॥ इह जग में राम नाम सों तो नहीं सुन्यो कान विषयन सों अति लुभान मति नाहिन फेरी ॥ मानस को जन्म लीन सिमरण नहिं निमिष कीन दारा सुख भयो दीन पगहुँ परी बेरी ॥ नानक जन कह पुकार सुपने ज्यों जग पसार सिमिरत नाहिं क्यों मुरार माया जाकी चेरी ॥ २६९ ॥

बीत जैहै बीत जैहै जन्म अकाज रे ॥ निशि दिन सुनके पुराण समझत नाहिं रे अजान काल तो पहुँच्यो आन कहां जैहै भाज रे ॥ अस्थिर जो मान्यो देह सो तो तेरी ह्वै है खेह क्यों ना हरि को नाम लेह मूरख निलाज रे ॥ राम भगति हिये आन छोडदे तू मनको नाम नानक जन कह बखान जग में बिराज रे ॥ २७० ॥

वाहि गुरू वाहि गुरू वाहि गुरू वाहिजी ॥ कमलनयन मधुर बैन कोटि सैन संग शोभ कहत मा जसोध जिसहिं दही भात खाहिंजी ॥ देख रूप अति अनूप मोह महा मग्न भई किंकिणी

शब्द झनतकार खेल पाहिजी ॥ काल कलम हुकम हाथ कहो कौन मेट सकै ईश थंम ज्ञान ध्यान धरत हिये चाहि जी ॥ सत्य साँच श्रीनिवास आदि पुरुष सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जी ॥ २७१ ॥

राम नाम परम धाम शुद्ध बुद्ध निराकार बेशुमार सर्बर को काहिजी ॥ सुथिर चित्त भगत हित्त भेष धरयो हरनाकुश हरयो नख विदार जी ॥ शंख चक्र गदा पद्म आपि आप कियो छदम अपरंपर पारब्रह्म लखै कौन ताहि जी ॥ सत्त साँच श्रीनिवास आदिपुरुप सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जी ॥२७२॥

पीत वसन कुंद दशन प्रिया सहित कंठ माल मुकुट शीश मोर पंख चाहि जी ॥ वे वजीर वडे धीर धर्म अंग अलख अगम-खेल किया आपणे उछाहिजी ॥ अकथ कथा कथी न जाय तीन लोक रह्या समाय स्वतेसिद्ध रूप धरयो शाहन के शाह जी ॥ सत्य साँच श्रीनिवास आदिपुरुप सदा तुही वाहिगुरू वाहिगुरू वाहिगुरू वाहि जी ॥ २७३ ॥

चौपाई ।

सिमरो सिमर सिमर सुख पावो ॥ कलि कलेश तन माहि मिटावो ॥ सिमरो जासु विश्वंभर एकै ॥ नाम जपत अनगिनत अनेकै ॥ वेद पुराण सिमृत सुधाक्षर ॥ कीने रामनाम इक अक्षर ॥ किणका एक जिस जीय वसावै ॥ ताकी महिमा गनी न आवै ॥ कांक्षी एको दर्श तिहारो ॥ नानक उन सँग मोहि उधारो ॥२७४॥

प्रभुके सिमरन ऋद्ध सिद्ध नौनिधि ॥ प्रभुके सिमरन ज्ञान ध्यान तत्व बुद्धि ॥ प्रभु को सिमरन जप तप पूजा ॥ प्रभुके सिमरन विनशे दूजा ॥ प्रभुके सिमरन तीर्थ अस्नानी ॥ प्रभुके

सिमरन दरगहि मानी ॥ प्रभुके सिमरन होय सुभला ॥ प्रभुके सिमरन सुफल फला ॥ से सिमरहिं जिन आप सिमराये ॥ नानक ताके लागों पाये ॥ २७५ ॥

प्रभु को सिमरैं सो पर उपकारी ॥ प्रभुको सिमरैं तिन सद प्रभु बलिहारी ॥ प्रभु को सिमरैं सो मुख सुहावै ॥ प्रभु को सिमरैं तिन सूख बिहावै ॥ प्रभु को सिमरैं तिन आत्मा जीता ॥ प्रभुको सिमरैं तिन निर्मल रीता ॥ प्रभु को सिमरहिं तिन अनँद घनेरे॥ प्रभु सिमरहिं बसहिं हरि नेरे ॥ संत कृपाते अनुदिन जाग ॥ नानक सिमरन पूरे भाग ॥ २७६ ॥

जहि मात पिता सुत मीत न भाई ॥ मन ऊहां नाम तेरे संग सहाई ॥ जहि महा ध्यान दूत यमदलै ॥ तहिं केवल नाम संग तेरे चलै ॥ जहिं मुशकल होवै अति भारी ॥ हरि को नाम छिनमाहिं उधारी ॥ अनिक पुरश्चर्ण करत नहीं तरे ॥ हरिको नाम कोटि पाप परिहरे ॥ गुरुमुख नाम जपहु मन मेरे ॥ नानक पावहु सुख घनेरे ॥ २७७ ॥

जिहि मारग के गिने जाहि न कोसा ॥ हरि का नाम ऊहाँ संग तोसा ॥ जिहि पैंडे महा अंध गुबारा ॥ हरि का नाम संग उज्यारा ॥ जहां पंथ तेरा को न स्यानू ॥ हरि का नाम तहां नाल पछानू ॥ जहिं महाध्यान तप्त बहुधाम ॥ तहिं हरिके नामकी तुम ऊपर छाम ॥ जहां तृषा मन तुझ आकरषै ॥ तहिंनानक हरि हरि अमृत वरषै ॥ २७८ ॥

हरि हरि जनके माल खजीना ॥ हरि धन जन को आप प्रभु दीना ॥ हरि हरि जनके ओट सतानी ॥ हरि प्रताप जन अवर न जानी ॥ ओत प्रोत जन हरि रसराते ॥ शुन्न समाधि नाम रस माते ॥ आठ पहर जन हरि हरि जपै ॥ हरि का भगत

प्रगट नहिं छपै ॥ हरि की भगति मुक्ति बहु करे ॥ नानक जन केते तरे ॥ २७९ ॥

जापताप ज्ञान सभध्यान ॥ षट्शास्त्र सिमृत व्याख्यान ॥ योग अभ्यास कर्म धर्म क्रिया ॥ सकल त्याग वन मध्ये फिरया ॥ अनिक प्रकार किये बहु यत्ना ॥ पुण्य दान होमे बहु यत्ना ॥ शरीर कटाय होमे कर राती ॥ व्रत नेम करे करे बहु भाँती ॥ नहीं तुल्य राम नाम विचार ॥ नानक गुरुमुख नाम जपिये इक वार ॥ २८० ॥

सकलपुरुष में पुरुषप्रधान ॥ साधु संग जाका मिटै अभिमान ॥ आपन को जो जानै नीचा ॥ सोऊ निनिये सभते ऊंचा ॥ जाका मन होय सकलकीरीना ॥ हरि हरि नाम तिन घट घट चीना ॥ मन अपने ते बुरा मिटाना ॥ पेखे सकल सृष्टि साजना ॥ सूख दूख जन सम दृष्टेता ॥ नानक पाप पुण्य नहिं लेपा ॥ २८१ ॥

निरधनको धन तेरो नाउँ ॥ निथावें को नाम तेरा थाउँ ॥ निमाने को प्रभु तेरो मान ॥ सकल घटां को देवहु दान ॥ करन करावन हार स्वामी ॥ सकल घटां के अन्तरयामी ॥ अपनी गति मति जानहु आपे ॥ आपन संग आप प्रभु राते ॥ तुमरी अस्तुति तुमते होय ॥ नानक अवर न जानत कोय ॥ २८२ ॥

सर्व धर्म में श्रेष्ठ धर्म ॥ हरिको नाम जप निर्मल कर्म ॥ सकल क्रिया में उत्तम क्रिया ॥ साधुसंग दुर्मति मलहरचा ॥ सकल उद्यम में उद्यम भला ॥ हरि का नाम जपहु जिय सदा ॥ सकल बानीमें अमृत बानी ॥ हरिको यशसुन रसन बखानी ॥ सकल थान ते सो उत्तम थाउँ ॥ नानक जिहिं घट बसै हरि नाउँ ॥ २८३ ॥

जिहिं प्रसाद धर ऊपर सुख बसहिं ॥ सुत भ्रात मीत बनिता संग हँसहि ॥ जिहिं प्रसाद पीवहिं शीतल जला ॥ सुखदाई पवन

पावक अमला ॥ ॥ जिहिं प्रसाद भोगहिं सभरसा ॥ सकल समग्री संग साथ बसा ॥ दीने हस्त पाँव कर्ण नेत्र रसना ॥ तिसहिं त्याग अवर संगरचना ॥ ऐसे दुख मूढ़ा अंधव्यापे ॥ नानक काढ़ि लेहु प्रभुआपे ॥ २८४ ॥

आदि अन्त जो राखनहार ॥ तिससों प्रीति न करै गवाँर ॥ जाकी सेवा नवनिधि पाव ॥ तासों मूढ़ मन नहिं लावै ॥ जो ठाकुर सद सदा हजूरे ॥ ताको अंधा जानत दूरे ॥ जाकी टहल पाव दरगहि मान ॥ तिसहि बिसारै मुग्ध अजान ॥ सदा सदा इह भूलनहार ॥ नानक राखन हार अपार ॥ २८५ ॥

रत्न त्याग कौडी सँग रचै ॥ साँच छोड़ झूँठ सग मचै ॥ जो छडना सो स्थिर कर माने ॥ जो होवन सो दूर पराने ॥ छोड़ जाय तिसका श्रम करै ॥ संग सुहाई तिस परिहरै ॥ चन्दन लेप उतारै धोय ॥ गरदन प्रीति भसम सँग होय ॥ अंधकूपमें पतित विकाल ॥ नानक काढ लेहु प्रभु दयाल ॥ २८६ ॥

संग सहाई सो आवै न चीत ॥ जो वैराई तासों प्रीत ॥ बलुआ के गृह भीतर बसै ॥ आनंद केलि माया रँग रसै ॥ दृढ कर मानैं मनहि प्रतीत ॥ काल न आवै मूढ़े चीत ॥ वैर विरोध काम क्रोध मोह ॥ झूंठ विकार महालोभ द्रोह ॥ याहू जुगति विहाने कई जन्म नानक राखि लेहु आपन कर कर्म ॥ २८७ ॥

तुम ठाकुर तुम पहि अरदास ॥ जीउ पिंड सब तुमरी रास ॥ तुम मात पिता हम वारिक तेरे तुमरी कृपा में सूख घनेरे ॥ कोय न जाने तुमरा अंत ॥ ऊंचे ते ऊंचा भगवंत ॥ सकल समग्री तुमरे सूत्रधारी ॥ तुमते होय सो आज्ञाकरी ॥ तुमरी गति मति तुमहीं जानी ॥ नानक दास सदा कुरवानी ॥ २८८ ॥

मिथ्या तन धन कुटुंब सवाया ॥ मिथ्या हौं मैं ममता माया ॥ मिथ्या राज यौवन धन माल ॥ मिथ्या काम क्रोध विकराल ॥ मिथ्या रथ हस्ती अश्व बस्त्रा ॥ मिथ्या रंग सङ्ग माया पेख हँसता ॥ मिथ्या द्रोह मोह अभिमान ॥ मिथ्या आपस ऊपर करत गुमान ॥ अस्थिर भगति साधु की शरण ॥ नानक जप जप जीवै हरि के चरण ॥ २८९ ॥

मिथ्या श्रवण परनिंदा सुनहिं ॥ मिथ्या हस्त परद्रव्यको हराहिं ॥ मिथ्या नेत्र पेखत पर त्रिया रूपाद ॥ मिथ्या रसना भोजन अन्न स्वाद ॥ मिथ्या चरण पर विकार को धावहिं ॥ मिथ्या मन पर लोभ लुभावहिं ॥ मिथ्या तन नहिं पर उपकारा ॥ मिथ्या वास लेत विकारा ॥ विन बूझे मिथ्या सब भये ॥ सफल देह नानक हरि हरि नाम लये ॥ २९० ॥

विरथी शाकत की आरजा ॥ सांच बिना कहि होवत सूचा ॥ विरथा नाम विना तन अंध ॥ मुख आवत ताके दुरगंध ॥ विना सिमरन दिन रैन विर्था विहाय ॥ मेघ विना ज्यों खेती जाय ॥ गोविंद भजन विन विरथे सब काम ॥ ज्यों कृपण के निरर्थ दाम ॥ धन्य धन्य ते जन जिहिं घट बस्यो हरि नाउँ ॥ नानक ताके बलबल जाउँ ॥ २९१ ॥

रहत अवर कछु अवर कमावत ॥ मन नाहिं प्रीत मुखो गढ लावत ॥ जाननहार प्रभु प्रवीन ॥ वाहर भेप न काहू भीन ॥ अवर उपदेशो आप नाहिं करे ॥ आवत जावत जन्मे मरे ॥ जिसके अन्तर वसे निरंकार ॥ तिसकी सीख तरे संसार ॥ जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥ नानक उन जन चरख पराता ॥ २९२ ॥

मिथ्या नाहीं रसना परस ॥ मनमें प्रीति निरंजन दरस ॥ परत्रिया रूप न पेखे नेत्र ॥ साधु की टहिल सन्त सङ्ग हेत ॥ कर्ण न सुने काहूकी निंदा ॥ सभ ते जाने आपन को मंदा ॥ गुरप्रसाद

विषया परिहरै ॥ मनकी वासना मनते टरै ॥ इंद्रीजित पंच दोष ते रहित ॥ नानक कोटि मध्ये कोऊ ऐसा अपरस ॥ २९३ ॥

कई कोटि राजस तामस सात्विक ॥ कई कोटि वेद पुराण सिमृत अर सासत ॥ कई कोटि कीये रत्न समुंद ॥ कई कोटि नाना प्रकारजंत ॥ कई कोटि कीये चिरजीवे ॥ कई कोटि गिर मेरु स्वर्ण थीवे ॥ कई कोटि यक्ष किन्नर पिशाच ॥ कई कोटि भूत प्रेत सूकर मृगांच ॥ सभते नेरे सभते दूर ॥ नानक आप अलिप्त रह्या भरपूर ॥ २९४ ॥

छिनमें नीच कीटको राज ॥ पारब्रह्म गरीब निवाज ॥ जांका दृष्टि कछु न आवे ॥ तिस ततकाल दहि दिशि प्रगटावे ॥ जाको अपनी करै बखशीश ॥ ताका लेखा न गिने जगदीश ॥ जीउ पिण्ड सभ तिसकी रास ॥ घट घट पूरण ब्रह्म प्रकाश ॥ अपनी बनित आप बनाई ॥ नानक जीवै देख बड़ाई ॥ २९५ ॥

जिसके अन्तर राज अभिमान ॥ सो नर्कपाती होवत श्वान ॥ जो जानै मैं यौवन वंत ॥ सो होवत विष्टा का जंत ॥ आपसको कर्मवंत कहावै ॥ जन्म मरण वहु योनि भ्रमावै ॥ धन भूमिका जो करै गुमान ॥ सो मूरख अंधा अज्ञान ॥ कर किरपा जिसके हिरदय गरीबी वसावै ॥ नानक इहां मुक्ति आगे सुख पावै ॥ २९६ ॥

धनवंता होय कर गर्वावै ॥ तृण समान कछु सङ्ग न जावै ॥ वहु लशकर मानुस पर करै आश ॥ पल भीतर ताका होय विनाश ॥ सभते आप जानै बलवंत ॥ छिनमें होय जाय भस्मंत ॥ किसे न बदै आप अहंकारी ॥ धर्मराय तिस करै खुआरी ॥ गुरुप्रसाद जाका मिटै अभिमान ॥ सो जन नानक दरगहि पर्मान ॥ २९७ ॥

नहिं कछु जन्मैं नहिं कछु मरै ॥ आपन चलिन आपही करै ॥ आवन जावन दृष्ट अनदृष्ट ॥ आज्ञाकारी धारी सम-

सृष्ट ॥ आपे आप सकल में आप ॥ अनिक जुगति कर थाप्यो थाप ॥ अविनासी नाहीं कछु खंड ॥ धारन धार रह्यो अखंड ॥ अलख अभेव पुरुष प्रताप ॥ आप जपाये तो नानक जाप॥२९८॥

टूटी गांढन हार गोपाला ॥ सर्वे जीया आपे प्रतिपाल॥सकल की चिंता जिस मन माहिं ॥ तिसते बिर्था कोई नाहिं ॥ रे मन मेरे सदा हरि जाप ॥ अविनाशी प्रभु आपे आप ॥ आपन कीया कछू न होय ॥ जैसो प्राणी लोचै कोय ॥ तिस बिन नाहीं तेरे कछु काम ॥ गति नानक जप एक हरि नाम ॥ २९९ ॥

मन मूरख काहे बिललाइये ॥ पूर्व लिखेका लिख्या पाइये ॥ दूख सूख प्रभु देवनहार ॥ अवर त्याग तू तिसै चितार ॥ जो कछु करे सोई सुख मान ॥ भूला काहे फिरे अयान ॥ कौन वस्तु आई तेरे संग ॥ लपट रह्यो रस लोभी पतंग ॥ राम नाम जप हिरदय माहीं ॥ नानक पत सेती घर जाहीं ॥ ३०० ॥

जाकी लीला की मिति नाहीं ॥ सकल देव हारे अवगाही ॥ पिता का जन्म क्या जानै पूत ॥ सकल परोई अपने सूत ॥ सुमति ज्ञान ध्यान जिन देय ॥ जन दास नाम ध्यावहि सेय ॥ तिहिं गुणमें जाको भरमाये जन्म मरे फिर आवे जाये ॥ ऊंचनीच तिसके अस्थान ॥ जेसा जनावे तेसा नानक जान॥३०१॥

नाना रूप नाना जाके रंग ॥ नाना भेष करहि इक रंग ॥ नाना विधि कीनो विस्तार ॥ प्रभु अविनाशी एकंकार ॥ नाना चरित करे छिन माहिं ॥ पूर रह्यो पूरन सभ ठाहिं ॥ नाना विधि कर बनत बनाई ॥ अपनी कीमत आपेपाई ॥ सभघट तिसके सभ तिसके ठाऊँ ॥ जप जप जीवे नानक हरि नाउँ ॥ ३०२ ॥

अपने जन का परदा ढाके ॥ अपने सेवकको सिरपर राखे ॥ अपने दासको [illegible] सेवकको नाम जपाई ॥

अपने सेवक की आप पतिराखै ॥ ताकी गति मति कोय न लाखै ॥ प्रभुके सेवक को कोई न पहूंचे ॥ प्रभु के सेवक ऊंच ते ऊंचे ॥ जो प्रभु अपनी सेवा लाया ॥ नानक सो सेवक दहि दिशि प्रगटाया ॥ ३०३ ॥

नीकी कीरीमें कल राखै ॥ भसम फरै लशकर कोटि लाखै ॥ जिसका श्वास न काढत आप ॥ ताको राखत देकर हाथ ॥ मानस यत्न करत वहु भांत ॥ तिसके कर्तव विरथें जात ॥ मारै न राखै अवर न कोय ॥ सर्व जिया का राखा सोय ॥ काहे शोच करो रे प्रानी ॥ जप नानक प्रभु अलख विडानी ॥ ३०४ ॥

निर्गुण आप सगुण भी ओही॥ कलाधार जिन सकली मोही ॥ अपने चरित प्रभु आप बनाये ॥ अपनी कीमत आपै पाये ॥ हरि बिन दूजा नाहीं कोय ॥ सर्व निरंतर एको सोय ॥ ओत प्रोत रम्या रूप रंग ॥ भये प्रकाश साधु के संग ॥ रच रचना अपनी कल धारी ॥ अनिक बार नानक बलिहारी ॥ ३०५ ॥

संग न चालै तेरे धना ॥ तू क्या लपटाहिं मूर्ख मना ॥ सुत मीत कुटुंब अरु वनिता ॥ इनते कहो तुम कवन सनाथा ॥ राज रंग माया विस्तार ॥ इनते कहो कवन छुटकार ॥ अश्व हस्ती रथ असवारी ॥ झूँठा दंभ झूँठ पासारी ॥ जिन दीये तिन बुझै न विगाना ॥ नाम विसार नानक पछताना ॥ ३०६ ॥

गुरु की मति तूं लेह अयाने ॥ भगति विना वहु डूवे स्याने ॥ हरि की भगति करो मन मीत ॥ निर्मल होय तुम्हारो चीत ॥ चरण कमल राखो मन माहिं ॥ जन्म जन्म के किल्विप जाहिं ॥ आप जपो अवरां नाम जपावो ॥ सुनत कहत रहत गति पावो ॥ सारभूत सत्य हरि को नाउँ॥सहज सुभाय नानक गुण गाउँ ॥३०७॥

सृष्ट ॥ आपे आप सकल में आप ॥ अनिक जुगति कर थाप्यो थाप ॥ अविनासी नाहीं कछु खंड ॥ धारन धार रह्यो ब्रह्मंड ॥ अलख अभेव पुरुष प्रताप ॥ आप जपाये तो नानक जाप॥२९८॥

टूटी गांढन हार गोपाला ॥ सर्वे जीया आपे प्रतिपाल॥सकल की चिंता जिस मन माहिं ॥ तिसते बिर्था कोई नाहिं ॥ रे मन मेरे सदा हरि जाप ॥ अविनाशी प्रभु आपे आप ॥ आपन कीया कछू न होय ॥ जैसो प्राणी लोचै कोय ॥ तिस बिन नाहीं तेरे कछु काम ॥ गति नानक जप एक हरि नाम ॥ २९९ ॥

मन मूरख काहे बिललाइये ॥ पूर्व लिखेका लिख्या पाइये ॥ दूख सूख प्रभु देवनहार ॥ अवर त्याग तू तिसै चितार ॥ जो कछु करै सोई सुख मान ॥ भूला काहे फिरै अयान ॥ कौन वस्तु आई तेरे संग ॥ लपट रह्यो रस लोभी पतंग ॥ राम नाम जप हिरदय माहीं ॥ नानक पत सेती घर जाहीं ॥ ३०० ॥

जाकी लीला की मिति नाहीं ॥ सकल देव हारे अवगाही ॥ पिता का जन्म क्या जानै पूत ॥ सकल परोई अपने सूत ॥ सुमति ज्ञान ध्यान जिन देय ॥ जन दास नाम ध्यावहि सेय ॥ तिहिं गुणमें जाको भरमाये जन्म मरै फिर आवै जाये ॥ ऊंचनीच तिसके अस्थान ॥ जेसा जनावै तेसा नानक जान॥३०१॥

नाना रूप नाना जाके रंग ॥ नाना भेष करहि इक रंग ॥ नाना विधि कीनो विस्तार ॥ प्रभु अविनाशी एकंकार ॥ नाना चरित करे छिन माहिं ॥ पूर रह्यो पूरन सभ ठाहिं ॥ नाना विधि कर बनत बनाई ॥ अपनी कीमत आपेपाई ॥ सभघट तिसके सभ तिसके ठाऊँ ॥ जप जप जीवै नानक हरि नाउँ ॥ ३०२ ॥

अपने जन का परदा ढाकै ॥ अपने सेवकको सिरपर राखै ॥ अपने दासको देय वड़ाई ॥ अपने सेवकको नाम जपाई ॥

अपने सेवक की आप पतिराखै ॥ ताकी गति मति कोय न लाखै ॥ प्रभुके सेवक को कोई न पहूंचे ॥ प्रभु के सेवक ऊंच ते ऊंचे ॥ जो प्रभु अपनी सेवा लाया ॥ नानक सो सेवक दहि दिशि प्रगटाया ॥ ३०३ ॥

नीकी कीरीमें कल राखै ॥ भसम फरै लशकर कोटि लाखै ॥ जिसका श्वास न काढत आप ॥ ताको राखत देकर हाथ ॥ मानस यत्न करत बहु भांत ॥ तिसके कर्तव विरथें जात ॥ मारै न राखै अवर न कोय ॥ सर्व जिया का राखा सोय ॥ काहे शोच करो रे प्रानी ॥ जप नानक प्रभु अलख विडानी ॥ ३०४ ॥

निर्गुण आप सगुण भी ओही॥ कलाधार जिन सकली मोही ॥ अपने चरित प्रभु आप बनाये ॥ अपनी कीमत आपे पाये ॥ हरि बिन दूजा नाहीं कोय ॥ सर्व निरंतर एको सोय ॥ ओत प्रोत रम्या रूप रंग ॥ भये प्रकाश साधु के संग ॥ रच रचना अपनी कल धारी ॥ अनिक बार नानक बलिहारी ॥ ३०५ ॥

संग न चालै तेरे धना ॥ तू क्या लपटाहिं मूर्ख मना ॥ सुत मीत कुटुंब अरु वनिता ॥ इनते कहो तुम कवन सनाथा ॥ राज रंग माया विस्तार ॥ इनते कहो कवन छुटकार ॥ अश्व हस्ती रथ असवारी ॥ झूँठा दंभ झूँठ पासारी ॥ जिन दीये तिन बुझे न विगाना ॥ नाम विसार नानक पछताना ॥ ३०६ ॥

गुरु की मति तूं लेह अयाने ॥ भगति विना बहु डूबे स्याने ॥ हरि की भगति करो मन मीत ॥ निर्मल होय तुम्हारो चीत ॥ चरण कमल राखो मन माहिं ॥ जन्म जन्म के किल्विप जाहिं ॥ आप जपो अवरां नाम जपावो ॥ सुनत कहत रहत गति पावो ॥ सारभूत सत्य हरि को नाउँ॥सहज सुभाय नानक गुण गाउँ ॥३०७॥

साजन संत करो यह काम ॥ आन त्याग जपो हरि नाम ॥ सिमर सिमर सिमर सुख पावो ॥ आप जपो अवरां नाम जपावो ॥ भगति भाव तरिये संसार ॥ विन भगति तन होसी छार ॥ सर्व कल्याण सुख निधि नाम ॥ बूडत जात पाये विश्राम ॥ सकल दुःख का होवत नास ॥ नानक नाम जपो गुण तास ॥ ३०८ ॥

प्रभु बखशिंद दीन दयाल ॥ भगत वत्सल सदा कृपाल ॥ अनाथ नाथ गोविंद गुपाल ॥ सर्व घटां करत प्रतिपाल ॥ आदिपुरुष कारण भर्तार ॥ भगत जनां के प्राण अधार ॥ जो जो जपै सो होय पुनीत ॥ भगतिभाव लावे मनहीत ॥ हम निर्गुणी यार नीच अजान ॥ नानक तुमरी शरण पुरुष भगवान ॥ ३०९ ॥

सर्व वैकुंठ मुक्ति मोक्ष पाये ॥ एक निमिष हरिके गुण गाये ॥ अनिक राज भोग वडाई ॥ हरि के नाम की कथा मन भाई ॥ बहु भोजन कापर संगीत ॥ रसना जपती हरि हरि नीत ॥ भली सुकरनी शोभा धनवंत ॥ हिरदय वसे पूर्ण गुरु मंत ॥ साधु संग प्रभु देहु निवास ॥ सर्व सूख नानक प्रकास ॥ ३१० ॥

आप कथें आप सुननोहार ॥ आपहिं एक आप निस्तार ॥ जो तिस भावे तां सृष्टि उपजाये ॥ आपणे भाणे लये समाये ॥ तुमते भिन्न नहीं कछु होय ॥ आपन सूत सब जगत परोय ॥ जाको प्रभुजी आप बुझाये ॥ सच्च नाम सोई जन पाये ॥ सो समदरशी तत्वका वेता ॥ नानक सकल सृष्टि का जेता ॥ ३११ ॥

जीव जंतु सब ताके हाथ ॥ दीन दयाल अनाथ को नाथ ॥ जिस राखे तिस कोय न मारे ॥ सो मूआ जिस मनों विसारे ॥ तिस तज अवर कहां को जाय ॥ सबशिर एक निरंजन राय ॥ जीय की जुगत जाके सब हाथ ॥ अंतर बाहर जानो साथ ॥ गुण निधान वे अंत अपार ॥ नानक दास सदा बलिहार ॥ ३१२

पूरे गुरु का सुन उपदेश ॥ पारब्रह्म निकट करपेख ॥ श्वास वास सिमरो गोविंद ॥ मन अंतर की उतरे चिंद ॥ आश अनित्य त्यागो तरंग ॥ संत जनां की धूरि मन मंग ॥ आप छोड विनती करो ॥ साधु संग अग्नि सागर तरो ॥ हरिधन के भर लेहु भंडार ॥ नानक गुरु पूरे नमस्कार ॥ ३१२ ॥

राग रामकली ।

जग दाता सोई भक्त बच्छल तिहुं लोयजी ॥ गुरु शब्द समावये अवर नजाने कोयजी॥अवरो न जाने शब्दगुरुके एक नामध्यावहे ॥ प्रसाद नानक गुरु अंगद परम पदवी पावहे ॥ आया हकारा चल्लन वारा हर राम नाम समाइया ॥ जग अमर अटल अतोल ठाकुर भक्ति ते हर पाइया ॥ हर भाण गुरु भाया गुरु जावे हर प्रभु पास जी ॥ सतगुरु करे हर पै वीनती मेरी पैज राखो अरदासजी ॥ पैज राखो हर जनहिं केरी हर देहु नाम निरंजनो ॥अंत चल दियां होय वेली यमदूत काल निखंजनो ॥ सतगुरु की वेनती पाई हर प्रभु सुनी अरदास जी ॥ हर धार कृपा सतगुरु मिलाया धन्य धन्य कहे शाबास जी ॥ मेरे सिख सुनो पुत्त भाईहो मेरे हर भाणा आउ मैं पासजी ॥ हर भाना गुरु भाइया मेरा हर प्रभु करे शाबासजी ॥ भक्त सतगुरु पुरुप सोई जिस हर प्रभु भाना भावये ॥ आनंद अनहद वजें वाजे हर आप गल मेलावये ॥ तुसी पुत्त भाई परवार मेरा मन वेखो कर निरजासजी ॥ धुर लिख्या परवाणा फिरे नाहीं गुरु जाय हरि प्रभु पास जी ॥ सतगुरु भाणे आपणे बह परवार सदाइया ॥ मत मैं पिच्छे कोई रोवसी सो मैं मूल न भाइया ॥ मित्त पहिंजै मित्त विगसै जिस मित्तकी पैज भावये ॥ तुसीं वीचार देखो पुत्त भाई हर सतगुरु पैनावये ॥ सतगुरु

परतक्ष होंदे वह राज आप टिकाइया ॥ सब सिख बंधप पुत्त भाई रामदास पैरीं पाइया ॥ अंते सतगुरु बोल्या में पिच्छे कीर्तन करो निर्वाण जी ॥ केशो गुपाल पण्डित सद्दो हर हर कथा पढ़े पुराण जी ॥ हर कथा पढ़िये हर नाम सुनिये वेबान हर रंग गुरु भावये ॥ पिंड पत्तल किरया दीवा फुल्ल हर सर पावये ॥ हर भाइया सतगुरु बोल्या हर मिल्या पुरुष सुजानजी ॥ रामदास सोढी तिलक दीया गुरु शब्द सच्च नीशानजी ॥ सतगुरु पुरुष यह बोल्या गुरु सिखां मन्न लई रजायजी ॥ मोहरी पुत्त सन्मुख होइया रामदासहिं पैरों पाय जी ॥ सभ पवे पैरी सतगुरु केरी जित्थे गुरू आप रख्या ॥ कोई कर बखीली निभे नाहीं फिर सतगुरु आन निवाइया ॥ हर गुरुहिं भाना दई बड़ियाई धुर लिख्या लेख रजाय जी ॥ कहे सुंदर सुनो संतो सभ जगत पैरी पाइया ॥ २१४ ॥

इति श्रीग्रंथसाहिबके पद संपूर्णम् ।

राग कान्हरा ।

ल्यावो मैया मोहिं चंद खिलौना ॥ लाख योजन पर चंद वसतहै कैसे आवे लाला नंदजीके भौना ॥ जल का थार भर लाई नँदरानी लीजो श्याम तुम चंद खिलौना ॥ जल में हाथ डारे नंदनंदन हिले चंद हँसे श्याम सलोना ॥ सूरदास प्रभु तुमरे दरशको खेल कियो अचरज मन भौना ॥ २१५ ॥

राग देश ।

रूखड़ी न खाइयो स्वामी रूखड़ी ना खाइयो ॥ हाथ हमारे विरत कटोरी अपना बांटा लेजाइयो ॥ दौड़े दौड़े जात स्वामी रोटड़ियां मुख माहीं ॥ हमतो दौड़ पहुँच न साकें मेल लेहु गोसाईं ॥ घट घट वासी सर्व निवासी पलमें भेष बँदाया ॥ कूकर ते ठाकुर ह्वे प्रगटे नामदेव दर्शन पाया ॥ २१६ ॥

एक भरोस जानकी वरको ॥ वस प्रभु धाम नाम भज सुख कर लीला दृग उर शारँग धरको ॥ श्रवण कथा शिर नाय स्वामि पद कारज राम जहांलग करको ॥ भाल तिलक भुज अंक बाण धनु तुलसीदास विभूषण गर को ॥ कर्म योग वेदांत सांख्य मन तत्त्व विचार निरक्षर क्षरको ॥ ज्ञान विराग त्याग तप संयम सब फल सार भजन रघुवर को ॥ नवनिधि आठ सिद्धि नाना सुख त्याग आश विश्वास अपरको ॥ वैजनाथ बलि जाउँ सुयश सुन सुरतरु कर रघुनाथ कुँवरको ॥ ३१७ ॥

कवित्त।

करीहै गरीबी तो विभीषणने राज पायो रावण ने करी खुदी खोई खूबी जानकी ॥ ध्रुवने गरीबी के अटलपद राज पाये केशी कंस छेद्यो सुध ना रही गुमानकी ॥ द्रौपदी गरीबी करी नगन न होन पाई पचि हारे कौरो देख लीला भगवान की ॥ गरीबी औ बंदगी की चारों वेद स्तुति करें कहे को गरीबी यह बीबी है जहान की ॥ ३१८ ॥

राग कान्हरा।

दीनबंधु दीनों की हरते थे पीर ॥ अवतो मैं जाना सोयो मध्य क्षीर ॥ वहां पर जो बैठेहो लाकरके ध्यान् ॥ ताते विसारीहै तारन की बान ॥ पौरुष पुराना कि बूढे भये ॥ सभी बात छोडी कि मौनी भये ॥ अगर तुमने यह बात समझी नहीं ॥ कहूं गरुड उडकर गयोहै कहीं ॥ ताते हो बैठेहो बाहन बगैर ॥ मेरी बेर एती क्यों लाई है देर ॥ रावण को मारा सो वल है कहां ॥ समुद्र को बांधा सो दल है कहां ॥ कुम्भकर्ण मारा किसी तौर से ॥ कुफर लोग कहते कि प्रभु और से ॥ औरन को तारा था होकरके शेर ॥ मेरी वेर क्यों एती लाई है देर ॥ ३१९ ॥

राग मलार।

मेरे ही आंगन वरसें ॥ रिम झिम वरसें मेरे आंगन मिलने को जियरा तरसें ॥ चतुर सुघर सुंदर वालम को नित चाहत दरसें ॥ नजरू के प्रभु सुधहूं न लीनी कहि न जात कछु हरसें ॥ ३२० ॥

राग रेखता।

हम होरहीं अधीन सखी श्याम नहीं आये ॥ सुनतेही टेर धाये गज डूबते वचाये ॥ अब मेरी वार स्वामी कछु काम ने भुलाये ॥ प्रहलादको उवारयो नरसिंहरूप धारयो ॥ शत्रुओंको घेरा दलमें भक्तों के काम सारयो ॥ नारायण वाकी महिमा काहू न पार पाये ॥ नंदजूके बहुत प्यारे सिर मोर मुकुट धारे ॥३२१॥

कवित्त।

जात पाँत न्यारी करी हमरी तुम्हारी नाथ केवट को कर्म एक नीके कै निहारिये ॥ तुम तो उतारो भवसागर परमारथ, सरिता उतार हम कुटुंब गुजारिये ॥ नाईते न नाई लेत धोवी ना धुलाई लेत देके उतराई मोहूँ जात ना विगारिये ॥ पेशा अधमाई जान आपको उतार दीनो थारे घाट आए नाथ मोहूं को उतारिये ॥ ३२२ ॥

गुज़ल।

श्रीकृष्णचंद्र महाराजने गोकुल का आना छोड दिया ॥ वंशी वट यमुना तट का अब ठीक ठिकाना छोड़ दिया ॥ निशदिन प्यारी व्रज वासिन वे तटपर आना छोड दिया ॥ मिश्री मेवा भोग लगावें माखन खाना छोड़ दिया ॥ कंस मार भये अब राजा धेनु चराना छोड़ दिया ॥ रास मंडल सब भूल गई हँसना इतराना छोड़ दिया ॥ निशदिन व्रज वन के पंछी पानी

अरु दाना छोड़ दिया ॥अबतो प्रीति करें कुबरी सँग वंशी का बजाना छोड़ दिया ॥ खुशरंग प्राण रहें अब कैसे मुखड़ा दिखलाना छोड़ दिया ॥ ३२३ ॥

राग पीलो ।

लालन प्यारो झूलत वट संकेत ॥ सँगझूलत वृषभानु नंदिनी ललिता झूटे देत ॥ रमक झमक झूलत पिया प्यारी जो चाहें सुख लेत॥ कुंभनदास लालन गिरिधर की सखियां बलैयां लेत॥३२४॥

राग कान्हरो ।

आज नीकी बनी श्रीराधिका नागरी ॥ रस भरे अधरन मधुभरे नैना गात सुकुमार घटा छारही रूपकी ॥ सुंदर कपोलन छूट रही अलकाँ माथेको टीको अधिक बन्यो री आली ॥ नंददास की छबीलीसी अति प्यारी श्याम मनोहर पायो सुहाग री ॥ ३२५ ॥

मेरे मन बस गयो सीताराम ॥ जटा मुकट मुनि भेप धरयो है कठिन धनुप लिये सारंगपान ॥ गौर वर्ण सिया जनक नंदनी रघुवर हैं सुंदर घनश्याम॥ सरयू के तीर अयोध्या नगरी विहरत हैं लक्ष्मण अरु राम ॥ आसानंद कहे कर जोरी चौंसठ घडी आठों याम ॥ ३२६ ॥

टुक देइ ग्वारन मक्खन कुडे ॥ थोडा देनीयां वहुता मंगदा छिक्यों लाहुदा ढक्कन कुड़े ॥ नौ लख धेनु लवेरी घर नंददे अजे भी आउंदा तक्कन कुडे ॥ त्रैलोकीदा ठाकुर मंगदा मखनेदा की रक्खन कुडे ॥ मीराके प्रभु गिरधर नागर चरण कमल चित रक्खन कुडे ॥ ३२७ ॥

राग कल्याण ।

बांके सांवरियाने वेरी मोहिं आनके ॥ हौं जो गई यमुना जल भरने मारग रोक्यो मेरो आनके ॥ वृन्दावन की कुंज गली में मुरली वजावे आन तान के ॥ मीराके प्रभु गिरधर नागर प्रीति पुरातन जानके ॥ २२८ ॥

राग पीलो ।

व्रजवासी कन्हैयालाल तुमको मेरी स्वामी हो वंदना ॥ राधाके हाथ मेंहदी सोहे लालन के हाथ हो कंगना ॥ प्यारी के माथे विंदी सोहे लालन के मस्तक हों चन्दना ॥ चलो री सेयो रल देखन जाइये अलकां वालेदा दर्शन पाइये जहां वसें नन्दको नन्दना ॥ प्यारी ने इक टोना कीना अलकांवाले नूं वस कर लीना गूंद ल्याई मालन हो वंगना ॥ २२९ ॥

मान मनायो राधा प्यारी ॥ मानसरोवर मान कर वेठी कुंजन कुंज लता री ॥ दोऊ कर जोरे करत विनती संग लिये ललिता री ॥ पुरुषोत्तम प्रभु तुमरे दरश को में तो शरण तिहारी ॥ २३० ॥

राग कान्हरो ।

मेरो यासों लागा लाग रह्यो री मोहन मीत कन्हेया ॥ इस गिरिधर की या छवि ऊपर वेर वेर वल गेया ॥ सुंदर वदन कमल दल लोचन अलकां अलक छवेया ॥ कृष्णदास प्यारी वश मोहन मुरली के सरस वजेया ॥ २३१ ॥

मेरी गति जानकी जीवन राम ॥ चौरासीको भटकत आयो कहीं न पायो विश्राम ॥ यही लोक परलोक हमारा चरण कमल नित ध्यान ॥ जन माधोके तन मंदिर में विराजत सीताराम ॥ २३२ ॥

राग परज ।

राघोजू महराज सांवल बनरा ॥ अजब बन्यो तिहारी अँखियन कजरा दशरथ सुत महाराज ॥ रत्न मौर केसरिया वागो और विविध मणि साज ॥ रामसखे लख रूप अटक मन तन मन रही न सम्हार ॥ ३३३ ॥

राग विहाग ।

ऐसी मोसो कीनी री मा नन्द को छैल अतिही ढीठ ॥ हौं जो गई यमुना जल भरने आज ॥ संग की जो हमरी पलमें बिछोड दीनी भुज भर मोहूँ गर लगावै और कहा कहूँ मोहिं आवत लाज ॥ जब हौं करी पुकार इधर उधर कर निहार लपट झपट करके गह्यो मोको डर देन लाग्यो ॥ भूपण बिखार दीने हौं तो वेहाल आली भलो री भलो थारो ब्रज को राज ॥ ३३४ ॥

राग जैजैवंती ।

कारी रैन दुख दैन पल पल तो सतावे मैन कारे विन भैया कारी करो मोरी कारी ॥ आप कारे निशि कारी कांधे कामरि-या कारी कोकिला पुकारी कारी पवन बंध डारी ॥ कारे भुजंग डसी रोम रोम विप राची विरहो की मरोर डाढ़ी हाय हाय करन लागी ॥ सूरदास यों विचारी कारे कृष्ण हो विहारी कारेजी सों कहियो जाय वन्दना हमारी ॥ ३३५ ॥

ऐसी तो व्याकुल वाजी जियामें उपाधि लागी ऐसी आवत मनमें लीजिये बनवास री ॥ नादकी सरोद सुनी सुध बुध न रही मोरी बांस की बँसुरिया सोतो भरन लागी श्वास री ॥ कुलहुँ की लाज गई लाज हूँ की लाज गई सूख गयो माँस मेरो निकस आई पांसुरी ॥ ढूँढके कटाय डारूं सभी बाँस बनके उपजेंगे न बाँस फेर बाजेगी न बांसुरी ॥ ३३६ ॥

राग पीलो।

मोहना चलो चलो कदमकी छैयां रे कदमकी छैयां ॥ मोरे डारो गलेमें बैयाँ ॥ राधा रानीजी तोरे हारहिये में सोहे री हिये सोहे ॥ थारी चितवन मेरा मन मोहे ॥ मोहना तूतो यमुना निकट भयो ठाढो रे निकट भयो ठाढो ॥ मोसे नेहा लगायो अति गाढो॥ राधा रानीजी तूतो यमुना निकट भई ठाढी री निकट भई ठाढी ॥ मोरी लागी प्रीति अति गाढी ॥ मोहना तोरे कान कुंडल गल माला रे कुंडल गल माला ॥ दोऊ नेना बने विशाला ॥ राधा रानीजी तूतो बडी ब्रजकी सखियां ॥ री ब्रजकी सखियाँ मोरी लागी निमानी अँखियां ॥ मोहना तूतो चन्द्रसखीको प्यारो रे सखी को प्यारो रे नन्दजूको राजदुलारो ॥ २२७ ॥

राग सोरठा।

महाराज धनधन कुवरी ॥ इस कुवरीने जादू कीना मेरा श्याम वश करलीना ॥ सोलासो गोपी सुंदर इकते इक कहाँ गई उनकी बुध री ॥ ईख छोड प्रभु आक चचोरत करीम कहत वृषभानुकी सुता री ॥ २२८ ॥

राग कान्हरा।

गही दाम श्याम मथन देत नाहिं दहियां ॥ यशुदा दधि मथन लागी लालजीको भूँख लागी महरी थन उमंग आये दूध धार बहिया ॥ नन्दलाल मथनी गही नन्दनारि मगन भई देख देख लालजीको प्रेम आँसू वहिया ॥ श्याम सुन्दर गोद लिये अंग अंग मग्न भई दीनी जब चूँची मुख आनँद हो रहियां ॥ जाको शिव ध्यान लावें ब्रह्मा नहिं पार पावें धन्य धन्य मयाराम गोकुलकी सैयां ॥ २२९ ॥

राग सोरठ ।

रघुनाथ नाथ मेरे ॥ मैं वर्ण न सकों गुण तेरे ॥ प्रथम मीन रूप प्रभु धारचो ॥ शंखासुर गर्व निवारचो ॥ ब्रह्माको वेद जो दीने ॥ सब काज सुरनके कीने ॥ प्रभु कच्छप रूप बनायो ॥ मंद्राचल पीठ धरायो ॥ सूकर नरहरि प्रभु धारा ॥ प्रहलाद भक्त उबारा ॥ तुमहो बलि वामन स्वामी ॥ तुम परशुराम अभिमानी ॥ तुमहो रघुवंश उजागर ॥ भये कृष्ण नन्दजूके नागर ॥ बुध कल्की स्वरूप तुम्हारा ॥ सभ संतनके खवारा ॥ अद्भुत गति नाथ तुम्हारी ॥ भज राम सखे बलिहारी ॥ ३४० ॥

राग कान्हरा ।

गाइये महारानी श्री राधे ॥ जाको नाम नेक मुख निकसत विनशत कोटि कोटि अपराधे ॥ जाको ध्यान धरत योगी जन शिव विरंचि रहे लाय समाधे ॥ याहीते ब्रजराज युगल वर लागो रहत नेह निशिदिन राधे ॥ ॥ ३४१ ॥

राग देश ।

श्रीवृंदावन वास दीजिये यही हमारी आशा है ॥ यमुना तीर छाय माधुरी जहां रसिकों का बासाहै ॥ सेवा कुंज मनोहर सुंदर इक रस बारोंमासा है ॥ ललित किशोरीको दिल बेकल युगल रूप रस प्यासा है ॥ ३४२ ॥

राग सोरठ ।

मोहिं लगे री श्यामके नयन बान॥ मानो तिरछी कर भौंहें कमान ॥ भई घायल बिसर गयो खान पान ॥ वाके मोर मुकुट गरगुंजमाल ॥ अधरन पै वंशी रसाल ॥ नेक सुख न रही वाकी सुनत तान ॥ वा दिनते नहीं मेरे दिलको चैन ॥ वाकी साँवरी सूरत बसी मोरे नैन ॥ कहे सूरदास कब मिलोगे कान्ह ॥ ३४३ ॥

देखो आली ठाढे कदमकी छैयां ॥ नँदनन्दन वृपभानु नंदिनी दोउ दरहे गलबैयां ॥ भूल गयो उन गगर उठाइवो बिसर गई इन गैयां ॥ ललित किशोरी प्रीति बढी अति दोउ जन लेत बलैयां ॥ ३४४ ॥

राग वसंत।

देखके जाना फाग मोहन प्यारे वंशी वारे ॥ पीत वसन सव सखी बनी हैं सब विध पीत सुभाग ॥ कंचनकी पिचकारी बनी है भरी रंग रस भाग ॥ उड़त गुलाब अबीरके बादर गावत बहु विध राग ॥ नाचत सकल उमंग प्रेम रस बढ्यो जात अनुराग ॥ दास गुलाब देहु चतुराई निज पदमें अनुराग ॥ ३४५ ॥

राग कान्हरा।

मैं तुम्हरी शरणागत प्यारे ॥ परमानंद मुकुंद परातम दीनानाथ सकल भय टारे ॥ दामोदर अच्युत अघनाशक पाप हरन तब नाम मुरारे ॥ व्यापक एक अखंड अगोचर नाम न रूप प्रकाशन वारे ॥ दास गुलाब बसो चित हमरे चार पदारथ याहि मँझारे ॥ ३४६ ॥

गज़ल।

दिला यक दम न हो गाफिल य दुनिया छोड़ जाना है ॥ बगीचे छोडकर खाली जमीं अंदर समाना है ॥ बदन नाज़ुक गुलों जैसा जो लेटे सेजफूलों पर ॥ होगा एक दिन मुरदा यही कीडों ने खानाहै॥न बेली होवगा भाई न बेटा बाप ना माई ॥ क्या फिरता है सैदाई अमल ने काम आना है ॥ फरिश्ते रोज करते हैं मुनादी चार कुंटों में ॥ महल्ला ऊनियों वाले जहां को छोड़ जाना है ॥ प्यारे नजर कर देखो पड़ी जो माड़ियां खाली ॥ गये सभ

छोड़ यह फानी दगाबाजी क बाना है ॥ गलत फहमी यहै तेरी नहीं आराम इस जग में ॥ मुसाफर बेवतन है तू कहां तेरा ठिकाना है ॥ प्यारे नजर कर देखो न खेशो में कोई तेरा ॥ जनो फरजंग सभ कूकें किसे तुझको छुड़ाना है ॥ तमामी रैन गफलत में गुजारें चारपाई पर ॥ गुजारें रोज खेलों में वृथा आयू गँवाना है ॥ य होंगे सर बसर लेखे हशरके रोज ऐ गाफिल ॥ य दोजख बीच वद अमलीसे तन अपना जलाना है ॥ ३४७ ॥

राग देश ।

माल जिन्हेंाने जमा किया बनजारे हारे जाते हैं ॥ भाई बंधु कुटुम्ब कबीला दावा करकर खाते हैं ॥ जभी मुसाफर मारा जायगा सभी अलगहो जाते हैं । तू क्या जाने सोई का रस्ता वाटर मारग बहुत से हैं ॥ इस रस्तेके बीच मुसाफर अकसर मारे जाते हैं ॥ ऊंचे नीचे महल बनाये बैठ रहे चौवारे में ॥ जागत रहना सोना नाहीं हाथ पसारे जाते हैं ॥ अग्नि पलीता राज दंड अरु चोर मूस ले जाते हैं ॥ राम नाम पर कभी न दीना माल जवाईं खाते हैं ॥ भाई बन्धु संबंधी सारे सभी अलग होजाते हैं ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो अपने हाथ जलाते हैं ॥ ३४८ ॥

जरा टुक सोच ऐ गाफिल क्या दमका ठिकानाहै ॥ निकल जब यह गया तन से तो सभ अपना बिगाना है ॥ मुसाफर तू है और दुनिया सरा है भूल मत गाफिल ॥ सफर परलोक का आखिर तुझे दरपेश आना है ॥ लगाता है अबस दौलत पै क्यों तू दिल को अब नाहक ॥ न जावे संग कछु हरगिज यहीं सभ छोड जानाहै ॥ न भाई बंधु है कोई न कोई आशना अपना ॥

खूबी गौर कर देखा तो मतलबका जमानाहै ॥ रहो लग याद में हकके अगर अपनी शफ़ा चाहो ॥ वली दुनिया के धंधों में हुआ तू क्यों दिवाना है ॥ ३४९ ॥

राग माँझ।

दुनियाँ झूँठी ते साईं सच्चा पर दुनिया प्यारी लग्गे ॥ सच्च छोड क झूठ व्याझे न्याउं प्या तेरे अग्गे ॥ घर जिहिंदे बिच दुशमन होवन ओह किचरक ताईं तग्गे ॥ संतरैन ओह कदी न मिलमन जो दुनियाँ दे ठग्गे ॥ ३५० ॥

दुनियाँ झूँठी ते लोकभी झूँठे सब झूँठे दावे करदे ॥ सेई दुनियाँ जेढी साथ न जावे तिस पिच्छे लड २ मरदे ॥ खास खजाना अंतर तेरे ढूँढे हर दर दर दे ॥ संतरैनि ओह कदीं न मिलनी जो दुनियाँ दे वरदे ॥ ३५१ ॥

बांकियां पग्गां ते टेढीयां चालां राह न छड़डे कदाईं ॥ आप छड्डे तां सब कुछ पावें ओड़क एन्हां रहना नाहीं ॥ मुडकेदे तू पच्छो तासीं जद ताण न रहसी बाहीं ॥ संतरैन तूं समझ सवेरे नहीं रोसे देदे छाढाई ॥ ३५२ ॥

एह जुवानी तेरी मस्त दिवानी कुछ अग्गे दा करी तोसा ॥ कई जुवानियां तैं अग्गे छड्डियां हुण इसदा कौन भरोसा ॥ मिल सतगुरु कम्ल करले झवदे पकड़ वहीं कोई गोशा ॥ संतरैन ढिल्ल तेरी वल्लो रब्ब नहीं तेरे नाल रोसा ॥ ३५३ ॥

अज्जदा कम्मन चर्ची कल्हते की जानां कल्ह केहा ॥ संता नाल गुजरान जो थीवे भावें खाके वेहा त्रेहा ॥ हुणदियां भुल्लया नूं ठौर न को ना कोई सुख सुनेहा ॥ संतरैन हुण ढिल्ल न करिये तेनूं लक्खां दी गल्ल एहा ॥ ३५४ ॥

राग विहाग ।

टुक बूझ कवन छिप आया है ॥ इक नुकते में जो फेर पडा तब ऐन गैन का नाम धरा जब मुरशद नुकता दूर किया तब ऐन ऐन कहाया है ॥ तुसीं इलम किताबां पढदेहो केहे उलटे मैंने करदेहो बेमूजब ऐवें लडदेहो केहा उलटा वेद पढ़ाया है ॥ दूई दूर करो कोई सोर नहीं हिंदू तुरक सैयद कोई होर, नहीं सब सांधु लखों कोई चोर नहीं घट घट में आप समाया है ॥ ना मैं मुल्ला ना मैं काजी ना मैं सुन्नी ना मैं हाजी बुल्हा शोह नाल लाई बाजी अनहद शब्द बजाया है ॥ ३५५ ॥

राग गौरी ।

राम भज गूजरिये ऐसा दही बरोल ॥ मन कर मट्टकी तन कर मथनियाँ पाले प्रेमकी डोर ॥ राम नाम का माखन कढले छाँछ छाँछ दे छोड ॥ यह बेला तेरे हाथ न आवे खरचेगी लाख करोड ॥ दुनीदास वड़भागन गुजरी साध संगत ना छोड़ ॥ ३५६ ॥

ग़ज़ल ।

कल्ह हवस इस तरह से तरगीब देती थी मुझे । खूब मुलके रूम है और सर जमीने रूस है ॥ इतने में इबरत पुकारी इक तमाशा मैं तुझे ॥ चल दिखाऊं तू जो सैदे आज का महबूस है ॥ मैंने जाना था कि लेजावेगी बुस्तांकी तरफ ॥ या किनारे आबे खुर्रम या बियाबां की तरफ ॥ ले गई इकबारगी गोरे गरीबां की तरफ ॥ जिस जगा जानो तुमन्ना हरतरह मायूसहै ॥ मरकदे दो तीन दिख-लाकर लगी कहने मुझे ॥ यह सिकंदरहै य दाराहै य कैकाऊस है॥ यह वो है जिसको कि हफ्त अकलीम का उतरा था ताज ॥

खूबी गौर कर देखा तो मतलबका जमानाहै ॥ रहो लग याद में हकके अगर अपनी शफा चाहो ॥ वली दुनिया के धंधों में हुआ तू क्यों दिवाना है ॥ ३४९ ॥

राग माँझ।

दुनियाँ झूँठी ते साईं सच्चा पर दुनिया प्यारी लग्गे॥ सच्च छोड क झूठ व्याझे न्याउं प्या तेरे अग्गे ॥ घर जिहिंदे विच दुशमन होवन ओह किचरक ताईं तग्गे ॥ संतरैन ओह कदी न मिलमन जो दुनियाँ दे ठग्गे ॥ ३५० ॥

दुनियाँ झूँठी ते लोकभी झूँठे सब झूँठे दावे करदे ॥ सेई दुनियाँ जेढी साथ न जावे तिस पिच्छे लड २ मरदे ॥ खास खजाना अंतर तेरे ढूँढे हर दर दर दे ॥ संतरैनि ओह कदीं न मिलनी जो दुनियाँ दे वरदे ॥ ३५१ ॥

बांकियां पग्गां ते टेढीयां चालां राह न छड्डे कदाईं ॥ आप छड्डे तां सब कुछ पावें ओड़क एन्हां रहना नाहीं ॥ मुडकेदे तू पच्छो तासीं जद ताण न रहसी वाहीं ॥ संतरैन तूं समझ सवेरे नहीं रोसे देदे छाढाई ॥ ३५२ ॥

एह जुवानी तेरी मस्त दिवानी कुछ अग्गे दा करी तोसा ॥ कई जुवानियां तैं अग्गे छड्डियां हुण इसदा कौन भरोसा ॥ मिल सतगुरु कम्ल करले झवदे पकड़ वहीं कोई गोशा ॥ संतरैन ढिल्ल तेरी वल्लो रब्ब नहीं तेरे नाल रोसा ॥ ३५३ ॥

अज्जदा कम्मन घत्तीं कलहते की जानां कलह केहा ॥ संता नाल गुजरान जो थीवे भावें खाके वेहा त्रेहा ॥ हुणदियां भुल्लया नूं ठोर न को ना कोई सुख सुनेहा ॥ संतरैन हुण ढिल्ल न करिये तेनूं लक्खां दी गल्ल एहा ॥ ३५४ ॥

राग बिहाग ।

टुक बूझ कवन छिप आया है ॥ इक नुकते में जो फेर पडा तब ऐन गैन का नाम धरा जब मुरशद नुकता दूर किया तब ऐन ऐन कहाया है ॥ तुसीं इलम किताबां पढदेहो केहे उलटे मैंने करदेहो बेमूजब ऐवें लडदेहो केहा उलटा वेद पढ़ाया है ॥ दूई दूर करो कोई सोर नहीं हिंदू तुरक सैयद कोई होर, नहीं सब सांधु लखों कोई चोर नहीं घट घट में आप समाया है ॥ ना मैं मुल्लां ना मैं काजी ना मैं सुन्नी ना मैं हाजी बुल्हा शोह नाल लाई बाजी अनहद शब्द बजाया है ॥ ३५५ ॥

राग गौरी ।

राम भज गूजरिये ऐसा दही बरोल ॥ मन कर मटुकी तन कर मथनियाँ पाले प्रेमकी डोर ॥ राम नाम का माखन कढले छाँछ छाँछ दे छोड ॥ यह बेला तेरे हाथ न आवे खरचेगी लाख करोड ॥ दुनीदास बड़भागन गुजरी साध संगत ना छोड़ ॥ ३५६ ॥

ग़ज़ल ।

कल्ह हवस इस तरह से तरगीब देती थी मुझे । खूब मुलके रूम है और सर जमीने रूस है ॥ इतने में इबरत पुकारी इक तमाशा मैं तुझे ॥ चल दिखाऊं तू जो सैदे आज का महबूस है ॥ मैंने जाना था कि लेजावेगी बुस्तांकी तरफ ॥ या किनारे आबे खुर्रम या बियाबां की तरफ ॥ ले गई इकबारगी गोरे गरीबां की तरफ ॥ जिस जगा जानो तुमन्ना हरतरह मायूसहै ॥ मरकदे दो तीन दिख-लाकर लगी कहने मुझे ॥ यह सिकंदरहै य दाराहै य कैकाऊस है॥ यह वो है जिसको कि हफ़्त अकलीम का उतरा था ताज ॥

न अंत विसार ॥ ईहां तो दुःख वहुतेरे हैं किसनूं सुनावां रोय ॥ गरीबजन की विनती मैं फिर न आऊं इस लोय ॥ ३६२ ॥

राग गौरी ।

उड़ रे परवेरू दिन तो रहगया थोड़ा ॥ उड़त्यां उड़त्यां जन्म गवाँया जहां शहर ताहाँ डेरा ॥ चुन चुन कंकर महल वनाया मूरख कहे घर मेरा ॥ ना घर तेरा ना घर मेरा चिड़ियां रैन वसेरा ॥ शाह हुसेन फकीर साईंदा जंगल होगया डेरा ॥ ३६३ ॥

राग धनाश्री ।

धृग धृग नर नारी नाम विना॥नाम विना हरिके भजन विना॥ विधवा नारि जैसे करत शिंगार ॥ शोभा न पावे विन भरतार ॥ तेग विना कैसे रजपूत ॥ नाम विना कैसे अवधूत ॥ जिस कुल में नहिं हरिको दास ॥ सो कुल जानो साधो भूत पिशाच ॥ कहे कवीर सुनो अटल प्रताप ॥ तन मन धन संतन परवार ॥ ३६४ ॥

राग प्रभाती ।

एक घड़ी में नाम न जप्या ऐवें सारी उमर विहानी ॥ रल मिल सैयां पनिये न चलियां जिन्हां ने भरया सिर पर धरया में तां कुचज्जी डोले हत्थ नलाया खाली घड़ा लेके घर नूँ सिधानी ॥ रल मिल सैयां तिंजन लाये जिन्हा कत्ते दाज रँगाये मैंतां कुचज्जी चरखे दंत न पाया ना मेरा पेटा ना मेरी तानी॥रौले में आये रौले में चल्ले समझ कुचज्जीये तूं होजा स्यानी ॥ बुल्लेशाह रल मिल सैयां पत्तन मल्ले जिन्हांने मल्ले कर्म सवल्ले इकतां लंघ गैयां कर कर हल्लेम तां खड़ी हां विच न मानी ॥ ३६५ ॥

माये खेलन दे दिन चारनी फेर खेलन तेरे किन आवन ॥ चरखा भन्न परोटरे जारूं पूनियां रुलियां वजार ॥ कोटी सुरेरा भन्ना

बीत गयेहैं सरग अपार ॥ रावण मरत मानधातासे राजे मरे हजार॥ जे सुर नर मुनि देखन आवें गिरेंगे सभ सिर भार ॥ चन्द सूर सरिता पति नाशें हमरो कौन विचार ॥ दास गुलाब विराग भयो मन झूँठो सभ संसार ॥ ३६६ ॥

राग देश ।

भाई तैंनें सितम गुजारा रे ॥ दिलसे रामविसारा ॥ बालापन औ तरुण अवस्था जब नहिं राम सँभारा ॥ बृद्ध भया कफ वायने घेरा थकत भया हंकारा ॥ महल गाडियां छिनमें छीने बाँध बाट पर डारा रे ॥ शाह से सभ भये बटेऊ लुटन लगा घर वारा रे ॥ धरे ढके को पूछन लागे कुटुँब कबीला सारा रे ॥ मर्म कर्म की कोई न पूछे दगाबाज संसारा रे ॥ नंगे पैर कटीला रस्ता ज्यों खांड़े की धारा रे ॥ विश्वामित्र महबूब साहिब को भजले वारं-वारा रे ॥ ३६७ ॥

राग कालिंगड़ा ।

जो तूं राम नाम चित धरतो ॥ अबको जन्म आगलो तेरो दोऊ जन्म सुधरतो ॥ नफा होत साधकी सङ्गत मूल गांठ ते न टरतो॥ तंदुल घृत सँवार हरजूको सन्त परासो करतो ॥ यमको त्रास सभी मिट जातो भगत नाम तेरो परतो ॥ सूरदास वैकुंठ पन्थमें कोऊ न फेंट पकरतो ॥ ३६८ ॥

राग गौरी ।

श्यामकी वंशी ना दूंगी ॥ श्यामकी वंशी पाई जो वन में राख छपाऊं अपने तनमें कुबरी सोच करेगी मनमें कहु कुंवर में क्या न करूंगी ॥ हटो सखी मोहिं जिन समझावो नहीं तो विष में खाय मरूंगी ॥ अपने तनको घायल करूंगी एककी लाख करोड़ कहूंगी॥ प्रीति छिपाई छिपत न मोहन अब लागे कुबरी सँग सोहन तुमतो

लागे हमको कोहन हर के द्वार पुकार करूंगी ॥ इत ते आवत उत चमकावत इत उत कछु दर्श दिखावत जैसा नाच नचाया हमको तैसा नाच नचा छोड़ूँगी ॥ मुराद अलीकी साँची बात ना कोई छल बल ना कोई घात प्रभुको पाया अपने हाथ कहो सखी में क्या करूंगी ॥ ३६९ ॥

ग़ज़ल ।

दरश अपना जो तुम रघुवर दिखादोगे तो क्या होगा ॥ जो तुम भानु सो कुल भानु तेरा भानुका सा मुखड़ा ॥ सकुचा है मन कमल मेरा खिलादोगे तो क्या होगा ॥ अब इस संसार सागरमें मेरी नैया जो बहती है ॥ निकट तटके जो तुम रघुवर लगादोगे तो क्या होगा ॥ इसी संसार रैजनी में मुझे आते बड़े स्वपने ॥ सोये गफलतमें मुझको तुम जगादोगे तो क्या होगा ॥ लगीहै प्यास खुशदिलको तेरे दर्शन की है भगवन् ॥ बरसा कर स्वाती की बूँदें मिटादोगे तो क्या होगा ॥ ३७० ॥

राग होरी ।

मन मोहन रिझवार री तेरे नयन सलोने ॥ तू अलबेली आन गामकी अबहीं आई है गोने ॥ सिखवन देहों सिखावन लेहों पग जिन धरत अगोने ॥ अबकी होरी तेरे बगरमें केते कौतुक होने ॥ दया सखी या ब्रजमें बसिकै नेह निभायो कौने ॥ ३७१ ॥

राग कान्हरा ।

भूर भाग भाजनभई ॥ रूपराशि अवलोकि बन्धु दोउ प्रेम सुरंग रई ॥ कहा री करूं किहि भाँति सराहूँ नहिं करतूत नई॥ बिन कारण करुणाकर रघुवर किहिं २ गति न दई॥ करि बहु विनय राख उर मूरति मङ्गल मोद मई ॥ तुलसी ह्वै विशोक पति लोकहिं प्रभु गुण गणत गई ॥ ३७२ ॥

कवित्त।

पढे वेद सारे जप तप व्रत धारे करे गङ्गा औ प्रयागनकी सेवा मन लायके॥ कञ्चन औ नारीगज बाजी असवारी दान करे कुरुक्षेत्र माहिं पंडित को पायके॥ करे हयमेध कन्यादान सरवस्व देत श्रौत औ समारत की नीकी विधि भायके॥ ईश नाम गान सम होत ना गुलाब अंग वेद औ पुरान व्यास कही समुझायके॥ ३७३॥

ग़ज़ल।

सोच कर चलना मुसाफिर यां ठगों का गाम है॥ इस सरा के बीच आके बहुत से मारे गये॥ अब कदम रखना वढ़ाके होने वाली शामहै॥ पांचों चोर बसें नगरीमें सोते को लूटा करें॥ जागना तुमको मुनासिब पड़े तेरे दामहैं॥ दोस्त सभ दुश्मन तुम्हारे इनसे बचना तमाम है॥ बाजीगर पुतली नचावे काढे अपना काम है॥ यादोपति जजमान हमारे तिनके घर जाना हमें॥ जाति का ब्राह्मण गावे खुशदिल जिसका नाम है॥ ३७४॥

दीजिये दर्शन मुझे बंसीके बजानेवाले॥ दूधके खानेवाले माखनके चुरानेवाले॥ गजने टेर करी द्वारकासे धाये॥ सभामें द्रौपदीके चीर बढ़ानेवाले॥ चौंक सुपने में पड़ा देख राधे मोहन को॥ डार गलबैयां गये छोड जगानेवाले॥ कुब्जा को राज दिया हमको बैराग बताया॥ क्या और नहीं हैं संत भसम रमानेवाले॥ ३७५॥

राग जंगला।

नामको अधार तेरे नामको आधारा॥ मेरी मेरी करत जात दिन ही रैन सारा॥ नजर भरके देख प्राणी धुंधका पसारा॥ यमुना में गेंद गिरी ग्वाल बाल हारा॥ कालीनाग नाथ लीनों

कृष्ण भयो कारा ॥ राजा वलि के द्वारे ठाढे वामन रूप धारा ॥ वीस भुजा रावन की छिन में काट डारा ॥ मथुरा में जन्म लीनों गोकुला सिधारा ॥ कंसको निरवंश कीनो मोर मुकटवारा ॥३७६॥

गोविंदा नहीं गाया तैनें गाया क्या नर बावरे ॥ अहिरन की चोरी करें करें सुई का दान रे ॥ कोठे चढ़के देखन लागे आवत कहां विमान रे ॥ महल चुनाये माड़ी चुनाई और चुनाया दलान रे॥ इक दिन तुम पर ऐसा होगा पड़े रहो मैदान रे ॥ माटी का पुतला वनाया धरयो आदमी नाम रे ॥ आपही बैठे राह मुसाफर कहा वसाया गाम रे ॥ पतिव्रता भूखी मरें वेश्या चावें पान रे ॥ साधू खावें सूखे टुकडे माल मसखरे खान रे ॥ पाथर की तैं नाव बनाई उतरा चाहे पार रे ॥ कहत कबीर सुनों भाई साधो डूबेगा मँझधार रे ॥ ३७७ ॥

राग कालिंगडा।

मुखडा क्या देखे दर्पनमें॥ तेरे दया धर्म नहीं मन में ॥ आंब की डाल कोयलिया बोले सुअना वोले वन में ॥ घर वारी तो घर में राजी फक्कर राजी वन में ॥ ऐंठा धोती पाग लपेटी तेल चुआ जुलफन में ॥ गली गली की सखी रिझाई दाग लगायो तनमें ॥ पाथर की इक नाव बनाई उतरा चाहे छिन में ॥ कहत कवीर सुनो भई साधो यह क्या चढ़ेंगे रन में ॥ ३७८ ॥

राग जंगला।

श्रीरामचंद्र दशरथ सुत नंदन यह पद भज मन मोरा रे॥ वालापन में खेल गँवाई ज्वानी योवन जोरा रे ॥ वृद्ध भयो चिंता तव उपजी अब क्या करत निहोरा रे ॥ पांचों चोर समझ कर पकड़ो चढो प्रेमरस घोड़ा रे ॥ ज्ञान खड्ग से मार गिरावो यह मुजरा नर तोरा रे ॥ भूला भूला कहा फिरत है जग में जीवन

थोरा रे ॥ धरे रहें सभ रंगमहल तेरे जंगल होत बसेरा रे ॥ भव सागर की धार कठिन है वहां तोरा नहीं मोरा रे ॥ कहत कबीर सुनो भई साधो समझ देख मन भोरा रे ॥ ३७९ ॥

राग देश ।

व्रजराजके सखि इश्क का मेरे दिल में तीर समागया ॥ वो जो दर्द था सो बना रहा न बताके कोई दवा गया ॥ मुझे आज वह ब्रजमोहना मिला नंदरायके द्वार पै ॥ नई नई तरह की वो सैन से पिया प्यारा जादू चला गया ॥ मैं तो ढूंढती उन श्यामको चहुँ ओर ब्रज कुंजन गली ॥ पिया हँसके बंशी वजा बजा नई सिरसे नेह लगा गया ॥ इक पल में होश हवास को लिया लूट कुंज विहारीने ॥ दिखलाके बांकी सी अदा मन हरके वनको चला गया ॥ कहँ रहसके भला इँद्रमणि मेरे दिल को सबरो करार अब ॥ नई छैल श्याम लचक २ मुझे बांकी झांकी दिखा गया ३८०॥

राग रेखता देश ।

वो झलक जो मोर मुकुट कीथी मुझे लखके श्याम लखा गया ॥ बसी जबसे चितवंन चित में आ चितचोर ही में समागया ॥ वो सरूप रूप था जलवागर लजे कोटि रवि शशि छविकर ॥ भौंहैं कुटिल शोभा श्यामकी दग देख मृग शरमागया ॥ कानों में कुंडल की दमक दो नागिनी छूटीं अलक ॥ विसियर है विष में विष भरा डसा मन मेरा लहरा गया ॥ कटि पीत पट शिर पै मुकुट तिरछी लटक निर्तत मटक ॥ मुरली मधुर अधरन धरी रस भीनी तान सुनागया ॥ इच्छा शरण आया तेरी रख लाज अब गिरिधर मेरी ॥ मनमें कसक बाकी रही सुपने में दरश दिखागया ॥ ३८१ ॥

राग काफी ।

बागों ना जारे तेरी काया में गुलजार करनी । क्यारी बाय- केरे रहनी कर रखवार ॥ दया पोद सूखे नहीं रे क्षमा शील जल डार ॥ मन माली प्रबोध केरे संयम की कर बार ॥ दुर्मत काग उडाय कर रे देखे क्यों न वहार ॥ मनगुलाव चितके बड़ा रे फूलरही फुलवार ॥ मुक्त कली खिल रही सदा गूंथ पहरे क्यों न हार ॥ लोभलहर गहरी नदी रे लख चौरासी धार ॥ निगुरे निगुरे वहगये रे संत उतर गये पार ॥ अष्ट कमल दल ऊपरे रे माया अपरंपार ॥ कहत कबीरा चित चेतले रे आवागौन निवार ॥३८२॥

बसोजी म्हारे नैनन में सियराम ॥ जनकनंदनी जगत वंदनी रघुनायक घनश्याम ॥ कनक मंडप तले रत्न सिंहासन युगल मूरति अभिराम ॥ सरयू के तीर अयोध्या नगरी चित्र- कूट निजधाम । तुलसीदास प्रभुकी छवि निरखत लजत कोटि शत काम ॥ ३८३ ॥

कवित्त ।

बैठिये न जहांतहां संगति कुसंगति में कायर के संग शूर भागे पै भागे ॥ फूलकी सुवास जैसे वासना में मोय रही कामिनीके संग काम जागे पै जागे ॥ अरे अरे घरवसे वैरागी के घर कैसो काम क्रोध लोभ मोह पागे पै पागे ॥ काजर की कोठरी में कैसहू चतुर घुसो एक रेख काजर की लागे पै लागे ॥ ३८४ ॥

गजल ।

हमन हैं इश्क के माते हमन को दौलतां क्या रे ॥ नहीं कछु मालकी परवा किसीकी मिन्नतां क्या रे ॥ हमनको खुशक रोटी बस कमरको इक लँगोटी बस ॥ सिरे पर एक टोपी बस हमन को इज्जतां क्या रे ॥

कबा शाला वजीरों को जरी जरबक्त अमीरों को॥ हमन जैसे फकीरों को जगत की नेयतां क्या रे ॥ जिन्होंके सुख न स्याने हैं उन्हींको खलक मानेहैं॥ हमन आशिक दिवानेहैं हमन को मजलसां क्या रे ॥ कियो हम दरद का खाना लियो हम भेसका बाना ॥ वलीबस शौक मन माना किसीकी मसलतां क्या रे ॥ ३८५ ॥

लावनी।

मोहिं बिसरत नहिं सुध सनम घडी पल तेरी ॥ श्रीकृष्ण ख़बर ना लई आज तक मेरी ॥ तेरे इशक में सहा श्याम रंज बहुतेरा ॥ कूचे में देते हरदम सौसौ फेरा ॥ नहिं लगा पता कहुँ यार ठिकाना तेरा ॥ किस जगा लगाया हमें बतलाना डेरा ॥ हम चाकर होरहे बदिल निगाह कित फेरी ॥ श्रीकृष्ण० ॥ कर प्रीत बड़ा परतीत कहा डरते हो ॥ उलफत का कदम पाछे को कहा धरते हो ॥ आंखों में असर जादू का विकल करते हो ॥ मारे नयन अदा तिरछी सों कतल करते हो ॥ मेरे मार विरह शमशीर किया तन ढेरी ॥ श्रीकृष्ण० ॥ दिन रैन तसब्बुर ही में गुजर सब जाती ॥ दर्शन बिन देखे नैन धड़कती छाती ॥ काबू से निकल गये कृष्ण बडे तुम घाती ॥ तकदीर बिना तदबीर काम नहिं आती॥ क्या विपरीत कृष्ण तुम भोले पन पर गेरी ॥ श्रीकृष्ण०॥सहताहूं कृष्ण सब रंज सबर नहिं मुझको ॥ अब सहूं कहांतक कृष्ण सुनाऊं तुझको ॥ कथ गावत कवि प्रभु दयाल ख्याल रँग रँग को ॥ हर वक्त भरोसा राख कृष्णके सँगको ॥ अब दे हमको दीदार करी क्या देरी ॥ श्रीकृष्ण०॥३८६॥

सो जन मस्ताना २ जिन पायो पद निर्वाना ॥ मगन होय चढ गयो गगन पै अधर धार धर ध्याना ॥ लगन लाय बिसराय विश्वको अनहद शब्द पछाना ॥ पर्म सुन्न में पर्चा हूआ चेतन चरण समाना॥

निर्गुणसेज तेजकी नगरी यहि अबिगत अस्थाना ॥ लक्ष कला लिये चन्द्रप्रकाशे कोटिकला लिये भाना ॥ जगमग लगी महलके भीतर देखत दरश दिवाना ॥ बरसे पदम दामिनी दमके हर हीरों की खाना ॥ गमसे दूर अगमसे आगे अद्भुत अजब ठिकाना ॥ खुलगयो कमल नवल बर पायो नित प्रति अमृत पाना ॥ असर कन्द दुख भंजन व्यापी जिस घर भर्म भुलाना ॥ स्तुति निंदा दोऊ त्यागो खोजौ पद निर्वाना ॥ हर्ष शोक से रहे अतीता तिन जग तत्त्व पछाना ॥ पांच पचीस पुरी तज भागे जीत लियो मैदाना ॥ नितानंद महबूब स्वामी अब निश्चय कर जाना॥२८७॥

राग आसावरी ।

रे मन समझ सोच विचार ॥ ढार पांसा साधु संगत फेर रसना सार ॥ राख सतरह सुन अठारह नरद पांचों मार ॥ डारदें तू तीन काणे चतुर चौंक निहार ॥ मानुषा यह देह फिर नहिं आवे वारंवार ॥ सूरदास गोविंद भजन बिन चले दोउ कर झार ॥ २८८ ॥

राग जंगला ।

जन्म तेरो बातों में बीत गयो ॥ तैंने कबहूं न कृष्ण कह्यो ॥ पांच बरस का आला भोला अबतो बीस भयो ॥ मकर पचीसी माया कारण देश विदेश गयो ॥ तीस बरसकी अब मति उपजी लोभ बढे नित नयो ॥ माया जोरी लाख करोरी अजहुँ न तृप्त भयो ॥ वृद्ध भयो तब आलस उपजी कफ नित कण्ठ रह्यो ॥ साधु कि संगति कबहुँ न कीनी बिरथा जन्म गयो ॥ यह संसार मतलबका लोभी झूँठा ठाट रच्यो ॥ कहत कबीर समझ मन मूरख तूं क्यों भूलगयो ॥ २८९ ॥

राग परज ।

दूर रहो रघुवीर खरे मम नावन नाहिं सो पाद छुवावो ॥ दारनमें पुनि शैलन में कछु अंतर होय तौ नाथ बतावो ॥ मानुष चूरन नाव लगाय सो दीनदयाल न काज गवाँवो ॥ राजकुमार पखार लेहो पद तौ मम नावनके ढिग आवो ॥ २९० ॥

राग होरी ।

झटक्यो मोरा चीर मुरारी ॥ गागर शीश रंगकी झटकी वेसर मुडगई सारी ॥ रेशम बंद वसनके टूटे झड़गइ कोर किनारी ॥ ब्रजमें अनोखा खिलारी ॥ लेकर चीर कदम चढ़ बैठो हौं जल माँझ उघारी ॥ संगकी सखी मेरी बगर परोसन कर बिनती सब हारी ॥ अरज मानो गिरिधारी ॥ अगर सुनै मेरी बगर सुनेगी सास सुनै देवे गारी ॥ कंत सुने मेरो धूम मचावें और सुने सखी सारी ॥ ब्रज वसना मोहिं भारी ॥ २९१ ॥

नाचत देदे तारी ग्वाल मोहना संग खरे ॥ इत ब्रजनारी भरत पिचकारी उडत अबीर गुलाल कञ्चन कलश भरे ॥ इत मुरली डफ बाज रहीहै वीन पखावज ताल ॥ कृष्णदास प्यारी रँग छिडकत लपट झपट ब्रजबाल लालन लाल गरे ॥ २९२ ॥

रँगीली रघुवर की होरी॥तुम देखो री भर नैन रैन दिन प्रेम रंग बोरी ॥ छबीली खेले दोउ जोरी ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन बोल हो होरी॥उमँग नहिं मनमें कछु थोरी ॥ उडत अबीर गुलाल लालभइ अवध नगर खोरी ॥ उमड धुन चली चहूँ ओरी ॥ डफ मृदंग मुरचंग झांझ झालर कल घनघोरी ॥ लोक कुल लाज कान चोरी ॥ गावत गारि धमार सभी मिल रही न कछु चोरी ॥ देव देखन आये दौरी ॥ छाये व्योम विमान गान कर वरपे रँग

ओ री ॥ मगन भई अवध नगर गोरी ॥ रत्नहरी वलिहार राम छवि निरखत तृण तोरी ॥ ३९३ ॥

प्रिया प्रेम नगरमें आज खेल ले होरी ॥ हरियश अतर अवीर उडाले कायाकी करले झोरी ॥ श्वास श्वास हरिनाम सुमिर ले सीख मानले मोरी ॥ मानुप जन्म अमोलक पायो थिर ना रहत वहोरी॥कहत कवीर सुनो भाई साधो लागी प्रीत न तोरी॥३९४॥

राग खमाच।

छवि पर वारियां प्यारे तेरी मैं छवि पर ॥ कोटि मदन दशरथ के कुँवरकी मारत अलकां कारियां ॥ तीखी सजल लाल अंजन युत लागत अँखियां प्यारियां ॥ राम सखे दृग ओट न करि हौं करों न छिन भर न्यारियां ॥ ३९५ ॥

राग देश।

सखी री मोहन मुसकाने लागी सोई पै जाने ॥ रात मोहन सुपनें में देखे शिथिल भये मोरे प्राने ॥ विरहों हूक लागी पसरी में नैन नीर वरसाने ॥ सखी जिउरा घवराने ॥ हौं जो चढीथी अपनी अटा पर वह झट निकस्यो आने ॥ मंद हँसन मुख देख कृष्णको क्या हौं कहे वखाने॥ सखी कोइ पीर न जाने॥ हौं घायल मृगी ज्यों घूमत परी धरणि पर आने ॥ मंत्र यंत्र औपध विसलाये विसरे सभी उपाव सखी कोई लोग स्याने॥ और उपाव नहीं कोउ दूजो श्याम मिलावो आने ॥ जानतहैं पिया पीर हमारी सूरदास के प्राण सखी कोइ और न जाने॥३९६॥

राग ध्रुपद।

सोलहूँ शृंगार वारो नील मेघन सों कारो आवत प्रमोद वन सजनी यह को है ॥ चंदन सुगंध पान फूल तेल जुलफन अंजन लगाये नैन सैनन कर जोहै ॥ वन्दन कसन भूपण मोती मणि

माणिक धनुष बाण तरकश लिये करन अतिही सोहै ॥ पाँयन पनहीं लाल साजे जनु काम जाल रामसखे बाँको रूप सबको मन मोहै ॥ २९७ ॥

शब्द ।

बंदियां नाकर गाफला मत होवे दिलगीर ॥ लोहे बांगर तांइये तेरे गल बिच पैन जंजीर ॥ जां यम आवे पकड लेजावे कौन बंधावेगा धीर ॥ आगे तेरा संग न साथी ना भाई ना वीर ॥ जे कुछ करें तो छूट सकें नहिं सौह जमांदी पीर ॥ बंदा ढेरी खाक दी कह नानक शाह फकीर ॥ २९८ ॥

राग बरवा ।

अब मैं अपने रामको रिझाऊं ॥ नाम ध्याऊं भजन गुणगाऊं ॥ पातपात में साहिब मेरा मुड़ मुड़ शीश नवाऊं ॥ गंगा न जाऊं यमुना न जाऊं ना कोइ तीरथ न्हाऊं ॥ अडसठ तीरथ घटके भीतर तिनहीं में मल मल न्हाऊं ॥ औषध न खाऊं बूटी न लाऊं ना कोइ वैद्य बुलाऊं ॥ पूरन गुरू मिले अबिनाशी भर्मके पुरजे उडाऊं ॥ ज्ञान कटारा कस कर बांधों सुरति कमान चढाऊं ॥ पांचों चोर बसें घटभीतर उनको मार गिराऊं ॥ योगी होय न जटा बढाऊं न अंग विभूति रमाऊं ॥ जो रँग रँग्यो आप विधाता और क्या रंग लगाऊं ॥ डाली न छेडूं न पत्ता तोडूँ ना कोइ जीव सताऊं ॥ देहरा न पूजों न देवल पूजों परम ज्योति मिल जाऊं ॥ चंद्र सूरज दोउ सम कर राखों सुखमन सेज बिछाऊँ ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो आवागौन मिटाऊं ॥ २९९ ॥

शब्द ।

जब पलाश फूलन पर आवै ॥ पात पात कर आप लुटावै ॥ काला मुँह कर जगदिखलावै ॥ तब लालनकी लाली पावै ॥ ६०० ॥

राग भैरवी ।

की कुछ भेट सुदामें आँदी बीज की पाया थन्ने ॥ वणुलियां दी टिंड चवाई और चवाये गन्ने ॥ रोटी उत्ते साग खुलाया छाह पलाई छन्ने ॥ तिन्हां नाल शरी कत केही साहिब जिन्हां दी मन्ने ॥ ४०१ ॥

कवित्त ।

अंगुरी पै गिरि धार्यो गोकुला बचायलीनी विपति तो सुदामाजू की छिन में मिटाई है ॥ द्रौपदीकी लाज कीनी भरी सभामें न जान दीनी पारथकी भारत में कीनी सहाईहै ॥ जहां जहां भीर परी तहां तहां रक्षा करी कहत कवि मार्कंडे ऐसे होत आई है ॥ बार बार कर पुकार कहो सुनो दीनानाथ मेरी वेर एती देर काहेको लगाई है ॥ ४०२ ॥

सवैया ।

लाय समाधि रहे ब्रह्मादिक योगी भये पर अन्त न पाये ॥ सांझ के भोरहिं भोरके सांझहि शेष सदा नित नाम जपाये ॥ ढूंढ फिरे त्रैलोकी में साखी सु नारद लेकर वीण वजाये ॥ ताहि अहीर की छोहरियां छछियाभर छाँछपे नाच नचाये ॥ ४०३ ॥

राग तिलंग ।

दीनानाथ अब बार तुम्हारी ॥ पतित उधारन विरद जानके बिगरी लेहु सँवारी ॥ बालापन खेलत ही खोयो युवा विषय रस माते ॥ वृद्ध भये सुध प्रगटी मोको दुखित पुकारत ताते ॥ सुनत तज्यो तिया ना तज्यो भ्राव तज तनु ते त्वचा भई न्यारी ॥ श्रवण न सुनत चरण गति थाकी नैन भये जल धारी ॥ पलित केश कफ कण्ठ वरूध्यो कल न पड़े दिन राती ॥ माया मोह न

छांडे तृष्णा यह दोऊ दुखदाती ॥ अब यह व्यथा दूर करबेको और न समरथ कोई ॥ सूरदास प्रभु करुणासागर तुमते होय सो होई ॥ ४०४ ॥

रे मन मूरख जन्म गँवायो ॥ कर अभिमान विषय सो राच्यो श्याम शरण नहिं आयो ॥ यह संसार फूल सेमरको सुन्दर देख लुभायो॥ चाखन लाग्यो रुई उड़गई हाथ कछू नहिं आयो ॥ कहा होत अबके मन सोचे पहिले नाहिं कमायो ॥ सूरदास भगवंत भजन विन शिर धुन धुन पछितायो ॥ ४०५ ॥

राग देश ।

कहां लगाई एती देर ॥ अरे अरे सांवरे रे ॥ हौं गुजराती शिव को उपासी पूजों सांझ सबेर ॥ भक्ति मर्मकी सार न जानो हांसी कराई मेरी ढेर ॥ ऊँचे चढके टेर सुनाऊं अब सुनियो म्हारी टेर ॥ क्या कहीं काज सवँारे भगतनके क्या निद्रा ने लिये घेर ॥ नरसी के प्रभु अधम उधारन राखिये अबकी बेर ॥ ४०६ ॥

राग खमाच ।

कैसी बँसिया बजाय जादू डारा रे ॥ श्रवण सुनत नहिं परत चैन तन मन तुमपै वारारे ॥ बांकी छवि दिखलाई चित चपल चलाई ऐसी बातें बतलाई मेरा जिया ललचाई कर तिरछी नजर भर मारा रे ॥ जाकी मधुरी हँसन मुसकान तकन झमकन झुमकन कर मुरली लसन धर ध्यान दुलारे मन थारा रे ॥ ४०७ ॥

राग तिलंग ।

जग जानी कछु मसलत करले जांदी रैंन विहानी ॥ तेरे कोलो लख चल चल जांदे तैं मन एक न आनी ॥ एक घड़ी हरि भजन न कीता दिसदा काल सिरानी ॥ शाहहुसेन फकीर साईदा आखर दुनिया फानी ॥ ४०८ ॥

राग वरवा ।

मन मस्ताइय छड हो यारा ॥ यह दिन जांदे गिणवे ॥ आगे मंजलां भारियां गौरे भार न लद वो यारा ॥ मगमंगदा वादसाहीयां मनदे आँखे न लग होय यारा ॥ शाहहुसेन फकीर साईंदा मन मुरशिद विच लभ वो यारा ॥ ४०९ ॥

राग विहाग ।

घूंघट चक सज्जना हुन शरमां केहीयां रखीयांवे ॥ जे जानां तूं ऐवें करनी मैं मूल न लांदी अखियां वे ॥ दो नैनां दा तीर बनाया मैंआजज़ दे सीने लाया घायल करके मुख छपाया यह घातां किन दसीयां वे ॥ ज़ुलफ कुंडल ने घेरा पाया विछु अर वनके डंग चलाया' कहुखां तेरे की हथ आया एह पीतां कित्थों सिखीयां वे ॥ मैं अयाणी नेहुडा की जाणा तिंजन वैठी मौजां माणां इशक तेरा मैनूं सौण न देंदा मैं डरदी आखनसकीयां वे ॥ हस रस के मैं लाइयाँ आपे रोशन होई नूं झिडकन मापे एक इशक दे वडे स्यापे तूं भुवा वैठो अखीयां वे ॥ मैं वन्दी दा जे तूं साईं कदी तां आवीं फेरा पाईं मिहर करीं ते मुख दिखलाईं मैं काग उडांदी थकीयां वे ॥ वुल्हे शाह नं ना तरसावीं करी अनायत मैं वल आवीं शाह अनायत गल नाल लावीं मैं तेरी हो हो नचीयांवे ॥ ४१० ॥

गजल ।

श्यामकी ऊधो जुदाई अब सही जाती नहीं ॥ न चैन दिनको रातको आंखों में नींद आती नहीं ॥ वेवफा हमसे खफा हो जा दिया सौतनको दिल ॥ क्या खता मेरी खबर भेजी कोई पाती नहीं ॥ दिल दिया गैरोंको हमदम गमदिया हमको सनम् ॥ अब कोई मिलने की सूरत हमको दिखलाती नहीं ॥ छोड कर

माखन औ मिसरी वह गये पीनेको छाँछ ॥ ताव जुगनू की कहीं महताब को पाती नहीं ॥ क्या कहैं गोकुल के तुमसे हाल बरसाने के हम ॥ कुंजकी कोई गली हरगिज हमें भाती नहीं ॥ उनकी उलफतमें हमेशा गोपियां गाती थीं राग ॥ वह गये जबसे कोई गाती हैं परभाती नहीं ॥ कानों में मुद्रा गले सेली मलें तनुमें विभूत ॥ होवें हम योगिन उन्हें कहते शरम आती नहीं ॥ मार कर आसन लिये माला करो कुंजन भजन ॥ यह सखुन लिखते तबीअत तरस कुछ खाती नहीं ॥ आइये गोकुल मनोहर आरजू करते गणेश ॥ है कोई दाना सखी हम दमको समझाती नहीं ॥ ४११ ॥

कवित्त ।

दास तो तिहारे जो उदास तो तिहारे दूर पास तो तिहारे आम खास तो तिहारे हैं ॥ दीन तो तिहारे मतिहीन तो तिहारे जो नवीन तो तिहारे पराचीन तो तिहारे हैं ॥ कूर तो तिहारे गुणपूर तो तिहारे राचे नूर तो तिहारे सांचे शूर तो तिहारे हैं ॥ भायक तिहारे यशगायक तिहारे हो सहायक हमारे हम पायक तिहारे हैं ॥ ४१२ ॥

सुदामा तन हेरे तो रंक हूं ते राव कीने बिदुर तन हेरे तो राजा कीने चेरे ते ॥ कूबरी तन हेरे तो सुंदर स्वरूप कीने द्रोपदी तन हेरे तो चीर बाढ़े टेरे ते ॥ कहत छत्रशाल प्रहलादकी प्रतिज्ञा राखी हरनाकुश मारयो का नेक नजर फेरे ते ॥ कामी अभिमानी गुनी ज्ञानी भये कहा होत नामी नर होत गरुड़गामी के हेरे ते ॥ ४१३ ॥

राग बरवा ।

मन मस्ताइय छड हो यारा ॥ यह दिन जांदे गिणवे ॥ आगे मंजलां भारियां गौरे भार न लद वो यारा ॥ मगमंगदा वादसाहीयां मनदे आँखे न लग होय यारा ॥ शाहहुसेन फकीर साईंदा मन मुरशिद विच लभ वो यारा ॥ ४०९ ॥

राग विहाग ।

घूंघट चक सज्जना हुन शरमां केहीयां रखीयांवे ॥ जे जानां तूं ऐवें करनी में मूल न लांदी अखियां वे ॥ दो नैनां दा तीर वनाया मेंआजज़ दे सीने लाया घायल करके मुख छपाया यह घातां किन दसीयां वे ॥ जुलफ कुंडल ने घेरा पाया विच्छु अर वनके डंग चलाया कहुखां तेरे की हथ आया एह पीतां कित्थों सिखीयां वे ॥ में अयाणी नेहुडा की जाणा तिंजन बैठी मौजां माणां इशक तेरा मैनूं सौण न देंदा में डरदी आखनसकीयां वे ॥ हस रस के में लाइयाँ आपे रोशन होईं नूं झिडकन मापे एक इशक दे वडे स्यापे तूं भुवा बैठो अखीयां वे ॥ में वन्दी दा जे तूं साईं कदी तां आवीं फेरा पाईं मिहर करीं ते मुख दिखलाईं में काग उडांदी थकीयां वे ॥ वुल्हे शाह नं ना तरसावीं करी अनायत में वल आवीं शाह अनायत गल नाल लावीं में तेरी हों हो नचीयांवे ॥ ४१० ॥

गजल ।

श्यामकी ऊधो जुदाई अव सही जाती नहीं ॥ न चैन दिनको रातको आंखों में नींद आती नहीं ॥ वेवफा हमसे खफा हो जा दिया सौतनको दिल ॥ क्या खता मेरी खवर भेजी कोई पाती नहीं ॥ दिल दिया गैरोंको हमदम गमदिया हमको सनम् ॥ अव कोई मिलने की सूरत हमको दिखलाती नहीं ॥ छोड कर

माखन औ मिसरी वह गये पीनेको छाँछ ॥ ताव जुगनू की कहीं महताब को पाती नहीं ॥ क्या कहैं गोकुल के तुमसे हाल बरसाने के हम ॥ कुंजकी कोई गली हरगिज हमें भाती नहीं ॥ उनकी उलफतमें हमेशा गोपियां गाती थीं राग ॥ वह गये जबसे कोई गाती हैं परभाती नहीं ॥ कानों में मुद्रा गले सेली मलें तनुमें विभूत ॥ होवें हम योगिन उन्हें कहते शरम आती नहीं ॥ मार कर आसन लिये माला करो कुंजन भजन ॥ यह सखुन लिखते तबीअत तरस कुछ खाती नहीं ॥ आइये गोकुल मनोहर आरजू करते गणेश ॥ है कोई दाना सखी हम दमको समझाती नहीं ॥ ४११ ॥

कवित्त ।

दास तो तिहारे जो उदास तो तिहारे दूर पास तो तिहारे आम खास तो तिहारे हैं ॥ दीन तो तिहारे मतिहीन तो तिहारे जो नवीन तो तिहारे पराचीन तो तिहारे हैं ॥ कूर तो तिहारे गुणपूर तो तिहारे राचे नूर तो तिहारे सांचे शूर तो तिहारे हैं ॥ भायक तिहारे यशगायक तिहारे हो सहायक हमारे हम पायक तिहारे हैं ॥ ४१२ ॥

सुदामा तन हेरे तो रंक हू ते राव कीने बिदुर तन हेरे तो राजा कीने चेरे ते ॥ कूबरी तन हेरे तो सुंदर स्वरूप कीने द्रोपदी तन हेरे तो चीर बाढ़े टेरे ते ॥ कहत छत्रशाल प्रहलादकी प्रतिज्ञा राखी हरनाकुश मारचो का नेक नजर फेरे ते ॥ कामी अभिमानी गुनी ज्ञानी भये कहा होत नामी नर होत गरुड़गामी के हेरे ते ॥ ४१३ ॥

राग धनाश्री ।

जन्म गँवायो ऊआ वाई ॥ भजे न चरण कमल यदुपतिके रह्यो विलोकत छाई ॥ धन यौवन मद ऐंडो ऐंडो ताकत नारि पराइ ॥ लालच लुब्ध श्वान जूंठन ज्यों सोऊ हाथ न आई ॥ रंचकांच सुख लाग मूढ़ मति कंचन राशि गवांई ॥ सूरदास प्रभु छांड सुधारस विषय परम विष खाई ॥ ४१४ ॥

राग सोरठ ।

नहीं ऐसो जन्म वारंवार ॥ क्या जानूं कछु पुण्य प्रगटे मानुसा अवतार ॥ वढ़त पलपल घटत छिनछिन चलत न लागे वार ॥ विरछ के ज्यों पात टूटे लगे नहिं पुनिडार ॥ भवसागर अति जोर कहिये विषम ओखी धार ॥ सुरत का नर वांध वेड़ा वेग उतरो पार ॥ साधु संतां ते महंतां चलत करत पुकार ॥ दास मीरां लाल गिरिधर जीवना दिन चार ॥ ४१५ ॥

राग देश ।

कहि न जाय छवि राधावरकी ॥ चटकीली उरमाल विराजे मटकीली गति श्याम सुंदर की ॥ मोती लोल चारु नासामें चंदन खोर आड़ केसरकी ॥ अटक रह्यो मन ललित माधुरी निरख लटक वा मुरलीधरकी ॥ ४१६ ॥

रेखता ।

फरजंग नंदनूका मन वीच भामदा ॥ वर पायोदे कदंसि सुंदर सुहामदा ॥ लटकों की चाल चलता प्यारा मेरे आमदा ॥ गल जामा है जरी का कटि काछनी वनी ॥ पीले डुपट्टे वाला वींड़े ॥ चवामदा कुंडल झल्कतेंदे दुरुस्त गोशे में ॥ आवाज

बाँसुरी की शीरीं बजामदा ॥ काँधे कमरिया सोहै गैया चरामदा ॥ मीर माधो बलिहारी यश तेरा गामदा ॥ ४१७ ॥

राग सिंध ।

दसीयो मोहन किस दानी ॥ आवंदा जावंदा नजर न आवे अजब तमाशा इसदानी ॥ दधि मेरी खायो मट्ठकिया फोरी लोभी यह गोरस दानी ॥ मात यशोदा दही विलोवे माखन लैलै नसदानी ॥ मीरा के प्रभु गिरिधर नागर लूंलूं दे विच रसदानी ॥ ४१८ ॥

राग सिंधडा ।

क्या कहें आलममें हम इन्सान या हैवान थे ॥ खाक थे क्या थे गरज इक आनके मिहिमान थे ॥ कर रहे थे अपना कब्जा गैरों के इमलाक पर ॥ छीनली जब उसने तो जाना कि हम नादान थे ॥ एक दिन इक उस्तख्वाँ पर जापडा मेरा जो पाँउ ॥ क्या कहें उस वक्त मेरे दिलमें क्या क्या ध्यान थे ॥ पाँउ पडतेही गरज उस उस्तख्वाँ ने आह की ॥ अरकहा जालम कभी हम भी तो साहिब जान थे ॥ दस्तो पा जानूं शिरो गर्दन शिकम पुश्तो कमर ॥ देखने को आंख और सुन्नेकी खातर कान थे ॥ अबरू ओ बीनीजबी नक्शो नगारे खालो खत ॥ लाल मरवारीद से बिहतर लबो दंदान थे ॥ रातके सोनेको क्या क्या नरमो नाजुक थे पलंग ॥ दिनकी खातर बैठनेको ताक ओ ऐवान थे ॥ लगरहाथा दिल कहीं चंचल परीजादोंके साथ ॥ कुछ किसीसे अहद थ और कुछ कहीं पैमान थे ॥ गुलबदन और गुलअज़ारों से कनारो बोस्ता ॥ कुछ निकालेथे हवस कुछ और भी अरमान थे ॥ होरही थी चहचही और मचरहीथी कहकही ॥ साकी ओ

सागर सुराही अतर फूल और पान थे ॥ एकही चक्कर अजल ने आनकर ऐसा दिया ॥ नतो हम थे न वह सारे ऐश के सामान थे ॥ ऐसी बेरहमी से मत रख पाऊँ हमपै ऐ नजीर ॥ वो मियां हमभी कभी तेरी तरह इन्सान थे ॥ ४१९ ॥

राग पहाड़ी ।

गोविंद लीना मोल ॥ कोई कहै महँगा कोई कहै सस्ता लिया तराजू तोल ॥ ब्रजके लोग करें सभ चर्चा लिया बजाके ढोल ॥ सुर नर मुनि जाको पार न पावें ढक लिया प्रेम पटोल ॥ जहर प्याला रानाने भेज्या पिया में अमृत झोल ॥ मीरा प्रभुके हाथ बिकानी मैं सर्वस दीना घोल ॥ ४२० ॥

राग पीलो ।

ब्रजमोहन आयो रे ग्वारन मिलन चली ॥ सोहनी विरहों बिराजे रे शिरापर झूल रही ॥ गल नरमेदा जामे रे मोतियां तनी ओ तनी ॥ राधे शिर धर मटुकी रे वेचा मैं दूध दही ॥ केहा चेटक लायोवे भुल गया दूध दही पुत्र नंदे वाला वे कीता मैं आज सही ॥ लक पेटीया सोहे वे हीरीयां जड़त जड़ी ॥ श्यामा मैं नहीं रहना वे तेरी या ब्रज नगरी ॥ विच मथुरा नगरी आवे कान्हा जगात लई ॥ यश केवल गावे रे चरनी मैं लाग रही ॥ ४२१ ॥

राग पहाड़ी ।

श्यामा तेरी वंशी सितम करेंदी ॥ यंत्र मंत्र जादू टोना पढ़ पढ़ मन वश करलेंदी ॥ जब सोऊं तो नींद न आवे अँखियाँ जल वरसेंदी ॥ कृष्णदास हित प्रीत रीत वश चरण कमल चित देंदी ॥ ४२२ ॥

राग जंगला ।

आली मोहिं लागत वृंदावन नीको ॥ घर घर तुलसी ठाकुर पूजा दर्शन गोविंदजीको ॥ निर्मल नीर वहत यमुनाको भोजन दूध दही को ॥ रत्न सिंहासन आप विराजे मुकुट धरचो तुलसी को ॥ कुंजन कुंजन फिरत राधिके शब्द सुनत मुरली को ॥ मीराके प्रभु गिरधर नागर भजन विना नर फीको ॥ ४२३ ॥

राग रामकली ।

निरख सखी शोभा श्रीराम की ॥ मग्न भई लग्न लागी हीयरा में सुध न रही तन मन धन धाम की ॥ साँवरे वरण मनके हरण मनसिज्ञ मन मोह करण अरुण वरण सुंदर अभिराम की ॥ पीत वसन कुंद दशन मंद हसन लसन फसन अलक कुण्डल वर वाम की ॥ रत्न हरी कर विचार पल पल पर प्राण वार छवि निहार दशरथ सुत श्याम की ॥ ४२४ ॥

गजल ।

हमनसे मत मिलो लोगो हमन खफती दिवाने हैं ॥ खुशी का राह छोड़ा है कठिन में जा समाने हैं ॥ तजी खिदमत वजीरी की पाई लज्जत फकीरी की ॥ चढ़े किश्ती सबूरीकी फकरके यह मकाने हैं ॥ हमन दिन रेन रोतेहैं गमों से जान खोतेहैं ॥ शूलों की सेज सोतेहैं विरहोंके यह निशाने हैं ॥ हमारा यार ओ जानी पीवे हरि नामका पानी ॥ कि आखिर होवना फानी वली रामे समानेहैं ॥ ४२५ ॥

राग पहाड़ी ।

यशोदाजी के द्वारे पर नीमाये मैं वार वार जानीयां ॥ गिरिधर मैनूं नजर न आवे सौ सौ फेरा पानीयां ॥ लाजकी मारी मैं

कुछ नहीं सकदी दूतां थों शरमानीयां ॥ कृष्ण सखी प्यारे दर्शन वाझों कुञ्ज वांगू कुरलानीयां ॥ ४२६ ॥

राग जङ्गला।

रघुवर चरण शरण सुखदायक क्यों न गहो मन मेरे ॥ कोटि जन्मके संचित सगरे पाप विनाशें तेरे ॥ जिन चरणन की शरण गही ते उधरे पतित घनेरे ॥ अजामील गणिका गज गीधन हरिपुर किये बसेरे ॥ जिन चणरन की रेणु परस मुनि पत्नी तरी सवेरे ॥ भालु भील रजनीचर वानर काट गये भव फेरे ॥ कोटि कलंक मिटे कुमतिन के जिन चरणन के हेरे ॥ रत्नहरी हम जान भयेहैं इन चरणनके चेरे ॥ ४२७ ॥

राग देश।

मैंने थारा काईं बिगारयो काज ॥ मोसे क्यों रूसे महराज लोक लाज कुल कान गवाँई तज कुटुंब शरणागत आई कीनी प्रीत नन्द के नन्दन छाँडत न आई तोकों लाज ॥ कुब्जा कूंड कंसकी दासी जा मुख देखत आवत हाँसी ऊंच नीच तुमने कछु न विचारी चेरी करी शिरताज ॥ इतनी विनती मानो हमारी जन्म जन्म की मैं दासी तिहारी श्रीव्रजनिधिके कुञ्जविहारी आन उधारो मोहिं आज ॥ ४२८ ॥

राग सिंध।

आज अति बाढयोहै अनुराग ॥ पूत भयो री नंद महरके बड़े बैस वडभाग ॥ दई सवच्छ लच्छ धेनू अरु नंद वढ़ायो त्याग ॥ गुनी गण वंदी जन सब मांगत पायो अपनो लाग ॥ कूदें ग्वाल मनो रण जीते आनंद फूले बाग ॥ गोपी गोप ओप

सबके मुख गावत मङ्गल राग ॥ हरद दूध दधि माखन छिड़कत मच्यो बधैया फाग ॥ परमानंद दास भक्तन के भयो सो परम सुहाग ॥ ४२९ ॥

राग पीलो ।

आज माई गोकुल भयो री आनन्द ॥ रानी यशोमति बालक जायो प्रगट्यो पूरण चन्द ॥ व्रज वनिता सब बन ठन आई गावत नाना छंद ॥ सूरदास प्रभु पूरण प्रगटे मेट दिये दुख द्वन्द ॥ ४३० ॥

राग जंगला ।

कोई असां नाल चल्ले मेरीयो सैयो नी ॥ असां तां मुलक अडिठड़े नूं जावनां ॥ अडिठड़े देशके मरहम नाहीं खर्च नहीं कछु पल्ले ॥ दूर गयाँ दी खबर न आइया कोई सुनेहड़ा घल्ले ॥ कतने कारन गोहड़े आंदे चर्खा मूल न हल्ले ॥ हार सिंगार सभी कुछ देनीहां दस्ता दे देनीहां छल्ले ॥ एथोंदा खटिया एथे रहजाना झाड पल्लू उठ चल्ले ॥ शाहहुसेन फकीर साईंदा आखर जाना इकल्ले ॥ ४३१ ॥

राग पहाड़ ।

हमरी प्रणाम बांके विहारी को ॥ मोर मुकुट माथे तिलक विराजे कुंडल अलकां कारी को ॥ अधर मधुर धर वंशी बजावे रीझ रिझावे राधां प्यारी को ॥ यह छवि देख मग्न भई मीरा मोहन गिरिवर धारी को ॥ ४३२ ॥

शब्द ।

हर हर हर भज मेरया मना यह औसर नहिं पावेगा ॥ अधम कर्म ते बाज न आवे बाँध्या यमपुर जावेगा ॥ सोई यो तेरे सङ्ग

चलेगा सन्त जना भुगतावेगा ॥ गाढे काम न कर मेरे जीउडे फेर जन्म नहिं आवेगा ॥ नाथ नवल गुरु मिहर करे भव सागर तर घर जावेगा ॥ ४२३ ॥

राग प्रभाती ।

इके रामे नूं नहीं सभालदा ॥ नर देह अमोलक पाइयां विशयां संग लाग गवाँइया चंगा औसर ऐवें तूं टालदा ॥ मिल गोविंद प्रीत न मानिया तेरा जिंद अजाई जानिया भय करिये जमंदे जालदा ॥ तेरे शिरपर लेखा लेखिये जग कूड़ पसारा पेखिये सुपने ज्यों बाजी देखिये कुछ तोसा करले नालदा ॥ हरिनाम गुनाहीं वखूशदा यम संकट तें प्रभु रखदा सच्चा नाथ सुनिहड़ा आखदा तैनूं भय न व्याधे कालदा ॥ ४२४ ॥

आनंद मंगल गावो मोरी सजनी भई प्रभात बीत गई रजनी ॥ उदर निरंतर फूली फुलवारी । तहां मेरी मनसा करै रखवारी ॥ वरखे अमी नाना फल लागे । कही न जाय कछु अचरज वाके ॥ विरछा एक अमृत फल लागे । पावें गे कोई संत सभागे ॥ कहत कवीर गूंगे की सैना ॥ सतगुरु शब्द परख कर लैना ॥ ४२५ ॥

भला जाग रे सारी रैन विहानी ॥ जात जन्म अंजली को पानी ॥ घडा घडी घडियाल बजावे ॥ चंद्र सूरज तुझे कह समुझावे ॥ पल पल औध घटत नित जावे ॥ गया श्वास कभी हाथ न आवे ॥ वहता पानी तरुवर छाया ॥ छिन छिन काल ग्रसे तेरी काया ॥ वाल अवस्था खेल गँवाई ॥ भर ज्वानी कछु काम न आई ॥ सतगुरु सेवा यह धन माया ॥ दास कवी चरण लपटाया ॥ ४२६ ॥

कवित्त।

गुणीजन सेवक रु चाकर चतुरके हैं कबिनके मीत चित हित गुणगानी के॥ सीधनसों सीध महाबाँके हम बाँकन सों हरिचंद नकद दमाद अभिमानी के॥ चाहवे की चाह काहूकी न कछु परवाह नेही नेहके दिवाने सूरत निवानी के॥ सर्बस रसिक के सुदास दास प्रेमिनके सखा प्यारे कृष्णके गुलाम राधारानी के॥ ४३७॥

सवैया।

धूत कहो अवधूत कहो रजपूत कहो जुलहा कहो कोऊ॥
काहूकी बेटी सों बेटा न व्याहन काहूकी जात बिगार न सोऊ॥
तुलसी सरनाम गुलाम है राम को जाके रुचै सो कहो कछु ओऊ॥
मांगके खैबो मजीतको सोयबो लेबेको एक न देबेको दोऊ॥४३८॥

कवित्त।

लाजको जहाज डूब्यो शीलको समुद्र सूख्यो दयाके खजाने कीनो ताली कोऊ लैगयो॥ सत्यहू की कोठी लूटी धर्म की धुजाही टूटी पाप घर घर घट घट बीच छै गयो॥ संतनको दोष कहा होत कोऊ देत नाहीं नाहीं को नकीब घर घर में कहू गयो॥ संत कहैं चेत रे तूं चेत रे अचेती नर पुण्य धर्म दया बीज अंश कहँ रह् गयो॥ ४३९॥

राग झूलना।

दुनियाके परपंचों में हम मजा नहीं कछु पायाहै॥ भाई बंधु पिता माता सुत सबसों चित अकुलायाहै॥ छोड़ छाँड घर गाम नाम कुल यही पंथ मन भायाहै॥ ललित किशोरी आनंद घन सों अब हठ नेह लगायाहै॥ ४४०॥

क्या करनाहै संतति संपति मिथ्या सब जग माया है॥ शाल दुशाले हीरा मोती में क्यों मन भर्मायाहै॥ माता पिता पुत्र बंधु सब गोरख धंध बनाया है॥ ललित किशोरी आनँद घन हरि हिरदे कमल बसाया है॥ ४४१॥

राग होरी।

राधाबर खेलत होरी॥ नंदगामके ग्वाल इते उत बरसानेकी गोरी॥ डफ करताल बजावत गावत केसर कुंकुमघोरी॥ परस्पर रंग में बोरी॥ दशहूं दिशान गुलाल घुमंड में काहू कछु लख न परो री॥ उचक आय धाय चंद्रावल ललितादिक लै दौरी॥ गह्यो हरिको बरजोरी॥ गारी गावत नारी सभी मिल नागरी योवन जोरी॥ नंदके लाल बडे रसिया हो करो इनसों बरजोरी॥ फाग में कौन की चोरी॥ छीन लई बनमाल मुरलिया पीत बसन लियो छोरी॥ नागरी वेप बनाय कहत देखो नंदराय की छोरी॥ बनी छवि काम करोरी॥ तारी देदे नचावत ग्वालिनि अपनी अपनी ओरी॥ वा दिनकी सुध भूली लला यमुना तट चीर हरो री॥ आज यह दाँव परो री॥ कृष्णरंग मन भावत फगुवा लेकर बहुत निहोरी॥ हौं अधीन वृषभानुसुताके विनय करों कर जोरी॥ लाज कछु रहीहै न थोरी॥ ४४२॥

सवैया।

आपनी ओर की चाहें लिखीलिखीजातकथाउतमोहनओर की॥
प्यारे दया कर वेग मिलो सही जात व्यथा नहिं मान मरोर की॥
आपहिं बांचत अंगलगावत हो किन आनी चिठीचितचोर की॥
राधिके मौन रही धर ध्यान औ ह्वैगई मूरति नंदकिशोर की॥४४३॥

कवित्त ।

मुनि मख राख्यो मार ताड़का सुबाहु वीर चरण छुवाय जेन शिला तार दीना है॥ सो कवि रसीले आय मिथिला शहर माहिं नर अरु नारिनको मन हरलीना है॥ सोई यह सलोने कुमार दशरत्थजूके राजत निहार कोटिकाम छवि छीनाहै॥ मेरी महारानी तीन लोक में प्रमानी सिया सोने की अँगूठी राम साँवरो नगीना है॥ ४४४ ॥

राग झूलना ।

जङ्गल में अब रमतेहैं दिल बस्ती से घबराताहै ॥ मानुप गन्ध न भाती है सङ्ग मर्कट मोर सुहाता है॥ चाक गरेबाँ करके दमदम आहीं भरने भाताहै॥ ललित किशोरी इश्क रैनदिन यह सब खेल खिलाता है॥ ४४५ ॥

राग झिंझोटी ।

तेरी खातर श्यामां वे मैं योगिन होइयाँ ॥ अङ्ग अङ्ग छाई श्यामां वे मैं मल मल रोई प्रीति लगी तन बारी॥ केधर जावां श्यामा वे मैं केन्हू आखाँ ॥ प्रीत लगी श्यामा दिल अन्दर राखाँ ॥ विरहों दी अग्नि करके मैं जारी॥ तैताँ श्यामाँ मेरी सुधहू न लीनी ॥ व्याकुल करके वे मैं कमली कीनी ॥ चन्दसखी बलिहारी ॥ ४४६ ॥

छैला मोको यमुना जान न देय नन्द महर दा छूकरू॥ झलूड़ा तोड़े मेरा चोलूड़ा फाड़े छैलावे मैकी हँस हँस गारीयाँ देय ॥ चोलूड़ा फाड़े मेरा तालूड़ा तारे छैलावे सानूँ हस्से गलाँदा केय॥ जित मिलदा तित करे मसूरताँ छैला व साडा विंगे

लगाँदानेह ॥ कीकर वसना गोकुल नगरी छैलावे एहनूं कोई समझावो एह ॥ मयाराम असीं देखी देखी जीवना छैलावे साड़े मन तन वस रह्या एह ॥ ४४७ ॥

राग विलावल ।

ऊधो इतनी कहियो जाय ॥ अति कृश गात भई हैं तुम विन वहुत दुखारी गाय ॥ जल समूह वर्षत अँखियन ते हूंकत लेल नाउँ ॥ जहाँ जहाँ गउ दोहन करते ढूंढत सोइ सोइ ठाउँ ॥ परत पछार खाय तेही छिन अति व्याकुल ह्वै दीन ॥ मानों सूर काढ डारी हैं वारि मध्य ते मीन ॥ ४४८ ॥

राग सोरठ ।

मेरी कौनगति व्रजनाथ ॥ भजन विमुख अरु शरण नाहिन फिरत विपयन साथ॥ हौं पतित अपराध पूरण भरयो कामविकार॥ काम कुटिल अरु लोभ चितवन नाथ तुम न विसार ॥ उचित अपनी कृपा करहो तऊ जान्यो जाय ॥ सोऊ करहो जे चरण सेवे सूर जूँठन खाय ॥ ४४९ ॥

राग होरी ।

ऊंचो गोकुल गाम जहाँ हरि खेलत होरी ॥ चल सखि देखन जाहिं पिया अपने की जोरी॥ वाजत ताल मृदंग और किन्नर की जोरी ॥ गावत देदे गारि परस्पर भामिनि गोरी ॥ वूका सुरंग अँवीर उडावत भर भर झोरी ॥ इत गोपिनके झुंड उत हरि हलधर जोरी ॥ नवल छवीले लाल तनी चोली की तोरी ॥ राधा चली रिसाय ढीठसों खेले को री ॥ खेलत कैसो मान सुनो वृपभानु किशोरी ॥ सूर सखी उर लाय हँसत भुज गह झकझोरी ॥ ४५० ॥

राग सोरठ।

प्रभु हो कबलौं नाच नचैहो ॥ अपने जनके निलज तमाशे कबलौं जगहिं दिखैहो ॥ कबलौं इन बिमुखनके मुख सों निज गुण गणहिं लजैहो ॥ कबलौं जिनपै सतत हँसत यम तिनसों हमहिं हँसैहो ॥ छिन छिन बूडत जात पंक लख मोहिं कब चित्त द्रवैहो ॥ जन्म जन्मके निज हरिचन्दहिं फिरिकै कब अपनैहो ॥ ४५१ ॥

कुंडलिया।

प्राण पुत्र दोऊ बडे चारों युग परमान ॥ सो दशरथ नृप परिहरचो वचन न दीनो जान ॥ वचन न दीनो जान बडेन की वृद्ध बडाई ॥ बात रहे सो काज और वरु सर्वस जाई ॥ कह गिरिधर कविराय भये दशरथ प्रणवाना ॥ वचन कहे नहिं तजे तजे निजसुत अरु प्राना ॥ ४५२ ॥

रही न रानी केकयी अमर भई यह बात ॥ कौन पूर्वले पाप ते वन पठयो जगतात ॥ वन पठयो जगतात कन्त सुरलोक सिधारचो ॥ जिहिं सुतकाजहि मरचो राउ नहिं वदन निहारचो ॥ कह गिरिधर कविराय भई यह अकथ कहानी ॥ यश अपयश रहिगयो रही नहि केकयिरानी ॥ ४५३ ॥

साईं वैर न कीजिये गुरु पंडित कवि यार ॥ बेटा वनिता पौरिया यज्ञकरावनहार ॥ यज्ञकरावनहार राजमंत्री जो होई ॥ विप्र परोसी वैद आपको तपै रसोई ॥ कह गिरिधर कविराय बात चतुरन के ताईं ॥ इन तेरह सों तरह दिये वनिआवै साईं ॥४५४॥

दौलत पाय न कीजिये सुपने में अभिमान ॥ चंचल जल दिन चार को ठाउँ न रहत निदान ॥ ठाउँ न रहत निदान जियत जग में यश लीजे ॥ मीठे वचन सुनाय विनय सबही की कीजे ॥

कह गिरिधर कविराय अरे यह सब घट तोलत ॥ पाहुनि निशि-दिन चार रहत सबहीके दौलत ॥ ४५५ ॥

गुणके गाहक सहस नर विन गुण लहै न कोय ॥ जैसे कागा कोकिला शब्द सुने सभकोय ॥ शब्द सुने सभकोय कोकिला सबहि सुहावन ॥ दोऊ एकै रंग काग सभ भये अपावन ॥ कह गिरिधर कविराय सुनो हो ठाकुर मन के ॥ बिन गुन लहै न कोय सहस नर गाहक गुनके ॥ ४५६ ॥

चूकै कबहुँ न चुगुल नर अरु चूकै सभकोय ॥ बरकंदाज कमानियां चूक उन्हेंसे होय ॥ चूक उन्हों से होय जे बांधैं बरछी गुछा ॥ चूक उन्हेंसे होय पढैं पंडित अरु मुछा ॥ कह गिरिधर कविराय कलाहू ते नट चूकै ॥ चुगुल चौकसीदार ससुर कबहू नहिं चूकै ॥ ४५७ ॥

नैनों की नोकें बुरी निकसजात जस तीर ॥ हेरे घाव न पाइये बेधा सकल शरीर ॥ बेधा सकल शरीर वैद क्या कर वैदाई ॥ करिहो कोटि उपाव घाव नहिं देत दिखाई ॥ कह गिरिधर कविराय विरहनी देतहै चोकें ॥ समझ बूझके चलो बुरी नैननकी नोकें ॥ ४५८ ॥

विना विचारे जो करे सो पाछे पछताय ॥ काम बिगारे आपना जग में होत हँसाय ॥ जग में होत हँसाय चित्त में चैन न आवै ॥ खान पान सन्मान राग रँग मनहिं न भावै ॥ कह गिरिधर कविराय दुःख कछु टरत न टारे ॥ खटकत है जिय माहिं कियो जो विना विचारे ॥ ४५९ ॥

बीती ताहि बिसार दे आगेकी सुध लेहु ॥ जो बनिआवे सहजहीं ताहीमें चित देहु ॥ ताही में चित देहु बात जोई बनि-

आवै ॥ दुर्जन होय न कोय चित्त में खता न पावे ॥ कह गिरधर कविराय यही कर मन परतीती ॥ आगे को सुख होय समझ बीती सो बीती ॥ ४६० ॥

सांई अपने चित्तकी भूल न कहिये कोय ॥ तवलग मनमें राखिये जबलग काज न होय ॥ जबलग काज नहोय भूल कबहू नहिं कहिये ॥ दुर्जन हँसे न कोय आप सियरे हो रहिये कह गिरिधर कविराय बात चतुरनके तांई ॥ करतूती कहदेत आप कहिये नहिं सांई ॥ ४६१ ॥

सांई अगर उजारमें जरत महापछताय ॥ गुणगाहक कोऊ नहीं जाहि सुबास सुहाय ॥ जाहि सुवास सुहाय शून्य वन कोऊ नाहीं ॥ कै गीदर कै हरिण सो तो कछु जानत नाहीं ॥ कह गिरिधर कविराय बडा दुख यही गुसाई ॥ अगर आकको राख भई मिल एकै सांई ॥ ४६२ ॥

षट् पद ।

दया चट्ट होगई धर्म धँसिगयो धरन में ॥ पुण्य गयो पाताल पाप भयो वरन बरन में ॥ राजा करे न न्याव प्रजाकी होत खुवारी ॥ घर घर भे वेपीर दुखित भे नर अरु नारी ॥ उलट दान गजपति लह शील सँतोप किते गयो ॥ वैताल कहे सुन विक्रम तो अब कलियुग परगट भयो ॥ ४६३ ॥

कुंडलिया ।

कीच पीछले धोयके आगे नाहिं लगाव ॥ ऐसा तुझको फेर रे मिले न जलदी दाव ॥ मिले न जलदी दाव भनत गुरु सुने न वहरे ॥ सर्व समग्री इँदियां भूल्यो सिखर दुपहरे ॥ कह गिरिधर कविराय धँसो मतकर्दमबीच ॥ ऊँचे मारग चलो जहां फिर लगै न कीच ॥ ४६४ ॥

रकम भुलाई बदवखत ऐसो भयो वेहोश ॥ हिसाब न समझे अकल में देत औरको दोस ॥ देत और को दोष यही तो बडी खरावी ॥ तकव्वर मदिरापान कियो बनरह्यो शरावी । कह गिरिधर कविराय धोखे चन्दन के ल्यायो वकम ॥ घर में पेड मलयागिरि नाहिं पछाने रकम ॥ ४६५ ॥

झगडा तन पाइया तूहीं इसे निवेर ॥ औरन से निवडे नहीं यही अटपटो फेर ॥ यही अटपटो फेर तुही सुरझाये सुरझे ॥ और लगायो हाथ तो उलटो दूनो उरझे ॥ कह गिरिधर कविराय भ्रांतिका पटको पगड़ा ॥ अहंब्रह्म जप सदा तभी मिटिहै यह झगड़ा ॥ ४६६ ॥

जङ्गल में मङ्गल तुझे जो तू होवे फकर ॥ खिदमत तेरी सभ करें जब दिलके छोडे मकर ॥ दिलके छोडे मकर फकीरी का रँग लागे ॥ मूलसहित संसार रोग सगरा भ्रम भागे ॥ कह गिरिधर कविराय कुफरके तोडे सङ्गल ॥ जहँ इच्छा तहँ रहो नगर हो अथवा जङ्गल ॥ ४६७ ॥

कथा यथा शुकदेव की कहत सुनत भये पार ॥ शम दम आदि विराग बिन कर खावो रुजगार ॥ करखावो रुजगार मोक्षपद नाहीं पैये ॥ सुनी सुनाई वात कहूं साधूपद लहिये ॥ कह गिरिधर कविराय दुखावो काहे मत्था ॥ ॥ इक प्रत्येक बोध विहीन निरर्थक है सब कत्था ॥ ४६८ ॥

वेटा वेटी भारजा भाई सुत संसार ॥ पिता पितामह आदि जा सब शरीर के यार ॥ सब शरीरके यार नाहिं इनमें कोउ तेरो ॥ भयो तुझे परमाद जो बनरह्यो इनको चेरो ॥ कह गिरिधर कविराय सभनका झगड़ा मेटो ॥ ना तू बाप किसीका तेरा कोई न वेटो ॥ ४६९ ॥

रोना तेरा तब मिटै जब होवे निष्काम ॥ सकल वासना नाश बिन होय न तुझे अराम ॥ होय न तुझे अराम समझ मन तूं दिल अन्तर ॥ काटे महाभुजङ्ग पढ़े बिच्छूके मंतर ॥ कह गिरिधर कविराय अविद्याका तजो कोना ॥ आओ अपनी तरफ जहाँ फिर रहे न रोना ॥ ४७० ॥

किरपा देह अध्यासकी अविद्याको परताप ॥ वेमुख भये सरूपते जपै अनातम जाप ॥ जपै अनातप जाप न सार असार बिचारैं ॥ लौकिक शब्द विचित्र परस्पर बैठ उचारैं ॥ कह गिरिधर कविराय आपको मान्यो सिरपा ॥ भयो मलिन संकल्प देह अध्यासकी किरपा ॥ ४७१ ॥

कवित्त ।

पूंछ पूंछ मुख राखैं मूछनके केशनाखैं मधु मधु बैन भाषैं कहैं हम ज्ञानी हैं ॥ देहको असत्य कहैं विषैनमें मन बहैं भोगन को चित्त चहैं यही तो हैरानी हैं ॥ जबही आपको जाना तानु मिथ्या कर माना फेर चहैं खूब खाना जानिये तूफानी हैं ॥ शिकल औलियाओंकी काम शयतानाके हैं जम्बुककी चाल चलैं सिंह जैसी बानी हैं ॥ ४७२ ॥

सवैया ।

तिल तैलकेसंग लहै दुखको रस संगहिते जग ईख पेड़ाये ॥
फलसंगते पादप ईंट सहैं अरु गंधके सङ्गते फूल तपाये ॥
कर तन्दुल सङ्गति को जगमें पुनि शीश विषे तुष मूसल खाये ॥
तिल ईख समंकर खोटनसंगत या जगमें दुख कौन नपाये ॥४७३॥
जिनके रथनेमि दरारन के सत सागर हैं अवलौं जगमाहीं ॥
जिन चापन गोसनके बल ते सम शैल बटोर धरे धर माहीं ॥
सुरराज डरे जिनके बलते यमराज जिते जिहिंते जग माहीं ॥

मनते जगभीतर नाहिं रहे अब और रहे कहुको जगमाहीं॥४७४॥
नादके लोभ तजे मृग प्राण सो बीन सुने अहि आप बँधाये॥
मीन सो त्याग अगाध जले डर लोभ जगे गल लोह पहाये॥
कागज की पुतली करिनी वश मत्त गयंद सो अंकुश खाये॥
या भुविमंडलमाहिं सुनो उरलोभ करे दुख कौन न पाये॥४७५॥
नभमें सुरलोक रचे हरिजी अरु भूमि विषे निधि क्षीर बनाये॥
मणि हीरन की गिरि कूट रचे फल फूलन के वन कोटि उपाये॥
सब लोकन को प्रभु पोपत हो सभ भूंख मिटे तुम में मन लाये॥
विन प्रेम कहा फल फूल दिये विन ते पदपंकजकी रज पाये ४७६
वर कौन मँगों तुमते हरिजी थिर नाहिं रहे जग भीतर कोई॥
नहिं राज रहे गज वाजि रहे तनुलौं मिटिजाय पिखों जग जोई॥
विन ते पदकंज लहे न कहूं सुख जो नर दूर फिरे तिहुँ लोई॥
पदमंजुल जो सनकादि भजें तिनकी प्रभु सेव दिजे मम सोई४७७
विधि एक अनीति रची जग में शुभ संतनके तन पेट लगाये॥
मुख चार न फेर विचार कियो तृण पल्लव नाहिं अहार बनायो॥
अति दीन मलीन दुखी नर जो तिनके घर भीतर भीख मँगाये॥
मनकेअनुसाररचे जगकोविधिजानतहों नहिं सीखबनायो॥४७८॥
खान मिला अरु पान मिला बहु मान मिला धन धाम रहाई॥
कुल मोट मिला गढ़तोप मिला पृथ्वी राज मिला सेन बहु पाई॥
पुत्र मिला अरु पौत्र मिला बहु मित्र मिला दिन दिन अधिकाई॥
गजवाजिमिलाबहुताजीमिलासबहीसुखधूरसमानकहाई॥ ४७९॥
प्रेम लग्यो परमेश्वर सों तब भूल गयो सगरो घर बारा॥
ज्यों उनमत्त फिरे जितही तित नेक रहे न शरीर सँभारा॥
श्वास उसाँस उठे सभ रोम चले दृग नीर अखंडित धारा॥
सुंदर कौन करे नवधा विधि छाक पर्यो रस पी मतवारा॥४८०॥

कवित्त ।

नीर बिन मीन दुखी क्षीर बिन शिशु जैसे पीरकी औषध बिन कैसे रह्यो जात है ॥ चातक ज्यों स्वाति बूँद चंद को चकोर जैसे चंदनकी चाहकर सर्प अकुलात है ॥ निर्धन ज्यों धन चाहे कामिनी को कंत चाहे ऐसी जाकी चाह ताहि कछु न सुहात है ॥ प्रेमको प्रवाह ऐसे प्रेम तहां नेम कैसे सुंदर कहत यह प्रेमहीकी बात है ॥ ४८१ ॥

कुंडलिया ।

बानी बहुतप्रकार है ताको नाहीं अंत ॥ जोई अपने काम की सोई सुने सिधांत ॥ सोई सुने सिधांत संतजन गावत होई ॥ चित्त आन के ठौर सुने जो नितप्रति सोई ॥ यथा हंस पय पिये रहे ज्यों को त्यों पानी ॥ ऐसे लहे विचार शिष्य बहुविध है बानी ॥ ४८२ ॥

सवैया ।

जानु भुजा कटि केहरि के सम कंजप्रभा दृग हैं मदमाते ॥
कोटि सुरागण नाचत हैं अरु गंध्रब आय सभी पुर गाते ॥
भौन भँडार अपार भरे धन या विधि आप रचे सो विधाते ॥
यों विध याहि भई तो कहा जब जानकीनाथके रंग न राते ४८३॥
दश चार सो भौन रचे जिनके इक आहि वली भुवमंडलमाहीं ॥
जिनके दश चार सो भौन वली इक त्याग गये तृणज्यों घरिमाहीं ॥
दश चार सो भौन को भोगत है इक एकहिं राज करे जगमाहीं ॥
दशवीसक ग्रामको राज लहे नर क्यों गरवे अपने उरमाहीं ॥४८४॥
धन ईश दियो जगभीतर जो बिन बुद्धि गयो न कछू फल पाये ॥
शुभ संतनकी नहिं सेव करी अरु विप्रन ते नहिं यज्ञ कराये ॥
नहिं कूप खने जलहेत कभी घरभीतर ना जलताल बनाये ॥

बलहीनन को सुखदान दिये नहिं दीननको दुख दूर मिटायं ४८५ ॥
अपने हित त्याग करे परको हित ते नर उत्तम है जगमाहीं ॥
अपने हित संग करे परको नर आहि समान वही भवमाहीं ॥
अपने हित नाश करे परको हित राक्षस हैं नर ते जगमाहीं ॥
विनही अपने हित नाशकरे परको हित ते नर कौन कहाहीं ॥४८६ ॥
जो सुख है सतसंगति में चतुरानन में सुख नेक न पायो ॥
सो सुख इंद्रके लोक नहीं अरु सो सुख शंभु के ध्यान न आयो ॥
सो सुख जाप न ताप किये अरु सो सुख योग न ज्ञान दृढ़ायो ॥
सो सुखहै सतसंगतिमें अविनाशीके रूपमें जाय समायो ॥४८७ ॥

राग प्रभाती ।

आपे खेल खिलारी सतगुरु आपे लीला धारी है ॥ आसमान तें तंबू वनाया जमीं गलीचा भारी है ॥ चंद्र सूर्य्य दोउ मिसल वनाये तेरी कुदरत न्यारी है ॥ राम नाम का चौपड मांड्या तू पाँसा जग सारी है ॥ पाँसा चाहे तिसे जितावे सारी कौन विचारी है ॥ पंजो छिकयो नरद वचावे वाजी कठिन करारी है ॥ जिसकी नरद पक्की घर आवे सोइयो सुघड़ खिलारी है ॥ शृंगी जैसे वनमें लूटे शंकर नेजा धारी है ॥ वड़े वड़े हंकारी लूटे रैयत कौन विचारी है ॥ जिनको वल हैं सतगुरु पूरा तिनका जगत भिखारी है ॥ कहत कवीर सुनो भाई साधो अवके जीत हमारी है ॥ धन धन केशवा कटत कलेशवा गावत शेश महेशवा रे ॥ गज के कारण धाये प्यादवा नाम धरायो हरि सँगवा रे ॥ प्रह्लाद दास प्रह्लाद वाके कारण रखवाके भये अव वघवा रे ॥ ४८८ ॥

शब्द ।

रास फकीरी उन्हांदी थींदी वाग जिन्हांदा हरया ॥ अंद्रो शादी वाहरों वादी इशक नगारा धरया ॥ शूरा ठिछ वड़या विच

रणदे मौतों मूल न डरया ॥ हरगोविंद ओही शूरमां जो पंज जित घर बड़या ॥ ॥ पंजे मेरे वीर प्यारे नाउँ पंजांदा छेया ॥ पंजे मैनूं एउँ लग रहै ज्यों कमली नूं लेहा ॥ पंजे उठके करन तगादा इक्को पंजां जेहा ॥ हरगोविंद इक बस्य न हुंदा दोस पंजां नूं केहा ॥ ४८९ ॥

यह मन लोभी लालची आँखे मूल न लग्गे ॥ कन्नीं सुणदा आंखीं देखे वाणी मूल न लग्गे ॥ श्रीभागवत गीता पढ़दे देखे पौन हुलारे वग्गे ॥ हरगोविंद सभ रुढ़दे देखे काम लहरके अग्गे॥४९०॥

श्वासो श्वासीं कर गुजारा तेरा साहिब भला करेसी ॥ छेड़ तकव्वर ढेह पौ बूहे तेरी कदीं तां कूक सुनेसी ॥ सत संतोष न छड्डीं वंदे होनी होय सो होसी ॥ हरगोविंद उठ भजन करो प्रभु बिरद की लाज रखेसी ॥ ४९१ ॥

सवैया ।

नाहिं फले जगमाहिं निशेश दिनेश फले जग में कहु काहीं ॥
पुण्य बिना फल आहिं कहाँ विधिलोक सो भूमि रसातल माहीं ॥
नाहिं सुरेश फले जगमें सो महेश फले जगमें कहु काहीं ॥
और फले नहिं को जगमें कृत पुण्य फले द्रुमज्यों ऋतु माहीं ४९२॥
इक देवहिं वंदत हों भुव में जोइ चातुर ते खल सेव कराये ॥
जग भिक्षुकको छिन एक भये महिंमंडल राजको सुक्ख भुगाये ॥
महिमंडलके पति को छिन एक दरै दर माहिं सो भीख मँगाये ॥
भुवमाहिं अगाध गती तिनकी सभ हार परे गति कोय न पावे४९३
ढिग वैठ धनी नरके हरिजी निज प्राणन रोक सु वैन उचारे ॥
नहिं वैठ तपोवन में हरिजी फल खाय सदा तव नाम सँभारे ॥
धन पावन को निशि नींद तजी हरि पावन को नहिं नैन उघारे ॥

जगमेंशुभकाजविसारतहों विधि कौन सुधा सुख पावँ मुरारे ४९४॥
तातको आयसु मान चले जिनके पदपंकज पूजत लोई ॥
राजविभूति तजी छिन में वनको निकसे जननी बहु रोई ॥
तो न फिरे पुर को हरिजू जब भ्रात गहे कर में पद दोई ॥
धर्म बराबर राज नहीं यह सूचत राम सनातन जोई ॥ ४९५ ॥
रघु भूप दिलीप तजी क्षितिमें अरु जाय बसे सो तपोवन माहीं ॥
अज नाभिको नंदन त्याग विभूति गयो वनको न रमे पुरमाहीं ॥
महिमंडल राजकों त्यागदियो पुरमंडल त्यागनमें श्रम नाहीं ॥
अवऔर न बात कहाकहिये रघुवीर विभूति तजी छिनमाहीं॥४९६॥
जे चतुराननके सुत चार गही न विभूति रमे हरिमाहीं ॥
यद्यपि है हरि पूरण ते अवलौं रति है शुभ संतनमाहीं ॥
शेष समीप सुने हरिको यश शंभु समीप सदा चल जाहीं ॥
होवत हैं गुण उत्तमनाश कुसंगतिते सनकादि डराहीं ॥ ४९७ ॥
शेष धरे धरनी शिर में अरु सूर फिरे सो सदा नभमाहीं ॥
धार गदा अवलों हरिजी बलि द्वार रहे सो पतालके माहीं ॥
घेर हलाहल लोक चरे टग शंकर नीठ धरे जगमाहीं ॥
प्राणसमान धरे व्रत को दुख भूरी भये व्रत टारत नाहीं ॥४९८॥

कवित्त।

एक ब्रह्म मुख सों बनाय कर कहतहैं अंतःस्करण तो विकारन सोई भरयोहे ॥ जेसे ठग गोवरको कूँपो भर राखत है सेर पंच घृत लेके ऊपर ज्यों करयो हे ॥ जेसे कोई भाँडे माहीं प्याज को छिपाय राखे चीथरा कपूरको ले मुख बांधि धरयो है ॥ सुंदर कहत ऐसे ज्ञानी हैं जगतमाहिं तिनको तो देख कर मेरो मन डरयो है ॥ ४९९ ॥

देह सों ममत्व पुनि गेह सों ममत्व सुत दारा सों ममत्व मन मायामें रहत है ॥ थिरता न लहै जैसे कंदुक चौगान माहिं कर्मन के वश मारयो धक्का को बहत है ॥ अंतःकरण तो सदा जगत सों रच रह्यो मुखसों बनाय बात ब्रह्मकी कहत है ॥ सुंदर याहीते मोहिं अधिक अचंभो आहि भूमिपर परयो कोऊ चंद्रको गहत है ॥ ५०० ॥

एकनके वचन सुनत अति सुख होय फूलसे झरत हैं अधिक मनभावने ॥ एकनके वचन तो असि मानो वरपत श्रवनके सुनत लगत अलखावने ॥ एकनके वचन कटुक कटु विपरूप करत मरत छेद दुख उपजावने ॥ सुंदर कहत घट घट में वचन भेद उत्तम रु मध्य अरु अधम सुहावने ॥ ५०१ ॥

प्रथम हिये विचार ढीम सों न दीजे डार ताहीते सु वचन सँभार कर बोलिये ॥ जाने न कुहेत हेत भावे तैसी कहे देत कहिये सो तब जब मन माहिं तोलिये ॥ सबहीको लागे दुख कोऊ नहीं पावे सुख बोलके वृथाही तातें छाती नहीं छोलिये ॥ सुंदर समझ कर कहिये जु नीकी वात तबहीं तो वदन कपाट गृह खोलिये ॥ ५०२ ॥

और तो वचन ऐसे बोलत हैं पशु जैसे तिनके तो बोलवे में ढंगहू न एक है ॥ कोऊ रात दिवस बकत ही रहत ऐसे जैसी विधि कूपमें बकत मानो भेक है ॥ विविध प्रकार कर बोलत जगत सब घट घट प्रति मुख वचन अनेक है ॥ सुंदर कहत ताते वचन विचार लेहु वचन तो वही जामें पाइये विवेकहे ॥ ५०३ ॥

वचन ते आन मिले वचन विरोध होय वचन ते राग वढे वचन ते दोप जू ॥ वचन ते ज्वाल उठे वचन शितल होय वचन ते मुदित वचन ही ते रोप जू ॥ वचन ते प्यारो लगे वचन ते

दूर भगे वचन ते मरजाय वचनते पोप जू ॥ सुंदर कहत यह वचन को भेद ऐसो वचन ते बंध होत वचन ते मोप जू ॥५०४॥

देख तो विचार कर सुनें तो विचार कर बोले तो विचार कर करे तो विचार है ॥ खाय तो विचार कर पीवे तो विचार कर सोवे तो विचार कर जागे तो न टार है ॥ बैठे तो विचार कर उठे तो विचार कर चले तो विचार कर सोई मतिसार है॥देय तो विचार कर लेय तो विचार कर सुंदर विचार कर याही निरधार है ॥ ५०५ ॥

सवैया ।

जो परब्रह्म मिल्यो कोउ चाहत तो नित संत समागम कीजे ॥ अंतर मेट निरंतर ह्वैकर ले उनको अपनो मन दीजे ॥ वे मुखद्वार उचार करें कछु सो अनायास सुधारस पीजे ॥ सुंदर सूर प्रकाश भयो जब और अज्ञान सभी तम छीजे ॥ ५०६ ॥

कवित्त ।

धूल जैसो धन जाके शूल संसार सुख भूल जैसो भाग देखे अंत जैसी यारी है ॥ पाप जैसी प्रभुताई शाप जैसो सनमान वडाई विच्छुन जैसी नागिन सी नारी है ॥ अग्नि जैसो इन्द्रलोक विघ्न जैसो विधिलोक कीरति कलंक जैसी सिद्धि सी ठगारी है॥ वासना न कोई बाकी ऐसी मति सदा जाकी सुंदर कहत ताहि वंदना हमारी है ॥ ५०७ ॥

जिन तन मन प्राण दीने सभ मेरे हेत औरहू ममत्व बुद्धि आपनी उठाई है ॥ जागतहू सोवतहू गावत हैं मेरे गुण करत भजन ध्यान दूसरो न कोई है ॥ तिनके में पीछे लाग्यों फिरत हों निशि दिन सुंदर कहत मेरी उनते वडाई है ॥ वेहें मेरे प्रिय मेंहू उनके अधीन सदा संतनकी महिमा तो श्रीमुख सुनाई है ॥५०८॥

साँचे उपदेश देत भली भली शिख देत समता सुबुद्धि देत कुमती हरत हैं ॥ मारग दिखाय देत भावहू भगति देत प्रेमकी प्रतीत देत अभरा भरत हैं ॥ ज्ञान देत ध्यानदेत आतम विचारदेत ब्रह्मको वताय देत ब्रह्ममें चरत हैं ॥ सुन्दर कहत जग संत कछु लेत नहीं संतजन निशिदिन देबोही करत हैं ॥ ५०९ ॥

सवैया।

प्रीति की रीत कछू नहिं राखत जाति न पाँति नहीं कुलगारो ॥
प्रेमको नेम नहीं कहुँ दीसत लाज न कान लग्यो सव खारो ॥
लीन भयो हरिसों अभिअंतर आठोंही याम रहे मतवारो ॥
सुंदर कोऊक जान सके यह गोकुलगामको पैंडोही न्यारो ॥५१०॥
है दिलमें दिलदार सही अँखियां उलटी करं ताहि चितैये ॥
आवमें खाकमें वादमें आतशें जानमें सुंदर जान जनैये ॥
नूरमें नूरहै तेज में तेजहैं ज्योति में ज्योति मिले मिलजैये ॥
क्या कहिये कहते न बनै कछु जों कहिये कहतेही लजैये ॥५११॥

कवित्त।

जाहिके विवेक ज्ञान ताहि के कुशल भयो जाही ओर जाय वाको ताही ओर सुख है ॥ जैसे कोई पायँन पैजारको चढ़ाय लेत ताको तो न कोऊ कांटे खोवरे को दुख है ॥ भावै कोऊ निंदा करै भावै तो प्रशंसा करै वे तो देखे आरसी में अपनोही मुख है ॥ देहको व्योहार सभ मिथ्या कर जानत है सुंदर कहत एक आतमाही रुख है ॥ ५१२ ॥

सवैया।

सूरके तेजते सूरज दीसत चंद्रके तेजते चंद्र उजासी ॥
तारे के तेजते तारे हूं दीसत वीजुली तेजते वीज चकासी ॥

दूर भगे वचन ते मरजाय वचनते पोप जू ॥ सुंदर कहत यह वचन को भेद ऐसो वचन ते बंध होत वचन ते मोप जू ॥५०४॥

देख तो विचार कर सुनें तो विचार कर बोले तो विचार कर करे तो विचार है ॥ खाय तो विचार कर पीवे तो विचार कर सोवे तो विचार कर जागे तो न टार है ॥ वैठे तो विचार कर उठे तो विचार कर चले तो विचार कर सोई मतिसार है॥देय तो विचार कर लेय तो विचार कर सुंदर विचार कर याही निरधार है ॥ ५०५ ॥

सवैया ।

जो परब्रह्म मिल्यो कोउ चाहत तो नित संत समागम कीजे ॥
अंतर मेट निरंतर ह्वैकर ले उनको अपनो मन दीजे ॥
वे मुखद्वार उचार करें कछु सो अनायास सुधारस पीजे ॥
सुंदर सूर प्रकाश भयो जब और अज्ञान सभी तम छीजे ॥ ५०६ ॥

कवित्त ।

धूल जैसो धन जाके शूल संसार सुख भूल जैसो भाग देखे अंत जैसी यारी है ॥ पाप जैसी प्रभुताई शाप जैसो सनमान वडाई विच्छुन जैसी नागिन सी नारी है ॥ अग्नि जैसो इन्द्रलोक विघ्न जैसो विधिलोक कीरति कलंक जैसी सिद्धि सी ठगारी है॥ वासना न कोई वाकी ऐसी मति सदा जाकी सुंदर कहत ताहि वंदना हमारी है ॥ ५०७ ॥

जिन तन मन प्राण दीने सभ मेरे हेत औरहू ममत्व बुद्धि आपनी उठाई है ॥ जागतहू सोवत हू गावत हैं मेरे गुण करत भजन ध्यान दूसरो न कोई है ॥ तिनके में पीछे लाग्यों फिरत हों निशि दिन सुंदर कहत मेरी उनते बडाई है ॥ वेहैं मेरे प्रिय मैंहूं उनके अधीन सदा संतनकी महिमा तो श्रीमुख सुनाई है॥५०८॥

साँचे उपदेश देत भली भली शिख देत समता सुबुद्धि देत कुमती हरत हैं ॥ मारग दिखाय देत भावहू भगति देत प्रेमकी प्रतीत देत अभरा भरत हैं ॥ ज्ञान देत ध्यानदेत आतम विचारदेत ब्रह्मको वताय देत ब्रह्ममें चरत हैं ॥ सुन्दर कहत जग संत कछु लेत नहीं संतजन निशिदिन देबोही करत हैं ॥ ५०९ ॥

सवैया।

प्रीति की रीत कछू नहिं राखत जाति न पाँति नहीं कुलगारो॥
प्रेमको नेम नहीं कहुँ दीसत लाज न कान लग्यो सब खारो ॥
लीन भयो हरिसों अभिअंतर आठोंही याम रहे मतवारो ॥
सुंदर कोऊक जान सके यह गोकुलगामको पैंडोही न्यारो ॥५१०॥
है दिलमें दिलदार सही अँखियां उलटी करं ताहि चितैये ॥
आबमें खाकमें बादमें आतशें जानमें सुंदर जान जनैये ॥
नूरमें नूरहै तेज में तेजहैं ज्योति में ज्योति मिले मिलजैये ॥
क्या कहिये कहते न बनै कछु जो कहिये कहतेही लजैये ॥५११॥

कवित्त।

जाहिके विवेक ज्ञान ताहि के कुशल भयो जाही ओर जाय वाको ताही ओर सुख है ॥ जैसे कोई पायँन पैजारको चढ़ाय लेत ताको तो न कोऊ कांटे खोबरे को दुख है ॥ भावे कोऊ निंदा करै भावे तो प्रशंसा करै वे तो देखे आरसी में अपनोही मुख है ॥ देहको व्योहार सभ मिथ्या कर जानत है सुंदर कहत एक आतमाही रुख है ॥ ५१२ ॥

सवैया।

सूरके तेजते सूरज दीसत चंद्रके तेजते चंद्र उजासी ॥
तारे के तेजते तारे हूं दीसत बीजुली तेजते बीज चकासी ॥

दीपके तेजते दीपक दीसत हीरेके तेजते हीरोही भासी ॥
तैसेही सुन्दर आतम जानहु आपके ज्ञानते आप प्रकासी ॥५१३॥

कवित्त ।

एक तो श्रवण ज्ञान पावक ज्यों देखियत मायाजाल परसत वेगि बुझिजात है ॥ एक है मनन ज्ञान बिजली ज्यों घनमध्य मायाजल बरषत तामें न बुझात है ॥ एक निदध्यास ज्ञान वडवा अनल जैसे प्रगट समुद्रमाहिं मायाजल खात है ॥ अनुभो साक्षात ज्ञान प्रलेकी अगिनि सम सुंदर कहत द्वैतप्रपंच बिलात है ॥५१४॥

भोजनकी बात सुन मनमें मुदित भयो मुखमें न परै जौलों मेलिये न ग्रास है ॥सकल सामग्री आन पाकको करन लागो मनन करत कब जेंवों यह आस है ॥ पाक जब भयो तब भोजन करन वैठो मुखमें मेलत जाय यह निदध्यास है ॥ भोजन पूरण कर तृपित भयो है जब सुन्दर साक्षातकार अनुभो प्रकाश है ॥५१५॥

जबहीं जिज्ञासा होय चित्त एकठौर आन मृग ज्यों सुनत नाद श्रवण सों कहिये ॥ जैसे स्वाति बूँदहू को चातक रटत पुनि ऐसेही मनन करै कब बूंद लहिये ॥ रात्रिको चकोर जैसे चंद्रमाको धरे ध्यान ऐसे जान निदध्यास दृढ़ कर गहिये ॥ यही अनुभव यही कहिये साक्षातकार सुंदर पारे ते गल पानी होय रहिये ॥५१६॥

काहूको पूँछत रंक धन कैसे पाइयत कान देके सुनत श्रवण सोई जानिये ॥ उन कह्यो धन हम देख्योहै अमुक ठोर मनन करत भयो कब घर आनिये ॥ फेर जब कह्यो धन गाड़्यो तेरे घरमाहिं खोदन लग्यो है जब निदध्यास ठानिये ॥ धन निकस्यो है जब दारिद गयो है तब सुंदर साक्षातकार तृपति बखानिये ॥ ५१७ ॥

सवैया।

ऋषिनारि तरी कपि रीछ तरे सो लँगूर तरे जिहिं नाम उचारे॥
बन भीलसुता जिहिं नाम तरी सो जटायु विहंगम जाहिं उधारे॥
अब चेतन बात कहाकहिये जड भूधर नाम तरे निधि खारे॥
अब औसर राम भजो मन रे दुख मेट तेरो भवसागर पारे५१८॥
भवहारकके चित नेम कहे यम हैं भवहारक और वखाने॥
इक त्याग कहे इक दान कहे इक योग सो साधन कै उर ठाने॥
इक यज्ञ कहे तपसा परसाधन तीरथवास सो एक प्रमाने॥
ब्रज है भवहारक एक भने हमतो इक रामहिं नाम पछाने ५१९॥
जग मानवदेह मिले न सदा नर राम भजो जिहिंते सुख पावो॥
जग भोग बराटकके बदले न अमोलक लाल अकाज गवाँवो॥
लरकापन जाठर में बल छीन सो यौवन में दृढ पुण्य कमावो॥
शुभसीख इहै जनमान चलो जिहिंते नहिं अंत समै पछतावो॥५२०॥
जग रूखन सूखन भोजन के फल फूलन के तनुपालन कीजे॥
जग बैठ जहाँ तहाँ ठौर भली प्रभु पावनको उर जाप जपीजे॥
तृण कोमल बीन बिछाय भले दृग नींद भरे घर माहिं सोईजे॥
धूरत मूढ़ दियाकुल बैन सो भूपतिके नहिं पास बहीजै॥५२१॥
शैलशिलातल सेज करे गिरिकंदर ही गृह हैं वन माहीं॥
पादपछाल सो चीर धरे अरु मीत सखा मृग हैं वन माहीं॥
भोजन पादपको फल है जलपान करे झिरना गिरि माहीं॥
पेटके हेत न सेव करे नर ते नर ईश गिने भव माहीं॥५२२॥
धन्य भई तिनकी जननी किरतारथ सो जग वेदन गाई॥
कुल पावन ताहि करी सगरी जग धन्य भई तिन मीत सखाई॥
पद कंजन तासु पुनीत धरा रज पावन ते जनपाप मिटाई॥
जो भुवमंडलमाहिं भजे छिन एक एकागर रामसहाई॥५२३॥

दीपके तेजते दीपक दीसत हीरेके तेजते हीरोही भासी ॥
तैसेही सुन्दर आतम जानहु आपके ज्ञानते आप प्रकासी ॥५१३॥

कवित्त।

एक तो श्रवण ज्ञान पावक ज्यों देखियत मायाजाल परसत वेगि बुझिजात है ॥ एक है मनन ज्ञान विजली ज्यों घनमध्य मायाजल वरपत तामें न बुझात है॥ एक निदध्यास ज्ञान वडवा अनल जैसे प्रगट समुद्रमाहिं मायाजल खात है ॥ अनुभो साक्षात ज्ञान प्रलेकी अगिनि सम सुंदर कहत द्वैतप्रपंच बिलात है ॥५१४॥

भोजनकी वात सुन मनमें मुदित भयो मुखमें न परै जोलों मेलिये न ग्रास है॥सकल सामग्री आन पाकको करन लागो मनन करत कव जेंवों यह आस है ॥ पाक जब भयो तव भोजन करन वेठो मुखमें मेलत जाय यह निदध्यास है ॥ भोजन पूरण कर तृपित भयो है जब सुन्दर साक्षातकार अनुभो प्रकाश है ॥५१५॥

जबहीं जिज्ञासा होय चित्त एकठौर आन मृग ज्यों सुनत नाद श्रवण सों कहिये ॥ जैसे स्वाति बूँदहू को चातक रटत पुनि ऐसेही मनन करै कव बूँद लहिये ॥ रात्रिको चकोर जैसे चंद्रमाको धरै ध्यान ऐसे जान निदध्यास दृढ़ कर गहिये ॥ यही अनुभव यही कहिये साक्षातकार सुंदर पारे ते गल पानी होय रहिये ॥५१६॥

काहूको पूँछत रंक धन कैसे पाइयत कान देके सुनत श्रवण सोई जानिये ॥ उन कह्यो धन हम देख्योहै अमुक ठौर मनन करत भयो कव घर आनिये ॥ फेर जब कह्यो धन गाड्यो तेरे घरमाहिं खोदन लग्यो है जब निदध्यास ठानिये ॥ धन निकस्यो है जब दारिद गयो है तब सुंदर साक्षातकार नृपति बखानिये ॥ ५१७ ॥

सवैया।

ऋषिनारि तरी कपि रीछ तरे सो लँगूर तरे जिहिं नाम उचारे ॥
बन भीलसुता जिहिं नाम तरी सो जटायु विहंगम जाहिं उधारे॥
अब चेतन बात कहाकहिये जड भूधर नाम तरे निधि खारे ॥
अब औसर राम भजो मन रे दुख मेट तेरो भवसागर पारे५१८॥
भवहारकके चित नेम कहे यम हैं भवहारक और वखाने ॥
इक त्याग कहे इक दान कहे इक योग सो साधन के उर ठाने ॥
इक यज्ञ कहे तपसा परसाधन तीरथवास सो एक प्रमाने ॥
व्रज है भवहारक एक भने हमतो इक रामहिं नाम पछाने ५१९ ॥
जग मानवदेह मिलै न सदा नर राम भजो जिहिंते सुख पावो ॥
जग भोग बराटकके बदले न अमोलक लाल अकाज गवाँवो ॥
लरकापन जाठर में बल छीन सो यौवन में दृढ पुण्य कमावो ॥
शुभसीख इहै जनमान चलो जिहिंते नहिं अंत समै पछतावो॥५२०॥
जग रूखन सूखन भोजन कै फल फूलन कै तनुपालन कीजे ॥
जग बैठ जहाँ तहाँ ठौर भली प्रभु पावनको उर जाप जपीजे ॥
तृण कोमल बीन बिछाय भले दृग नींद भरे घर माहिं सोईजे ॥
धूरत मूढ़ दियाकुल बैन सो भूपतिके नहिं पास बहीजै ॥ ५२१ ॥
शैलशिलातल सेज करे गिरिकंदर ही गृह हैं वन माहीं ॥
पादपछाल सो चीर धरे अरु मीत सखा मृग हैं वन माहीं ॥
भोजन पादपको फल है जलपान करे झिरना गिरि माहीं ॥
पेटके हेत न सेव करे नर ते नर ईश गिने भव माहीं ॥ ५२२ ॥
धन्य भई तिनकी जननी किरतारथ सो जग वेदन गाई ॥
कुल पावन ताहि करी सगरी जग धन्य भई तिन मीत सखाई ॥
पद कंजन तासु पुनीत धरा रज पावन ते जनपाप मिटाई ॥
जो भुवमंडलमाहिं भजे छिन एक एकागर रामसहाई ॥ ५२३ ॥

कुंडलिया।

वादलदौरे जातहैं दौरत दीसत चन्द ॥ देहसंग ते आतमा चलत कहै मतिमन्द ॥ चलत कहै मतिमन्द आतमा अचल सदा हीं ॥ हलत चलत यह देह थापले आतम माहीं ॥ सुन्दर चंचलबुद्धि समझ ताते नहिं बौरे ॥ दौरत दीसै चंद जात हैं वादल दौरे ॥ ५२४ ॥

सव कोऊ ऐसे कहैं काटत हैं हम काल ॥ काल नाश सबको करे वृद्ध तरुण अरु वाल ॥ वृद्ध तरुण अरु वाल शाल सबहिन को भारी ॥ देह आपको मान कहत हैं नर अरु नारी॥ सुन्दर आतम अमर देह मरिहै घरखोऊ ॥ काटत हैं हम काल कहत ऐसे सभकोऊ॥ ५२५ ॥

राग माली गौड।

हरि नाम ते सुख ऊपजै मत्त छांड आन उपाय रे॥तनुकष्ट कर कर जो भ्रमे तो मरण दुःख न जाय रे ॥ गुरु ज्ञानको विश्वास गह जिन भ्रमे दूजी ठौर रे ॥ योग यज्ञ कलेश तप व्रत नाम तुल्य न और रे॥ सव सन्त यूंहीं कहत हैं श्रुति सुमृत ग्रंथ पुराण रे ॥ दास सुन्दर नामते गति लहै पदनिरवाण रे ॥ ५२६ ॥

राग मारू।

सोई जन रामके भावै हो ॥ कनक कामिनी परिहरै नहिं आप बँधावै हो ॥ सवही सों निर्वैरता काहू न दुखावहिं हो ॥ शीतल वाणी वोलके रस अमृत प्यावै हो ॥ कैतो पान गहेरहै के हरि गुण गावै हो ॥ भर्म कथा संसारकी सब दूर उडावै हो॥ पांचों इंद्रिय वश करै मन मनहिं मिलावै हो ॥ काम क्रोध अरु लोभको खन खोद बहावै हो ॥ चौथापदको

चीन्हके ता माहिं समावै हो ॥ सुन्दर ऐसे साधके ढिग काल न आवै हो ॥ ५२७ ॥

राग बरवा ।

मानती न प्यारी सखियां सब हारी हारी ॥ जब हरि वेप कियो युवतीको पहिन कुसुमरी सारी ॥ मुकुट उतार गुही शिर बेनी नख शिख मांग सवाँरी ॥ कुंडल त्याग तरोना पहिरे कंकण नूपुर वारी॥ काजर नैन कठिन कुच कंचुकि बेसर चूरी सवाँरी ॥ नखन महावर तिलक आडदे भये कपट नट नारी ॥ प्रण करि चले संग ललिता के मोहे देत हित कारी ॥ कृष्णदास आली करसो पकर लिये मिले कुंज पिय प्यारी ॥ ५२८ ॥

राग परज ।

रघुवर तेरोही दास कहाऊं ॥ तुमरोही नाम जपों निशि वासर तुम्हरेही गुण गाऊं ॥ तुमहीं मेरे प्राण जीवन धन तुम तजि अनत न जाऊं ॥ तुम्हरे चरण कमलको मधुकर रत्नहरी सुख पाऊं॥५२९॥

राग भैरवी ।

डरदा डरदा अर्ज इक करदा ॥ सुन तैनूं दरियाउ मिहरदा ॥ तू लाडला दशरथ रघुवर दा ॥ कर वरदा मैंनूं अपने घरदा ॥ रत्न हरि हुण केहा पड़दा ॥ ५३० ॥

राग होरी ।

मैंतो तुमसों होरी खेलों कान्ह साँवरे ॥ अवीर गुलाव भरे भर डारों यह मेरे मन चाव रे ॥ केसर रंग भिजोवों तोको भाग कहां अब जाव रे॥ सब दिनकी अब कसर निकारों कहा करोगे राव रे ॥ रत्नहरी प्रभु या होरीमें लाग्यो हमरो दाँव रे ॥ ५३१ ॥

राग कालिंगड़ा।

होरी नन्द नन्दन खेलें अब कैसे लाज रहे ॥ जो कोउ जाय यमुन जल भरने वाही पे रंग बहे ॥ बाट चलत वह ढीठ लँगरवा बरजोरी बैयां जो गहे ॥ रत्नहरी या व्रजको बसिबो अब कैसे निबहे ॥ ९२२ ॥

राग केदार ।

पूरी न परत प्रहलादकी प्रतिज्ञा राखी खम्भ हू से निकस नृसिंह देह धारी है॥ द्रौपदीकी लाज काज द्वारका से धाये आली संकट विडार गज दीन हितकारीहै ॥ सुदामा गरीबको सो मंदिर कनक कियो गौतमकी नारी चर्ण छायके उभारी है ॥ दशरथनंदन श्रीरामचन्द्र विनै सुनो एते काज किये प्रभु मेरो काज भारी है ॥ ९२३ ॥

कवित्त ।

गर्व ते सुलक्ख जाय सूमता ते जश जाय कुपुत्र ते कुल जाय जोग तो कुसंग ते ॥ लाड किये पुत्र जाय शोकते शरीर जाय भूँख ते मर्जाद जाय बुद्धि जाय भंग ते ॥ कपट ते मित्र जाय लोभ बे वडाई जाय मांग हू ते मान जाय पाप जाय गंग ते ॥ नीति विना राज जाय क्रोध ते तपस्या जाय रजपूती जाय जब मुडे जात जंग ते ॥ ९२४ ॥

राग गौरी ।

कदम चढ़ लाल बुलावत गैयां ॥ बंशी टेर सुनी जब श्रवणन जहिं तहिं ते दठ धैयां ॥ आवो रे सब सखा संगके कर पावो इक ठैयां ॥ गोविंद प्रभु बलदाउसे कहत हैं अब घरको बगदैयां ॥ ९२५ ॥

राग बिलावल।

सखी री मुझे आज मिले नँदलाल ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल गल बैजंती माल ॥ पीत वसन घनश्याम मनोहर घूँघरवाले बाल ॥ देखदेख मोहनकी छबिको तनक न तनकी सँभाल ॥ लक्ष्मी नारायण को जाने आगे कौन हवाल ॥ ५३६ ॥

राग सोरठ।

डगर में प्यारी आज मिले कहीं श्याम ॥ लट पट पाग सोहे पचरंगी पीताम्बर अभिराम ॥नख शिख अमित आभरन मनोहर वंशीधर गुणधाम ॥ देख जाय पद नखकी शोभा कोटि लजावत काम॥ लक्ष्मीनारायण दर्शनबिन तलफूँ आठों याम ॥५३७॥

सवैया।

लालहि लालके लालहि लोचन लालनके मुख लालहि बीरा॥
लाल बनी कछनी कटि लालके लाल के शीश सु लालहि चीरा॥
लालहि बाग बने अतिसुंदर लाल खडे यमुनाजुके तीरा ॥
गोविंद यों प्रभु शोभा बखानत लालके कंठ विराजत हीरा॥५३८॥
पीरोहि कुण्डल पीरोहि नूपुर पीत पीतांबर ओढे ओ ठाढो ॥
पीत बनी कटि काछनियां अरु पीरो सो खौर बन्यो चहिं गाढ़ो ॥
पीरोहि मूकुट लालको सोहत पीरोहि खोर बन्यो पटुकाको ॥
गोविंद यों प्रभु शोभा बखानत पीरो लकुट्ट लियो हथ गाढो ॥५३९॥
धौरेहि मोहन धौरेहि सोहन धौरेहि चन्दनखौर विशाल ॥
धौरे कडे कर हाथ न सोहैं औ धौरे सोहैं गल फूलनहार ॥
धौरो दधि वेचन को निकसी मग रोकत मोहिं नन्दको लाल ॥
गोविद यों प्रभु शोभा बखानत धौरीसोहै गल मोतिनमाल॥५४०॥
कारेहि मोहन कारेहि सोहन चाल कालिंदीजुके तट आयो ॥

काली कलिंदिन कारिहु नागिन कारो सो नागहु जाय जगायो ॥ कारे को नाथ लिये छिनमें जब शीशके ऊपर नृत्य करायो ॥ गोविंद यों प्रभु शोभा वखानत कारो सो नाथके नाथ कहायो५४१॥

राग सोरठ ।

चल हरि तोहिं बुलावे श्रीराधे ॥ तोरे सङ्ग है प्रीत श्यामकी ओर त्रिया नहिं भावे ॥ राधा राधा करत रहतहें खान पान नहिं भावे ॥ कृश तनु भयो वियोग तुम्हारे वंशी नाहिं वजावे ॥ सूर श्याम पै चलो सखी री काहेको मिनत करावे ॥ ५४२ ॥

राग पीलो ।

प्यारी लाल तोरे री आधीन ॥ सुन सजनी हम सांची वखानें तुम जल हो वह मीन ॥ तोरे रस वश श्याम सुंदर मन जा वर चाहत दीन ॥ विट्ठल विपुल विनोद विहारन होत मनावत लीन ॥ ५४३ ॥

प्यारीलाल तोरे ललित गुण गाने ॥ सुन सजनी हम सांची वखाने चल सुन अपने काने ॥ जो तुम श्याम होवे वह श्यामा तो तुम वेदन जाने ॥ विट्ठल विपुल विनोद विहारन वादही रूसा ठाने ॥ ५४४ ॥

राग वरवा ।

लाडिली प्यारिये दर्शन देहु लाडिली प्यारिये ॥ ललिता कहे सुनिये प्यारि राधे मानले ,अर्ज हमारिये ॥ यहतो बातें तोहिं कोन सिखावे मान तजो मिलो कुंज विहारिये ॥ विट्ठल विपिन विनोद विहारन श्रीवृषभानु दुलारिये ॥ ५४५ ॥

आपन चालये महाराज लाला न कीजिये लाज ॥ मेंतो तिहारी आज्ञाकारिन कहा कहो ब्रजराज ॥ मोसों जो तुम कोटि

पठावो प्यारी नहीं मानत आज ॥ सूरदास बड़जन जो कहगये आप काज महाकाज ॥ ॥५४६ ॥

राग विहाग ।

प्यारी नेक निरखों नवरंग लालहिं ॥ तोहिं पद पंकज तल रज वंदत तिलक बनावत भालहिं ॥ तेरे वर्ण वसन आभूपण उर चंपेकी मालहिं ॥ श्रीबिठ्ठल विपिन विनोद विहारन भुज भर वाहि विशालहिं ॥ ५४७ ॥

राग सोरठ ।

श्रीराधे नामकी बलिहारी ॥ जाके नाम लिये दुख नाशैं सुखके हों अधिकारी ॥ शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक मुनि जन नर औ नारी ॥ हित आनंद पर कृपा कीजिये श्रीवृपभानु-दुलारी ॥ ५४८ ॥

राग कान्हरो ।

श्रीराधे राधे राधे हो श्री राधे राधे राधे ॥ वृपभानु नंदनी जगत वंदनी अद्भुत रूप अगाधे ॥ जाको रूप जगतको मोहे सुख संपति लिये साधे ॥ रूप रसिक चितवन में वस भयो प्राण पपीहा बाधे ॥ ५४९ ॥

राग सोरठ ।

मैं न जाऊं हरी पास री सजनी मैं न जाऊं हरी पास ॥ श्याम रचै अव और त्रियन सँग हमसों भये उदास ॥ करो री कपटी अव हम चीनो आगे था विश्वास ॥ सूरश्याम पै मैं न जाऊँगी आली तो सम्रु पठहैं पचास ॥ ५५० ॥

राग पीलू ।

चल री नई कुंज बुलाई राधे ॥ तुम बिन व्याकुल कुँवर कन्हाई कहा मानजिया ठान रही अरु तुमसों चतुर न कोय ॥ छांड देय निठुराई इतना कहा हमारा मानो नवनागर ब्रजबाल ॥ मनमोहन आधीन तिहारे विहरो दे गल बाहिं कारण कौन रुसाई ॥ या सुन प्रीति किशोरी किशोरी उर बाढ़ी नंदलाल ॥ वेग उठी मिलि धाय पिया सों मदन खुशाल मनाई बहुत भाँति समझाई ॥ ५५१ ॥

राग बसंत ।

देखो देखो ब्रजबासिनके भाग ॥ मोहन सँग होरी खेलत फाग॥ जाको निगम उचारैं वारबार ॥ कछु कहि न सकें महिमा अपार ॥ ब्रह्मादिक जाको न पावें अंत ॥ सो ग्वारिन सँग खेलत बसंत ॥ एक कहै मोरे बैठो आय ॥ एक कहै मुरली बजाय ॥ एक पीतांबर लेत छिनाय ॥ अद्भुत लीला लखी न जाय ॥ एक परस्पर करें वात ॥ एक माला गुंध ल्याई अनेक भांत ॥ एक बीड़ी विमल बनाय देत ॥ कर जूठे अपने हरि को देत ॥ एक कहै चलो कुंज ओर ॥ जहँ गुंजत कोकिल नचत मोर ॥ एक कहै कंधे उठाय ॥ परमानंद स्वामी रहे लुभाय ॥ ५५२ ॥

नवल बसंत नवल श्रीवृंदावन नवले फूले फूल ॥ नवले कान्ह नवल सब गोपी निर्तत एकै तूल ॥ नवल कुमकुमा केसर नवले नवले बसन अमोल ॥ नवल यमुना जल पल्लव शाखा नवल पवनकी झूल ॥ नई नई छींट लगी केसरकी मेटत मन को शूल ॥ नये नये वाजे वाजत श्रीभट कालिंदीके कूल ॥ ५५३ ॥

देखो वृन्दावनके कैसे भाग जहाँ राधा माधो खेलत फाग ॥ कई कोटिक ब्रह्मादिक कई कोटि इंद्र कई कोटिक आदित्य कोटि चन्द्र जाको ध्यान धरत मुनि रहेहैं हार ॥ ताको सकल

गोप मिल देत गार जाके मोर मुकुट माथे तिलक भाल ललित माल लोचन बिशाल ॥ जाको शेश सहस मुख लहे न अन्त ताको गुण गावत नारद बे अन्त जाको अगम निगम ते अगम पुंज सों तो हाहा करत फिरत कुंज कुंज ॥ सूरदास मैं तुम्हारे दास कबहुं न पावों यमकी त्रास ॥ ५५४ ॥

ऐसो बालक खेले नन्द द्वार तीन लोक जाके मुख मँझार ॥ कान कुण्डल जाके पदन पाउँ वसुदेव पिता देवकी माउ कोटि भानु जाका दिव्य शरीर सो तो धेनु चरावे यमुना तीर॥ जाको निगम कहत है नेत नेत सो तो गोपनके संग हेरी देत पाउँ पताल जाका पताल जाका शिर अकास ताको जानतहै कोउ हरिको दास ॥ शिव सनकादिक करत सेव ब्रह्मादिक जाको लहै न भेव कहत कबीर जाको गुण अपार ताको सुमर सुमर नर उतरे पार॥५५५॥

राग सोरठ ।

देखो री या बेनी गूंथी नन्दके कुमार ॥ करकोमल फूलनके गजरे ओ पहराये हार ॥ तू बडभागिन भानुनन्दनी वश किये कृष्ण मुरार ॥ उठ वखतावर मिलु चल अबहीं छिन छिन होत अबार ॥ ५५६ ॥

राग विलावल ।

मोहन छबीला मन भामदा सैयो मैंनूँ ॥ मृदु मुसकामदा चित ललचामदा॥ नाहक जी तरसामदा ॥ तान नमानी ने घायल करयां मन बिच फंदापामदा ॥ दिल विच उपजी आतश विरहोंदी ब्रजनिधि सैन चलामदा ॥५५७ ॥

सवैया ।

वलि वासव जीतवको मत राख भली विधि सों उन यज्ञ पढ़ी॥
सन्मानके दान दिये द्विज देवन नेकहु नाहिन भौंह चढ़ी ॥

लकुटी पकडे हरि आये तहाँ महिं माँग लई करबेको मढ़ी ॥ तहँ बावनके कर अंगके संग सुखी लकडी बिन पातबढी ॥५५८॥

राग झंझोटी।

जा दिन मन पंछी उड जैहैं ॥ ता दिन तेरे तनु तरुवरके सबै पात झरि जैहैं ॥ घरके कहैं वेग ही काढो भूत भये कोउ खैहैं ॥ जा प्रीतम सों प्रीति घनेरी सोऊ देख डरैहैं ॥ कहँ वह ताल कहाँ वह शोभा देखत धूर उडैहैं ॥ भाई बंधु कुटुम्ब कवीला सुमर सुमर पछितैहैं ॥ बिना गुपाल कोऊ नहिं अपना यश कीरति रहजैहैं ॥ सो तो सूर दुर्लभ देवनको सतसंगति में पैहैं ॥ ५५९ ॥

राग वसन्त।

होये री त्यार वसन्त खेलनको, दशरथ के सुत चार ॥ रामते लक्ष्मण भरत शत्रुहन चारों राजकुमार ॥ पहरे पीत पीतांबर वस्तु तुरियनके असवार ॥ उडत गुलाल लाल भये बादर केशर पडत फुहार ॥ घनियर गरजे बादर वरसे विजली की चमकार ॥ या छवि निरख श्रीराम दूल्हौकी अग्रदास बलिहार ॥ ५६० ॥

राजत राम जानकी जोरी ॥ चतुरनारि डारत तृण तोरी ॥ श्याम सरोज जलज सुन्दर वर दुलहिनि ताडित वरन तनु गोरी ॥ मंडप में दोउ ओर मनोहर गठत चूनरी पीत पिछौरी ॥ कनक कलश सजदेत भाँवरी देख रूप शारद भई बोरी ॥ व्याह समय शोभित वितान तर उपमा कौन कहै मति थोरी ॥ मनो मदन मंजुल मंडप तर छवि शृंगार शोभा इक ठोरी ॥ सतानन्द वशिष्ठ आदिदै वंश प्रशंस करैं दोउ ओरी ॥ गान

निशान वेद धुन सुन सुन मुनि वर्षत सुमन झकोरी ॥ नैननको फल लेत मुदित मन सखि अशीश दें ईश निहोरी ॥ तुलसिदास छबि देख मगन भये क्या बरणों रसना इक मोरी ॥ ५६१ ॥

राग भैरवी ।

सुन मैया मेरी तू जननी यह मोहिं बहुत खिझावैं ॥ ग्वाल बाल लिये संगहि खेलूं खेलन मोहिं न पावैं ॥ गह२ बाहिं लेजातीहैं घर को करसों तालबजावैं ॥ मोहिं कहैं घर नाच रे छोरा माखन तोहिं खिलावैं ॥ नाचों तो नवनीत न देवें पीत पछोरी लावैं ॥ फोऊ कछनी छीन लेत हैं मुरली कोउ चुरावैं ॥ भागजाउँ पाछे पड़ मोको पुनि गह कंठ लगावैं ॥ यह अनीति कैसे कर सहिये और ठौर उठजावैं ॥ दया राम सुन हँसी यशोदा झूँठी चेरियां लावैं ॥ ५६२ ॥

राग कान्हरो ।

या मोहनके मैं रूप लुभानी ॥ हाटवाट मोहिं रोकत टोकत या रसियाकी मैं सार न जानी ॥ सुंदरवदन कमलदललोचन बांकी चितवन मंद मुसकानी ॥ यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावें वंशी में गावें मीठी वानी ॥ तन मन धन गिरिधरपर वारूं चरण कमल मीरा लपटानी ॥ ५६३ ॥

राग होरी ।

होरीको छैल मोहिं ढूँढ़त डोलै अब कित्थे जाय छिपों मोरी दैया ॥ लाजभरी गारी वंशी में मेरो नाम लेले गावै कन्हैया ॥ सास सदा मेरे वैर पड़ी है ननँद निगोरी करै लड़ैया ॥ कृष्ण जीवन लच्छीरामके प्रभु प्यारे फागन मास वड़ दुखदैया ॥ ५६४ ॥

राग भैरवी।

तू न भयो अपना रे लोभी मन ॥ यह संसार ओसको मोती जैसे रैनका सुपना ॥ जैसे आगको रोकत धुआं ज्यों दर्पणको ढकना ॥ ऊधोदास यह गावे राम नाम जपना ॥ ५६५ ॥

राग गौरी।

बांको छैल गुमानी मैया तेरो ॥ संग लिये लरिकनको डोले बोले अटपटी बानी ॥ बाट घाट दधि खोसही खावे और फोडे जो मथानी॥ दधि मेरो खायो घनेरो नायो भाजनको पछितानी ॥ आवे पौर दौर कर पकरौं तू घर जाहि सयानी ॥ दामोदर घर दूध घनेरा नंद महरि मुसकानी ॥ ५६६ ॥

राग जंगला।

मैंतो थारे दामन लगी जी गोपाल ॥ किरपा कीजो दर्शन दीजो सुध लीजो ततकाल ॥ गल वैजंती माल विराजे दर्शन भई है निहाल। मीराके प्रभु गिरिधर नागर भक्तनके रछपाल ॥५६७॥

जिन पायो ऊधो प्रेमहूं से पायो रे ॥ बिना प्रेम कछु हाथ न आयो रे ॥ घस घस चंदना लगावे मधुसूदान कहो काह योग उस कूबरी कमायो रे ॥ तुम जो कहत ऊधो प्रेम तजं योग लीजै प्रेम कौन घाट याग कौन बड़ो आयो रे ॥ सूरश्यामजीके आगे ऐसे जाय कहियो ऊधो तुम जो पठायो योग पानी में बहायो रे ॥ ५६८ ॥

नेह जुरयो नँदनंदन सों अब कैसे लाज रहे मेरी सजनी ॥ यह अँखियां अब रह न सकत हैं देखे विना व्रजराज री सजनी ॥ अटके नैंन माधुरी मुसकन भूल गये सभ काज री सजनी ॥ देह गेहकी सुध विसरानी रहो गिरो भावे आज री सजनी ॥ लोक लाज कुल कान छूटगई लवा निरख ज्यों

बाजरी सजनी ॥ मयाराम अब ओट न कोऊ ज्यों खन सिंधु जहाज री सजनी ॥ ५६९ ॥

राग बिहाग ।

मैंनूं अयानी संदेशा श्यामदा सुनो ब्रजनार भला ॥ योगकी पतियां पठाई मोपै रल मिल करो री बिचार ॥ ऐसी करी जैसी देखी न सुनी री हम सँग नंदकुमार ॥ सूर श्याम विन तरफत निशि दिन जाने न निपट गवाँर ॥ ५७० ॥

राग जैजैवंती ।

बहुत तुम कहत सभ चलो या मात पै तात रस मत्त यशुमत्त रानी ॥ देख लई लच्छ कर पुत्रकी पच्छकर अच्छ भर बात हमरी न मानी ॥ चलो सब वाम गृह काम तज ढूँढिये घेर कर पकर कुल छाँड कानी ॥ देहिंगी धाम सन्मान सों कान्हको बांध कर देहु भये नये दानी ॥ लेगये श्याम वनधाम सब सखिनको झपट पट ओट वंशी बजानी ॥ निज मुख आपही बोल उठे बाजी कहूं बाजी कहे या दिशा बजत जानी ॥ ५७१ ॥

ग़ज़ल ।

यशोदा ढीठ है तेरो किशोरी॥ झपट गह चट मेरी बैयां मरोरी॥ गई दधि बेचवे में ब्रजकी खोरी॥ कह्यो मुसकायके कहँ जात गोरी ॥ अचानक टार घूंघटपट कन्हाई ॥ लगायो कंठ मोतिनमाल तोरी ॥ भरी शिरसे गगरिया धरणि पटकी ॥ बहुत हटकी न मानी एक मोरी ॥ कियो मोहिं बावरी चितवन मिलाके ॥ नजानूं कौनसी डारी ठगोरी ॥ महरी तैंने अनोखो पूत जायो ॥ फिरे वन वन करे

माखन की चोरी ॥ वसैंगी जायके कहिं अंत ठौरैं ॥ जुगल चरणों में मैं करती निहोरी ॥ ५७२ ॥

राग देश ।

चलो री आली वंशीवट तीरैं ॥ रट लागी श्रीराधे राधे नागर नटवर श्याम शरीरैं ॥ कहूं लकुट कहुँ मुकुट पीत पट शिथिल अंग मन विरह अधीरैं ॥ ललित किशोरी सुन व्याकुल गति चल मिल मेटो मदनकी पीरैं ॥ ५७३ ॥

सवैया ।

शैल कपीचर पार परे यहि भाँति सुन्यो हरिजी बल तोरा ॥ है मन चंचल वानर सो अरु शैल समान सो चित्त कठोरा ॥ नाहिं करी तपसा तुम्हरी वल औसर वैन सुनो प्रभु मोरा ॥ नाथ भले बलवान हुते मम दासकी बेर भयो बल थोरा ॥ ५७४ ॥

गह तंदुल ब्राह्मणके करसे तव आपद ताकी सु दूर निवारी ॥ गज कंज दिये तव ग्राह कटे फल खायके भील सुता सो उधारी ॥ गल फूलनमाल गही कुबजा तब कूबरिकी कटि नाथ सवाँरी ॥ विन मूल न काम करो हरिजी जगलोगन की गति तें उर धारी ॥ ५७५॥ गुण थोरेही ते प्रभु रीझ रहो वह भूल गई अब बानि तुम्हारी ॥ फल फूलन ते वन भील सुता मथुरा पुरमें हरि कूबरि तारी ॥ गणिका गजराज उधार करे तो दयालहुते सु मुकुंद मुरारी ॥ अब के करुणा हरि पीठ दई अरु के कर फाऱ्यो तो कागज कारी ॥ ५७६ ॥

कव आवैंगे वे मम ऊपर ते दिन देह रटे मम गंग किनारे ॥ सवही जगते पुनि शांत लहे मुख नाम सों शीश गँगोदक धारे ॥ पुनि वैठ शिलातल में हरिकी पदवी दृग मेलके नीत

चितारे॥ हरि ध्यान समै तनु मोहि गिरे जल मात समान सो संग सँभारे ॥ ५७७ ॥

जा जलको विधि पान कर्यो पुनि पावन वामनपाद पखारे॥ शंकर पावन हेर उरे पुनि शीश निरंतर सो जल धारे ॥ भूप भगीरथके तपसा पुनि जा जल सों कुलभूपति तारे ॥ सो जल पावन मैं परसों सो पिवों उर में बडभाग हमारे॥५७८॥ कुंचित हैं अलकौं श्रुति ऊपर कुंडल हैं शुभ कानन माहीं॥ कुंडलके कच मेचक में लसिकै तड़िता घन मेचक जाहीं॥ बोल समै छबि पुंज तरंग कपोलन सागर ते निकसाहीं॥ नैन हरे मद कंजनके सम आननके शशि कोटिन नाहीं॥५७९॥ हरिके पदपंकज प्रेम करे न करे हरिबेमुख लोकन संगा॥ नहिं आपन मान सो भूल चहै पुनि औरन को न करै मन भंगा॥ सब और तजे जग अंग महा सो रहे हरि पूरण के रुपरंगा॥ इक ठौर अहार करै न सदा शुभ संत धरे व्रत नीर विहंगा॥ ५८०॥ हरिनाम भजे जग भीतर जो जननी सुत या विधिको उपजाये॥ अथवा जननी सुत सोइ जने रणभीतर जो अरिके दल घाये॥ सिर लौं धन दान करे जगमें शुभ कै जननी सुत यो निपजाये॥ इन तीन विना कृमिके सुतके हित यौवन नाहिं अकाज गँवाये॥ ५८१॥

ग़ज़ल ।

नहीं हम वेदके वादी विरागी मन हमारा है॥ नहीं हम वेष के योगी हमारा पंथ न्यारा है॥ रहें हम सुन्न के मंडल जहाँ वहु वेशुमारा है॥ नहीं वहँ जाय हरयककी जहां हम जीव डारा है॥ देखा दिल दूरवीनी से जहँ तहां पीव प्यारा है॥ करें हम एक की सेवा वली जिसका पसारा है॥ ५८२॥

राग साँरग ध्रुपद।

वैठे हरि राधा संग कुंज भवन अपने रंग कर मुरली अधर धार सारँग वही गाई है॥ मोहन अतिही सुजान सर्व कला गुणनिधान एक तान वूझ चूकके बजाई है॥ प्यारी जब गह्यो वीन चेत्यो तव गुण प्रवीन अति नवीन अतिनवीन ओही तान गाईहै॥ वल्लभ गिरिधरन लाल रीझ दीनी अंकमाल भले जू भले दयाल संतन सुखदाई है॥ ५८३॥

ग़ज़ल।

आशिक हुआहूं उसपै जो नजरों से दूर है॥ साया उसका यह जग जो कुछ जहूर है॥ जो है ख्याल वहम फहमसों परेसनम्॥ मुरशिदकी सैन वैन से हाजिर हजूर है॥ औ साफ उसकी जात का क्योंकर करूँ वयां॥ क्या ताव है किसी में अकल क्या शऊर है॥ घायल किया है मेरे तंई उसके इश्कनें॥ दिल जान उस सजन पै मेरा चूर चूर है॥ यह काम आशकीका सुनो राम रूप से॥ पहिले फना जो होय तो फिर वही नूरहै॥ ५८४॥

राग प्रभाती।

वन पड़े तो नेकी करना आखिर तो है मरना॥ धन यौवनके ‍ोर जुलममें इतना नहीं उछलना॥ कभी जालमें फँस जावोगे ‍स जंगलको हरना॥ गनी गरीवनको हक नाहक इतना नहीं रगर- ना॥ दो दिनकी हशमत है तेरी साहिव सों कछु डरना॥ कुफल करें अधरमकी दौलत मिसूल वांसः का फलना॥ अभी तुझे मालूम न पड़ता अंत पड़ेगा भरना॥ जान वूझ टेढे रस्ते पर वंदे कदम न धरना॥ देव देव कह राम राम २ भवसागर पार उतरना॥ ५८५॥

कोई सफा न देखा दिल का यह सांचा बना झिलमिल का ॥ कोइ बिल्ली कोइ बकुला देखा पहिर फकीरी खिलका ॥ बाहर मुख सों ज्ञान छांटते भीतर गोरा छिलका ॥ औरनके पिसबे में शूरमां पटतर लोढ़ा शिल का ॥ राम नाम में अजब आलसी जैसे मरा मंजिल का ॥ राम लगन बिन जप तप झूँठा झूँठा तप का फजिल का ॥ क्या कहें गुरुदेव न पाया महरम आंखके तिल का ॥ ५८६ ॥

तेरी खाक फकीरी दिल सें चाह न छूटी ॥ मान बड़ाई जादिन भाई तादिन किसमत फूटी ॥ अपने में सारो जग देखत रसकी लूटा लूटी ॥ या मति बिन दिन दिन तनु छीयो शिर की कूटा कूटी ॥ पूरी बिपति महंती आई प्रीति रामसे छूटी ॥ सेवा पूजा सब ठग हारी मिसल जालकी खूटी ॥ चेटक नाटक नट विद्यासे सारी खिलकत जूटी ॥ मिले नहीं वसुदेव दुलारे प्राण सजीवन बूटी ॥ ५८७ ॥

हरि सों लागा रहु रे भाई तोरी बनत बनत बनजाई ॥ ऐसा भजन करो घट भीतर छोड़ कपट चतुराई ॥ सेवा बंदगी और अधीनता सहज मिलें रघुराई ॥ दुनियाँ दौलत माल खजाना बनियां बैल चलाई ॥ एक बात मोहिं लाग अचंभव खोज खबर नहिं पाई ॥ स्याही गई सफेदी आई अब क्या करिहो भाई ॥ राम नाम सुमिरन नहिं कीना बिरथा जन्म गँवाई ॥ ध्रुव प्रह्लाद नाम से तर गये तर गये सदन कसाई ॥ हरिकी सरवर कौन करेगो नानक बात बताई ॥ ५८८ ॥

मुख सों राधा कृष्ण बोल तेरा क्या लगेगा मोल ॥ तेरे हाथ पाँव नहिं हलते दश बीस कोश नहिं चलते गिरहों कि गांठ नहिं

खुलती तू मनकी गुंडी खोल ॥ तेरा घोड़ा है बहु रंगी घोडेकी पांच बछेरी यह पांचों फिरें लुटेरी पांचों की बाग मरोर संसार काचकी बाजी तू किस पर होय राजी यह सकली सुपन समाजी तू तिस पर मन ना डोल ॥ तोहिं बहुत गुरू समझावे तू फिर कर जन्म न पावे साँचा हरि चरणों लावे झूँठे जग का नाता तोड़॥५८९॥

राग कालिंगड़ा ।

लाल तोहि हौंहीं आज मनाऊं ॥ झीनी स्वर सों रट मुरली में राधे राधे गाऊं ॥ नटवर वेप वनाय आपनी भामिनी तुमहिं वनाऊं ॥ अलकन छिटक अंश अपने तब वेणी शीश गुथाऊं ॥ दे तव भाल अरुण वेंदी हों केसर खोर लगाऊं ॥ तुम वैठो गह मोन मानिनी हौं वालि विनय सुनाऊं॥ भ्रुकुटी तान विलोको तुम हौं टोड़ी हाथ लगाऊं ॥ अंवर झटक मोर मुख वैठो हौं नच सम्मुख आऊं ॥ कुटिल बोल बोलो घूंघट ले हौं झुकि नैन मिलाऊं ॥ ललित किशोरी नवल वधू तुम हौं नव रसिक कहाऊं॥ ५९० ॥

प्यारी हा कैसे कर मान रचाऊं ॥ कैसे कर नैन तरेरां तुमपे कैसे कर भौंह चढ़ाऊं ॥ कैसे कर वैन कुटिल निकसै मुख कैसे कर दीठ दुराऊं ॥ कैसेकर झटक नील पट कर सों हाहा तुमहिं खवाऊं॥ कैसे कर विनय ललित मुख प्यारी इन श्रवणनहिं सुनाऊं ॥ ललित किशोरी श्रमित तुमहिं क्यों देख धीर उर लाऊं ॥ ५९१॥

राग सोरठ ।

पिया ते में क्यों कीनो मान ॥ मोहन आय झरोखा झांके में कीनो अभिमान ॥ लागी लगन गोपाल पिया तो छाँड़

दई कुल कान ॥ पुरुषोत्तम प्रभु आन मिलावो नातर तजूँगी प्रान ॥ ५९२ ॥

तुम सुनिये हो बलि राजा वसुधा काहूकी न भई ॥ सतयुग में हरणाकुश राजा चारों खूट मही ॥ अतिव प्रचंड महीपति राजा वाहूके सँग न गई ॥ त्रेता में रावण भयो राजा कञ्चन कोट मई ॥ इक लख पूत सवा लख नाती लकड़ी काहू न दई ॥ द्वापरमें दुर्योधन राजा नौलख भीड़ सही ॥ सोरा योजन वाके छत्र झुलत रहे मट्टी गिधन लई ॥ सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग चारों युगन सही ॥ कहत सूर वई नर झूँठे जिन यह अपनी कही ॥ ५९३ ॥

राम नाम इक सार और सब झूँठो है संसारा ॥ रामको नाम अमीरस भाजन सो मोहिं अधिक पियारा ॥ भाई बंधु अरु लोक कुटुंब सब मात पिता सुत दारा ॥ अंत समय कोइ काम न आवे देखो दृष्टि पसारा॥यह देही सुमिरनको दीनी मिलत न बारंबारा॥ ताको पाय वृथा क्यों खोवत भजत न एको बारा ॥ जगतसिंधु में आन फँस्योहै उठत भँवर भ्रम भारा ॥ युगल चरण की नौका काजै उतर जाय भवपारा ॥ ५९४ ॥

राग प्रभाती।

राम प्रताप न जाने पिता तू रामप्रताप न जाने ॥ राज पाय बौराने ॥ नरका शंखा मधुकैटभ हरणाकुश बलवाने ॥तिन तिनका तिनका कर तोरयो ऐसे शारँगपाने ॥ जाकी कृपा भई जग विजयी तासों वैर सो ठाने ॥ देखो नैन रैन कर सुपना सब तज भज भगवाने ॥ रोम२ रम रह्यो रमापति वेद पुराण वखाने ॥ निशिदिन अज हर ध्यान धरतहैं तू कैसे रिस माने ॥ सह नहिं सकत त्रास

भक्तनके भक्तन हाथ विकाने ॥ सब कल्यान ज्ञान कर देखो युगल चरण लपटाने ॥ ५९५ ॥

लावनी ।

कैसे करूं कछु नहिं आवत जिय दुख कैसो भारी है। कोई गाय रावल समझावो यह क्या वात बिचारीहै ॥ आठ मास दश गर्भ में राख्यो शरद गर्म ऋतु न्यारीहै ॥ सो कैसे जननी विष प्यावे वाजी कठिन करारी है ॥ राम नाम डरसो नहिं छोडत हठ कर कहत पुकारी है ॥ वार वार बहु विधि समुझायो विनती कर २ हारी है ॥ ५९६ ॥

हे माता मन शोच न कीजे राम नाम पद भारी है ॥ जहँ जहँ भीर परी भक्तन पर तहँ २ आय निवारी है॥ घट घट में जल थल में व्यापक हरिकी लीला न्यारी है ॥ युगलदास प्रभुके चरणन पर वार वार बलिहारी है ॥ ५९७ ॥

राग सोरठ ।

राखि लेहु भगवान अवकी राखि लेहु भगवान ॥ खंभ सों मोहिं बांध दीनो खड्ग लीनों तान ॥ करके यत्न अनेक हारो रही एक न आन ॥ अवतो कठिन कृपान ताने लियो चाहत प्रान ॥ मोहिं वेग उवार लीजै सुनिये कृपानिधान ॥ युगल चरण सनेह चाहत धरत तेरो ध्यान ॥ ५९८ ॥

राग ठुमरी ।

लीजिये करुणानिधान वेग सुरत जनकी ॥ पाप पीन पुण्य क्षीण काय वाक मन मलीन दीन वित्त हीन चित्त आश न गुण गणकी ॥ काल कर्म गुण सुभाव सुखप्रद प्रभु पद विहाय भ्रमत भ्रमत पंथ अमित ऐसी रुचि मनकी ॥ स्वारथ हित द्वार

द्वार बार बार कर पसार लाभ तिरस्कार हानि अशन हूं वसनका॥ जानत हूं प्रभु कृपाल भंजन भव फन्द जाल शरण पाल बान प्रणत दीनता हरनकी ॥ काचो मन राचो नहिं रावरे सनेह साँचो हरे कौन नाथ विन त्रिविध ताप तनकी ॥ द्रुपदसुता जानकी गजेंद्रको उबार पैज राखी प्रह्लाद तथा पांडुके सुतन की ॥ साँचेहूं झूँठ रामदास नाम नाते नाथ कीजिये सम्हार लाज राखो निज पनकी ॥ ५९९ ॥

राग जंगला।

हरि बिन को राखे पति मेरी ॥ अंधको अंध महा जो दुशासन आन सभा में घेरी ॥ भीषम द्रोण कर्ण से बैठे इनहूं नेक न हेरी ॥ अब मति भ्रष्ट भई सबहिनकी पकरलियो ज्यों चेरी ॥ एक विश्वास यही दृढ़ मेरे कृष्ण कृष्ण कह टेरी ॥ सूरदास प्रभु वसन बढ़ाये ह्वै गयो पर्वत ढेरी ॥ ६०० ॥

कोइ दमका इहां गुजारा रे तुम किस पर पाउँ पसारा रे ॥ इहां पलक झलक दा मेला है कुछ करले यह अब वेला है कोइ पल का इहां नजारा रे ॥ इहां रात सराय का रहना है कछु स्थिर होय न बहना है उठ चलना सांझ सकारा रे ॥ ज्यों जल बीच बतासा है त्यों जग का सभी तमासा है यह अपनी आंख निहारा रे ॥ देखन में जोइ आवै है सभ खाक माहिं मिल जावैहै यह सभी कालको चारा रे ॥ दृष्ट मान सब नाशी है इस कालकी सभ पर फाँसी है इस काल सभनको मारा रे ॥ जिन के दर नौबत वाजे हैं वे तखत छोड़ कर भाजे हैं जिनके लशकर लाख हजारा रे ॥ कई पीर पिगंबर हूएहैं इस काल ने सभी

विगोए हैं यह सभही ऊपर भारा रे॥ कई गौस कुतुव सभ घेरे हैं इस काल ने सभी निवेरे हैं तू किनमें कौन विचारा रे॥ यह मनुप देह कव पावे हैं यह वादही वाद गँवावे हैं क्यों अपना काज विगारा रे॥ ६०१॥

सवैया।

दीन मलीन दुखी अँगहीन विहंग परयो क्षिति छीन दुखारी॥ राघव दीनदयालु कृपालु को देख दुखी करुणा भइ भारी॥ गीध को गोद में राखि कृपानिधि नैनसरोजन में भरि वारी॥ वारहिं वार सुधारत पंख जटायुकी धूरि जटानसों झारी॥ ६०२॥
वेदविरुद्ध महामुनि सिद्ध सशोक किये सुरलोक उजारयो॥ और कहा कहुं सीय हरी तवहूँ करुणानिधि कोप निहारयो॥ सेवकक्षोभ ते छाँडी क्षमा तुलसी लख्यो राम स्वभाव तिहारयो॥ तौलौं न दाप दलो दशकंधर जौलौं विभीषण लात न मारयो६०३॥

कवित्त।

नीर भरे नैन मुख वैन हू न सके वोल हैं ना तन सुध सुख ऐन लख आई हैं॥ आली सभ बूझे हर्ष कारण तू कहे क्यों न चैन अति पाय अंग पुल्कावलि छाई हैं॥ वोलीधर धीर वाग देखन् द्वे कुवँर आये अंग अंग शोभा सभभांति सों सुहाई हैं॥ श्याम गौर वे किशोर केसे करि गाय कहूं वैन हैं अनैन नैन वैन नाहिं पाईहै॥ ६०४॥

रूठे क्यों न राजा वाते कछु नहीं काज एक तूही महराजा और कौनको सराहिये॥ रूठे क्यों न भाई वाते कछू न वसाई एक तूहीहै सहाई और कौनपास जाइये॥ रूठे शत्रु मित्र उदासीन आठों याम एक रावरे चरणनके नेहको निवाहिये॥

लोक सब झूठा एक तूहीहै अनूठा सभ चूमेंगे अँगूठा प्रभु तू न रूठा चाहिये ॥ ६०५ ॥

राग विहाग ।

अबकी राखि लेहु भगवान ॥ हम अनाथ बैठी द्रुम डरियां पारधी साध्यो बान ॥ ताके डर निकसन चाहतहों ऊपर रह्यो शचान ॥ दोऊ भांति दुख भयो कृपानिधि कौन उबारे प्रान ॥ सुमरतही अहि डस्यो पारधी लाग्यो तीर शचान ॥ सूरदास गुण कहँ लग बरणों जै जै कृपानिधान ॥ ६०६ ॥

राग प्रभाती ।

उठ जाग घुराड़े मार नहीं ॥ यह सोण तेरे दरकार नहीं ॥ इक रोज जहानों जानाहै जा कबरे बिच्च समाना है तेरा गोशत कीड़े खाना है रख चेता मारग विसार नहीं ॥ तेरा साहा नेड़े आया है कछु चोली दाज रँगाया है की अपना आप बजाया है ऐ गाफल तैनूं सार नहीं ॥ तू सोके उमर गँवाई है तेरी साइत नेड़े आई है तू चरखे तंद न पाई है क्या करसी दाज तयार नहीं ॥ तू जिस दिन यौवन मत्तीसैं तेनाल हूरांदे रत्ती सैं हो गाफिल दुनिया सुत्ती सैं हुन बाहीं तेरी बहार नहीं ॥ तू मुड्ढों बहुत कुचज्जी सैं तू हर पूजा तू लज्जी सैं तू खाखा खाणे रज्जी सैं तैं कोलों कोण बेजार नहीं ॥ अज कल्ह तेरा मुकलावा. नी क्यों सुत्ती हैं कर दवानी अनडिठ्यां नाल मलावा नी यह भलके गर्म बजार नहीं तू एस जहानों जायेगी फिर कदम न एथे पायेगी यह योवन रूप बजायेगी तैं रहना विच संसार नहीं ॥ बुल्लाशाहै बिन कोई नहीं एथे औथे दोहीं सराईं संभल संभल कदम टिकाईं फिर आवन दूजीबार नहीं ॥ ६०७ ॥

राग होरी-भैरव ।

प्रातकाल नंदलाल खेलत हैं होरी ॥ आईं आनंद भरी ब्रज की सब गोरी ॥ कंचन पिचकारी हाथ औ गुलाल झोरी ॥ शीश पाग लटक रही केसर रँग बोरी ॥ वल्लभ गोपाल निरख विहँसत सुख मोरी ॥ ६०८ ॥

राग भैरव ।

शोभा सदन वदन दोउ देखे ॥ आलस अंग जंग निशि जागे भरे विनोद अपार विशेखे ॥ भूपन वसन मणिन हारावलि ललित नैन काजर छवि रेखे ॥ रसिक खुशाल विलोकत या छवि राधावर सुखसार विशेखे ॥ ६०९ ॥

राग होरी-देश ।

वीर यह पीर न जाने री मोरी आंखिन मलत अबीर ॥ हटके ते आरोही अटकत भर पिचकारी ताने सुरझावत पट बूंद झपट हँस अतर कपोलन साने ॥ ललित किशोरी निपट हठीलो नट नँद को नहिं माने ॥ ६१० ॥

राग मालकौंस ।

आली दशरथसुत सुखदेना ॥ भरनैना देखो सो नैना ॥ सुर नर मुनि मन हरन वरन वर कोटि काम सुंदर सुखमंदिर तन मन धन न्योछावर कीनो निरख सखिन मन चैना ॥ कमल-नैन सुंदरकपोल अलकन झलकन कुंडल सुलोल मुसकानमंद सुखकंद चंद मुख मधुर मधुर वर वैना ॥ अंग अंग वारूं अनंग शिव धनुप भंग कर रंग आमन सिया अंग अंग रस रंम रंग मगे रत्नहरी सुख ऐना ॥ ६११ ॥

राग मलार ।

यह दोउ झूलत रंग हिंडोरें ॥ दशरथ सुत अरु जनकनंदनी चितवन में चित चोरें ॥ नान्ही नान्ही बूंदन पवन पुरवैया बरसत थोरें थोरें ॥ हरी हरी भूमि घटा झुक आई सरयू लेत हिलोरें ॥ हय दल पैदल जग दल रथदल कोट बने चहुँ ओरें ॥ उपवन माहिं मधुर स्वर बोलें कोकिल मोर चकोरें ॥ रत्न जड़ितको वन्यो हिंडोरा रेशम लागी डोरें ॥ अरस परस दोउ झूल झुलावें इक साँवर इक गोरे ॥ वामें बिमल सखी उरझानी अपनी अपनी ओरें ॥ तुलसिदास अनुकूल जानके सियाजी हँसी मुख मोरें ॥ ६१२ ॥

राग प्रभाती ।

मैं विरागन श्याम दी लाल वे मेरा पीया बतला देयो ॥ इक अंधेरी कोठरी लाल वे जित्थे दीवा न बाती ॥ वाहोंफडके लै चले लालवे कोई सङ्ग न साथी ॥ ऊंचा पीपल जाड़ला लालवे लागरां लैन हुलारे ॥ कोठे चढ़के देखदी लाल वे प्यारा नजर न आवे ॥ दुलड़ी तिलड़ी चौलड़ी लाल वे गल प्रेम जँजीरी ॥ जा पुच्छो बुल्लेशाह नूं मुशकल बनी है फकीरी ॥ ६१३ ॥

शब्द ।

जिन्हा नूं शौक साईंदा लग्गा सभ कुछ छिर पर झलदे ॥ झक्ख झेड़े बाय अंधेरी वांग पर्वत ना हलदे ॥ मुख विच रज्ज नंग विच कज्जन भुखखे है इस गल दे ॥ कहे ग्वार जिन्हा अखूखीं देख्या क्या कहे सुख पल दे ॥ ६१४ ॥

श्याम विना ऊधो ऐसे भई मैं ज्यों मछली विन पानी ॥ पत्ती रेता पई तड़फूफां वैद किसे ना जानी ॥ कुंडी दरद फराकत न...

देही दरद रजानी ॥ महासिंह साड़ा जीवन ताहीं मिलसी सारँगपानी ॥ ६१५ ॥

माए नी मैं रहां कुआरी चांदी की सुख पाया ॥ सोना देके लाल व्याहज्या तांबा निकल आया॥ खुल्हे केश गले विच मेरे जो लिख्या सो पाया ॥ मयाराम जदतों सातों विछडे तदतों योग कमाया ॥ ६१६ ॥

माए नी सुन मेरि ये माए आप पेयां शिर भारे ॥ लोक जानत हथ मेहँदी रँगुली लोहू भिन्ने हथ सारे ॥ मारां लत्त वुझावां वत्ती अग लावां इस खारे शगना वारे ॥ जिन्हादे नाल मुहव्वत साड़ी लद्द चले वनजारे ॥ ६१७ ॥

माय नी सुन मेरीये माय की तदवीराँ करिये ॥ योगन बनके न मिल्या साँवरा केहडे पंथ नूं फडिये ॥ जा तप करिये माधो वन में वहां सांवरा वरिये ॥ मयाराम साडा जीवन ताहीं जा यमुना डुब मरिये ॥ ६१८ ॥

जबकी श्यामा तैं बंशी बजाई तब मैं आइयाँ वन में ॥ सुन सुन तेरी मुरली दीयाँ वनघोराँ ताकत रही न तन में ॥ रंग रँगीला छैल छबीला ठाकुर मेरा गौआँ चारे वन में ॥ उस दिन ते बलिहारी ऊधो जिस दिन ठाकुर जन्में ॥ ६१९ ॥

वाएनी तू वग्ग सवेले छम छम वगदी जाई ॥ जो कछु हाल असाडा देख्या प्यारे नू आख सुनाई ॥ साडी वलों तूं मिन्नत करके गल विच पलड़ा [illegible] ॥ सूरदास प्रभु रोंदी न छड गये एह गल आख सुनाईं [illegible] ॥

शिर धर मटकी जानी यां लटकी॥श्याम मिला मैनूँ खिलदा ॥ सांवल कोलों नैन छिपाये उस डेरा मल्या दिलदा ॥ सांवल मैंडा मैं सांवल दी फरक न रह्या बिच तिलदा ॥ लख ग्वार पई झख मारे दिल दित्यां ते दिल मिलदा ॥ ६२१ ॥

राग जङ्गला ।

हटड़ी छोड़ चल्या बनजारा ॥ इस हटड़ी बिच मानक मोती कोइ बिरला परखन हारा ॥ इस हटड़ी के नौ दरवाजे दशवां ठाकुरद्वारा ॥ निकल गई थंमी ढेह पया मन्दर रल गया चिकड़ गारा ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो झूँठा जगत पसारा॥६२२॥

राग कान्हरो ।

तन मन धन वारों सांवरी सूरत माधुरी मूरत कुण्डल की झलक पर ॥ मुकुट लटक धरन रह्यो मतवारो रह्यो मतवारो ऐन सैन बैन नैन जग में उजियारो ॥ सुर नर मुनि ध्यान धरत मयाराम प्यारो ॥ ६२३ ॥

राग सोरठ ।

पढ़ो भैया रे कृष्ण गोविंद मुरार ॥ कह प्रह्लाद सुनो रे वालक लीजो जन्म सुधार ॥ को है हरनाकुश अभिमानी जो सकिहै तुम्हैं मार ॥ राखन हार और हैं कोऊ श्याम धरे भुज चार ॥ पूरण पुरुष नरायण स्वामी सो करिहैं रखवार ॥ सूरदास प्रभु हरि सो मीता कभूं न आवे हार ॥ ६२४ ॥

राग मालकौंस ।

निपट वंकट छबि अटके मेरे नैना ॥ देखत रूप मदन मोहन को पियत पियूप न मटके ॥ वारिज भवां अलकटेढ़ी मनो अति

शिर धर मटकी जानी यां लटकी॥श्याम मिला मैंनूँ खिलदा ॥ सांवल कोलों नैन छिपाये उस डेरा मल्या दिलदा ॥ सांवल मैंडा मैं सांवल दी फरक न रह्या बिच तिलदा ॥ लख ग्वार पई झख मारे दिल दित्यां ते दिल मिलदा ॥ ६२१ ॥

राग जङ्गला ।

हटड़ी छोड़ चल्या बनजारा ॥ इस हटड़ी बिच मानक मोती कोइ बिरला परखन हारा ॥ इस हटड़ी के नौ दरवाजे दशवां ठाकुरद्वारा ॥ निकल गई थंमी ढेह पया मन्दर रल गया चिक्कड़ गारा ॥ कहत कबीर सुनो भाई साधो झूँठा जगत पसारा॥६२२॥

राग कान्हरो ।

तन मन धन वारों सांवरी सूरत माधुरी मूरत कुण्डल की झलक पर ॥ मुकुट लटक धरन रह्यो मतवारो रह्यो मतवारो ऐन सैन बैंन नैन जग में उजियारो ॥ सुर नर मुनि ध्यान धरत मयाराम प्यारो ॥ ६२३ ॥

राग सोरठ ।

पढ़ो भैया रे कृष्ण गोविंद मुरार ॥ कह प्रह्लाद सुनो रे बालक लीजो जन्म सुधार ॥ को है हरनाकुश अभिमानी जो सकिहै तुम्हें मार ॥ राखन हार और हैं कोऊ श्याम धरे भुज चार ॥ पूरण पुरुष नरायण स्वामी सो करिहैं रखवार ॥ सूरदास प्रभु हारि सो मीता कभूं न आवे हार ॥ ६२४ ॥

राग मालकौंस ।

निपट बंकट छबि अटके मेरे नैना ॥ देखत रूप मदन मोहन को पियत पियूष न मटके ॥ वारिज भवां अलकटेढ़ी मनो अति

सुगंध रस अटके ॥ टेढ़ो कटि टेढ़ो कर मुरली टेढ़ी पाग लर लटके ॥ मीरा प्रभुके रूप लुभानी गिरिधर नागर नटके ॥ ६२५ ॥

राग वसंत ।

खेलत विपिन वसंत लाडिले नेह भरे पिय प्यारी ॥ रत्न जड़ित सिंहासन बैठे मध्य फुली फुलवारी ॥ तन सुख केसर भीने वागे अनुरागे छवि धारी ॥ भूपन भूपित अंग अंग द्युति दमक चमक मन हारी ॥ ताल मृदंग उपंग बजावत गावत अलि सुख कारी ॥ रस सरिता ललितादिक निर्तत आनँद मगन महा री ॥ उड़त अबीर गुलाल लाल घन वन छवि छाय विहारी ॥ निरखत लाल रूप हित दंपति प्राण संपदा वारी ॥ ६२६ ॥

कवित्त ।

गगनके मंडलमेंचंद्रमा मसालची किये हैं लाख तारे वाके दीपक दर्वार हैं ॥ ब्रह्माहू वजीर विष्णु कारदार देखियत शंकर दीवान रु गणेश चोवदार हैं ॥ शीलहूकी लक्ष्मी सो सदा अंग संग रहे कुबेर भंडारी और इंद्र जमींदार हैं ॥ कहे अवधूत प्यारे समझ विचार देखो राजनृपति राजा महाराजा करतार हैं ॥ ६२७ ॥

राग वसंत ।

फूली वनराई वेलरियां कोयल वोले अंव की डार ॥ भौंरा गुंजार करत ऋतु वसंत आई लों खिली वहार ॥ भाँति भाँतिके वृक्ष झुकत झुकत झूम रहे पपीहा पिया पिया कर पुकार ॥ वार वार ग्वाल नार विरत विरत घूम रही हाथ लिये करवा फिरत

हैं चहुँ ओर ॥ हरि दासके प्रभु मुदित मुदित भये मोतिनकी माल गरे सज शृंगार ॥ ६२८ ॥

राग मालकोस।

पारब्रह्म परमेश्वर पुरुषोत्तम परमानंद नंदनंदन यशोदानंद आनंद कंद श्रीगोविंद ॥ करुणामय कमलनैन कृपासिंधु सर्व चैन पूरण करता किशोर गुणनिधान गोकुल चंद ॥ दीनानाथ दुखभंजन भक्तवछल जगवंदन ॥ जगजीवन जगतनाथ व्रजपति हर दीन बंधु ॥ राम रूप राधावर गोवर्धन कर पर धर रंगनाथ हृषीकेश गावत गुण भये अनंद ॥ मधुसूदन मदनमोहन मुरली धर सर्व सोहन वासुदेव बनवारी काटो दुख द्वंद फंद ॥ जन गरीब यश सुन सुन लाग रही अंतर धुन केशव बनवारी व्रजपति गोकुलचंद ॥ ६२९ ॥

राग भैरवी।

सब मति हूं ते यह मति भावे ॥ एक अधार नाम यश कीर्त्तन जब कब पार लगावे ॥ धर्म कर्म तीरथ व्रत संयम योग यज्ञ श्रुति गावे ॥ नहिं अधिकार नहीं बल माया चंचल मन न ठरावै॥ नाना ग्रंथ वेद विधि नाना काहेको डहकावै ॥ भक्तराम प्रभु पतित पावन हैं यह भरोस जिय आवे ॥ ६३० ॥

राग देश।

ग्वारिनि जान उरहनो देह ॥ पूछो तो यह बात श्याम सों किहिं विधि जुरचो सनेह ॥ प्रथम जाय वन वसी वृक्ष ह्वै छाँड ग्राम अरु मेह ॥ एक पाँय सहे मैं सब दुख हिम ग्रीषम अरु मेह ॥

तजे सुभार फूल फल शाखा और सुखाई देह॥ मारयो तन मन अंग सुलाखत विविध बनाये बेह ॥ जा देहीको गर्व करत हो मुरली सों अति नेहु ॥ सूरश्याम यहि भाँति रिझावो तुमहुँ अधर रस लेहु ॥ ६३१ ॥

जिन्हां नूं लग्गे प्रेम तमाचे घर दे कम्मों गैयां॥मात पिता कुल आलम सारा वर्जन सब भौ सैयां॥ लख लख ताने लख लख वदियां वह भी शिरपर सहियां ॥ डुब्ब गया सब लहणा देणा खूह विच पैयां वहियां ॥ उन्हाँदा मुड़न विहारी केहा जेढ़ियाँ प्रेम फाही विच पैंयां॥ ६३२ ॥

कवित्त।

द्वारकाके वीच पाँसा खेलें हरि रुकमिनि वाही समै भीरजानी पूर्ण भगवंतजी॥ डारे दल श्यामजीने कह्यो मुख अर्ब खर्ब रुकमिनि पूछे यह दाव क्याहे कंतजी ॥ द्रौपदी है भक्त प्यारी दुशासन दुख दीन भारी समै भीर जान देतहों पटंतरी ॥ कहै मयाराम धाम त्याग श्याम दौर आये चीर तो वढाये पीर सहै नहिं संत की ॥ ६३३ ॥

संतन सहाय सदा शंख चक्र धारे गदा पद्म लिये हाथ प्रभु पूरण गोपालजू ॥ भईहों निराश साथ रहा है न कोई मेरे पाउ परों नाथ हरि दीननदयालजू ॥ पाऊँ दुख भारी हा मुरारी सुनो विनै मेरी केशो गिरधारी लज्जा राखो नंदलालजू॥ कहै मयाराम धाम त्याग श्याम दौर आये चीर तो वढाये कहूं पीरे कहूं लाल जू ॥ ६३४ ॥

राग सोरठ ।

सुवा चल वा वनको रस लीजे ॥ जा वन कृष्ण नाम अमृत रस श्रवण पात्र भर पीजे ॥ को तेरो पुत्र पिता तूं काको मिथ्या भ्रम जग केरो ॥ काल मँजार लेजैहै तोको तू कहे मेरो मेरो ॥ हरि नाना रस मुक्त क्षेत्र चल तोको दिखराऊं ॥ सूरदास साधन की संगति बड़े भाग्य जो पाऊं ॥ ६३५ ॥

राग विहाग ।

भरोसो दृढ इन चरणन केरो ॥ श्रीयदुनाथ नख चन्द्र छटा बिन सभ जग माँझ अँधेरो ॥ साधन और नहीं या कलि में जासे होय निबेरो ॥ सूर कहा कहे द्विविध आँधरो बिना मोल को चेरो ॥ ६३६ ॥

राग भैरव ।

सुमिर मन गोपाल लाल सुंदर अति रूप जाल मिटिहैं जंजाल सकल निरखत संग गोपबाल ॥ मोर मुकुट शीश धरे वनमाला सुभग गरे सबको मन हरे देख कुंडलकी झलक गाल ॥ आभूषण अंग सोहे मोतिनके हार पोहे कंठ सिरि मोहे दृग गोपी निरखत निहाल ॥ छीत स्वामी गोवर्द्धन धारी कुवँर नंद सुवन गाइनके पाछे २ धरत हैं लटकीली चाल ॥ ६३७ ॥

राग देश ।

चार वरन में सोई वडा जिन राधाकृष्णा रटा रटा ॥ काहेको जोडे माल खजाने काहेको छावत ऊंची अटा ॥ जब यमकी तलबी आवेगी छोडजाय सभ लटा पटा ॥ यह दम हीरालाल

अमोलिक पल पल जाता घटा घटा ॥ वहां आया कौल करार कर यहां फिरता तू नटा नटा ॥ अपने कुटुंबको ऐसा देखे पलक उठाये पटा पटा ॥ जब तेरा हंसा चल्या जातहै छोड जाय तू राजपटा ॥ यह संसार मतलब का गरजी वातां करता झूँठ-मठा ॥ चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छवि कानन कुंडल मुकुट-जड़ा ॥ ६३८ ॥

राग होरी जंगला ।

कैसे होरी खेलों पिया सँग दुबिधा रार मचाय रही रे ॥ पांच पचीसों फाग रच्योंहै ममता रंग बनाय रही रे॥ नाचत लाज कर्म के आगे संशय भाव बताय रही रे ॥ करके शृंगार कुमति बैठी भर्मके घुँघुरू बजाय रही रे ॥ यह तीनों ताल मृदंग बजावें मैं मैं रागिनी छाय रही रे ॥ कपट कटोरा मधु विप भर २ तृष्णा मन को छकाय रही रे ॥ याहि जीवको वश कर अपने हंसको काग बनाय रही रे ॥ जान बूझके सुनो भाई साधो संत जना ने पीठ दई रे ॥ दास कबीर कहैं कर जोरी हमरी तो ऐसीही बीत गई रे ॥ ६३९ ॥

राग चौबोला ।

कोइ हाल मस्त कोइ माल मस्त कोइ तूती मैना सूये में ॥ कोइ खानमस्त पहिरान मस्त कोइ राग रागनी धूये में ॥ कोइ अमल मस्त कोइ रमल मस्त कोइ सतँरज चौपड़ जूये में ॥ इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब गिरे अविद्या कूयेमें ॥ ६४० ॥ कोइ अकल मस्त कोइ शकल मस्त कोइ चंचलताई हांसी में ॥ कोइ वेद मस्त कोइ तिब्ब मस्त कोइ मक्केमें कोइ काशी में ॥

कोइ ग्राम मस्त कोइ धाम मस्त कोइ सेवक में कोइ दासी में ॥
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब फँसे अविद्या फाँसी में ॥६४१॥

कोइ पाट मस्त कोइ ठाटमस्त कोइ भैरव में कोइ काली में ॥
कोइ ग्रंथ मस्त कोइ पंथ मस्त कोइ श्वेत पीत रँग लाली में ॥
कोइ काम मस्त कोइ खाम मस्त कोइ पूरण में कोइ खालीमें ॥
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब बँधे अविद्या जाली में॥६४२॥

कोइ हाट मस्त कोइ घाट मस्त कोई वन पर्वत औजारा में ॥
कोइ जात मस्त कोइ पांत मस्त कोइ तात भ्रात सुत दारा में ॥
कोइ कर्म मस्त कोइ धर्म मस्त कोइ मसजिद ठाकुरद्वारा में ॥
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब बहे अविद्या धारामें ॥६४३॥

कोइ राज मस्त गज वाजि मस्त कोइ छप्पर में कोइ फूले में ॥ कोइ युद्ध मस्त कोइ क्रुद्ध मस्त कोइ खड्ग कुठार वसुले में ॥ कोइ प्रेम मस्त कोइ नेम मस्त कोइ छीके में कोइ झूले में ॥
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब पड़े अविद्या चूले में॥६४४॥

कोइ साक मस्त कोइ खाक मस्त कोइ खासे में कोइ मलमल में ॥ कोइ योगमस्त कोइ भोग मस्त कोइ स्थिति में कोइ चलचल में ॥ कोइ ऋद्धि मस्त कोइ सिद्धि मस्त कोइ लेन देन की गल गल में ॥ इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब फँसे अविद्या दलदल में ॥ ६४५ ॥

कोइ ऊर्द्ध मस्त कोइ अधो मस्त कोइ बाहरमें कोइ अंतरमें ॥
कोइ देश मस्त बिदेश मस्त कोइ औषधि में कोइ मंतर में ॥
कोइ आप मस्त कोइ ताप मस्त कोइ नाटक चेटक तंतर में ॥
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब भ्रमे अविद्या जंतर में ॥६४६॥

कोइ सुष्ट मस्त कोइ तुष्ट मस्त कोइ दीरघ में कोइ छोटे में॥
कोइ गुफा मस्त कोइ सुफा मस्त कोइ तूँबे में कोइ लोटे में॥
कोइ ज्ञान मस्त कोइ ध्यान मस्त कोइ असली में कोइ खोटे में॥
इक खुद मस्ती विन और मस्त सब रहे अविद्या टोटे में॥६४७॥

यह लौकिक मस्त कहाँ लों वरणों है मायाके दंगल में॥ कौन करे तिनकी गिनती सब जकड़े हैं दृढ संगल में॥ छिनमें रुष्ट तुष्ट इक छिनमें स्थिती सदा अमंगल में॥ इक खुद मस्ती विन और मस्त सब भूले अविद्या जंगल में॥ ६४८॥

शब्द।

तर तीव्र भयो वैराग तो मान अपमान क्या॥ जान्यो अपना आप तो वेद पुराण क्या॥ खुदमस्ती कर मस्त तो मदिरा पान क्या॥ किंचा जिनको देह अध्यास तो आतमज्ञान क्या॥६४९॥

वीतरागको संसारकी लोड़ क्या॥ तृणवत् जान्यो जगत तो लाख करोड़ क्या॥ चाह रज्जू सों वँध्यो तो फेर मरोड़ क्या॥ किंचा भ्रांति साथ विवाद तो फिर होड़ क्या॥ ६५०॥

ततपद त्वंपद अर्थ भली विधि जानिये॥ वाच्य लक्ष्य का भेद युगल पहिचानिये॥ विरोधी अंश को त्याग अविरोधी मेलिये॥ किंचा या विधि भव संसार युगत सों हेलिये॥ ६५१॥

राग कान्हरा।

होत सो जो रघुनाथ ठटी॥ पच पच रहे सिद्ध अरु साधक मुनि तबहूं बधी न घटी॥योगी योग धरत मन अपने शिर पर राख जटी॥ ध्यान धरत महादेव अरु ब्रह्मा तिनहूँ पे न घटी॥ यती

तपी तापस अराधे कोऊ पुनि रहै पती ॥ सूरदास भगवंत भजन बिन कर्म फाँस न कटी ॥ ६९२ ॥

राग बिलावल ।

रे मन जन्म पदारथ जात॥ बिछुरे मिलन बहुरि कब ह्वै है ज्यों तरुवरके पात ॥सुनत बात कफ कंठ विरोधी रसना टूटी बात ॥ प्राण लिये यम जात मूढ़ मति देखत जननी तात ॥ छिन इक माहिं कोटि युग बीतत पीछे नरककी बात ॥ यह जग प्रीति सुआ सेमरको चाखत ही उडि जात ॥ यमके फंद नहीं पड़ बौरे चरणन चित्त लगात ॥ कहत सुर वृथा यह देही अंतर क्यों इतरात॥६९३॥

राग रामकली ।

अपनो आप मैंने जो बिसरचो ॥ जैसे श्वान कांच मंदिर में भ्रमि भ्रमि भूंकि मरचो ॥ ज्यों केहरि प्रतिबिंब देखके आपन कूप परचो ॥·जैसे गज लख फटिक शिला में दशनन जांय अरचो॥ मर्कट मूठ छांड नहिं दीनी घर घर भ्रमत फिरचो ॥ सूरदास नलि-नीको सुअना कहु कौने पकरचो ॥ ६९४ ॥

राग भूपाली ।

विश्वपतीके ध्यानमें जिसने लगाई हो लगन ॥ क्यों न हो उसको शांती क्यों न हो उसका मन मगन ॥ काम क्रोध लोभ मोह शत्रु हैं सब महावली ॥ इनके हननके वास्ते जितनाहो तुझसे कर यतन ॥ ऐसा बना सुभावको चित्तकी शान्तीसे तू ॥ पैदा न ईर्षाकी आंच दिलमें करे कहीं जलन ॥ मित्रता सबसे मनमें रख त्यागके वैर भावके ॥ छोंडदे टेढी चालको ठीक कर अपना तू चलन ॥ जिससे अधिक न है कोई जिसने रचा हे यह

जगत् ॥ उसकाही रख तू आसरा उसकी ही तू पकड शरन ॥ छोड़के राग द्वेषको मनमें तू उसका ध्यान कर ॥ तुझपे दयाल होवेंगे निश्चय है यह परमात्मन् ॥ जैसा किसीका हो अमल वैसाही पाता है वह फल ॥ दुष्टोंको कष्ट मिलताहै शिष्टोंका होता दुख हरन ॥ आप दया स्वरूप हैं आपही का है आसरा ॥ किरपा दृष्टि कीजिये मुझपे हो वक्त जब कठिन ॥ मनमें हो मेरे चांदना मोक्ष का रस्तामिले ॥ मारके मन जो केवला इंद्रियों को करे दमन ॥ ६५५॥

अथ रागरत्नाकरकी आरती।

जय जगदीश हरे ॥ भक्त जनोंके संकट छिनमें दूर कर ॥ जो ध्यावै फल पावे दुख विनशे मन का ॥ सुख संपति गृह आवे कष्ट मिटे तन का ॥ मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी ॥ तुम विन और न दूजा आश करूं जिसकी ॥ तुम पूरण परमात्मा तुम अंतरयामी ॥ पारब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी ॥ तुम करुणाके सागर तुम पालनकरता ॥ मैं मूरख खल कामी कृपा करो भरता ॥ तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपती ॥ किस विधि मिलूं गुसाईं तुमको मैं कुमती ॥ दीनबंधु दुखहरता ठाकुर तुम मेरे ॥ अपने हाथ उठावो द्वार परया तेरे॥ विषय विकार मिटावो पाप हरो देवा ॥ श्रद्धा भक्ति वढावो सन्तनकी सेवा ॥ ६५६ ॥

जय सच्चिदानन्द ॥ ॐ तत् सत् ॥

इति श्रीरागरत्नाकरे चतुर्थ भाग सम्पूर्णम् ॥

समाप्तोऽयंग्रंथः।

छन्द।

राम कृष्ण रस रसिक चकोरहु पियहु मधुर रस अमी अघाय ॥
जाते क्षुधा तृषा नहिं लागै कोह मोह रुज जाय नशाय ॥
पियतहि जगै भक्ति उर प्रभुकी कलिमल भगै लगै नहिं देर ॥
भवनिधि तरन उपाय अन्य जग यहि ते सुलभ न दूसर हेर ॥
कृत युग ध्यान यज्ञ त्रेता महँ द्वापर किये चरणकी सेव ॥
जो गति लहत जीव सो कलिमइँ प्रभु गुण गाय सहजमहँ लेव ॥
रागनको भंडार ग्रंथ यह अति उदार लखि सज्जन वृन्द ॥
पढैं सुनैं गावैं लवलावैं पावैं परम ब्रह्म आनंद ॥
बाल चरित्र कृष्ण रघुवरको लीला ललित लिखी यहि माह ॥
अहै गायकनको जीवन धन भगतन भगति सिंधु शक नाहिं ॥
मति अनुसार सुधारि यथा विधि रामकृष्ण पदरज लवलीन ॥
शो धन कियो बंदि कवि याकहँ जस कछु प्रभु उर प्रेरण कीन ॥
खेमराजकी विनय कान करि धरि उर ध्यान गुनहिं मतिमान ॥
भूल चूक लखि करहिं क्षमापन प्रभु गुण ग्रथित ग्रंथ यह जान ॥

आपका कृपाभिलाषी—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणालयाध्यक्ष—मुंबई.